गांधी

नग्न महत्वाकांक्षा

जैड एडम्स

Gandhi

□□□□ □□□□□□□□□□□□□

□□□ □□□□□

जैड एडम्स एक स्वतंत्र इतिहासकार हैं जो लेखक और टेलीविजन निर्माता के रूप में कार्यरत हैं। उनकी पुस्तकों में नेहरू परिवार की समग्र जीवनी 'द डायनेस्टी', अग्रणी क्रांतिकारी टोनी बेन की विस्तृत जीवनी 'टोनी बेन' और 'किपलिंग' शामिल हैं। वे रॉयल हिस्टोरिकल सोसाइटी के फेलो हैं और वर्तमान में लंदन विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ एडवांस्ड स्टडी में एसोसिएट रिसर्च फेलो हैं।

[illegible]: [illegible]

‘[illegible]... [illegible] [illegible] [illegible]

'एडम्स शांति के आदर्श दूत पर ध्यान केंद्रित नहीं करते, बल्कि गांधी पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जो एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने अपना अधिकांश जीवन पवित्रता, शाकाहार, मल त्याग और अपने शुक्राणु को सर्वोत्तम तरीके से संरक्षित करने के अपने विलक्षण सिद्धांतों को परिष्कृत करने में बिताया, जिसे वे एक महत्वपूर्ण तरल पदार्थ मानते थे।'
टाइम्स ऑफ इंडिया
'जैड एडम्स की महान व्यक्ति की आलोचनात्मक और व्यंग्यात्मक जीवनी ब्रह्मचर्य, सतीत्व, ब्रह्मचर्य और कामुकता के साथ उनके विभिन्न प्रयोगों की व्याख्या करती है।'
दैनिक समाचार विश्लेषण (मुंबई)
1948 में उनकी हत्या के बाद से ही गांधी का जीवन किंवदंतियों और विवादों का विषय रहा है। क्या वे "भारत के पिता" थे या एक जुनूनी गुरु? ब्रिटिश राज को घुटने टेकने पर मजबूर करने में गांधी की भूमिका सर्वविदित है, साथ ही उनके विचार और जीवनशैली भी। यह नई, विचारोत्तेजक जीवनी उनकी आध्यात्मिक पूर्णता की निजी खोज को कहानी का केंद्र बनाती है।
डेली एक्सप्रेस
मैंने अभी-अभी जैड एडम्स की किताब 'गांधी: नग्न महत्वाकांक्षा' पढ़ना समाप्त किया है। मैं स्वीकार करता हूँ कि जब यह किताब मेरे सामने आई, तो मैं इसे पढ़ना नहीं चाहता था। गांधी के बारे में ऐसा क्या है जो हम नहीं जानते? ज़्यादा से ज़्यादा, यह लेखक की निजी राय हो सकती है, जिसे मजबूरी में प्रकाशित सामग्री पर निर्भर रहना पड़ा। मुझे इसे पढ़ने के लिए प्रेरित करने वाली बात इसका उपशीर्षक 'नग्न महत्वाकांक्षा' था। यह जानबूझकर उत्तेजक था। प्रस्तावना भी ऐसी ही थी, जिसमें उन्होंने महात्मा गांधी के कथनों में मौजूद कुछ विरोधाभासों की ओर ध्यान दिलाया। फिर मैं आखिरी पृष्ठ तक पहुँचने तक रुक नहीं सका। मुझे एहसास हुआ कि लेखक, जो एक इतिहासकार और जीवनीकार हैं, एक टेलीविजन निर्माता भी हैं। वे पाठक की रुचि बनाए रखने की कला जानते हैं।
खुशवंत सिंह, द ट्रिब्यून

यह पुस्तक सर्वप्रथम 2010 में ग्रेट ब्रिटेन में क्वेरकस द्वारा प्रकाशित की गई थी।
इसका पेपरबैक संस्करण 2011 में प्रकाशित हुआ था। क्वेर्कस
21 ब्लूम्सबरी स्क्वायर
लंदन
WC1A 2NS
कॉपीराइट © 2010 जैड एडम्स जैड एडम्स को इस कृति के लेखक के रूप में पहचाने जाने का नैतिक अधिकार कॉपीराइट, डिज़ाइन और पेटेंट अधिनियम, 1988 के अनुसार सुनिश्चित किया गया है।
सभी अधिकार सुरक्षित हैं। इस प्रकाशन का कोई भी भाग प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से, इलेक्ट्रॉनिक या यांत्रिक रूप से, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या किसी भी सूचना संग्रहण एवं पुनर्प्राप्ति प्रणाली सहित, पुनरुत्पादित या प्रसारित नहीं किया जा सकता है।

ISBN 978 0 85738 161 3
10 9 8 7 6 5 4 3 2 1

जूली के लिए

अंतर्वस्तु
एमएपीएस
भारत का विभाजन, 1947
दक्षिण अफ्रीका, 1893
परिचय: नग्न महत्वाकांक्षा
1. बचपन और विवाह
2 लंदन पाठ
नेटाल में 3 रोमांचक यात्राएँ 4 चुनौती और पवित्रता
5 गरीबों की सेना
6 ग्राम कार्यकर्ता

7 □□□□ □□ □□□□□
8 □□□ □□□□□
9 □□□□□ □□□□
10 □□□□ □□□□□
11 □□□□□□ □□ □□□□□□
12 □□□□□□
□□□□□
□□□□□□□□□□
□□□□□□□
□□□□□□□□□□

मैं

परिचय

मेरा जीवन ही अपने आप में एक संदेश है।

1

1930 की विश्व-परिवर्तनकारी घटना हर राष्ट्रीय समाचार पत्र और न्यूज़रील में दर्ज की गई: गांधी ने ब्रिटिश साम्राज्य को चुनौती देते हुए अपने ही देश से बिना कर के तस्करी करके नमक निकाला था। 2 वृत्तांतों में बताया गया है कि उन्होंने समुद्र में स्नान किया, उस समय की तस्वीरों में सफेद वस्त्र पहने हुए छोटे से व्यक्ति को शुद्ध सफेद नमक के मैदानों के बीच दिखाया गया है, जो पवित्रता का प्रतीक है और दुनिया के सबसे बड़े साम्राज्य को चुनौती दे रहा है। जब उन्होंने सफेद नमक के क्रिस्टल सभी को दिखाने के लिए ऊपर उठाए, तो राष्ट्रवादी कवयित्री सरोजिनी नायडू ने भीड़ की जयजयकार के बीच कहा: 'हे मुक्तिदाता!'
इन मामलों में हमेशा की तरह, यह प्रतिष्ठित छवि एक नकली है, जो पत्रकारों, फिल्म निर्माताओं और चापलूस जीवनीकारों की मनगढ़ंत कहानी है। गांधी जी दांडी गए तो थे, लेकिन वहां की तस्वीरें और विवरण सोच-समझकर रची गई एक सुनियोजित घटना है। प्रसिद्ध तस्वीर में गांधी जी दांडी पहुंचने के तीन दिन बाद, तट से दस किलोमीटर और दांडी से पच्चीस किलोमीटर दूर पास के भीमराड में नमक उठाते हुए दिखाई दे रहे हैं। सरोजिनी नायडू दांडी पहुंचने पर वहां मौजूद थीं, लेकिन उन्होंने वह अक्सर चर्चित नारा नहीं लगाया (जो उनके लिए निराशाजनक रूप से घिसा-पिटा लगता)। 3 वह महान फोटोग्राफिक क्षण कैमरों के लिए उस घटना का पुनर्मंचन था जो एक कीचड़ भरे समुद्र तट पर घटी थी, जहां नमक दिखाई नहीं दे रहा था और इसलिए वह कार्य कम प्रतीकात्मक प्रतीत होता था।
गांधी की उपलब्धि नमक इकट्ठा करने के लिए कानून का उल्लंघन करने में नहीं थी (किसान तो यह काम बिना किसी डर के हमेशा करते थे): बल्कि यह घोषणा करने में थी कि वह कानून तोड़ने जा रहे हैं, फिर ऐसा करने के लिए चौबीस दिनों तक पैदल यात्रा की, जिससे मीडिया को टिप्पणी करने और अपनी कवरेज को सुनियोजित करने के लिए पर्याप्त समय मिल गया।

उनके राजनीतिक सहयोगी हैरान थे, क्योंकि वे नमक को कभी महत्व नहीं देते थे; ब्रिटिश अधिकारी भी इस तुच्छ कृत्य के कारण शक्ति प्रदर्शन नहीं करते थे। लेकिन गांधीजी प्रतीकात्मकता का महत्व जानते थे। वे अत्यंत आध्यात्मिक व्यक्ति थे, दिन में दो बार प्रार्थना करते थे और निरंतर ईश्वर का नाम जपते रहते थे। उनका खान-पान इतना सजग था कि वे अपने द्वारा खाए गए किशमिशों की गिनती तक करते थे। लेकिन उनके आध्यात्मिक ज्ञान से कहीं अधिक महत्वपूर्ण उनकी छवि के प्रति जागरूकता थी। उनके विचित्र वस्त्रों का संयोजन यह दर्शाता था कि उन्होंने स्वयं को संदेश के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया था: लंदन के एक वकील की टोपी और चप्पलें, एक बंधुआ मजदूर की सादी कमीज और धोती, और ब्रिटिश कपड़ों के आयात को अस्वीकार करने वालों के हाथ से बुने हुए कपड़े। अंत में, जब उनके समर्थकों की एक सेना हाथ से बुने हुए कपड़ों में सजी हुई थी, तो वे लगभग नग्न अवस्था में, केवल एक लंगोटी पहने हुए दिखाई दिए। यही छवि पूरी दुनिया में फैल गई - एक साम्राज्य के विरुद्ध लगभग नग्न संत। वे एक प्रतीक बन गए। उस समय केवल चार्ली चैपलिन और एडॉल्फ हिटलर को ही अपनी छवि के लिए ऐसी विश्वव्यापी पहचान मिली थी, जिससे हर कोई ठीक-ठीक जानता था कि वे किस चीज का प्रतिनिधित्व करते हैं।
गांधी जी का जीवन जीवनीकार के लिए एक अत्यंत चुनौतीपूर्ण विषय है: उनका जीवन बहुआयामी था और उनके बारे में समकालीन जानकारी का भंडार मौजूद है। कई लोगों के जीवन में केवल दो ही पहलू रुचिकर होते हैं। एक राष्ट्रीय नेता का राजनीतिक करियर शानदार हो सकता है और उनका यौन जीवन भी उथल-पुथल भरा हो सकता है, लेकिन इसके अलावा कुछ भी उल्लेखनीय नहीं होता। ऐसे समाज सुधारकों से मिलना असामान्य नहीं है जिनका भोजन या धर्म के साथ जटिल संबंध होता है; कई प्रसिद्ध हस्तियों का पारिवारिक जीवन भी उथल-पुथल भरा होता है। गांधी जी का राजनीतिक जीवन, आध्यात्मिक जीवन, पारिवारिक जीवन और यौन जीवन सभी अत्यंत रोचक थे; भोजन के साथ उनका संबंध तो अपने आप में एक पूरी किताब का विषय बन सकता है।
इन सभी क्षेत्रों में गांधी जी की स्वयं की गवाही मौजूद है, उनके
संकलित कार्यों की संख्या सौ खंडों में है: पुस्तकें, लेख, पत्र और भाषण। होमर जैसे कुछ विश्व व्यक्तित्वों के बारे में कोई विश्वसनीय जीवनी संबंधी जानकारी नहीं है, अब्राहम जैसे कुछ के बारे में बहुत कम जानकारी

है, लेकिन गांधी जी के बारे में प्रचुर मात्रा में जानकारी उपलब्ध है। गांधी जी जानते थे कि इस सामग्री का क्या उपयोग किया जाएगा, और वे इसे प्रोत्साहित नहीं कर रहे थे: 'मेरे लेखन को मेरे शरीर के साथ जला दिया जाना चाहिए। जो मैंने किया है वह अमर रहेगा, न कि जो मैंने कहा या लिखा है।' 4 उनकी चेतावनी के बावजूद, यह जीवनी प्राथमिक स्रोतों, उनके स्वयं के
लेखन और उनके करीबी लोगों के लेखन पर आधारित है। इनमें प्रमुख थे उनके सचिव महादेव देसाई, जिन्होंने 1917 से 1942 तक नौ खंडों की डायरी लिखी, और देसाई के सहायक और बाद में प्रधान सचिव प्यारेलाल, जो 1920 से गांधीजी की मृत्यु तक उनके साथ रहे। अपनी बहन सुशीला नायर, जो गांधीजी की चिकित्सक थीं, के साथ मिलकर प्यारेलाल ने दस खंडों की जीवनी लिखी। यहाँ प्रयुक्त अन्य सभी सामग्रियों में, प्रत्यक्षदर्शियों के कार्यों, विशेष रूप से डायरियों या समकालीन वृत्तांतों को, बाद की व्याख्याओं की तुलना में सर्वोपरि माना गया है।
गांधी जी की दो आत्मकथाएँ, एक 1920 के दशक तक के उनके जीवन पर और दूसरी दक्षिण अफ्रीका में उनके अनुभवों पर, घटनाओं का सटीक वर्णन नहीं करतीं (हालाँकि कभी-कभी वे एकमात्र रिकॉर्ड होती हैं), बल्कि उनके जीवन के विभिन्न पहलुओं को दिए गए सापेक्षिक महत्व को दर्शाती हैं। इस प्रकार, लंदन में छात्र जीवन के दौरान कानून और राजनीति पर उतना जोर नहीं दिया जाना चाहिए जितना उनके शाकाहारी आहार पर, क्योंकि यही उनका जुनून था। दक्षिण अफ्रीका में, उनके द्वारा स्थापित आदर्श समुदायों का जीवन और उनका स्वयं का ब्रह्मचर्य उनके कार्य का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा था। भारतीय अधिकारों के लिए सरकार से संघर्ष उनका कर्म था, और अपनी कामुकता से संघर्ष उनका व्यक्तित्व था। कई महत्वाकांक्षी पुरुषों की तरह, गांधी जी भी अत्यधिक कामुक थे: जीवनी लेखक के लिए रुचि का विषय यह है कि उन्होंने अपनी इस कामुकता को कैसे नियंत्रित करने का प्रयास किया, और अपने लेखन में वे इसके बारे में कितने बेबाक और स्पष्ट हो सकते थे।
गांधी जी के स्वयं के लेखन पर भरोसा करने से तुरंत विश्वास का प्रश्न उठता है: क्या उन्होंने सच कहा था? उनकी आत्मकथा का उपशीर्षक है "सत्य के साथ मेरे प्रयोगों की कहानी", लेकिन वे किस प्रकार के सत्य में विश्वास करते थे? कोई भी राजनेता कह सकता है कि उसने सत्य के साथ प्रयोग किए, जो झूठ बोलने का एक नरम तरीका होगा।

कुछ प्रमाणों से पता चलता है कि गांधी जी ने अपने प्रारंभिक सार्वजनिक जीवन में जो अक्षमता दिखाई, उसे बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया गया है, जिससे उनकी बाद की शानदार सफलताओं का नाटकीय चित्रण होता है। बाद के इतिहासकारों ने दक्षिण अफ़्रीकी राजनीति में उनके योगदान को बहुत बढ़ा-चढ़ाकर बताया है। दक्षिण अफ़्रीकी सरकार के साथ उनके कथित समझौते विफल होने के बाद उनके अनुयायी निश्चित रूप से निराश हुए थे। हालाँकि, गांधी जी की सत्यता का वास्तविक प्रश्न इन मामलों या उनकी व्याख्या पर नहीं उठता। केवल तथ्यों के संदर्भ में, गांधी जी का सत्य चयनात्मक है, न केवल इसलिए कि वे क्या छिपाना चाहते हैं, बल्कि इसलिए भी कि वे अपने अतीत में क्या खोजना चाहते हैं: उनका नैतिक विकास। आत्मकथा की शुरुआत उनके समाचार पत्र 'यंग इंडिया' में शिक्षाप्रद लेखों की एक श्रृंखला के रूप में हुई थी, जहाँ प्रत्येक अध्याय को अपने आप में एक नैतिक संदेश देना था। इसलिए, यह कृति पाठों की एक श्रृंखला के रूप में रची गई है, जिसे 'गांधी जी की परीक्षाएँ' या 'गांधी जी की प्रगति' कहा जाता है, जो उनकी पसंदीदा पुस्तकों में से एक, बून्यान की आध्यात्मिक जीवनी 'द पिलग्रिम्स प्रोग्रेस' के नाम पर है। गांधी जी किसी घटना की तथ्यात्मक सटीकता से अधिक उसके आध्यात्मिक अर्थ से चिंतित थे। गांधी के लिए सत्य की खोज निर्विवाद तथ्यात्मक सटीकता प्राप्त करने का प्रयास नहीं था, बल्कि आध्यात्मिक पूर्णता की ओर एक विस्तार था। उनके लिए सत्य शाश्वत था और इसके विपरीत, यदि कोई चीज क्षणभंगुर है तो वह सत्य नहीं हो सकती। उन्होंने लिखा, ‘अक्सर अपनी यात्रा में मुझे परम सत्य, ईश्वर की धुंधली झलक मिली है, और मेरा यह दृढ़ विश्वास बढ़ता जा रहा है कि केवल वही वास्तविक है और बाकी सब अवास्तविक है।’ 5 गांधी का सत्य ही दिव्यता थी: ‘सत्य ही ईश्वर है, या ईश्वर सत्य के सिवा कुछ नहीं है।’ 6 उन्होंने इस स्थिति तक पहुँचने के चरणों को समझाया: ‘“ईश्वर ही सत्य है” कहने के बजाय अब मैं कहता हूँ “सत्य ही ईश्वर है”… एक समय था जब मुझे ईश्वर के अस्तित्व पर संदेह था। उस समय भी मुझे सत्य के अस्तित्व पर संदेह नहीं था। यह सत्य कोई भौतिक गुण नहीं है; यह शुद्ध चेतना है। क्योंकि यह पूरे ब्रह्मांड को व्यवस्थित करता है, इसलिए यह ईश्वर है।’ 7
रोजमर्रा की जिंदगी में सत्य अपरिवर्तनीय नहीं था, यहाँ तक कि धार्मिक प्रश्नों के संदर्भ में भी। 1920 के दशक में गांधी ने अंतरजातीय संबंधों के विवादास्पद प्रश्न पर कहा था: ‘अंतरजातीय विवाह और साथ में भोजन करने

पर प्रतिबंध आत्मा के तीव्र विकास के लिए आवश्यक है।’ 8 अगले दशक में उन्होंने अपना विचार बदल दिया: ‘अंतरजातीय भोजन और अंतरजातीय विवाह पर प्रतिबंध हिंदू धर्म का हिस्सा नहीं है। यह एक सामाजिक प्रथा है जो शायद हिंदू धर्म के पतन के समय उसमें प्रवेश कर गई।’ 9 1940 के दशक तक वे कहने लगे थे: ‘मैं एक ही जाति में विवाह को बिल्कुल भी स्वीकार नहीं करता’, और उन्होंने जातिगत विवाहों के खिलाफ खुलकर भेदभाव करना शुरू कर दिया। 10 उन्होंने एक ब्राह्मण प्रोफेसर और एक अछूत महिला के विवाह को आशीर्वाद दिया, ‘और आगे घोषणा की कि इसके बाद उनका आशीर्वाद किसी भी विवाहित जोड़े को तब तक नहीं मिलेगा जब तक कि उनमें से एक हरिजन [अछूत] न हो।’ 11
अपने विचारों से भ्रमित लोगों को समझाते हुए उन्होंने कहा: ‘मुझे अपने विचारों में निरंतरता दिखाने की कोई चिंता नहीं है। सत्य की खोज में मैंने अनेक विचारों को त्याग दिया है और अनेक नई बातें सीखी हैं… मेरी चिंता यह है कि मैं क्षण-क्षण सत्य, अपने ईश्वर की पुकार का पालन करने के लिए तत्पर रहूँ, और इसलिए, जब किसी को मेरे किसी दो लेखन में कोई असंगति दिखाई दे, यदि उसे अभी भी मेरी मानसिक स्थिति पर विश्वास है, तो उसे उसी विषय पर लिखे गए दोनों लेखों में से बाद वाले को चुनना चाहिए।’ 12 उन्होंने अधिक स्पष्ट शब्दों में समझाया: ‘मेरा उद्देश्य किसी प्रश्न पर अपने पूर्व कथनों के साथ संगत होना नहीं है, बल्कि सत्य के साथ संगत होना है, जैसा कि वह किसी विशेष क्षण में मेरे सामने प्रकट होता है। इसका परिणाम यह हुआ है कि मैं सत्य से सत्य की ओर अग्रसर हुआ हूँ।’ 13 अतः गांधी के अपने जीवन के बारे में लिखे गए लेखों की व्याख्या करने में जीवनीकार दुविधा में पड़ जाता है।
यहां तक कि अहिंसा भी सीमित दायरे में थी – वह 1930 में भारतीयों के हथियार रखने के अधिकार सहित कई मांगों को मानने के बदले में सविनय अवज्ञा आंदोलन को समाप्त करने के लिए तैयार थे। द्वितीय विश्व युद्ध की शुरुआत में उन्होंने समझाया: ‘यदि पोलैंड में अत्यधिक वीरता और निस्वार्थता हो, तो इतिहास यह भूल जाएगा कि उसने हिंसा का सहारा लिया। उसकी हिंसा को लगभग अहिंसा ही माना जाएगा।’ 14 1940 के दशक में भारत में गृहयुद्ध देखने की उनकी तत्परता ने उन अंग्रेजों को भयभीत कर दिया जिनके साथ वे बातचीत कर रहे थे।

उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि उन्होंने महान धर्मों से सीखा है कि ‘हमें सांसारिक कार्यों में निष्क्रिय और ईश्वरीय कार्यों में सक्रिय रहना चाहिए, हमें अपनी सांसारिक महत्वाकांक्षा की सीमा देखनी चाहिए और हमारी धार्मिक महत्वाकांक्षा असीमित होनी चाहिए’। 15 वे प्रतिदिन अन्य धर्मों का उल्लेख करते थे, ईसाई भजन गाते थे और अपनी प्रार्थना सभाओं में कुरान के उद्धरणों का उपयोग करने के लिए सार्वजनिक निंदा का शिकार भी हुए, लेकिन उनकी मूल मान्यताएँ पूरी तरह से हिंदू ही रहीं। यह स्पष्ट है कि उन्हें अन्य धर्मों की ब्रह्मांडीय प्रणालियाँ बिल्कुल भी संतोषजनक नहीं लगीं – केवल हिंदू धर्म में ही आध्यात्मिक एकता का उत्तर था। उन्होंने पुनर्जन्म को एक तथ्यात्मक तथ्य के रूप में स्वीकार किया; 1909 में टॉल्स्टॉय को लिखते हुए उन्होंने कहा: ‘पुनर्जन्म या शरीर से दूसरे शरीर में जाना भारत में लाखों लोगों का, और वास्तव में चीन में भी, एक प्रिय विश्वास है। कई लोगों के लिए, लगभग यह कहा जा सकता है कि यह अनुभव का विषय है, अब अकादमिक स्वीकृति का विषय नहीं है। यह जीवन के कई रहस्यों की तर्कसंगत व्याख्या करता है।’ 16
गांधी जी और अन्य धर्मनिष्ठ हिंदुओं के लिए, ब्रह्मांड विज्ञान का व्यक्तिगत पहलू असीम परिशोधनों के माध्यम से पूर्णता की ओर आत्मा की यात्रा थी। गांधी जी ने इसे 'आत्म-साक्षात्कार, ईश्वर के साक्षात दर्शन, मोक्ष प्राप्ति' के रूप में वर्णित किया। उन्होंने कहा, 'मैं इसी लक्ष्य की खोज में जीता हूँ, चलता हूँ और अस्तित्व रखता हूँ।' 17 मोक्ष पुनर्जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति का शब्द है; इससे मुक्ति कोई मामूली लक्ष्य नहीं था, बल्कि एक ऐसा लक्ष्य था जिसे गांधी जी अपनी पहुँच में देखते थे: 'मैं स्वयं को जानने, इसी जीवन में मोक्ष प्राप्त करने के लिए उत्सुक हूँ। मेरी राष्ट्रीय सेवा मेरी आत्मा को शरीर के बंधन से मुक्त करने के प्रशिक्षण का एक हिस्सा है। इस प्रकार देखा जाए तो मेरी सेवा को विशुद्ध रूप से स्वार्थी माना जा सकता है। मुझे पृथ्वी के नश्वर राज्य की कोई इच्छा नहीं है। मैं स्वर्ग के राज्य के लिए प्रयासरत हूँ जो मोक्ष है।' 18 गांधी जी के कभी-कभी विरोधाभासी व्यवहार का यही सार है: वे अत्यंत महत्वाकांक्षी व्यक्ति थे, लेकिन यह कोई साधारण महत्वाकांक्षा नहीं थी। उन्हें नमक की कोई परवाह नहीं थी और वे इसे अपने आहार से पूरी तरह हटाने का प्रयास कर रहे थे; वे नील श्रमिकों के लिए अभियान चलाते थे जबकि वे कपड़े

रंगने के विरोधी थे; वे मिल में बने कपड़े के उपयोग का विरोध करते हुए मिल श्रमिकों का समर्थन करते थे; वे चाहते थे कि भारतीय भारत पर शासन करें, लेकिन उनके पास चुनाव और विधानसभाओं के लिए समय नहीं था; वे धनी लोगों का भरपूर समर्थन प्राप्त करते हुए गरीबी के मूल्यों को बढ़ावा देते थे। वास्तव में इनमें से किसी भी बात का कोई महत्व नहीं था; उनका उद्देश्य इन क्षणभंगुर चीजों को प्राप्त करना नहीं था, बल्कि आध्यात्मिक शक्ति अर्जित करना था। जैसा कि उन्होंने कहा, जीवन ही उनका संदेश था। उनकी महत्वाकांक्षा श्रमिकों के लिए न्याय या भारतीय स्वतंत्रता नहीं थी - ये क्षणभंगुर मांगें थीं। गांधी जी का उद्देश्य आध्यात्मिक पूर्णता से कम कुछ भी नहीं था।

1

बचपन और विवाह
गांधी ने दिवाली के शीतकालीन त्योहार के समय अपने बचपन के भारत को याद करते हुए लिखा, 'आप एक सार्वजनिक सड़क के कोने के पास खड़े हैं।' उन्होंने आगे लिखा:
दूध जैसे सफेद रंग का सूट पहने, जिसे उसने पहली बार पहना है,
चरवाहे को ध्यान से देखिए। उसकी लंबी दाढ़ी उसके चेहरे के पास
ऊपर की ओर उठी हुई है और पगड़ी के नीचे बंधी है। वह कुछ टूटे-
फूटे छंद गा रहा है। लाल और हरे रंग से रंगे और चांदी से सजे
सींगों वाली गायों का एक झुंड उसके पीछे चल रहा है। थोड़ी देर बाद आपको छोटी-छोटी लड़कियों की भीड़ दिखाई देगी, जिनके सिर पर रखे कुशनों पर मिट्टी के छोटे-छोटे बर्तन रखे हैं... फिर उस बड़े आदमी को देखिए जिसकी सफेद मूंछें हैं और उसने एक बड़ी सफेद
पगड़ी पहनी है, और उसकी पगड़ी में एक लंबी सरकंडे की कलम फंसी
हुई है। उसकी कमर के चारों ओर एक लंबा दुपट्टा लिपटा हुआ है,
जिसमें चांदी की स्याही की बोतल लगी है। आप जानते ही होंगे कि
वह एक बड़ा बैंकर है।
यह वह संसार था जिसमें मोहनदास करमचंद गांधी का जन्म 2 अक्टूबर 1869
को बंदरगाह नगर पोरबंदर में हुआ था। वे वैश्य जाति के थे, जो व्यापारियों, कारीगरों और जमींदारों का समुदाय है और हिंदू समाज के चार प्रमुख वर्गों में आध्यात्मिक पदानुक्रम में ब्राह्मण और क्षत्रिय के बाद तीसरे स्थान पर है, लेकिन शूद्र से ऊपर है। वे इसी जाति के एक उपवर्ग, बनिया से थे, जो आमतौर पर व्यापारी होते थे - इतने अधिक व्यापारी थे कि अंग्रेजों ने 'व्यापारी' के लिए बनिया शब्द का प्रयोग करना शुरू कर दिया था। इस समुदाय के भीतर, भारतीय सामाजिक संगठन की सामान्य जटिलता के साथ, गांधी का परिवार एक और उपवर्ग, मोध से संबंधित था।
गांधी जी कहते हैं कि उनके पूर्वज मूल रूप से किराना व्यापारी थे,
लेकिन उनके जन्म के समय तक वे सार्वजनिक सेवा में स्थापित हो चुके थे। उनके दादा उत्तमचंद गांधी के समय से ही उनके परिवार के पुरुष सदस्य काठियावाड़ की रियासतों में प्रधानमंत्री रहे थे। काठियावाड़ गुजरात का

प्रायद्वीपीय भाग है जो अरब सागर में फैला हुआ है। यह वही प्रांत का हिस्सा था जहाँ से गांधी जी के कट्टर विरोधी मोहम्मद अली जिन्ना का व्यापारी परिवार आया था।
मोहनदास गांधी, करमचंद गांधी की अंतिम पत्नी पुतलीबाई के तीन पुत्रों और एक पुत्री में सबसे छोटे थे। करमचंद गांधी, गांधी के जन्म के समय पोरबंदर के प्रधानमंत्री थे। बाद में मोहनदास गांधी राजकोट और वांकानेर के प्रधानमंत्री बने। काठियावाड़ में लगभग दो सौ रियासतें थीं, लेकिन उनमें से केवल चौदह में ही स्वतंत्र राजनीतिक व्यवस्था थी। यह व्यवस्था तब तक ही मान्य थी जब तक वे ब्रिटिश राजनीतिक एजेंट द्वारा निर्धारित सीमाओं के भीतर रहती थीं, जो उनके 'सलाहकार' के रूप में कार्य करता था। गांधी अपने पिता में जिन गुणों की प्रशंसा करते थे, वे थे उनका
सत्यवादी, साहसी और उदार होना। नकारात्मक पक्ष में, उन्होंने टिप्पणी की कि उनके पिता चिड़चिड़े स्वभाव के थे और 'कुछ हद तक वे सांसारिक सुखों में लिप्त हो सकते थे'। 2 गांधी ने इन गुणों को प्रतिबिंबित किया: वे निश्चित रूप से साहसी थे, खासकर इसलिए कि उन्हें वयस्कता तक भी शर्म को दूर करना पड़ा; वे अपने कौशल के प्रति बहुत उदार थे, जैसे कि दक्षिण अफ्रीकी भारतीय मजदूरों की मदद करने में; और उन्होंने सत्य के प्रति गहन चिंतन को आध्यात्मिक स्तर तक पहुँचाया। उनकी परिभाषा थी कि जिस सत्य की वे आकांक्षा रखते थे, वह 'शब्दों में सत्यनिष्ठा, बल्कि विचारों में भी सत्यनिष्ठा, और न केवल हमारी अवधारणा का सापेक्ष सत्य, बल्कि परम सत्य, शाश्वत सिद्धांत, अर्थात् ईश्वर' था। 3
दूसरी ओर, अपने पिता में जिन गुणों को वे नापसंद करते थे, उनमें से एक यह था कि गांधी जी आम जनता के प्रति शायद ही कभी उग्र स्वभाव के थे, हालांकि वे अपनी पत्नी और परिवार के अन्य सदस्यों के प्रति अक्सर उग्र हो जाते थे। शायद अपने पिता के 'कामुक' स्वभाव से खुद को दूर रखने की इच्छा से प्रेरित होकर, गांधी जी ने शराब, तंबाकू और मांसाहार से परहेज किया; और उन्होंने अपनी यौन इच्छाओं को नियंत्रित करने के लिए अभ्यास किया। उन्होंने ऐसे यौन अभ्यासों और उनके सार्वजनिक विवरणों को उस स्तर तक पहुँचाया जिसे कई लोग अश्लील मानते थे।
उनके पिता सामान्य रूप से धार्मिक थे, हालांकि उन्होंने अपने जीवन के अंत तक कोई विशेष प्रशिक्षण या नियमित धार्मिक अनुष्ठान नहीं किया था।

अंत में उन्होंने प्रतिदिन भगवद् गीता का पाठ करना शुरू कर दिया। इस क्षेत्र में गांधी की माता का प्रभाव कहीं अधिक गहरा था। उन्होंने कहा: ‘यदि आप मुझमें कोई पवित्रता देखते हैं, तो वह मुझे मेरी माता से विरासत में मिली है, न कि मेरे पिता से।’4 वह अत्यंत धार्मिक थीं - गांधी ने उनकी ‘संतता’ का वर्णन किया।5 यह प्रतिदिन मंदिर जाने, स्नान और शौच जैसे अनुष्ठानों के माध्यम से आध्यात्मिक और शारीरिक स्वच्छता बनाए रखने, प्रार्थना किए बिना भोजन न करने और वर्षा ऋतुओं के चार महीनों, चतुर्मास के दौरान उपवास रखने में प्रकट होता था। गांधी ने उल्लेख किया कि ‘उनके लिए लगातार दो या तीन उपवास रखना कोई बड़ी बात नहीं थी’। उन्होंने अपने लिए नए-नए व्रत बनाए; एक चतुर्मास के दौरान, दिन में एक बार भोजन करने के बजाय, वह केवल एक दिन छोड़कर भोजन करती थीं; एक बार, वह सूर्य को देखे बिना भोजन नहीं करती थीं। यह युवा गांधी के लिए एक परीक्षा थी। वे बारिश से सूर्य के ढके होने पर भी आकाश की ओर देखते रहते थे, ताकि सूर्य के निकलते ही तुरंत अपनी माँ को बता सकें और उन्हें उस दिन भोजन करने दें। उनकी माँ स्वयं देखने के लिए दौड़तीं, लेकिन यदि सूर्य दिखाई नहीं देता, तो वे अपने वचन का पालन करतीं। वे कहतीं, ‘कोई बात नहीं, भगवान नहीं चाहते कि मैं आज भोजन करूँ’, और वे अपने कर्तव्यों में लग जातीं। गांधी पर इसका प्रभाव यह हुआ कि उनके मन में धार्मिक अनुष्ठानों और दैनिक जीवन के बीच घनिष्ठ संबंध की समझ विकसित हुई, जिसे उन्होंने एक परिपक्व व्यक्ति के रूप में हमेशा प्रदर्शित किया। उन्हें उपवास के अनुशासन से परिचित कराया गया, जो हिंदू और जैन धर्मों का अभिन्न अंग है (जैसा कि ईसाई और मुस्लिम धर्मों में भी, उपवास और रमजान के विभिन्न रूपों के साथ है)। गांधी ने उपवास को एक नए स्तर पर पहुँचाया।
पुतलीबाई से ही गांधीजी ने स्वच्छता और साफ-सफाई के प्रति अपना सजगता भाव प्राप्त किया था। उनके प्रभाव में सार्वभौमिकता का भी कुछ अंश था, क्योंकि उनके माता-पिता पनामी संप्रदाय के सदस्य थे, जिसका उद्देश्य इस्लाम और हिंदू धर्म के सर्वोत्तम तत्वों को समाहित करना था। हालांकि, जाति के मामले में पुतलीबाई एक रूढ़िवादी हिंदू थीं। उन्होंने अपने बच्चों से कहा था कि वे शौचालय साफ करने वाले 'अछूत' लड़के को न छुएं; यदि गलती से किसी अछूत से संपर्क हो जाए, तो उन्हें विधिपूर्वक स्नान करना होगा; यदि यह संभव न हो, तो गुजरते हुए किसी मुसलमान को छूने से भी

अपवित्रता फैल जाएगी। बड़े होने पर, उन्होंने पुतलीबाई से इस बात पर असहमति जताई: 'मैंने अपनी माँ से कहा कि अछूतों के साथ शारीरिक संपर्क को पाप मानना पूरी तरह गलत है,' उन्होंने याद किया। 6 गांधीजी का मानना था कि यदि ईश्वर सर्वव्यापी है, तो ईश्वर अछूतों में भी विद्यमान है। उनका हिंदू धर्म एकेश्वरवादी था: सभी देवता एक ही दिव्य सत्ता के विभिन्न रूप थे।
गुजरात प्राचीन जैन धर्म के अनुयायियों के प्रमुख केंद्रों में से एक था, जिनके लिए जीवित प्राणियों को चोट न पहुँचाने का सिद्धांत परम पवित्र है, और जो आध्यात्मिक स्वतंत्रता और अहिंसा पर भी बल देते हैं। जैन धर्म के अनुयायी महत्वपूर्ण विद्वान हैं, जिन्होंने भारत के कुछ सबसे प्राचीन पुस्तकालयों की स्थापना की है। गांधी जी ने अपने प्रारंभिक जीवन में अध्ययन के प्रति कोई विशेष रुचि नहीं दिखाई; उदाहरण के लिए, उन्होंने 1890 में, यानी बीस वर्ष की आयु तक भगवद गीता नहीं पढ़ी थी, और फिर उन्होंने इसे अंग्रेजी अनुवाद में पढ़ा। उनमें अपने प्रभावों से जो कुछ भी आकर्षक लगता था, उसे ग्रहण करने और बाकी को त्यागने की स्वाभाविक प्रवृत्ति थी; उनके मामले में यह असामान्य था क्योंकि वे नैतिक संदेश चाहते थे, न कि धार्मिक कहानियों में मिलने वाला रोमांच।
हिंदू साहित्य की प्रेरणादायक कहानियों से वे बहुत प्रभावित हुए, उनका मानना था कि ये कहानियाँ मात्र कल्पनाएँ नहीं, बल्कि अनुकरणीय नैतिक उदाहरण हैं। उन्होंने श्रवण की कहानी का विशेष रूप से उल्लेख किया, जो अपने वृद्ध माता-पिता के प्रति इतने समर्पित थे कि उन्हें तीर्थयात्रा पर अपने साथ ले गए; और राजा हरिश्चंद्र की कहानी का, जिन्होंने कभी झूठ नहीं बोला और हमेशा अपने वचन का पालन किया। हरिश्चंद्र के नैतिक साहस ने उन्हें ऐसी परिस्थितियों में डाल दिया जहाँ उन्हें अपना राज्य त्यागना पड़ा, फिर अपनी पत्नी और पुत्र को बेचना पड़ा और अंत में स्वयं को दासता में समर्पित करना पड़ा। उनके इस व्यवहार की देवताओं ने प्रशंसा की और उनके सद्गुणों का फल मिला। गांधी ने कहा कि वे इस कहानी से बहुत प्रभावित थे और सत्य की खातिर हरिश्चंद्र के समान कष्ट सहना चाहते थे।
जब गांधीजी लगभग सात वर्ष के थे, तब उनके पिता परिवार को राजकोट ले गए, जहाँ उन्हें प्रधानमंत्री और राजस्थानी दरबार का सदस्य नियुक्त किया गया था। यह दरबार अंग्रेजों द्वारा स्थानीय विवादों के निपटारे के लिए

स्थापित किया गया था। इस प्रकार गांधीजी को ब्रिटिश और रियासतों दोनों की शासन व्यवस्था के संचालन का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त हुआ। गांधीजी के जीवनकाल के अंत तक भारत के दो-पाँचवें भूभाग और एक-पाँचवें जनसंख्या पर स्थानीय शासकों का शासन था। शेष भाग पर अंग्रेजों का सीधा शासन था, और प्रशासनिक पदानुक्रम में शीर्ष पर वायसराय, ब्रिटिश राज का प्रतिनिधित्व करता था।
गांधी जी ने बाद में कहा कि वे शायद एक उदासीन विद्यार्थी थे – उन्हें अपने पहले स्कूल के बारे में बस इतना ही याद था कि उन्हें पहाड़े याद करने में कठिनाई होती थी। प्राथमिक विद्यालय में भी उनकी पढ़ाई के बारे में कुछ खास याद नहीं है। वे खुद को इतना शर्मीला बताते थे कि वे स्कूल खुलते ही वहाँ पहुँच जाते थे और स्कूल का दिन खत्म होते ही घर भाग जाते थे ताकि उन्हें किसी से बात न करनी पड़े, क्योंकि उन्हें लोगों के उपहास का डर रहता था। वे कद में छोटे और कमजोर थे, भूतों, चोरों और साँपों से डरते थे और बिना रोशनी के सो नहीं पाते थे। उनकी नर्स उन्हें डर के समय 'रामनामा' – भगवान का नाम – दोहराने के लिए कहती थी। वे इस सीख को कभी नहीं भूले और बाद में उन्होंने इस अभ्यास को 'एक सूरज बताया जिसने मेरे सबसे अंधेरे समय को रोशन किया'। 7 शारीरिक पीड़ा के समय भी उन्हें जोर से भगवान का नाम दोहराते हुए सुना गया था।
गांधी जी के तीन भाई-बहन थे: एक बड़ी बहन, रालियतबेन, जिनका जन्म 1862
में हुआ था, और दो भाई, लक्ष्मीदास (1863) और करसन्दस (1866)। उनके शुरुआती खेल के साथी उनके परिवार के सदस्य थे, विशेषकर करसन्दस। वे सभी अपनी स्वतंत्रता पर लगाए गए प्रतिबंधों से परेशान रहते थे और इस बात से नाराज़ थे कि उन्हें हर काम के लिए अनुमति लेनी पड़ती थी। उन्होंने सिगरेट पीना शुरू किया, पहले अपने चाचा द्वारा फेंके गए सिगरेट के टुकड़े, फिर सिगरेट खरीदने के लिए नौकर से पैसे चुराने लगे (संभवतः घर में ईमानदारी की उम्मीद के कारण नौकर आसानी से उपलब्ध था)। उनकी बचकानी नासमझी उनके अगले कारनामे से ज़ाहिर हुई – वे अपनी स्वतंत्रता की कमी से इतने निराश थे कि उन्होंने आत्महत्या करने का फैसला किया और जंगल से एक ज़हरीले पौधे के बीज प्राप्त किए। लेकिन उनका साहस टूट गया और उन्होंने बीज नहीं खाए; गांधी जी ने बाद में कहा कि इस घटना ने उन्हें दूसरों द्वारा आत्महत्या करने की धमकियों को हल्के में लेने के लिए प्रेरित किया।

गांधी जी जब शिशु ही थे, तब उनके माता-पिता ने उनके लिए एक पत्नी की तलाश शुरू कर दी थी, जो काठियावाड़ (और भारत के अन्य हिस्सों) में प्रचलित प्रथा के अनुसार किसी उपयुक्त लड़की से सगाई कराने का रिवाज था। उनकी तीन बार सगाई हुई, और पहली दो लड़कियों की मृत्यु ने इस प्रथा के प्रचलन का कारण स्पष्ट कर दिया: भावी जीवनसाथी को 'आरक्षित' रखना बुद्धिमानी थी, इस डर से कि विवाह के समय उपयुक्त जाति और सामाजिक प्रतिष्ठा वाली कोई लड़की न बचे।
जिस स्थान पर विवाह माता-पिता द्वारा तय किए जाते थे, वहां सगाई एक स्थापित प्रथा थी। गांधीजी की तीसरी बार सगाई 1876 में सात वर्ष की आयु में हुई थी, लेकिन संभवतः उन्हें इसके बारे में बताया भी नहीं गया था। बाल विवाह इस प्रक्रिया का अनिवार्य हिस्सा नहीं था, हालांकि यह सांस्कृतिक रूप से स्वीकार्य था। तेरह वर्ष की आयु में गांधीजी का विवाह उनके लिए निरंतर घृणा का विषय था। उन्होंने इसे अपने जीवन के सत्य को लिखने के दौरान निगलने वाले 'कड़वे घूंटों' में से एक बताया। उन्होंने लिखा, 'मैं इतनी कम उम्र में विवाह के समर्थन में कोई नैतिक तर्क नहीं देख सकता।' वास्तव में, गांधी जी को हिंदू विवाह रीति-रिवाजों से घोर घृणा थी, जिन्हें वे व्यर्थता मानते थे, और उनमें उन्हें कोई आनंद या यहाँ तक कि कोई सार्थकता भी दिखाई नहीं देती थी।
दूल्हा-दुल्हन के माता-पिता अक्सर खुद को बर्बाद कर लेते हैं...
वे अपना धन-दौलत और समय दोनों बर्बाद कर देते हैं। महीनों
तैयारियों में लग जाते हैं - कपड़े और गहने बनवाने से लेकर खाने
के बजट तैयार करने तक। हर कोई पकवानों की संख्या और किस्म में एक-दूसरे से आगे निकलने की होड़ में लगा रहता है। औरतें, चाहे
उनकी आवाज़ हो या न हो, गाते-गाते अपनी आवाज़ खराब कर लेती हैं,
बीमार भी पड़ जाती हैं और पड़ोसियों की शांति भंग करती हैं।
बदले में, पड़ोसी चुपचाप इस शोर-शराबे, गंदगी और मैल को सहन कर
लेते हैं, जो दावतों के अवशेष होते हैं, क्योंकि वे जानते हैं कि
एक दिन उन्हें भी ऐसा ही व्यवहार करना पड़ेगा।
यह मात्र बाल विवाह की आलोचना ही नहीं है, बल्कि विवाहों पर दिए जाने वाले ध्यान के प्रति असहिष्णुता भी दर्शाती है – जो आम लोगों के लिए महत्वपूर्ण मानी जाने वाली चीजों के प्रति गांधीजी की सामान्य अरुचि का

एक हिस्सा है। यहाँ वे एक ऐसा लक्षण भी दिखाते हैं जो वयस्क जीवन में विकसित होगा: विवाह बंधन के प्रति असहिष्णुता, जो पति-पत्नी और परिवार के साथ संबंध को ईश्वर के साथ अधिक आध्यात्मिक मिलन और व्यापक मानवता से जुड़ाव की तुलना में अपेक्षाकृत कम महत्वपूर्ण मानती है।
1883 में गांधी जी का विवाह उनके लिए विशेष रूप से दुर्भाग्यपूर्ण रहा, क्योंकि वे सांसारिक सुख-सुविधाओं से अधिक प्रभावित नहीं थे। उनके परिवार ने उनका, उनके भाई करसनदास का और उनके लगभग समान उम्र के चचेरे भाई का विवाह एक ही समारोह में करने का निर्णय लिया। इस प्रकार विवाह का खर्च गांधी जी के पिता और चाचा के बीच बाँट लिया गया, और सारी परेशानी एक ही बार में समाप्त हो गई। यह उन दोनों पुरुषों के लिए वरदान साबित हुआ, जो उम्रदराज हो रहे थे और अपने अंतिम बच्चों का विवाह यथाशीघ्र संपन्न कराना चाहते थे।
जैसे-जैसे शादी नज़दीक आती गई, उनके पिता को सरकारी कामों में व्यस्त रहना पड़ा, और अंत में उन्हें राजकोट से पोरबंदर तक की पाँच दिन की यात्रा तीन दिनों में पूरी करनी पड़ी। उनकी गाड़ी पलट गई और करमचंद गंभीर रूप से घायल हो गए, लेकिन क्योंकि सारी योजनाएँ पहले से ही बन चुकी थीं, इसलिए शादी एक विशेष रूप से किराए पर लिए गए हॉल में संपन्न हुई। बाद में, उनके पिता की चोट ने गांधीजी को अपनी शादी के बारे में अरुचि से सोचने का एक और कारण दिया, लेकिन उस समय इसका मतलब केवल दिलचस्प कपड़े, संगीत और रस्में और 'खेलने के लिए एक अजनबी लड़की' था। शादी के लिए उन्हें स्कूल से निकाल दिया गया था, और इस आयोजन की तैयारी में उन्होंने लगभग एक साल की पढ़ाई छोड़ दी थी।
कस्तूरबाई कपाड़िया की उम्र गांधी जी के बराबर थी। उनका जन्म अप्रैल 1869 में हुआ था, इसलिए मई में उनके विवाह के समय वह चौदह वर्ष की और गांधी जी तेरह वर्ष के थे। गांधी जी ने बाद में अपने पिता की इस बात के लिए कड़ी आलोचना की कि उन्होंने उनका विवाह बाल विवाह से कर दिया (हालाँकि यह आलोचना उन्होंने अपने पिता की उपस्थिति में नहीं की थी)। उस समय ब्रिटेन में सहमति की आयु तेरह वर्ष थी और विवाह की आयु लड़की के लिए बारह और लड़के के लिए चौदह वर्ष थी; गांधी जी के विवाह जैसा विवाह ब्रिटेन में संभव था, हालाँकि वास्तव में वहाँ की परंपराओं के अनुसार ऐसे कम उम्र के विवाह

वर्जित थे। काठियावाड़ के मानकों के अनुसार गांधी जी का विवाह बाल विवाह नहीं था - अधिकांश लड़कियाँ आठ वर्ष की आयु तक विवाह कर दी जाती थीं। कस्तूरबाई (अपने घर की बागडोर संभालने के बाद कस्तूरबा नाम का इस्तेमाल किया जाने लगा) का जन्म भी पोरबंदर में हुआ था। उनके माता-पिता गोलकलदास कपड़िया, जो कपड़े, अनाज और कपास के व्यापारी और पोरबंदर के पूर्व महापौर थे, और उनकी पत्नी व्रैकुनवेर्बा थीं। वे भी मोध बनिया संप्रदाय के थे (दरअसल, अगर गांधी और कस्तूरबाई का स्वभाव एक-दूसरे के अनुकूल न होता, तो उनके माता-पिता उनका विवाह न करवाते)। उनका घर गांधी परिवार के घर के पास ही था, हालांकि बचपन में वे साथ नहीं खेले होंगे। जब गांधी स्कूल में नहीं होते थे, तो वे किसी जुलूस में शामिल होने या पास के मंदिर के प्रांगण में पेड़ों पर चढ़ने के लिए स्वतंत्र होते थे, जबकि कस्तूरबाई को न तो स्कूल भेजा जाता था और न ही बाहर खेलने दिया जाता था, बल्कि उन्हें घर पर ही रखा जाता था ताकि वे मां और गृहस्थी की भूमिका निभा सकें। उन्हें अनुसूया जैसी अच्छी पत्नियों की कहानियां सुनाई जाती थीं, जिन्होंने परीक्षा के समय भी अपनी पवित्रता बनाए रखी, और सीता, जिन्होंने अनेक कष्टों में भी अपने पति राम के प्रति निष्ठा बनाए रखी।
कस्तूरबाई अपने साथ नए कपड़ों से भरा देवदार का संदूक और सोने के आभूषणों से भरा सागौन का बक्सा लाई थीं। शादी से पहले, दूल्हा और दुल्हन के शरीर पर परिवार के सदस्यों द्वारा हल्दी, बादाम, चंदन और मलाई लगाई गई। ज्योतिषीय भविष्यवाणियों के अनुसार शुभ समय पर आयोजित संस्कृत समारोह में, नवविवाहित जोड़े ने एक साथ अपने पहले सात कदम उठाए, प्रत्येक कदम के महत्व पर कुछ पंक्तियाँ बोलते हुए, अंतिम कदम पर, गांधी ने घोषणा की कि यह कदम 'यह दर्शाता है कि हम हमेशा मित्र बनकर रहें' और कस्तूरबाई ने उत्तर दिया: 'यह मेरे अच्छे कर्मों का फल है कि आप मेरे पति हैं। आप मेरे सबसे अच्छे मित्र, मेरे सर्वोच्च गुरु और मेरे परम स्वामी हैं।'
उस रात, उन्होंने बताया, वे एक-दूसरे का सामना करने में बहुत घबराए हुए थे, हालाँकि उनके भाई की पत्नी ने उन्हें यौन संबंध की बुनियादी बातें समझा दी थीं और उन्होंने संकेत दिया कि किसी ने कस्तूरबाई को भी सिखाया होगा। 'ओह, वह पहली रात,' वे लिखते हैं, 'दो मासूम बच्चे अनजाने में जीवन के सागर में कूद पड़े।' 10 गांधी द्वारा बाद में अपने यौन स्वभाव को अस्वीकार करने के कारण वे अपनी 'कामुक इच्छा' के कुछ ही विवरणों को बताने से कतराते

हैं; वे लिखते हैं: 'मैं अपनी शर्म पर पर्दा डालना चाहता हूँ।' वास्तव में, ऐसा लगता है कि उनकी यौन इच्छा सामान्य और स्वस्थ थी, जिसकी अभिव्यक्ति को, उनकी कम उम्र के बावजूद, स्थानीय रीति-रिवाजों और उनके परिवार द्वारा स्वीकृति प्राप्त थी। बाद में चिंतन करने पर, इस मामले में घृणा की भावना उन्होंने स्वयं उत्पन्न की।
ऐसा नहीं था कि ये नौजवान दुनिया के सामने बिल्कुल अकेले थे – बल्कि
इसके विपरीत, वे राजकोट में गांधी जी के पारिवारिक घर में रहते थे, जो उनकी प्रिय माता के नियंत्रण में था। सौभाग्य से, नई दुल्हन पुतलीबाई वैसी अत्याचारी सास नहीं थीं, जिनसे नई दुल्हनें अक्सर नफरत करती थीं। युवा पति-पत्नी को दिन के समय एक-दूसरे से दूर रहना होता था: स्नेह का इज़हार करना अशोभनीय माना जाता था; वे केवल अपने छोटे से शयनकक्ष में ही साथ रहते थे। विवाह के क्षेत्र में अनुभवहीन होने के कारण, गांधी जी वैवाहिक प्रेम, मितव्ययिता, बाल विवाह और ऐसे ही अन्य विषयों पर चर्चा करने वाले छोटे- छोटे पर्चे पढ़ते थे। उन्होंने कहा: 'मेरी आदत थी कि जो मुझे पसंद नहीं आता था, उसे मैं भूल जाता था और जो मुझे पसंद आता था, उसे व्यवहार में लाता था।' इन पर्चों से उन्होंने जो एक सिद्धांत सीखा, वह था पति का अपनी पत्नी के प्रति वफादार रहने का कर्तव्य। उन्होंने इस विचार को अपनाया और इसे अपनी पत्नी पर भी लागू किया, उनसे वफादारी की अपेक्षा रखी। यह कोई बोझ नहीं था, लेकिन वह अपने अलावा किसी और के प्रति प्रतिबद्धता को लेकर ईर्ष्यालु होने लगा, उस पर घर में ही रहने का दबाव डालने लगा और उसे बताता कि वह उसकी अनुमति के बिना कहीं नहीं जा सकती। उसने ऐसे अनुचित प्रतिबंधों को मानने से इनकार कर दिया और मंदिर और दोस्तों से मिलने जाती रही। गांधी ने लिखा, 'मेरे द्वारा अधिक संयम बरतने से वह और अधिक स्वतंत्रता लेने लगी, और मैं और अधिक क्रोधित होता गया।' पति के अधिकार का दुरुपयोग करने वाली इस किशोरी को गांधी की दृष्टि में मुक्ति मिल गई, क्योंकि उनकी कठोरता प्रेम और 'उसे एक पवित्र जीवन जीने और वह सब सीखने की इच्छा' पर आधारित थी जो मैंने सीखा था।
कस्तूरबाई ने कोई औपचारिक शिक्षा प्राप्त नहीं की थी और वे निरक्षर थीं, इसलिए गांधी जी ने उन्हें सुधारने का बीड़ा उठाया। उन्हें कई बाधाओं का सामना करना पड़ा, क्योंकि वे अपनी अज्ञानता से अविचलित थीं, इसलिए शाम के समय जो भी शिक्षण का समय मिलता था, वह उनकी इच्छा के विरुद्ध ही करना

पड़ता था। उनकी अनिच्छा के साथ-साथ, गांधी जी को इस बात का भी अफसोस था कि उनके प्रेम में इतना लीन होने के कारण उन्हें पढ़ाने का समय नहीं मिलता था। उनकी शिक्षा प्रारंभिक अवस्था में ही रह गई, जिसका दोष गांधी जी ने बाद में उनके सक्रिय यौन जीवन पर डाला: "मुझे पूरा विश्वास है कि यदि मेरा प्रेम उनके प्रति वासना से पूरी तरह मुक्त होता, तो वे आज एक विद्वान महिला होतीं।"
विवाह के कारण हुए विराम के बाद गांधी जी ने हाई स्कूल में अपनी पढ़ाई जारी रखी, जहाँ वे एक उत्कृष्ट विद्यार्थी बन गए थे और अपने शिक्षकों के स्नेह के पात्र बन गए थे। उन्हें शायद ही कभी कोई दंड मिलता था, लेकिन अगर मिलता भी था, तो दंड के लिए खुद को दोषी मानने की शर्म उन्हें सजा से कहीं अधिक बुरी लगती थी। समय के साथ शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी हो गया और उन्होंने संस्कृत सीखना भी शुरू कर दिया, जो उन्हें शुरुआत में कठिन लगा, लेकिन अंततः उनके लिए लाभदायक साबित हुआ क्योंकि यह हिंदू धर्म के पवित्र ग्रंथों की भाषा थी।
गांधी ने अपनी परवरिश के खिलाफ आम किशोरों की तरह ही विद्रोह किया: वे अपने भाई के एक मित्र, शेख मेहताब की संगति में बुरी आदतों में पड़ गए। मेहताब उनसे उम्र में बड़ा था और गांधी को यह गलतफहमी थी कि वे उसे सुधार सकते हैं। उन्होंने यह बात अपनी पत्नी, माता और भाई से भी कही, जिन्होंने उन्हें उस लड़के से मेलजोल न रखने की सलाह दी। आत्मकथा में मेहताब गांधी के एक काले प्रतिरूप के रूप में दिखाई देता है – वह उन सभी बुराइयों को अपनाता है जिनका गांधी ने अनुभव किया लेकिन जिनसे वे बचते रहे। वह गांधी के जीवन की नैतिक गाथा में प्रलोभन देने वाला पात्र है। आत्मकथा में उसका नाम नहीं है, शायद इसलिए क्योंकि जब 1920 के दशक में ये संस्मरण प्रकाशित हुए, तो गांधी यह बात उजागर नहीं करना चाहते थे कि उनके जीवन के कुछ पूरी तरह से नकारात्मक पात्रों में से एक मुस्लिम था, जबकि उस समय वे हिंदू- मुस्लिम एकता को बढ़ावा दे रहे थे।
मेहताब, जो बलिष्ठ और एथलेटिक थे, अपनी मजबूत सेहत का श्रेय मांसाहार
को देते थे। उन्होंने भारत पर अंग्रेजों के प्रभुत्व का श्रेय भी उनके खान-पान को दिया। यह कोई विचित्र विचार नहीं था। उस समय की एक कविता का अनुवाद इस प्रकार है:

देखो शक्तिशाली अंग्रेज को, वह छोटे से भारतीय पर राज करता है,
क्योंकि वह मांसाहारी है। वह पाँच क्यूबिट लंबा है।
गांधी जी राष्ट्रीय समस्याओं के इस समाधान से प्रभावित हुए: उन्होंने कहा, ‘मुझे यह बात समझ में आने लगी कि मांसाहारी भोजन अच्छा है, इससे मैं बलवान और साहसी बनूंगा, और यदि पूरा देश मांसाहारी भोजन अपना ले, तो अंग्रेजों का वशीभूत हो जाएगा।’ 11 इस प्रकार किशोरावस्था में ही वे भारत को साम्राज्यवादी उपस्थिति से मुक्त कराने के बारे में सोचने लगे थे – और उनका मानना था कि खान-पान राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उनके माता-पिता बहुसंख्यक वैष्णव हिंदू धर्म के अनुयायी थे, जिसमें मांस खाना वर्जित था, और जैन धर्म का भी उन पर गहरा प्रभाव था, जिसमें सभी जीवों के प्रति अत्यधिक सम्मान व्यक्त किया जाता है। एक दिन, ‘भोजन सुधार’ की प्रेरणा और जीवन में एक नई शुरुआत करने के रोमांच से प्रेरित होकर, गांधी जी मेहताब के साथ नदी किनारे बैठे और रोटी के साथ बकरी का मांस खाने का प्रयास किया। यह कठोर था और उन्हें उल्टी आने लगी; उन्हें रात भर नींद नहीं आई, सपने में उन्हें अपने अंदर एक जीवित बकरी के मिमियाने का आभास होता रहा। उनके मित्र ने हिम्मत नहीं हारी, गांधी जी ने स्वयं को समझाया कि मांस खाना एक कर्तव्य है, और एक आकर्षक भोजन कक्ष में, रसोइए द्वारा पकाए गए मांस के स्वादिष्ट व्यंजनों के बीच, गांधी जी को इन व्यंजनों का स्वाद अच्छा लगने लगा। मांस खाने का यह दौर लगभग एक साल में फैले छह बार के भोजन तक ही चला, जब वे चौदह या पंद्रह वर्ष के थे। इस अवधि के अंत तक गांधी जी को मांस से शारीरिक रूप से कोई अरुचि नहीं रह गई थी, लेकिन अपने माता- पिता से झूठ बोलना और उन्हें यह समझाना कि उन्हें पारिवारिक भोजन में भूख क्यों नहीं लग रही है, उनके लिए असहनीय हो गया था। इस दुविधा का हल निकालने के लिए - न तो वह अपने दोस्त को खोना चाहता था और न ही अपने माता-पिता से झूठ बोलना चाहता था - उसने मेहताब को आश्वस्त किया कि यद्यपि मांस खाना और राष्ट्रीय खाद्य सुधार के मुद्दे को उठाना आवश्यक था, लेकिन वह ऐसा तब तक नहीं करेगा जब तक उसके माता-पिता की मृत्यु नहीं हो जाती ताकि उसे उनसे झूठ न बोलना पड़े।
उनकी आत्मकथा के ये अध्याय ‘गांधी के प्रलोभनों’ की तरह लगते हैं: वे बताते हैं कि कैसे वे धूम्रपान, चोरी, मांसाहार और व्यभिचार के जाल में फँस गए, लेकिन सच्चे मार्ग से इन भटकावों को त्यागकर उन्होंने परम

पवित्रता प्राप्त की। वे यहाँ तक कहते हैं कि कस्तूरबाई के बारे में उनके मन में जो संदेह पैदा हुए, उन्हें मेहताब ने ही बढ़ावा दिया था, मानो गांधी स्वयं इसके लिए जिम्मेदार न हों, उन्होंने प्रलोभन के अलावा कुछ भी गलत नहीं किया हो। पचपन वर्ष बाद इस समय का वर्णन करते हुए उन्होंने याद किया कि शेख मेहताब ने ‘मुझे दस वर्षों से अधिक समय तक अपने वश में रखा। उनके सुझाव पर, मुझे बा [कस्तूरबाई] के चरित्र पर संदेह होने लगा। मैंने उनकी चूड़ियाँ तोड़ दीं, उनसे कोई वास्ता न रखा और उन्हें उनके माता-पिता के पास भेज दिया।’ 12
शेख मेहताब अंग्रेजों द्वारा नियुक्त एक जेलर के पुत्र थे, और इसलिए गांधी के परिवार की तुलना में उनका परिवार कहीं कम धनी था। इस मित्र ने गांधी पर इतना पैसा क्यों खर्च किया? वह उन्हें रेस्तरां में भोजन कराते थे और एक बार तो उन्होंने उन्हें वेश्यालय जाने का खर्च भी उठाया। यह संदेह अवश्य ही होता है कि गांधी इन सामाजिक गतिविधियों में स्वेच्छा से भाग लेते थे: वे भयभीत थे - 'उन्होंने मुझे कई बार धमकाया,' उन्होंने कहा - लेकिन मेहताब के प्रति श्रद्धा और सम्मान भी रखते थे। 13 वे अकेले ऐसे संवेदनशील युवक नहीं थे जो बुरी संगति में बहक गए। वेश्यालय में वह शर्मीला युवक कुछ कर नहीं सका: 'मैं पाप के चंगुल में फंस गया था, लेकिन ईश्वर ने अपनी असीम दया से मुझे स्वयं से बचा लिया,' उन्होंने लिखा; 'मैं इस बुराई के अड्डे में लगभग अंधा और गूंगा हो गया था।' 14 वे एक वेश्या के पास बिस्तर पर बैठे थे, लेकिन कुछ बोल नहीं पा रहे थे; उन्होंने यह नहीं बताया कि उसने उन्हें उत्तेजित करने के लिए क्या प्रयास किए, लेकिन अंत में उसका धैर्य टूट गया और उसने उनका अपमान करते हुए उन्हें बाहर का रास्ता दिखा दिया। उन्होंने यह सब बताते हुए यह जहमत उठाई कि उनके जीवन में चार 'समान' घटनाएं हुई थीं - संभवतः वे घटनाएं जिनमें उन्होंने अपनी शादी के बाहर यौन संबंध बनाए होंगे - 'और उनमें से अधिकांश में मेरे सौभाग्य ने, न कि मेरे किसी प्रयास ने, मुझे बचाया।'
ये किशोरावस्था की छोटी-मोटी गलतियाँ थीं, लेकिन गांधी जी के इन पर किए गए आत्म-चिंतन के कारण जीवनी की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। अधिकांश लोग (और अधिकांश कानूनी व्यवस्थाएँ) नैतिक गुणों के पूरी तरह विकसित न होने पर की गई छोटी-मोटी गलतियों को नज़रअंदाज़ कर देते हैं। गांधी जी एक व्यक्ति के रूप में इस नैतिक प्रक्रिया के विकास में रुचि रखते थे; वे

जानना चाहते थे कि इसने उन्हें कैसे बदला है। उन्होंने अपनी गलतियों को जिस तुलनात्मक महत्व से देखा, वह रोचक है। वे बार-बार यौन संबंध (विवाह के भीतर यौन संबंध सहित) को शर्मनाक बताते हैं; वे मांसाहार के पाप पर विस्तार से चर्चा करते हैं; फिर भी वे एक गरीब आदमी से पैसे चुराने के कृत्य को एक पंक्ति में ही समेट देते हैं, जिसे कई लोग घृणित मानते हैं। गांधी जी कहते हैं कि यह घटना तब हुई जब वे बारह या तेरह वर्ष के थे - वे अपने भाई से पंद्रह वर्ष की आयु में चुराए गए सोने के सिक्के को लेकर अधिक चिंतित हैं। इस अपराध ने उन्हें इतना परेशान किया कि उन्होंने फिर कभी चोरी न करने और अपने पिता के सामने कबूलनामा करने की कसम खाई। वे बोल नहीं सके, इसलिए उन्होंने इसे लिख लिया और करमचंद को दे दिया, यह उम्मीद करते हुए कि वे बहुत क्रोधित होंगे। दरअसल, उनके पिता रोए और कुछ नहीं बोले, जिससे गांधी जी पर गहरा प्रभाव पड़ा और उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि 'एक स्पष्ट स्वीकारोक्ति, जिसमें फिर कभी पाप न करने का वादा शामिल हो, जब उसे स्वीकार करने के योग्य व्यक्ति के समक्ष प्रस्तुत की जाती है, तो वह पश्चाताप का सबसे शुद्ध रूप है... उस दिन से, सच बोलना मेरे लिए एक जुनून बन गया।' 15
करमचंद कुछ समय से बीमार थे, और उनके बेटे को स्कूल से घर आकर उनकी देखभाल करनी पड़ती थी; शादी के समय हुए बस दुर्घटना में लगी चोटों से वे पूरी तरह उबर नहीं पाए थे, और उनकी गर्दन में एक फिस्टुला था जिसका इलाज संभव नहीं था। एक अंग्रेज सर्जन ने ऑपरेशन की सलाह दी थी, लेकिन परिवार के स्थानीय चिकित्सक ने इसके खिलाफ़ चेतावनी दी थी। गांधी अपने पिता की दवाइयाँ देते, उनके घाव पर पट्टी बाँधते और उन्हें खाना खिलाते थे। कभी- कभी परिवार के अन्य सदस्य, जिनमें करमचंद के भाई भी शामिल थे, उनसे मिलने आते और बीमार व्यक्ति के बिस्तर के पास सोने की ज़िद करते हुए उनकी देखभाल करते थे।
16 नवंबर 1885 की रात को उसने कार्यभार संभाला और गांधी को सोने भेज दिया। किशोर गांधी कस्तूरबाई के साथ यौन संबंध बनाने के लिए बेताब थे, जिसके लिए उन्होंने उन्हें जगाया था। कुछ ही मिनटों में एक नौकर दरवाजे पर आया। गांधी बिस्तर से उछलकर उठे और उन्हें बताया गया, 'पिताजी अब इस दुनिया में नहीं हैं।' वे दौड़कर अपने पिता के कमरे में गए और करमचंद को मृत पाया। उन्हें इस बात का गहरा अफसोस था कि उनके पिता उनकी बाहों में

नहीं मरे - 'यह सौभाग्य तो मेरे चाचा को प्राप्त हुआ था।' गांधी ने अपने पिता की मृत्यु के शोक को इस अपराधबोध से और भी बढ़ा दिया कि वे उस समय उपस्थित नहीं थे और 'अपने पिता की मृत्यु के इस नाजुक क्षण में भी, जब जागृत सेवा की आवश्यकता थी, अपनी कामुक इच्छा के लिए शर्मिंदा थे।' वे उस क्षण 'वासना के चंगुल में' होने के लिए खुद को कभी क्षमा नहीं कर सके। छप्पन वर्ष की आयु में भी, जब उन्होंने इस घटना का संस्मरण लिखा, तब भी वे इस पर विचार करते रहे: 'वासना के बंधन से मुक्त होने में मुझे लंबा समय लगा, और इससे उबरने से पहले मुझे कई कठिनाइयों से गुजरना पड़ा।' गांधी ने आगे कहा कि उस समय कस्तूरबाई गर्भवती थीं और उनके गर्भ में पल रहा बच्चा कुछ ही दिन जीवित रहा। इसके लिए भी उन्होंने स्वयं को ही दोषी ठहराया: ‘और क्या उम्मीद की जा सकती थी। मेरे उदाहरण से सभी विवाहितों को सबक लेना चाहिए।’ अब परिवार के सामने एक गंभीर समस्या खड़ी हो गई थी: राजकोट के शासक से करमचंद को मिलने वाली पेंशन बंद हो गई थी और गांधी के बड़े भाई केवल मामूली कानूनी पदों पर थे। ब्रिटिशों का राजनीतिक व्यवस्था में इतना दबदबा होने के कारण, उनके पास अपने पिता की तरह वरिष्ठ सरकारी पद के लिए आवश्यक अंग्रेजी का ज्ञान नहीं था। करमचंद ने अपनी कमाई का पैसा खर्च कर दिया था; उन्होंने कुछ संपत्ति छोड़ी, लेकिन इसके अलावा कुछ खास नहीं। अब परिवार गांधी जी से अपने भविष्य को आगे बढ़ाने की उम्मीद कर रहा था। उन्हें उच्च शिक्षा प्राप्त करनी थी और परिवार का भरण-पोषण करने के लिए एक अच्छी तनख्वाह वाली नौकरी हासिल करनी थी। छात्रवृत्ति की मदद से हाई स्कूल में पढ़ाई करते हुए वे औसत से ऊपर के छात्र थे, हालांकि असाधारण छात्र नहीं थे। वे समलदास कॉलेज में दाखिला लेने वाले चार आवेदकों में से एक थे, जिन्होंने मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की और जनवरी 1888 में उन्नीस वर्ष की आयु में उन्हें वहाँ प्रवेश मिला।
राजकोट से नब्बे मील दूर भावनगर के कॉलेज में वे अकेलेपन और घर की याद
से व्याकुल थे, जहाँ वे अपने जीवन में पहली बार अकेले रह रहे थे। कक्षाएँ अंग्रेज़ी में होती थीं, जो उनके लिए एक चुनौती थी; शिक्षण का स्तर उनकी समझ से कहीं अधिक कठिन था, इसलिए वे ठीक से समझ नहीं पाते थे और उनके अंक कम आते थे। शादी और पिता की बीमारी में देखभाल के कारण पढ़ाई से जो समय उन्होंने गंवाया था, उससे गांधीजी के छात्र जीवन पर कोई सकारात्मक प्रभाव

नहीं पड़ा। उन्होंने बाद के जीवन में अनुशासन और दृढ़ संकल्प के साथ अपनी पढ़ाई में प्रगति की, लेकिन वे कभी भी प्रतिभाशाली विद्वान नहीं थे। कस्तूरबाई दोबारा गर्भवती थीं, उनके पहले बेटे हरिलाल का जन्म हुआ, जो जीवित रहा। इसलिए पितृत्व की आशंकाओं का उन पर भी असर पड़ा होगा। पहले सत्र के अंत में जब वे घर लौटे, तो उन्होंने परिवार से अपनी समस्याओं पर चर्चा की, क्योंकि परिवार का भविष्य काफी हद तक उनके प्रयासों पर निर्भर था। करमचंद की अनुपस्थिति में, परिवार सलाह के लिए अपने एक मित्र, मावजी दवे पर निर्भर था, जो एक विद्वान ब्राह्मण थे और जिन्हें सांसारिक मामलों का अच्छा ज्ञान था। उन्होंने कहा कि यदि गांधी अपनी बाधाओं को पार कर कॉलेज में पढ़ाई जारी रखते हैं, तो उन्हें बीए की डिग्री मिल जाएगी, लेकिन इससे वे उच्च पद के लिए योग्य नहीं हो पाएंगे - वे अपने पिता की तरह प्रधानमंत्री नहीं बन पाएंगे। उन्हें लंदन जाकर इन्स ऑफ कोर्ट में बैरिस्टर की पढ़ाई करनी चाहिए। तीन साल का यह कोर्स उनके लिए बहुत फायदेमंद साबित होगा।
कई बाधाएं थीं: खर्च तीन-चार हजार रुपये था, जो उस परिवार के लिए बहुत बड़ी रकम थी जिसने अपने सबसे छोटे बेटे को नब्बे मील दूर कॉलेज भेजने के लिए भी काफी संघर्ष किया था। इसके अलावा, एक रूढ़िवादी हिंदू को धार्मिक अपवित्रता के डर से समुद्र पार नहीं करना चाहिए था, और उनकी मां को यह गंभीर आशंका थी कि अगर गांधी लंदन के जीवन के प्रलोभनों के संपर्क में आए तो वे महिलाओं के साथ मेलजोल बढ़ाएंगे, शराब पिएंगे और मांसाहार करेंगे। अगर कस्तूरबाई की कोई राय थी, तो उसका कोई रिकॉर्ड नहीं है; उनके बेटे का जन्म 1888 की वसंत ऋतु में हुआ था, जब गांधी के भविष्य की तैयारियां चल रही थीं।
गांधी ने अपने मन में यह विचार व्यक्त किया: ‘अगर मैं इंग्लैंड जाऊँगा तो न केवल मैं एक बैरिस्टर बनूँगा (जिसके बारे में मैं बहुत सोचता था) बल्कि मैं इंग्लैंड को भी देख पाऊँगा, जो दार्शनिकों और कवियों की भूमि है, सभ्यता का केंद्र है।’ 17 अनुभव की प्यास में, उन्होंने लंदन भेजे जाने के प्रस्ताव को तुरंत स्वीकार कर लिया, हालाँकि उन्हें इस बात का संदेह था कि उन्हें कानून की पढ़ाई करनी चाहिए या चिकित्सा की, जिसे वे अधिक पसंद करते थे। हालाँकि, उनका परिवार इस पर अडिग था, क्योंकि वे धार्मिक कारणों से गांधी को विच्छेदन से संबंधित किसी भी चीज़ से नहीं

जोड़ना चाहते थे; साथ ही, उनका मानना था कि यदि उन्हें अपने पिता के नक्शेकदम पर चलकर प्रधानमंत्री बनना है तो चिकित्सा उतनी उपयुक्त नहीं होगी। लेकिन करियर का यह चुनाव गांधी के स्वभाव के अनुकूल नहीं था - उन्हें एक ठीक-ठाक वकील बनने में भी काफी समय लग गया। दूसरी ओर, वे स्वाभाविक रूप से चिकित्सा की ओर आकर्षित थे: उन्होंने स्वास्थ्य संबंधी कार्यों में स्वेच्छा से भाग लेने का हर अवसर लिया - युद्ध के समय घायलों की देखभाल करने में, स्वच्छता कार्य में, अपने मित्रों और परिवार की सेवा करने में और उनकी बीमारियों के लिए अपने घरेलू उपचारों को आजमाने में। यदि गांधी जी भारतीय प्रशासन में पद पाने की इच्छा रखते थे, तो उनके लिए अपनी पढ़ाई में सहायता हेतु प्रथम ब्रिटिशों की ओर देखना स्वाभाविक था, क्योंकि ब्रिटिश न केवल ब्रिटिश भारत बल्कि रियासतों पर भी अपने राजनीतिक एजेंटों के माध्यम से नियंत्रण रखते थे। पोरबंदर में एक ब्रिटिश एजेंट था, जहाँ करमचंद के कार्यों के कारण उनका परिवार प्रसिद्ध था और जहाँ उनके भाई तुलसीदास रहते थे। इसलिए गांधी जी पोरबंदर गए और अपने चाचा से मिले, इस उम्मीद में कि राजनीतिक एजेंट के लिए सिफारिशी पत्र मिल जाएगा, लेकिन वे असफल रहे। तुलसीदास इंग्लैंड से वकील बनकर लौटे भारतीयों के पहनावे से नाखुश थे। उन्होंने कहा कि वे यूरोपीय जीवनशैली अपना लेते हैं - उनके कपड़े, खान-पान, सिगार पीना - और यह सब उन्हें अरुचिकर लगता है। इसलिए गांधी ने सीधे राजनीतिक प्रतिनिधि फ्रेडरिक लेली को पत्र लिखा, जिन्होंने उस युवक को अपने घर आमंत्रित किया। अधिकारी ने गांधी के साथ विशेष मुलाकात की कोई व्यवस्था नहीं की थी, फिर भी उन्होंने उनसे वहीं मुलाकात की। गांधी ने झुककर अभिवादन किया और एक अंग्रेज सज्जन के साथ अपनी पहली मुलाकात के लिए तैयार किए गए कुछ वाक्य गुजराती में बोले (इंग्लैंड में अध्ययन करने की इच्छा रखने वाले किसी व्यक्ति के लिए यह कुछ हद तक मूर्खतापूर्ण था)। लेली ने उनसे बस इतना कहा: 'पहले अपनी बीए की परीक्षा उत्तीर्ण करो, फिर मुझसे मिलो। अभी तुम्हारी कोई मदद नहीं की जा सकती।' 18 यद्यपि यह सोचना हास्यास्पद है कि यह प्रशासक गांधी को इतनी आसानी से दरकिनार कर रहा था, जिनका बाद में ब्रिटिश भारत के विघटन में इतना बड़ा योगदान रहा, लेकिन अपने दृष्टिकोण से लेली का निर्णय समझदारी भरा था। सर्वोत्तम लाभ के लिए, लेली के सीमित धन को उत्कृष्ट विद्वानों पर खर्च किया जाना आवश्यक था, और गांधी एक उपयुक्त उम्मीदवार नहीं थे।

उन्होंने भारत में अपनी पढ़ाई में कठिनाइयों के कारण इंग्लैंड जाने का प्रयास किया था; यद्यपि लेली को निस्संदेह यह पता नहीं था, उनका रवैया ऐसे उम्मीदवारों को छांटने के लिए ही बना था। इसके अलावा, गांधी के पास इस बात के अलावा कोई सिफारिश नहीं थी कि वह अपने पिता के पुत्र थे, और करमचंद के अन्य दो पुत्रों ने कोई उत्कृष्ट प्रदर्शन नहीं किया था।
गांधी जी हताश होकर राजकोट लौट आए और अपने विकल्पों पर विचार करने लगे। उनके बड़े भाई लक्ष्मीदास, जिन पर उन्हें हमेशा से भरोसा था, उनकी मदद कर सकते थे। गांधी जी ने सोचा, शायद वे कस्तूरबाई के गहने बेच सकते थे। घर लौटकर उन्हें अपनी माँ के नए विरोध का सामना करना पड़ा, जो अब भी इस बात से चिंतित थीं कि इंग्लैंड में गांधी जी नैतिक प्रलोभनों के शिकार हो जाएँगे। उन्होंने अपने एक जैन भिक्षु मित्र से सलाह ली, जो धर्म परिवर्तन से पहले मोध बनिया थे। उनका सुझाव था कि वे उनके बेटे को शपथ दिलाएँ। गांधी जी ने विधिवत शपथ ली कि इंग्लैंड में रहते हुए वे शराब, स्त्री या मांस को हाथ नहीं लगाएंगे, और उनकी माँ ने अनुमति दे दी। उन्होंने याद करते हुए कहा, 'सोते, जागते, पीते, खाते, चलते, दौड़ते, पढ़ते, मैं इंग्लैंड के सपने देखता और उसके बारे में सोचता रहता था।' 19 कुछ आत्मज्ञान के साथ उन्होंने उन्नीस वर्ष की आयु में लिखा: 'मैं ऐसा व्यक्ति नहीं हूँ जो कोई भी इरादा बनाने के बाद उसे आसानी से छोड़ दे।' 20
उन्होंने और उनके परिवार ने 1888 के वसंत और गर्मियों में आवश्यक धन जुटाने के लिए दोस्तों और परिवार से संपर्क किया। आखिरकार पर्याप्त धन जुटा लिया गया - यह करमचंद के परिवार के पास मौजूद सारा पैसा था। राजकोट के एक युवक का इंग्लैंड जाना इतना दुर्लभ था कि उनके हाई स्कूल ने उनके सम्मान में विदाई समारोह आयोजित किया। उन्होंने धन्यवाद के कुछ शब्द तैयार किए थे, लेकिन वे इतने शर्मीले और सार्वजनिक प्रदर्शन के इतने अनुभवहीन थे कि वे उन्हें मुश्किल से हकलाते हुए बोल पाए। उन्होंने लिखा, 'मुझे याद है कि जब मैं उन्हें पढ़ने के लिए खड़ा हुआ तो मेरा सिर कैसे चकरा रहा था और मेरा पूरा शरीर कैसे कांप रहा था।' 21 10 अगस्त को अपने घर पर परिवार से उनकी विदाई और भी मार्मिक थी। उन्होंने लिखा: 'मेरी माँ आँसुओं से भरी अपनी आँखों को अपने हाथों में छिपा रही थीं, लेकिन सिसकियाँ साफ सुनाई दे रही थीं... मैं लगभग पचास दोस्तों के बीच था। "अगर मैं रोता, तो वे मुझे बहुत कमजोर समझते; शायद वे मुझे इंग्लैंड जाने की अनुमति नहीं

देते," मैंने मन ही मन कहा; इसलिए मैं रोया नहीं, हालाँकि मेरा दिल टूट रहा था। अंत में कस्तूरबाई से विदाई का समय आया। चूंकि मित्रों की उपस्थिति में उनसे मिलना या बात करना रीति-रिवाज के विरुद्ध था, इसलिए उन्हें उनसे एक अलग कमरे में मिलना पड़ा। “वह तो बहुत पहले ही सिसकना शुरू कर चुकी थीं। मैं उनके पास गया और एक पल के लिए मूक मूर्ति की तरह खड़ा रहा। मैंने उन्हें चूमा और उन्होंने कहा, “मत जाओ।”” 22
लक्ष्मीदास और गांधी के मित्र, जिनमें शेख मेहताब भी शामिल थे, उनके
साथ बंबई तक गए, जहाँ दोनों भाई अपनी बहन रलियातबेन के घर पर ठहरे। उस समय हिंद महासागर में तूफान था, हाल ही में एक जहाज़ डूब गया था, और गांधी के लिए यात्रा से पहले कुछ सप्ताह रुकना उचित समझा गया। वहाँ रहते हुए, जैसे ही मोध बनिया जाति के अन्य सदस्यों को उनके इस अभियान के बारे में पता चला, वे बिना किसी के इशारे किए, घूरे या राहगीरों द्वारा उपहास किए बिना बाहर नहीं निकल पाते थे।
समुदाय के मुखिया, जिनके गांधी के पिता के साथ अच्छे संबंध थे, ने मोध बनिया समुदाय की बेचैनी को भुनाया। उन्होंने जाति की एक आम सभा बुलाई, जिसमें गांधी को भी बुलाया गया। मुखिया ने अपने पूर्वाग्रहों को धार्मिक कर्तव्य बताकर प्रस्तुत किया: 'हमारा धर्म विदेश यात्रा की मनाही करता है,' उन्होंने समझाया कि हिंदू धर्म से समझौता किए बिना यूरोपियों के बीच रहना संभव नहीं है। गांधी ने अपनी माता से किए गए वचनों का जिक्र किया और कहा कि उन्हें लगता है कि जाति को इसमें दखल नहीं देना चाहिए। मुखिया ने उन्हें अपशब्द कहे और घोषणा की: 'आज से इस लड़के को बहिष्कृत माना जाएगा। जो कोई भी उसकी मदद करेगा या उसे बंदरगाह तक छोड़ने जाएगा, उसे जुर्माने का सामना करना पड़ेगा।' 23
गांधी अब समाज से बहिष्कृत हो चुके थे, और उनका समर्थन करने वाले अन्य लोग भी इसी खतरे में थे, ऐसे में उस नौजवान की स्थिति नाजुक हो गई थी। उन्होंने कहा, ‘जिन कुछ चुने हुए लोगों ने हर सुख-दुख में मेरा साथ दिया था, उन्होंने भी मुझे अकेला छोड़ दिया।’ 24 उन्हें पहले से कहीं ज्यादा बेचैनी होने लगी कि कहीं कोई और समस्या उन्हें रोक न दे। यह दूरदर्शितापूर्ण साबित हुआ, क्योंकि जब उन्हें एक जहाज मिला और उन्होंने अपने बहनोई से गांधी के लिए सुरक्षित रखे गए पैसे मांगे, तो बहनोई ने इनकार कर दिया। उन्होंने कहा कि वे अपनी जाति खोने का जोखिम नहीं उठा सकते

– उन्हें गांधी की यात्रा में मदद नहीं करनी चाहिए। गांधी ने इस धार्मिक दुविधा को एक मित्र से यात्रा और कपड़ों के लिए पैसे उधार लेकर सुलझाया। उनके बहनोई ने ऋण चुका दिया, इस प्रकार उन्होंने गांधी की प्रत्यक्ष रूप से मदद नहीं की, और उनकी धार्मिक पवित्रता अक्षुण्ण रही।
उन्होंने 4 सितंबर 1888 को बॉम्बे से यात्रा शुरू की। पहली बार वे ब्रिटिश लोगों के बीच थे; द्वितीय श्रेणी के उस केबिन में जहाँ अन्य यात्री आपस में मिलते-जुलते थे, उनमें से एक को छोड़कर बाकी सभी ब्रिटिश थे (हालाँकि उन्होंने उन्हें 'अंग्रेज़' लिखा था, जो उनके लेखन में एक आम भ्रम था)। उन्होंने एकमात्र अन्य भारतीय के साथ केबिन साझा किया।
भारत में गांधी जी कपड़े की पतलून के ऊपर एक लंबी जैकेट और पगड़ी पहनते थे। उनके बाल शिक्का या गांठ में बंधे होते थे, लेकिन लंदन यात्रा के लिए उन्होंने इसे छोड़ दिया, क्योंकि उन्हें डर था कि इससे उनका उपहास हो सकता है। ब्रिटिश समाज में यथासंभव घुलमिल जाने की चाह में, उन्होंने ब्रिटिश कपड़े खरीदे, जिनमें एक टाई भी शामिल थी जिसे वे 'नापसंद' करते थे - लेकिन जिसे बाद में पहनने में उन्हें 'आनंद' आया - और एक जैकेट, जो भारतीय जैकेट की तुलना में छोटी थी, कूल्हों से ऊपर तक आती थी, इसलिए वे इसे 'अशोभनीय' मानते थे। 25 उनकी एक तस्वीर है जिसमें उनके बाल चिकने किए हुए हैं और साफ मांग है, वे विंग कॉलर और बो टाई के साथ थ्री-पीस सूट पहने हुए हैं, जो उन्हें एक मध्यमवर्गीय अंग्रेज जैसा दिखता है।
ब्रिटिश लोगों के इतने बड़े समूह के बीच यह उनका पहला अनुभव था और वे इसमें सफल नहीं हो पाए: उन्हें अंग्रेज़ी बोलने की आदत नहीं थी और वे उनकी बातों को समझ नहीं पा रहे थे, यहाँ तक कि समझ आने पर भी जवाब नहीं दे पा रहे थे। उन्हें हर वाक्य को बोलने से पहले मन में सोचना पड़ता था। वे चाकू और कांटे का इस्तेमाल नहीं कर सकते थे और भोजन के समय यह पूछने की हिम्मत भी नहीं कर पा रहे थे कि कौन से व्यंजन मांस रहित हैं।
यात्रा शुरू करने से पहले उनके भारतीय मित्रों ने उन्हें सलाह दी थी कि मांस खाए बिना वे ब्रिटिश जलवायु का सामना नहीं कर पाएंगे; उन्हें यह भी चेतावनी दी गई थी कि शराब के बिना वे ठंड से सुन्न हो जाएंगे और धूम्रपान अनिवार्य है। भोजन के लिए उनके साथ आए एक दयालु सहयात्री ने भी उन्हें सलाह दी कि उन्हें मांस खाना शुरू करना होगा, चाहे अभी या इंग्लैंड में, लेकिन उन्होंने मना कर दिया। जहाज पर, वे हर चीज से आश्चर्यचकित और मोहित

थे; उन्हें शौचालय अजीब लगे – ‘हमें वहाँ पानी नहीं मिलता और कागज के टुकड़ों का उपयोग करने के लिए मजबूर होना पड़ता है।’ 26 लंदन में पहली बार लिफ्ट में प्रवेश करते समय, उन्होंने सोचा कि यह एक छोटा कमरा है जिसमें उन्हें तब तक इंतजार करना है जब तक कि वह ऊपर न उठने लगे। 29 सितंबर को जब वे टिलबरी में उतरे तो उन्होंने मौसम के हिसाब से अनुपयुक्त कपड़े पहने थे, सफेद फलालैन सूट में, ऐसा पहनावा पहने हुए वे अकेले यात्री थे। इस प्रकार अनुभवहीन और अप्रस्तुत, उन्होंने लंदन के लिए ट्रेन पकड़ी।
भारत और ब्रिटेन के संबंध जटिल रहे हैं (और आज भी हैं), और दोनों पक्षों की ओर से इस संबंध में अलग-अलग प्रतिक्रियाएं देखने को मिलती हैं। मूल रूप से, ब्रिटेन एक कब्ज़ा करने वाली विदेशी शक्ति थी। भारत पर प्रभुत्व स्थापित करने की होड़ में अंग्रेजों ने अन्य यूरोपीय शक्तियों को तो पीछे छोड़ ही दिया था, साथ ही उन्होंने मुगलों को भी पराजित किया था, जो पहले सफल शासक थे। गांधी जी के जन्म से बारह वर्ष पूर्व, 1857 में भारतीय सैनिकों के विद्रोह का उद्देश्य अंग्रेजों को खदेड़ना और पतित मुगल सम्राट को पुनः स्थापित करना था (हालांकि पहला उद्देश्य दूसरे की तुलना में अधिक स्पष्ट था)। विद्रोह की शुरुआत इस अफवाह से हुई थी कि राइफल के कारतूस - जिनके सिरे दांतों से काटकर अलग करने पड़ते थे - सूअर या गोमांस की चर्बी से तैयार किए गए थे, और इसलिए मुसलमानों और हिंदुओं के लिए वर्जित थे। इस अफवाह (और अन्य अफवाहों, जिनमें यह भी शामिल थी कि रसोई के आटे में गाय और सूअर की हड्डियों का चूरा मिला दिया गया था) को उन असंतुष्ट सैनिकों ने तुरंत समर्थन दिया, जिन्होंने पहले भी अन्य मुद्दों पर विद्रोह किया था। अफवाहें फैलाने वाले लोग भारत की हिंदू और मुस्लिम आबादी को एक साझा मुद्दे पर एकजुट करने में सफल रहे थे - यह राष्ट्रवादी आंदोलनों का वह लक्ष्य था जिसे फिर कभी इतनी मजबूती से हासिल नहीं किया जा सका: गांधी उन कई लोगों में से एक थे जो बहुत ही कम समय को छोड़कर, भारत के धर्मों को ब्रिटिश विरोधी भावना में एकजुट करने में असफल रहे।
1857 के विद्रोह को दबाने के बाद, ब्रिटिश राजशाही ने महारानी द्वारा नियुक्त वायसराय के अधीन देश का सीधा नियंत्रण अपने हाथ में ले लिया। ब्रिटेन को अपने माल, विशेष रूप से कपास के लिए भारतीय बाज़ार प्राप्त हुआ; ब्रिटिश प्रवासियों, विशेषकर योग्य लेकिन सीमित साधनों वाले लोगों के लिए, रेलवे चलाने, सड़कें और पुल बनाने और सेना में अधिकारी बनने के लिए

नौकरियाँ उपलब्ध हुईं। 1930 तक लगभग 7,500 सेवानिवृत्त ब्रिटिश अधिकारी भारतीय राजस्व से 3.5 से 4 मिलियन पाउंड पेंशन प्राप्त कर रहे थे। भारत ने एक विशाल स्थायी सेना और स्वयंसेवकों का एक बड़ा भंडार प्रदान किया, जिन्हें ब्रिटिश हितों की रक्षा के लिए साम्राज्य में कहीं भी भेजा जा सकता था।
भारत को सापेक्षिक आंतरिक शांति, डाक, सड़क और रेल व्यवस्था तथा अन्य अवसंरचनाएँ तथा निरंतर विकसित होती प्रशासनिक और कानूनी व्यवस्था प्राप्त हुई। इन दोनों देशों को इस संबंध से जो लाभ हुआ, उसमें अंतर स्पष्ट है: भारत में एक बार कार्यशील अवसंरचना स्थापित हो जाने के बाद, साम्राज्यवादी शक्ति की कोई आवश्यकता नहीं रह गई। वहीं, ब्रिटेन के लिए धन, बाजार और साम्राज्यवादी सेना की आवश्यकता कभी समाप्त नहीं हुई। कृषि कार्य में लगे अधिकांश भारतीयों का अंग्रेजों से उतना ही संपर्क था जितना कि उनके अपने राजकुमारों से – ग्रामीण जीवन की संरचना शासकों के संदर्भ के बिना ही विकसित हुई थी। मध्य वर्ग में ब्रिटेन के प्रति भारतीयों की प्रतिक्रियाएँ व्यापक रूप से भिन्न थीं, एक ओर घोर घृणा थी तो दूसरी ओर ब्रिटिश रीति-रिवाजों, पहनावे और दृष्टिकोणों को अपनाने तक की वफादारी थी। अधिकांश लोग चयनात्मक थे, जैसा कि 1880 के दशक में गांधीजी ने किया था, जिन्होंने आधुनिकता के संदर्भ में ब्रिटेन से जो कुछ भी मूल्यवान प्रतीत हुआ उसे अपनाया, लेकिन साथ ही धार्मिक और सामाजिक परंपराओं को भी काफी हद तक बनाए रखा।
1857 के विद्रोह से यह सबक मिला कि हिंसा से अंग्रेजों को नहीं निकाला जा सकता, क्योंकि वे सैन्य रूप से हमेशा अधिक शक्तिशाली रहेंगे। गांधी जी हमेशा से एक भारतीय राष्ट्रवादी थे। अंततः उन्होंने राष्ट्रवाद के प्रति एक विशिष्ट गांधीवादी दृष्टिकोण प्रस्तुत किया, जिसे उन्होंने 1888 में उपमहाद्वीप छोड़ने के बाद भारत से बाहर बिताए छब्बीस वर्षों (कुछ संक्षिप्त अवधियों को छोड़कर) के दौरान विकसित किया था। उस समय, पश्चिमी शिक्षा के साथ-साथ पश्चिमी तौर-तरीकों को अपनाना ही आगे बढ़ने का एकमात्र रास्ता था।

2

लंदन के पाठ
जब गांधीजी लंदन पहुंचे, तब कुलीन लॉर्ड सैलिसबरी प्रधानमंत्री के रूप में कंजर्वेटिव पार्टी का नेतृत्व कर रहे थे; पिछले वर्ष महारानी विक्टोरिया ने सिंहासन पर पचास वर्ष पूरे किए थे। व्हाइटहॉल की भव्य इमारतें अंततः चार करोड़ लोगों का शासन संभालती थीं। लंदन विश्व का सबसे महान शहर था, जो पहले सच्चे वैश्विक साम्राज्य का केंद्र था।
उस दृष्टिकोण से देखा जाए तो साम्राज्य अभेद्य प्रतीत होता था, आक्रमण करने की नहीं बल्कि आश्चर्य का विषय। लेकिन दरारें पहले से ही स्पष्ट थीं। आयरलैंड में चल रही अशांति ने दूरदर्शी लोगों को भी आश्वस्त कर दिया था कि स्वशासन ही एकमात्र समाधान है। लंदन की माचिस बनाने वाली महिलाएं, जो सबसे दबे-कुचले और अनपढ़ श्रमिकों में से थीं, ने 1888 की शुरुआत में अपने वेतन और कार्य स्थितियों में सुधार के लिए सफलतापूर्वक हड़ताल की थी। गांधी के आगमन के एक वर्ष बाद, गोदी श्रमिकों ने हड़ताल कर दी, जिससे साम्राज्य के मध्य भाग से होकर गुजरने वाला व्यापार ठप हो गया।
असंतोष की ये अभिव्यक्तियाँ काठियावाड़ के उस शर्मीले छात्र की छवि से दूर लग सकती हैं, जो टिलबरी में उतरा था, लेकिन गांधी जी प्रेस के माध्यम से आयरलैंड की स्वतंत्रता की प्रगति पर नज़र रखते थे; उन्होंने कार्डिनल मैनिंग से मुलाकात की और उन्हें बंदरगाह हड़ताल समाप्त करने में उनकी सुलहकारी भूमिका के लिए बधाई दी। उन्होंने लंदन में माचिस बनाने वाली महिलाओं की नेता एनी बेसेंट से भी मुलाकात की और बाद में मद्रास में रहस्यवाद के मार्ग पर चलने के दौरान भारतीय स्वतंत्रता के लिए उनके साथ काम किया।
लंदन केंद्रित ब्रिटिश संस्कृति में अनिश्चितता के अन्य पहलू भी देखने को मिलते थे। स्थापित चर्च डार्विनवादियों द्वारा प्रतिपादित तर्कवाद की शक्तियों के विरुद्ध अपना संघर्ष जारी रखे हुए था, और सबसे अधिक बिकने वाली लेखिका मैरी कोरेली ईश्वर के पुरुष और स्त्री स्वरूप, पुनर्जन्म और विकास में रहस्यवाद की भूमिका पर पुस्तकें लिख रही थीं। गांधी जी जिस लंदन में प्रवेश कर रहे थे, वह समाजवादी सोशल डेमोक्रेटिक फेडरेशन, साइकिकल रिसर्च सोसाइटी, थियोसोफिकल सोसाइटी और एंटी-

विविसेक्शन सोसाइटी जैसे नए विचारों से ओतप्रोत था। उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक से अधिक चुनौतीपूर्ण और रोमांचक समय में उनका आगमन संभव नहीं था।
वहाँ पहुँचने पर गांधीजी अपने साथ नाव में मिले एक साथी के साथ ट्रेन
से मध्य लंदन गए और वहाँ उन्होंने शानदार विक्टोरिया होटल में ठहरे, जिसकी उन्हें सिफ़ारिश की गई थी। उनके नए दोस्त ने पहले उपलब्ध कमरों को पहले ही किराए पर स्वीकार कर लिया – छह शिलिंग प्रतिदिन। उस समय पैसे की कीमत का अंदाज़ा लगाने के लिए: एक पाउंड के बीस शिलिंग होते थे और बंदरगाह पर काम करने वाले मज़दूर आधे शिलिंग (छह पेंस) प्रति घंटे की न्यूनतम मजदूरी के लिए हड़ताल कर रहे थे – हालाँकि उन्हें अक्सर दिन में केवल तीन घंटे ही काम मिलता था।
भारतीय प्रवासियों के एक नेटवर्क ने नए आने वालों का समर्थन किया, और गांधी जी ने ब्रिटिश समाज में आसानी से घुलमिल जाने के लिए कई लोगों के परिचय पत्र अपने साथ रखे। उनके संपर्कों में से एक डॉ. प्राणजीवन मेहता थे, जो कानून की पढ़ाई के साथ-साथ चिकित्सा में उच्च पाठ्यक्रम भी कर रहे थे। जब वे गांधी जी से मिलने होटल में उनकी पहली रात आए, तो उन्हें लगा कि वह युवक कुछ असभ्य सा है - वह बचकाने अंदाज़ में मेहता के कपड़ों को छू रहा था, और उसकी अंग्रेज़ी भी कमज़ोर थी। मेहता होटल के खर्च को लेकर भी चिंतित थे, और उन्होंने गांधी जी के लिए एक ऐसे अंग्रेज़ परिवार के साथ रहने की व्यवस्था की जो किराएदार रखता था।
गांधी जी के कुछ दिनों के प्रवास का होटल बिल मात्र 3 पाउंड था, जिससे
वे चौंक गए; उनके पास अपनी पूरी तीन साल की यात्रा के लिए लगभग 400 पाउंड थे। होटल का खाना उन्हें पसंद नहीं था, फिर भी वे वहीं खाना खा रहे थे, और उन्हें आश्चर्य हुआ कि जिन व्यंजनों का उन्होंने सेवन नहीं किया था, उनके लिए भी उन्हें भुगतान करना पड़ा।
गांधीजी को भोजन ढूंढने में परेशानी होने लगी – अंग्रेज मकान मालकिनों की उबली हुई सब्जियां बिना मसाले के लगभग न खाने योग्य थीं। वे मांस के व्यंजन के साथ परोसने के लिए होती थीं। वे अपनी जरूरतों को खुलकर बताने में संकोच करते थे और रोटी खाकर ही पेट भर लेते थे, लेकिन सब्जियां नहीं मांगते थे। उन्हें एक अतिरिक्त कठिनाई का सामना करना पड़ा क्योंकि वे अब भी राष्ट्रीय स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए मांसाहार को आवश्यक मानते

थे; उनका शाकाहार केवल उनकी माता से किए गए मांसाहार से परहेज के वचन का परिणाम था। उन्हें वचन तोड़ने के लिए प्रेरित किया गया – एक मित्र ने पूछा, ‘एक अनपढ़ माता के सामने और यहाँ की परिस्थितियों से अनभिज्ञ होकर किए गए वचन का क्या मूल्य है?’ लेकिन गांधीजी के लिए वचन अटूट था।
रिचमंड और वेस्ट केंसिंग्टन में अलग-अलग परिवारों के साथ रहने के
दौरान वह घर की याद में रोता रहा। लेकिन उसने अखबार पढ़ना शुरू कर दिया, जो एक ऐसे व्यक्ति की राजनीतिक शिक्षा में महत्वपूर्ण योगदान था जिसे पहले समसामयिक मामलों की कोई जानकारी नहीं थी।
नए देश में कुछ समय बिताने और वहां के माहौल से परिचित होने के बाद, गांधी ने चार प्रतिष्ठित न्यायालयों में से एक, इनर टेंपल में दाखिला लिया। बार में प्रवेश के लिए योग्यता यह थी कि रोमन और सामान्य कानून की परीक्षा उत्तीर्ण की जाए और संबंधित न्यायालय में कई भोजों में भाग लिया जाए। औपचारिक प्रशिक्षण बहुत कम था; अधिकांश पढ़ाई व्यक्तिगत अध्ययन पर निर्भर थी। ऐसा लगता है कि गांधी को मध्ययुगीन न्यायालयों में विशेष आनंद नहीं आया, हालांकि उन्होंने इनर टेंपल के पुस्तकालय में कई दिन बिताए, जिससे उनके कमरों को गर्म करने के लिए कोयले की बचत हुई। उन्होंने अनिवार्य भोज इनर टेंपल हॉल में किया, जहां अन्य जगहों पर उनकी कठिनाई को देखते हुए आश्चर्यजनक रूप से शाकाहारी भोजन मंगवाना संभव था। उन्होंने पाया कि संयम के अपने लाभ थे: चूंकि प्रत्येक मेज पर शराब की समान मात्रा परोसी जाती थी, इसलिए शराब का आनंद लेने वालों की मेजों पर उनका स्वागत किया जाता था, क्योंकि वे उनके लिए दी गई मात्रा पी सकते थे। उन्होंने अनुशंसित पुस्तकें खरीदीं और उनका अध्ययन किया, और पाया कि कई छात्र ट्यूटर की मदद से या नोट्स रटकर काम चला लेते थे, उन्हें पाठ्यपुस्तकों को पढ़ने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती थी - 'प्रश्न पत्र आसान थे और परीक्षक उदार थे'। 2. आपराधिक और नागरिक कानून सहित अंग्रेजी सामान्य कानून के उनके अध्ययन ने उन्हें कानून के समक्ष समान अधिकारों की अवधारणाओं की समझ प्रदान की, जिससे यह संकेत मिलता है कि ऐसे मूल्य हैं जिनके भीतर सरकार को काम करना चाहिए।
उपयुक्त भोजन खोजने का उनका संघर्ष तब समाप्त हुआ जब उन्हें सेंट ब्राइड स्ट्रीट पर स्थित सेंट्रल नामक एक शाकाहारी रेस्तरां मिला, जो फैरिंगडन स्ट्रीट के पास था। वहाँ उन्होंने खाना शुरू किया और उन्हें लगा

जैसे ‘भगवान ने उनकी मदद की हो।’ 3 उन्होंने हेनरी साल्ट द्वारा लिखित प्रचार-प्रसार वाली पुस्तक ‘ए प्ली फॉर वेजिटेरियनिज्म’ की एक प्रति खरीदी। साल्ट एक समाजवादी थे, ईटन स्कूल के पूर्व शिक्षक थे जो चप्पल पहनते थे (उस समय यह असामान्य था) और अपनी पत्नी, केट जॉयन्स नामक संस्कृत विद्वान के साथ, कम से कम पैसों में सादा जीवन जीने का प्रयास करते थे। गांधी जी को शाकाहारी लोगों के लिए एक मिलन स्थल पाकर खुशी हुई, लेकिन वे उन शाकाहारियों को तिरस्कार भरी नजरों से देखते थे जो अपने स्वास्थ्य को लेकर हद से ज्यादा चिंतित रहते थे और केवल बीमारियों की ही बात करते थे। वे शाकाहार को अपनी बनाई आध्यात्मिक योजना में शामिल करने की ओर अग्रसर थे, लेकिन यह योजना उनके लंदन के अनुभवों से काफी प्रभावित थी। जैसा कि पहले बताया गया है, उन्होंने पहले शाकाहार को नैतिक आवश्यकता माना था, लेकिन मांसाहारी आहार को 'वैज्ञानिक रूप से' श्रेष्ठ समझा था। अब वे शाकाहारी आहार की श्रेष्ठता को स्वीकार कर चुके थे, 1890 में लंदन वेजिटेरियन सोसाइटी में शामिल हुए और अन्य उत्साही लोगों से मिले। उन्होंने शाकाहारी पत्रिकाएँ पढ़ना शुरू किया और 'द वेजिटेरियन' के संपादक, जोशिया ओल्डफील्ड ने उन्हें सितंबर 1890 में अंतर्राष्ट्रीय शाकाहारी सम्मेलन में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया। इस नेटवर्क के भीतर गांधी जी को एक बड़ी आजादी मिली: वे शाकाहारी रेस्तरां में भोजन कर सकते थे और सोसाइटी द्वारा विज्ञापित शाकाहारी आवासों का उपयोग करके देश भर में यात्रा कर सकते थे। बाद में वे बेज़वॉटर में ओल्डफील्ड के आवास में रहने लगे। गांधी ने अपने मित्र के बारे में उत्साहपूर्वक टिप्पणी की: ‘मैंने उन्हें प्रतिदिन सोलह घंटे या उससे अधिक काम करते देखा है। जब मैंने उन्हें आखिरी बार देखा था, तब वे रोटी, अंजीर और पानी पर ही जीवन यापन कर रहे थे।’ 4 ओल्डफील्ड ने कहा: ‘वे सुखद दिन थे, इस चेतना के साथ कि हम दुनिया को बेहतर बनाने में मदद कर रहे थे।’ 5
1891 तक गांधी जी 'द वेजिटेरियन' पत्रिका में लेखों के माध्यम से शाकाहार का बचाव कर रहे थे और भारत की कमज़ोरी के लिए अन्य कारणों को जिम्मेदार ठहरा रहे थे, जिनमें बाल विवाह भी शामिल था, जिसके बारे में माना जाता था कि इससे कमज़ोर संतानें पैदा होती हैं और युवा माता-पिता पर बोझ पड़ता है। 6 संपूर्ण पोषण संतुलन की खोज में वे हर तरह के खाद्य पदार्थों के चलन में आ गए, चाहे उसका कोई तर्कसंगत आधार हो या न हो। वे

लिखते हैं, 'उन दिनों एक मत था जो चाय और कॉफी को हानिकारक मानता था और कोको का पक्षधर था' - और फिर, कोको का ही बोलबाला रहा। 7 उन्होंने दर्ज किया कि उनके आहार संबंधी सभी भावी प्रयोगों का बीज लंदन में बोया गया था (संभवतः उन्होंने मांसाहार के अपने भारतीय अनुभवों को प्रयोगों में शामिल नहीं किया)। उन्होंने अपने स्वयं के आहार भी बनाए, स्टार्चयुक्त खाद्य पदार्थों का त्याग किया, केवल रोटी और फल पर जीवन व्यतीत किया, फिर पनीर, दूध और अंडे पर।
गांधी जी का खान-पान के प्रति कट्टर माने जाने वाले लोगों के साथ
मेलजोल लंदन में रहने वाले एक अन्य काठियावाड़ी दलपतराम शुक्ला को असहज कर देता था, जो चाहते थे कि उनका युवा मित्र एक सभ्य और अनुभवी व्यक्ति बने। एक शाम वे गांधी जी को थिएटर ले गए, उससे पहले उन्होंने एक रेस्तरां में भोजन किया, जहाँ गांधी जी ने वेटर को बुलाकर पूछा कि क्या सूप शाकाहारी है, जिससे शुक्ला को शर्मिंदगी महसूस हुई। अपने मित्र की इस बात पर हुई असुविधा को देखकर गांधी जी ने फैसला किया कि भले ही वे मांसाहार पर अपना रुख न बदलें, फिर भी वे एक सच्चे अंग्रेज सज्जन बनेंगे।
इसलिए उन्होंने काफी खर्च करके अपने पहनावे को बेहतर बनाया। उन्होंने एक टॉप-हैट और एक शाम का सूट खरीदा और अपने तौर-तरीकों को सुधारने में जुट गए। उन्हें सलाह दी गई कि उन्हें नृत्य और फ्रेंच बोलना सीखना होगा, इसलिए उन्होंने प्रशिक्षण के लिए दाखिला लिया। उन्हें नृत्य कठिन लगा, इसलिए उन्होंने एक वायलिन खरीदा और पश्चिमी संगीत का शौक पैदा करने के लिए एक शिक्षक नियुक्त किया। उन्होंने एक भाषण कला शिक्षक भी नियुक्त किया। यह 'मोह', जैसा कि उन्होंने इसे कहा, लगभग तीन महीने तक चला, जिसके बाद उन्होंने अपने सभी शिक्षकों की सेवाएं छोड़ दीं - हमेशा की तरह, एक बार फिर अतिवादी रुख अपनाते हुए। वास्तव में, उस समय किसी गैर-अंग्रेजी भाषी व्यक्ति के लिए भाषण कला की कक्षाएं वास्तव में मूल्यवान होतीं - यह तथ्य कि उन्हें लगा कि उन्हें इनकी आवश्यकता नहीं है, इसका मतलब था कि वे अपने भविष्य में अंग्रेजी में भाषण देने को नहीं, बल्कि अपने पिता की तरह भारतीय अदालतों या भारतीय लोक सेवा में काम करने को देखते थे। 'चार्म स्कूल' की इन चीजों को छोड़ने के बावजूद उन्होंने 'पहनावे में सजगता' बनाए रखी; और उन्होंने ऐसा कई वर्षों तक किया, जैसा कि उन्होंने दावा किया - निश्चित रूप से ब्रिटेन में अपने पूरे समय के दौरान वे 'ब्राउन अंग्रेज'

की छवि थे। 8 लंदन में रहने वाले एक भारतीय ने उस समय उनका वर्णन इस प्रकार किया: ‘गांधी ने ऊँची रेशमी टोपी पहनी हुई थी, जो चमकदार पॉलिश की हुई थी, एक कड़ा और स्टार्च किया हुआ कॉलर (जिसे उस समय ग्लैडस्टोन कॉलर कहा जाता था), इंद्रधनुष के सभी रंगों वाली एक आकर्षक टाई, जिसके नीचे एक बढ़िया धारीदार कमीज थी। गांधी ने मॉर्निंग कोट, दो छाती वाली बनियान, गहरे रंग की धारीदार पतलून, पेटेंट चमड़े के जूते और स्पैट्स पहने हुए थे। उनके पास चमड़े के दस्ताने और चांदी की मूठ वाली छड़ी थी।’ 9
अब वह अपनी घटती हुई धनराशि को लेकर अधिक चिंतित होने लगा था। परिवार
के साथ रहना बहुत महंगा साबित हो रहा था, इसलिए उसने स्टोर स्ट्रीट में शायद कुछ कमरे किराए पर ले लिए; वह जहाँ भी जाना होता, पैदल ही जाता, प्रतिदिन आठ से दस मील की दूरी तय करता, और उसने घर पर ही कुछ खाना बनाना शुरू कर दिया। उसे अपने खर्चों को धीरे-धीरे कम करने के अनुशासन में आनंद आता था: 'मैंने अपने खर्च किए गए हर पैसे का हिसाब रखा, और मेरे खर्चों की सावधानीपूर्वक गणना की गई थी।' अंततः वह भोजन पर प्रतिदिन लगभग एक शिलिंग में गुजारा करने में सक्षम हो गया। 10 उसने खर्च कम करने के बजाय अनुशासन के कारण अपने खाने की किस्मों को भी कम कर दिया, और भारत से भेजे गए मसालों का उपयोग बंद कर दिया, और उबले हुए पालक का शौकीन हो गया।
एक बार वे ब्रोंकाइटिस से बीमार पड़ गए और डॉक्टर को बुलाया गया, जिसने गांधीजी को अपनी ताकत के लिए मांस खाने की सलाह दी। वह लेटे हुए भारतीय के पास गोमांस की चाय लेकर आया और उससे कहा कि या तो इसे पी लो या मर जाओ। गांधीजी ने याद करते हुए कहा, ‘मुझे जवाब देना पड़ा कि अगर यह ईश्वर की इच्छा है कि मैं मर जाऊं, तो मैं मर जाऊंगा, लेकिन मुझे यकीन है कि यह ईश्वर की इच्छा नहीं हो सकती कि मैं उस शपथ को तोड़ूं जो मैंने भारत छोड़ने से पहले अपनी माँ की गोद में ली थी।’ 11
बार परीक्षा में व्यस्त न होने पर, उन्होंने खाली समय बिताने के लिए एक अध्ययन पाठ्यक्रम चुनने का भी निर्णय लिया और लंदन मैट्रिकुलेशन परीक्षा दी, जो एक सामान्य परीक्षा थी और जिससे बिना किसी अतिरिक्त खर्च के उनका सामान्य ज्ञान बढ़ा। उन्होंने अपना समय सारिणी व्यवस्थित किया और लैटिन और विज्ञान जैसे विषयों पर कड़ी मेहनत की; हालाँकि पहली बार में वे परीक्षा में असफल रहे (लैटिन के प्रश्नपत्र में), उन्होंने दोबारा परीक्षा दी और जून 1890 में उत्तीर्ण हो गए।

उन्होंने टिप्पणी की कि प्रत्येक छात्र को अध्ययन के लिए इंग्लैंड
जाना चाहिए क्योंकि वहाँ बहुत कुछ सीखा जा सकता है, न कि वहाँ मौजूद चीजों के कारण, बल्कि वहाँ मौजूद न होने के कारण: 'जब वह इंग्लैंड में होता है तो वह अकेला होता है, उसे चिढ़ाने और खुशामद करने के लिए कोई पत्नी नहीं होती, लाड़-प्यार करने के लिए कोई माता-पिता नहीं होते, देखभाल करने के लिए कोई बच्चे नहीं होते, और परेशान करने के लिए कोई संगति नहीं होती।' 12 गांधी पहले से ही व्यक्तिगत स्वतंत्रता को अपने परिवार से मुक्त होने के रूप में देख रहे थे, जो उनके रिश्तेदारों के साथ व्यवहार में एक निरंतर विषय रहेगा।
लंदन में रहते हुए गांधीजी साहित्यिक मंडलों में सक्रिय नहीं थे (जैसा कि उनकी बाद की मित्र सरोजिनी नायडू थीं), लेकिन उन्होंने उस समय के कुछ उपन्यास पढ़े, जिनमें ऑस्कर वाइल्ड की 'पिक्चर ऑफ डोरियन ग्रे' भी शामिल थी। बाद में उन्होंने टिप्पणी की: 'किसी व्यक्ति द्वारा किया गया एक बड़ा अपराध उसके चेहरे को इस तरह बदल देता है कि अपराध उस पर अंकित हो जाता है', मानो साहित्य की सच्चाई को शाब्दिक तथ्य के रूप में पढ़ा जा सकता हो - ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने भारतीय धार्मिक कथाओं की घटनाओं का वर्णन इस प्रकार किया मानो वे ऐतिहासिक पात्रों के बारे में हों। 13 लेखक के बारे में उन्होंने टिप्पणी की: 'वाइल्ड ने सर्वोच्च कला को केवल बाहरी रूपों में देखा और इसलिए अनैतिकता को सुंदर बनाने में सफल रहे।' 14
दिसंबर 1890 में उन्होंने बार परीक्षा की अंतिम तिथि दी, जो चार दिनों तक चली, और अगले वर्ष की शुरुआत में उन्हें पता चला कि वे उत्तीर्ण होने वाले तीन-चौथाई उम्मीदवारों में से एक थे। उन्हें बार की योग्यता पूरी करने के लिए लंदन में ही रहना पड़ा, लेकिन अब वे वेजिटेरियन सोसाइटी के साथ अपनी भागीदारी बढ़ाने के लिए स्वतंत्र थे।
गांधी जी के पास चार लोगों के परिचय पत्र थे, जिनमें दादाभाई नौरोजी भी शामिल थे, जो गुजरात के एक पारसी बुद्धिजीवी और कपास व्यापारी थे। नौरोजी आगे चलकर संसद के पहले एशियाई सदस्य बने और उन्होंने 1892 से 1895 तक फिन्सबरी सेंट्रल का प्रतिनिधित्व किया (उनके चुनाव अभियान में मोहम्मद अली जिन्ना ने मदद की थी, जो उस समय लंदन में कानून की पढ़ाई कर रहे थे)। गांधी जी ने लंदन में अपने प्रवास के काफी बाद तक नौरोजी को अपना पत्र नहीं दिया, क्योंकि उन्हें लगा कि इतने महान व्यक्ति को परेशान करने का

उन्हें कोई अधिकार नहीं है। हालांकि नौरोजी ने अपने युवा प्रशंसक का गर्मजोशी से स्वागत किया, लेकिन गांधी जी नौरोजी की सहायता की पेशकश को स्वीकार नहीं कर सके।
भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की ब्रिटिश समिति की स्थापना जुलाई 1889 में हुई थी, लेकिन गांधी जी ने इसकी किसी भी बैठक में भाग नहीं लिया था। हालांकि, उन्होंने लंदन इंडिया सोसाइटी की बैठकों में भाग लिया था, जहाँ 'भारत से संबंधित राजनीतिक, सामाजिक और साहित्यिक विषयों' पर चर्चा होती थी और इंग्लैंड की जनता को 'समय-समय पर उठने वाले सभी महत्वपूर्ण प्रश्नों पर' भारतीय मत से अवगत कराया जाता था। 15 इस सोसाइटी की स्थापना नौरोजी ने 1865 में की थी, इसलिए गांधी जी के इसकी बैठकों में भाग लेने तक यह एक परिपक्व संस्था बन चुकी थी। नौरोजी ने निष्पक्षता की भावना से प्रेरित, ब्रिटिशों के न्यायपूर्ण और निष्पक्ष प्रशासन के माध्यम से भारत की संवैधानिक प्रगति की कल्पना की थी। यह एक ऐसा दृष्टिकोण था जो प्रबुद्ध शासन की उदारवादी परियोजना को अक्षरशः स्वीकार करता था। जब भारत का शासन सुचारू रूप से नहीं चलता था, तो नौरोजी इसकी आलोचना करते हुए इसे 'अन्यायपूर्ण और गैर-ब्रिटिश' बताते थे। 16
लंदन में गांधी की मुख्य गतिविधियाँ वेजिटेरियन सोसाइटी के साथ थीं। सितंबर 1890 में उन्हें कार्यकारी समिति के लिए चुना गया, लेकिन वे समिति के लिए निराशाजनक साबित हुए: हालाँकि वे व्यक्तियों से बात करने में कुशल थे, लेकिन समिति की बैठक में बोलने में वे बहुत संकोची थे। उन्होंने लिखा, ‘अक्सर ऐसा होता था कि जैसे ही मैं बोलने का साहस जुटाता, कोई नया विषय शुरू हो जाता।’ 17 वेजिटेरियन सोसाइटी ने आहार को एक सुधारक शक्ति के रूप में उनके विश्वास की पुष्टि की। वहाँ उनका सामना शराब के विरोधियों से भी हुआ, और उन्होंने भारत में यह घोषणा करने में आत्मविश्वास महसूस किया कि ‘ब्रिटिश शासन की सबसे बड़ी बुराइयों में से एक शराब का आयात है – जो मानवता का शत्रु है, सभ्यता का अभिशाप है’; बाद में उन्होंने इसी तरह तंबाकू की भी निंदा की। 18
इस संस्था को मुख्य रूप से एक धनी लौह कारखाने के मालिक अर्नोल्ड हिल्स द्वारा वित्त पोषित किया जाता था, जो अपने ही तरह के पितृसत्तात्मक पूंजीवाद का पालन करते थे और तंबाकू, शराब और यौन मामलों में घोर शुद्धतावाद को बढ़ावा देते थे। उनके ईसाई धर्म का स्वरूप, जिसका गांधी के

चिंतन पर गहरा प्रभाव माना जाता है, मनुष्य की पूर्णता पर आधारित था: शरीर की अनियंत्रित इच्छाओं को नियंत्रित करके लोग यीशु के समान बन सकते हैं। शाकाहार पर लिखे निबंधों में हिल्स ने 'जीवन शक्ति का सुसमाचार' का प्रचार किया, जिसमें 'जीवन शक्ति' विकसित करने के लिए कच्चे फल, सब्जियां, मेवे, दालें और अनाज जैसे 'जीवनदायी खाद्य पदार्थ' खाने की सलाह दी गई थी। उनका मानना था कि खाना पकाने से भोजन में संग्रहित सूर्य की किरणों की शक्ति कम हो जाती है और उन्होंने सब्जियों को कच्चा खाने की सलाह दी। उन्होंने समझाया: 'केवल निर्जीव और उत्तेजक खाद्य पदार्थों के सेवन से परहेज करना ही पर्याप्त नहीं है; शाकाहार के सुसमाचार के तहत, हम जीवनदायी भोजन और जीवनदायी पेय के आशीर्वाद को सुनते हैं।' 19 गांधी ने 1892 में बंबई और 1893 में प्रिटोरिया में पौष्टिक भोजन का प्रयोग किया, लेकिन इसे पचाना मुश्किल था और इससे उन्हें भूख और बीमारी महसूस हुई - इस तरह की प्रतिक्रिया सबसे उत्साही प्रयोगकर्ता को भी बता देगी कि कुछ गड़बड़ है। हिल्स के विचार में जीवन शक्ति के संरक्षण का एक हिस्सा प्रजनन के
विशेष उद्देश्य को छोड़कर यौन संबंध से परहेज करना था। यौन संबंध 'अपने विशेष उद्देश्य के लिए दिया गया है, और किसी अन्य उद्देश्य के लिए नहीं। इसका दुरुपयोग आनंद के लिए नहीं किया जा सकता; इसे वासना के लिए नहीं किया जा सकता।' 20 वेजिटेरियन सोसाइटी (और द वेजिटेरियन में हिल्स के लेखों) में ही गांधीजी का पहली बार यौन संबंध के संबंध में इस चरम शुद्धतावादी सिद्धांत से सामना हुआ, एक ऐसा सिद्धांत जो उनके परिवार के हिंदू धर्म में मौजूद नहीं था। हिल्स का एक और विश्वास इससे भी अधिक चरम था कि विवाह के बाद भी ब्रह्मचर्य का पालन किया जाना चाहिए, जिसे 'विवाह बंधन के भीतर पवित्रता' कहा जाता है; यह बाद के जीवन में गांधीजी द्वारा अपने स्वयं के आदर्श समाजों के संगठन का एक मुख्य आधार बना। 21
शाकाहारी समाज के एक प्रमुख सदस्य थॉमस एलिसन थे, जो एक चिकित्सक और प्राकृतिक चिकित्सा के संस्थापक थे। प्राकृतिक चिकित्सा व्यायाम, ताजी हवा, शाकाहारी भोजन और शराब, तंबाकू, कॉफी और चाय से परहेज के माध्यम से स्वास्थ्य को बढ़ावा देती थी। अब तक सब कुछ हिल्स के विचारों से मेल खाता था, लेकिन बार-बार गर्भधारण से पीड़ित अत्यधिक प्रजनन क्षमता वाली विक्टोरियन महिला के प्रति सहानुभूति के कारण, उन्होंने जन्म नियंत्रण का भी समर्थन किया। गांधी इन दोनों के बीच के विवाद में शामिल हो गए, जिसका

अंत एलिसन को समाज से निष्कासित करने के प्रस्ताव के रूप में हुआ। गांधी जन्म नियंत्रण का विरोध करने में हिल्स के प्रति सहानुभूति रखते थे, लेकिन उनका मानना था कि हिल्स द्वारा किसी व्यक्ति को 'केवल इसलिए निष्कासित करना अनुचित था क्योंकि उसने शुद्धतावादी नैतिकता को समाज के उद्देश्यों में से एक मानने से इनकार कर दिया था'। 22 गांधी ने अपने विचार लिखित रूप में रखे और अपनी जेब में भाषण लेकर समिति की बैठक में गए, लेकिन फिर भी वे इसे प्रस्तुत करने के लिए पर्याप्त साहसी महसूस नहीं कर पाए, और अध्यक्ष ने इसे किसी और से पढ़वाया। एलिसन हार गए और उन्हें निष्कासित कर दिया गया; बाद में उनके प्रगतिशील विचारों के कारण उन्हें मेडिकल रजिस्टर से हटा दिया गया, और उन्होंने साबुत अनाज की बेकरी की स्थापना की जो आज भी उनके नाम से जानी जाती है।
लंदन में, कम से कम उनके अपने वृत्तांतों के अनुसार, गांधीजी भोजन के प्रति अपने लगाव में लिप्त प्रतीत होते थे, लेकिन उन्होंने यौन विषयों पर गहन चिंतन का उल्लेख नहीं किया है, जैसा कि बाद के जीवन में उनका मुख्य विषय रहा। एक बार 1890 में पोर्ट्समाउथ में एक शाकाहारी सम्मेलन में, उन्हें एक ऐसे लॉजिंग हाउस में ठहराया गया जो वेश्यालय के रूप में भी संचालित होता था। जब बैठक कक्ष में बातचीत उत्तेजक मोड़ लेने लगी, तो गांधीजी को अपनी माँ से किया गया वचन याद आया और वे वहाँ से भाग गए, हालाँकि उन्होंने टिप्पणी की कि यह 'पहला अवसर था जब मेरी पत्नी के अलावा किसी अन्य महिला ने मुझे कामुक बनाया'। 23 इसके अलावा, उन्होंने यौन मनोरंजन के संबंध में बहुत कम उल्लेख किया है, सिवाय इसके कि वे हर रविवार को एक बुजुर्ग महिला के घर जाते थे, जिनसे उनकी मित्रता हो गई थी और जो उन्हें युवा महिलाओं से मिलवाने और विवाह के गुणों के बारे में समझाने के लिए उत्सुक थीं। 'इशारा करने' को प्रोत्साहित किया जाता था, और उन्हें अक्सर विशेष रूप से एक युवती के साथ अकेले छोड़ दिया जाता था। अंततः, वह इसे और सहन नहीं कर सके और, अब भी इतने संकोची थे कि आमने-सामने बोलने का साहस नहीं था, इसलिए उन्होंने अपनी मेज़बान को एक पत्र भेजा जिसमें उन्होंने स्वीकार किया कि वे विवाहित हैं और उनका एक बेटा है, और कहा: ‘क्या आप मुझे क्षमा करेंगी? मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मैंने युवती के साथ कोई अनुचित व्यवहार नहीं किया है।’ 24 उस बुजुर्ग महिला ने सौहार्दपूर्ण ढंग से उत्तर दिया, और उन्हें उनके घर आमंत्रित किया जाता

रहा। गांधीजी को लगा कि सत्य के प्रति उनकी निष्ठा ने उन्हें नैतिक संकट से बचा लिया है। संयोगवश, यह उल्लेखनीय है कि लंदन में अपने समय के दौरान आम ब्रिटिश परिवारों के साथ उनकी मुलाकातों में नस्लीय भेदभाव का कोई संकेत नहीं मिला। यदि कोई अप्रिय घटना हुई भी, तो उन्होंने उसका उल्लेख नहीं किया, जो दक्षिण अफ्रीका में अपने अनुभवों के बाद के विवरणों के बिल्कुल विपरीत है।
लंदन में रहते हुए गांधीजी ने अपनी जाति के रूढ़िवादी हिंदू धर्म से अलग होकर धर्म के क्षेत्र में सबसे अधिक प्रगति की। उन्होंने विश्व के प्रमुख धर्मों का ज्ञान प्राप्त किया और नास्तिकता का प्रचार करने वाली एक पुस्तक भी पढ़ी। एक शाकाहारी ईसाई द्वारा दी गई बाइबिल के कुछ अंश उन्होंने पढ़े। उन्हें बाइबिल का पुराना नियम पढ़कर नींद आने लगी, लेकिन नए नियम, विशेषकर पर्वतीय उपदेश, ने उन्हें आनंदित किया। इस क्षेत्र में उनका अध्ययन व्यवस्थित नहीं था। उन्होंने कार्लाइल की पुस्तक 'हीरोज एंड हीरो वर्शिप' में मोहम्मद के बारे में पढ़ा; एडविन अर्नोल्ड की लोकप्रिय कविता 'द लाइट ऑफ एशिया' में बुद्ध के बारे में पढ़ा; और भगवद गीता से उनका परिचय पहली बार एडविन अर्नोल्ड के ही एक अन्य पद्य अनुवाद, 'द सॉन्ग सेलेस्टियल' में हुआ। गांधीजी को अर्नोल्ड पर इतना भरोसा था कि उनका मानना था कि जानवरों के साथ बुद्ध का भावुक चित्रण यीशु से उनकी श्रेष्ठता को दर्शाता है, क्योंकि इससे बुद्ध का सभी जीवों के प्रति प्रेम सिद्ध होता है, न कि केवल मनुष्यों के प्रति। वास्तव में, बुद्ध द्वारा बीमार मेमने को ले जाने जैसे दृश्य अर्नोल्ड की कल्पना थे और बौद्ध ग्रंथों में इनका कोई आधार नहीं है। गांधी जी जब बेज़वॉटर में रहते थे, तब उन्होंने वहाँ एक शाकाहारी क्लब शुरू किया था। वे स्वयं सचिव और ओल्डफील्ड अध्यक्ष थे। उन्होंने स्थानीय निवासी और स्वयं भी शाकाहारी अर्नोल्ड को उपाध्यक्ष बनने के लिए आमंत्रित किया था। क्लब कुछ समय तक अच्छा चला, लेकिन फिर गांधी जी उस क्षेत्र से चले गए। गांधी जी अर्नोल्ड से कई बार मिले होंगे, लेकिन इसका कोई रिकॉर्ड नहीं है।
गांधीजी को भगवद गीता के मूल संस्कृत संस्करण से थियोसोफिकल सोसाइटी के दो सदस्यों, बर्ट्राम और आर्चीबाल्ड कीथली ने परिचित कराया, जो उनके चाचा और भतीजे थे। संभवतः उनकी मुलाकात गांधीजी के शाकाहार संबंधी संपर्कों के माध्यम से हुई थी। वे अर्नोल्ड का अनुवाद पढ़ रहे थे, लेकिन

यह जानना चाहते थे कि अनुवाद अच्छा है या नहीं, इसलिए उन्होंने गांधीजी से मदद मांगी। गांधीजी ने स्वीकार किया कि उन्होंने किसी भी रूप में गीता नहीं पढ़ी थी और संस्कृत का उनका ज्ञान सीमित था, लेकिन उन्होंने अपने ज्ञान का उपयोग उनके लिए किया। इस प्रकार, वे उस ग्रंथ से परिचित हुए जो भविष्य में उनके जीवन का मार्गदर्शक, उनके लिए आध्यात्मिक सत्य का आदर्श और दैनिक पठन का विषय बनने वाला था।
कीटली दंपति (जिन्हें 'दोनों अविवाहित' बताया गया है, शायद समलैंगिकता के लिए एक नरम शब्द का प्रयोग) ने पश्चिम लंदन स्थित अपना घर थियोसोफी की संस्थापक मैडम ब्लावत्स्की के लिए उपलब्ध कराया और गांधी जी को उनसे मिलवाया। गांधी जी ने ब्लावत्स्की की 'की टू थियोसोफी' पढ़ी, जिसने हिंदू धर्म के प्रति उनके लगाव को और मजबूत किया। हालांकि गांधी जी उन्हें मुश्किल से जानते थे, फिर भी ब्लावत्स्की गांधी जी के जीवन में दो कारणों से महत्वपूर्ण थीं: पहला, क्योंकि वह इंग्लैंड में हिंदू दर्शन को बढ़ावा देने वाले संगठन की प्रमुख थीं, और इसलिए उन्होंने गांधी जी के इस विश्वास को और मजबूत किया कि 'आधुनिकीकरण' की जल्दबाजी में अपनी मातृभूमि के मूल्यों को त्यागना नहीं चाहिए। दूसरा, थियोसोफी विचारधारा का भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन पर भी प्रभाव था, और उनके अनुयायियों ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
हेलेना पेट्रोवना ब्लावत्स्की का जन्म 1831 में रूस में एक
प्रतिष्ठित परिवार में हुआ था और उन्होंने कम उम्र में ही यात्रा करना शुरू कर दिया था, जिनमें भारत और तिब्बत की यात्राएँ भी शामिल थीं। धार्मिक रूप से प्रेरित होकर, वे संयुक्त राज्य अमेरिका में बस गईं, जहाँ उनकी मुलाकात पूर्व कर्नल हेनरी ओलकॉट से हुई, जो अध्यात्मवाद पर लिख रहे थे। उन्होंने और कुछ समान विचारधारा वाले व्यक्तियों ने मिलकर 1875 में न्यूयॉर्क में थियोसोफिकल सोसाइटी की स्थापना की। यह सोसाइटी लिंग, जाति या धर्म की परवाह किए बिना मानवता के सार्वभौमिक भाईचारे के लिए समर्पित थी। इसका उद्देश्य तुलनात्मक धर्म, दर्शन और विज्ञान के अध्ययन को प्रोत्साहित करना और प्रकृति के अनसुलझे नियमों और मनुष्य में निहित मानी जाने वाली शक्तियों की खोज करना था। यह समूह भारत चला गया और 1882 में मद्रास के पास अड्यार में अपना स्थायी मुख्यालय स्थापित किया। नकली मानसिक घटनाओं के खुलासे से थियोसोफी की विश्वसनीयता कुछ हद तक कम होने

के बावजूद, इसने एक शक्तिशाली प्रभाव डाला, विशेष रूप से एनी बेसेंट जैसे आध्यात्मिक झुकाव वाले समाज सुधारकों पर, जिन्होंने ब्लावत्स्की की रचनाओं को पढ़कर नास्तिकता से आध्यात्मिकता की ओर रुख किया - यह बात गांधी जी को भी प्रभावित कर गई, जिनके लिए पुस्तकें हमेशा से एक गहरा प्रभाव रही थीं। उन्होंने लंदन में बेसेंट का भाषण भी सुना और उनकी अंतिम टिप्पणी से वे बहुत प्रभावित हुए कि उन्हें इस बात से अत्यंत संतुष्टि होगी कि उनकी समाधि पर यह लिखा हो कि उन्होंने सत्य के लिए जीवन व्यतीत किया और सत्य के लिए ही प्राण त्यागे। 25 1891 में ब्लावत्स्की की मृत्यु के बाद, बेसेंट संगठन की प्रमुख हस्तियों में से एक बन गईं और 1907 में अध्यक्ष चुनी गईं। थियोसोफी के संदेश का एक हिस्सा यह था कि विश्व का सर्वोच्च ज्ञान पूर्व में निहित है, और यह पूरी तरह से अतीत में समाहित नहीं है, बल्कि वर्तमान समय में जीवित गुरुओं, या महात्माओं द्वारा संरक्षित है।
गांधी लिखते हैं कि वे थियोसोफिस्टों में शामिल नहीं हुए, लेकिन स्वतंत्र प्रमाण इस बात की पुष्टि करते हैं कि वे 26 मार्च 1891 को एक सहयोगी सदस्य बन गए थे, यह उन कई उदाहरणों में से एक है जब गांधी की 'सत्य के साथ प्रयोग' आम तौर पर समझे जाने वाले सत्य से भिन्न है। 26 आध्यात्मिक रूप से, गांधी जी पूर्णता की ओर अपने स्वयं के मार्ग पर चल रहे थे, और बाद में उन्होंने कहा कि बीस या इक्कीस वर्ष की आयु में, जब वे लंदन में थे, तब उन्होंने पहली बार 'मन की ऐसी अवस्था प्राप्त करने की इच्छा व्यक्त की जो विकट परिस्थितियों में या मृत्यु के क्षण में भी प्रभावित न हो'। 27 इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए उन्होंने एक गुरु या आध्यात्मिक मार्गदर्शक की तलाश की, जिसे वे अपने हृदय में स्थापित कर सकें, जैसा कि उन्होंने स्वयं कहा था। उनका मानना था कि 'पूर्णता के लिए निरंतर प्रयास करना आवश्यक है। क्योंकि व्यक्ति को वही गुरु मिलता है जिसका वह पात्र होता है। पूर्णता के लिए अनंत प्रयास ही अपने आप में एक पुरस्कार है। शेष सब ईश्वर के हाथ में है।' 28 यह कहना लगभग अपरिहार्य है कि गांधी जी जैसे दृढ़ निश्चयी व्यक्ति को कभी भी कोई ऐसा व्यक्ति नहीं मिला जो उनका पूर्ण आध्यात्मिक मार्गदर्शक हो; वे एक अकेले साधक के रूप में अपना जीवन व्यतीत करते रहे और दूसरों को अपने ज्ञान का प्रसार करते रहे।

ब्रिटेन के अलावा अन्य यूरोपीय देशों के बारे में गांधीजी का ज्ञान सीमित था, लेकिन वे मई 1889 में विश्व प्रदर्शनी के लिए पेरिस गए और वहां एक सप्ताह बिताया। उन्होंने एफिल टॉवर पर चढ़ाई की और कैथोलिक चर्चों का दौरा किया, जहां वे उपासकों की भक्ति से प्रभावित हुए, जो राजधानी की सड़कों के शोर और हलचल से कुछ ही दूरी पर स्थित थे।
भारत जाने से पहले उन्होंने वेजिटेरियन सोसाइटी के सदस्यों के लिए विदाई भोज दिया, लेकिन अक्सर की तरह वे भाषण देने में संकोच कर रहे थे। उन्होंने कहा कि जब वे अपने तैयार शब्द बोलने के लिए उठे तो उनका दिमाग सुन्न हो गया और उन्हें लगा कि उन्होंने खुद को शर्मिंदा कर लिया है, हालांकि समकालीन रिकॉर्ड इससे असहमत हैं। वास्तव में, गांधी जी अक्सर खुद को जितना शर्मीला और अक्षम दिखाते थे, असल में वे उतने शर्मीले नहीं थे: 1891 के वसंत और गर्मियों में उन्होंने दक्षिणी इंग्लैंड के विभिन्न हिस्सों में शाकाहार में रुचि रखने वाले श्रोताओं को कई बार अपना लेख 'भारत के खाद्य पदार्थ' प्रस्तुत किया या अन्य विषयों पर भाषण दिए, हालांकि उन्होंने यह भी उल्लेख किया है कि वेंटनोर में वे शर्म से इतने अभिभूत हो गए थे कि उनके एक सहकर्मी को उनका लेख पढ़ना पड़ा।
उनके शाकाहारी मित्रों ने उनके जाने पर इस प्रकार प्रतिक्रिया दी: ‘शोक का कोई संकेत नहीं था, क्योंकि सभी को लगा कि यद्यपि श्री गांधी भारत लौट रहे हैं, फिर भी वे शाकाहार के लिए एक और भी बड़े कार्य के लिए जा रहे हैं, और उनके विधि करियर की समाप्ति और उनकी अंतिम सफलता पर, उन्हें बधाई देना व्यक्तिगत विलाप के समान होना चाहिए।’ 29 शाकाहार, आहार संबंधी प्रयोग और उपवास गांधी के लिए कम से कम उतने ही महत्वपूर्ण थे जितना कि अहिंसा, जिसे आम तौर पर उनकी विरासत माना जाता है।
गांधी का शाकाहार उनके व्यापक विश्वदृष्टिकोण से अलग नहीं था;
उन्होंने अन्य भारतीयों को सलाह दी: ‘शाकाहारी आंदोलन अप्रत्यक्ष रूप से भारत को राजनीतिक रूप से सहायता करेगा… क्योंकि अंग्रेज शाकाहारी भारतीय आकांक्षाओं के प्रति अधिक सहजता से सहानुभूति रखेंगे (यह मेरा व्यक्तिगत अनुभव है)।’ 30 वे ब्रिटिश उदारवादियों द्वारा समर्थित उस सिद्धांत में विश्वास करते थे, जिसके तहत सरकार में भारतीयों की भागीदारी बढ़ाई जानी चाहिए, ब्रिटिश सभ्यता से सर्वोत्तम चीजें लेकर बदले में पूर्व की सर्वोत्तम चीजें प्रस्तुत की जानी चाहिए।

अपनी माँ से किए गए वादों से मजबूत होकर वे लंदन से विदा हुए, जिन्हें उन्होंने भारी दबाव के बावजूद निभाया था। इसके अलावा, उन्हें वेजिटेरियन सोसाइटी के माध्यम से औपचारिक संगठनों का ज्ञान और थियोसोफिस्टों और अर्नोल्ड हिल्स के माध्यम से धार्मिक प्रचार का ज्ञान भी प्राप्त हुआ था। वे हेनरी साल्ट और एडविन अर्नोल्ड के कार्यों द्वारा प्रचारित मानव पूर्णता के विचारों के साथ भी लंदन से विदा हुए: कि एक व्यक्ति अपने प्रयासों से आध्यात्मिक शक्ति विकसित कर सकता है। इस समय के अभिलेखों में किसी भी विशुद्ध राजनीतिक विचार या कानून के कामकाज में सुधार के लिए किसी भी योगदान का अभाव है। लंदन में उनके समय से ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिलता कि गांधी, जो उस समय बाईस वर्ष के थे जब उन्होंने लंदन छोड़ा था, एक महान राजनीतिक नेता बनेंगे, और निश्चित रूप से ऐसा कोई प्रमाण नहीं कि वे एक महान वकील बनेंगे। उन्हें 10 जून 1891 को बार में शामिल किया गया, 11 जून को उच्च न्यायालय में पंजीकृत किया गया, और 12 जून को वे टिलबरी के रास्ते स्टीमशिप ओशियाना से देश छोड़कर चले गए। उन्होंने कहा, 'प्रिय लंदन को छोड़ते समय मुझे गहरा अफसोस हुआ।' 31

3

नेटाल में रोमांच गांधी के भाई लक्ष्मीदास उनसे बंबई बंदरगाह पर मिले। भारत लौटना उनके लिए दुख भरा था, क्योंकि उनकी माता का निधन 41 वर्ष की आयु में हो गया था, उनकी पढ़ाई में सफलता की खबर मिलने के कुछ ही समय बाद। परिवार ने 1891 में पुतलीबाई की मृत्यु की बात उनसे छुपा रखी थी, क्योंकि उन्हें लगा कि विदेश में रहते हुए उन्हें बताने का कोई फायदा नहीं है। अब उन्होंने लगभग सबसे पहले यही पूछा, 'मां कैसी हैं?' लक्ष्मीदास ने पहले तो सवाल टाल दिया, लेकिन उसी शाम गांधी ने फिर से पूछा। उन्होंने कहा कि उनका दुख 'मेरे पिता की मृत्यु से भी कहीं अधिक' था, लेकिन उन्हें अपने आत्म-संयम पर गर्व था, जिसकी वजह से वे ऐसे व्यवहार कर रहे थे मानो कुछ हुआ ही न हो।
गांधीजी की ब्रिटेन यात्रा के कारण परिवार को जाति से बहिष्कृत कर
दिया गया था, जिसका असर उन पर अभी भी पड़ रहा था। हालांकि, मोध बनिया समुदाय के एक वर्ग ने उनके धार्मिक शुद्धिकरण के बाद उन्हें फिर से समुदाय में शामिल करने की इच्छा जताई। गांधीजी के जाने से पहले उनके मन में जो भी विचार रहे हों, एक अंग्रेज़-शिक्षित वकील का उनके बीच होना इस जाति समूह के लिए हानिकारक नहीं था। पुतलीबाई की इच्छा थी कि गांधीजी को फिर से समुदाय में शामिल कर लिया जाए, इसलिए गांधीजी मान गए और उनके भाई ने गोदावरी नदी में शुद्धिकरण की व्यवस्था की। इसके बाद, जाति के सभी बुजुर्गों के लिए भोज का आयोजन किया गया, जिसमें गांधीजी ने कमर तक नग्न होकर भोजन परोसा। जाति के एक अन्य वर्ग ने उन्हें फिर से समुदाय में शामिल करने से इनकार कर दिया, और इसलिए उन पर अपने ससुराल जाने पर प्रतिबंध लगा रहा। गांधीजी की अनुपस्थिति में कस्तूरबाई और उनके पुत्र हरिलाल पर भी यह प्रतिबंध लागू था, हालांकि उन्होंने इसका उल्लंघन किया और अपने माता-पिता से मिलने गए, निस्संदेह कुछ हद तक गुप्त रूप से। गांधीजी ने घोषणा की कि वे या तो खुलेआम और ईमानदारी से अपने ससुराल जाएंगे या बिल्कुल नहीं जाएंगे, इसलिए उन्होंने बिल्कुल न जाने का फैसला किया। वह कभी भी परिवार को बहुत महत्व देने वाला व्यक्ति नहीं था, इसलिए शायद उसे मिलने जाने से मना किए जाने से कोई बड़ी कठिनाई नहीं हुई होगी।

तीन साल के अंतराल के बाद कस्तूरबाई से अपने पुनर्मिलन को उन्होंने ज़्यादा महत्व नहीं दिया। ऐसा लगा जैसे उनके बीच कुछ भी नहीं बदला था; उनका इरादा उन्हें पढ़ना-लिखना सिखाने का था, लेकिन फिर से अकेले में उनकी यौन इच्छा आड़े आ गई – जैसा कि उन्होंने कहा, ‘मेरी वासना आड़े आ गई’। उनके प्रति उनका रवैया कुछ मायनों में पहले जैसा ही खराब था: उन्होंने लिखा, ‘मैं हर छोटी-छोटी बात को लेकर अपनी झिझक और संदेह को बरकरार रखता था; एक बार तो मैंने उन्हें उनके पिता के घर भेज दिया, और उन्हें तभी वापस लेने के लिए राजी हुआ जब मैंने उन्हें पूरी तरह से दुखी कर दिया था।’ 2 एक महीने बाद जब वह लौटीं तो ऐसा लगा जैसे उनका रवैया बदल गया हो, और संदेह (और सबक) खत्म हो गए। शायद वह बस दूसरी चीजों में व्यस्त थे। गांधी के लौटने के एक साल बाद, अक्टूबर 1892 में उनके दूसरे बेटे, मनीलाल का जन्म हुआ। उन्हें लगभग चार साल के हरिलाल से जान-पहचान करने में आनंद आया, और उन्होंने हरिलाल और घर के अन्य बच्चों की शिक्षा का जिम्मा उठाया। उन्होंने उन्हें 'मजबूत बनाने' के लिए शारीरिक व्यायाम का एक कार्यक्रम शुरू किया। लक्ष्मीदास को इस बात का गर्व था कि गांधी जी के लौटने से परिवार का सामाजिक स्तर ऊंचा होने वाला था और वे चाहते थे कि उनकी जीवनशैली उनकी आकांक्षाओं के अनुरूप हो। उन्हें अपने भाई की सफलता की अपार आशा थी; लक्ष्मीदास के अनेक मित्र थे और वे उदार स्वभाव के थे, और उन्हें उम्मीद थी कि इस व्यापक सामाजिक नेटवर्क के माध्यम से गांधी जी को काम मिल जाएगा। गांधी जी की लंदन यात्रा और अध्ययन पर लगभग 13,000 रुपये खर्च हुए थे, जो मूल रूप से अनुमानित 5,000 रुपये से कहीं अधिक थे। इसके अलावा, लक्ष्मीदास ने इस उम्मीद में दिल खोलकर खर्च किया था कि उनके भाई के लौटने से परिवार की आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। उन्होंने राजकोट स्थित घर में अंग्रेजी माहौल बनाने का प्रयास किया था: चाय और कॉफी नियमित रूप से परोसी जाती थी, और जो बर्तन पहले केवल विशेष अवसरों के लिए इस्तेमाल होते थे, अब उनका नियमित उपयोग होने लगा था। नया फर्नीचर भी खरीदा गया था। गांधी जी के आगमन से लक्ष्मीदास द्वारा किए गए अन्य 'सुधारों' को भी प्रोत्साहन मिला, जिनमें कोको और दलिया का प्रचलन और यूरोपीय पोशाक का प्रचलन शामिल था।
गांधी जी का एक छिपा हुआ राज़ यह था कि वे वास्तव में एक बहुत ही कमज़ोर वकील थे: उन्हें अपने अनुभव की कमी और अपनी सामान्य अक्षमता का भली-भांति

एहसास था। उन्हें अपनी क्षमताओं पर ज़रा भी भरोसा नहीं था और वे महसूस करते थे कि उन्हें दुनियादारी की ज़्यादा समझ नहीं है। पेशे के एक वरिष्ठ व्यक्ति ने उन्हें आश्वस्त किया कि एक साधारण वकील बनने के लिए किसी असाधारण कौशल की आवश्यकता नहीं होती – बस ईमानदारी और परिश्रम ही काफ़ी है। उन्होंने गांधी जी की सामान्य पठन-पाठन की जानकारी ली और समझदारी से सलाह दी कि यह बहुत कम है: उन्हें दुनिया का कोई ज्ञान नहीं था, यहाँ तक कि भारत के इतिहास का भी नहीं। गांधी जी ने उनकी सलाह मानी और मानव स्वभाव के वैज्ञानिक दृष्टिकोण को दर्शाने वाली कुछ मुखाकृति विज्ञान की पुस्तकें पढ़ीं, लेकिन सीखने के प्रति उनका सुस्त रवैया कभी नहीं बदला।
इसके अलावा, गांधी को उच्च आय वाला वकील बनाने के प्रयासों में उनके भाइयों ने हद से ज्यादा महत्वाकांक्षा पाल ली थी। उन्होंने लैटिन भाषा में रोमन कानून पढ़ा था और इंग्लैंड के सामान्य कानून को समझते थे, लेकिन काठियावाड़ के कानून के बारे में उन्हें कुछ भी नहीं पता था। हालांकि, ब्रिटिश-शिक्षित बैरिस्टर होने के नाते, स्थानीय स्तर पर शिक्षित वकील की तुलना में दस गुना अधिक फीस लेना प्रथागत था, जबकि स्थानीय स्तर पर शिक्षित वकील काम को बेहतर ढंग से कर सकता था। इसलिए गांधी बंबई गए, भारतीय कानून का अध्ययन किया और मामले हासिल करने की कोशिश की। यहाँ उन्होंने सीखा कि एक नए बैरिस्टर को अपना करियर शुरू करने से पहले पाँच या उससे अधिक वर्षों तक इंतजार करना पड़ सकता है।
उन्हें कोई केस नहीं मिलता था और वे इतने सजग थे कि काम ढूंढने के लिए दलालों को भी नहीं रखते थे। पैसे बचाने के लिए वे अदालतों में पैदल आते- जाते थे, हालांकि उन्हें घर-परिवार संभालकर और यूरोपीय पोशाक पहनकर अपना रुतबा बनाए रखना पड़ता था। उन्होंने कुछ समय के लिए अर्नोल्ड हिल्स द्वारा सुझाए गए 'पौष्टिक आहार' का प्रयोग भी किया - केवल कच्चे फल, मेवे, अनाज और दालें खाना। वे बॉम्बे हाई कोर्ट में प्रतिदिन उपस्थित होते थे, लेकिन मामलों को समझने के लिए उनके पास पर्याप्त ज्ञान नहीं था और वे अक्सर ऊंघ जाते थे। उन्होंने शिक्षक के रूप में नौकरी पाने की कोशिश की, लेकिन बीए की डिग्री न होने के कारण उन्हें नुकसान हुआ। उन्होंने कुछ मुफ्त काम किया जिससे उनका आत्मविश्वास बढ़ा, लेकिन अदालत में उनकी पहली पेशी एक आपदा साबित हुई। वे लघु वाद न्यायालय में प्रतिवादी की ओर से पेश हुए थे; जब वादी के गवाह से पूछताछ का समय आया, तो उन्होंने बताया, 'मैं

खड़ा तो हुआ, लेकिन मेरा दिल बैठ गया। मेरा सिर चकरा रहा था और मुझे ऐसा लग रहा था जैसे पूरी अदालत का भी यही हाल हो रहा हो। मुझे कोई सवाल समझ नहीं आ रहा था कि क्या पूछूं।' जज जरूर हँसे होंगे, और वकीलों ने इस तमाशे का आनंद लिया होगा। 3 गांधीजी बैठ गए और एजेंट से कहा कि वे इस मामले की पैरवी नहीं कर सकते; उन्होंने अपनी फीस लौटा दी और शर्मिंदा होकर अदालत से जल्दी से चले गए। भारत छोड़ने तक वे फिर कभी अदालत नहीं गए।
गांधी अब बंबई में अपना प्रतिष्ठान चलाने का खर्च वहन नहीं कर सकते थे, इसलिए वे राजकोट लौट आए और अपने भाई के साथ काम करने लगे, जिन्होंने एक अधिक अनुभवी व्यक्ति के साथ साझेदारी में वकालत का व्यवसाय स्थापित किया था। गांधी अब आवेदन और अन्य कानूनी दस्तावेज तैयार करने का काम करते थे, इस भूमिका में उन्हें अदालत को संबोधित करने की कोई बाध्यता नहीं थी। अपने भाई के प्रति गांधी के ऋणी होने के कारण ही उन्होंने अपने पेशेवर जीवन की सबसे बड़ी गलती की। जब लक्ष्मीदास पोरबंदर के सिंहासन के उत्तराधिकारी के सचिव थे, तब उन्होंने उस युवक द्वारा कुछ राजकीय आभूषणों की चोरी को अनदेखा कर दिया था। भारतीय राजकुमारों को अपने राज्य की संपत्ति को निजी उपयोग के लिए जब्त करने की अनुमति नहीं थी और इस मामले की जांच ब्रिटिश राजनीतिक एजेंट चार्ल्स ओलिवेंट कर रहे थे। गांधी लंदन में ओलिवेंट से मिले थे और उनके साथ उनके कुछ समय के लिए मैत्रीपूर्ण संबंध थे। लक्ष्मीदास ने इसका फायदा उठाया और उनसे आग्रह किया कि वे अंग्रेज पर अपने प्रभाव का इस्तेमाल करें। गांधी ने इसका विरोध किया और लक्ष्मीदास से कहा कि वे उचित तरीके से याचिका प्रस्तुत करें - यदि वे निर्दोष साबित होते हैं, तो वे न्यायसंगत साबित होंगे। लक्ष्मीदास अड़े रहे और गांधी से कहा कि वे दुनिया को नहीं जानते, और निश्चित रूप से काठियावाड़ को तो बिल्कुल नहीं जानते: 'यहाँ केवल प्रभाव मायने रखता है। एक भाई होने के नाते, आपके लिए अपने कर्तव्य से पीछे हटना उचित नहीं है, जबकि आप अपने परिचित अधिकारी से मेरे बारे में स्पष्ट रूप से अच्छी बात कह सकते हैं।' अनिच्छा से गांधीजी ने ओलिवेंट से मिलने की इच्छा जताई, उनके कार्यालय में जाकर उन्होंने अपनी जान-पहचान का जिक्र किया। उन्होंने मामले के बारे में बात शुरू की। ओलिवेंट को इस बात का जरा सा भी आहत होना स्वाभाविक लगा कि व्यक्तिगत अपील से उन पर पूर्वाग्रह आ सकता है: ‘आपका भाई षड्यंत्रकारी है,’ उन्होंने कहा। ‘मैं आपसे और कुछ नहीं सुनना चाहता। मेरे पास समय नहीं

है। अगर आपके भाई को कुछ कहना है, तो वे उचित माध्यम से संपर्क करें।’ गांधीजी को माफी मांगकर चले जाना चाहिए था, लेकिन इसके बजाय उन्होंने अपनी बात जारी रखकर ओलिवेंट को और नाराज कर दिया। ‘आपको अब जाना होगा,’ राजनीतिक एजेंट ने कहा, लेकिन गांधीजी ने अपनी बात जारी रखने की विनती की, जिस पर ओलिवेंट ने अपने चपरासी को बुलवाया, जिसने गांधीजी के कंधे पर हाथ रखकर उन्हें कमरे से बाहर भेज दिया।
जो कुछ हुआ था उस पर विचार करने के बजाय, गांधी अपने साथ हुए व्यवहार से क्रोधित हो गए और तुरंत एक पत्र भेजा जिसमें लिखा था: ‘आपने मेरा अपमान किया है। आपने अपने चपरासी के माध्यम से मुझ पर हमला किया है। यदि आप सुधार नहीं करते हैं, तो मुझे आपके विरुद्ध कार्रवाई करनी पड़ेगी।’ इस मूर्खतापूर्ण बात पर गांधी ने जवाब दिया: ‘आपने मेरे साथ बदतमीजी की। मैंने आपको जाने के लिए कहा, लेकिन आप नहीं माने। मेरे पास अपने चपरासी को आपको बाहर का रास्ता दिखाने का आदेश देने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। उसके जाने के लिए कहने के बाद भी आप नहीं माने। इसलिए उसे आपको बाहर भेजने के लिए आवश्यक बल का प्रयोग करना पड़ा। आप अपनी इच्छानुसार आगे बढ़ सकते हैं।’
गांधी जी बहुत दुखी और असमंजस में थे कि उनका भविष्य क्या होगा। अब वे क्या करें? उनके भाई उनकी मदद नहीं कर सके, इसलिए उन्होंने एक वरिष्ठ वकील, फ़िरोज़शाह मेहता से सलाह ली। मेहता ने उन्हें कुछ न करने की सलाह दी – राजनीतिक अधिकारी के खिलाफ कार्रवाई करने से उन्हें कुछ हासिल नहीं होगा, बल्कि वे खुद को बर्बाद कर लेंगे। गांधी जी ने यह अच्छी सलाह मानी, लेकिन अब वे सचमुच दुविधा में थे क्योंकि क्षेत्र में उनका अधिकांश काम राजनीतिक अधिकारी के दरबार में ही होना था। उन्हें लगा कि उन्हें काठियावाड़ के इस विषैले माहौल से दूर जाना ही होगा।
जब गांधी जी जीविका चलाने के सवाल से जूझ रहे थे, तभी लक्ष्मीदास को पोरबंदर की एक व्यापारी कंपनी, दादा अब्दुल्ला एंड कंपनी के बारे में पता चला, जिसने दक्षिण अफ्रीका में अपना कारोबार खड़ा कर लिया था और एक बड़े मुकदमे में मदद के लिए एक वकील की ज़रूरत थी। फीस अच्छी-खासी थी, साथ ही प्रथम श्रेणी की यात्रा और सभी रहने-खाने का खर्च भी कंपनी देगी। दादा अब्दुल्ला, जो नेटाल में रहते थे जबकि उनके भाई पोरबंदर में कारोबार संभालते थे, भारत और दक्षिण अफ्रीका के बीच एक व्यापारिक साम्राज्य चलाते

थे, जहाँ उनका अपना बेड़ा था। हालाँकि अब्दुल्ला बहुत पढ़े-लिखे नहीं थे, फिर भी उन्होंने कई बार धन कमाया था, खासकर 1888-90 के स्वर्ण संकट के दौरान, जब वे तेरह रुपये प्रति पाउंड के भाव से सोना खरीद पाए थे। उन्हें गांधी जी जैसे व्यक्ति की ज़रूरत थी, जो उनके वकीलों (जो गुजराती नहीं बोलते थे) और खुद (जिनकी अंग्रेज़ी बहुत कमज़ोर थी) के बीच मध्यस्थ का काम कर सकें। गांधी जी, जो दोनों भाषाओं में निपुण थे, कानूनी रूप से योग्य थे और व्यापारिक परिवेश से अच्छी तरह वाकिफ थे (आखिरकार, वे गुजराती व्यापारी जाति से थे), सही समय पर सही जगह पर थे।
अप्रैल 1893 में वह अफ्रीका के लिए रवाना हुए, और कस्तूरबाई को हरिलाल (जो अब पाँच साल का था) और मनीलाल (जो मात्र छह महीने का था) के साथ छोड़ गए। कस्तूरबाई को विदा करते समय उन्हें कुछ खेद था: लंदन में विकसित हुई उनकी परिपक्वता अंततः उनके रिश्तों में फलदायी साबित हो रही थी, और पिछले कुछ महीनों में उनके रिश्ते बेहतर हो रहे थे।
जब स्टीमर नेटाल के मुख्य बंदरगाह डरबन पहुँचा, तो वहाँ उनका स्वागत बुजुर्ग दादा अब्दुल्ला ने किया, जिन्होंने फ्रॉक-कोट, धारीदार पतलून और काली पगड़ी पहने इस सलीके से सजे युवक को कुछ संदेह की नज़र से देखा। स्पष्ट था कि गांधीजी को खुद को साबित करना था। उन्होंने तुरंत देखा कि दक्षिण अफ्रीका में यूरोपीय लोग भारतीयों के साथ कितना तिरस्कारपूर्ण व्यवहार करते थे। इस तिरस्कार की राजनीतिक अभिव्यक्ति, न कि कानूनी तथ्य, उनके प्रमुख कार्य का आधार बनी।
एशियाई लोगों से इसलिए नाराज़गी थी क्योंकि वे एक अजेय शक्ति प्रतीत होते थे – भारत और चीन से आने वाले प्रवासियों की आपूर्ति लगभग कभी खत्म नहीं होती थी; दक्षिण अफ्रीका में उनकी सादगी से जीवन यापन करने और कड़ी मेहनत करने की क्षमता ने उन्हें समृद्ध बनाया, और उनके सहायक पारिवारिक ढांचे ने बच्चों के पालन-पोषण के लिए आदर्श वातावरण प्रदान किया। यूरोपीय लोगों को डर था कि अगर उन्होंने ऐसा होने दिया, तो एशियाई लोग जल्द ही गोरों से संख्या में अधिक हो जाएंगे और आर्थिक रूप से उनसे आगे निकल जाएंगे। न तो एशियाई और न ही यूरोपीय लोगों ने मूल अफ्रीकी लोगों पर ज्यादा ध्यान दिया, जो उन्नीसवीं सदी के अंत में राजनीतिक रूप से अपरिपक्व थे।

एक-दो दिन आराम करने के बाद, दादा अब्दुल्ला गांधीजी को डरबन की अदालत
ले गए। जब मजिस्ट्रेट ने देखा कि युवा वकील ने पश्चिमी पोशाक के साथ पगड़ी पहनी हुई है, तो उन्होंने गांधीजी को अपनी पगड़ी उतारने को कहा। गांधीजी को यह अनुरोध बेतुका लगा, उन्होंने इनकार कर दिया और अदालत से बाहर चले गए। अदालती पत्रकारों ने इस घटना को दर्ज किया और अदालत में पगड़ी पहनने पर गांधीजी के जोर देने की खबर स्थानीय समाचार पत्रों में सुर्खियों में छा गई। इस प्रकार, देश में कदम रखने के कुछ ही दिनों के भीतर उनके आगमन का व्यापक प्रचार हो गया। उन्हें यह स्पष्ट नहीं था कि इस मामले से कैसे निपटा जाए - वे सोच रहे थे कि क्या उन्हें अब से पूरी तरह से ब्रिटिश पोशाक पहननी चाहिए, लेकिन चूंकि ईसाई धर्म अपनाने वाले भारतीय वेटर और अन्य नौकर ऐसा करते थे, तो इसे उन भारतीयों के साथ विश्वासघात माना जाएगा जिन्होंने अफ्रीका में रहते हुए अपनी संस्कृति को बरकरार रखा था। इसलिए उन्होंने फ्रॉक-कोट, पतलून और पगड़ी का अपना संयोजन बनाए रखा।
दक्षिण अफ्रीका में, जहाँ कई कानून डच कानून पर आधारित थे, जिन्होंने रोमन न्यायशास्त्र के तत्वों को आधार बनाया था, वहाँ रोमन कानून का उनका ज्ञान उनके लिए बहुत उपयोगी साबित हुआ। हालाँकि, गांधीजी को लेखा-जोखा का कोई ज्ञान नहीं था, जिस विषय पर उनका मामला टिका हुआ था। इसलिए उन्होंने एक किताब खरीदी और जितना ज्ञान आवश्यक था, उतना स्वयं ही सीख लिया। जब उन्हें इस विषय की अच्छी जानकारी हो गई, तो उन्हें ट्रांसवाल के प्रिटोरिया भेजा गया, जहाँ दादा अब्दुल्ला और तैयब खान मोहम्मद के बीच का मामला सुना जाना था। ट्रांसवाल के बोअर गणराज्य में तैयब खान मोहम्मद का व्यापारिक प्रतिष्ठा का वही स्थान था जो ब्रिटिश उपनिवेश नेटाल में दादा अब्दुल्ला का था।
1890 के दशक में, दक्षिण अफ्रीका चार क्षेत्रों में विभाजित था। इनमें से दो ब्रिटिश क्षेत्र थे: केप कॉलोनी, जो ब्रिटिश शासन के अधीन स्वशासित थी; और नेटाल, जो ब्रिटिश शासन की उपनिवेश थी। दो बोअर गणराज्य थे: ट्रांसवाल और ऑरेंज फ्री स्टेट। इन सभी स्थानों पर नस्लीय भेदभाव हो सकता था, लेकिन भारतीयों के लिए सबसे गंभीर भेदभाव ऑरेंज फ्री स्टेट में था, जहाँ उन्हें रहने की मनाही थी। ट्रांसवाल में उन्हें सहन तो किया जाता था, लेकिन उनके साथ बुरा बर्ताव किया जाता था। जब गांधीजी प्रिटोरिया जा रहे थे, तब वे एक कमोबेश सहिष्णु ब्रिटिश शासन से एक क्रूर बोअर शासन की ओर बढ़

रहे थे। ट्रेन से तय की गई यात्रा के दौरान, वे नेटाल की राजधानी पीटरमैरिट्जबर्ग तक प्रथम श्रेणी के डिब्बे में यात्रा करते रहे। तभी एक यूरोपीय यात्री ट्रेन में चढ़ा और दो रेलवे अधिकारियों से उसे भी आगे के डिब्बे में ले जाने का अनुरोध किया। चूंकि गांधीजी उचित किराया चुकाने के बावजूद स्वेच्छा से उस डिब्बे को छोड़ने को तैयार नहीं थे, इसलिए उन्होंने एक पुलिसकर्मी को बुलाया, जिसने उन्हें और उनके सामान को भी बाहर फेंक दिया। फिर भी वह किसी दूसरे, घटिया डिब्बे में जाने को तैयार नहीं हुआ। ट्रेन चल पड़ी और वह पूरी रात स्टेशन के ठंडे, अंधेरे प्रतीक्षाकक्ष में बैठा रहा; उसका ओवरकोट उसके सामान में था, लेकिन रेलवे अधिकारियों के पास वह था, और वह उसे मांगकर और अपमान मोल नहीं लेना चाहता था।
गांधी जी को नस्लीय भेदभाव का बहुत कम अनुभव था। निस्संदेह लंदन में उनका कुछ लोगों से सामना हुआ होगा, लेकिन इतना नहीं कि वे अपने पत्रों या संस्मरणों में इसका उल्लेख कर सकें। ब्रिटेन में विदेशियों को उदासीनता से देखा जाता था या ब्रिटिश साम्राज्य की विशालता के प्रतीक के रूप में उनका स्वागत किया जाता था। वे लंदन के जीवन में रंग और विविधता भरते थे; वे ऐसे आगंतुक थे जो आनंद लेने, योगदान देने और फिर चले जाने आए थे। जिन लड़कियों से वे मिले और शाकाहारी समाज में गांधी जी को तिरस्कार का सामना करने के बजाय, जिज्ञासा और आकर्षण का अनुभव हुआ। साम्राज्य के केंद्र में रहने से उन्हें विभिन्न प्रकार और पृष्ठभूमि के लोगों के एक साथ रहने, और महानगरीय समाज की सहिष्णुता और शालीनता का अनुभव मिला था। ब्रिटिश स्वयं को श्रेष्ठ राष्ट्र मानते थे, उनकी श्रेष्ठता उनके साम्राज्यवादी प्रभुत्व से स्पष्ट होती थी। श्वेतों की संख्या गैर-श्वेत लोगों से इतनी अधिक थी कि किसी खतरे का आभास ही नहीं होता था। हालांकि, दक्षिण अफ्रीका में गैर-श्वेत लोगों की संख्या श्वेतों से कहीं अधिक थी; श्वेत प्रभुत्व को बनाए रखने के लिए न केवल बल की आवश्यकता थी, बल्कि नस्लीय श्रेष्ठता पर आधारित एक विचारधारा की भी आवश्यकता थी। दक्षिण अफ्रीका में, उन्नीसवीं सदी के अंत और बीसवीं सदी के आरंभ में, गांधी जी एक एकीकृत नस्लीय राज्य के निर्माण के साक्षी बन रहे थे। बोअर लोगों ने डच रिफॉर्म्ड चर्च के माध्यम से समाज के नस्लीय वर्गीकरण के लिए एक सुस्थापित धार्मिक औचित्य प्रस्तुत किया था, जो उनके लिए उतना ही मान्य था जितना कि उदाहरण के लिए,

हिंदुओं द्वारा उनके समाज पर थोपी गई 'अस्पृश्यता'। श्वेत शासक स्वयं को यह विश्वास दिला सकते थे कि वे अन्याय की व्यवस्था को बढ़ावा नहीं दे रहे हैं, बल्कि नस्लों को अलग रखकर ईश्वर का कार्य कर रहे हैं।
भारतीय लोग अश्वेत अफ्रीकी और श्वेत आबादी के बीच नस्लीय और
सांस्कृतिक मध्यस्थ के रूप में काम करते थे। इनमें मुस्लिम व्यापारी (जिन्हें अक्सर 'अरब' कहा जाता था, हालांकि वे अरब नहीं थे), सेवा उद्योगों में कार्यरत भारतीय ईसाई, पारसी क्लर्क और हिंदू शामिल थे, जो अधिकतर अनुबंधित मजदूर के रूप में आए थे। इस व्यवस्था के तहत, भारतीय श्रमिकों को पाँच वर्षों के बंधुआ श्रम के लिए लाया जाता था। यह व्यवस्था इसलिए लागू हुई क्योंकि यूरोपीय लोगों ने पाया कि अफ्रीकी लोग आधुनिक उत्पादन के लिए आवश्यक नियमित तरीके से मजदूरी पर काम करने को तैयार नहीं थे, और भारत में अवसरों की कमी के कारण कई भारतीय अपना काम पूरा होने के बाद वहीं रह गए। जैसे-जैसे यह समुदाय बढ़ा और बसा, व्यापारी वर्ग इस क्षेत्र की ओर आकर्षित हुआ, जिन्होंने भारत से आने का अपना खर्च स्वयं उठाया। हालांकि, इस समुदाय के श्रमिक मूल के कारण उन्हें सामूहिक रूप से 'कुली' कहा जाता था। दक्षिण अफ्रीका में गांधी को उनकी यात्राओं, उनकी शिक्षा या सार्वजनिक सेवा में जन्मे परिवार के कारण सम्मान नहीं मिला; यहाँ वे एक 'कुली बैरिस्टर' थे। पीटरमैरिट्जबर्ग स्टेशन पर गांधीजी पूरी रात इस बात पर विचार करते रहे कि क्या उन्हें यह नौकरी छोड़कर भारत लौट जाना चाहिए या प्रिटोरिया जाकर अपने अधिकारों के लिए लड़ना चाहिए। उन्हें लगा कि उन्होंने जो कष्ट झेला है, वह सतही है, रंगभेद की गहरी बीमारी का मात्र एक लक्षण है। बाद में उन्होंने अपने आंतरिक संघर्ष को अपने जीवन की दिशा बदलने वाला एकमात्र अनुभव बताया: 'मेरी सक्रिय अहिंसा उसी दिन से शुरू हुई।' 5
सुबह उन्होंने रेलवे के महाप्रबंधक और दादा अब्दुल्ला को टेलीग्राम भेजा। दादा अब्दुल्ला ने भी रेलवे अधिकारियों से संपर्क किया और पीटरमैरिट्जबर्ग के भारतीय व्यापारियों को गांधीजी से मिलने के लिए स्टेशन आने का संदेश भेजा। दादा अब्दुल्ला की प्रतिष्ठा इतनी थी कि उनकी इच्छा पूरी हुई और गांधीजी से मिलने के लिए व्यापारियों का एक काफिला आया, जिन्होंने उन्हें सांत्वना दी और अपने साथ हुए ऐसे ही अपमानों की कहानियां सुनाईं, जिनके खिलाफ वे लड़ने को तैयार नहीं थे। शाम को अगली ट्रेन गांधीजी के लिए आरक्षित प्रथम श्रेणी की सीट लेकर आई – विरोध का फल

मिल गया था। दादा अब्दुल्ला जैसे शक्तिशाली व्यक्ति का प्रतिनिधि होने से नैतिक आक्रोश को व्यावहारिक शक्ति मिली; यह एक महत्वपूर्ण सबक था।
जब गांधीजी चार्ल्सटाउन पहुंचे और अपनी यात्रा के अगले चरण के लिए रवाना हुए, जो रेल संपर्क न होने के कारण स्टेजकोच से ही तय करना था, तो उन्हें एक बार फिर नस्लवाद का सामना करना पड़ा। पहले तो उन्हें झूठ बोलकर बताया गया कि उनका टिकट 'रद्द' कर दिया गया है। फिर जब गांधीजी अपनी बात पर अड़े रहे, तो उन्हें कोच के पास जाने की अनुमति तो दी गई, लेकिन कंडक्टर ने उन्हें अंदर बैठने नहीं दिया। कंडक्टर आमतौर पर ड्राइवर के बगल में बैठता था, लेकिन उसने यह सीट गांधीजी को दे दी और खुद कोच के अंदर बैठ गया। हालांकि, जब कोच रुका, तो कंडक्टर को सिगरेट पीने की इच्छा हुई और उसने गांधीजी को नीचे बैठने का आदेश दिया। 'सामी, आप यहां बैठिए,' उसने अपने यात्री को रनिंग-बोर्ड पर बैठने का आदेश देते हुए कहा। गांधीजी ने उसके पैरों के पास बैठने से इनकार कर दिया, लेकिन अंदर बैठने को तैयार थे। कंडक्टर ने उन्हें पीटना शुरू कर दिया और उन्हें नीचे खींचने की कोशिश की। अब यात्रियों ने विरोध करना शुरू कर दिया, जिससे गांधीजी को एक महत्वपूर्ण सबक मिला - कि सार्वजनिक रूप से होने वाला अन्याय उन लोगों को भी विरोध करने के लिए उकसा सकता है जो ऊपर से उदासीन दिखते हैं। यात्री गांधीजी को अपने साथ बैठने देने को तैयार थे, बजाय इसके कि वे उनकी पिटाई देखें। लेकिन नस्लीय प्रोटोकॉल के ऐसे उल्लंघन को बर्दाश्त करने के बजाय, कंडक्टर ने कोचबॉक्स के दूसरी तरफ बैठे एक अश्वेत नौकर को फुटबोर्ड पर बैठने का आदेश दिया, और गांधी ने नौकर का स्थान ग्रहण किया।
जब वे ट्रांसवाल के बोअर क्षेत्र में स्थित जोहान्सबर्ग पहुँचे, तो
रात हो चुकी थी। गांधीजी ने एक टैक्सी बुलाई और उन्हें नेशनल होटल ले जाया गया, लेकिन वहाँ कमरा खाली नहीं था। वे दादा अब्दुल्ला की कंपनी से जुड़े एक भारतीय के घर गए, जहाँ उनका स्वागत किया गया। वहाँ भी कई लोगों ने उन्हें अपमान और अन्यायपूर्ण व्यवहार की कहानियाँ सुनाईं। उन्होंने गांधीजी का मज़ाक उड़ाया कि वे नेशनल होटल से कमरा मिलने की उम्मीद कर रहे थे और बताया कि जब वे प्रिटोरिया के लिए रवाना होंगे, तो उन्हें तीसरे दर्जे की सफ़र करनी पड़ेगी।
उन्होंने प्रथम श्रेणी का टिकट मंगवाया और स्टेशन मास्टर से ले लिया। संयोगवश, स्टेशन मास्टर एक यूरोपीय थे, बोअर नहीं, और उन्होंने गांधीजी को

टिकट देने से मना नहीं किया, लेकिन वे रेलवे गार्ड की ओर से कुछ नहीं कह सकते थे। जब गार्ड प्रथम श्रेणी के डिब्बे में टिकट लेने आया, तो उसने गांधीजी को तृतीय श्रेणी में जाने का आदेश दिया। फिर से, एक आम यात्री ने विरोध किया, जो डिब्बे में मौजूद एकमात्र अन्य व्यक्ति था, एक अंग्रेज जिसने गांधीजी के उचित टिकट के साथ प्रथम श्रेणी में यात्रा करने के अधिकार का बचाव किया।
प्रिटोरिया में, होटल ढूंढते समय उन्हें फिर से परेशानी का सामना करना पड़ा, लेकिन एक अश्वेत अमेरिकी यात्री ने उन्हें एक अमेरिकी द्वारा संचालित होटल का पता बताया। उन्हें एक कमरा तो मिल गया, लेकिन अन्य मेहमानों के साथ भोजन करने की अनुमति नहीं दी गई; उन्हें अपने कमरे में ही भोजन करना पड़ा। बाद में, उनके लिए भोजन लेकर वेटर के आने के बजाय, होटल का मालिक स्वयं आया: 'मुझे आपको यहाँ भोजन करने के लिए कहने में शर्म आ रही है,' उसने कहा। उसने अन्य मेहमानों से बात की थी और किसी को भी गांधी के साथ भोजन करने पर कोई आपत्ति नहीं थी, इसलिए वह उनके साथ शामिल हो गए। 7 नस्लीय भेदभाव के इन छोटे-मोटे मामलों का ज़िक्र करना ज़रूरी है
क्योंकि यहीं गांधी ने राज्य के कामकाज को आम लोगों के सामने देखा था। समस्या किसी खास नस्लीय समूह को जीवन के विशेष क्षेत्रों में दबाने वाले बड़े कानूनों की नहीं थी, बल्कि हर जगह, गोरों और दूसरी नस्लों के बीच हर तरह का व्यवहार दमनकारी था – एक ऐसा दमन जिसे कुछ मामलों में भले लोगों ने कम करने की कोशिश की, जिनके लिए ऐसी स्थिति स्पष्ट रूप से घृणित थी। गांधी व्यक्तिगत रूप से आहत थे, लेकिन उससे भी ज़्यादा वे नैतिक रूप से आहत थे। इससे भी बुरी बात यह थी कि वे अपने साथी भारतीय पीड़ितों पर शर्मिंदा थे जो इस तरह के व्यवहार को सह रहे थे।
गांधी ने दादा अब्दुल्ला एंड कंपनी के मामले के तथ्यों को तैयार करने में एक उत्कृष्ट वकील के रूप में अपनी कुशलता साबित की, जिसमें 40,000 पाउंड की भारी रकम शामिल थी। हालांकि, मामले में महारत हासिल करने के बाद, उन्हें एहसास हुआ कि अगर यह अदालत में जाता है तो यह वादी और प्रतिवादी, तैयब खान मोहम्मद, जो रिश्तेदार थे, दोनों को बर्बाद कर सकता है। वकीलों की फीस उनके सभी संसाधनों को खा रही थी और उनका समय इस मामले में इतना व्यस्त था कि वे कुछ और नहीं कर सकते थे। गांधी ने उन्हें सफलतापूर्वक मामले को मध्यस्थता के लिए सौंपने के लिए राजी किया, जिसमें उनके

मुवक्किल ने जीत हासिल की (शायद अगर उन्हें लगता कि उनके मुवक्किल हार जाएंगे तो वे मध्यस्थता का सुझाव नहीं देते)। गांधी ने फिर पक्षों के बीच एक समझौते पर बातचीत करने में सफलता प्राप्त की, जिससे किश्तों में भुगतान की अनुमति मिली, ताकि हारने वाले पक्ष को दिवालिया न होना पड़े। उन्होंने खुशी से कहा: 'मुझे एहसास हुआ कि एक वकील का सच्चा कार्य अलग हुए पक्षों को एकजुट करना है।' 8 इस आकलन पर उन्हें सर्वसम्मत सहमति नहीं मिली, लेकिन उन्हें अपने कौशल के लिए अपने समुदाय के प्रभावशाली लोगों का सम्मान प्राप्त हुआ; वह एक ऐसा व्यक्ति बन गया था जिसकी बात दूसरे लोग सुनते थे।
इस मामले में गांधी के वकील अल्बर्ट बेकर थे, जो एक वकील और दक्षिण अफ्रीकी जनरल मिशन के निदेशक थे। बेकर एक कट्टर ईसाई थे, जिनका उद्देश्य अफ्रीकियों को ईसाई धर्म में लाना था। (गांधी स्वयं एक बैरिस्टर थे जो वकील द्वारा तैयार किए जाने के बाद अदालत में पैरवी करते थे)। बेकर एक आदर्श ईसाई थे: उनका मानना था कि मुक्ति केवल यीशु को ईश्वर का पुत्र स्वीकार करने से ही प्राप्त हो सकती है, लेकिन उन्होंने अपने सिद्धांतों का प्रचार रंग या पद की परवाह किए बिना किया, जो दक्षिण अफ्रीकी समाज के विभाजनों से परे था। बेकर ने गांधी को रहने के लिए जगह खोजने में मदद की, और गांधी, अन्य धर्मों के बारे में जानने के इच्छुक थे, इसलिए वे ईसाइयों के साथ प्रार्थना सभाओं में शामिल हुए, जिन्होंने उन्हें धर्म परिवर्तन कराने का प्रयास किया - हालांकि वे सफल नहीं हुए, फिर भी उन्होंने अपने नए मित्रों द्वारा दी गई पुस्तकें पढ़ीं। कहा जाता है कि उस समय तक उन्होंने धर्म पर लगभग अस्सी पुस्तकें पढ़ ली थीं।
रात में बाहर निकलने पर पुलिस द्वारा उत्पीड़न का खतरा होने के कारण, उनके एक क्वेकर मित्र उन्हें स्टेट अटॉर्नी डॉ. एफ.ई.टी. क्राउज़ से मिलवाने ले गए, जिन्होंने गांधीजी की ही तरह उसी सराय से ब्रिटिश बार में प्रवेश लिया था। क्राउज़ सहानुभूतिपूर्ण थे और उन्होंने अपने युवा सहकर्मी को एक पत्र दिया जिसमें लिखा था कि वे किसी भी समय बाहर रह सकते हैं। उन्होंने गांधीजी का परिचय अपने भाई से भी कराया, जो जोहान्सबर्ग में लोक अभियोजक थे। इस प्रकार गांधीजी कानून और अपने ईसाई मित्रों के माध्यम से एक ऐसा नेटवर्क बना रहे थे जो भारतीय समुदाय के लिए उनके कार्यों में अमूल्य साबित होगा।

गांधी लिखते हैं कि प्रिटोरिया में अपने जीवन के आरंभिक वर्षों में, जब वे दादा अब्दुल्ला मामले पर काम कर रहे थे, उन्होंने वहाँ रहने वाले प्रत्येक भारतीय से संपर्क करने का निश्चय किया ताकि उनके जीवन को समझ सकें और उसमें सुधार ला सकें। उन्होंने लिखा, ‘मेरा पहला कदम प्रिटोरिया में सभी भारतीयों की एक बैठक बुलाना और उन्हें ट्रांसवाल में उनकी स्थिति का विवरण देना था।’ 10 इसी उद्देश्य से उन्होंने अपने मुवक्किल के विरोधी तैयब खान मोहम्मद से परिचय प्राप्त किया, जो ट्रांसवाल में सबसे शक्तिशाली भारतीय थे – वे यह नहीं कहते कि एक वकील के लिए ऐसा संपर्क असामान्य व्यवहार था, जो इस बात का संकेत है कि वे अपने पेशे के कितने असाधारण सदस्य थे।
इसलिए उन्होंने जून 1893 में एक मुस्लिम के घर पर बैठक बुलाई, जिनसे उनकी जान-पहचान हुई थी। उपस्थित लोगों में से अधिकांश मुस्लिम व्यापारी थे, जिनसे उन्होंने आग्रह किया कि वे साझा भारतीय हित में सांप्रदायिक, धार्मिक और क्षेत्रीय भेदों को भुला दें। उन्होंने इस विचार पर बल दिया कि व्यापार और सत्य एक दूसरे के विरोधी नहीं हैं, और धर्म और व्यावहारिक मामलों को साथ-साथ चलना चाहिए। अपने पहले दर्ज नैतिक उपदेश में, जो बाद में उनका समुदाय बन गया, उन्होंने घोषणा की कि वे 'व्यापारियों को उनके कर्तव्य के प्रति जागरूक कर रहे हैं, जो दो प्रकार का है। एक विदेशी भूमि में सत्यवादी होने की उनकी जिम्मेदारी और भी अधिक है, क्योंकि कुछ भारतीयों का आचरण उनके लाखों देशवासियों के आचरण का मापदंड है।' 11 दूसरे, उन्हें स्वच्छता पर ध्यान देने की आवश्यकता थी: उन्होंने उनका ध्यान भारतीयों की खराब स्वच्छता आदतों की ओर आकर्षित किया, 'जो उनके आसपास के अंग्रेजों की तुलना में खराब थीं'; और अंत में उन्होंने उनसे अंग्रेजी सीखने का आग्रह किया, और उन कुछ युवा पुरुषों को अपनी सेवाएं देने की पेशकश की जो ऐसा करना चाहते थे।
दूसरे शब्दों में कहें तो, उन्होंने छात्रों को उसी तरह का
उत्साहवर्धक भाषण दिया, जैसा प्रधानाध्यापक अपने विद्यार्थियों को देते हैं। उन्होंने उन्हें समझाया कि वे अपने विद्यालय या इस मामले में, अपने राष्ट्र के प्रतिनिधि हैं और उन्हें अपनी बुरी आदतों को त्यागना होगा। यह सवाल उठता है कि वे अपने पेशे और दैनिक जीवन की नैतिकता के बारे में इस तरह की बातें सुनने के लिए क्यों तैयार हुए। जिज्ञासा ने भी इसमें भूमिका

निभाई होगी, क्योंकि वह व्यक्ति इंग्लैंड में शिक्षित था और इस उम्मीद में दक्षिण अफ्रीका लाया गया था कि उसकी प्रतिभा उपयोगी साबित होगी। समुदाय के सबसे प्रभावशाली लोगों के बीच पहले से ही उनकी साख होना भी उन्हें लोगों से मिलने का अवसर दिलाने में सहायक रहा।
गांधी ने आत्म-सुधार का एक संपूर्ण पैकेज प्रस्तुत किया: नैतिक उत्थान (व्यापार में सच्चाई), व्यावहारिक प्रगति (स्वच्छता) और शिक्षा (अंग्रेजी सीखना)। यह बात महत्वपूर्ण है कि वे अपने देशवासियों के जीवन स्तर को ऊपर उठाने के अपने प्रयासों से अंग्रेजों को प्रभावित करना चाहते थे, न कि बोअर्स को, जिनके एक गणराज्य में वे बोल रहे थे। शायद उन्हें लगा कि बोअर्स को मनाना बहुत मुश्किल था, जबकि अंग्रेज अधिक मिलनसार और खुले विचारों वाले थे, या शायद वे 'अंग्रेज़' शब्द का प्रयोग 'श्वेत' के लिए एक सामान्य शब्द के रूप में कर रहे थे।
इसमें कोई शक नहीं कि गांधी ने जिन विषयों पर बात की, उन पर उन्होंने सच में बात की। हालांकि, अपनी आत्मकथा में उन्होंने किसी भी राजनीतिक संदर्भ को छोड़ दिया है ताकि भारतीय व्यापारियों के साथ उनका जुड़ाव पूरी तरह से नैतिक नेतृत्व का मामला बन जाए; उनकी जीवनी लेखन की यह विशेषता है कि यह ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य लागू करने के बजाय लेखन के समय (इस मामले में 1920 के दशक) की उनकी चिंताओं को दर्शाती है। उनके अपने लेखन और, उससे भी अधिक, इस काल के बाद के चित्रों में दक्षिण अफ्रीका को एक खाली स्लेट के रूप में प्रस्तुत किया गया है, इससे पहले कि उन्होंने इस पर अपनी छाप छोड़ना शुरू किया, मानो केवल वही भारतीयों के नस्लीय उत्पीड़न के खिलाफ लड़ने में सक्षम और इच्छुक थे, जिन्होंने जाहिर तौर पर उनके आने से पहले अपने लिए कुछ नहीं किया था। वास्तव में, समुदाय के भीतर पहले से ही शक्तिशाली भारतीय स्वयं सहायता संगठन सक्रिय थे, और राजनीतिक गतिविधियों में भी कुछ भागीदारी थी।
जैसा कि गांधी जी ने बताया, वे दक्षिण अफ़्रीकी लोकतंत्र की कहानी के अगले चरण के अनिच्छुक नायक बन गए। उन्होंने दादा अब्दुल्ला मामले पर अपना काम पूरा कर लिया था और उन्हें भारत लौटना था। जब वे नेटाल के डरबन पहुँचे, तो संयोगवश उनकी नज़र एक अख़बार में 'भारतीय मताधिकार' शीर्षक से एक लेख पर पड़ी। यह नेटाल विधानमंडल के समक्ष प्रस्तुत एक विधेयक से संबंधित था, जिसका उद्देश्य भारतीयों को विधानसभा सदस्यों का चुनाव करने के अधिकार

से वंचित करना था। उनके लिए आयोजित विदाई भोज में उन्होंने इस ओर दादा अब्दुल्ला का ध्यान आकर्षित किया, जिन्होंने उत्तर दिया: 'इन मामलों में हम क्या समझ सकते हैं? हम केवल उन्हीं बातों को समझ सकते हैं जो हमारे व्यापार को प्रभावित करती हैं। जैसा कि आप जानते हैं, ऑरेंज फ्री स्टेट में हमारा सारा व्यापार ठप हो गया है। हमने इसके लिए आंदोलन किया, लेकिन व्यर्थ... हम कानून के बारे में क्या जान सकते हैं?' 12 उन्होंने समझाया कि भारतीयों ने अब्दुल्ला की फर्म के कानूनी सलाहकार के रूप में काम करने वाले एक यूरोपीय वकील हैरी एस्कोम्बे का समर्थन करने के लिए मतदान हेतु पंजीकरण कराया था, और इसी में उनकी संलिप्तता के कारण उन्हें मताधिकार से वंचित करने के प्रयास किए गए थे।
यह स्पष्ट है कि दादा अब्दुल्ला, अपनी अरुचि जताने के बावजूद, दक्षिण अफ्रीका की राजनीति के बारे में कुछ न कुछ जानते थे। श्वेत उपनिवेशवासी भारतीय व्यापारियों की सफलता से नाराज़ थे, और परिणामस्वरूप भारतीयों को ऑरेंज फ्री स्टेट से निष्कासित कर दिया गया था; वे स्वाभाविक रूप से नेटाल और ट्रांसवाल में अपनी स्थिति को लेकर चिंतित थे। उन्हें यह बताने के लिए गांधी जी जैसे नेता की आवश्यकता नहीं थी कि उनका भविष्य अनिश्चित है। दादा अब्दुल्ला डरबन भारतीय समिति के प्रमुख थे, जो व्यापारिक समुदाय को प्रभावित करने वाले विषयों पर चर्चा करने के लिए समय-समय पर बैठकें करती थी। गांधी जी के आगमन से एक वर्ष पहले, समिति ने नेटाल के औपनिवेशिक सचिव को शिकायतों की एक सूची भेजी थी, जिसे सिरे से खारिज कर दिया गया था। शायद इसी कारण मताधिकार विधेयक पर भारतीयों की उदासीनता दिखाई दी – वे जानते थे कि उनकी राय को आधिकारिक तौर पर कोई महत्व नहीं दिया जाता।
गांधीजी के वाक्पटुता से प्रेरित होकर, अन्य अतिथि भी उनके साथ शामिल
हो गए और उनसे रुकने का आग्रह करने लगे – ‘हम आपके निर्देशानुसार लड़ेंगे’। व्यापारी विधेयक के महत्व से भलीभांति परिचित थे, जो संभवतः उनके व्यापारिक हितों पर हमले की शुरुआत हो सकता था। गांधीजी, जो उस समय बेरोजगार वकील थे, अंग्रेजी और गुजराती में धाराप्रवाह थे और भारतीयों और अंग्रेजों दोनों के बीच समुदाय में उनके अच्छे संबंध थे, अपनी पहचान बनाने के लिए महत्वाकांक्षी थे। व्यापारियों ने उन्हें उनकी सेवाओं के लिए शुल्क की पेशकश की, जिसे उन्होंने यह कहते हुए अस्वीकार कर दिया कि वे सार्वजनिक कार्य के लिए कोई शुल्क नहीं लेंगे। यह गांधीजी की ओर से

उदारता का एक विशिष्ट उदाहरण था, लेकिन इसने उन सभी को, जिनके हितों के लिए उन्होंने काम किया था, उनका ऋणी बना दिया, जबकि भुगतान स्वीकार करने से वे उनके सेवक बन जाते।
गांधी ने तुरंत ही वह संगठनात्मक उत्साह और बारीकी से ध्यान देने की क्षमता दिखाई, जो उनके अगले पचास वर्षों के सार्वजनिक जीवन की विशेषता बनने वाली थी। भारतीयों को मताधिकार से वंचित करने वाला विधेयक दूसरी बार पारित होने वाला था। इसलिए उन्होंने सबसे पहले अपना पक्ष रखने के लिए और समय मांगा और विधानसभा अध्यक्ष को पत्र भेजकर विधेयक पर चर्चा स्थगित करने का अनुरोध किया। अध्यक्ष ने इस साहसिक अनुरोध को सकारात्मक रूप से स्वीकार किया और भारतीयों को दो और दिन दिए। गांधी ने तब एक याचिका लिखी जिसमें तर्क दिया गया कि भारतीयों को 'नेटाल में मताधिकार का अधिकार है', उसकी हस्तलिखित प्रतियां तैयार करवाईं और व्यापारी अपनी गाड़ियों या किराए के वाहनों से अधिक से अधिक हस्ताक्षर एकत्र करने के लिए निकल पड़े। समाचार पत्रों ने याचिका छापी और उस पर सकारात्मक प्रतिक्रिया दी। विधेयक दूसरी बार पारित हो गया, लेकिन गांधी ने इसे अपनी जीत माना कि समुदाय संगठित हो गया था और उन्होंने विधेयक को अगले चरण में वीटो करने की मांग करते हुए एक बड़ी याचिका तैयार की। स्वयंसेवकों की टीमों ने नई याचिका के लिए दस हजार हस्ताक्षर एकत्र किए और इसे उपनिवेश राज्य सचिव लॉर्ड रिपन को प्रस्तुत किया। इसके जवाब में रिपन ने मताधिकार में विशेष रूप से नस्लीय भेदभाव लाने वाले विधेयक को अस्वीकार कर दिया, और एक अन्य, अस्पष्ट शब्दों वाला विधेयक पारित किया गया जिसमें केवल उन्हीं मतदाताओं को मतदाता सूची में शामिल किया गया जिनके मूल देशों में संसदीय मताधिकार था - भारतीयों को अपने देश में केवल नगरपालिका मताधिकार प्राप्त था और इसलिए उन्हें दक्षिण अफ्रीका में शामिल नहीं किया गया था।
गांधी जी को उनके देशवासियों ने नेताल में ही रहने के लिए राजी कर
लिया। उन्होंने उनसे बहुत मिन्नतें कीं और उनकी खूब प्रशंसा की, और अंततः वे मान गए। उन्होंने अपने सार्वजनिक कार्यों के लिए कोई भुगतान न लेने पर अड़े रहने का निश्चय किया, लेकिन उनका तर्क था कि स्वतंत्र रूप से घर चलाने के लिए उन्हें कम से कम 300 पाउंड प्रति वर्ष की आवश्यकता है। उनका मानना था कि जब तक वे वकीलों के अनुरूप जीवन यापन नहीं करेंगे, तब तक वे अपने समुदाय का नाम रोशन नहीं कर पाएंगे। वे तभी वहाँ रुकेंगे जब उन्हें

कानूनी कार्य से आय की गारंटी दी जाएगी; इसलिए लगभग बीस व्यापारियों ने उन्हें एक निश्चित राशि दी, और दादा अब्दुल्ला ने उनके नए घर, बीच ग्रोव विला, को सुसज्जित किया। यह दो मंजिला घर लोहे के सामने के गेट और डरबन के समुद्र तट की ओर मुख वाले बरामदे के साथ था।
गांधी ने बाद में दावा किया कि वे वकालत को सार्वजनिक कार्यों के मुकाबले 'एक गौण पेशा' मानते थे, लेकिन जन विरोध आंदोलनों का प्रतिनिधित्व करने में अपना पेशा पाकर उन्हें जीविका चलाने के लिए वकालत जारी रखनी पड़ी। नेटाल लॉ सोसाइटी ने सुप्रीम कोर्ट में बैरिस्टर के रूप में उनके प्रवेश के आवेदन का विरोध किया, लेकिन गांधी ने समझदारी से दो यूरोपीय लोगों से अपने अच्छे चरित्र की पुष्टि के लिए आवश्यक अनुशंसा पत्र मांगे थे। उनका आवेदन तत्कालीन अटॉर्नी जनरल हैरी एस्कोम्ब द्वारा प्रस्तुत किया गया था, जो दादा अब्दुल्ला एंड कंपनी के सलाहकार रह चुके थे और गांधी के नए निवास पर उनके पड़ोसी थे। लॉ सोसाइटी ने गांधी के बारे में और अधिक जानकारी मांगी, जो उपलब्ध कराई गई, जिसके बाद भी उसने उनके आवेदन का विरोध जारी रखा। अंततः जब मामले की सुनवाई हुई, तो अदालत ने घोषणा की कि वह कानून में श्वेत और गैर-श्वेत के बीच कोई भेद नहीं देख सकती और उन्हें प्रवेश दे दिया। हालांकि, उनसे अपनी पगड़ी हटाने के लिए कहा गया और इस बार वे इसके लिए तैयार थे: यह उन अवसरों में से एक था जब गांधी ने अधिक महत्वपूर्ण लड़ाइयों के फल प्राप्त करने के लिए सिद्धांत के एक छोटे से मुद्दे पर समझौता किया। उस समय उनकी पोशाक में एक यूरोपीय सूट, विंग कॉलर वाली शर्ट, टाई और पॉलिश किए हुए जूते शामिल थे।
भारतीय व्यापारियों ने 22 अगस्त 1894 को नेटाल इंडियन कांग्रेस की स्थापना की, जिसका उद्देश्य उपनिवेश की पहली उत्तरदायी सरकार द्वारा भारतीयों के संबंध में अपनाई जा रही प्रतिगामी विधायी गतिविधियों का मुकाबला करना था। 13 यद्यपि इसकी सदस्यता 'इसके कार्य को पसंद करने वाले किसी भी व्यक्ति' के लिए खुली थी, फिर भी 3 पाउंड के वार्षिक शुल्क ने इसकी सदस्यता को अपेक्षाकृत धनी लोगों तक सीमित कर दिया। गांधी ने चंदा इकट्ठा करने का काम संभाला और स्वैच्छिक संगठनों की इस सच्चाई को जाना कि जब कोई रोमांचक घटना हो जिस पर ध्यान केंद्रित किया जा सके, तो धन जुटाना आसान होता है; संगठन के रखरखाव में ऐसा कोई उत्साह नहीं था।

मुस्लिम व्यापारियों के अपने कारोबार में साझा हित थे, लेकिन गांधीजी
को उन्हें अपनी सामूहिक पहचान भारतीय के रूप में समझाने में काफी संघर्ष करना पड़ा। नेटाल इंडियन कांग्रेस का एक उद्देश्य हिंदू बंधुआ मजदूरों की पीड़ा को कम करना था; गांधीजी ने अपने देशवासियों से यह भी आग्रह किया कि वे स्वीकार करें कि ईसाई भारतीय भी भारतीय हैं। उन्होंने कहा, ‘मुझे लगता है कि इस वर्ग को अपना मानना चाहिए; क्या ईसाई बनने से वे भारतीय होना बंद कर देते हैं?’ 14 कांग्रेस के कार्यक्षेत्र को व्यापक बनाने के अपने प्रयासों में गांधीजी केवल सैद्धांतिक रूप से ही सफल रहे। वास्तव में, संगठन ने भारतीय व्यापारियों की व्यापारिक और सामाजिक स्थिति की सुरक्षा पर जोर दिया, जिसका अर्थ था कि यह मूल रूप से एक रूढ़िवादी संगठन था जो मौजूदा सामाजिक व्यवस्था को चुनौती देने के लिए इच्छुक नहीं था। कांग्रेस को यह सुनिश्चित करना था कि व्यापारियों को उनकी संपत्ति और उद्यमशीलता क्षमताओं के अनुरूप विशेषाधिकार मिलते रहें। इसी प्रकार, व्यापारियों द्वारा अपनी स्थिति बनाए रखने के प्रयासों में मिश्रित नस्ल के लोगों और अफ्रीकियों की कथित नस्लीय हीनता को भी शामिल किया गया था। उस समय गांधीजी ने इन विरोधाभासों को समझा था या नहीं, यह कहना मुश्किल है। राजनीतिक रूप से उन्होंने उन विभाजनों को पहचाना जो यूरोपीय लोगों ने अपने शासन वाले समाज पर थोपे थे। जैसा कि उन्होंने 1896 में एक सभा में कहा था: 'हमारा संघर्ष यूरोपीय लोगों द्वारा हम पर थोपे जा रहे अपमान के विरुद्ध निरंतर संघर्ष है, जो हमें उस असभ्य काफ़िर के स्तर तक गिराना चाहते हैं जिसका पेशा शिकार करना है, और जिसकी एकमात्र महत्वाकांक्षा कुछ मवेशी इकट्ठा करके अपनी पत्नी को खरीदना है, और फिर अपना जीवन आलस्य और नग्नता में बिताना है।' 15 उन्होंने उपनिवेशों के राज्य सचिव लॉर्ड रिपन से अपील की कि वे भारतीयों के साथ दुर्व्यवहार न होने दें, जिससे वे 'इतने पतित हो जाएँगे कि अपनी सभ्य आदतों से गिरकर आदिवासियों की आदतों में परिवर्तित हो जाएँगे।' 16 लगभग तीस साल बाद, 1924 में अफ्रीकियों के बारे में लिखते हुए उन्होंने टिप्पणी की: 'यह केवल अहंकार है जो हमें नीग्रो लोगों को बर्बर समझने पर मजबूर करता है।' वे वैसे बर्बर नहीं हैं जैसा हम उन्हें समझते हैं।’ 17
गांधी के गैर-परंपरावादी ईसाई मित्रों के बीच आध्यात्मिक समानता, हिंदू धर्म की अंतर्निहित असमानता के विपरीत थी, जिसमें व्यक्ति जन्म से

ब्राह्मण या अछूत होता था और उसे अपने-अपने समूहों के लिए निर्धारित नियमों के अनुसार जीवन व्यतीत करना पड़ता था। गांधी ने बाद में अपने नस्लीय अपमान को अस्पृश्यता का 'पुरस्कार' माना। प्रिटोरिया में एक अंग्रेज नाई द्वारा उनके बाल काटने से इनकार करने पर उन्होंने टिप्पणी की: 'हम अपने नाइयों को अपने अछूत भाइयों की सेवा करने की अनुमति नहीं देते। मुझे दक्षिण अफ्रीका में इसका पुरस्कार एक बार नहीं, बल्कि कई बार मिला, और यह दृढ़ विश्वास कि यह हमारे अपने पापों का दंड था, मुझे क्रोधित होने से बचा लिया।' 18 वे निश्चित रूप से जीवन के प्रति एक सर्वधर्म समभाव दृष्टिकोण को बढ़ावा दे रहे थे, ईसाइयों, मुसलमानों और पारसियों के साथ भोजन करते थे और यहां तक कि एक अछूत को अपने साथ रहने के लिए आमंत्रित भी किया था। यह उल्लेखनीय है कि गांधी स्वयं को हिंदुओं के सामूहिक 'पापों' के दंड के रूप में अपमान का अनुभव करते हुए देखते हैं। ऐसा क्यों हो सकता था, जब तक कि वे स्वयं को नियति के किसी व्यक्ति के रूप में किसी भूमिका के लिए चुना हुआ न मानते हों?
उनके जीवन का एक और महत्वपूर्ण पहलू, गरीबों की देखभाल करना, अब उनके वृत्तांतों में उल्लेखित होने लगा है, जबकि पहले ऐसा नहीं था। गांधीजी पहले काठियावाड़, लंदन और दक्षिण अफ्रीका में मध्यम वर्ग के लोगों की सेवा में लगे रहे थे – पहले सरकारी कर्मचारियों, फिर वकीलों और फिर व्यापारियों की। वे कहते हैं, 'गरीबों की सेवा करना मेरे दिल की तमन्ना रही है,' हालांकि वे इसे किसी विशेष समयावधि से नहीं जोड़ते। अपनी आत्मकथा में वे बताते हैं कि 1894 में, पच्चीस वर्षीय वकील के रूप में, उनके पास एक तमिल बंधुआ मजदूर आया, जिसे उसके मालिक ने बुरी तरह पीटा था और उसके दो सामने के दांत तोड़ दिए थे। गांधीजी ने अपने तमिल क्लर्क की अनुवादकी की सहायता से उस पीड़ित व्यक्ति को डॉक्टर के पास भेजा, जिसने उसकी चोटों की पुष्टि की, फिर उसे मजिस्ट्रेट के पास ले गए, जिसने एक समन जारी किया। इस समन के साथ गांधीजी उस व्यक्ति के मालिक, डरबन के एक प्रमुख यूरोपीय नागरिक के पास गए और उन्हें दो विकल्प दिए: मुकदमा झेलना या बंधुआ मजदूर को नौकरी से मुक्त करना। यूरोपीय व्यक्ति, निस्संदेह गांधी के दुस्साहस से चकित होकर, बाद वाला रास्ता अपनाया और गांधी को एक सभ्य यूरोपीय व्यक्ति मिल गया (कोई भी भारतीय अनुबंधित मजदूर नहीं रखता था) जिसके साथ वह व्यक्ति अपनी अवधि पूरी कर सके।

यह घटना सार्वजनिक क्षेत्र में नैतिक मार्ग अपनाने के प्रति गांधी की प्रतिबद्धता और इस विश्वास को दर्शाती है कि न्यायसंगत मामले में ब्रिटिश अधिकारी उनका समर्थन करेंगे, जो उनकी पैरवी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था। वे गिरमिटिया मजदूरों के बारे में बात करते हैं जो अब उन्हें अपना मित्र मानते थे और उनके कार्यालय में लगातार आते रहते थे, इसलिए उन्हें 'उनके सुख-दुख जानने का सर्वोत्तम अवसर मिला'। 19
नेटाल सरकार ने उन अनुबंधित भारतीयों पर 25 पाउंड का वार्षिक कर लगाने का प्रयास किया जो अनुबंध अवधि समाप्त होने के बाद दक्षिण अफ्रीका में रहना चाहते थे। इसका उद्देश्य उनके लिए वहां रहना अलाभकारी बनाना और भारतीय अल्पसंख्यक समुदाय के और अधिक विकास को रोकना था, जिसके बारे में आशंका थी कि वह इस तरह समृद्ध हो रहा था कि छोटे श्वेत समुदाय के लिए खतरा बन सकता था। नेटाल इंडियन कांग्रेस ने हर स्तर पर इस कर का विरोध किया। उनके विरोध ने निस्संदेह इसे घटाकर 3 पाउंड प्रति वयस्क करने में योगदान दिया, हालांकि यह अभी भी एक बेहद विवादास्पद कर था जिसे लगभग बीस वर्षों तक माफ नहीं किया गया। एक मध्यमवर्गीय दबाव समूह के रूप में नेटाल इंडियन कांग्रेस की मूल चिंताओं के अनुरूप, सरकार द्वारा एक विधेयक पेश करने का प्रस्ताव था जिसमें यह प्रावधान था कि 'एशियाई नस्ल, जन्म या वंश के किसी भी व्यक्ति को दुकानदार के रूप में व्यापार करने के उद्देश्य से लाइसेंस लेने की अनुमति नहीं दी जाएगी', जिसे 1894 में वापस ले लिया गया था। गांधी और दक्षिण अफ्रीका में रहने वाले आम भारतीय, ब्रिटिश शासन की न्यायसंगतता पर पूरा भरोसा रखते थे। इसे कुल मिलाकर शासितों के लिए लाभकारी मानते हुए, वे अपनी सभाओं में राष्ट्रगान गाते थे। नेटाल और ट्रांसवाल के भारतीयों ने 1897 में महारानी विक्टोरिया की हीरक जयंती पर गांधी द्वारा तैयार किया गया एक पत्र भेजा, जिसमें कहा गया था, 'हमें यह सोचकर गर्व होता है कि हम आपकी प्रजा हैं, और यह गर्व इसलिए भी बढ़ जाता है क्योंकि हम जानते हैं कि भारत में हमें जो शांति प्राप्त है, और जीवन की सुरक्षा और समृद्धि का जो भरोसा हमें विदेश जाने का साहस देता है, वह इसी स्थिति के कारण है।' 21
गांधी, एक से अधिक विश्व के नागरिक होने के नाते, देख सकते थे कि
यूरोपीय लोग भारतीयों को किस दृष्टि से देखते थे: उन्होंने ‘स्वच्छता और स्वच्छता के नियमों के प्रति हमारी उदासीनता, अपने परिवेश को साफ-सुथरा

रखने में हमारी सुस्ती, और अपने घरों की मरम्मत में हमारी कंजूसी’ पर टिप्पणी की। 22 इससे वे उन अनेक राष्ट्रवादियों की तुलना में कहीं अधिक संतुलित राष्ट्रवादी बन गए, जो अपनी जाति के पीड़ित होने की बात करते थे या अपनी संस्कृति की श्रेष्ठता का दावा करते थे। वे ऐसे अनुभवों से भी गुजर रहे थे, जिनके कारण उन्होंने उच्च जातियों की श्रेष्ठता के बारे में प्रचलित धारणाओं की सत्यता पर प्रश्न उठाना शुरू कर दिया। जब 1896 में वे थोड़े समय के लिए भारत लौटे और राजकोट में प्लेग के समय एक स्वच्छता समिति में स्वेच्छा से काम करने लगे, तो उन्होंने पाया कि धनी लोगों की स्वच्छता का स्तर घृणित था; गरीब कम से कम अपनी स्थिति सुधारने के लिए तैयार थे, जबकि अछूतों के घर साफ-सुथरे थे, भले ही उनके पास धन-संपत्ति की कमी थी। बीच ग्रोव विला में गांधीजी के पास एक रसोइया था, उनके कई क्लर्क उनके साथ रहते थे और उनके यहाँ अक्सर अंग्रेज़ और भारतीय मेहमान आते रहते थे, इसलिए उनका घर उन समुदायों का प्रारंभिक रूप था जिन्हें उन्होंने बाद में स्थापित किया। उनका भरोसेमंद स्वभाव एक बार फिर उनकी कमजोरी के रूप में सामने आया जब उन्होंने अपने बचपन के पुराने दोस्त शेख मेहताब को नेटाल आने पर अपने साथ रहने के लिए आमंत्रित किया। गांधीजी ने उन्हें एक साथी के रूप में और प्रभावी रूप से अपने घर के प्रबंधक के रूप में रखा। वे हमेशा शरारती लड़कों की ओर आकर्षित होते थे - उन्हें लगता था कि वे उन्हें सुधार सकते हैं। ऐसा लगता है कि मेहताब के धूर्त स्वभाव के प्रति अपने युवावस्था के अनुभवों ने उन्हें प्रतिरक्षित नहीं किया था।
एक दिन गांधीजी ने ध्यान दिया जब मेहताब ने बीच ग्रोव विला में ठहरे एक कार्यालय क्लर्क की आलोचना की। उन्हें क्लर्क पर संदेह होने लगा, जिसने अविश्वास का जरा सा भी संकेत मिलते ही गुस्से में घर छोड़ दिया और गांधीजी की नौकरी भी छोड़ दी। गांधीजी के रसोइए ने मेहताब का पर्दाफाश करने का बीड़ा उठाया। वह गांधीजी को उनके कार्यालय से ले आया, बिना यह बताए कि उस दिन वह अपने मालिक को दोपहर के भोजन के लिए जल्दी घर क्यों बुलाना चाहता था। घर पहुँचने पर रसोइए उन्हें ऊपर मेहताब के कमरे में ले गया। गांधीजी ने जोर से दरवाजा खटखटाया और मेहताब ने दरवाजा खोला - वह एक वेश्या के साथ यौन संबंध बना रहा था। गांधीजी ने तुरंत उसे बाहर निकाल दिया और कहा कि वह उससे फिर कभी कोई संबंध नहीं रखेंगे। मेहताब ने उन्हें 'बेनकाब' करने की धमकी दी, जिस पर गांधीजी ने कहा कि वह पुलिस को बुला लेंगे। उनका पूर्व

मित्र चला गया। गांधीजी व्याकुल थे: उन्हें लगा कि 'उसे सुधारने के प्रयास में मैं खुद को बर्बाद कर रहा हूँ'। 23 मेहताब के साथ अपने संबंधों की 'लंबी कहानी, सुखद और दुखद दोनों', पर उनका अंतिम शब्द यह था कि 'वह दूर से ही मेरी पूजा करता रहा'। 24
वस्तुनिष्ठ रूप से देखा जाए तो, यह अपराध उतना गंभीर नहीं था जितना गांधी जी ने बताया था: गांधी जी की सोच के विपरीत, यौन स्वतंत्रता किसी व्यक्ति के सुधरने योग्य न होने का संकेत नहीं देती; यौन मामलों में उनकी प्रतिक्रिया अतिवादी थी, जैसा कि आमतौर पर होता था। हालांकि, रूढ़िवादी दक्षिण अफ्रीका में, अगर वे अपने घर को वेश्याओं के साथ गुप्त मुलाकातों के लिए इस्तेमाल करने देते, तो वे सभ्य समाज से बाहर हो जाते। इसमें मिश्रित नस्ल का पहलू भी है: वेश्या संभवतः अफ्रीकी थी – दक्षिण अफ्रीका में भारतीय पुरुषों की संख्या भारतीय महिलाओं से कहीं अधिक थी – इसलिए नस्लीय भेदभाव वाले इस देश में ऐसे यौन संबंध को और भी अधिक निंदनीय माना जाता।
गांधी जी इस अविश्वासपूर्ण घटना को ब्रह्मांडीय संदर्भ में रखते हुए कहते हैं, ‘ईश्वर ने हमारी रक्षा की… रसोइया मानो स्वर्ग से भेजा गया दूत था।’ उस बुद्धिमान रसोइए (जो संयोगवश अपने काम में बहुत ही अक्षम बताया जाता था) ने भी गांधी जी की नौकरी छोड़ दी, यह शिकायत करते हुए कि गांधी जी आसानी से बहकावे में आ जाते हैं। संभवतः इसी कारण से वह निर्दोष क्लर्क, जिस पर उन्हें संदेह था, गांधी जी के क्षमा मांगने के बाद भी उनसे सुलह नहीं कर पाया।
गांधी ने ‘प्राणकारी भोजन’ के साथ अपने प्रयोग फिर से शुरू किए, और केवल कच्ची सब्जियां, अनाज, फल और मेवे ही खाते रहे, जब तक कि खराब स्वास्थ्य ने उन्हें अधिक संतुलित आहार अपनाने के लिए विवश नहीं कर दिया। हालांकि, वे हमेशा यह मानते थे कि अपने शरीर की आवश्यकताओं पर नियंत्रण से बाहरी दुनिया पर नियंत्रण प्राप्त होगा – जो कि एक बहुत ही संदिग्ध प्रस्ताव था। उनकी पाखंडी प्रवृत्ति ने उन लोगों को भी चिढ़ा दिया जिन्होंने उनसे मित्रता दिखाई थी। एक समय उन्हें एक साधारण ईसाई परिवार के साथ रविवार के दोपहर के भोजन का स्थायी निमंत्रण मिला हुआ था, जो उनकी आहार संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त दयालु थे, फिर भी वे उनके पांच वर्षीय बेटे को शाकाहार अपनाने के लिए प्रेरित करने से खुद को नहीं रोक

पाए: ‘मैंने उसकी थाली में रखे मांस के टुकड़े का उपहास किया और अपनी थाली में रखे सेब की बहुत प्रशंसा की।’ 25 यह, साथ ही बुद्ध की तुलना यीशु से करना, जिसमें उन्होंने यीशु को कमतर आंका, इस बात का कारण बना कि दोनों परिवारों ने आपसी सहमति से तय किया कि वे अब उनके घर नहीं जाएंगे। दक्षिण अफ्रीका में तीन वर्ष बिताने के बाद गांधी जी आत्म-सुधार के उद्देश्य से भारत लौटे। उन्होंने कलकत्ता की नौका यात्रा का अवसर लिया। अन्य यात्रियों में उन्हें एक उर्दू भाषी व्यक्ति मिला, जिसने उन्हें उर्दू सीखने में मदद की। यह भाषा मुख्य रूप से भारत के मुसलमानों में बोली जाती थी। उन्होंने तमिल सीखने के लिए एक स्व-सहायता पुस्तक भी खरीदी, ताकि वे मद्रास क्षेत्र के भारतीयों से संवाद कर सकें, जहाँ से अधिकांश अनुबंधित मजदूर आए थे।
बाद में, जब इलाहाबाद में उनकी ट्रेन छूट गई, तो उन्होंने हमेशा की तरह समय का सदुपयोग किया और भारत के प्रमुख समाचार पत्रों में से एक, द पायनियर के संपादक से मुलाकात की। वे गांधीजी से प्रभावित हुए और कहा कि वे दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों के बारे में सामग्री प्रकाशित करेंगे, हालांकि वे अखबार को वहां भारतीय हितों का समर्थन करने के लिए बाध्य नहीं करेंगे। गांधीजी प्रसन्न हुए और उन्होंने केवल निष्पक्ष सुनवाई की मांग की; उनका मानना था कि तथ्य ही इस मामले को जीत दिलाएंगे। इस मुलाकात ने उन्हें यह विश्वास दिलाया कि उनके काम को पढ़ने वाले लोग हैं, और राजकोट लौटकर उन्होंने अपनी पहली बड़ी लेखन परियोजना, दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों की स्थिति का वर्णन, शुरू की; उन्होंने जानबूझकर संयमित लहजा अपनाया क्योंकि वे अतिशयोक्ति का आरोप नहीं झेलना चाहते थे और वे जानते थे कि दूरी वैसे भी उनके तर्क को बल देगी।
उन्होंने 'दक्षिण अफ्रीका में ब्रिटिश भारतीयों की शिकायतें: भारतीय जनता से अपील' की दस हजार प्रतियां छपवाईं, जो अपने आवरण के रंग के कारण 'ग्रीन पैम्फलेट' के नाम से प्रसिद्ध हुई। गांधी ने इसकी प्रतियां भारत के हर अखबार और पार्टी नेता को भेजीं। पर्चों को लपेटने और उन पर पता लिखने के काम में उन्होंने अपने बेटों और स्थानीय बच्चों की स्वयंसेवी श्रम का उपयोग किया। 'द पायनियर' ने अपने संपादक के वादे के अनुसार पर्चे को कवर किया और उस पर आधारित एक लेख प्रकाशित किया, जिसे लंदन की रॉयटर्स समाचार एजेंसी ने उठाया और नेटाल सहित अन्य स्थानों पर संक्षिप्त रूप में वितरित

किया। यह अंतरराष्ट्रीय मंच पर गांधी की पहली उपस्थिति थी, हालांकि इसमें उनका नाम नहीं लिया गया था: 'भारत में प्रकाशित एक पर्चे में कहा गया है कि नेटाल में भारतीयों को लूटा और प्रताड़ित किया जाता है, उनके साथ जानवरों जैसा व्यवहार किया जाता है और वे न्याय पाने में असमर्थ हैं।' 26 फिरोजशाह मेहता, जो पहले उनके सलाहकार थे और बॉम्बे कॉर्पोरेशन नामक स्थानीय प्राधिकरण के एक प्रमुख सदस्य थे, की सक्रिय सहायता से गांधी ने बॉम्बे में एक जनसभा का आयोजन किया। राष्ट्रवादी राजनीति में अग्रणी रहे मेहता को 1904 में ब्रिटिश साम्राज्य के लिए उनकी सेवाओं के लिए नाइट की उपाधि से सम्मानित किया गया। उन्होंने युवा गांधी को सलाह दी कि वे अपने पूर्व नियोजित भाषण के बजाय अपना भाषण लिखकर मुद्रित करवा लें। फिरोजशाह ने सभा की अध्यक्षता की और अभी भी संकोच कर रहे गांधी को बोलने के लिए प्रोत्साहित किया। अंततः उन्होंने अपना तैयार भाषण एक कुशल वक्ता समर्थक को दिया, और श्रोताओं ने इसे उत्साहपूर्वक ग्रहण किया। गांधी ने पूरे भारत में यात्रा की, प्रभावशाली लोगों से मुलाकात की और उन्हें दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों की स्थिति से अवगत कराया। इस प्रकार नेटाल इंडियन कांग्रेस के लिए कार्य करके उन्होंने भारत में स्थायी रूप से लौटने पर राष्ट्रीय प्रचार के लिए अपनी योग्यता का प्रदर्शन किया। उन्होंने राष्ट्रवादी आंदोलन में फिरोजशाह के शीर्ष पद के दो प्रमुख दावेदारों - बाल गंगाधर तिलक और गोपाल कृष्ण गोखले - से विशेष रूप से मुलाकात की। उन्होंने तिलक को असंगत पाया, लेकिन कहा कि उन्हें गोखले से ‘प्यार हो गया’, जो गांधी से प्रभावित थे और उन्होंने उन्हें अपने समर्थन का आश्वासन दिया। 27
वे मद्रास गए और वहाँ उन्होंने एक पीटे हुए मजदूर की कहानी सुनाकर तमिल लोगों को प्रभावित किया, जिसका अनुबंध उन्होंने एक अच्छे नियोक्ता के पास स्थानांतरित करवा दिया था। कलकत्ता में उन्हें लोगों को अपनी ओर आकर्षित करने में काफी संघर्ष करना पड़ा, क्योंकि वहाँ के लोग खुद को काफी परेशानियों में फंसा हुआ महसूस करते थे। वे शहर में एक जनसभा आयोजित करने का प्रयास कर रहे थे, तभी उन्हें डरबन से एक तार मिला जिसमें उन्हें दक्षिण अफ्रीका वापस बुलाया गया था।
वह राजकोट लौट आए थे, जहाँ उनका अपनी पत्नी से पुनर्मिलन हुआ, जिनसे वे तीन वर्षों से नहीं मिले थे, और अपने दो बेटों से भी, जिनके लिए वे अजनबी

थे। गांधी परिवार की मुखिया उनकी बड़ी भाभी थीं, इसलिए कस्तूरबाई एक साधारण पत्नी के रूप में रह रही थीं। उन्हें गांधी के जीवन के बारे में बहुत कम जानकारी थी। चूंकि वह अनपढ़ थीं, इसलिए गांधी उन्हें पत्र नहीं लिखते थे; उन्होंने शायद उनके भाई को लिखे औपचारिक पत्र पढ़े ही सुने होंगे। इससे उन्हें पता चला होगा कि गांधी समृद्ध हो रहे थे और अपने सफल वकालत के व्यवसाय से वे अपनी शिक्षा के लिए लिए गए ऋण चुकाने में सक्षम थे। उनके आत्मविश्वास और स्पष्ट सफलता ने कस्तूरबाई को प्रसन्न किया होगा। उन्होंने उनसे कहा कि वे उन्हें अपने साथ दक्षिण अफ्रीका ले जाने के लिए तैयार हैं और यह जानकर वह निस्संदेह रोमांचित हुई होंगी कि अंततः उन्हें अपना घर मिल रहा है, भले ही वह दूसरे देश में हो।
गांधी जी अपनी पत्नी, बेटों और विधवा बहन के बेटे गोकलदास के साथ दादा अब्दुल्ला एंड कंपनी के स्वामित्व वाले कौरलैंड जहाज से यात्रा कर रहे थे; जहाज के मालिक ने उनका किराया मुफ्त में दिया था। दक्षिण अफ्रीका में सबसे सम्मानित एशियाई लोग पारसी थे, इसलिए गांधी जी ने अपनी पत्नी को पारसी महिलाओं के पहनावे के अनुसार कपड़े पहनाए: लंबी साड़ी, लंबी आस्तीन वाली ब्लाउज, मोजे और जूते; लड़कों ने पारसी कोट और पतलून पहनी। इस तरह उन्हें उम्मीद थी कि उनका परिवार सम्मानित माना जाएगा। उन्होंने कस्तूरबाई को बंबई से दक्षिण अफ्रीका जाने वाले जहाज के डेक पर जूते और मोजे पहनने का अभ्यास कराया, और जोर देकर कहा कि वह उन्हें पूरे दिन पहने रहें, जो उन्हें बोझिल लगा। उन्होंने उन्हें बर्तनों के साथ खाना भी सिखाया, मेज पर बैठकर खाना सिखाया और अपरिचित यूरोपीय भोजन को स्वीकार करना सिखाया।
समुद्री यात्रा तूफ़ानी थी, लेकिन गांधी जी एक कुशल नाविक थे और वे यात्रियों के बीच घूम-घूमकर उनका हौसला बढ़ाते और उन्हें दिलासा देते रहे। अठारह दिनों बाद, कौरलैंड और दादा अब्दुल्ला का एक अन्य जहाज़, जिसने उनके साथ यात्रा की थी, डरबन पहुँचे। स्वास्थ्य अधिकारी जहाज़ पर आए और आदेश दिया कि जहाज़ों को संगरोध में रखा जाए - यह एक मानक प्रक्रिया थी यदि कोई जहाज़ ऐसे क्षेत्र से आता था जहाँ प्लेग फैला हो। जहाज़ों के कप्तानों और मालिकों ने आज्ञा का पालन किया, लेकिन पाँच दिनों के बाद संगरोध की अवधि बढ़ा दी गई। दादा अब्दुल्ला एंड कंपनी से गांधी जी को मिली रिपोर्टों से यह स्पष्ट हो गया कि दक्षिण अफ्रीका में प्रवेश से वंचित

किया जा रहा जीवाणु स्वयं गांधी जी थे। यह अफवाह फैलाई गई कि गांधी जी सैकड़ों नए अप्रवासियों को लेकर लौट रहे हैं जो अपने अधिकारों के लिए लड़ेंगे। ग्रीन पैम्फलेट में नस्लीय भेदभाव के आरोप नेटाल में प्रसारित किए गए, शुरुआत में रॉयटर्स की उस रिपोर्ट के कारण जो पायनियर लेख पर आधारित थी, लेकिन भारत में गांधी जी के भाषणों के कारण इसका प्रचार जारी रहा।
सरकार आप्रवासियों को डरा-धमकाकर भारत वापस भेजना चाहती थी, या अधिक व्यावहारिक रूप से, उन्हें तब तक रोके रखना चाहती थी जब तक कि जनता का ध्यान कहीं और न चला जाए। डरबन में यूरोपीय संरक्षण लीग और औपनिवेशिक देशभक्ति संघ जैसे संगठनों के बैनर तले क्रोधित श्वेत लोगों की विशाल सभाएँ बुलाई गईं, जिन्होंने दादा अब्दुल्ला एंड कंपनी को जहाजों को वापस मोड़ने के लिए मजबूर करने हेतु धमकियाँ दीं; ऐसा करने पर कंपनी को मुआवज़े की पेशकश भी की गई। यह क्वारंटाइन क्रिसमस के दौरान भी जारी रहा। क्रिसमस के दिन गांधी और उनके परिवार को कप्तान के साथ भोजन करने के लिए आमंत्रित किया गया। गांधी ने भोजन के बाद भाषण दिया, जिसमें उन्होंने 'पश्चिमी सभ्यता' पर गंभीरता से बात की, जबकि वास्तव में उस अवसर पर हल्के-फुल्के अंदाज़ की आवश्यकता थी। उन्होंने बाद में याद किया, 'मैंने उस सभ्यता की निंदा की जिसके फल नेटाल के श्वेत लोग थे, और जिसका वे प्रतिनिधित्व और समर्थन करते थे।' 28
कंपनी पर अपने द्वारा लाए गए खतरे का बोझ उन पर भारी पड़ रहा था। वे जानते थे कि उन्होंने उदार दादा अब्दुल्ला को ऐसे रास्ते पर ले जाया था जिससे उन्हें केवल व्यापार करने के बजाय सिद्धांतों के लिए लड़ना पड़ेगा, और उन्होंने अपने परिवार और अन्य यात्रियों के जीवन को खतरे में डाल दिया था, क्योंकि धमकियां दी जा रही थीं कि भीड़ द्वारा यात्रियों को उतरने देने से पहले ही उन्हें डुबो दिया जाएगा। संगरोध का मामला होने का बहाना बहुत पहले ही खत्म हो चुका था; संगरोध अधिकारी ने स्वीकार किया कि उसे सीधे सरकार से आदेश मिल रहे थे। अंततः 11 जनवरी 1897 को, तेईस दिनों तक हिरासत में रखे जाने के बाद, कौरलैंड और नादेरी को बंदरगाह पर उतरने और यात्रियों को उतरने की अनुमति दी गई। श्वेत प्रदर्शनकारियों की भीड़ आप्रवासियों को किनारे आने से रोकने के लिए इकट्ठा हो गई। हैरी एस्कोम्बे

उन्हें केवल यह आश्वासन देकर तितर-बितर करने में सक्षम हुए कि 'भारतीय प्रश्न' पर संसद के शीघ्र सत्र में विचार किया जाएगा। 29
गांधी को हैरी एस्कोम्बे का संदेश मिला था, जो गांधी या प्रवासियों को लेकर सार्वजनिक अशांति नहीं चाहते थे। एस्कोम्बे ने उन्हें सलाह दी थी कि वे स्वयं सूर्यास्त तक जहाज से न उतरें और बंदरगाह अधीक्षक उन्हें और उनके परिवार को घर तक पहुँचा देंगे। हालाँकि, दादा अब्दुल्ला एंड कंपनी के वकील फ्रेडरिक लॉटन ने सुझाव दिया कि कस्तूरबाई और बच्चे अपने पारसी मित्र जीवनजी रुस्तमजी के घर चले जाएँ, जबकि गांधी और लॉटन पैदल ही बंदरगाह में प्रवेश करेंगे। उन्हें इस काम की गरिमा की चिंता थी और गांधी जी के स्वाभिमान को ठेस पहुँची थी – वे छुपकर प्रवेश नहीं करना चाहते थे, मानो वे अपने विचारों से शर्मिंदा हों या अपने शत्रुओं से डरे हुए हों। इसलिए वह लॉटन के साथ किनारे पर उतरा, लेकिन जैसे ही वह उतरा, कुछ
बच्चों ने उसे पहचान लिया और उसका नाम चिल्लाने लगे। लगभग आधा दर्जन लोग उनके साथ शामिल हो गए। लॉटन ने भागने के लिए एक रिक्शा रोका, लेकिन डरा हुआ रिक्शा चालक भाग गया।
भीड़ तेजी से बढ़ने लगी, लॉटन को पकड़कर गांधी से अलग कर दिया गया, फिर
उन पर पत्थर और अन्य चीजें फेंकी जाने लगीं - किसी ने उनकी पगड़ी छीन ली और अन्य लोगों ने उन्हें लात-घूंसे मारे। वे बेहोश होने लगे और खुद को संभालने के लिए एक घर के सामने की रेलिंग पकड़ ली, लेकिन वार जारी रहे। डरबन पुलिस अधीक्षक की पत्नी जेन एलेक्जेंडर ने यह हंगामा देखा और केवल अपनी छतरी के सहारे गांधी और भीड़ के बीच आकर उन्हें बचाने लगीं और हमलावरों को 'कायर!' चिल्लाने लगीं। चूंकि उन्हें नुकसान पहुंचाए बिना वे जेन एलेक्जेंडर को नुकसान नहीं पहुंचा सकते थे, इसलिए भीड़ रुक गई। हमले को देख रहे एक भारतीय ने पुलिस स्टेशन जाकर पुलिस को सूचना दी, और गांधीजी को सुरक्षा देने और भीड़ को तितर-बितर करने के लिए पुलिस की एक टुकड़ी भेजी गई। अधीक्षक रिचर्ड अलेक्जेंडर ने उन्हें पुलिस स्टेशन में शरण लेने का सुझाव दिया, लेकिन गांधीजी भीड़ के व्यवहार को न समझ पाने के कारण यह कहते हुए प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया कि, 'जब उन्हें अपनी गलती का एहसास होगा तो वे अवश्य शांत हो जाएंगे। मुझे उनके न्याय की भावना पर भरोसा है।' 30 इसलिए, पुलिस की सुरक्षा में, वे दिन दहाड़े जीवनजी रुस्तमजी के घर गए जहाँ उनकी पत्नी और बच्चे पहले से ही प्रतीक्षा कर रहे

थे; निःसंदेह, उन्होंने घायल और खून से लथपथ गांधीजी को देखकर भय का अनुभव किया होगा।
भीड़ को अब गांधीजी के ठिकाने का पता चल गया था और जैसे-जैसे रात बढ़ती गई, पारसी व्यापारी के घर के बाहर भीड़ जमा हो गई क्योंकि उनके लक्ष्य की वहाँ मौजूदगी की खबर फैल गई थी। उन्होंने गांधीजी को उनके हवाले करने की मांग की और रुस्तमजी को धमकी दी। अधीक्षक अलेक्जेंडर अतिरिक्त बल लेकर पहुंचे लेकिन उन्हें एहसास हुआ कि स्थिति उनके बस से बाहर है और उन्हें डर था कि भीड़ घर को ज़मींदोज़ कर देगी। उन्होंने गांधीजी को संदेश भेजा कि अगर वे जीवनजी रुस्तमजी का घर और अपने परिवार को बचाना चाहते हैं, तो उन्हें भेष बदलकर भाग जाना चाहिए। गांधीजी से यह बात पहले दो बार कही जा चुकी थी - हैरी एस्कोम्ब ने जहाज पर और अलेक्जेंडर ने पुलिस स्टेशन के पास से गुजरते समय। अब अलेक्जेंडर गांधीजी की प्रवृत्ति को भांप चुके थे: दूसरों की रक्षा करने की उनकी भावना का हवाला देकर, उन्होंने अंततः गांधीजी को समझदारी भरा कदम उठाने और पुलिस सुरक्षा में छिपने के लिए राजी कर लिया।
अलेक्जेंडर ने भीड़ को ‘बूढ़े गांधी को खट्टे सेब के पेड़ पर लटका दो’ गीत गाकर व्यस्त रखा, जबकि घर के अंदर गांधी जी पुलिस की वर्दी में थे और उन्होंने एक टिन के बर्तन से बना हेलमेट शॉल से सिर पर टिका रखा था। इस तरह भेष बदलकर और दो जासूसों के साथ वे पास के एक गोदाम से निकलकर, हिंसक भीड़ के बीच से होते हुए, इंतज़ार कर रही गाड़ी में बैठ गए। पुलिस स्टेशन में उनके सुरक्षित पहुँचने की सूचना मिलने पर अधीक्षक ने भीड़ से कहा कि गांधी जी उनसे बच निकले हैं। जब कुछ लोगों ने उनकी बात पर विश्वास नहीं किया, तो अलेक्जेंडर ने उन्हें घर की तलाशी के लिए कुछ प्रतिनिधि नियुक्त करने को कहा। मेहमाननवाज रुस्तमजी को इस अपमान का सामना कराने के बाद, अंततः भीड़ तितर-बितर हो गई।
बाद में हैरी एस्कोम्बे ने गांधी के हमलावरों पर मुकदमा चलाने की
पेशकश की, बशर्ते वह उनकी पहचान कर सकें, लेकिन गांधी ने इनकार कर दिया और कुछ नाराज़गी भरे लहजे में एस्कोम्बे से कहा कि भीड़ के नेता और स्वयं एस्कोम्बे दोनों ही इसके लिए ज़िम्मेदार हैं, क्योंकि वे अपने लोगों का मार्गदर्शन करने में विफल रहे। गांधी ने उन पर आरोप लगाया कि वे यह मानते हैं कि उन्होंने, यानी गांधी ने, नेटाल में गोरों के निंदनीय व्यवहार को

बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया था, जबकि उन्हें सबूतों का इंतज़ार करना चाहिए था। गांधी के आरोप को नज़रअंदाज़ करते हुए, एस्कोम्बे को अब इस अप्रिय घटना को समाप्त करने का एक रास्ता नज़र आया। उन्होंने गांधी से कहा कि अगर वे मुकदमा नहीं चलाते हैं तो इससे उन्हें शांति बहाल करने और गांधी की प्रतिष्ठा बढ़ाने में मदद मिलेगी। एस्कोम्बे जैसे धूर्त प्रशासक पहले से ही गांधी को अपने इशारों पर नचाना सीख रहे थे, उनकी सबसे 'गांधीवादी' प्रवृत्ति का फायदा उठा रहे थे, जिससे उनके अपने हित भी पूरे होते।
इस घटना से गांधीजी को यह संदेश नहीं मिला (हालाँकि यह उनके बाद के वृत्तांत में निहित है) कि विवेक ही वीरता का श्रेष्ठ भाग है और उन्हें हैरी एस्कोम्ब की सलाह मानकर अपने मित्र के घर से अंधेरा होने के बाद चुपके से निकल जाना चाहिए था। यह विचार कि कभी-कभी अधिकारी कानून-व्यवस्था के हित में कार्य करते हैं, उन्हें पसंद नहीं था। इस घटना से उन्होंने जो सीख ली, वह गांधीजी की विशिष्ट विचारधारा पर आधारित थी कि अपने हमलावरों को सार्वजनिक रूप से क्षमा करना इतना उल्लेखनीय होगा कि डरबन के यूरोपीय अपने आचरण पर शर्मिंदा हो जाएँगे।
मुकदमा न चलाने के उनके फैसले का तत्काल अंतरराष्ट्रीय प्रभाव पड़ा: पहली बार गांधी जी ब्रिटिश साम्राज्य की नजर में आए। भारत में वायसराय ने उन पर हुए हमले पर चिंता व्यक्त की; लंदन में औपनिवेशिक सचिव जोसेफ चेम्बरलेन ने दोषियों को दंडित करने की मांग की। एस्कोम्बे को कानूनी दायित्वों से मुक्त करने के लिए, गांधी जी ने एक हलफनामा पर हस्ताक्षर किए जिसमें कहा गया था कि मुकदमा न चलाना उनका स्वयं का निर्णय था। वास्तव में, इस फैसले से मिली प्रसिद्धि अदालती मुकदमे से मिलने वाली प्रसिद्धि से कहीं अधिक थी। नेटाल के समाचार पत्रों ने गांधी जी को यह स्पष्ट करने का अवसर दिया कि दो जहाजों में भरकर आए प्रवासियों को संगठित करने में उनका कोई हाथ नहीं था, और उनमें से अधिकांश वैसे भी नेटाल में नहीं रुक रहे थे बल्कि ट्रांसवाल जा रहे थे। सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि विदेशों में उन्होंने जो कुछ भी कहा था, वह अफ्रीका में उनके द्वारा बार-बार और खुलकर कही गई बातों से कहीं अधिक भड़काऊ था। उन्हें मिली प्रसिद्धि ने कुछ यूरोपीय लोगों को सोचने पर मजबूर कर दिया, और उनके वकालत पेशे में ग्राहकों को भी आकर्षित किया।

गांधी ने इस जन ध्यान का सदुपयोग करते हुए नेटाल इंडियन कांग्रेस के लिए सदस्यता और धन जुटाने की अपील की। दक्षिण अफ्रीका में अपने अनुभवों के आधार पर उन्होंने अभियान संगठनों के लिए एक गतिशील मॉडल विकसित किया: उनका तर्क था कि संगठनों के पास स्थायी निधि नहीं होनी चाहिए, क्योंकि इससे वे संस्थागत हो जाते हैं और जनता के प्रति उत्तरदायी नहीं रहते, जिनके लिए उन्हें स्थापित किया गया है। इसके बजाय, वर्तमान व्यय की पूर्ति वार्षिक रूप से स्वैच्छिक दान से होनी चाहिए, जिससे संगठनों को लगातार अपनी कार्यप्रणाली को सही ठहराना होगा और उन्हें उन उद्देश्यों से बड़ा होने से रोका जा सकेगा जिनके कारण उनकी स्थापना हुई थी।
गांधी जी के इर्द-गिर्द फैली लोकप्रियता ने विपक्ष को भी प्रेरित किया, जिसने आव्रजन प्रतिबंध विधेयक और व्यापारी लाइसेंस विधेयक सफलतापूर्वक पारित करवाए। इन विधेयकों का उद्देश्य मुख्य रूप से भारतीयों को निशाना बनाकर आव्रजन और व्यापार को प्रतिबंधित करना था। व्यापारी लाइसेंस विधेयक ने विशेष रूप से बड़े व्यापारियों को प्रभावित किया, जो नेटाल इंडियन कांग्रेस के एकमात्र समर्पित समर्थक थे। अब यह कांग्रेस पुराने लाइसेंसों के नवीनीकरण से इनकार या लाइसेंसों को नए परिसरों में स्थानांतरित करने से संबंधित अदालती मुकदमों के इर्द-गिर्द घूमने लगी। गांधी परिवार जल्द ही मेहमाननवाज रुस्तमजी घर से बीच ग्रोव विला में रहने चला गया, जो गांधी की अनुपस्थिति में बंद था। यहाँ कस्तूरबाई ने पहली बार अपने घर की बागडोर संभाली और कस्तूरबा नाम अपना लिया, जो उनकी वरिष्ठता को दर्शाता था। वह समझ गई थीं कि उनके पति कितने सम्मानित व्यक्ति बन गए थे; लोग उनसे सलाह लेने के लिए हमेशा आते रहते थे। लेकिन उनका घर लंबे समय तक उनका अपना नहीं रहा। गांधी ने अपने कुछ विधि सहायकों को अपने साथ रहने के लिए आमंत्रित किया और एक बार तो उन्होंने एक कुष्ठ रोगी भिखारी को भी अपने घर में पनाह दी। वह व्यक्ति भीख मांगता हुआ आया था और गांधी ने, अपनी देखभाल के प्रति प्रेम के कारण, उसके घावों पर पट्टी बांधी और उसे अपने घर में रहने के लिए आमंत्रित किया, लेकिन उसकी ज़रूरतें एक सामान्य परिवार की पहुँच से कहीं अधिक थीं, इसलिए वे उसे बंधुआ मजदूरों के लिए बने एक सरकारी अस्पताल में ले गए। बाद में गांधी ने हर सुबह दो घंटे एक छोटे से अस्पताल में स्वयंसेवा करके अपने स्वास्थ्य सेवा के अनुभव को बढ़ाया और अपना नियमित कानूनी काम एक सहायक को सौंप दिया।

गांधी जी की आर्थिक स्थिति ऐसी थी कि वे अपने बच्चों को किसी यूरोपीय स्कूल में दाखिला दिला सकते थे, लेकिन वे उन सुविधाओं का लाभ नहीं उठाना चाहते थे जो अन्य भारतीयों को नहीं मिलती थीं। वैसे भी वे मिशन स्कूलों को अपर्याप्त मानते थे और निस्संदेह उन्हें डर था कि कहीं वे उनके बच्चों को ईसाई धर्म की आध्यात्मिक शिक्षा न दे दें। इसलिए उन्होंने अपने बेटों को स्कूल नहीं भेजा बल्कि एक अंग्रेज़ शिक्षिका को नियुक्त किया। उनकी शिक्षा से संतुष्ट न होकर उन्होंने स्वयं बच्चों को पढ़ाने का प्रयास किया, लेकिन वे या तो शाम को बहुत देर से घर आते थे या फिर बच्चों के सुबह जल्दी उठने की उम्मीद करते थे, इसलिए ऐसे अभ्यासों को शिक्षा कहना उचित नहीं था। कम से कम हरिलाल ने तो परिवार के भारत लौटने पर कुछ समय बोर्डिंग स्कूल में बिताया। गांधी जी ने अपनी आत्मकथा में अपने बच्चों को उचित शिक्षा न दे पाने की अपनी विफलता के बारे में लिखा है: 'इस मामले में मेरे सभी बेटों को मुझसे शिकायतें हैं।' बच्चों के पालन-पोषण के इस पहलू को लेकर उनके मित्रों ने भी उन्हें इसी तरह फटकारा, लेकिन वे इस बात पर अड़े रहे कि अगर उन्होंने उन्हें वह शिक्षा दी होती जो अन्य बच्चों को नहीं मिल सकी, तो वे 'उन्हें स्वतंत्रता और आत्मसम्मान के उस आदर्श पाठ से वंचित कर देते जो मैंने उन्हें साहित्यिक प्रशिक्षण की कीमत पर दिया था'। 31 इस प्रकार उसने स्वयं को आश्वस्त कर लिया कि उसने उनकी शिक्षा का बलिदान उनके आध्यात्मिक हित के लिए किया है।
गांधी जी के नैतिक सिद्धांतों के आगे झुकना कस्तूरबा को असहनीय लगता
था, भले ही वह एक आज्ञाकारी पत्नी बनने की कोशिश करती थीं। उन्होंने लिखा, 'मैं खुद को अपनी पत्नी का गुरु मानता था और इसलिए अपने अंध प्रेम के कारण उन्हें परेशान करता था।' उन्होंने आदेश दिया था कि बीच ग्रोव विला के सभी निवासियों को अपने शौचालय स्वयं खाली करने होंगे, एक ऐसा काम जो कोई ब्राह्मण महिला कभी नहीं करती (या ध्यान भी नहीं देती) - परिवार के मल-मूत्र का निपटान एक अछूत ही करता था। अगर शौचालय खाली नहीं किए जाते थे, तो गांधी जी ने तय किया था कि वे और कस्तूरबा नौकर से करवाने के बजाय खुद ही यह काम करेंगे - शायद घर के निवासियों को अगली बार यह काम करने के लिए शर्मिंदा करने के उद्देश्य से। एक दिन एक क्लर्क, जो ईसाई था लेकिन अछूत परिवार से था, उनके साथ रहने आया था। उसे घर के नियम नहीं पता थे और उसने अपना शौचालय बिस्तर के नीचे छोड़ दिया था। कस्तूरबा जानती थीं कि गांधी

जी ही उसे खाली करेंगे, और खुद साफ करने से भी बदतर बात यह थी कि वह अपने पति को इस तरह खुद को अपवित्र करने दें। इसलिए वह शौचालय को सीढ़ियों से नीचे ले गई और उसे खाली कर दिया, इस बात पर क्रोध से रोते हुए कि उसका जीवन इस मोड़ पर आ गया है।
गांधी ने उसे देखा और उन्हें भी गुस्सा आया: वे चाहते थे कि वह खुशी-
खुशी अपना काम करे। उन्होंने उसे पुकारा: 'मैं अपने घर में यह बकवास बर्दाश्त नहीं करूँगा।' 'अपने घर में रहो और मुझे जाने दो,' उसने पलटकर चिल्लाया। गांधी लिखते हैं कि वे अपना आपा खो बैठे, उसका हाथ पकड़ा और उसे गेट तक घसीट कर ले गए, गेट खोला और उसे बाहर धकेलने का इरादा किया। वह चिल्लाई: 'क्या तुम्हें शर्म नहीं आती? क्या तुम्हें इतना होश खोना ही है? मैं कहाँ जाऊँ? यहाँ मेरे कोई माता-पिता या रिश्तेदार नहीं हैं जो मुझे पनाह दें। तुम्हारी पत्नी होकर, तुम्हें लगता है कि मुझे तुम्हारे थप्पड़ और लात सहनी चाहिए। भगवान के लिए, तमीज़ से पेश आओ और गेट बंद कर दो। हमें इस तरह का तमाशा करते हुए नहीं देखा जाना चाहिए।' 32
उन्हें शर्मिंदगी तो थी, लेकिन किस बात की, यह स्पष्ट नहीं है – क्या उन्हें एक मामूली घरेलू काम पर गुस्सा आया था? क्या उन्हें लगा था कि पत्नी ने उन्हें गुस्सा दिलाया था? या फिर अपनी अति प्रतिक्रिया की? बाद में वे लिखते हैं कि ‘पत्नी, अपनी अदम्य सहनशक्ति के साथ, हमेशा विजयी रही है’। ऐसा लगता है कि उन्होंने अपने सिद्धांत में कोई नरमी नहीं दिखाई – शायद उन्होंने भविष्य में उन्हें मल-मूत्र साफ करने की अनुमति दे दी हो, लेकिन इस बात का कोई संकेत नहीं है कि उन्होंने इतने कठोर घरेलू नियमों के सिद्धांत पर सवाल उठाया हो जो हास्यास्पद लगते हैं: वे उनसे न केवल मल-मूत्र साफ करने को कह रहे थे, बल्कि ऐसा करते हुए खुश दिखने को भी कह रहे थे।
एक वकील के रूप में गांधी ने कभी भी झूठ का बचाव नहीं किया, और धोखे में स्वेच्छा से भागीदार बनने से इनकार कर दिया। जैसे-जैसे यह बात ज्ञात हुई, न्यायाधीश उन पर भरोसा करने लगे, हालांकि अपने करियर के दौरान अस्वीकृत मुकदमों के कारण उन्हें फीस में कई हजार पाउंड का नुकसान हुआ। इसके अलावा, वे बकाया फीस के लिए मुकदमा करना अपने लिए अनुचित समझते थे, जिससे उन्हें भारी नुकसान भी हुआ। फिर भी, वे जल्द ही बारह कर्मचारियों के साथ एक सफल वकील बन गए, लेकिन इससे गांधी को उस विलासितापूर्ण जीवन से दूर

आध्यात्मिक मार्ग की ओर पहले से कहीं अधिक आकर्षण महसूस हुआ जिसका वे वर्तमान में आनंद ले रहे थे। उन्होंने इसका समाधान घरेलू खर्चों को कम करना चुना ताकि सार्वजनिक कार्यों के लिए अधिक धन उपलब्ध हो सके। इसकी शुरुआत नौकरों को बर्खास्त करने से हुई। उन्होंने इस बात का कोई संकेत नहीं दिया कि उन्होंने वैकल्पिक विचारों पर भी विचार किया था: कि धन के अपने दायित्व होते हैं और उनमें से एक दूसरों को रोजगार देना है; कि उन्हें अन्य लोगों को उनके स्तर पर काम करने देना चाहिए ताकि उन्हें उन सार्वजनिक कार्यों को करने का समय मिल सके जिनका वे सम्मान करते हैं; कि वे दूसरों को अपनी सर्वोत्तम सेवा करने की अनुमति देकर उन्हें प्रसन्नता प्रदान करते हैं। गांधी के लिए, केवल व्यक्तिगत आध्यात्मिक खोज ही मायने रखती थी: आध्यात्मिक ज्ञान का मार्ग आत्मनिर्भरता के छोटे-छोटे कार्यों से होकर गुजरता था; परिवार के लोग भी इसमें भाग लेने वाले थे, इसलिए कस्तूरबा और लड़के भी घर के काम करेंगे।
गांधी ने अपने कपड़े खुद धोना सीखा, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने पहले अंग्रेज नाई द्वारा ठुकराए जाने के बाद अपने बाल खुद काटना सीखा था - जैसा कि उन्होंने कहा था, 'मैंने खुद को धोबी की गुलामी से मुक्त किया, मैंने नाई पर निर्भरता को त्याग दिया।' 33 आत्म-सुधार के उनके कुछ प्रयोग हास्यास्पद थे, जैसे कि बाल संवारने का उनका पहला प्रयास और अपने कॉलर को जरूरत से ज्यादा स्टार्च करना, लेकिन जब उन्होंने तय कर लिया कि कोई रास्ता सही है तो वे उपहास से बेपरवाह रहते थे।
दक्षिण अफ्रीका में इन वर्षों के दौरान गांधीजी थियोसोफिकल सोसाइटी द्वारा किए गए उपनिषदों के अंग्रेजी अनुवाद पढ़ रहे थे, और (निस्संदेह अपने पारसी मित्रों से प्रभावित होकर) उन्होंने ज़रथुस्त्र के वचन पढ़े। वे कुछ लोकप्रिय रचनाओं से भी प्रभावित थे: वाशिंगटन इरविंग द्वारा लिखित पैगंबर मोहम्मद और उनके उत्तराधिकारियों की जीवनी; और उन्होंने एडविन अर्नोल्ड की बुद्ध के जीवन पर आधारित काल्पनिक कविता 'द लाइट ऑफ एशिया' का पुनः अध्ययन किया, साथ ही कुरान का अनुवाद भी पढ़ा।
लियो टॉल्स्टॉय की उपदेशात्मक रचनाओं ने उन पर विशेष प्रभाव डाला। उन्होंने 'ईश्वर का राज्य तुम्हारे भीतर है' पढ़ा, जिसमें पर्वतीय उपदेश पर चर्चा की गई थी और यीशु को मनुष्य के पापों के लिए ईश्वरीय मुक्तिदाता के रूप में नहीं, बल्कि आध्यात्मिक जीवन जीने के मार्ग पर व्यावहारिक

मार्गदर्शन देने वाले एक द्रष्टा के रूप में प्रस्तुत किया गया था। टॉल्स्टॉय उनके चिंतन में अहिंसा के विकास के लिए विशेष रूप से एक महत्वपूर्ण आदर्श थे। (गांधी टॉल्स्टॉय की उत्कृष्ट रचनाओं में रुचि नहीं रखते थे, जबकि उनके आत्म-सुधार और आध्यात्मिक कार्यों को साहित्यिक जगत में उच्च स्थान नहीं दिया जाता है।)
गांधी ने दक्षिण अफ्रीका में अपने प्रारंभिक वर्षों में स्वयं को 'एज़ोटेरिक क्रिश्चियन यूनियन और लंदन वेजिटेरियन सोसाइटी के प्रतिनिधि' के रूप में कार्य करते हुए वर्णित किया। उन्होंने सक्रिय रूप से यूनियन को 'विश्व के सभी महान धर्मों की एकता और साझा स्रोत' के प्रतिनिधि के रूप में बढ़ावा दिया और 'भौतिकवाद की घोर अपर्याप्तता' की निंदा की, जो 'विश्व को अभूतपूर्व सभ्यता प्रदान करने का दावा करता है', जबकि वास्तव में इसने मानवता को 'विनाश के सबसे भयानक हथियार, अराजकतावाद का भयावह विकास, पूंजी और श्रम के बीच भयावह विवाद और विज्ञान के नाम पर निर्दोष, मूक, जीवित जानवरों पर की गई निर्मम और शैतानी क्रूरता' दी है। 34 उन्होंने संघ की अनुशंसा करते हुए कहा कि यह ‘एक ऐसा धार्मिक तंत्र है जो सार्वभौमिकता की शिक्षा देता है और शाश्वत सत्यों पर आधारित है, न कि केवल घटनाओं या ऐतिहासिक तथ्यों पर।’ 35 उन्होंने ‘भौतिकवादी प्रवृत्तियों से, जिन्होंने हमें इतना क्रूर रूप से स्वार्थी बना दिया है, न केवल यीशु मसीह, बल्कि बुद्ध, ज़ोरोस्टर और मुहम्मद की शुद्ध गूढ़ शिक्षाओं की ओर लौटने के स्पष्ट संकेत’ देखे। 36
गांधी जी उन्नीसवीं सदी के अंतर्राष्ट्रीय धर्म बहाई धर्म से परिचित नहीं थे (या कम से कम उससे प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित नहीं हुए थे), जो कृष्ण, ईसा, मोहम्मद और अन्य धार्मिक हस्तियों को एक ईश्वर के पैगंबर के रूप में प्रस्तुत करता है। सभी धर्मों के पैगंबरों के योगदान को स्वीकार करते हुए, ईश्वर के प्रति एकेश्वरवादी दृष्टिकोण उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध और बीसवीं सदी के आरंभिक वर्षों में विचारशील और आध्यात्मिक लोगों के बीच प्रचलित था। अन्य धर्मों के महत्व को स्वीकार करते हुए और उनके साहित्य का अध्ययन करते हुए, गांधी जी जीवन और पुनर्जन्म के चक्र और आध्यात्मिक उन्नति की हिंदू अवधारणा में भी विश्वास रखते थे, जिसका अंतिम लक्ष्य मोक्ष है: जीवन और मृत्यु के चक्र से मुक्ति। आध्यात्मिक उन्नति

के लिए उनकी निरंतर खोज, जिसमें आहार और यौन संबंध से जुड़े उनके प्रयोग शामिल थे, एक विशिष्ट हिंदू प्रवृत्ति थी।
मई 1898 में कस्तूरबा ने तीसरे पुत्र रामदास को जन्म दिया। गांधी जी प्रसव के समय चिकित्सक की सहायता करने के लिए उपस्थित थे – आत्म-सुधार की उनकी खोज ने उन्हें प्रसव संबंधी एक पुस्तक का अध्ययन करने के लिए प्रेरित किया था। इस कठिन प्रसव के बाद कस्तूरबा एनीमिया के कारण बिस्तर पर ही रहीं और गांधी जी ने उनकी, उनके नवजात शिशु और बड़े बेटों की देखभाल की। 23 मई 1900 को उनके चौथे पुत्र देवदास का जन्म हुआ; प्रसव पीड़ा शीघ्र शुरू हुई, सहायता के लिए किसी को बुलाने का समय नहीं था और गांधी जी ने स्वयं बच्चे को जन्म दिया। यह भी एक कठिन प्रसव था, और कस्तूरबा की पीड़ा को देखकर उन्होंने आगे संतान न करने का निर्णय लिया। गांधी जी को गर्भनिरोध के बारे में पर्याप्त ज्ञान था, जो उन्होंने लंदन में वेजिटेरियन सोसाइटी के साथ अपने समय के दौरान प्राप्त किया था, लेकिन वे इस बात से भी प्रभावित थे कि आत्म-संयम गर्भधारण रोकने का अन्य तरीकों की तुलना में कहीं बेहतर साधन है।
बाद में, उन्हें याद नहीं रहा कि विवाह में ब्रह्मचर्य के प्रति उनमें उत्साह क्यों जागा, सिवाय इसके कि यह विचार उन्हें दक्षिण अफ्रीका में आया। उन्होंने ब्रह्मचर्य के व्रत की ओर कदम बढ़ाया (यद्यपि इस शब्द का व्यापक आध्यात्मिक अर्थ है, सामान्यतः इसका प्रयोग ब्रह्मचर्य के लिए किया जाता है)। उनका मानना था कि इस संबंध में वे रायचंदभाई से हुए संवाद से प्रभावित थे, जो एक जैन व्यापारी थे और आध्यात्मिक प्रवृत्ति के थे। उनसे उनकी मुलाकात लंदन से भारत लौटने के बाद काठियावाड़ में हुई थी और वे उनके साथ पत्र व्यवहार करते थे। दक्षिण अफ्रीका से गांधी के पत्रों में उन आध्यात्मिक उलझनों की झलक मिलती है जिनका वे सामना कर रहे थे: 'आत्मा क्या है? क्या यह कर्म करती है? क्या भूतकाल के कर्म इसकी प्रगति में बाधक हैं या नहीं?' वे जानना चाहते थे। 'क्या किसी व्यक्ति के लिए जीवित रहते हुए यह निश्चित रूप से जानना संभव है कि उसे मोक्ष प्राप्त होगा या नहीं?' 37
उन्होंने किसी विशेष बातचीत का ज़िक्र नहीं किया जिसमें वैवाहिक पवित्रता का मुद्दा उठा हो, बल्कि उन्होंने अपनी पत्नी के साथ अपने रिश्ते पर विचार किया, मानो 'वासना' की निंदा को पहले से ही समीकरण का

हिस्सा मान लिया गया हो। उन्होंने पूछा, 'क्या मेरी वफ़ादारी अपनी पत्नी को अपनी वासना का साधन बनाने में थी? जब तक मैं वासना का गुलाम था, मेरी वफ़ादारी का कोई मूल्य नहीं था।' इस समय कस्तूरबा की राय नहीं ली गई; गांधीजी कहते हैं, 'वह कभी भी प्रलोभन देने वाली नहीं थीं।' उन्होंने यौन संबंध में कोई विशेष रुचि नहीं दिखाई थी और उन्होंने ऐसा कोई संकेत नहीं दिया कि उन्होंने उन्हें प्रसन्न करने का कोई प्रयास किया हो। वे अलग-अलग पलंगों पर सोने लगे और गांधीजी काम से थक जाने के बाद ही बिस्तर पर जाते थे। फिर भी वे अपने द्वारा निर्धारित आत्म-संयम को बनाए रखने में असफल रहे और कई वर्षों तक ब्रह्मचर्य का व्रत नहीं लिया।
तीस साल बाद जब वे इन विचारों पर चर्चा कर रहे थे, तब उन्होंने एक आध्यात्मिक हठधर्मिता प्रकट की: ‘यह मानना घोर अज्ञानता है कि यौन क्रिया सोने या खाने जैसी एक स्वतंत्र और आवश्यक क्रिया है। संसार का अस्तित्व प्रजनन पर निर्भर करता है, और चूंकि संसार ईश्वर का क्रीड़ास्थल और उसकी महिमा का प्रतिबिंब है, इसलिए संसार के सुनियोजित विकास के लिए प्रजनन क्रिया को नियंत्रित किया जाना चाहिए।’ 38 यह विचित्र धारणा कि यौन नियंत्रण संसार के कामकाज को प्रभावित करता है, 1890 के दशक के उत्तरार्ध में दक्षिण अफ्रीका में यौन त्याग के इन पहले प्रयासों में निहित थी; इसका विचित्र चरम 1947 में भारत में देखने को मिला। गांधी द्वारा अपनी तीव्र यौन इच्छा को नियंत्रित करने और दूसरों में यौन अभिव्यक्ति की निंदा करने के प्रयासों ने उनकी राजनीतिक गतिविधियों को बदनाम कर दिया।
बोअर युद्धों के कारण दक्षिणी अफ्रीका में आकर बसे दो श्वेत कबीलों के बीच संघर्ष में निहित थे, जिन्होंने उस क्षेत्र के पूर्ववर्ती शासक ज़ुलू लोगों को विस्थापित कर दिया था। ये कबीले थे बोअर, जो डच मूल के थे और अपनी स्वतंत्रता के प्रति बेहद सजग थे, और ब्रिटिश, जिनकी वफादारी अपने राजशाही के प्रति थी। ट्रांसवाल के राष्ट्रपति पॉल क्रूगर द्वारा बोअर क्षेत्र में सोने की खोज से आकर्षित होकर आए नए प्रवासियों को राजनीतिक अधिकार देने से संघर्ष और भी बढ़ गया। मुख्य रूप से ब्रिटिश श्वेत प्रवासियों को काम करने की अनुमति तो दी गई, लेकिन उन पर भारी कर लगाया गया; उन्हें मताधिकार से भी वंचित कर दिया गया, जो निवास संबंधी योग्यता पर आधारित था और जिसे लगातार इतना कठिन बनाया गया कि वह उनकी पहुँच से बाहर हो गया। इस प्रकार क्रूगर ने नस्लीय राज्य को और विभाजित करने का

प्रयास किया, इसे डच मूल के और अफ़्रीकी भाषा बोलने वाले पसंदीदा श्वेतों और अंग्रेज़ी बोलने वाले ब्रिटिश श्वेतों के बीच बाँट दिया।
क्रूगर की सेनाओं ने सितंबर 1899 में केप कॉलोनी और नेटाल पर हमला किया। गांधीजी बोअर्स के प्रति व्यक्तिगत सहानुभूति रखते थे, क्योंकि वे उनकी स्वतंत्र भावना का सम्मान करते थे, लेकिन उन्होंने कई कारणों से अंग्रेजों का साथ दिया। उन्हें बोअर्स से सच्चा स्नेह था और वे उनके सामान्यतः सौम्य प्रभाव में विश्वास रखते थे। अन्याय के उदाहरणों के बावजूद, कानून का शासन और सामान्य शिष्टाचार में विश्वास साम्राज्यवादियों के स्वयं के प्रति दृष्टिकोण और साम्राज्य के निर्माण और शासन के उनके मिशन का अभिन्न अंग थे। अंग्रेजों के साथ, वे निष्पक्षता के एक सामान्य मानक का सहारा ले सकते थे। उन्हें यह भी लगता था कि एक ब्रिटिश नागरिक के रूप में अधिकारों की मांग करने में युद्ध के समय दायित्व शामिल होते हैं, और उन दायित्वों को स्वीकार करने से दक्षिण अफ्रीका में रहने का भारतीयों का अधिकार मजबूत होता है। इसके अलावा, उनका मानना था कि भारत ब्रिटिश साम्राज्य के भीतर स्वतंत्रता प्राप्त कर सकता है, इसलिए अपने लोगों के प्रति मैत्रीपूर्ण संबंध बनाए रखना उनका कर्तव्य था; बोअर्स भारत के संबंध में कुछ भी नहीं दे सकते थे, सिवाय इसके कि वे अपनी भूमि में भारतीयों के साथ बेहतर व्यवहार करें, और उन्होंने ऐसा करने की भी कोई इच्छा नहीं दिखाई थी।
युद्धकाल में ब्रिटिश हितों की सेवा करने के पीछे गांधीजी का एक और
कारण था: आम धारणा यह थी कि भारतीय कायर होते हैं और जोखिम नहीं उठाते या अपने तात्कालिक स्वार्थ से आगे नहीं सोचते। गांधीजी ने इस धारणा को चुनौती देने का निश्चय किया और इसलिए उन्होंने भारतीय समुदाय से भर्ती किए गए लोगों से एक एम्बुलेंस कोर का गठन किया और स्वयंसेवकों के लिए नर्सिंग प्रशिक्षण की व्यवस्था की। दादा अब्दुल्ला कंपनी के वकील फ्रेडरिक लॉटन और नेटाल के अटॉर्नी जनरल हैरी एस्कोम्बे दोनों ने इस योजना का समर्थन किया, लेकिन नेटाल सरकार ने, हालांकि आभारी थी, गांधीजी को सूचित किया कि उसे उनकी सहायता की कोई आवश्यकता नहीं है।
शुरुआती महीनों में ही युद्ध अंग्रेजों के खिलाफ चला गया, और जल्द ही यह महसूस किया गया कि गांधी की टुकड़ी बहुत उपयोगी साबित होगी। उन्होंने चालीस नेताओं के नेतृत्व में लगभग ग्यारह सौ सैनिकों को इकट्ठा किया था,

जिनमें वे स्वयं सार्जेंट-मेजर के पद पर थे। ये सैनिक हिंदू, मुस्लिम और ईसाई समुदायों से थे और इनमें स्वतंत्र और अनुबंधित दोनों प्रकार के सैनिक शामिल थे (अनुबंधित सैनिक अपने मालिकों की कृपा से आए थे)। उनसे गोलीबारी के बीच काम करने की उम्मीद नहीं थी, लेकिन 1900 में स्पियोन कॉप की भीषण लड़ाई के दौरान उन्हें युद्धक्षेत्र से घायल अंग्रेजों को लाने का काम सौंपा गया और इस तरह उन्होंने गोलीबारी के बीच काम किया। वे घायलों को स्ट्रेचर पर उठाकर प्रतिदिन पच्चीस मील तक पैदल चलते थे। भारतीय व्यापारियों, जो नेटाल इंडियन कांग्रेस के मुख्य आधार थे, ने नागरिक के रूप में अपनी योग्यता साबित करने का अवसर पहचाना और टुकड़ी के समर्थन में और घायलों को बांटने के लिए उपहार खरीदने के लिए धन दान किया।
दक्षिण अफ्रीका में जन्मी ब्रिटिश पत्रकार वेरे स्टेंट ने स्पियोन
कॉप से सड़क पर स्ट्रेचर उठाने वालों को देखने की घटना को याद किया।
रात भर के अथक परिश्रम के बाद, जिसने बड़े-बड़े आदमियों को भी
चूर-चूर कर दिया था, मेरी मुलाकात गांधी जी से सुबह-सुबह सड़क
किनारे बैठकर सेना का बिस्कुट खाते हुए हुई। जनरल बुलर की सेना
का हर जवान उदास और निराश था, और हर किसी को कोस रहा था। लेकिन
गांधी जी शांत और संयमित थे, उनकी बातचीत हंसमुख और आत्मविश्वास
से भरी थी, और उनकी नज़रें दयालु थीं। उन्होंने एक नेक काम
किया... मैंने उन्हें और उनकी छोटी, अनुशासनहीन टुकड़ी को नेटाल
अभियान के दौरान कई युद्धक्षेत्रों में देखा। जब भी मदद की
ज़रूरत होती, वे वहाँ मौजूद होते थे। उनकी निडरता और साहस ने
उन्हें कई जानें गंवाने पर मजबूर किया।
यह अंतिम टिप्पणी पत्रकारिता की एक अलंकरण है: गांधी जी ने विशेष रूप से कहा है कि उनके किसी भी सैनिक को गोली नहीं लगी और युद्ध में भारतीयों को 'लगभग कोई जानमाल का नुकसान नहीं हुआ'। 39
छह सप्ताह बाद, जब युद्ध का रुख बदल गया और कमांडरों ने आगे कोई हमला करने के बजाय अतिरिक्त सैनिकों के आने का इंतजार करने का फैसला किया, तो इस कोर को भंग कर दिया गया। गांधीजी को ब्रिटिश साम्राज्य युद्ध पदक से सम्मानित किया गया और कोर का नाम वीरता पुरस्कार सूची में शामिल किया गया। इस आधिकारिक मान्यता और सैनिकों द्वारा भारतीय स्वयंसेवकों की सराहना ने गांधीजी को यह विश्वास दिलाया कि भारतीय समुदाय के लिए बेहतर

भविष्य का दौर शुरू हो गया है। जब ब्रिटिश विजय सुनिश्चित हो गई (असाधारण क्रूरता से लड़े गए युद्ध के बाद), तो ट्रांसवाल और ऑरेंज फ्री स्टेट के पूर्व बोअर गणराज्यों से अपने कानूनों को उदार बनाने की उम्मीद की गई, जिससे भारतीयों के लिए परिस्थितियाँ आसान हो गईं।
इस प्रकार युद्ध के बाद गांधीजी को लगा कि वे दक्षिण अफ्रीका छोड़ सकते हैं क्योंकि भारतीयों को अब उनकी सेवाओं की आवश्यकता नहीं थी और साथ ही - गांधीजी के विशिष्ट तर्क के अनुसार - क्योंकि वे दक्षिण अफ्रीका में बहुत सफल हो रहे थे और आध्यात्मिक मार्ग का अनुसरण नहीं कर रहे थे। नेटाल में उनके समर्थकों ने विदाई सभाओं में उनके आसन्न प्रस्थान पर शोक व्यक्त किया, जहाँ उन्हें सोने, चांदी और हीरे के उपहारों से नवाजा गया। इससे गांधीजी के लिए एक नैतिक दुविधा उत्पन्न हुई, क्योंकि उन्होंने हमेशा तर्क दिया था कि उन्होंने समुदाय के लिए बिना किसी पारिश्रमिक के काम किया। इन उपहारों के बाद उन्हें रात भर नींद नहीं आई। उन्होंने पारिवारिक घर में जीवन को सरल बना दिया था, आभूषणों और अन्य गैर-जरूरी चीजों को त्याग दिया था, तो अब वे सोने की घड़ी या हीरे की अंगूठी कैसे पहन सकते थे? वे स्वयं उपहारों को दान करने का निर्णय ले सकते थे, लेकिन वे कस्तूरबा को कैसे मनाते, जिन्हें अन्य चीजों के साथ-साथ सोने का हार भी दिया गया था? गांधी जी, जो हमेशा से एक चतुर वकील थे, ने सबसे पहले बच्चों को अपने विचारों में ढालने की कोशिश की। उन्होंने तेरह वर्षीय हरिलाल और गोकलदास तथा नौ वर्षीय मनीलाल को कस्तूरबा को मनाने के लिए लगाया। हालांकि, उनकी पत्नी उनकी चालों को जानती थीं और उन्होंने कहा: “आपको शायद [उपहारों की] आवश्यकता न हो। आपके बच्चों को भी शायद इनकी आवश्यकता न हो। बहला-फुसलाकर वे आपकी धुन पर नाचेंगे। मैं समझ सकती हूँ कि आप मुझे इन्हें पहनने की अनुमति नहीं दे रहे हैं। लेकिन मेरी बहुओं का क्या? उन्हें तो इनकी आवश्यकता अवश्य होगी। और कौन जानता है कि कल क्या होगा? मैं प्रेमपूर्वक दिए गए उपहारों को किसी को भी देने वाली अंतिम व्यक्ति होऊंगी।”
गांधी ने जवाब दिया कि जब बच्चों की शादी का समय आएगा, तब तक वे बड़े हो चुके होंगे और अपना ख्याल खुद रख सकेंगे। अगर उनकी दुल्हनों को गहनों की ज़रूरत हो, तो वह तब उनसे दोबारा पूछ सकती हैं। इस पर वह भड़क उठीं: 'आपसे पूछूँ? मैं आपको अब तक जान चुकी हूँ। आपने मेरे गहने छीन लिए, आपने मुझे उनके साथ चैन से रहने नहीं दिया। ज़रा सोचिए, आप बहुओं के लिए गहने दिलाने

की पेशकश कर रहे हैं! आप जो आज से मेरे बेटों को साधु बनाना चाहते हैं! नहीं, गहने वापस नहीं किए जाएँगे।' जब उन्होंने पूछा कि गांधी को उन्हें दिया गया हार लेने का क्या अधिकार है और उन्होंने जवाब दिया कि यह उनके काम की वजह से दिया गया था, तो उन्होंने उन्हें याद दिलाया कि उन्होंने उनके लिए, खासकर उन लोगों के लिए कितना काम किया था जिन्हें वह घर लाते थे: 'आपने हर किसी को मुझ पर थोपा, मुझे फूट-फूटकर रोने पर मजबूर किया, और मैंने उनके लिए गुलामी की।'
अंततः उन्होंने किसी तरह उनसे सहमति प्राप्त कर ली, गांधी ने लिखा।
घटना का उनका विवरण (जो एकमात्र उपलब्ध विवरण है) आत्म-आलोचना से प्रेरित नहीं है: वे कहते हैं कि उन्हें उपहार लौटाने के कदम पर कभी पछतावा नहीं हुआ (वास्तव में उन्हें सार्वजनिक कार्यों के लिए एक ट्रस्ट फंड में रखा गया था)। बेशक, कस्तूरबा के कहने से कोई फर्क नहीं पड़ता: गांधी ने न केवल अपना मन बना लिया था, बल्कि उन्होंने अपने बच्चों से बात करने से पहले ही आभूषण दान करने का ट्रस्ट विलेख तैयार कर लिया था।
यह घटना जीवनी की दृष्टि से तो रोचक है ही, साथ ही ऐतिहासिक दृष्टि से
भी महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे पता चलता है कि गांधी जी अपने निर्णयों तक कैसे पहुँचे और उनसे बहस करने का कोई अर्थ नहीं था: उन्होंने शुरू से ही पूर्ण सत्यनिष्ठा का रुख अपनाया और किसी भी आपत्ति को आध्यात्मिक दृढ़ संकल्प के बल पर पार पाने योग्य चुनौतियों के रूप में देखा। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नेताओं और ब्रिटिश सरकार के प्रतिनिधियों ने बाद में उनके इस दृष्टिकोण को कुछ आश्चर्य के साथ देखा।
जब उपहारों के त्याग की बात सामने आई, तो इससे निश्चित रूप से दक्षिण अफ्रीका में गांधीजी का कद बढ़ा और उससे भी अधिक महत्वपूर्ण रूप से भारत में, जहां वे जल्द ही भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में अपनी छाप छोड़ने और खुद को भारतीय सार्वजनिक जीवन में सबसे आगे लाने का इरादा रखते थे।
परिवार अक्टूबर 1901 में बंबई के लिए रवाना हुआ।

4

चुनौती और पवित्रता उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में भारतीय समाज में उभर रहे मध्यम वर्ग को राजनीतिक प्रतिनिधित्व देने के लिए भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना की गई थी। इसकी शुरुआत एलन ह्यूम ने की थी, जो एक ब्रिटिश धर्मशास्त्री थे और भारतीय सिविल सेवा में कार्यरत थे। उन्होंने तब तक इस्तीफा दिया जब तक कि उन्हें पदोन्नति से वंचित नहीं किया गया क्योंकि वे बहुत अधिक स्वदेशी समर्थक थे। उनके सुझाव पर 1885 में बंबई में भारतीयों की एक बैठक आयोजित की गई थी, जिसकी शुरुआत ब्रिटेन के प्रति निष्ठा की घोषणा और इस कथन से हुई कि उनका उद्देश्य राजनीतिक स्वतंत्रता नहीं बल्कि भारतीय पेशेवरों के लिए बेहतर अवसर प्राप्त करना है। कांग्रेस ने शीघ्र ही शिक्षित भारतीयों की आकांक्षाओं को अपना लिया और दादाभाई नौरोजी के भारतीय राष्ट्रीय संघ जैसे संगठनों को अपने में समाहित कर लिया। इसके बाद कांग्रेस के वकील और प्रशासक सरकार में भूमिका प्राप्त करने के तरीकों पर चर्चा करने के लिए साल में एक बार मिलते थे। हालाँकि कांग्रेस का उद्देश्य सभी शिक्षित भारतीयों का प्रतिनिधित्व करना था, फिर भी इसकी स्थापना से ही इसमें मतभेद स्पष्ट थे। मुस्लिम संगठन में हिंदू बहुमत होने के कारण इसे संदेह की दृष्टि से देखते थे, भले ही इसमें मोहम्मद अली जिन्ना जैसे मुस्लिम कार्यकर्ता भी शामिल थे। दूसरी ओर, रूढ़िवादी हिंदू कांग्रेस के पश्चिमीकरण के प्रति संशय में थे – वे एक ऐसे हिंदूवादी विमर्श को प्राथमिकता देते थे जो उनकी परंपरा के संरक्षण को राजनीतिक जीवन के केंद्र में रखता हो। अपने प्रारंभिक वर्षों में कांग्रेस आम जनता के लिए भी कोई खास रुचिकर नहीं थी; इसने गरीबी और स्वास्थ्य एवं शिक्षा जैसी आवश्यक सेवाओं की कमी जैसे मुद्दों को संबोधित करने का कोई प्रयास नहीं किया। वर्षों तक गांधी जी को इन सभी मुद्दों से जूझना पड़ा और उन्होंने कांग्रेस की गतिविधियों में तीन हित समूहों को एकजुट करने का प्रयास किया: भारत की आम जनता, जिनकी मुख्य चिंता दैनिक जीवन यापन थी, मुस्लिम कार्यकर्ता और रूढ़िवादी हिंदू।
राजकोट स्थित पारिवारिक घर में अपनी पत्नी और बच्चों को ठहराने के बाद, गांधी जी कलकत्ता में अपनी पहली कांग्रेस सभा के लिए रवाना हुए। उन्होंने

ट्रेन यात्रा का उपयोग दक्षिण अफ़्रीकी भारतीयों के हितों को आगे बढ़ाने वाले प्रस्ताव के समर्थन में यात्रा कर रहे प्रतिनिधियों से पैरवी करने के लिए किया। वहाँ मौजूद सामंती फ़िरोज़शाह मेहता ने उनसे कहा कि जब भारतीयों को अपने ही देश में अधिकार नहीं हैं, तो वे उपनिवेशों में उनके लिए कुछ नहीं कर सकते।
सम्मेलन स्थल पर गांधीजी ने हमेशा की तरह स्वच्छता व्यवस्था का निरीक्षण किया और हमेशा की तरह उन्हें बेहद खराब पाया। उन्होंने बैठक में मदद के लिए आए स्वयंसेवकों से शिकायत की, लेकिन उन्होंने कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई, क्योंकि वे ऐसे काम को केवल अछूतों के लायक समझते थे। गांधीजी ने एक झाड़ू मंगवाई और शौचालय साफ किया। बाद में उन्होंने स्वयंसेवकों को उस शयनकक्ष के बाहर बरामदे से मल साफ करने में मदद करने के लिए आमंत्रित किया, जहाँ प्रतिनिधि रात में शौच कर चुके थे। उन्होंने मना कर दिया, इसलिए गांधीजी ने खुद एक झाड़ू ढूंढी और सफाई की।
गांधी जी ने कांग्रेस के प्रमुख सदस्यों से मिलने और तिलक और गोखले
जैसे कुछ लोगों से, जिनसे वे पहले मिल चुके थे, फिर से जान-पहचान मजबूत करने का विशेष प्रयास किया। बाल गंगाधर तिलक, जिन्हें 'लोकमान्य' (जनता का प्रिय) के नाम से भी जाना जाता था, के लिए पश्चिमी संस्थाएँ एक लक्ष्य की प्राप्ति का साधन थीं - स्वतंत्रता और हिंदू राष्ट्रीय चरित्र की पुनः पुष्टि। तिलक ने सक्रिय राजनीति में तब प्रवेश किया जब अंग्रेजों ने 1891 में सहमति की आयु बढ़ाकर बारह कर दी, एक बालवधू की यौन उत्पीड़न से मृत्यु के बाद; धार्मिक प्रथाओं में इस तरह का हस्तक्षेप बर्दाश्त नहीं किया जा सकता था। बाद में उन्होंने भगवद गीता के उद्धरणों के साथ भड़काऊ लेख प्रकाशित किए, जिसमें कहा गया था कि जो कोई निस्वार्थ भाव से किसी अत्याचारी को मारता है, उस पर कोई दोष नहीं लगाया जा सकता, जिसके बाद एक ब्रिटिश प्रशासक की हत्या कर दी गई। इस लेख के बाद उन्हें हत्या के लिए उकसाने के आरोप में जेल की सजा हुई। गांधी जी तिलक की प्रशंसा करते थे, लेकिन उनसे दूरी बनाए रखते थे।
गांधी के दृष्टिकोण के प्रति कहीं अधिक अनुकूल गोपाल कृष्ण गोखले थे,
जो उदारवादियों के प्रमुख थे। वे पश्चिम के साधनों और विधियों की प्रशंसा करते थे और ब्रिटिश संरचनाओं के भीतर काम करते थे, हालांकि उनके लिए नहीं। उन्होंने सामाजिक न्याय के लिए अभियान चलाया (जैसे कि उनके संगठन

'सर्वेंट्स ऑफ इंडिया सोसाइटी' के माध्यम से - यह कांग्रेस की प्राथमिकता नहीं थी) और एक भारतीय राष्ट्रवादी की तुलना में ग्लैडस्टोनियन उदारवादी की तरह अधिक कार्य किया। वास्तव में, उन्होंने अपने दृष्टिकोण का अधिकांश भाग ग्लैडस्टोन के दृष्टिकोण पर आधारित किया। गांधी उन्हें अपना आदर्श मानते थे, उन्हें 'मेरे राजनीतिक गुरु' कहते थे और उन्हें एक राजनीतिक पिता तुल्य व्यक्ति के रूप में मानते थे, हालांकि गोखले उनसे केवल तीन वर्ष बड़े थे।
गांधी का संवैधानिक लोकतंत्र का पहला अनुभव सकारात्मक नहीं था।
प्रमुख प्रस्तावों पर लंबे-लंबे भाषण हुए, जिनमें से हर एक को किसी न किसी जाने-माने नेता का समर्थन प्राप्त था। अंतिम प्रस्ताव, जिन पर विषय समिति ने देर रात बैठक की, जब सभी लोग बैठक से निकलना चाहते थे, बिना किसी गंभीर विचार-विमर्श के जल्दबाजी में पारित कर दिए गए। दक्षिण अफ़्रीकी भारतीयों के समर्थन से संबंधित गांधी के प्रस्ताव को गोखले का समर्थन प्राप्त था, जिन्होंने बैठक लगभग समाप्त होने पर गांधी के पक्ष में बात की। प्रस्ताव के महत्व के किसी वस्तुनिष्ठ आकलन के बजाय, केवल उनके इस समर्थन के आधार पर, उन्हें पाँच मिनट बोलने की अनुमति दी गई। उन्होंने बोलना शुरू किया, लेकिन इस अपरिचित परिवेश में दक्षिण अफ़्रीका में सार्वजनिक भाषण देने की जो कुशलता उन्होंने हासिल की थी, वह उनका साथ नहीं दे पाई; उन्होंने प्रस्ताव पढ़ा और अपने प्रारंभिक भाषण शुरू किए, लेकिन तमाम कोशिशों के बावजूद उन्होंने प्रक्रिया का अध्ययन करने का समय नहीं निकाला था। जब घंटी बजी जिससे संकेत मिला कि उनके तीन मिनट पूरे हो गए हैं, तो उन्होंने सोचा कि उनका समय समाप्त हो गया है और वे बैठ गए। उन्हें दुख हुआ क्योंकि उन्होंने महत्वपूर्ण प्रतिनिधियों को आधे घंटे तक बोलते देखा था और उनके लिए कोई घंटी नहीं बजी थी। उनका प्रस्ताव स्वीकार कर लिया गया, लेकिन कोई भी प्रस्ताव अस्वीकार नहीं किया गया, इसलिए यह एक सीमित सफलता थी। गांधी और कांग्रेस दोनों को ही एक सफल राजनीतिक सभा आयोजित करने के बारे में बहुत कुछ सीखना था। उन्होंने ट्रांसवाल और ऑरेंज मुक्त राज्य में भारतीयों की रक्षा के लिए कार्रवाई न करने का आरोप लगाकर नेतृत्व को भी प्रभावित नहीं किया, और यह निष्कर्ष निकाला कि 'यदि नेटाल में कोई कदम नहीं उठाया गया होता, तो आज वहां की स्थिति इससे कहीं अधिक खराब होती।' 2 दूसरे शब्दों में, यदि गांधी ने नेटाल में भारतीयों को

संगठित नहीं किया होता, तो उनकी स्थिति बोअर गणराज्यों जैसी ही खराब होती, जो कि एक संदिग्ध दावा था।
गांधी जी कांग्रेस में अपनी छाप छोड़ने की उम्मीद कर रहे थे, लेकिन राष्ट्रीय राजनीति में उनका यह पहला प्रयास उत्साहजनक नहीं रहा। कांग्रेस अधिवेशन के बाद कलकत्ता में वे गोखले के साथ ठहरे, जिन्होंने उन्हें महत्वपूर्ण लोगों से मिलवाया और उनकी आत्मनिर्भरता की आदतों की प्रशंसा की। गांधी जी ने साहस दिखाते हुए अपने गुरु को जीवनशैली के बारे में सलाह दी और सादा जीवन जीने के गुण बताए, जैसे कि घोड़ागाड़ी या ट्रेन के बजाय पैदल चलना। गोखले ने उनकी बात ध्यान से सुनी, लेकिन उन्होंने अपनी जीवनशैली में कोई बदलाव नहीं किया।
कलकत्ता में काली के मंदिर में पशु बलि देखकर गांधीजी ने मन ही मन सोचा कि ‘एक मेमने का जीवन मनुष्य के जीवन से कम कीमती नहीं है’, यह विश्वास वे अपने गृह नगर गुजरात के जैन धर्मावलंबियों के साथ साझा करते थे। 3 उन्होंने हिंदू सुधारवादी संगठन ब्रह्म समाज के बारे में पढ़ा था और अब वे उसके कुछ सदस्यों से मिले। बाद में, वे बनारस (वाराणसी) गए, जहाँ पवित्र स्थलों की यात्रा के दौरान हमेशा की तरह वे गंदगी देखकर अचंभित हुए। वहाँ रहते हुए, उन्होंने थियोसोफिस्टों की नेता एनी बेसेंट से मुलाकात की, इस प्रकार उस धार्मिक आंदोलन से अपना संपर्क बनाए रखा जिसने उनके अपने विचारों को प्रभावित किया था।
उन्होंने गोखले को छोड़कर कलकत्ता से राजकोट स्थित अपने घर तक भारत की यात्रा की, जिसके दौरान उन्होंने - अपने विशिष्ट गांधीवादी अंदाज़ में - ट्रेनों में तृतीय श्रेणी में यात्रा करना चुना। उनके पास गोखले द्वारा दिया गया एक भोजन का डिब्बा, ठंड से बचने के लिए एक लंबा कोट, एक कैनवास का थैला और एक पानी का जग था; उस समय वे अभी भी पारसी कोट और पतलून पहने हुए थे। उन्होंने यूरोप में तृतीय और प्रथम श्रेणी दोनों में यात्रा की थी और बुनियादी सुविधाओं में उन्हें कोई खास अंतर नहीं मिला था। भारत में गांधीजी तृतीय श्रेणी के यात्रियों के आराम के प्रति रेलवे अधिकारियों की उदासीनता और यात्रियों की गंदी और असभ्य आदतों से स्तब्ध थे, जिनमें धूम्रपान करना, थूकना और फर्श पर कूड़ा फेंकना शामिल था। स्थिति में सुधार लाने के लिए गांधीजी का सुझाव था कि 'शिक्षित पुरुषों को तृतीय

श्रेणी में यात्रा करने का प्रयास करना चाहिए और लोगों की आदतों में सुधार लाना चाहिए'।
गोखले ने गांधीजी को अपने गृह क्षेत्र में बसने, बैरिस्टर के रूप में काम करने और कांग्रेस के कार्यों में योगदान देने की सलाह दी थी। वे फरवरी 1902 में राजकोट लौट आए और फिर बॉम्बे में बस गए, जो राजनीतिक गतिविधियों के लिए एक बेहतर स्थान था। वकालत फिर से शुरू करने को लेकर वे संशय में थे, क्योंकि उन्हें अपनी पिछली असफलताओं की याद थी और वकालत की परंपराओं से उन्हें कोई लगाव नहीं था। लेकिन उन्होंने पाया कि दक्षिण अफ्रीका में उनके अनुभव और भारतीय साक्ष्य अधिनियम के प्रति उनके गहन अध्ययन ने उन्हें एक साधारण व्यक्ति से एक अच्छा वकील बना दिया था।
जीविका कमाने की ज़िम्मेदारी के बिना वे कभी वकालत नहीं करते; लेकिन उन्होंने चिकित्सा का अभ्यास किया – अपने तरीके से – केवल इसलिए क्योंकि उन्हें इसमें आनंद आता था और वे इसका महत्व तुरंत समझ गए थे। भारत की इस यात्रा के दौरान दस वर्षीय मनीलाल निमोनिया और टाइफाइड दोनों से पीड़ित हो गए। रोगी को आराम देने और प्रतिरक्षा प्रणाली को संक्रमण से लड़ने के लिए पर्याप्त मजबूत बनाने के अलावा कोई प्रभावी इलाज नहीं था। एक पारसी डॉक्टर ने गांधीजी को बताया कि उनके बेटे को अंडे और चिकन शोरबा की आवश्यकता है। गांधीजी ने डॉक्टर से कहा कि चूंकि उनका परिवार पूरी तरह शाकाहारी है, इसलिए उन्हें ये दोनों चीजें देना संभव नहीं है। डॉक्टर ने उन्हें अपने बेटे के प्रति इतना कठोर न होने की सलाह दी, लेकिन उन्हें लगा कि ऐसे मामलों में ही किसी व्यक्ति के विश्वास की सच्ची परीक्षा होती है। गांधीजी ने स्वयं मनीलाल को जर्मन लेखक लुई कुहने की रचनाओं में वर्णित जल चिकित्सा पद्धति से उपचार देने का निर्णय लिया, जिन्होंने रोग को शरीर में 'दूषित पदार्थ' के प्रवेश का परिणाम माना था। उपचार में जल स्नान, रोगी को गीली चादरों में लपेटना और स्नान से संबंधित अन्य प्रथाओं द्वारा इस पदार्थ को शरीर से बाहर निकालना शामिल था। गांधी ने इसमें उपवास को भी जोड़ा, जिसका ‘प्रबंधन भी संभव हो सकता है’, इसलिए मनीलाल को संतरे के रस और पानी के साथ-साथ तीन-तीन मिनट तक बार-बार कूल्हे धोने की सलाह दी गई। 5 गांधी को सचमुच इस बात का डर सता रहा था कि कहीं वे अपने बच्चों पर अपनी ही सनक न थोप रहे हों, लेकिन बच्चे का बुखार उतर गया और मनीलाल स्वस्थ हो गया, जिससे ‘प्राकृतिक चिकित्सा’ में गांधी का विश्वास और भी पुख्ता हो गया।

उन्होंने आठ वर्षीय रामदास की टूटी हुई बांह का इलाज मिट्टी की पट्टी से करके अपने उपचारों की उपचारात्मक क्षमता को और भी पुष्ट किया। इसके बाद उन्होंने विभिन्न रोगों के उपचार के लिए मिट्टी, पानी और उपवास का प्रयोग किया।
भारत में गांधीजी की वकालत जल्द ही उनकी आजीविका का साधन बन गई; विशेष रूप से उनके दक्षिण अफ्रीकी मुवक्किल उनसे लगातार संपर्क में रहे और उन्हें उपमहाद्वीप में किए जाने वाले काम उपलब्ध कराते रहे। दक्षिण अफ्रीका छोड़ते समय गांधीजी ने आवश्यकता पड़ने पर वापस लौटने का वादा किया था। जैसे ही वे वहाँ व्यवस्थित हो रहे थे, उन्हें पता चला कि बोअर युद्ध के बाद घावों को भरने के प्रयासों के तहत ब्रिटिश उपनिवेश सचिव जोसेफ चेम्बरलेन दक्षिण अफ्रीका का दौरा कर रहे हैं। भारतीय समुदाय चेम्बरलेन के समक्ष अपना मामला प्रस्तुत करना चाहता था और उन्हें लगा कि इसके लिए उन्हें गांधीजी की सहायता की आवश्यकता है।
इसलिए गांधी ने नवंबर 1902 में अपने परिवार को छोड़कर जहाज से
प्रस्थान किया, यह उम्मीद करते हुए कि वे एक वर्ष से भी कम समय के लिए दूर रहेंगे। युद्ध इस उम्मीद के साथ समाप्त हुआ था कि चारों उपनिवेश एक सरकार के अधीन एकजुट हो जाएंगे; लेकिन वास्तविकता यह थी कि एकीकरण की दिशा में कोई त्वरित प्रगति नहीं हुई, बल्कि प्रत्येक उपनिवेश की अपनी विधायिका बनी रही और बोअर्स ने ब्रिटिश केंद्रीय सरकार से कोई संबंध रखने से इनकार कर दिया। यही वह स्थिति थी जिसका सामना चैंबरलेन को करना पड़ा। 6
चूंकि बोअर युद्ध कथित तौर पर दक्षिण अफ्रीका में न्यायपूर्ण शासन को बढ़ावा देने के लिए लड़ा गया था, इसलिए भारतीयों को लगा कि उन्हें निष्पक्ष सुनवाई का उचित अवसर मिलेगा। इस बात को लेकर काफी भ्रम था, लेकिन कई यूरोपीय और भारतीय मानते थे कि बोअर की हार के साथ ही भारत-विरोधी अध्यादेश भी समाप्त हो गए थे – निश्चित रूप से, ब्रिटिश-विरोधी कानूनों को निरस्त कर दिया गया था। हालांकि, चैंबरलेन ने गांधी के नेटाल प्रतिनिधिमंडल का ठंडा स्वागत किया। सरकार ने भारतीयों की स्थिति पर कोई नीतिगत बयान नहीं दिया था: 'मूल निवासियों' की स्थिति को सर्वोपरि माना जाता था। चैंबरलेन ने स्वीकार किया कि भारतीयों की शिकायतें वास्तविक प्रतीत होती हैं, लेकिन उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि स्वशासी उपनिवेशों पर शाही सरकार का बहुत कम नियंत्रण था, और यदि भारतीय यूरोपीय

प्रभुत्व वाले क्षेत्र में रहना चाहते थे, तो उन्हें अपने तत्काल आकाओं को प्रसन्न करने का प्रयास करना चाहिए।
नेटाल में इस तरह का प्रतिनिधित्व करने के बाद, गांधी ने ट्रांसवाल जाने का इरादा किया, जहाँ बोअर अभी भी प्रमुख थे, ताकि उनके साथ होने वाले व्यवहार के बारे में भारतीयों की चिंताओं को वहाँ प्रस्तुत किया जा सके। लेकिन ट्रांसवाल जाने के लिए परमिट की आवश्यकता थी, और भारतीयों को इन्हें प्राप्त करना मुश्किल लग रहा था। गांधी ने अपने पुराने मित्र, पुलिस अधीक्षक अलेक्जेंडर से मदद मांगी, जिन्होंने उनके लिए एक पास प्राप्त कर दिया।
जब गांधी जी पहुंचे, तो 'एशियाई विभाग' उन्हें गिरफ्तार करने के लिए तैयार था – लेकिन जब उन्हें पता चला कि उनके पास परमिट है, तो वे भड़क उठे। सहायक औपनिवेशिक सचिव ने गांधी जी और अन्य प्रतिनिधियों से मुलाकात की और बड़े ही कठोर शब्दों में समझाया कि गांधी जी को चैंबरलेन से मिलने नहीं दिया जाएगा। अंततः, गांधी जी की जगह एक अन्य भारतीय बैरिस्टर को नियुक्त किया गया, लेकिन प्रिटोरिया में भी चैंबरलेन का रवैया नेटाल की तरह ही निराशाजनक था। यह एक ऐसा अनुभव था जिसने कई लोगों को इस क्षेत्र को छोड़कर वापस न लौटने के लिए प्रेरित किया। अपनी विशिष्ट प्रवृत्ति के अनुसार, खतरे का सामना करने के उनके साहस और लंबे संघर्ष में शामिल होने की उनकी तत्परता को देखते हुए, इस झटके ने गांधी जी को यह महसूस करने पर मजबूर कर दिया कि उन्हें दक्षिण अफ्रीका, विशेष रूप से ट्रांसवाल में ही रहना चाहिए, जहां उत्पीड़न सबसे अधिक था। उन्होंने जोहान्सबर्ग के कानूनी जिले में चार भारतीय क्लर्कों और एक स्कॉटिश सचिव के साथ वकालत शुरू की। जल्द ही उन्होंने ब्रिटिश इंडियन एसोसिएशन नामक एक पार्टी की स्थापना की। अफ्रीका में संघर्ष में पुनः शामिल होकर उन्होंने स्वयं को जनता के सेवक के रूप में प्रस्तुत किया, जो भारत में 'बड़ी' सेवा छोड़कर एक छोटे क्षेत्र में जा रहे थे जहां उनकी अधिक आवश्यकता थी। 7 दरअसल, भारत में सार्वजनिक कार्यों में उन्हें कोई खास सफलता नहीं मिली थी और दक्षिण अफ्रीका में उन्हें वे राजनीतिक और पेशेवर अवसर मिल रहे थे जो उन्हें उनके गृह देश में नहीं मिले थे।
दक्षिण अफ्रीका में उनका पहला राजनीतिक कार्य एशियाई विभाग को सुधारना था, जिसका संचालन ऐसे लोगों द्वारा किया जा रहा था जिन्हें

भारतीय उपमहाद्वीप में शासन का अनुभव प्राप्त था और जो उन लोगों के हितों का तिरस्कार करते थे जिनकी रक्षा करने का दायित्व उनका था; उनमें से कम से कम कुछ तो सक्रिय रूप से भ्रष्ट थे। यूरोपियों के लिए परमिट संबंधी प्रतिबंधों में ढील दिए जाने के बाद यह स्पष्ट हो गया कि भारतीयों और अन्य एशियाई लोगों, जैसे कि चीनियों को, अधिकारियों को रिश्वत देनी पड़ती थी, जिससे उन पर अनुचित बोझ पड़ता था। इसका यह भी अर्थ था कि ट्रांसवाल में यात्रा और काम करने के परमिट क्षेत्र की आवश्यकताओं के बजाय भुगतान करने की क्षमता के आधार पर दिए जाते थे।
गांधी ने रिश्वतखोरी के सबूत इकट्ठा किए और उन्हें पुलिस कमिश्नर के पास ले गए, जिन्होंने धैर्यपूर्वक उनकी बात सुनी – यह दूसरी बार था जब गांधी को दक्षिण अफ्रीका में कोई वरिष्ठ पुलिस अधिकारी न्यायप्रिय और निष्पक्ष लगा था। उन्होंने गांधी के गवाहों से पूछताछ की और सबूतों से संतुष्ट हुए, लेकिन इस बात पर खेद व्यक्त किया कि श्वेत जूरी द्वारा गैर-श्वेत लोगों के खिलाफ श्वेत अपराधी को दोषी ठहराना मुश्किल होता है। गांधी ने अपने सबूतों को और पुख्ता किया और मामले को दो अधिकारियों तक सीमित कर दिया, जिनके खिलाफ उनके पास अकाट्य सबूत थे, और उनके खिलाफ वारंट जारी किए गए। उनमें से एक फरार हो गया, लेकिन पुलिस कमिश्नर उसे वापस ले आए। उन पर मुकदमा चला, लेकिन सबूतों के बावजूद जूरी ने उन्हें बरी कर दिया। गांधी पूरी कानूनी व्यवस्था से निराश होते जा रहे थे, लेकिन इस मामले ने वास्तविक दुर्व्यवहारों की ओर ध्यान आकर्षित किया और अंततः दोनों अधिकारियों को उनके पदों से बर्खास्त कर दिया गया। ईमानदारी का महत्व फिर से स्थापित हुआ और भारतीय समुदाय को आश्वस्त किया गया। इसके अलावा, गांधी की स्थिति में काफी सुधार हुआ, जिससे उन्हें अधिक व्यवसाय प्राप्त हुआ।
गांधी जी अपने परिवार को फिर से दक्षिण अफ्रीका ले आए। उन्होंने दो कारणों से परिवार की व्यक्तिगत जिम्मेदारी महसूस की: वे अपने भाई को बताना चाहते थे कि वे अब उन्हें कोई पैसा नहीं भेजेंगे, और वे अपनी मृत्यु की स्थिति में परिवार की सुरक्षा के लिए पहले ली गई बीमा पॉलिसी को रद्द करने वाले थे। गांधी जी अपने परिवार के प्रति दायित्वों को लेकर आध्यात्मिक रूप से संघर्ष कर रहे थे। उन्होंने कुछ धर्मशास्त्रियों के साथ एक अध्ययन समूह बनाया था, जिसमें वे हिंदू धर्मग्रंथों का अनुवाद और

मूल रूप में अध्ययन करते थे (जैसा कि उन्होंने लंदन में रहते हुए किया था)। भगवद गीता अब उनके जीवन के गहन अध्ययन का मुख्य विषय बन गई। वे सुबह स्नान करते समय गीता के अंशों को याद करते थे और इस तरह तेरह अध्यायों को स्मृति में समाहित कर लिया। वे गीता को 'आचरण का अचूक मार्गदर्शक' मानने लगे। यह उनका दैनिक संदर्भ ग्रंथ बन गया। यह कोई असाधारण बात नहीं है, क्योंकि आध्यात्मिक प्रवृत्ति के लोग तोराह, न्यू टेस्टामेंट या कुरान के साथ भी ऐसा ही करते हैं। गांधी जी में जो बात अलग थी, वह यह थी कि वे धर्मग्रंथों से तब तक प्रश्न करते रहे जब तक कि उनसे उन्हें अपने लिए उपयुक्त उत्तर न मिल जाएं। उन्होंने पूछा, ‘कोई अपने सारे धन-संपत्ति से कैसे मुक्त हो सकता है? क्या पत्नी और बच्चे भी संपत्ति नहीं हैं?… क्या मुझे अपना सब कुछ त्यागकर उसका अनुसरण करना होगा?’ 8
इस निष्कर्ष से बचना मुश्किल है कि उनके परिवार को एक बोझ की तरह माना जाता था, जिसे आध्यात्मिक पूर्णता प्राप्त करने के लिए उन्हें त्यागना ही था। महान आध्यात्मिक नेता बनने का दावा करने वाले या बनने की चाह रखने वाले लोग अपने परिवार का त्याग करते देखे गए हैं: यीशु ने ऐसा किया, बुद्ध ने भी, हालांकि मोहम्मद ने ऐसा नहीं किया - उनके मिशन में उनकी पत्नी खदीजा ने सहायता और प्रोत्साहन दिया था।
गांधी जी की व्यावहारिक समस्या यह थी कि उनके भाई लक्ष्मीदास, परिवार
के मुखिया होने के नाते, गांधी जी की पत्नी और बच्चों की देखभाल कर रहे थे, जिसके लिए वे उन्हें पैसे भेजते थे। गांधी जी ने अब यह निश्चय किया कि ईश्वर उनकी देखभाल करेगा, इसलिए उन्होंने अपने भाई को, जिन्होंने उनकी पढ़ाई और शुरुआती संघर्षों में उनका साथ दिया था, पत्र लिखकर बताया कि उन्होंने अपनी सारी बचत उन्हें दे दी है और उन्हें इससे अधिक की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए, क्योंकि भविष्य की कमाई का उपयोग समुदाय के कल्याण के लिए किया जाएगा। लक्ष्मीदास को गहरा आहत हुआ और उन्हें लगा कि गांधी जी अपने परिवार की देखभाल करने के पवित्र कर्तव्य से मुकर रहे हैं। गांधी जी ने लक्ष्मीदास को 'आदरणीय महोदय' कहकर संबोधित करते हुए एक कठोर पत्र में लिखा कि पूरा समुदाय ही उनका परिवार है। यह उस उत्तर के बहुत समान है जो यीशु ने तब दिया था जब उन्हें बताया गया था कि वे अपनी माता और भाइयों को त्याग रहे हैं (मत्ती 12: 46-50), लेकिन गांधी जी ने इसका उल्लेख नहीं किया है। 9 इसी प्रकार, उन्होंने जीवन बीमा पॉलिसी उस क्षण में ली थी जिसे वे

कमजोरी का क्षण बताते हैं। अब उन्होंने इसे रद्द कर दिया, क्योंकि उन्हें लगा कि ऐसा करने से उनकी पत्नी और बच्चों की आत्मनिर्भरता छिन जाएगी और ईश्वर ही उनकी सहायता करेगा।
अपने परिवार के भविष्य को लेकर किया गया यह सौदा शायद गांधीजी के जीवन का सबसे बेईमानी भरा काम था। वे भली-भांति जानते थे कि उनकी मृत्यु के बाद उनकी पत्नी और बच्चों की देखभाल भगवान नहीं, बल्कि उनके भाई लक्ष्मीदास करेंगे, लेकिन अपने आध्यात्मिक अहंकार के कारण उन्होंने अपने भाई से संबंध तोड़ लिए। पारिवारिक आर्थिक सहायता देने का उनका दायित्व स्पष्ट था: एक युवा वकील के रूप में पढ़ाई और संघर्ष के दौरान उन्होंने पारिवारिक दायित्वों का लाभ उठाया था, लेकिन परंपरा और उदारता के अनुसार अगली पीढ़ी के भरण-पोषण में योगदान देने के बजाय उन्होंने इस दायित्व को त्याग दिया था। अब जब उन्हें अपनी इच्छानुसार खर्च करने की स्वतंत्रता मिल गई थी, तो उनके द्वारा धन के कुछ सार्वजनिक उपयोग संदिग्ध थे। उदाहरण के लिए, उन्होंने जोहान्सबर्ग में एक बड़े शाकाहारी रेस्तरां के उद्यम के लिए अपने एक ग्राहक के खाते से उसकी अनुमति से 1,000 पाउंड उधार लिए, लेकिन व्यवसाय विफल हो गया और गांधीजी को अपने ग्राहक को अपनी जेब से पैसे वापस करने पड़े।
गांधी जी अपने हिसाब-किताब को लेकर हमेशा सतर्क रहते थे और दूसरों से
भी यही अपेक्षा करते थे। जब एक कानूनी क्लर्क, जेम्स डब्ल्यू. गॉडफ्रे, ने दिन के हिसाब-किताब में दस शिलिंग खो दिए, तो गांधी जी ने उन्हें ही जिम्मेदार ठहराया। गॉडफ्रे ने बताया, “उन्होंने सभी हिसाब-किताबों की सावधानीपूर्वक जाँच की और पाया कि बहीखाता रखने वाले ने गलती की थी। उन्होंने मुझसे बहुत माफी मांगी और खुद को तीन दिन तक भूखा रखकर दंडित किया। उन्होंने कहा कि उन्होंने मेरे साथ बहुत बड़ा अन्याय किया है और इसलिए उन्हें खुद को दंडित करना पड़ा।”
लक्ष्मीदास परिवार के मुखिया के रूप में कार्य करते रहे और जनवरी 1903 में उन्होंने चौदह वर्षीय हरिलाल का विवाह परिवार के एक वकील मित्र की ग्यारह वर्षीय पुत्री से तय कर दिया। गांधी जी की निराशा का केवल अनुमान ही लगाया जा सकता है – संभवतः लक्ष्मीदास ने इसका पूर्वाभास कर लिया था और वे अपने मनमौजी भाई पर अपना अधिकार जता रहे थे। गांधी जी ने अंततः तब सहमति दी जब यह तय हुआ कि विवाह कई वर्षों तक नहीं होगा। उनका विवाह 1906

में हुआ जब हरिलाल लगभग अठारह वर्ष के थे और उनकी दुल्हन, गुलाब वोहरा, लगभग पंद्रह वर्ष की थीं। लक्ष्मीदास ने एक खर्चीली शादी का आयोजन किया, लेकिन जब उन्होंने गांधी जी से खर्च की भरपाई करने को कहा तो उन्होंने इनकार कर दिया। पिता तुल्य स्नेह के अभाव में गांधी जी ने लिखा: ‘अगर हरिलाल का विवाह हो गया है तो अच्छा है; अगर नहीं हुआ है तो भी अच्छा है। फिलहाल तो मैंने उसे पुत्र मानना छोड़ दिया है।’ 11
कस्तूरबा और अन्य लड़के, मनीलाल, रामदास और देवदास, 1904 की शुरुआत में दक्षिण अफ्रीका पहुँचे, इस प्रकार उन्होंने गांधीजी द्वारा भारत छोड़ते समय उनसे किए गए वादे को पूरा किया कि या तो वे एक वर्ष के भीतर वापस आ जाएँगे या वे उनके पास आ जाएँगी। उसी वर्ष वसंत ऋतु में, एक भारतीय बस्ती में प्लेग फैल गया और गांधीजी ने एक अस्थायी अस्पताल में काम किया। पहली बार कस्तूरबा ने सीधे तौर पर उनके काम में योगदान दिया, भारतीय महिलाओं के घरों में जाकर उन्हें बुनियादी स्वच्छता के उपाय और प्लेग के लक्षणों की पहचान करने के तरीके समझाए। अंततः उन्हें गांधीजी तक पहुँचने का रास्ता मिल गया था और गांधीजी ने उनके प्रति सम्मान के पहले संकेत दिखाने शुरू कर दिए थे।
उस समय गांधीजी को ‘उज्ज्वल, हंसमुख और जीवन के आनंद से परिपूर्ण’ बताया गया था। 12 उनसे मिलने आए एक ब्रिटिश पत्रकार, आर्थर हॉक्स ने ‘लगभग बारह फीट चौकोर, एक बहुत ही सादे ढंग से सुसज्जित कार्यालय’ में प्रवेश करने का वर्णन किया, जहाँ उनकी मुलाकात ‘एक छोटे कद के व्यक्ति से हुई, जो देखने में चालीस वर्ष के लग रहे थे, जिनकी छोटी काली मूंछें थीं और चेहरा सांवला तो नहीं था, लेकिन समझ बहुत तेज थी। उनकी आवाज में वह विलक्षण कोमलता थी जो सभी भारतीयों में पाई जाती है। बातचीत की शुरुआत से ही मैं उनकी उत्कृष्ट अंग्रेजी से प्रभावित हो गया – उनका प्रवाह इतना स्वाभाविक था मानो उन्होंने कभी कोई दूसरी भाषा बोली ही न हो और उनका उच्चारण और उच्चारण दोनों ही मधुर थे।’ 13
दक्षिण अफ्रीका में गांधीजी की नई परियोजना, जिसमें उनका सारा
अतिरिक्त पैसा खर्च हो जाता था, एक प्रकाशन गृह था। 1903 की शुरुआत में, एक प्रिंटर और सामुदायिक कार्यकर्ता मदनजीत व्यवहारिक ने उनसे संपर्क किया और उनसे 'इंडियन ओपिनियन' नामक साप्ताहिक समाचार पत्र के प्रकाशन में मदद मांगी, जो अंग्रेजी, गुजराती, तमिल और हिंदी में प्रकाशित होना

था। यह पहली बार 4 जून 1903 को प्रकाशित हुआ, लेकिन जल्द ही इतनी सारी भाषाओं को संभालना मुश्किल हो गया और इसे केवल अंग्रेजी और गुजराती में ही प्रकाशित किया जाने लगा। इसका घोषित उद्देश्य था 'एक साम्राज्यवादी और पवित्र आदर्श... जिसके माध्यम से राजा एडवर्ड के यूरोपीय और भारतीय प्रजाजनों को करीब लाया जा सके'। 14 अगले वर्ष वसंत ऋतु में, व्यवहारिक, जो भारत लौटना चाहते थे, ने गांधीजी द्वारा उन्हें दिए गए ऋणों के बदले में पत्रिका उन्हें सौंप दी। इस प्रकार अब गांधीजी इस उद्यम के नियंत्रण में थे।
तैंतीस वर्ष के गांधीजी प्रभाव जमाने के लिए महत्वाकांक्षी थे। वे एक सफल वकील थे और अपने समुदाय में सम्मानित थे, लेकिन चैंबरलेन और अधिकारियों को अपने दृष्टिकोण से सहमत कराने (या ट्रांसवाल में उनका स्वागत करने) में वे सफल नहीं हो पाए थे। भारत में राष्ट्रवादी राजनीति में उनका कोई खास प्रभाव नहीं था। उन्हें अपने व्यक्तिगत प्रोजेक्ट को एक नए स्तर पर ले जाना ही था: इंडियन ओपिनियन इसके लिए एक माध्यम बना। यह अखबार गांधीजी के विचारों को ही नहीं, बल्कि भारतीय मतों को भी प्रस्तुत करता था। वे हर सप्ताह इसके लिए लिखते थे, और इसलिए इसमें उनके विचारों का सार समाहित था, जब वे उन विचारों पर काम कर रहे थे जिन्होंने उन्हें विश्व प्रसिद्ध बनाया।
इस अखबार में दक्षिण अफ्रीका और विदेशों में रहने वाले भारतीय समुदाय से संबंधित समसामयिक घटनाओं को कवर किया गया था। विदेशी विषयों को इस आधार पर चुना गया था कि वे दक्षिण अफ्रीका में भारतीय परिदृश्य को प्रतिबिंबित करते हैं: 1905 में रूस में हुई हड़तालें; 1906 में बंगाल के विभाजन को लेकर हुए आंदोलन; और 1905 के रूस-जापान युद्ध में रूस पर जापान की विजय पर लिखे गए लेख। गांधी के भावी सहयोगी जवाहरलाल नेहरू, जो हजारों मील दूर हैरो स्कूल में थे, भी यूरोपीय शक्ति की पहली एशियाई पराजय की खबर से उतने ही प्रभावित हुए थे। पूर्व में यूरोपीय साम्राज्यों के अंत के लिए इसका महत्व अगले चालीस वर्षों में धीरे-धीरे सामने आने वाला था: जापानी विस्तार सभी क्षेत्रीय स्वतंत्रता आंदोलनों की पृष्ठभूमि बनने वाला था।
इंडियन ओपिनियन में एलिजाबेथ फ्राई, फ्लोरेंस नाइटिंगेल, अब्राहम लिंकन और लियो टॉल्स्टॉय जैसे महान पश्चिमी सुधारकों के जीवन पर

प्रेरणादायक लेख प्रकाशित होते थे। गांधी जी ने कुछ उपयोगी सामाजिक सुझाव भी दिए, जैसे कि ‘जहाँ तक संभव हो, सड़क पर, फुटपाथ पर या दूसरों की उपस्थिति में नाक साफ करने या थूकने से बचें… दूसरों की उपस्थिति में डकार, हिचकी, गैस या खुजली न करें… यदि किसी का थूक दूसरों पर गिरता है, तो इससे उन्हें परेशानी होती है…’ 15 उन्होंने तंबाकू के सेवन जैसी प्रथाओं के विरुद्ध नैतिक उपदेश लिखे: ‘इस आदत के बुरे प्रभाव तब और भी खतरनाक हो जाते हैं जब यह किशोरों में फैल जाती है। वे चोरी करना और अन्य अपराध करना सीखते हैं। वे अपने माता-पिता को धोखा देते हैं और अपना स्वास्थ्य खराब कर लेते हैं।’ वे चिड़चिड़े हो जाते हैं, और वयस्क होते-होते उनकी मानसिक शक्ति कम हो जाती है।’ 16 इस संदर्भ में गांधी टॉल्स्टॉय का अनुसरण कर रहे थे, जिनके तंबाकू संबंधी विचारों को उन्होंने उद्धृत किया: ‘यह सभी मादक पदार्थों में सबसे बुरा है क्योंकि इसका आदी व्यक्ति ऐसे अपराध करने के लिए प्रलोभित होता है, जो एक शराबी कभी करने की हिम्मत नहीं करता।’ 17 यह गांधी की विशेषता थी कि एक बार जब उन्होंने टॉल्स्टॉय को अपना आध्यात्मिक मार्गदर्शक मान लिया, तो उन्होंने तथ्यात्मक मामलों पर भी उनके कथनों को सटीक मान लिया।
आध्यात्मिक पूर्णता की खोज में टॉल्स्टॉय ने अपनी सारी संपत्ति और जायदाद त्याग दी और एक किसान का सादा जीवन जीने का प्रयास किया, जिससे उनकी पत्नी और परिवार काफी परेशान हो गए। गांधीजी की अगले दस वर्षों की प्रगति में भारतीय प्रभाव की बजाय पश्चिमी (और ईसाई) प्रभाव का ही योगदान रहा।
राजनीतिक रूप से, गांधी ने बार-बार व्यापारी अभिजात वर्ग की एकजुट और संगठित होने में विफलता पर जोर दिया, जबकि उन्हें व्यापक समुदाय के प्रति अपने दायित्वों को पहचानना था। जैसा कि मॉरीन स्वान ने कहा है, गांधी संस्थाओं और व्यापक राजनीतिक वातावरण की बजाय 'हमेशा व्यक्ति में कमी' ढूंढते थे। 18 सकारात्मक पक्ष पर, अपने समुदाय के उत्थान की उनकी सच्ची इच्छा पर कोई संदेह नहीं था। हालांकि, अश्वेत और रंगीन समुदायों के मुखर कार्यकर्ताओं के साथ जुड़ने में उनकी विफलता का अर्थ था कि उनका काम नस्लीय राज्य को विभाजित करने और भारतीयों को अन्य गैर-श्वेत लोगों से अलग करने के लिए प्रतिबद्ध था। गांधी बोअर्स की तरह ही नस्लीय शुद्धतावादी थे। उन्होंने सितंबर 1903 में लिखा: 'हम नस्ल की शुद्धता में

उतना ही विश्वास करते हैं जितना कि हमें लगता है कि वे करते हैं, केवल हम मानते हैं कि वे सभी नस्लों की शुद्धता की वकालत करके हमारे हित की बेहतर सेवा कर सकते हैं, जो हमारे लिए उतना ही प्रिय है जितना उनके लिए।' यह संकेत देते हुए कि यदि भारतीयों को नागरिकता अधिकार दिए जाएं तो वे अपना स्थान जान लेंगे, उन्होंने आगे कहा, 'हम यह भी मानते हैं कि दक्षिण अफ्रीका में श्वेत नस्ल प्रमुख नस्ल होनी चाहिए।' 19 अभिजात वर्ग और नस्लीय रूप से विशिष्ट लोगों के साथ संबंध गांधी के आध्यात्मिक रूप से श्रेष्ठ व्यक्ति के दृष्टिकोण के साथ बुरी तरह मेल खाता था, जिसका शरीर सही भोजन और पवित्रता से शुद्ध होता है, और जिसका मन प्रत्येक कार्य के नैतिक मूल्य पर विचार करके परिष्कृत होता है।
पत्रकारिता भारतीय समुदाय के लिए एक एकजुटता का स्रोत थी, लेकिन उससे
भी कहीं अधिक महत्वपूर्ण रूप से, यह उनके और उन यूरोपीय लोगों के बीच एक सेतु का काम करती थी जो लिखित रूप में ठोस तर्कों का सम्मान करते थे। गांधीजी की मुलाकात हेनरी पोलक से उनके लेखन के माध्यम से हुई, जो एक यहूदी-अंग्रेज़ पत्रकार थे और अक्सर उस शाकाहारी रेस्तरां में आते थे जहाँ गांधीजी दोपहर का भोजन और रात का भोजन करते थे। पोलक टॉल्स्टॉय को पढ़कर शाकाहार के अनुयायी बन गए थे, इसलिए उनमें और गांधीजी में बहुत कुछ समान था। पोलक ने हाल ही में फैली महामारी को लेकर सरकार की आलोचना करने वाले गांधीजी के लेखों की प्रशंसा करते हुए अपना परिचय दिया।
अक्टूबर 1904 में जिस दिन गांधीजी की पहली मुलाकात पोलक से हुई, उस दिन उन्हें इंडियन ओपिनियन प्रेस के वित्तीय मामलों को सुलझाने के लिए डरबन जाना था। पोलक उन्हें जोहान्सबर्ग स्टेशन तक छोड़ने गए और यात्रा के दौरान पढ़ने के लिए उन्हें जॉन रस्किन की निबंधों की पुस्तक 'अनटू दिस लास्ट' दी। गांधीजी को वह पुस्तक इतनी पसंद आई कि उसे पढ़े बिना रहना मुश्किल था: ऐसा लगा मानो उसमें उनकी आध्यात्मिक आकांक्षाओं को व्यवहार में लाने के सभी सवालों के जवाब मिल गए हों। उन्हें उस पुस्तक से ईसाई समाजवाद का संदेश मिला, जो उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में यूरोप में तेजी से लोकप्रिय हो रहा था: इसके मूल सिद्धांत थे कि व्यक्ति का भला सभी के भले में निहित है, श्रम में गरिमा है और सभी श्रम का समान मूल्य है, श्रममय जीवन जीने योग्य है, प्रत्येक व्यक्ति को अपने श्रम से स्वयं को दूर रखने में सक्षम होना चाहिए, और विलासिता की खोज को निंदनीय माना जाना

चाहिए। रस्किन का कथन 'जीवन के सिवा कोई धन नहीं' शायद उनका सबसे प्रसिद्ध कथन है। बीसवीं शताब्दी में विद्वानों द्वारा उनके निजी जीवन - विशेष रूप से उनके अधूरे विवाह और छोटी बच्चियों के प्रति उनके भावनात्मक लगाव - पर विचार करने से उनकी प्रतिष्ठा धूमिल हो गई, लेकिन उन्नीसवीं शताब्दी में, जब ऐसी चीजों पर कम चर्चा होती थी, वे संस्कृति और सामाजिक संगठन के एक प्रभावशाली दूरदर्शी थे, जिन्होंने श्रमिक वर्ग के बीच शिक्षा, आत्मनिर्भरता और आत्मसम्मान को बढ़ावा दिया।
गांधी जी में एक मनमोहक किशोरत्व का गुण था – जब वे कोई प्रेरणादायक पुस्तक पढ़ते थे, तो अक्सर उन्हें उसमें अपनी समस्याओं का समाधान मिल जाता था और वे तुरंत उसके विचारों को व्यवहार में लाना चाहते थे। वे लिखते हैं: ‘मैंने ‘अनटू दिस लास्ट’ के आदर्शों के अनुसार अपना जीवन बदलने का निश्चय किया।’ 20 इस प्रकार गांधी जी ने आदर्श समुदायों के साथ प्रयोग करना शुरू किया।
समाजवादी आत्मनिर्भरता के विचार ब्रिटेन में रॉबर्ट ओवेन और एडवर्ड कारपेंटर जैसे अग्रदूतों द्वारा विकसित किए गए थे; कारपेंटर की पुस्तक 'सभ्यता: इसका कारण और इलाज' को गांधीजी ने बड़े चाव से पढ़ा था। बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में राज्य समाजवाद के क्रूर प्रयोगों के कारण समाजवादी मान्यताओं की विश्वसनीयता धूमिल हो गई, लेकिन उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध और बीसवीं शताब्दी के आरंभिक वर्षों में ये प्रगतिशील विकल्प के रूप में उभरीं। ब्रिटेन में एक और विकास के रूप में, विलियम मॉरिस ने कला की आध्यात्मिक उत्थानकारी शक्ति की अवधारणाओं पर बल दिया, जो सभी के लिए सुलभ होनी चाहिए। यह एक ऐसा विषय था जिसमें गांधीजी की विशेष रुचि नहीं थी; उनके आदर्श में कला का स्थान धर्म ने ले लिया था। काम और आत्मनिर्भरता का आध्यात्मिक संदेश ब्रिटिश समाज के उस वर्ग-आधारित दृष्टिकोण को सुधारने के लिए विकसित हुआ था, जिसमें शारीरिक श्रम को निम्न और गरिमाहीन, मध्यम वर्ग के 'बौद्धिक' कार्य को उच्चतर और जमींदार अभिजात वर्ग की श्रमहीन स्थिति को सर्वोपरि माना जाता था।
जब वे जोहान्सबर्ग पहुँचे, तो उन्होंने प्रेस की आर्थिक स्थिति को अपनी कल्पना से भी बदतर पाया। उन्होंने अभी-अभी एक अंग्रेज, अल्बर्ट वेस्ट को मुख्य प्रिंटर के रूप में नियुक्त किया था, जो एक कुशल कारीगर थे और जिनसे उनकी मुलाकात शाकाहारी रेस्तरां के माध्यम से हुई थी। वेस्ट ने गांधीजी

का साथ देने के लिए जोहान्सबर्ग की एक प्रिंटिंग प्रेस में अपनी सुरक्षित नौकरी छोड़ दी थी। इंडियन ओपिनियन से अपेक्षित लाभ नहीं हुआ था, लेकिन वेस्ट इतने दृढ़ निश्चयी व्यक्ति थे कि वे केवल शिकायत करने के बजाय कठिनाइयों को दूर करने का प्रयास करते थे। उन्होंने गांधीजी को जो स्थिति समझाई, वह यह थी: चंदा इकट्ठा नहीं हो रहा था, बिलों का भुगतान नहीं हो रहा था; अखबार घाटे में चल रहा था और भविष्य में भी घाटे में चलने का अनुमान था। रस्किन की पुस्तक से प्रेरित गांधीजी का समाधान यह था कि प्रेस को एक छोटे से खेत में स्थानांतरित कर दिया जाए, जहाँ सभी लोग समुदाय के लिए भोजन उत्पादन में श्रम करेंगे; सभी को राष्ट्रीयता, रंग या उनके द्वारा किए गए श्रम की परवाह किए बिना 3 पाउंड प्रति माह का मूल वेतन मिलेगा, और इंडियन ओपिनियन इस वैकल्पिक जीवन शैली के प्रयोग के फलस्वरूप प्रकाशित होगा।
अल्बर्ट वेस्ट उत्साहित थे (हालाँकि 3 पाउंड का वेतन उनकी तय दर से 7 पाउंड कम था)। उन्होंने बाद में टिप्पणी की, 'यह कहना कि मैंने प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया, एक तरह की इच्छाशक्ति को दर्शाता है। मैं निश्चित रूप से इस विचार से मोहित था, और गांधी के प्रति मेरा प्रेम ही इस उद्यम में सफल होने की मेरी इच्छा को पूरा करने के लिए पर्याप्त था।' 21 छगनलाल गांधी, जो गांधी के साथ आए थे और प्रेस में काम कर रहे थे, उन्होंने भी अपने गुरु का अनुसरण करने के लिए सहमति व्यक्त की, जिन पर उन्हें भी पूरा भरोसा था। मगनलाल, एक अन्य चचेरे भाई, जो जल्द ही गांधी के प्रिय बन गए, वे भी शामिल हो गए, हालाँकि उनकी पत्नियाँ अधिक रूढ़िवादी थीं और उन्हें सांप्रदायिक जीवन कठिन लगा: अन्य कर्तव्यों के अलावा, उन्हें गांधी के मुस्लिम मित्रों द्वारा उपयोग किए जाने वाले पीतल के बर्तनों को अग्नि में डालकर शुद्ध करना पड़ता था। प्रेस में पहले से कार्यरत लगभग दस कर्मचारियों में से अधिकांश ने नई योजना को अस्वीकार कर दिया, लेकिन गांधी ने उनके अनुबंध समाप्त करने के बजाय, उन्हें उनके मूल वेतन पर तब तक रखने का निश्चय किया जब तक वे प्रेस के साथ चलते रहेंगे। अखबार के संपादक, मनसुखलाल नजर, जो गांधी के एक अन्य समर्थक और कार्यकर्ता थे, फार्म में जाने के लिए तैयार नहीं थे, लेकिन डरबन से संपादक के रूप में काम जारी रखने के इच्छुक थे। गांधी ने डरबन में रेलवे लाइन के पास एक ज़मीन के लिए विज्ञापन दिया और जल्द ही वे और वेस्ट फीनिक्स शहर में स्टेशन के पास सौ एकड़ ज़मीन का

मुआयना कर रहे थे, जिसे गांधी ने 1,000 पाउंड में खरीद लिया। ज़मीन झाड़ियों से भरी और साँपों से ग्रस्त थी, लेकिन उस पर फलों के पेड़ और कुछ जर्जर कृषि भवन थे। उनके पुराने मित्र जीवनजी रुस्तमजी ने उन्हें बड़ी- बड़ी नालीदार लोहे की चादरें और अन्य निर्माण सामग्री उपलब्ध कराई, और कुछ भारतीय निर्माण श्रमिकों ने, जो बोअर युद्ध में अपनी सेवा के दौरान गांधी को जानते थे, प्रेस के लिए एक शेड बनाने में मदद की। भारी मुद्रण उपकरण को डरबन से फीनिक्स तक चार वैगनों और चौंसठ बैलों की मदद से ले जाना पड़ा, और बस्ती तक पहुँचने के लिए उन्हें तीन नदियाँ पार करनी पड़ीं। लोग दिन-रात काम करते रहे, जल्दी से लगाए गए तंबुओं में सोते रहे, शेड खड़ा करते रहे, प्रेस लगाते रहे और सड़कें व सिंचाई की नहरें बनाते रहे। इस दौरान इंडियन ओपिनियन का केवल एक अंक ही बाहरी प्रेस से छपवाना पड़ा। फीनिक्स के पहले अंक के लिए, तय समय सीमा के भीतर काम करते हुए, टाइप सेट किया गया और कागज़ को छपाई के लिए तैयार किया गया, जिसे सुबह की ट्रेन से राष्ट्रीय वितरण के लिए हाथ से मोड़कर तैयार करना था। लेकिन जब प्रेस चलने के लिए तैयार था, तभी इंजन खराब हो गया। वेस्ट की आँखों में आँसू थे; सभी को डर था कि फीनिक्स का पहला अंक समय पर प्रकाशित नहीं हो पाएगा। एकमात्र विकल्प एक ऐसे पहिये का उपयोग करना था जिसे हाथ से घुमाना
पड़ता था और जिसके लिए चार आदमियों की आवश्यकता होती थी – यह इतना श्रमसाध्य था कि उन्हें बारी-बारी से काम करना पड़ता था। प्रिंटर थक चुके थे, लेकिन बढ़ई भी थक चुके थे जो दिन भर इमारतों पर काम कर रहे थे: वे अब सो रहे थे, और वेस्ट उन्हें परेशान नहीं करना चाहते थे। फिर भी, गांधी ने उन्हें जगाया और अपनी विशेष समझाने की कला का प्रयोग करते हुए, उनसे भारी पहिया घुमाना शुरू करने को कहा। वे मान गए और पूरी रात काम करते रहे, गांधी उनके बगल में काम करते रहे जबकि वेस्ट उनका मनोबल बनाए रखने के लिए भजन गाते रहे; प्रकाशन समय पर छप गया। यह गांधी के लिए एक सबक था कि लोगों को उनकी सहनशक्ति की कथित सीमाओं से परे कैसे धकेला जाए – एक और बलिदान करने के लिए कहा गया, और उन्होंने खुशी-खुशी स्वीकार कर लिया।
आत्मनिर्भरता की योजना का पालन करने के लिए भूमि का इस प्रकार बंटवारा किया गया कि गांधी जी सहित प्रत्येक मजदूर को अपने लिए तीन एकड़ जमीन मिले जिस पर वे अपने लिए नालीदार लोहे का मकान बना सकें। गांधी जी मिट्टी की झोपड़ियाँ या किसानों के ईंट के मकान पसंद करते, लेकिन वे नालीदार लोहे के

मकानों से अधिक महंगे होते। बस्ती का माहौल उत्साहपूर्ण और खुशहाल था, जिसका एक कारण इसका प्रयोगात्मक स्वरूप और इसके चारों ओर व्याप्त आशावाद की भावना थी, और दूसरा कारण यह था कि गांधी जी ने अभी तक वे नियम नहीं बनाए थे जो उनकी भविष्य की बस्तियों के लिए अभिशाप साबित होने वाले थे। उदाहरण के लिए, उन्होंने ब्रह्मचर्य या कठोर खान-पान के नियम लागू करने का प्रयास नहीं किया, जो जीवन को कष्टदायी बना सकते थे।
जोहान्सबर्ग लौटकर गांधी ने पोलक को फीनिक्स समझौते के बारे में बताया
– जो असल में उनकी पुस्तक 'अनटू दिस लास्ट' के अध्ययन का परिणाम था – इस खुलासे ने निस्संदेह पोलक के मन में अपने नए मित्र के प्रति सम्मान और बढ़ा दिया। पोलक ने तुरंत उस पत्रिका से इस्तीफा दे दिया जिसमें वे काम करते थे और फीनिक्स में काम करने चले गए। हालांकि, गांधी को जल्द ही जोहान्सबर्ग में एक सहायक की आवश्यकता महसूस हुई, इसलिए उन्होंने पोलक को अपने घर में रहने के लिए आमंत्रित किया और उन्हें वकील बनने का प्रशिक्षण देना शुरू कर दिया। उन्होंने पोलक को अपनी मंगेतर मिलि को इंग्लैंड से लाने के लिए प्रोत्साहित किया और कुछ महीनों बाद उनकी शादी में दूल्हे के दोस्त बने; उस समय वे अपने समर्थकों को शादी करने और सामान्य पारिवारिक जीवन जीने के लिए प्रेरित कर रहे थे। मिलि की मुलाकात पोलक से लंदन के साउथ प्लेस एथिकल सोसाइटी में हुई थी; आर्थिक कारणों से उनकी शादी में देरी हो रही थी, लेकिन गांधी ने उन्हें आश्वासन दिया कि वे उनका ख्याल रखेंगे।
जब पोलक परिवार गांधी के घर में रहने लगा, तो कस्तूरबा को एक ऐसे अनोखे अनुभव का सामना करना पड़ा, जिसमें उन्हें अपना कार्यक्षेत्र एक ऐसी महिला के साथ साझा करना पड़ता था जो उनकी भाषा नहीं जानती थी और न ही परिवार व्यवस्था के प्रति उनका दृष्टिकोण साझा करती थी। पोलक के प्रति गांधी के लगाव को पहचानते हुए, वह उन्हें गांधी का 'प्राणी पुत्र' कहा करती थीं - यह उनके बच्चों और शिष्यों के प्रति उनके स्नेह में अंतर पर एक स्पष्ट टिप्पणी थी। 22
जोहान्सबर्ग स्थित गांधीजी के घर में पोलक परिवार के आने के साथ ही सादगी को और बढ़ावा मिला: उन्होंने एक हाथ की चक्की खरीदी ताकि उनका परिवार रोटी बनाने के लिए आटा खुद पीस सके। उनके बेटों ने कपड़े धोने और साफ-सफाई में भी मदद की। 1904 में बारह और सात साल के मनीलाल और रामदास को

अभी भी स्कूल नहीं भेजा गया था, लेकिन गांधीजी ने उन्हें शिक्षित करने के अपने पिछले प्रयासों को और बेहतर बनाया। उन्होंने बच्चों को हर दिन अपने साथ काम करने के लिए कहा, कार्यालय तक पाँच मील की पैदल यात्रा के दौरान उनसे बातें कीं और वहाँ पहुँचने पर उन्हें स्कूल का काम दिया। वे बच्चों से केवल गुजराती में ही बात करते थे, हालाँकि पोलक का तर्क था कि धाराप्रवाह अंग्रेजी बोलने से लड़कों को फायदा होगा। गांधीजी का मानना था कि अपनी मातृभाषा का ज्ञान उनके देश के लिए अच्छा होगा: दक्षिण अफ्रीका में पले-बढ़े होने के कारण, यह महत्वपूर्ण था कि भारत लौटने पर वे विदेशी न लगें।
गांधी ने अपने कुछ रिश्तेदारों और दोस्तों को फीनिक्स बस्ती में बसने
के लिए प्रोत्साहित किया और जल्द ही कस्तूरबा और उनके साथियों को वहाँ लाने की योजना बनाने लगे। यह अवसर उन्हें 1906 की शुरुआत में नेटाल में हुए ज़ुलू विद्रोह से मिला, जब एक ज़ुलू सरदार, एक और कर लगाए जाने से क्रोधित होकर, अपने लोगों को कर अदा करने से इनकार करने की सलाह दी और कर संग्रहकर्ता पर भाले से हमला कर दिया। ज़ुलुओं को 'दबाने' के लिए एक अभियान दल भेजा गया। हालाँकि गांधी की सहानुभूति अफ्रीकियों के साथ थी, उनकी निष्ठा ब्रिटिश साम्राज्य के प्रति थी, और बोअर युद्ध के दौरान इस्तेमाल किए गए तर्क को लागू करते हुए उन्होंने स्वयं से पूछा कि भारतीय समुदाय के लिए सबसे अच्छा क्या होगा। भारतीयों को अभी भी कायर और बदमाश माना जाता था और गांधी अंग्रेजों को यह बात फिर से समझाना चाहते थे कि ऐसा नहीं है। उन्होंने नेटाल के गवर्नर को पत्र लिखकर एक भारतीय एम्बुलेंस कोर के गठन में अपनी सेवाएं देने की पेशकश की (हालाँकि गांधी का घर जोहान्सबर्ग में था, वे खुद को नेटाल का नागरिक मानते थे, और फीनिक्स वहीं स्थित था)। राज्यपाल मान गए, और थोड़े ही समय में गांधी ने जोहान्सबर्ग का घर छोड़ दिया, पोलाक को वहाँ एक छोटे से घर में बसा दिया, अपनी पत्नी और बच्चों को फीनिक्स भेज दिया और अपने नए उद्यम के लिए लोगों की भर्ती करने के लिए डरबन के लिए रवाना हो गए। अगले चार वर्षों तक वे अपनी पत्नी और बच्चों के साथ दोबारा नहीं रहे।
जब गांधी और उनके तेईस साथी युद्धक्षेत्र में पहुँचे, तो यह स्पष्ट था कि उन्हें किसी विद्रोह का सामना नहीं करना था – उन्हें एक दंडात्मक बल के साथ नियुक्त किया गया था। उनका मुख्य कार्य सरकारी अभियानों में घायल हुए

ज़ुलुओं की देखभाल करना था – कुछ संदिग्ध शत्रु थे जिन्हें कोड़े मारे गए थे और जिनके घावों में मवाद पड़ गया था, जबकि अन्य 'मित्रवत' ज़ुलुओं थे जिन्हें गलती से गोली मार दी गई थी। जब गांधी का दल एक टुकड़ी के साथ युद्धक्षेत्र में पहुँचा, तो ब्रिटिश सैनिकों के ज़ुलू क्षेत्रों में घुसने पर उन्हें ऐसे ही और भी घायल लोग मिले। उन्होंने लिखा, 'यह कोई युद्ध नहीं बल्कि एक मानव-खोज अभियान था।' 23 उन्होंने एक साम्राज्यवादी शक्ति की कुशल क्रूरता देखी थी। छह सप्ताह बाद मिशन पूरा मान लिया गया और गांधी फीनिक्स लौट आए। उन्होंने स्पष्ट रूप से ऐसा नहीं कहा, लेकिन बोअर युद्ध और ज़ुलू विद्रोह के उनके अनुभवों ने उन्हें यह सिखाया होगा कि किसी शक्तिशाली राष्ट्र पर सीधा सैन्य हमला करने का जोखिम उठाना व्यर्थ है। कम आबादी वाले इलाकों में अपनी लंबी यात्राओं के दौरान वे एक बार फिर इस बात पर विचार करने लगे कि आध्यात्मिक आत्म-साक्षात्कार के करीब पहुंचने के लिए उन्हें क्या करना चाहिए। उन्होंने बाद में दर्ज किया कि वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि 'उन्हें गरीबी को जीवन भर का निरंतर साथी स्वीकार करना होगा' और ब्रह्मचर्य के बिना वे पूरी आत्मा से मानवता की सेवा नहीं कर सकते: 'मुझे उस तरह की सेवा करने के और अधिक अवसर मिलेंगे जो मैं कर रहा था, और... यदि मैं पारिवारिक जीवन के सुखों और बच्चों के पालन-पोषण में लगा रहता तो मैं खुद को इस कार्य के लिए अयोग्य पाता।' 24 इसे यौन संबंध का त्याग और पवित्रता को अपनाना बताया गया है - यह कोई नया विचार नहीं है, क्योंकि यह हिंदू और बौद्ध चिंतन का हिस्सा था, कम से कम सेंट जेरोम के समय से एक ईसाई अवधारणा रही है और कैथोलिक और ग्रीक ऑर्थोडॉक्स परंपराओं में इसका महत्वपूर्ण प्रभाव रहा है। 'ब्रह्मचर्य ही है जिसने कैथोलिक धर्म को आज तक जीवंत रखा है,' गांधी ने कहा। 25 हिंदू और जैन परंपराओं में पवित्रता आमतौर पर उन बड़े पुरुषों के लिए आरक्षित थी जिनके पहले से ही परिवार थे; इसका यहूदी धर्म या इस्लाम में कोई स्थान नहीं है। गांधी के अनुसार, यह यौन इच्छा का त्याग करने से अधिक पत्नी और परिवार को अस्वीकार करने जैसा प्रतीत होता है। जब टॉल्स्टॉय ने 1889-1890 में यौन घृणा पर आधारित अपनी लघु उपन्यास 'द क्रुत्ज़र सोनाटा' लिखते समय इसी प्रकार अपनी यौन प्रवृत्ति का त्याग किया, तो उनकी पत्नी ने इसे उन्हें अस्वीकार करने के रूप में समझा।

गांधी जी ने अपने चचेरे भाइयों छगनलाल, मगनलाल और अन्य लोगों से इस बात पर चर्चा की कि क्या उन्हें अपनी पत्नी के साथ यौन संबंध बंद कर देना चाहिए। वे कम से कम सन् 1900 से ही अपनी प्रबल यौन इच्छाओं को नियंत्रित करने का प्रयास कर रहे थे, जब बोअर युद्ध के दौरान लंबी यात्राओं ने उन्हें चिंतन के लिए समान समय दिया था; लेकिन उनका मानना था कि वे अतीत में असफल रहे क्योंकि उनका उद्देश्य शुद्ध नहीं था – वे केवल और संतान न पैदा करना चाहते थे। अब सन् 1906 के मध्य में उन्होंने एक निर्णय लिया और इसकी घोषणा की, प्रतिज्ञा लेने से ठीक पहले ही उन्होंने कस्तूरबा से ‘परामर्श’ किया। हमेशा की तरह, गांधी जी अपने इस नए विचार को लेकर उत्साहित थे और उन्होंने दूसरों को भी इसका अनुसरण करने के लिए प्रोत्साहित किया। दिसंबर 1907 में वे इंडियन ओपिनियन के पाठकों से कह रहे थे: ‘व्यभिचार केवल दूसरे पुरुष की पत्नी के साथ यौन संबंध बनाने में ही नहीं होता। हमें हर धर्म में यह सिखाया जाता है कि अपनी पत्नी के साथ यौन संबंध बनाने में भी व्यभिचार हो सकता है। यौन संबंध तभी उचित है जब वह संतान की इच्छा का परिणाम हो… प्रत्येक विचारशील भारतीय का कर्तव्य है कि वह विवाह न करे।’ यदि वह विवाह के मामले में असहाय है, तो उसे अपनी पत्नी के साथ यौन संबंध से परहेज करना चाहिए।’ 26
गांधी जी को लगता था कि उनकी महत्वाकांक्षा पहले इसलिए विफल हो गई थी क्योंकि उन्होंने ब्रह्मचर्य का व्रत नहीं लिया था: ‘अब तक मुझे सफलता इसलिए नहीं मिली थी क्योंकि इच्छाशक्ति का अभाव था, क्योंकि मुझे स्वयं पर विश्वास नहीं था, ईश्वर की कृपा पर विश्वास नहीं था, और इसलिए मेरा मन संदेह के उथल-पुथल भरे सागर में भटकता रहा था।’ 27 एक बार जब उन्होंने ब्रह्मचर्य का व्रत ले लिया, तो उनका यौन जीवन आत्म-संयम का विषय नहीं रह गया, बल्कि आध्यात्मिक पवित्रता का, शाश्वत से संपर्क का विषय बन गया। अब जब उन्होंने अपना इरादा ज़ाहिर कर दिया था, तो वे अपनी भावनाओं को कैसे नियंत्रित कर सकते थे? उनका लक्ष्य एक पूर्णतः एकीकृत शारीरिक और आध्यात्मिक अवस्था प्राप्त करना था, इसलिए उन्होंने फिर से अपने आहार के साथ प्रयोग करना शुरू कर दिया, उपवास के साथ-साथ केवल फल या केवल अनाज का सेवन भी शुरू किया। हालाँकि, उन्होंने पाया कि आहार बदलने से उनके शरीर द्वारा नए भोजन का स्वागत करने का 'आनंद' बढ़ गया। इससे भी बुरी बात यह थी कि उपवास से भूख बढ़ गई। समय के साथ उन्होंने प्रयोग जारी रखा और चाय न

पीने या सूर्यास्त से पहले दिन का अंतिम भोजन समाप्त करने जैसे संयम अपनाने का निर्णय लिया, ताकि शारीरिक संवेदनाओं पर निर्भरता कम हो और शरीर को जितनी आवश्यकता हो उतना ही भोजन किया जा सके। उन्होंने कहा, 'हर प्रकार का संयम, चाहे वह किसी भी कारण से हो, मनुष्य के लिए लाभकारी है।' 28 आदर्श भोजन सीमित, सरल, बिना मसालों वाला और संभव हो तो कच्चा होना चाहिए।
अब वह अपने आहार संबंधी प्रयोगों को केवल शाकाहार के दृष्टिकोण से ही नहीं, बल्कि अपनी पवित्रता बनाए रखने के लिए भी आगे बढ़ा रहे थे। वर्षों के आहार संबंधी प्रयोगों ने उन्हें यह दिखाया कि ब्रह्मचारी का आदर्श भोजन ताजे फल और मेवे हैं। इस भोजन पर रहते हुए मुझे जो कामुकता से मुक्ति प्राप्त थी, वह आहार बदलने के बाद मुझे नहीं मिली। 29 लेकिन ऐसे आहारों का उन पर बुरा असर पड़ा, उन्होंने एक चिकित्सक मित्र को लिखा: 'मुझे लगता है कि फल और मेवे वाले आहार का प्रयोग करते समय ही मेरे दांत खराब हुए थे। मेरा मानना था कि मेरे दो दाढ़ स्थायी रूप से क्षतिग्रस्त हो गए हैं।' 30 खान-पान और यौन संबंध के बारे में गांधी के विचार सनक की हद तक विचित्र प्रतीत होते हैं, लेकिन संभवतः इसके पीछे कोई शारीरिक कारण रहा होगा कि विभिन्न आहार उनकी यौन इच्छा को कम करने में कारगर क्यों रहे। उन्हें गंभीर कब्ज की समस्या थी। उनके बाद के सचिव प्यारेलाल ने टिप्पणी की: 'प्राकृतिक चिकित्सा अपनाने से पहले, महात्मा गांधी लगभग ईनो फ्रूट सॉल्ट के गुलाम थे। हर सुबह वे एक गिलास के तले में एक चम्मच ईनो फ्रूट सॉल्ट डालते, उसमें पानी डालते और उस झागदार तरल को गटक जाते जिससे उन्हें राहत मिलती थी।' 31 यदि प्राकृतिक चिकित्सा - गांधी के लंदन स्थित मित्र डॉ. थॉमस एलिसन की पद्धति - का संदर्भ सटीक है, तो यह युवावस्था में गांधी की स्थिति पर लागू होता है, लेकिन प्यारेलाल संभवतः प्राकृतिक चिकित्सा पद्धतियों को बाद में अपनाने का जिक्र कर रहे हैं। दक्षिण अफ्रीका की जेल में रहते हुए गांधी ने कहा था कि उन्हें 'शौचालय में लंबा समय लगने की बुरी आदत थी' और जब जेलर या अन्य कैदी उन्हें जल्दी करने के लिए कहते तो वे नाखुश हो जाते थे। 32 वे हमेशा की तरह अपने दोस्तों के साथ अपनी शारीरिक स्थिति साझा करने में ज़रा भी संकोच नहीं करते थे: उन्होंने 1909 में लिखा था कि व्यक्ति को ऐसे आहार और खाने की आदतों (उदाहरण के लिए चबाने की अवधि) का लक्ष्य रखना चाहिए जिससे मल 'सामंजस्यपूर्ण, गंधहीन हो और गुदा

को गंदा किए बिना बाहर निकल जाए'। 33 जब गांधीजी यौन विचारों से व्याकुल होते थे, शायद उनकी आंत में कब्ज उनकी प्रोस्टेट ग्रंथि पर दबाव डाल रही थी और उन्हें यौन रूप से उत्तेजित कर रही थी। इससे यह बात समझ में आती है कि कुछ आहार, कब्ज कम करके, उन्हें कम यौन इच्छा महसूस करने में मदद क्यों करते थे।
हालांकि शारीरिक स्थिति चाहे जैसी भी रही हो, 1907 में, एक समाचार
पत्र, एक आध्यात्मिक समुदाय, एक सख्त शाकाहारी आहार और ब्रह्मचर्य के बल पर, गांधी ने खुद को उस स्थिति का सामना करने के लिए तैयार महसूस किया जो जल्द ही एकीकृत दक्षिण अफ्रीकी राज्य बनने वाला था।

5

गरीबों की सेना
बोअर युद्ध के बाद अंग्रेजों के खिलाफ भेदभाव करने वाले बोअर कानूनों को रद्द कर दिया गया, लेकिन भारतीयों के खिलाफ भेदभाव करने वाले कानून लागू कर दिए गए। ये कानून लियोनेल कर्टिस नामक एक प्रतिभाशाली युवा प्रशासक के प्रयासों का परिणाम थे, जो नेटाल के भारतीयों के बढ़ते प्रभुत्व से चिंतित थे, जिनकी मेहनत और धन संचय उन्हें गोरों के बराबर ला खड़ा कर रहा था; नस्लीय संतुलन बनाए रखने के लिए उन्हें नियंत्रण में लाना आवश्यक था। कर्टिस की मुलाकात गांधीजी से 1903 में हुई थी, जब गांधीजी ने उन्हें अपने देशवासियों की मेहनत, मितव्ययिता और धैर्य के बारे में समझाने की कोशिश की थी। कर्टिस ने उत्तर दिया: 'श्री गांधीजी, आप तो पहले से ही सहमत लोगों को उपदेश दे रहे हैं। इस देश में यूरोपीय लोग भारतीयों के अवगुणों से नहीं, बल्कि उनके सद्गुणों से भयभीत होते हैं।'
कर्टिस गांधी के कट्टर विरोधी थे, एक ऐसे व्यक्ति जिनके विचार जीवन भर उन पर हावी रहे। गांधी के सबसे कट्टर विरोधियों की तरह, कर्टिस में नैतिकता और दूरदृष्टि का अभाव तो नहीं था, लेकिन इन गुणों के प्रति उनका दृष्टिकोण एक भारतीय कर्टिस से बिल्कुल भिन्न था। गांधी से मात्र तीन वर्ष छोटे, कर्टिस का पालन-पोषण एक कट्टर ईसाई परिवार में हुआ था और वे इस दृढ़ विश्वास से ओतप्रोत थे कि धर्म और राजनीति के बीच का भेद निराधार है: सार्वजनिक जीवन में आध्यात्मिक सत्य का प्रतिबिंब होना चाहिए। उन्होंने लिखा था कि वे ब्रिटिश राष्ट्रमंडल को 'पहाड़ पर दिए गए उपदेश का राजनीतिक रूप में रूपांतरण' मानते हैं। 2 ऑक्सफोर्ड में स्नातक की पढ़ाई के दौरान, उन्होंने गरीब कानून की कार्यप्रणाली को समझने के लिए एक घुमंतू के वेश में सड़कों पर घूमना शुरू किया और बाद में लंदन के ईस्ट एंड में गरीबों के साथ काम किया। उन्होंने गांधी के इनर टेंपल में वकालत की पढ़ाई की और बोअर युद्ध में स्वेच्छा से सेवा दी। युद्ध के बाद उन्होंने युद्धग्रस्त उपनिवेशों के पुनर्निर्माण में योगदान देने का निश्चय किया और अल्फ्रेड मिलनर जैसे उत्कृष्ट औपनिवेशिक प्रशासक के आसपास रहने वाले प्रतिभाशाली युवाओं के समूह 'मिलनर के शिष्यों' में से एक बन गए। कर्टिस ने तेजी से तरक्की की और अक्टूबर 1905 में उन्हें एशियाई मामलों की जिम्मेदारी

सौंपी गई। उन्होंने पहले ही ट्रांसवाल के भारतीयों पर एक विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की थी, जो सितंबर 1906 में प्रांत के एशियाई कानूनों में संशोधन के मसौदे का आधार बनी।
कर्टिस का मानना था कि असीमित भारतीय आप्रवास का अर्थ श्वेत दक्षिण अफ्रीका का अंत होगा, और विश्व में ब्रिटेन की नैतिक श्रेष्ठता के उनके विचार यूरोपीय सभ्यता की श्रेष्ठता की धारणाओं से जुड़े हुए थे। यदि मिश्रण में बहुत अधिक भारतीय या किसी अन्य प्रकार की सभ्यता शामिल हो जाती, तो साम्राज्य अपना नैतिक जादू नहीं चला पाता। उन्होंने पहले ही पंजीकरण को एक प्रशासनिक उपाय के रूप में प्रस्तावित किया था, लेकिन कानून के बल के बिना, और भारतीयों ने स्वैच्छिक पंजीकरण स्वीकार कर लिया था। अब, आप्रवास को सख्ती से नियंत्रित करने के उद्देश्य से, उन्होंने एक कानून का मसौदा तैयार किया जिसके तहत आठ वर्ष और उससे अधिक आयु के प्रत्येक भारतीय को एक नया पंजीकरण प्रमाण पत्र प्राप्त करना, उंगलियों और अंगूठे के निशान और अन्य पहचान चिह्न प्रदान करना अनिवार्य होगा। पुलिस किसी भी समय इन दस्तावेजों की मांग कर सकती थी और यहां तक कि उनकी जांच के लिए निजी घरों में भी प्रवेश कर सकती थी।
प्रस्तावित कानून की शर्तें आपत्तिजनक थीं, और यदि इनका विरोध नहीं
किया गया तो ये पूर्ण अलगाव की दिशा में एक बड़ा कदम साबित होंगी, यहाँ तक कि अलग-अलग बाज़ारों और ट्रांसवाल में व्यापारिक सफलता के अंत की ओर भी ले जाएंगी। समस्या, जैसा कि जान स्मट्स के बेटे ने अपने पिता की जीवनी में स्पष्ट रूप से दर्शाया है, यह थी कि 'भारतीय लोग खरगोशों की तरह प्रजनन कर रहे थे और देश तेजी से उनसे भरता जा रहा था' - इसलिए कठोर कार्रवाई की आवश्यकता थी, उन्होंने बिना किसी व्यंग्य के कहा, 'यह सुनिश्चित करने के लिए कि देश श्वेत ही रहे'। 3
गांधी ने कानून के मसौदे का अध्ययन किया, उसका गुजराती में अनुवाद किया और उसे इंडियन ओपिनियन में प्रकाशित किया। उनका मानना था कि यह कानून न केवल अपने स्वरूप में दमनकारी था, बल्कि 'दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों को देश से बेदखल करने की दिशा में पहला कदम था, जिसका उद्देश्य दक्षिण अफ्रीका में हमारे अस्तित्व की जड़ पर प्रहार करना था।' 4 गांधी ने इस अध्यादेश पर भारतीय समुदाय के प्रमुख सदस्यों के साथ चर्चा की, जिन्होंने उनकी चिंताओं को साझा किया। उन्होंने ट्रांसवाल में सभी भारतीयों को

अपनी दुर्दशा से अवगत कराने के लिए जोहान्सबर्ग के एम्पायर थिएटर को किराए पर लिया।
पंजीकरण के मुद्दे ने ट्रांसवाल के संभ्रांत भारतीय समुदाय के मूल सिद्धांतों, यानी स्वतंत्र व्यापार के अधिकार पर गहरा प्रहार किया। उनके परिवारों को लाइसेंस प्रक्रिया में घसीटकर इसने उनके मूलभूत सिद्धांतों को भी ठेस पहुँचाई। पत्नियों पर अत्याचार करना निरंकुशता की सीमा से परे था। गांधी जी ने व्यापारियों, छोटे दुकानदारों और फेरीवालों से बैठक शुरू होने से कुछ घंटे पहले ही अपनी दुकानें बंद करने को कहा था ताकि सड़कें इस नाटकीय आयोजन की गवाह बन सकें। इस बैठक को ट्रांसवाल ब्रिटिश इंडियन एसोसिएशन और सभी प्रमुख भारतीय व्यापारिक हितों का समर्थन प्राप्त था। 11 सितंबर 1906 को हुई सभा में दो सामुदायिक नेता, हाजी हबीब और हाजी
ओजर एली, मुख्य आकर्षण थे। रंगमंच तीन हजार से अधिक भारतीयों से खचाखच भरा हुआ था, जो ट्रांसवाल के सभी हिस्सों से आए थे। जोहान्सबर्ग के प्रमुख मुस्लिम निवासियों में से एक हबीब ने ईश्वर को साक्षी मानकर कहा कि वे प्रस्तावित नए कानून के आगे कभी नहीं झुकेंगे और श्रोताओं से भी यही शपथ लेने को कहा - कि वे पंजीकरण कराने के बजाय जेल जाना पसंद करेंगे। उन्होंने कहा, 'जेल जाने में कोई शर्म नहीं है। बल्कि यह सम्मान की बात है। श्री तिलक के जेल जाने से पहले उन्हें कुछ ही लोग जानते थे, आज पूरी दुनिया उन्हें जानती है।' 5 गांधीजी सतर्क हो गए: राजनीतिक प्रस्ताव बनाना एक बात थी, लेकिन अगर वे इस मुद्दे में ईश्वर को घसीटते हैं तो उन्हें अपने कार्यों का अर्थ समझाना होगा। वे खड़े हुए और सभा को संबोधित करते हुए बोले: 'हम सभी एक ही ईश्वर में विश्वास करते हैं, हिंदू धर्म और इस्लाम में नामकरण में अंतर के बावजूद।' किसी ईश्वर के नाम पर या उसे साक्षी मानकर शपथ लेना कोई मामूली बात नहीं है… मेरा मानना है कि जो व्यक्ति जानबूझकर और सोच-समझकर शपथ लेता है और फिर उसे तोड़ता है, वह अपनी मर्दानगी खो देता है।’ 6 उन्होंने शपथ को व्यक्तिगत बलिदान के संदर्भ में रखा और कहा कि किसी सभा में बहुमत लोगों को बांध नहीं सकता, उन्हें व्यक्तिगत रूप से कार्य करना चाहिए और सबसे बुरे के लिए तैयार रहना चाहिए – अपमान, जेल, भीषण गर्मी और ठंड तथा कठोर श्रम के लिए। वे अपने श्रोताओं के मन में उत्पन्न होने वाली शहादत की भावना को जगा रहे थे, और एक राजनीतिक दृष्टिकोण को आध्यात्मिक दृष्टिकोण में बदल रहे थे – हालांकि गांधी राजनीतिक आंदोलन

में आध्यात्मिक मूल्यों को लाने वाले पहले व्यक्ति नहीं थे: धार्मिक निष्ठा का प्रश्न मुस्लिम व्यापारियों के नेताओं द्वारा पहले ही उठाया जा चुका था।
गांधी जी के कथनों से प्रेरित होकर, अन्य लोगों ने स्थिति की गंभीरता
पर प्रकाश डाला और श्रोतागण हाथ उठाकर ईश्वर के समक्ष शपथ लेने लगे कि यदि ट्रांसवाल एशियाई अध्यादेश कानून बन जाता है तो वे इसका पालन नहीं करेंगे। इस प्रतिज्ञा की गंभीरता पर भारतीय राय में बल दिया गया: जो भारतीय इस कानून का पालन करेगा, वह ‘अपने ईश्वर को त्याग देगा। दूसरे, उसका सम्मान नष्ट हो जाएगा। तीसरे, वह पूरे भारत के अभिशाप का पात्र होगा।’ 7 गांधी ने दिसंबर 1904 में ही इंडियन ओपिनियन के पन्नों में अहिंसक प्रतिरोध पर चर्चा की थी। उन्होंने तर्क दिया था कि यदि बिना लाइसेंस के व्यापार करने पर मुकदमा चलाया जाता है, तो अभियोजित व्यक्ति को किसी भी प्रकार का जुर्माना देने से इनकार कर देना चाहिए और यदि आवश्यक हो, तो जेल जाना चाहिए: 'ऐसे कारण के लिए जेल जाने में कोई शर्म नहीं है।' 8 हालांकि, व्यापार लाइसेंस का मुद्दा वह मुख्य मुद्दा नहीं था जो व्यक्तिगत बलिदान के वीरतापूर्ण कार्यों को जन्म दे सके। सरकार को समुदाय की भावना की प्रबलता का पता तब चला जब एक प्रतिनिधिमंडल ने औपनिवेशिक सचिव पैट्रिक डंकन से मुलाकात की और हाजी हबीब ने उनसे कहा: 'यदि कोई अधिकारी आकर मेरी पत्नी के उंगलियों के निशान लेने की कोशिश करता है, तो मैं स्वयं को रोक नहीं पाऊंगा। मैं उसे वहीं मार डालूंगा और स्वयं भी मर जाऊंगा।' 9 मंत्री ने जवाब दिया कि सरकार महिलाओं के मुद्दे पर अपने रुख पर पुनर्विचार कर रही है, फिर कहा कि महिलाओं से संबंधित धाराओं को हटा दिया जाएगा। समुदाय ने इसे अपनी पहली जीत के रूप में देखा। हालाँकि सरकार ने घोषणा की कि उसने महिलाओं को छूट देने का निर्णय पहले ही ले लिया था, लेकिन यह बात विश्वसनीय नहीं लगती। कर्टिस एक ऐसा व्यक्ति था जो अपने विचारों में बह जाने की प्रवृत्ति रखता था: शायद सच्चाई यह थी कि जैसे ही उसका अध्यादेश छपा, अधिक समझदार सलाह मानी गई, क्योंकि वे जानते थे कि महिलाओं का पंजीकरण भड़काऊ होगा।
उच्चतम स्तर पर राजनीतिक प्रतिनिधित्व करने के सिद्धांत के अनुरूप, गांधी और हाजी ओजर अली अपना पक्ष रखने के लिए लंदन गए। वहाँ उन्हें सर मंचरजी भवानागरी (जो 1906 में लिबरल पार्टी की भारी जीत में हाउस ऑफ

कॉमन्स में अपनी सीट हार गए थे), दादाभाई नौरोजी और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की ब्रिटिश समिति का सहयोग मिला, जिनसे गांधी के पहले से ही संबंध थे। उन्होंने उपनिवेश मामलों के राज्य सचिव लॉर्ड एल्गिन और भारत मामलों के राज्य सचिव लॉर्ड (तत्कालीन श्री) मोर्ले से मुलाकात की। उन्हें सम्मानपूर्वक मुलाकात का अवसर मिला और वापसी यात्रा पर उन्हें एल्गिन का एक टेलीग्राम प्राप्त हुआ जिसमें कहा गया था कि वे ट्रांसवाल एशियाई अध्यादेश को कानून बनने देने के लिए शाही सरकार की सहमति की अनुशंसा नहीं करेंगे। यह एक बड़ा उत्सव का अवसर था, लेकिन यह जीत अल्पकालिक रही, जैसा कि एल्गिन को पहले से ही पता था। युद्धोत्तर समझौते के तहत 1 जनवरी 1907 को ट्रांसवाल को काफी हद तक स्वशासन प्रदान किया जाना था, जिसके तहत शाही सत्ता के वीटो के अधिकार को गंभीर रूप से सीमित कर दिया गया था। बजट के बाद ट्रांसवाल सरकार का दूसरा कानून मार्च 1907 का एशियाई पंजीकरण अधिनियम था।
भारतीयों को 31 जुलाई से पहले पंजीकरण कराना था, और उसी दिन प्रिटोरिया की मस्जिद के मैदान में एक जनसभा आयोजित की गई। गांधी ने सरकार की ओर से दिए गए भाषण का अंग्रेजी में अनुवाद किया, जिसमें भारतीयों से प्रशासन के पक्ष को समझने की अपील की गई थी: यूरोपीय समुदाय ने इस उपाय का अनुरोध किया था, इसे उचित प्रक्रिया के अनुसार पारित किया गया था; आगे विरोध करना व्यर्थ होगा, लेकिन जनरल स्मट्स (जो अब स्वशासी राज्य में मुख्य संसदीय प्रवक्ता थे) कानून में मामूली बदलावों से संबंधित अभ्यावेदनों पर विचार करेंगे। सभा ने एक बार फिर अपने दृढ़ विरोध की पुष्टि की।
गांधी जी ने चरित्र और आध्यात्मिक शक्ति पर जो जोर दिया, वह उनके दृष्टिकोण की विशेषता थी, लेकिन इस नए दर्शन के लिए उनके पास अभी तक कोई नाम नहीं था। वे सत्याग्रह के सिद्धांत के अस्तित्व में आने के बारे में लिखते हैं, जबकि इसे परिभाषित करने के लिए कोई शब्द मौजूद नहीं था। 1908 की शुरुआत में उन्होंने इंडियन ओपिनियन के पाठकों के बीच एक प्रतियोगिता आयोजित की, जिसमें उन्हें अपने कार्य को परिभाषित करने के लिए एक शब्द खोजना था - यानी किसी विरोधी को अपनी बात मनवाने के लिए नैतिक बल का प्रयोग करना। उनके प्रिय चचेरे भाई (जिन्हें अक्सर उनका भतीजा कहा जाता था) मगनलाल ने गुजराती शब्दों के संयोजन से 'सदग्रह' शब्द बनाकर प्रतियोगिता जीत ली - जिसका अर्थ है 'सद्भावना में दृढ़ता'। गांधी जी ने इसमें संशोधन

किया और सत्य और दृढ़ता के लिए 'सत' और 'आग्रह' शब्दों का प्रयोग किया, जिसका अर्थ है 'सत्य में दृढ़ता'। दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह के दर्शन का विकास राजनीतिक चिंतन में उनका सबसे महत्वपूर्ण योगदान था। हालांकि इसे कभी-कभी 'निष्क्रिय प्रतिरोध' के रूप में अनुवादित किया जाता है, लेकिन गांधी जी का यह तात्पर्य नहीं था। उनका मानना था कि वे जो कर रहे थे उसमें कुछ भी निष्क्रिय नहीं था; इसके अलावा, निष्क्रियता का संकेत भारतीय आलस्य की धारणाओं को बढ़ावा देता था। गांधी जी की दृष्टि में सत्याग्रह स्पष्ट रूप से आत्मनिर्णय या नस्लीय समानता के बारे में नहीं, बल्कि उनके द्वारा परिभाषित 'सत्य' के बारे में एक आंदोलन था।
गांधी जी के सबसे समर्पित अनुयायियों में से एक ने इसकी व्याख्या इस प्रकार की:
प्रत्येक मनुष्य के हृदय में दिव्यता की एक चिंगारी विद्यमान
होती है। सत्याग्रही इस चिंगारी को पहले स्वयं विरोधी के हृदय
में प्रज्वलित करके उसे और प्रज्वलित करने का प्रयास करता है।
अतः सत्याग्रह सत्य और प्रेम पर आधारित होना चाहिए। सत्याग्रही स्वयं कष्ट सहता है ताकि विरोधी विचार करे, न कि उसे कभी कष्ट
देता है। असहयोग और विभिन्न रूपों में सविनय अवज्ञा, ऐसे
कार्यों के परिणामों को सहने की तत्परता और अंतिम उपाय के रूप
में उपवास, सत्याग्रही के एकमात्र साधन हैं जिनका वह उपयोग कर
सकता है। स्वयं कष्ट सहकर सत्याग्रही विरोधी को सोचने और
सत्याग्रही के दृष्टिकोण को समझने के लिए प्रेरित करने का
प्रयास करता है।
गांधी जी के इस विचार के प्रचार का मुख्य साधन 'इंडियन ओपिनियन' था। वे इस बात से बेहद प्रसन्न थे कि संघर्ष के चरम पर इसके 3,500 ग्राहक थे, और पाठकों की संख्या इससे कहीं अधिक थी, क्योंकि एक ग्राहक अपने साथियों के समूह को अपनी प्रति पढ़कर सुनाता था। अखबार की बिक्री में मिली सफलता का मतलब था कि वे विज्ञापन लेना बंद कर सकते थे और प्रेस को अतिरिक्त काम करने की ज़रूरत नहीं थी; अतिरिक्त क्षमता का उपयोग नैतिक मूल्यों वाली पुस्तकों के प्रकाशन में किया गया। 1906 की शुरुआत में नज़र की अचानक मृत्यु के बाद, अखबार का संपादन यूरोपीय लोगों द्वारा किया गया: हर्बर्ट किचिन, हेनरी पोलक और एक बैपटिस्ट पादरी, रेवरेंड जोसेफ डोके। डोके ने ही

1909 में गांधी जी की पहली जीवनी भी लिखी थी। यूरोपीय लोगों को, ज़ाहिर है, एशियाई पंजीकरण अधिनियम के तहत जेल नहीं भेजा जा सकता था, इसलिए अखबार के कर्मचारियों के उत्पीड़न से राष्ट्र और दुनिया को सूचना की आवश्यक आपूर्ति बाधित नहीं हुई।
गांधी के कई समर्थक यूरोपीय थे: उन्होंने अपनी पुस्तक 'दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह' के एक अध्याय में उनकी विशेष प्रशंसा की है, शायद इसलिए कि उनका समर्थन स्वार्थ से प्रेरित नहीं था। जोहान्सबर्ग में गांधी जी बेघर हो गए थे, इसलिए वे एक जर्मन वास्तुकार, हरमन कैलेनबाख के साथ रहने लगे, जहाँ से उन्हें त्याग के मार्ग पर लाने की एक लंबी प्रक्रिया शुरू हुई। अपनी मित्रता के दौरान गांधी जी ने कैलेनबाख को अपने साथ दूध छोड़ने और केवल फलों का आहार लेने के लिए राजी किया। कैलेनबाख गांधी जी के सबसे अच्छे मित्रों में से एक बन गए: वे कैलेनबाख की मृत्यु तक, गांधी जी की मृत्यु से दो वर्ष पहले तक, संपर्क में रहे। उन्होंने कैलेनबाख को लिखा कि वे जर्मन के उनके प्रति 'असाधारण प्रेम' को नहीं समझ पाए - 'मुझे उम्मीद है कि मैं इसके योग्य हूँ' - बाद में उन्होंने इसे 'लगभग अलौकिक प्रेम' कहा। 11 उनका मानना था कि यह इस बात का प्रमाण है कि वे पहले किसी और समय में अन्य शरीरों में रह चुके थे और तब भी एक-दूसरे से प्रेम करते थे। बाद में कैलेनबैक ने गांधीजी के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर किए, जिसके अनुसार यूरोप में अपने परिवार से मिलने जाते समय वे तृतीय श्रेणी में यात्रा करेंगे, एक साधारण किसान से अधिक खर्च नहीं करेंगे और किसी महिला को वासना भरी निगाहों से नहीं देखेंगे। इस समझौते की पुष्टि उनके बीच 'और भी अधिक प्रेम और उससे भी अधिक प्रेम' से हुई, 'ऐसा प्रेम जैसा कि मुझे आशा है, दुनिया ने अभी तक नहीं देखा है'। 12
कैलेनबैक के पत्र शायद और भी स्नेहपूर्ण थे; गांधी ने उन्हें 'मनमोहक प्रेम पत्र' बताया था। उन्होंने उन्हें नष्ट कर दिया क्योंकि वे जानते थे कि कैलेनबैक नहीं चाहेंगे कि उन्हें कोई और पढ़े - 'हर कोई मानता है कि आपका मेरे प्रति प्रेम अत्यधिक है,' उन्होंने लिखा था। 13 जब कैलेनबैक लंदन में भावी दक्षिण अफ्रीकी संघ द्वारा भारतीय अधिकारों की मान्यता के लिए पैरवी कर रहे थे, तब उन्होंने अपने शयनकक्ष में केवल कैलेनबैक का ही चित्र रखा था। कैलेनबैक, जो गांधी से दो वर्ष छोटे थे और कभी शादी नहीं की, उनके मन में समलैंगिक आकर्षण की आशंका हो सकती है, लेकिन इस बात का कोई

प्रमाण नहीं है कि गांधी के प्रति उनका स्नेह कभी शारीरिक रूप से भी प्रकट हुआ हो।
कैलेनबैक ने गांधीजी का परिचय सोलह वर्षीय सोन्या श्लेसिन से एक संभावित सचिव के रूप में कराया। उन्होंने गांधीजी से कहा, 'वह चतुर और ईमानदार हैं, लेकिन बहुत चंचल और उतावली भी हैं।' गांधीजी ने टिप्पणी की: 'एक महीने के भीतर ही उन्होंने मेरा दिल जीत लिया था। वह दिन हो या रात, हर समय काम करने के लिए तत्पर रहती थीं। उनके लिए कुछ भी कठिन या असंभव नहीं था।' 14 पोलक, कैलेनबैक और एक अन्य प्रारंभिक समर्थक, हर्बर्ट किचिन की तरह, श्लेसिन यहूदी थीं (हालाँकि उनमें से कोई भी स्पष्ट रूप से धार्मिक नहीं था, पोलक एक थियोसोफिस्ट के रूप में जाने जाते थे)। सिद्धांतों के प्रति अत्यंत दृढ़ निश्चयी श्लेसिन ने सत्याग्रह आंदोलन के वित्त का कार्यभार तब संभाला जब उसके नेता जेल में थे, और उन चुनौतीपूर्ण समयों में अभियान की दिशा को भी नियंत्रित किया। गांधीजी ने कहा कि उनका 'चरित्र क्रिस्टल की तरह निर्मल और साहस किसी योद्धा को भी लज्जित कर दे'। 15 कार्यालय का जीवन हमेशा सुचारू रूप से नहीं चलता था। गांधीजी ने एक बार लिखा: 'मिस श्लेसिन ने अपनी मूर्खता में मेरी उपस्थिति में सिगरेट पीना शुरू कर दिया।' मैंने उसे थप्पड़ मारा और सिगरेट फेंक दी… [उसने] बाद में मुझे पत्र लिखकर कहा कि वह फिर कभी ऐसा नहीं करेगी और उसने मेरे प्यार को पहचान लिया है।’ 16
श्लेसिन के बाल छोटे कटे हुए थे, वह कॉलर और टाई पहनती थीं और उनका व्यक्तित्व अत्यंत स्वतंत्र था – उन्होंने एमए की डिग्री प्राप्त की और गांधी जी की मदद से दक्षिण अफ्रीका में विधि पेशे में प्रवेश करने वाली पहली महिला बनने का प्रयास किया; उन्होंने उनके लिए प्रशिक्षु क्लर्क के पद के लिए आवेदन किया, लेकिन एक महिला होने के कारण उन्हें मना कर दिया गया। श्लेसिन ने मताधिकार आंदोलनकारी महिलाओं से भी प्रेरणा ली और सत्याग्रहियों को संबोधित करते हुए अपने भाषण में कहा: ‘मैं आपको इंग्लैंड में मेरी बहनों द्वारा चलाए जा रहे इसी तरह के अभियान की याद दिलाना चाहती हूँ। मेरा तात्पर्य मताधिकार आंदोलनकारी महिलाओं से है… कई महिलाएं पहले ही कारावास भुगत चुकी हैं, और भी कई ऐसा करने के लिए तैयार हैं, बल्कि उत्सुक हैं। यदि कोमल स्वभाव वाली महिलाएं ऐसा कर सकती हैं, तो परिश्रम के आदी मजबूत पुरुष क्या कम कर पाएंगे?’ 17

कानून को चुनौती देने और राजनीतिक विरोध के रूप में जेल जाने की प्रक्रिया, जिसके बाद रिहा शहीद के लिए जश्न मनाया जाता था, अक्टूबर 1905 में पहली महिला मताधिकार समर्थकों की गिरफ्तारी के साथ ब्रिटेन में आजमाई और परखी जा चुकी थी। फरवरी 1907 में लंदन में बड़ी संख्या में 'जेल स्वयंसेवकों' को काफी प्रचार के बीच गिरफ्तार किया गया था। पिछले वर्ष गांधी ने महिला मताधिकार समर्थकों की भरपूर प्रशंसा करते हुए लिखा था: 'आज पूरा देश उन पर हंस रहा है, और उनके साथ मुट्ठी भर लोग ही हैं। लेकिन निडर होकर ये महिलाएं अपने उद्देश्य के लिए दृढ़ संकल्पित हैं। वे अवश्य सफल होंगी और मताधिकार प्राप्त करेंगी, क्योंकि कर्म शब्दों से बेहतर होते हैं।' 18 उन्होंने इंडियन ओपिनियन में उनके कार्यों को उत्साहपूर्वक कवर किया। 'क्या भारतीय पुरुष स्त्रैण रहेंगे? या वे अंग्रेजी महिलाओं द्वारा दिखाए गए पुरुषत्व का अनुकरण करेंगे और जागृत होंगे?' 19
किसी शत्रु को अपमानित करने और राजनीतिक उद्देश्य प्राप्त करने के लिए उसे श्रेष्ठ शक्ति का प्रयोग करने के लिए विवश करने की तकनीक विशेष रूप से गांधीवादी नहीं थी। उन्होंने हेनरी डेविड थोरो के कार्यों से भी ज्ञान प्राप्त किया था और अमेरिकी दृष्टिकोण से पूरी तरह सहमत थे कि सर्वोत्तम सरकार वह है जो सबसे कम शासन करती है; वे थोरो के साथ अन्यायपूर्ण कानूनों के विरुद्ध नागरिक के सविनय अवज्ञा के कर्तव्य, अहिंसक प्रतिरोध के महत्व और विचारपूर्वक जीए गए सरल जीवन में भी विश्वास रखते थे। उन्होंने सविनय अवज्ञा पर थोरो का बार-बार उल्लेख किया और इंडियन ओपिनियन में उनके इन विचारों को प्रशंसापूर्वक उद्धृत किया, जैसे कि 'ऐसी सरकार के अधीन जो किसी को भी अन्यायपूर्वक कैद करती है, एक न्यायप्रिय व्यक्ति का सही स्थान भी जेल ही है... दासतापूर्ण राज्य में जेल ही एकमात्र ऐसा घर है जिसमें एक स्वतंत्र व्यक्ति सम्मान के साथ रह सकता है।' 20
एशियाई पंजीकरण अधिनियम के विरोध में, परमिट कार्यालयों के बाहर धरना- प्रदर्शन किया गया ताकि परमिट लेने के इच्छुक लोगों को रोका जा सके। इस दौरान कुछ लोगों ने धक्का-मुक्की भी की, हालांकि गांधी जी ने इसकी निंदा की। जब सरकार के लिए पांच सौ से अधिक भारतीयों का पंजीकरण करना असंभव हो गया, तो उन्होंने अन्य लोगों को दबाव में लाने के लिए एक नेता को गिरफ्तार करने की गलती की: जोहान्सबर्ग में एक हिंदू मंदिर के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले राम सुंदर को गिरफ्तार किया गया और

दर्शकों से भरे न्यायालय में उन पर मुकदमा चलाया गया। उन्हें एक महीने की कैद की सजा सुनाई गई, जिसका समुदाय ने खुशी से स्वागत किया और स्वयं भी जेल जाने की इच्छा व्यक्त की। गांधी जी ने इंडियन ओपिनियन में उनकी तस्वीर और जीवनी प्रकाशित की। जेल में रहते हुए उन्हें बाहर से असाधारण विलासिता की वस्तुएं भेजी गईं और रिहाई के बाद उनका भव्य स्वागत किया गया। गांधी जी के लिए यह विशेष महत्व रखता था कि यह एक हिंदू शहीद थे, जिन्हें मुख्य रूप से मुस्लिम व्यापारियों ने सराहा।
गांधी जी ने अफसोस जताते हुए कहा कि राम सुंदर अच्छे चरित्र के नहीं थे और बाद में उन्होंने दोबारा गिरफ्तार होने के बजाय ट्रांसवाल छोड़ दिया। गांधी जी का क्रोध असामान्य रूप से अनियंत्रित था: 'अब पाखंडी का पर्दाफाश हो गया है, हमें उसे अपने पाठकों के सामने उजागर करने में कोई संकोच नहीं है... राम सुंदर आज से मर चुके हैं। उनका कोई उद्देश्य नहीं है। उन्होंने अपने ही हाथों से खुद को जहर दिया। ऐसी सामाजिक मृत्यु से शारीरिक मृत्यु बेहतर है।' 21 हाजी ओजर एली भी कैद होने के बजाय ट्रांसवाल छोड़कर चले गए। भारतीय समाज में मौजूद उन विभाजनों की अभिव्यक्ति के रूप में, जिन्होंने गांधी जी को उनकी मृत्यु तक पीड़ा दी, एली ने तर्क दिया कि गांधी जी के सहधर्मी, हिंदू फेरीवाले, इस अभियान से उनके अपने मुस्लिम भाइयों, मुस्लिम व्यापारियों की तुलना में कम प्रभावित होंगे, जो बर्बाद हो जाएंगे। गांधी जी ने निराशापूर्वक टिप्पणी की, 'श्री एली मुझ पर पूरी तरह से भरोसा नहीं कर सकते थे क्योंकि मैं एक हिंदू था।' 22
गांधी जी और अन्य नेताओं को दिसंबर 1907 के अंत में अदालत में पेश होने का आदेश दिया गया, उन पर पंजीकरण न कराने का आरोप लगाया गया और उनसे यह साबित करने को कहा गया कि उन्हें देश से क्यों नहीं निकाला जाना चाहिए। सभी को देश छोड़ने का आदेश दिया गया, लेकिन सभी ने निर्धारित समय तक ऐसा करने से इनकार कर दिया और 10 जनवरी 1908 को एक खचाखच भरी अदालत में सजा के लिए पेश हुए - एक ऐसी अदालत जिसमें गांधी जी पहले वकील के रूप में पेश हो चुके थे। उन्होंने अपने साथियों को तीन महीने के कठोर कारावास की सजा सुनाए जाने के बारे में सुना था और जब उन्हें अदालत को संबोधित करने की अनुमति दी गई, तो उन्होंने दलील दी कि यदि इस प्रकार सजा पाए लोगों ने कोई अपराध किया है, तो उन्होंने दूसरों को कानून का उल्लंघन करने के लिए उकसाकर उससे भी बड़ा अपराध किया है और इसलिए उन्हें अधिक सजा मिलनी

चाहिए। मजिस्ट्रेट ने उनकी इस दलील को नहीं माना और उन्हें दो महीने का साधारण कारावास दिया।
गांधी को गंदे जेल के कपड़े पहनने का आदेश दिया गया और उन्हें एक बड़ी कोठरी में डाल दिया गया जहाँ वे अन्य प्रदर्शनकारियों से प्रसन्नतापूर्वक मिले; अब वे अपने आदर्श में थे, पीड़ा सह रहे सत्याग्रहियों से घिरे हुए। उन्होंने कहा, ‘हममें से प्रत्येक ने जेल में अपना समय पूर्ण सुख और शांति से बिताने का दृढ़ संकल्प किया था।’ 23 नेताओं के कारावास के दूसरे या तीसरे दिन से ही अन्य कैदी बड़ी संख्या में आने लगे: भारतीय फेरीवालों ने, योजना के अनुसार, अपने लाइसेंस दिखाने से इनकार करके गिरफ्तारी स्वीकार कर ली थी, ताकि जेलें भर सकें। जनवरी के अंत तक लगभग दो हजार एशियाई लोगों को जेल में डाल दिया गया था, जिनमें अधिकतर भारतीय थे, हालाँकि चीनी लोगों ने भी अपने नेतृत्व में इस अधिनियम का विरोध किया था।
रैंड डेली मेल के एक कार्टून में जनरल जान स्मट्स को 'एशियाई आयुध' लेबल वाली बंदूक लिए एक निर्दयी व्यक्ति के रूप में चित्रित किया गया था: संत गांधी को धमकाते हुए, जिन्होंने उसे अपना सबसे बुरा करने की चुनौती दी थी, स्मट्स ने पाया कि उसकी बंदूक काम नहीं कर रही थी। 24
गांधी ने जेल में अपने समय का सदुपयोग पढ़ने में किया: रस्किन और टॉल्स्टॉय जैसे पुराने पसंदीदा लेखकों के साथ-साथ उन्होंने प्लेटो और सुकरात की रचनाएँ भी पढ़ीं। धार्मिक शांति के लिए उन्होंने एक नियमित दिनचर्या का पालन किया, शायद कुछ हद तक जानबूझकर: सुबह भगवद गीता और दोपहर में कुरान का अंग्रेजी अनुवाद। शाम को वे एक चीनी ईसाई साथी कैदी को बाइबिल पढ़कर सुनाते थे।
लगभग दो सप्ताह जेल में रहने के बाद, उनसे ट्रांसवाल लीडर दैनिक के संपादक अल्बर्ट कार्टराइट मिलने आए, जो भारतीय हित में निष्पक्ष रहे थे और जनरल स्मट्स के करीबी थे। कार्टराइट स्मट्स की ओर से समझौते की शर्तें लेकर आए थे, जिसका सार यह था कि भारतीयों को स्वेच्छा से पंजीकरण कराना चाहिए, और जब अधिकांश ऐसा कर लेंगे, तो सरकार एशियाई पंजीकरण अधिनियम को रद्द कर देगी और स्वैच्छिक पंजीकरण को कानूनी मान्यता देने के लिए कदम उठाएगी। गांधीजी को बताया गया कि मसौदा बातचीत के लिए खुला नहीं था, हालांकि वे उस शर्त को स्पष्ट करना चाहते थे जिसके तहत सरकार को अधिनियम

रद्द करना आवश्यक था। इस समझौते के पीछे के तथ्य यह थे कि आंदोलन विफल हो रहा था, इसके कुछ प्रमुख नेता जैसे एली और हाजी हबीब उपनिवेश छोड़कर चले गए थे, और फेरीवालों ने आगे उत्पीड़न के डर से काम करना बंद कर दिया था। दिसंबर 1907 के अंत तक गांधीजी ने स्वीकार किया कि 511 भारतीयों ने 'गुलाम के रूप में पंजीकरण के लिए आवेदन किया है' - यह जीत का प्रतीक नहीं था। 25
कुछ दिनों बाद उन्हें स्मट्स से मिलवाया गया। गांधीजी के लगभग समान आयु के और उन्हीं की तरह ब्रिटिश-शिक्षित वकील, दृढ़ निश्चयी स्मट्स ट्रांसवाल में अटॉर्नी जनरल रह चुके थे, बोअर युद्ध में जनरल थे और फिर राजनीतिक जीवन में लौट आए थे, बोअर अधिकारों के प्रति समर्पित थे। उन्होंने कैदी का गर्मजोशी से स्वागत किया और गांधीजी को याद दिलाया कि वे भी एक वकील हैं और भारतीय छात्रों को जानते हैं (यह गंभीर स्वभाव वाले स्मट्स की सामान्य बातचीत का एकमात्र उदाहरण था)। गांधीजी ने बताया कि स्मट्स ने उन्हें आश्वासन दिया कि जैसे ही अधिकांश लोग स्वेच्छा से पंजीकरण करा लेंगे और कोई और अशांति नहीं होगी, अधिनियम को निरस्त कर दिया जाएगा। स्मट्स ने बाद में इस बात से इनकार किया। एक टिप्पणीकार ने कहा, ‘गांधी और स्मट्स दोनों ने ही मुश्किल परिस्थितियों में कुशलता से काम लिया और समझौते से दोनों को समय मिल गया।’ 26 स्वयं स्मट्स ने गांधी के प्रति सच्ची श्रद्धा दिखाते हुए बाद में टिप्पणी की: ‘यदि गांधी अपने लोगों के बारे में सोचकर सही थे, तो मुझे भी अपने लोगों के बारे में सोचना था।’ 27 जब उनकी बातचीत समाप्त हुई तो शाम के सात बज रहे थे और गांधी प्रिटोरिया में थे, उनकी जेब में एक भी सिक्का नहीं था; स्मट्स के सचिव ने उन्हें जोहान्सबर्ग का किराया दिया और उन्होंने आखिरी ट्रेन पकड़ ली। जोहान्सबर्ग पहुँचकर गांधी जी ट्रांसवाल ब्रिटिश इंडियन एसोसिएशन के अध्यक्ष से मिले और उसी रात बैठक बुलाई। अधिकांश भारतीय एक ही क्षेत्र में रहते थे और मस्जिद परिसर में बैठक हुई, जिसमें एक हजार से अधिक लोग शामिल हुए। गांधी जी ने समझौते की शर्तें समझाईं, लेकिन समुदाय ने संशय व्यक्त किया: वे भले ही राजनीतिक दांव-पेच में पारंगत न हों, लेकिन व्यापारिक लेन-देन की उन्हें अच्छी समझ थी। उनका मानना था कि यदि वे स्वेच्छा से पंजीकरण कराते हैं, तो वे बिना किसी लाभ के अपना सबसे

शक्तिशाली हथियार खो देंगे – सही प्रक्रिया यह थी कि अधिनियम को निरस्त किया जाए, और फिर स्वैच्छिक पंजीकरण कराया जाए।
गांधी ने तर्क दिया कि वे किसी प्रकार के पंजीकरण के विरुद्ध नहीं थे, बल्कि स्वैच्छिक पंजीकरण न करने के कलंक के विरुद्ध थे। उन्होंने कहा, ‘समुदाय में उत्पन्न हुई नई और शक्तिशाली शक्ति’ की भावना में, ‘सत्याग्रही भय को त्याग देता है। इसलिए वह अपने विरोधी पर भरोसा करने से कभी नहीं डरता। भले ही विरोधी उसे बीस बार धोखा दे, सत्याग्रही इक्कीसवीं बार उस पर भरोसा करने के लिए तैयार रहता है, क्योंकि मानव स्वभाव में अटूट विश्वास ही उसके पंथ का सार है।’ 28
ये भावनाएँ तो उत्तम थीं, लेकिन एक पठान, जो हमेशा इस उद्देश्य के प्रति वफ़ादार रहा था, ने गांधीजी को उनके पहले के शब्दों की याद दिलाई कि संघर्ष उंगलियों के निशान देने की अनिवार्यता पर केंद्रित था, जो केवल अपराधियों पर लागू होती है – तो यह आज गांधीजी के कहे शब्दों से कैसे मेल खाता था? गांधीजी ने समझाया कि परिस्थितियाँ बदल गई थीं: ‘जो कल जनता के विरुद्ध अपराध होता, वही आज की बदली हुई परिस्थितियों में एक सज्जन व्यक्ति की पहचान है।’ 29 यह समझना आसान है कि समुदाय को क्यों लगा होगा कि गांधीजी ने उन्हें धोखा दिया है। वास्तव में, एक व्यक्ति ने चुनौती दी कि गांधीजी को स्मट्स ने 15,000 पाउंड की रिश्वत दी थी और उन्होंने घोषणा की थी कि वे कभी भी अपने उंगलियों के निशान नहीं देंगे और न ही दूसरों को ऐसा करने देंगे। इसके अलावा, वे पंजीकरण के लिए आवेदन करने वाले व्यक्ति को मार डालेंगे। गांधीजी ने जवाब दिया कि उनके मन में किसी भी हमलावर के प्रति क्रोध या घृणा के विचार नहीं हैं। अंततः, घंटों की चर्चा के बाद, सभा ने सर्वसम्मति से समझौते का समर्थन किया। लेकिन यह आखिरी बार नहीं था जब गांधीजी समुदाय की उम्मीदें बढ़ाते, समझौता करते और फिर उन्हें नाराज़ और निराश पाते।
10 फरवरी 1908 की सुबह गांधीजी पंजीकरण प्रमाणपत्र लेने की तैयारी कर रहे थे, क्योंकि यह तय हुआ था कि नेता सबसे पहले पंजीकरण करवाएंगे। जैसे ही वे संगठन के कार्यालय से निकले, पठानों में से एक, मीर आलम, उनके साथ आ गया। एशियाई पंजीकरण कार्यालय से कुछ ही मिनटों की दूरी पर, हट्टे-कट्टे मीर आलम ने गांधीजी को रोका और उसके एक साथी ने पीछे से उन पर हमला कर दिया। गांधीजी 'हे रामा!' कहते हुए जमीन पर गिर पड़े और मीर के साथियों ने

उनके चेहरे और पसलियों पर लात मारी। जब गांधीजी के आसपास मौजूद अन्य नेताओं ने पठानों को रोकने की कोशिश की, तो उन पर भी हमला किया गया। तभी कुछ यूरोपीय राहगीर वहाँ आ गए, जिसके बाद मीर आलम और उसके साथी भाग निकले, लेकिन यूरोपीय लोगों ने उन्हें पकड़ लिया और पुलिस ने हिरासत में ले लिया।
गांधीजी को पास के एक दफ्तर ले जाया गया और एक डॉक्टर ने उनके घावों पर टांके लगाए। उनकी पसलियों, ऊपरी होंठ, बाईं आंख और माथे पर चोटें आई थीं; उन पर लोहे के पाइप और लाठी से हमला किया गया था और लातों से भी मारा गया था। उन्होंने हमलावरों को रिहा करने की गुहार लगाई और घटनास्थल पर पहुंचे एशियाई रजिस्ट्रार से कागजात लाने को कहा, क्योंकि उन्होंने शपथ ली थी कि 'अगर मैं जीवित रहा और ईश्वर को मंजूर हुआ तो' वे सबसे पहले पंजीकरण करवाएंगे। 30 उन्हें जोसेफ डोके के घर ले जाया गया, जिन्होंने अपनी पत्नी के साथ उनका स्वागत किया और उन्हें आराम करने को कहा। जब उन्होंने गांधीजी से पूछा कि क्या उन्हें कुछ चाहिए, तो उन्होंने अपनी छोटी बेटी से भजन 'लीड, काइंडली लाइट' गाने को कहा। अगले दस दिनों तक जब गांधीजी स्वस्थ हो रहे थे, डोके का घर फेरीवालों से लेकर ट्रांसवाल ब्रिटिश इंडियन एसोसिएशन के अध्यक्ष तक, भारतीय समुदाय के लिए तीर्थस्थल बन गया। पर्याप्त रूप से स्वस्थ होने पर गांधी जी नेटाल लौट गए, जहाँ एशियाई पंजीकरण अधिनियम की शर्तें लागू नहीं होती थीं। लेकिन यहाँ भी भारतीय आंदोलन की प्रगति पर नज़र रख रहे थे, क्योंकि आशंका थी कि ट्रांसवाल में हो रहा दमन जल्द ही पूरे दक्षिण अफ्रीका में दोहराया जाएगा। गांधी जी ने डरबन में एक सभा में समझौते के बारे में बताया, जहाँ उन पर फिर से हमला हुआ और अधीक्षक अलेक्जेंडर ने उन्हें फिर से बचाया।
गांधी के समर्थक उनके साथ फीनिक्स गए, जहाँ उन्होंने एक बार फिर इंडियन ओपिनियन में समझौते की व्याख्या की और सत्याग्रह के अपने विचारों को व्यवहार में लाने के महत्व पर विचार किया। अब जब भारतीयों ने स्वेच्छा से पंजीकरण करा लिया था, तो सरकार को पंजीकरण अधिनियम को रद्द करना चाहिए था - लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। जनरल स्मट्स ने अधिनियम को कानून की किताब में बनाए रखा और स्वैच्छिक पंजीकरणों को वैध ठहराने वाला एक उपाय पेश किया, साथ ही एशियाई लोगों के पंजीकरण के लिए अतिरिक्त प्रावधान किए जिससे उनकी स्थिति युद्ध-पूर्व बोअर शासन की तुलना में बदतर हो गई।

स्तब्ध होकर गांधीजी ने अपनी समिति की बैठक बुलाई। समिति ने उन्हें
याद दिलाया कि उन्होंने पहले भी उन पर अत्यधिक विश्वास करने और हर बात पर यकीन कर लेने का आरोप लगाया था, और अब उनके इस भोलेपन का खामियाजा समाज को भुगतना पड़ेगा। उन्होंने जवाब दिया कि उनका 'भोलापन' वास्तव में लोगों पर उनका भरोसा था, सत्याग्रह में उनकी आस्था की परीक्षा थी।
अब समुदाय ने अपने विरोध आंदोलन को पुनर्जीवित करने का निश्चय किया। गांधी ने स्मट्स को पत्र लिखकर उन पर वादा तोड़ने का आरोप लगाया, लेकिन स्मट्स ने कोई जवाब नहीं दिया। फिर गांधी ने मध्यस्थ अल्बर्ट कार्टराइट से मुलाकात की, जिन्हें अच्छी तरह याद था कि स्मट्स ने अधिनियम को रद्द करने का वादा किया था; लेकिन वे जो कुछ कर सकते थे - अखबारों में लेख लिखकर उनकी निंदा करना - वह राजनेता के लिए नगण्य था। यूरोपीय समुदाय, जो स्मट्स का समर्थक था, उसे जवाबदेह ठहराने में कोई दिलचस्पी नहीं रखता था। निस्संदेह, जनरल भी एक उच्च सत्य को मानते थे, लेकिन उसकी व्याख्या अलग थी: उनका उच्च सत्य विश्व पर, और विशेष रूप से 'बर्बर' अफ्रीका पर यूरोपीय प्रभुत्व का महत्व था, जो ईश्वर की योजना का हिस्सा होने के साथ-साथ मानव प्रगति के हित में भी था।
अब भारतीयों को अपने उन पंजीकरण प्रमाणपत्रों को त्यागना था, जो धोखे
से प्राप्त किए गए थे, और उन्होंने इसे यथासंभव सार्वजनिक तरीके से करने का निश्चय किया। 16 अगस्त 1908 को, जिस दिन नया एशियाई विधेयक विधानमंडल से पारित होना था, जोहान्सबर्ग की हमीदिया मस्जिद के परिसर में एक बड़ा कड़ाहा स्थापित किया गया। यदि सरकार नरम नहीं पड़ती, तो इस कड़ाहे में प्रमाणपत्रों को जलाया जाना था। जैसे ही हजारों भारतीय कड़ाहे के चारों ओर जमा हुए, सरकार की ओर से एक टेलीग्राम आया जिसमें उनके अपने निर्णय को न बदलने की घोषणा की गई थी। भीड़ में खुशी की लहर दौड़ गई और उन्होंने अपने प्रमाणपत्रों को आग लगा दी। यह एक नाटकीय घटना थी जिसकी खबर ब्रिटिश प्रेस तक पहुंची – गांधी जी के लिए एक बड़ी सफलता, क्योंकि इस तरह की औपनिवेशिक खबरें ब्रिटिश समाचार पत्रों में शायद ही कभी छपती थीं। स्मट्स ने ट्रांसवाल आप्रवासी प्रतिबंध अधिनियम जैसे उपायों के
माध्यम से भारतीय समुदाय पर अपना हमला जारी रखा, जिसने उन सभी लोगों के प्रवेश पर प्रतिबंध लगा दिया जो यूरोपीय भाषा नहीं समझते थे, और पूरे संघ के लिए एक नए समेकित आप्रवासन विधेयक के प्रस्ताव रखे। गांधी ने स्मट्स

के साथ एक अस्थायी समझौता किया, जिसमें उन्होंने अगले संसद सत्र में भारतीयों की चिंताओं को दूर करने का वादा किया; लेकिन वे अपना वादा पूरा नहीं कर सके, खासकर ऑरेंज फ्री स्टेट के प्रतिनिधियों के विरोध का सामना करते हुए, जिन्होंने किसी भी प्रकार के भारतीय आप्रवासन को बिल्कुल भी बर्दाश्त नहीं किया। गांधी ने अपने अभियान में दक्षिण अफ्रीका के सभी भारत-विरोधी कानूनों को शामिल करने से इनकार कर दिया, क्योंकि उनका मानना था कि ऐसा करने से सत्याग्रह का प्रभाव कम हो जाएगा।
हालांकि, यह संघर्ष विफल होने के कगार पर था, क्योंकि सरकार ने पंजीकरण अधिनियम के उल्लंघन के लिए किसी पर भी मुकदमा चलाने से इनकार कर दिया था, इसलिए सत्याग्रह से अपेक्षित पीड़ा का तत्व उत्पन्न नहीं हो पा रहा था। आप्रवासी प्रतिबंध अधिनियम ने भारतीयों को ट्रांसवाल में प्रवेश करने का इरादा घोषित करके, फिर प्रवेश करके और सरकार को मुकदमा चलाने की चुनौती देकर इस कानून को चुनौती देने का अवसर दिया। बेशक, इसके लिए उन्हें पहले ट्रांसवाल से बाहर होना आवश्यक था, इसलिए गांधी ने अपने नेटाल के संपर्कों से संपर्क किया। इस प्रकार नेटाल से भारतीयों का एक समूह ट्रांसवाल में प्रवेश कर गया, उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया, उन्हें देश छोड़ने का आदेश दिया गया, लेकिन उन्होंने ऐसा करने से इनकार कर दिया और उन्हें विधिवत कारावास में डाल दिया गया। अन्य भारतीयों ने बिना लाइसेंस के व्यापार करके कारावास को आमंत्रित किया।
गांधी को अपने अभियान के दौरान कई बार कारावास की सजा भुगतनी पड़ी, जिसमें एकांत कारावास भी शामिल था। एकांत कारावास उन्हें उन लोगों की तुलना में कहीं अधिक आकर्षक लगा, जिनके साथ उन्हें रहना पड़ा था, क्योंकि वे लोग 'हिंसक, हत्यारे और अनैतिक आचरण में लिप्त' थे। जोहान्सबर्ग की एक भीड़भाड़ वाली कोठरी में एक रात दो लोगों ने गांधी के साथ बलात्कार करने की धमकी दी: उन्होंने दुबले-पतले वकील को घूरा और उनका मजाक उड़ाया, 'एक-दूसरे के गुप्तांगों को उजागर करते हुए अश्लील चुटकुले सुनाए'। गांधी पूरी रात जागते रहे और पहरा देते रहे। 31 उन्होंने कहीं और लिखा है कि 'कई देशी कैदी पशुवत स्वभाव से बस एक कदम दूर हैं'। 32 उन्होंने कहा कि उनके निष्क्रिय विरोधियों को विशेष रूप से 'मूल निवासी' के लिए 'N' चिह्न वाले वस्त्र दिए जाने पर आपत्ति थी: 'हमें गोरों के साथ वर्गीकृत न किए जाने की बात तो समझ में आती थी, लेकिन मूल निवासियों के समान स्तर पर रखा जाना

असहनीय था।' 33 उन्होंने भारतीयों के लिए अलग शौचालयों की व्यवस्था करवाने में सफलता प्राप्त की और यह सुनिश्चित किया कि भारतीयों को कभी भी 'काफिरों के साथ' न रखा जाए, हालांकि कुछ लोग इसे पसंद करते थे क्योंकि वे तंबाकू और अन्य वस्तुओं का व्यापार कर सकते थे। 34 इस समय इंडियन ओपिनियन 'सत्य के सिपाही की कहानी' नामक एक श्रृंखला प्रकाशित कर रहा था, जो प्लेटो के सुकरात के अंतिम दिनों का गांधी द्वारा किया गया गुजराती अनुवाद था। उन्होंने 1907 में वाशिंगटन इरविंग द्वारा लिखित मोहम्मद के जीवन का एक स्वतंत्र अनुवाद प्रकाशित करना शुरू किया था, लेकिन उन्हें रोकना पड़ा क्योंकि मोहम्मद का तथ्यात्मक रूप से उल्लेख करना मुसलमानों को आहत करता था, चाहे वे कितने भी आदरपूर्ण क्यों न हों। मुसलमानों के साथ काम करने के इतने वर्षों के बाद भी, गांधी उनके विश्वदृष्टिकोण को अपने विश्वदृष्टिकोण से सामंजस्य बिठाने में असफल रहे थे।
अक्टूबर से दिसंबर 1908 तक अपनी कैद के दौरान, गांधीजी को एक पत्र मिला जिसमें उन्हें सूचित किया गया कि कस्तूरबा गंभीर रूप से बीमार हैं: उन्हें बार-बार रक्तस्राव हो रहा था और इतना खून बह रहा था कि उनकी जान खतरे में थी। लेकिन गांधीजी ने जुर्माना भरने से इनकार कर दिया, जिससे उन्हें जेल से रिहा किया जा सकता था। उन्होंने पत्र लिखकर कहा कि वे उनसे प्यार करते हैं और उनकी सहानुभूति की भीख मांगी।
आपकी मृत्यु हो जाए तब भी, मेरे लिए आप सदा जीवित रहेंगे। आपकी
आत्मा अमर है। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि आपकी मृत्यु के
बाद मेरा किसी और स्त्री से विवाह करने का कोई इरादा नहीं है।
मैंने आपको यह बात कई बार कही है। आपको ईश्वर पर विश्वास रखना
चाहिए और अपनी आत्मा को मुक्त करना चाहिए। आपकी मृत्यु
सत्याग्रह के लिए एक और महान बलिदान होगी। मेरा संघर्ष केवल
सत्ता के विरुद्ध नहीं, बल्कि प्रकृति के विरुद्ध भी है। मुझे
आशा है कि आप इसे समझेंगे और आहत नहीं होंगे। 35
दरअसल, वह ठीक हो गईं और जब उन्हें अस्पताल से छुट्टी मिली तो गांधीजी उनके साथ डरबन गए, जहाँ उनका ऑपरेशन हुआ। ऑपरेशन के बाद कमजोरी के चलते अस्पताल के डॉक्टर ने एनीमिया दूर करने के लिए गोमांस की चाय पीने की सलाह दी। गांधीजी इसके खिलाफ थे और एक पारंपरिक हिंदू होने के नाते, कस्तूरबा भी इसके खिलाफ थीं। डॉक्टर ने आगे उनका इलाज करने से मना कर दिया क्योंकि

उन्हें सलाह दी गई थी कि वे इलाज नहीं करेंगी। इसलिए गांधीजी उन्हें वापस फीनिक्स ले गए, जहाँ बस्ती के लोगों ने उन्हें झूले पर बिठाकर स्टेशन से दो मील दूर तक पहुँचाया।
कस्तूरबा गांधीजी की जल चिकित्सा पद्धतियों से इलाज कराने के लिए राज़ी हो गईं, हालाँकि उन्हें उनके उपचारों पर कोई भरोसा नहीं था। हमेशा की तरह, उन्हें अपने पति के खान-पान संबंधी सनक का भी संदिग्ध लाभ मिला। उनके बीच इस बात पर बहस हुई कि गांधीजी को स्वास्थ्य के हित में नमक और दालें छोड़ देनी चाहिए; उनका मानना था कि कमज़ोर शरीर वालों को दालों से परहेज़ करना चाहिए (उनका यह भी मानना था कि नमक न खाने से पवित्रता को बढ़ावा मिलता है - यह स्पष्ट नहीं है कि उन्होंने कस्तूरबा को यह सलाह क्यों दी)। उन्होंने समझाया: 'मैंने उन्हें सुझाव दिया कि उन्हें सब्ज़ियाँ और नमक पूरी तरह छोड़ देना चाहिए। उन्हें केवल गेहूँ और फल ही खाने चाहिए।' 36 कस्तूरबा ने अपने पहले से ही सीमित आहार पर इस अतिरिक्त प्रतिबंध का विरोध किया, इसलिए गांधीजी ने उन पर नैतिक दबाव डालने के लिए स्वयं एक वर्ष के लिए नमक और दालों का त्याग करने का वचन दिया; उन्होंने उनसे अपना निर्णय बदलने की विनती की, लेकिन गांधीजी ने महसूस किया कि उन्होंने अपने वचन से कुछ हासिल कर लिया है और इनकार कर दिया। वह मान गईं और उन्होंने नमक और दालें छोड़ दीं (जिससे कम से कम उन्हें कोई नुकसान नहीं हुआ - वह ठीक हो गईं)। गांधी ने इसे सत्याग्रह की विजय माना: इस प्रकार उन्होंने एक संदिग्ध लक्ष्य की प्राप्ति के लिए घरेलू परिस्थिति में प्रतिरोध और हठ को उसी तकनीक का उपयोग करके राजनीतिक सक्रियता से जोड़ा।
कस्तूरबा शायद सबसे अच्छी मरीज़ नहीं थीं, लेकिन गांधी जी में जन्मजात चिकित्सक जैसी कुशलता भी नहीं थी। उन्होंने कैलेनबैक से कहा, ‘मैंने फिर से विनम्रतापूर्वक लेकिन फटकारते हुए कहा कि वह अपने विचारों में पापी है और उसकी बीमारी काफी हद तक उसके पापों के कारण है। तुरंत ही वह चीखने लगी। मैंने उसे मारने के लिए सारा अच्छा खाना छुड़वा दिया था, मैं उससे तंग आ गया था, मैं चाहता था कि वह मर जाए, मैं एक नकाबपोश साँप था।’ इस दृश्य पर विचार करते हुए, उन्होंने बताया कि कैसे उसने उन्हें धैर्य और आत्म-बलिदान की आवश्यकता सिखाई, लेकिन अंत में उन्होंने यह सीख दी: ‘आप किसी

विशेष स्त्री से लगाव नहीं रख सकते और फिर भी मानवता के लिए जी सकते हैं। ये दोनों बातें एक साथ नहीं चल सकतीं।’ 37
जुर्माना और कारावास विफल होने पर, सरकार ने निर्वासन का सहारा लिया, पहले अफ्रीका के अन्य हिस्सों में और फिर वापस भारत। इन निर्वासनों में कुछ भारतीयों ने अपनी जमीन और संपत्ति खो दी, लेकिन उनमें से कई पूर्व बंधुआ मजदूर थे जिनका अपने वतन में कोई परिवार या संबंध नहीं था। गांधीजी ने अपने एक सहकर्मी को निर्वासितों के पहले जत्थे के साथ यात्रा करने की व्यवस्था की और यह सुनिश्चित किया कि भारत पहुंचने पर सहानुभूति रखने वाले भारतीयों ने उनका स्वागत किया। उन्होंने निर्वासन की वैधता पर सवाल उठाने वाले मामलों में सरकार को उलझाने में भी कामयाबी हासिल की, और इस प्रथा को रोक दिया गया।
रतनजी जमशेदजी टाटा जैसे दानदाताओं के दान से इस आंदोलन को समर्थन
मिला, जिन्होंने टाटा आयरन एंड स्टील वर्क्स की स्थापना की थी, लेकिन ज़रूरतें बहुत ज़्यादा थीं और सत्याग्रहियों की दरिद्रता ने आंदोलन को दुविधा में डाल दिया था। गिरफ्तार किए गए लोगों के परिवारों की देखभाल करना ज़रूरी था। गांधीजी ने फैसला किया कि इसका समाधान परिवारों को फीनिक्स जैसे आदर्श समुदाय में बसाना है, जिसे उन्होंने नेटाल में स्थापित किया था: इस तरह 'सार्वजनिक धन की काफी बचत होगी और सत्याग्रहियों के परिवारों को एक-दूसरे के साथ सद्भाव में एक नया और सरल जीवन जीना सिखाया जाएगा।' 38 नई बस्ती जोहान्सबर्ग के पास होनी चाहिए थी। मई 1910 में हरमन कैलेनबाख ने शहर के पास 1,000 एकड़ से अधिक का एक खेत खरीदा और गांधीजी को बिना किराए के उसका उपयोग करने दिया। इसमें एक विशाल बाग, दो कुएँ, एक झरना और कुछ मौजूदा आवास थे।
गांधी ने इसे टॉल्स्टॉय फार्म नाम देने का निर्णय लिया, इसलिए उनका नया समुदाय न केवल एक यूरोपीय के स्वामित्व वाली भूमि पर बना था और रस्किन, एक अन्य यूरोपीय द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों पर आधारित था, बल्कि इसका नाम भी एक यूरोपीय के नाम पर रखा गया था। वे टॉल्स्टॉय के साथ पत्राचार कर रहे थे, लेखक को 'रूस का दिग्गज' कहते थे और स्वयं को 'आपके सिद्धांत का एक विनम्र अनुयायी' के रूप में हस्ताक्षर करते थे। टॉल्स्टॉय ने उत्तर में गांधी से अपने 'प्रिय भाइयों, ट्रांसवाल के भारतीय श्रमिकों' के प्रति अपनी सहानुभूति व्यक्त करने का अनुरोध किया। 39

कैलेनबैक के प्रभाव के कारण टॉल्स्टॉय फार्म फीनिक्स की तुलना में कम कठोर था: कैलेनबैक कुछ हद तक त्याग को स्वीकार कर सकते थे, लेकिन आध्यात्मिक खोज में शरीर को कष्ट देने की उनमें कोई प्रबल इच्छा नहीं थी। गांधी जी को भी यहाँ का अनुभव फलदायी लगा: 'टॉल्स्टॉय फार्म में मेरा विश्वास और साहस अपने चरम पर थे।' 40
वहाँ कोई नौकर नहीं थे: पानी लाने से लेकर आवास बनाने तक, हर काम जहाँ तक संभव हो, बसने वालों को ही करना पड़ता था। गांधी ने टिप्पणी की, ‘खेती का काम जेल के काम से कहीं ज़्यादा कठिन था।’ 41 उन्होंने 1910 में जोहान्सबर्ग सोशलिस्ट सोसाइटी में मुख्य रूप से श्वेत श्रोताओं के सामने अपने सिद्धांतों का वर्णन करते हुए, ‘स्वार्थी, नास्तिक और पाखंडी’ आधुनिक सभ्यता की तुलना अतीत की सभ्यता से की। इंडियन ओपिनियन के लिए उन्होंने अपने शब्दों को संक्षेप में बताते हुए कहा, ‘प्राचीन सभ्यता के दिनों में, मनुष्य दयालु, ईश्वर से डरने वाले और सरल थे और शरीर को आध्यात्मिक उत्थान का साधन मानते थे। प्राचीन जीवन शैली की ओर लौटना आवश्यक है और इसके लिए सादगी और ग्रामीण जीवन को अपनाना चाहिए।’ 42 गांधी का इतिहास – उदाहरण के लिए, नेहरू के इतिहास से अलग – बहुत कम था। अतीत के बारे में उनकी धारणा किसी वास्तविकता से नहीं, बल्कि हिंदू पौराणिक कथाओं के राम राज (राम के शासन) से संबंधित थी।
टॉल्स्टॉय फार्म में पुरुषों और महिलाओं को अलग-अलग रखा जाता था, और शराब पीना और धूम्रपान करना मना था। गांधी जी ने ईसाई और अन्य महिलाओं को, जिनके पति जेल में थे, शाकाहारी भोजन अपनाने के लिए राजी किया (हालांकि उन्होंने उन्हें आश्वासन दिया कि वे चाहें तो मांस खा सकती हैं)। भोजन बहुत ही सरल होता था, जिसमें चावल, दाल, सब्जियां और दलिया मुख्य भोजन होता था। भोजन का समय निश्चित था और सभी एक साथ पंक्ति में बैठकर भोजन करते थे। भोजन के बाद हिंदू महाकाव्य रामायण या इस्लामी ग्रंथों के पाठ के साथ प्रार्थना की जाती थी। वे मजदूरों के कपड़े पहनते थे - लेकिन यूरोपीय मजदूरों के कपड़े, भारतीयों के नहीं - कैदियों की वर्दी से प्रेरित नीली पतलून और कमीज। जब उन्हें जोहान्सबर्ग जाना होता था, तो वे रेल किराए बचाने के लिए इक्कीस मील पैदल चलते थे, और उन्होंने चप्पल बनाना सीख लिया था ताकि उन्हें जूते न खरीदने पड़ें।

आदर्श जीवन के लिए गांधीजी के प्रयोगों की तरह ही, खेत के बच्चों की शिक्षा पर ध्यान नहीं दिया गया और उनसे खेत के सभी कामों में हिस्सा लेने की उम्मीद की जाती थी। बच्चों को जो थोड़ी-बहुत औपचारिक शिक्षा मिलती थी, वह सुबह के काम और दोपहर के भोजन के बाद होती थी, जब गांधीजी ने खुद कहा था कि उन्हें जागते रहना मुश्किल लगता है। मातृभाषा के महत्व पर गांधीजी के जोर के कारण हिंदी, तमिल, गुजराती और उर्दू के साथ-साथ अंग्रेजी भी पढ़ाई जाती थी, और हिंदू संस्कृत सीखते थे। गांधीजी ने अपनी सीमित तमिल और उर्दू सिखाने और हाई स्कूल स्तर की संस्कृत को आगे बढ़ाने का बीड़ा उठाया। गांधी ने विद्यार्थियों को उनके पास मौजूद पाठ्यपुस्तकों पर भी कम ध्यान देने के लिए कहा और आत्मविश्वास से घोषणा की: ‘मुझे लड़कों पर किताबों का बोझ डालना बिल्कुल भी आवश्यक नहीं लगा। मेरा हमेशा से यही मानना रहा है कि विद्यार्थी के लिए सच्ची पाठ्यपुस्तक उसका शिक्षक ही होता है।’ 43 उन्होंने अपनी शैक्षणिक कमियों को खुलकर स्वीकार किया, जो उनके सार्वजनिक जीवन में दूसरों को स्पष्ट थीं। हिंदी बोलने में भी उनका व्याकरण कमजोर था – एक पर्यवेक्षक ने गौर किया कि गांधी अक्सर संज्ञाओं के लिंग गलत बताते थे। जब उन्होंने गोपाल कृष्ण गोखले के लिए अनुवाद करने की पेशकश की, तो गोखले ने जवाब दिया कि गांधी की भाषाई क्षमताएं ‘एक ऐसी उपलब्धि है जिस पर आपको बधाई नहीं दी जा सकती’। 44
गांधी जी न केवल अपने संयम पर, बल्कि दूसरों के संयम पर भी 'प्रयोग' करना पसंद करते थे। उन्होंने एक बार कहा था, 'मैंने शरारती माने जाने वाले लड़कों और भोली-भाली युवतियों को एक ही स्थान पर एक ही समय पर स्नान करने के लिए भेजा था,' उन्होंने उन्हें संयम के कर्तव्य के बारे में पूरी तरह से समझाया था। वे एक निश्चित समय पर स्नान करते थे, और गांधी जी आमतौर पर वहां मौजूद रहते थे। उन्होंने उन्हें एक खुले बरामदे में एक साथ सुलाया भी था, लड़के, लड़कियां और वे स्वयं, उनके बिस्तरों के बीच केवल तीन फीट की दूरी थी: 'मैंने यह प्रयोग इस विश्वास से किया था कि लड़के और लड़कियां इस प्रकार बिना किसी नुकसान के एक साथ रह सकते हैं।' 45
प्रकृति का नियम तो स्वाभाविक है और इस विशेष अवसर पर लड़कों और दो लड़कियों के बीच कुछ यौन संबंधी मज़ाक हुआ, जो संभवतः शारीरिक रूप से विकसित हो रही थीं। जब यह बात गांधीजी को पता चली तो उन्होंने लड़कों को फटकारा, लेकिन लड़कियों के बारे में क्या करें, इस बात को लेकर वे परेशान

थे। वे उन्हें सबक सिखाने और लड़कों को चेतावनी देने के लिए कोई शारीरिक संकेत देना चाहते थे। उन्होंने सोचा, 'लड़कियों को क्या निशान देना चाहिए?' वे पूरी रात इस बात को लेकर चिंतित रहे, फिर उन्होंने सुझाव दिया कि वे उनके लंबे बाल काट दें। लड़कियों ने मना कर दिया, लेकिन गांधीजी ने खेत में काम करने वाली बुजुर्ग महिलाओं को मना लिया और उनका समर्थन प्राप्त कर लिया, अंततः लड़कियां मान गईं और उन्होंने स्वयं उनके बाल काट दिए।
गांधी के सबसे बड़े बेटे हरिलाल अपनी पत्नी के साथ दक्षिण अफ्रीका में अपने माता-पिता के पास गए थे; उन्होंने और उनके भाई मनीलाल ने स्वयं को धर्म प्रचार में समर्पित कर दिया था और उन्हें बार-बार जेल जाना पड़ा था। शिक्षा की कमी को लेकर उनके मन में गहरा असंतोष तब और बढ़ गया जब गांधी ने अपने पुराने मित्र प्राणजीवन मेहता से इंग्लैंड में अध्ययन के लिए छात्रवृत्ति का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया, जिन्होंने लंदन में उनके शुरुआती दिनों में उनकी मदद की थी। उन्होंने यह छात्रवृत्ति अपने किसी बच्चे को देने के बजाय (जैसा कि मेहता चाहते थे) अपने भतीजे छगनलाल को दे दी। उन्होंने मनीलाल को फटकारा: “पढ़ाई का विचार तुम्हें बार-बार क्यों सताता है? यदि तुम आजीविका कमाने के लिए पढ़ाई के बारे में सोचते हो, तो यह उचित नहीं है; क्योंकि ईश्वर सभी को भोजन देता है। तुम शारीरिक श्रम करके भी पेट भर सकते हो।” 46 उन्होंने हरिलाल को लिखा: “मैं तुम्हें सलाह देता हूँ कि परीक्षाओं के इस जुनून को छोड़ दो। यदि तुम पास हो जाते हो, तो इससे मुझे कोई खास फर्क नहीं पड़ेगा। यदि तुम फेल हो जाते हो, तो तुम बहुत दुखी होगे।” 47 जब हरिलाल की पत्नी और बच्चा भारत लौट आए, तब भी उन्होंने हरिलाल को भारत वापस जाने के लिए धन देने से इनकार कर दिया। हरिलाल को अपने पिता के अभियान के दौरान 1908 और 1911 के बीच छह बार कारावास की सजा भुगतनी पड़ी।
जब छगनलाल बीमार पड़ गए और अपनी पढ़ाई पूरी नहीं कर पाए, तो गांधी जी के पास एक बार फिर किसी विद्वान को वकील के रूप में प्रशिक्षण के लिए भेजने का अवसर था। हरिलाल फिर से इच्छुक थे, लेकिन गांधी जी ने एक बार फिर उन्हें दरकिनार करते हुए एक अन्य युवक को चुना। गांधी जी स्वाभाविक रूप से भाई-भतीजावाद के आरोप से बचना चाहते थे, लेकिन यह उनके अपने परिवार के खिलाफ

सक्रिय भेदभाव प्रतीत होता था। पिता और पुत्र के बीच हुए संवाद की झलक मार्च 1911 में हरिलाल को लिखे एक पत्र से मिलती है:
गणित और सामान्य साहित्यिक शिक्षा में कमजोर होने में शर्म की
कोई बात नहीं है। यदि मैंने आपको आवश्यक अवसर दिया होता, तो आप इन्हें सीख सकते थे। भारत में लड़कों के पास जो व्यावहारिक
ज्ञान है, वह स्कूलों में प्राप्त शिक्षा के कारण नहीं, बल्कि
भारतीय जीवन शैली की अनूठी विशेषताओं के कारण है। हमारे
पूर्वजों के पुण्य कर्मों के कारण ही आधुनिक शिक्षा के बार-बार
बढ़ते प्रभाव, लोगों में व्याप्त अनैतिकता और बढ़ती
स्वार्थपरता के बावजूद, हमारे आस-पास अच्छे आचरण, मितव्ययिता
आदि के मानक देखने को मिलते हैं। 48
हरिलाल ने मई 1911 में भारत में अपना भविष्य तलाशने के लिए बस्ती छोड़ दी और अपनी माँ से कहा: ‘उसे हमारी, हममें से किसी की भी परवाह नहीं है।’ 49 गांधी ने अपने बेटे के इस आरोप पर ध्यान दिया: ‘अन्य पिताओं के विपरीत, मैंने अपने बेटों की प्रशंसा नहीं की और न ही उनके लिए कुछ विशेष किया, बल्कि हमेशा उन्हें और बा [कस्तूरबा] को सबसे पीछे रखा, यही आरोप था।’ 50 1915 में हरिलाल ने सीमित वितरण के लिए एक 'अधूरा' पत्र लिखा, जिसमें उन्होंने अपने अब सम्मानित पिता पर परिवार की उपेक्षा करने और विशेष रूप से अपने बेटों को शिक्षा से वंचित करके उन्हें 'अज्ञानी' बनाए रखने का आरोप लगाया। हरिलाल ने अपने और अपने भाइयों के बारे में कहा: 'आपने हमारे साथ वैसा ही व्यवहार किया जैसा सर्कस का रिंगमास्टर जानवरों के साथ करता है... आपने हमसे कभी प्यार से बात नहीं की, हमेशा गुस्से से। बहस में आपने हमेशा हमें अपमानजनक भाषा में संबोधित किया: "तुम अज्ञानी हो... तुममें समझ की कमी है, तुम सोचते हो कि तुम ज्ञान की अंतिम सीमा तक पहुँच गए हो।" चलते-फिरते, सोते-बैठते, पढ़ते-लिखते, आपने हमें हमेशा अपने डर में रखा। आपका हृदय पत्थर का है।' उन्हें लगा कि कस्तूरबा की हालत इससे भी बदतर थी। 51
एक और घटना, चुनाव प्रचार के अंत के करीब, जब दक्षिण अफ़्रीकी सरकार के साथ बातचीत एक महत्वपूर्ण मोड़ पर थी, ने दिखाया कि गांधी व्यक्तिगत नैतिकता के मामलों को कितनी गंभीरता से लेते थे। उनके बेटे मनीलाल और फीनिक्स में रहने वाली जेकी, जो प्रांजीवन मेहता की बेटी थीं, के बारे में

पता चला कि जेकी के पति के फ़िजी में रहने के दौरान वे दो बार 'अपमानित' हुए थे। संभवतः उनके बीच यौन संबंध बने थे। यौन मामलों पर उनकी प्रतिक्रिया, हमेशा की तरह, बहुत कठोर थी: उन्होंने सात दिन का उपवास रखा और अगले साढ़े चार महीने तक दिन में केवल एक बार भोजन करने का संकल्प लिया। इस प्रकार, उन्होंने कहा, 'सभी को यह एहसास हुआ कि पापी होना कितना भयानक होता है।' 52 मनीलाल ने उनके साथ उपवास किया। गांधी ने कहा, ‘मुझे उम्मीद है कि वह
सात दिन का उपवास सहन कर लेंगे, लेकिन अगर इस दौरान उनकी मृत्यु हो जाती है, तो यह अफसोस की बात नहीं होगी।’ 53 उन्होंने मनीलाल को आजीवन ब्रह्मचर्य की शपथ लेने का आदेश दिया और 1927 में कस्तूरबा के दबाव में आकर ही नरम पड़े, जब मनीलाल पैंतीस वर्ष के थे। उन्होंने जेकी को उपवास करने, बाल कटवाने, गहने उतारने और पश्चाताप के प्रतीक के रूप में शोक मनाने को कहा। उन्होंने लिखा: ‘मैंने पहले कभी इतने कष्ट भरे दिन नहीं बिताए जितने मैं अब बिता रहा हूँ… मेरा दिल सूख गया है। मैं जिस पीड़ा से गुजर रहा हूँ, उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। मेरा मन करता है कि मैं अपनी जेब से चाकू निकाल कर पेट में घोंप दूँ।’ 54 बाद में उन्होंने जेकी को उसके पति के पास भेज दिया क्योंकि वह ‘दयाहीन, पश्चातापहीन’ थी। 55 इस मामले को लेकर उनकी पीड़ा का एक और पहलू भी हो सकता है: शायद वह उसे यौन नियंत्रण के उन प्रयोगों में शामिल कर रहे थे जो बाद में उनके जीवन पर हावी होने वाले थे। उन्होंने एक बार फीनिक्स में सोने की व्यवस्था के बारे में लिखा था: 'हममें से अधिकांश लोग यहाँ बरामदे में अगल-बगल सो रहे थे, जेकी मेरे बगल में था।' 56 एक तरह से उन्हें मनीलाल और जेकी के साथ का अनुभव सहायक लगा क्योंकि इससे वे लंबे उपवास की तकनीक को परिपूर्ण कर सके: उन्होंने पानी पीने की आवश्यकता को समझा, भले ही वह बेस्वाद हो, और रामायण को सुनकर उन्हें जो आध्यात्मिक एकाग्रता प्राप्त हुई।
गांधी जी का अपने परिवार के साथ तनावपूर्ण रिश्ता उनके पहले से ही जटिल व्यक्तित्व का एक सबसे कठिन पहलू है। उन्होंने एक बार अपने बेटों के बारे में कहा था: ‘उनका चरित्र अन्य लड़कों से बेहतर है। जब मैं उन्हें अपने मानकों पर परखता हूँ, तभी मुझे उनमें कमी नज़र आती है।’ 57 हरिलाल ने अपने पिता पर आरोप लगाया था कि वे अपने बेटों की तुलना में अपने भतीजों (ठीक कहें तो, उनके दूसरे चचेरे भाइयों) को अधिक महत्व देते थे; सबसे बड़े बेटे के रूप में उन्हें लगता था कि पिता के प्रेम पर उनका अधिकार किसी और से

अधिक है। वास्तव में, यही रिश्ता था जिसके कारण गांधी जी ने उन्हें अस्वीकार कर दिया। यौन इच्छाओं के प्रति उनकी अरुचि इस विश्वास से उपजी थी कि उन्हें अपनी प्रबल यौन इच्छा को नियंत्रित करना होगा, अन्यथा वे आध्यात्मिक महानता प्राप्त नहीं कर सकते। अपने पिता के प्रति उनके कम उम्र में विवाह को लेकर उनका क्रोध शारीरिक वासनाओं से मुक्ति पाने की उनकी इच्छा के संदर्भ में देखा जाना चाहिए। उस कम उम्र में विवाह के कारण, गांधी जी अपने मन को जानने से पहले ही कामुकता से दूषित हो गए थे। इससे पहले कि वे इसे अस्वीकार कर पाते, वे इस संसार की चीजों - अपनी पत्नी और बच्चों - के बोझ तले दब गए थे। बाद में, यौन संबंध से उत्पन्न संतान, यानी अपने बच्चों के प्रति उनमें उदासीनता विकसित हो गई, मानो वे उनकी कामुक प्रकृति के सजीव प्रतीक के रूप में उन्हें सांसारिक दुनिया से बांधे रखते हों और उनका कोई महत्व न हो। जब वे स्वयं यौन प्रवृत्ति के प्राणी बन गए, तो उनकी घृणा लगभग स्पष्ट रूप से प्रकट हुई।
बोअर युद्ध के बाद, दक्षिण अफ्रीका के चारों राष्ट्रों का एकीकरण एक महत्वपूर्ण राष्ट्रीय मुद्दा था, जिसे प्रशासक लियोनेल कर्टिस जैसे आदर्शवादी साम्राज्यवादियों ने बढ़ावा दिया था। यह एकीकरण 1910 में होना था, और जैसे-जैसे समय नजदीक आया, गांधी जी भारतीयों की ओर से राजनेताओं से पैरवी करने के लिए एक बार फिर लंदन गए, इस बार उनके साथ हाजी हबीब (जो दक्षिण अफ्रीका लौट आए थे) भी थे। उन्हें अपने मित्र लॉर्ड एम्पथिल, जो भारत के पूर्व कार्यवाहक वायसराय थे, की सहायता प्राप्त करने का अवसर मिला। ट्रांसवाल के प्रधानमंत्री लुई बोथा ने प्रतिनिधिमंडल को सूचित किया कि वे कानून के व्यावहारिक संचालन पर समझौता करेंगे, लेकिन एशियाई पंजीकरण या आप्रवासन अधिनियमों को निरस्त नहीं करेंगे। उन्होंने नवगठित दक्षिण अफ्रीका संघ को एक नस्लीय राज्य बनाने के अपने दृढ़ संकल्प को बरकरार रखा, जिसमें आप्रवासन के द्वार गोरों के लिए खुले रहेंगे, लेकिन एशियाई लोगों के लिए केवल छिटपुट और विशिष्ट शर्तों के तहत ही खुलेंगे। तत्कालीन उपनिवेश मामलों के सचिव लॉर्ड क्रू को गांधीजी के साथ बातचीत करने की चुनौती का सामना करना पड़ा और उन्होंने कहा कि गांधीजी 'किसी भी प्रकार के समझौते के लिए एक बेहद निराशाजनक और अव्यावहारिक व्यक्ति थे, लेकिन उनमें एक प्रकार की प्रबल, हालांकि संयमित, ईमानदारी थी जो नाजुक समय में सबसे हठधर्मी बन जाती है।' 58 गांधीजी उस समय भी आत्मसात करने की

भाषा का प्रयोग कर रहे थे और इसलिए वे रेशमी टोपी, मॉर्निंग सूट, टाई, स्मार्ट जूते और मोजे पहनते थे।
जब उन्होंने लंदन से घर पत्र लिखा, तो उन्होंने कुछ महिला मताधिकार समर्थकों की एक तस्वीर भेजी और साथ में यह प्रशंसात्मक संदेश लिखा, 'तस्वीर में दिख रही कई महिलाएं जेल जा चुकी हैं।' 59 जब उन्होंने संपत्ति पर हमले सहित अधिक 'उग्रवाद' का रास्ता अपनाया, तो उनके प्रति उनकी सहानुभूति कम हो गई, लेकिन उन्हें उनका अवलोकन करने से लाभ हुआ और उन्होंने इंडियन ओपिनियन को भेजी गई लगभग हर रिपोर्ट में उनके कारनामों का उल्लेख किया। महिलाओं को जेल भेजने के प्रचार मूल्य का विचार शायद उन्हें यहीं आया होगा, और वे अपने अनुयायियों को अगले चरण के लिए तैयार करना चाहते थे।
गोखले ने अक्टूबर-नवंबर 1912 में दक्षिण अफ्रीका का दौरा किया, उन्हें शाही सरकार से कुछ प्रोत्साहन मिला था और दक्षिण अफ्रीकी अधिकारियों ने इस भारतीय उदारवादी का स्वागत किया था। प्रचारक को टॉल्स्टॉय फार्म का अनुभव अनुकूल नहीं लगा, उन्हें वहाँ दिखाई जाने वाली गरीबी से घृणा हुई जिसे उन्होंने 'अतिवाद' समझा, और गांधी और कैलेनबैक द्वारा उन्हें चारपाई, कमोड और भोजन देकर अधिक आरामदायक बनाने के प्रयास भी उन्हें पसंद नहीं आए। उन्होंने कहा, 'आप सभी को लगता है कि आप कठिनाइयों और असुविधाओं को सहने के लिए पैदा हुए हैं, और मेरे जैसे लोग आपके द्वारा लाड़-प्यार पाने के लिए पैदा हुए हैं। मैं कितनी भी कठिनाई सह लूँगा, लेकिन मैं आपके अहंकार को चूर कर दूँगा।' उन्होंने भारत को डुबो देने वाले 'अधूरे विचारों के हिमस्खलन' की तीखी आलोचना की। 60 हालाँकि, उन्हें गांधी के प्रति बहुत श्रद्धा थी, उन्होंने एक भारतीय श्रोताओं से कहा: 'गांधी में अपने आसपास के साधारण लोगों को नायकों और शहीदों में बदलने की अद्भुत आध्यात्मिक शक्ति है।' 61
गांधी से विस्तृत जानकारी प्राप्त करने के बाद, गोखले ने स्मट्स और
बोथा से मुलाकात की। वे वापस लौटे और गांधी को बैठक का परिणाम बताया: ‘आपको एक वर्ष में भारत लौटना होगा। सब कुछ तय हो चुका है। अश्वेत [एशियाई पंजीकरण] अधिनियम निरस्त कर दिया जाएगा। प्रवास कानून से नस्लीय प्रतिबंध हटा दिया जाएगा। 3 पाउंड का कर समाप्त कर दिया जाएगा।’ 62 इस बार गांधी ने दक्षिण अफ्रीकी सरकार के आश्वासनों पर विश्वास नहीं किया – इस

बार गोखले धोखे में आ गए। गांधी ने उनके प्रयासों के लिए उन्हें धन्यवाद दिया। 1 दिसंबर 1912 को जब उन्होंने अपने ‘राजनीतिक गुरु’ को विदा किया, तो उन्होंने बचपन के बाद पहली बार भारतीय पोशाक पहनी।
अब राज्य अपने हमलों को और तेज़ कर रहा था। दक्षिण अफ़्रीकी नस्लीय राज्य पूर्ण नस्लीय भेदभाव के चरम पर पहुँच रहा था, जो अंततः रंगभेद (जिसे 1950 में कानून का रूप दिया गया) के रूप में सामने आया। इस प्रक्रिया के तहत, राज्य की सभी व्यवस्थाएँ जीवन के हर पहलू में नस्लीय आयाम स्थापित करने की ओर अग्रसर हुईं। इस प्रकार, मार्च 1913 में सर्वोच्च न्यायालय ने फैसला सुनाया कि दक्षिण अफ़्रीका में केवल ईसाई विवाह ही वैध हैं; हिंदू, मुस्लिम और पारसी विवाह अमान्य हैं - यह भारतीयों का घोर अपमान था। अब गांधी की महिला समर्थक, जिन्होंने पहले कभी जेल का रास्ता नहीं चुना था, सक्रिय रूप से संघर्ष में शामिल होने लगीं - अवैध रूप से ट्रांसवाल में प्रवेश करना, बिना लाइसेंस के सामान बेचना और अन्य अपराध करना, लेकिन सरकार ने उन्हें जेल भेजने से इनकार कर दिया। अप्रैल 1913 में प्रकाशित एक नए आप्रवासन विधेयक का उद्देश्य मौजूदा अधिकारों को और भी कमज़ोर करना था।
गांधी के सत्याग्रह अभियान में मुक्त किए गए बंधुआ मजदूरों पर लगने वाले 3 पाउंड के कर का जिक्र नहीं था, जो नेटाल के सबसे गरीब भारतीय वर्ग पर एक भारी बोझ था। अब जब सरकार ने गोखले को कर रद्द करने का वादा किया था (जिस वादे से सरकार ने बाद में मुकर गई), तो उन्होंने इसे अपनी मांगों में शामिल करना उचित समझा। इससे पहली बार बंधुआ मजदूरों का विशाल जनसमूह संघर्ष में शामिल हो सकेगा – यह उस समय एक महत्वपूर्ण बात थी जब गांधी की ताकत कम थी: उन्होंने गोखले को लिखा कि उनके पास अधिकतम 65 या 66 और न्यूनतम 16 ही ऐसे मजदूर हैं जिन पर वे भरोसा कर सकते हैं। यह कोई जन आंदोलन नहीं था। इस बदलाव के अनुरूप उन्होंने टॉल्स्टॉय फार्म बंद कर दिया और अपने अनुयायियों को फीनिक्स में केंद्रित किया, क्योंकि नेटाल में जहां बंधुआ मजदूर रहते थे, वहीं उनसे जुड़ना अधिक समझदारी भरा था। इस दिशा परिवर्तन के पीछे गांधी के नेतृत्व के सामने खड़ी चुनौतियाँ थीं, क्योंकि वे अपने कुलीन व्यापारी समर्थकों द्वारा समर्थित किसी भी मुद्दे पर अमल करने में विफल रहे थे: पंजीकरण, बाज़ारों का स्थान निर्धारण और दक्षिण अफ्रीका के भीतर स्वतंत्र आवागमन। गांधी को विफलता के ऐसे

आरोपों का सामना करना पड़ रहा था कि उन्होंने नेटाल इंडियन कांग्रेस की किसी भी बैठक में तब तक भाग लेने से इनकार कर दिया जब तक कि उनकी नीतियों को अस्वीकार करने वाले सचिव पद पर बने रहे। एक सार्वजनिक सभा में तो उन्हें उनके सक्रिय कार्यकाल के दौरान व्यापारियों के अधिकारों के हनन के लिए दोषी ठहराया गया। अधिक न्यायसंगत रूप से, उनकी आलोचना इस बात के लिए की गई कि वे नेतृत्व की बागडोर अपने हाथ में लेने लगे थे, अपनी व्यक्तिगत नीतियों के अलावा वैकल्पिक नीतियों को अपनाने के लिए अनिच्छुक थे, और सक्षम भारतीयों को नज़रअंदाज़ करते हुए यूरोपीय सहयोगियों पर निर्भर थे। बाद में कांग्रेस ने गांधी के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव पारित किया, लेकिन तब तक वे अपने गतिशील कार्यों से अपने विरोधियों को पछाड़ चुके थे।
व्यक्तिगत प्रभाव में गिरावट, घोर निराशा और अनुयायियों की घटती संख्या, अपने ही आंदोलन के विरोध और व्यापारी समुदाय द्वारा अपनी आजीविका का और अधिक त्याग करने की अनिच्छा के बीच, गांधी ने 'सत्य के देवता को अपनी अंतिम भेंट' अर्पित करने का निश्चय किया। 63 उन्होंने फीनिक्स में बसे सभी लोगों, पुरुषों और महिलाओं को, केवल इंडियन ओपिनियन के संचालन के लिए आवश्यक कुछ लोगों और सोलह वर्ष से कम उम्र के बच्चों को छोड़कर, बलिदान करने का निर्णय लिया। वास्तव में, अभियान आगे बढ़ने पर, समाचार पत्र का एक अंक बच्चों द्वारा अकेले ही प्रकाशित किया गया था। सत्याग्रहियों को यथासंभव सीधे तरीके से गिरफ्तारी देनी थी।
उन्होंने कस्तूरबा से अपने मन की बात नहीं कही, क्योंकि उनका मानना था कि उनसे पूछना ही उन्हें आदेश देने के समान है, और उन्हें अपनी मर्ज़ी से जेल जाना चाहिए। उनके इस अविश्वास से कस्तूरबा को ठेस पहुंची और उन्होंने महिलाओं के 'आक्रमणकारी दल' में शामिल होने की ज़िद की। उन्हें और तीन अन्य महिलाओं को ट्रांसवाल में अवैध रूप से प्रवेश करने के आरोप में गिरफ्तार किया गया और तीन महीने के लिए जेल भेज दिया गया। भारत में महिलाओं के कारावास का जनमत पर गहरा प्रभाव पड़ा। भारतीय समुदाय के अन्य अपमानों को विदेश जाकर नई ज़िंदगी शुरू करने वालों का भाग्य मान लिया गया था। विवाह की नई व्याख्या और महिलाओं के कारावास में निहित अपमान देश के लिए असहनीय था। गोखले के नेतृत्व में आयोजित कई सभाओं में दक्षिण अफ़्रीकी सरकार पर जमकर आक्रोश व्यक्त किया गया।

इस आंदोलन के अपने शहीद थे। गांधी जी वल्लीअम्मा मुनुसामी के बारे में लिखते हैं, जो सोलह साल की एक लड़की थी जिसे जेल में बुखार हो गया और रिहाई के तुरंत बाद वह दुर्बल होकर मर गई। एक सच्चे शहीद की तरह, उसने यह जानते हुए भी कि इससे उसकी मृत्यु हो जाएगी, यह ज़िद की कि वह 'फिर से जेल जाने के लिए तैयार' है। गांधी जी के अनुसार, उसने कहा था, 'अपनी मातृभूमि के लिए मरना कौन नहीं चाहेगा?' - यदि उसके शब्दों का अनुवाद सटीक है, तो यह सवाल उठता है कि वह इस संघर्ष को किस बारे में मानती थी। 64 क्या दक्षिण अफ्रीका के गरीब लोग मानते थे कि उनका बलिदान भारत के लिए था?
अन्य महिलाएं, जिनमें मुख्य रूप से तमिल महिलाएं थीं, न्यूकैसल के
कोयला खनन केंद्र गईं और खदानों में काम करने वाले बंधुआ मजदूरों से 3 पाउंड के कर के विरोध में हड़ताल पर जाने का आह्वान किया। हड़ताल से पहले एक जनसभा आयोजित की गई, जिसे अनुभवी सत्याग्रही थंबी नायडू ने संबोधित किया। नायडू स्वयं भी तमिल थे और उन्होंने कर के प्रति लोगों के गहरे असंतोष का लाभ उठाया। नेटाल में रहने की इच्छा रखने वाले पूर्व बंधुआ मजदूरों पर लगाया गया यह कर इसलिए घृणित था क्योंकि यह भारतीयों को मजदूर के रूप में आने से रोकने का एक तरीका था, जो बंधुआ मजदूरी की अवधि समाप्त होने के बाद दक्षिण अफ्रीका में अपना जीवन यापन करना चाहते थे; कई लोगों को अनुबंध के तहत फिर से काम करने के लिए मजबूर होना पड़ा। इन मजदूरों के साथ, गांधीजी को अंततः एक ऐसी शक्ति मिल गई जिसे संगठित और उपयोग में लाया जा सकता था - इस अंतिम अभियान में उनकी अधिकांश ऊर्जा मजदूरों को प्रेरित करने में नहीं, बल्कि उन्हें नियंत्रित करने में लगी।
गांधी जी उत्तरी नेटाल गए और हड़ताली खदानों का दौरा किया, जहाँ मजदूर खदान मालिकों द्वारा उपलब्ध कराए गए परिसरों में रह रहे थे। खदान मालिकों ने उनकी बिजली और पानी की आपूर्ति काट दी थी। उन्होंने मजदूरों को परिसरों से बाहर निकालने का फैसला किया, लेकिन उनके सामने समस्या यह थी कि सैकड़ों हड़तालियों को भोजन और आवास कैसे प्रदान किया जाए। वे गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन कर रहे थे, इसलिए उनके पास कोई बचत नहीं थी।
भारतीय व्यापारियों ने भोजन दिया, हालाँकि वे गांधीजी का सार्वजनिक
रूप से समर्थन नहीं करना चाहते थे क्योंकि उनके खदान मालिकों के साथ व्यापारिक संबंध थे। लाजरस नामक एक तमिल ईसाई ने मजदूरों को सोने के लिए अपनी छोटी सी ज़मीन दी। अपने आत्मविश्वास के एक आश्चर्यजनक प्रदर्शन में,

गांधीजी ने हड़तालियों से कहा कि वे अपने कपड़ों और कंबलों के अलावा कुछ भी न लेकर उनके पास आएं - उन्होंने वादा किया कि जब तक हड़ताल चलेगी, वे उन्हें भोजन उपलब्ध कराते रहेंगे। जैसे ही यह बात फैली, सैकड़ों मजदूर अपनी पत्नियों और बच्चों के साथ, सिर पर कपड़ों के गट्ठे लिए गांधीजी के पास जमीन पर सोने और सामुदायिक बर्तनों से भोजन प्राप्त करने के लिए उमड़ पड़े। गांधीजी ने समझाया कि उनका इरादा उन्हें 'ट्रांसवाल सीमा तक ले जाकर गिरफ्तारी देने का था। हमें रास्ते में गिरफ्तार कर लिया जाएगा। इससे आवास आदि की कठिनाइयों से बचा जा सकेगा और मजदूर काम करते रहेंगे।' 65 इस प्रकार, राज्य की व्यवस्था का उपयोग हड़तालियों को भोजन और आवास प्रदान करने के लिए किया जाना था, जिससे हड़ताल लंबी खिंच सके।
कोयला मालिकों ने गांधीजी से मिलने का अनुरोध किया और उनके सामने अपना तर्कसंगत पक्ष रखा: उनका कहना था कि 3 पाउंड का कर सरकार द्वारा लगाया गया था, लेकिन खनिक इसके खिलाफ हड़ताल कर रहे थे। गांधीजी ने जवाब दिया कि हड़ताल ही मजदूरों का एकमात्र हथियार था; उन्होंने मालिकों को सलाह दी कि वे सरकार पर कर रद्द करने के लिए दबाव डालें – जो वास्तव में वे पहले से ही कर रहे थे। स्मट्स की नीति प्रतीक्षा करने और स्थिति देखने की थी, क्योंकि वे जानते थे कि हड़तालियों की देखभाल करने की आवश्यकता गांधीजी की आर्थिक स्थिति पर भारी दबाव डाल रही थी।
गांधी जी के पास अब चार हज़ार से अधिक हड़ताली और उनके आश्रित थे। उन्होंने उनसे कहा कि वे उन्हें प्रतिदिन डेढ़ पौंड रोटी और एक औंस चीनी उपलब्ध करा सकते हैं; उन्हें अधिकारियों द्वारा दुर्व्यवहार और हिंसा सहनी होगी, यदि गिरफ्तार किया जाता है तो उन्हें चुपचाप आत्मसमर्पण करना होगा और स्वेच्छा से जेल की कठिनाइयों को सहना होगा। मजदूरों ने समझाया कि वे कठिनाइयों के आदी हैं, और 28 अक्टूबर 1913 से वे गांधी जी के नेतृत्व में जुलूस में शामिल हो गए। गांधी जी ने स्वयं 'सेना' के सभी आवश्यक कार्यों में भाग लिया: स्वच्छता व्यवस्था की देखरेख करना, खाना पकाना और परोसना। एक नेता के रूप में वे न केवल अपने अनुयायियों के लिए हमेशा दृश्यमान थे, बल्कि वे उन्हीं गतिविधियों में भाग लेते थे जिनकी उनसे अपेक्षा की जाती थी। ऐसी सहानुभूति उनके नेतृत्व के सर्वोत्तम गुणों में से एक थी। एक पत्रकार ने जुलूस में शामिल लोगों को 'अत्यंत आकर्षक समूह' बताया। देखने में वे बेहद दुबले-पतले, वास्तव में कमजोर

दिखाई देते थे; उनके पैर तो बस लकड़ी के डंडे हैं, लेकिन जिस तरह से वे भुखमरी के राशन पर चल रहे हैं, उससे उनकी असाधारण दृढ़ता का पता चलता है... श्री गांधी को पूर्ण श्रद्धा से देखा जाता है और उन्हें आदतन बापू [पिता] कहकर संबोधित किया जाता है।
गांधी ने सरकार को आश्वस्त करने के लिए पत्र लिखा कि उनका और उनके मजदूरों का इरादा ट्रांसवाल में बसने का नहीं है, बल्कि वे सरकार द्वारा 3 पाउंड के कर को निरस्त करने के अपने वादे के उल्लंघन के खिलाफ विरोध करना चाहते हैं और 'अपने आत्मसम्मान की हानि पर अपनी पीड़ा का विशुद्ध प्रदर्शन' करना चाहते हैं। 67 उन्होंने आगे कहा कि सरकार उन्हें जहाँ भी हों, गिरफ्तार करने के लिए स्वतंत्र है।
गांधी जी ने भोजन की व्यवस्था के लिए अपने अनुभवी सत्याग्रहियों को पहले से ही मार्ग पर तैनात कर दिया था – इनमें हरमन कैलेनबाख और सोन्या श्लेसिन जैसे लोग शामिल थे, जिन्हें यूरोपीय होने के कारण गिरफ्तारी से कुछ हद तक, लेकिन पूर्ण सुरक्षा प्राप्त नहीं थी। ट्रांसवाल सीमा के ठीक अंदर स्थित वोल्क्सरेस्ट कस्बे में स्थानीय यूरोपीय लोगों ने एक बैठक की, जिसमें कुछ लोगों ने भारतीयों को सीमा पार करने पर गोलियों से दंडित करने की धमकी दी। व्यक्तिगत हिंसा के खतरे के बावजूद कैलेनबाख ने साहसपूर्वक बैठक में भाग लिया और भारतीयों का पक्ष रखा। जुलूस शांतिपूर्वक वोल्क्सरेस्ट से होकर गुजरा।
पुलिस ने प्रदर्शनकारियों को गिरफ्तार नहीं किया, लेकिन गांधी को दो बार गिरफ्तार किया। हालांकि मार्च योजना के अनुसार ही आगे बढ़ा और गांधी को हर बार जमानत मिल गई और वे मार्च में फिर से शामिल हो गए, जो अब जोहान्सबर्ग की ओर बढ़ रहा था। उनका इरादा टॉल्स्टॉय फार्म पर रुकने का था, लेकिन उन्हें बाल्फोर में सामूहिक रूप से गिरफ्तार कर लिया गया और तीन विशेष ट्रेनों में बिठाकर वापस नेटाल ले जाया गया।
अंततः गांधी को दोबारा गिरफ्तार किया गया, उन पर मुकदमा चलाया गया और नेटाल से बंधुआ मजदूरों को भगाने के आरोप में उन्हें नौ महीने के कठोर कारावास की सजा सुनाई गई। वोल्क्सरेस्ट जेल में उनकी मुलाकात कलेनबाख और पोलक से हुई, जिन्हें भी गिरफ्तार किया गया था। ट्रांसवाल में घुसपैठ करने के आरोप में प्रतिदिन नए सत्याग्रही जेल पहुँच रहे थे। नेटाल में, जहाँ प्रदर्शनकारियों से भरी ट्रेनें ले जाई गई थीं, उन पर तुरंत मुकदमा

चलाया गया और उन्हें जेल भेज दिया गया। अब सरकार के सामने एक समस्या खड़ी हो गई: हड़तालियों को जेल में डालने का मतलब था कि वे चाहकर भी काम पर वापस नहीं जा सकते थे। कोयला खदानें बंद करनी पड़तीं, जिससे देश का उद्योग ठप्प हो जाता। सरकार ने अब दुनिया की नजरों में सबसे बुरा काम किया: उसने खदानों को जेल की चौकियाँ घोषित कर दिया, उनके यूरोपीय कर्मचारियों को पहरेदार बना दिया और मजदूरों को भूमिगत काम करने के लिए मजबूर कर दिया। इसलिए, यह बंधुआ मजदूरी भी नहीं थी - यह गुलामी थी। गांधी की रणनीति ने सरकार को अपनी पूरी शक्ति का प्रयोग करने, एक अन्यायपूर्ण कानून का बचाव करने के लिए और भी अधिक अन्याय करने के लिए मजबूर कर दिया था। आदर्श रूप से, गांधी के दृष्टिकोण से, मजदूरों की पीड़ा एक विश्व मंच पर प्रदर्शित हो रही थी।
खनिकों के बाद, अन्य उद्योगों के मजदूरों ने भी हड़ताल कर दी, जिसकी शुरुआत दक्षिणी नेटाल के चीनी बागानों के श्रमिकों से हुई। इससे हिंसा और बढ़ गई: घुड़सवार सैन्य पुलिस ने हमला किया, सशस्त्र पुलिस ने हड़तालियों पर गोलियां चलाईं। नवंबर 1913 में एक समय ऐसा आया जब नेटाल के साठ हजार भारतीय श्रमिकों में से अधिकांश हड़ताल पर थे। हड़ताल के खिलाफ कोई कानून नहीं था और सरकार की कार्रवाई पूरी तरह से अवैध थी। भारत के वायसराय लॉर्ड हार्डिंग ने प्रदर्शनकारियों के साथ किए गए व्यवहार के लिए दक्षिण अफ्रीकी सरकार की आलोचना की और लंदन स्थित औपनिवेशिक कार्यालय ने भी कूटनीतिक ढंग से ऐसा ही किया। अंततः स्मट्स ने गांधी, पोलक और कैलेनबैक को रिहा करने का आदेश दिया, फिर सत्याग्रह के बाकी कैदियों को भी रिहा कर दिया, और अपनी शर्मिंदगी भरी वापसी को छिपाने के लिए एक जांच आयोग का गठन किया, जिसका उद्देश्य सरकार के आचरण को सही ठहराते हुए भारतीयों के पक्ष में फैसला सुनाना था।
गांधी ने अब एक अलग वेश धारण किया, पहली बार अपने नायक टॉल्स्टॉय के उदाहरण का अनुसरण करते हुए, जिन्होंने न केवल किसान की तरह जीने का बल्कि किसान की तरह कपड़े पहनने का भी निश्चय किया था। यूरोपीय और पारसी पोशाक के मिश्रण में पश्चिमी शिक्षा प्राप्त भारतीय वकील के रूप में दिखने के बजाय, गांधी ने अब एक सादा, घुटने तक लंबा सफेद सूती कुर्ता और मजदूरों द्वारा पहनी जाने वाली स्कर्ट जैसी लुंगी पहनी। वे नंगे पैर थे और उनके सिर के ऊपर एक छोटा सा हिस्सा छोड़कर लगभग पूरी तरह से मुंडा हुआ था, जो

पुलिस के साथ मुठभेड़ में मारे गए दस भारतीयों के लिए शोक का प्रतीक था, जिनकी मृत्यु की जिम्मेदारी उन्होंने ली थी। 22 दिसंबर 1913 को पीटरमैरिट्जबर्ग जेल के बाहर महिला कैदियों से मिलने के लिए वे इसी वेश में थे, जिनमें कस्तूरबा भी शामिल थीं, जो अपने कष्टों से स्पष्ट रूप से कमजोर हो गई थीं। कुल मिलाकर लगभग 2,500 भारतीय, या ट्रांसवाल की निवासी भारतीय आबादी का लगभग पांचवां हिस्सा, जेल गए, जिनमें से कई बार जेल गए। 68
गांधी ने ‘जांच आयोग’ की निरर्थक प्रक्रिया में कोई योगदान नहीं दिया, लेकिन वे स्मट्स और केंद्र सरकार के अन्य सदस्यों से मिलने के लिए तैयार थे। स्मट्स उस समय श्वेत रेलकर्मियों की हड़ताल में व्यस्त थे, जिसके चलते उन्होंने मार्शल लॉ घोषित कर दिया था। यूरोपीय हड़तालियों ने शांतिपूर्ण विरोध का कोई दावा नहीं किया – वे अपनी बात न मनवाने पर सरकार को उखाड़ फेंकने को तैयार थे। अपने विरोधी की असुविधा से लाभ न उठाना चाहते हुए, गांधी ने जांच आयोग की पक्षपातपूर्ण संरचना की आलोचना के लिए आयोजित होने वाले एक मार्च को रद्द कर दिया।
गांधी जी यूरोपीय प्रशासकों के साथ अपने संबंधों का आनंद लेते प्रतीत होते थे, यहाँ तक कि जब वे उनके विरुद्ध तर्क दे रहे होते थे तब भी। प्रिटोरिया की केंद्रीय जेल में रहते हुए उन्होंने अपना कुछ समय स्मट्स के लिए चमड़े की चप्पलें बनाने में बिताया, ताकि वे अपनी अरुचि प्रदर्शित कर सकें। जनरल ने उन्हें बहुत पसंद किया; लेकिन जब गांधी जी चले गए, तो स्मट्स ने टिप्पणी की: 'संत जी हमारे तटों को छोड़कर चले गए हैं, मुझे आशा है कि हमेशा के लिए।' 69
आयोग ने सरकार की कार्रवाइयों को सही ठहराने और स्वीकार्य समझौता करने का अपना काम बखूबी किया। 1914 के भारतीय राहत विधेयक ने 3 पाउंड के कर को समाप्त कर दिया और बकाया राशि माफ कर दी; गैर-ईसाई विवाहों को मान्यता दी गई। हालांकि, दक्षिण अफ्रीका के भीतर सीमाओं के पार आवागमन अभी भी प्रतिबंधित था, पंजीकरण अभी भी अनिवार्य था, और भारतीय व्यापार का कोई अधिक न्यायसंगत प्रशासन लागू नहीं किया गया था। फिर भी, 1914 तक गांधी जी ने 1906 में शुरू हुए सत्याग्रह संघर्ष को पूर्ण मान लिया था, भले ही उन्हें अपने पूर्व समर्थकों की कड़ी आलोचना का सामना करना पड़ा, जिन्होंने अभियान के उद्देश्यों और उसकी उपलब्धियों के बीच अंतर बताया।

सकारात्मक पक्ष यह था कि इन वर्षों में भारतीयों में सामुदायिक भावना और अपनी पृष्ठभूमि पर गर्व की भावना विकसित हुई थी और वे अब एक सशक्त शक्ति बन गए थे।
श्वेत प्रशासक और प्रदर्शनकारी, जिन्होंने भारतीयों का विरोध किया, वे भी निश्चित रूप से नस्लीय राज्य के संदर्भ में अपने अधिकारों की अभिव्यक्ति कर रहे थे, जिसका गांधी और उनके समर्थकों ने पूर्ण रूप से विरोध करने का कोई संकेत नहीं दिया। भारतीय व्यापारियों का तर्क था कि उनकी नस्ल और आर्थिक स्थिति ही उनके अधिकारों की गारंटी होनी चाहिए, न कि प्रत्येक भारतीय (या अफ्रीकी) को नागरिक अधिकार मिलने चाहिए। गांधी नस्लीय राज्य को उस स्वरूप की ओर धकेल रहे थे जो अंततः उसे अपनाना ही था: शीर्ष पर श्वेत और निचले स्तर पर अश्वेतों के बीच, मध्यवर्ती अधिकारों वाले भारतीयों और 'रंगीन' लोगों के एक बफर नस्लीय समूह का स्वरूप। अफ्रीकी मूल निवासियों के अधिकारों के लिए चलाए गए अभियान में चिंता की कमी उस समय की परिस्थितियों में समझ में तो आती थी, लेकिन आकर्षक नहीं थी। गांधी ने अफ्रीकियों के अधिकारों के प्रति सहानुभूति दिखाई, लेकिन किसी भी ठोस गठबंधन से यूरोपीय लोग नाराज हो जाते और गांधी के व्यापारी समर्थकों को भी प्रसन्नता नहीं होती। फिर भी, उनके अभियान ने अफ्रीकियों के लिए कुछ हद तक लाभ पहुँचाया, क्योंकि इससे न केवल यह सिद्ध हुआ कि दक्षिण अफ्रीकी शासन के विरुद्ध संघर्ष संभव है, बल्कि यह भी कि यदि इस संघर्ष को अन्याय के विरुद्ध अभियान के रूप में चलाया जाए, तो इसे यूरोपीय समर्थन का अच्छा-खासा हिस्सा मिलेगा – एक ऐसा संदेश जिसे नेल्सन मंडेला और अफ्रीकी राष्ट्रीय कांग्रेस ने विनाशकारी प्रभाव डालने में सक्षम बनाया। दक्षिण अफ्रीका के लोगों के लिए गांधी का सबसे महत्वपूर्ण उपहार यही था: नस्लीय संघर्ष को एक ऐसे स्वरूप में ढालना जिससे अधिकतम नैतिक समर्थन प्राप्त हो सके।
यह कहना गलत नहीं होगा कि, कई लोगों की तरह जिन्हें अपना भाग्य आजमाने के लिए विदेश जाना पड़ता है, खासकर व्यापारियों और मजदूरों की तरह, जो उनके समर्थक थे, गांधीजी को दक्षिण अफ्रीका ने ही बनाया। व्यावहारिक रूप से, नेटल इंडियन कांग्रेस और ट्रांसवाल इंडियन एसोसिएशन के लिए काम करने से उन्हें राजनीतिक संगठन चलाना सिखाया; इंडियन ओपिनियन ने उन्हें अखबार चलाना सिखाया और फीनिक्स और टॉल्स्टॉय फार्म ने उन्हें आत्मनिर्भर

समुदाय चलाना सिखाया। आर्थिक रूप से, गांधीजी ने वकालत से अच्छी कमाई की: उन्होंने लंदन में अपनी शिक्षा पर खर्च की गई राशि को दक्षिण अफ्रीका में अपने सफल वकालत के पेशे से लगभग पांच गुना अधिक चुका दिया, इसलिए वे पारिवारिक दायित्वों से मुक्त महसूस करते थे।
अन्य लोगों की नज़र में उन्होंने अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कर ली थी, और उनकी राजनीतिक तकनीक और कौशल चर्चा का विषय बन रहे थे। भारत में उन्हें राष्ट्रवादी राजनीति के उच्च स्तर तक पहुँच प्रदान की जानी थी, जो उन्हें 1902 में दक्षिण अफ़्रीकी अभियान से पहले नहीं मिली थी। 1910 में गोखले ने उन्हें भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के उस वर्ष के अधिवेशन के अध्यक्ष पद के लिए प्रस्तावित भी किया था।
लेकिन गांधी जी इन्हें अपनी सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि नहीं मानते थे: उनके लिए सबसे ज़्यादा मायने उनकी आध्यात्मिक प्रगति रखती थी। लंदन में भोजन पर प्रयोग कर रहे उस जिज्ञासु युवक ने अपना मार्ग खोज लिया था और दूसरों को भी सिखाने की प्रेरणा पाई थी। उन्होंने सत्याग्रह के मूल सिद्धांतों को प्रतिपादित किया था: अहिंसा और किसी उद्देश्य के लिए कष्ट सहना। उन्होंने न केवल ब्रह्मचर्य का पालन करना शुरू किया, बल्कि उसका प्रचार भी किया; उन्होंने लोगों के बड़े समूहों को प्रेरित करने की क्षमता विकसित कर ली थी। दक्षिण अफ्रीका में गांधी जी को अपना समर्थक वर्ग मिल गया था; उनके कई करीबी शिष्य ईसाई और यहूदी थे और आगे भी रहेंगे। जिन लोगों के साथ उनका अच्छा तालमेल था, वे आध्यात्मिक सत्य की खोज करने वाले पश्चिमी लोग थे, जो उनकी आध्यात्मिक यात्रा में व्यक्त किए जा रहे दृष्टिकोण से सहमत थे। मुसलमान उनके संदेश के प्रति अधिक प्रतिरोधी थे, वे उनके दृष्टिकोण के लाभों की तुलना अन्य दृष्टिकोणों से करना चाहते थे; ऐसा माना जाता है कि मुस्लिम व्यापारी इस्लाम के संदेश से आध्यात्मिक रूप से संतुष्ट थे और उन्हें आगे की खोज में कोई लाभ नहीं दिखता था। गांधीजी का दृष्टिकोण उनसे बिलकुल भिन्न था: यह बात शायद ही किसी से छिपी नहीं थी कि वह यथासंभव कम खर्च में जीवन यापन करने का प्रयास कर रहे थे, जबकि व्यापारियों का उद्देश्य भौतिक समृद्धि था।
शिक्षित हिंदू उनका सम्मान तो कर सकते थे, लेकिन उनका अनुसरण नहीं करना चाहते थे। उन्हें किसी भी धर्म के धनी भारतीयों का समर्थन मिल सकता था, लेकिन गरीबों को प्रेरित करके ही वे राजनीतिक जगत में हलचल मचा सकते थे।

उनकी सबसे बड़ी सफलता गरीब तमिल हिंदू श्रमिकों के बीच मिली: लगभग संयोग से, नेटाल के मजदूरों ने ही उन्हें सही राह दिखाई थी।
18 जुलाई 1914 को, लगभग पैंतालीस वर्ष की आयु में गांधी ने अपने निकटतम समर्थकों को इकट्ठा किया और बीस वर्षों से अधिक समय बाद दक्षिण अफ्रीका से भारत के लिए रवाना हुए। अब वे एक परिपक्व व्यक्ति थे, जिनका एक निश्चित उद्देश्य था।

6

ग्राम कार्यकर्ता गांधी ने नवगठित दक्षिण अफ़्रीकी संघ में भारतीयों के अधिकारों के लिए व्यावहारिक प्रयास किए, लेकिन साथ ही साथ उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता के सिद्धांत को विकसित करने का भी समानांतर प्रयास किया। उनकी दृष्टि हमेशा अपने देश की मुक्ति के लक्ष्य पर टिकी रही। बीसवीं शताब्दी के आरंभिक वर्षों में उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में नेतृत्व के लिए लगन से तैयारी की। उन्होंने यह निश्चय किया कि अगली बार जब वे उपमहाद्वीप के राजनीतिक मंच पर कदम रखेंगे, तो उन्हें 1901 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में मिली उपेक्षा और छोटी भूमिका नहीं दी जाएगी।
1909 में लंदन में रहते हुए गांधी ने भारतीय प्रवासी समुदाय से संपर्क करने और उन्हें समझने का प्रयास किया, जो अपने युवा स्वरूप में हिंसा की ओर झुकाव रखता था। उन्होंने कहा कि वे 'लंदन में हर ज्ञात भारतीय अराजकतावादी' के संपर्क में आए थे, जिनकी बहादुरी ने उन्हें प्रभावित किया था, लेकिन जिन्हें वे गुमराह मानते थे।
गांधी जी जुलाई में लंदन पहुंचे थे; उसी महीने की शुरुआत में भारत के राज्य सचिव के कार्यालय में कार्यरत सर कर्ज़न वाइली को नेशनल इंडियन एसोसिएशन के एक स्वागत समारोह में छात्र मदनलाल ढिंगरा ने गोली मार दी थी। हत्या को रोकने की कोशिश करने वाले एक पारसी डॉक्टर की भी हत्या कर दी गई। ढिंगरा ने जोर देकर कहा कि उसने अकेले ही यह काम किया था और उसे इस अपराध के लिए फांसी दे दी गई। वास्तव में, वह विनायक सावरकर के इर्द-गिर्द जमा हुए राष्ट्रवादी क्रांतिकारियों के एक समूह से प्रेरित था, जो उत्तरी लंदन के हाईगेट में भारतीय छात्रों के लिए एक छात्रावास, इंडिया हाउस चलाने वाला एक उग्रवादी व्यक्ति था। सावरकर ने ढिंगरा को हत्या के लिए प्रशिक्षित किया था; लॉर्ड कर्ज़न पर किया गया पहला हत्या का प्रयास, जो बंगाल के विभाजन के लिए जिम्मेदार थे, असफल रहा था।
गांधी ने हिंसा की स्पष्ट रूप से निंदा की: ‘विश्वासघात का कोई भी कृत्य किसी राष्ट्र को लाभ नहीं पहुंचा सकता। यदि ऐसे हत्यारों के परिणामस्वरूप अंग्रेज चले भी जाएं, तो उनकी जगह कौन शासन करेगा? इसका

एकमात्र उत्तर है: हत्यारे।’ इस प्रकार वे हिंसात्मक कृत्यों और उन्हें करने वालों पर पड़ने वाले उनके आध्यात्मिक प्रभाव दोनों के प्रति असहिष्णु थे। स्वतंत्रता बुरे कर्मों से प्राप्त नहीं हो सकती थी: ‘भारत हत्यारों के शासन से कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकता।’ 2 कांग्रेस पार्टी के माध्यम से गांधी के इस दृष्टिकोण के बाद के प्रभुत्व ने इस तथ्य को धुंधला कर दिया है कि सावरकर जैसे लोगों की हिंसा, राष्ट्रवादियों की एक तकनीक के रूप में अहिंसक प्रतिरोध के साथ प्रतिस्पर्धा कर रही थी। विशेष रूप से अंग्रेजों के लिए, हिंसा स्वतंत्रता आंदोलन के लिए एक सर्वव्यापी संभावना थी यदि अहिंसक दृष्टिकोण विफल हो जाता।
गांधी जी चरमपंथियों से मिलने को विशेष महत्व देते थे। कड़क कमीज और
कोट पहने हुए, उन्होंने उनमें से कुछ द्वारा आयोजित एक रात्रिभोज में भाषण दिया। उन्होंने लॉर्ड एम्पथिल को समझाया:
मैंने तथाकथित चरमपंथियों से संपर्क करने का विशेष प्रयास किया
है, जिन्हें हिंसा की पार्टी कहना अधिक उचित होगा। मैंने ऐसा
इसलिए किया है ताकि संभव हो तो उन्हें उनके गलत आचरण का एहसास
करा सकूँ। मैंने देखा है कि इस पार्टी के कुछ सदस्य गंभीर
स्वभाव के हैं, उच्च नैतिक मूल्यों, उत्कृष्ट बौद्धिक क्षमता और उच्च आत्म-बलिदान की भावना से परिपूर्ण हैं। यहाँ के युवा
भारतीयों पर उनका निस्संदेह गहरा प्रभाव है। 3
यही वह पृष्ठभूमि थी जिसके आलोक में, 1909 के पतझड़ के अंत में किल्डोनन कैसल जहाज पर दक्षिण अफ्रीका लौटते समय, गांधी ने जहाज के स्टेशनरी पर गुजराती में हिंद स्वराज ('भारतीय स्वशासन') लिखा था। मूल पांडुलिपि में कुछ ही अंश हटाए गए हैं। यह रचना, उनके जीवन की सबसे महत्वपूर्ण रचना, उनके हृदय से निकली थी। इसे उन्होंने एक सप्ताह से कुछ अधिक समय में, सचमुच दोनों हाथों से लिखा था: जब उनके दाहिने हाथ में लेखन की ऐंठन हुई, तो उन्होंने अपने बाएं हाथ का इस्तेमाल किया। प्रस्तावना में उन्होंने कहा: 'मैंने इसलिए लिखा क्योंकि मैं खुद को रोक नहीं सका।' इसे ‘शांतिप्रिय व्यक्ति के लिए एक उत्तेजक घोषणापत्र’ कहा गया है। 5 इसके तीस हजार शब्द आतंकवाद सहित पश्चिमी संघर्ष के विभिन्न रूपों का विरोध करते हैं। गांधी ने कहा कि उन्होंने इसे ‘भारतीय हिंसा की विचारधारा के जवाब में’ लिखा था। 6 इसमें स्वशासन आंदोलन, बंगाल के

विभाजन, जिसने भारतीय राजनीतिक जीवन में एक ‘जागरूकता’ उत्पन्न की, और प्रमुख राष्ट्रवादी बाल गंगाधर तिलक द्वारा शुरू किए गए स्वदेशी आंदोलन का संक्षिप्त इतिहास दिया गया है, जिसमें विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार और घरेलू उत्पादन को बढ़ावा देने का आह्वान किया गया था।
हिंद स्वराज में गांधीजी ने रस्किन, टॉल्स्टॉय और थोरो से सरल जीवन के बारे में जो कुछ भी सीखा था, वह सब समाहित है, साथ ही एडवर्ड कारपेंटर के विचार भी इसमें शामिल हैं। यह पुस्तक पश्चिम में प्रगति के प्रतीक माने जाने वाले विचारों की कड़ी निंदा करती है: “मुझे लगता है कि यदि भारत ‘आधुनिक सभ्यता’ को त्याग दे, तो उसे लाभ ही होगा,” उन्होंने इसके संदेश का वर्णन करते हुए लिखा। “मेरा उद्देश्य रेल या अस्पतालों को नष्ट करना नहीं है, हालांकि मैं उनके स्वाभाविक विनाश का स्वागत करूंगा। न तो रेल और न ही अस्पताल एक उच्च और शुद्ध सभ्यता की कसौटी हैं। वे अधिक से अधिक एक आवश्यक बुराई हैं। इनमें से कोई भी राष्ट्र के नैतिक स्तर में एक इंच भी वृद्धि नहीं करता।” 7 कानून अदालतों, मशीनरी और कपड़ा मिलों के साथ-साथ इनका विनाश भी समय के साथ होगा, जैसे-जैसे राष्ट्र की नैतिक अखंडता परिष्कृत होगी। गांधीजी औद्योगिक क्रांति से पहले की उन परिस्थितियों में लौटना चाहते थे, जिनमें आर्थिक समृद्धि राजनीति का मुख्य उद्देश्य थी।
यदि भारत प्रेम के सिद्धांत को अपने धर्म का सक्रिय हिस्सा बना ले और उसे अपनी राजनीति में शामिल कर ले, तो स्वराज भारत पर स्वर्ग से उतर आएगा… मुझे अंग्रेजों से कोई शत्रुता नहीं है, लेकिन उनकी सभ्यता से है।’ 8 उन्होंने बड़े शहरों और रेलवे नेटवर्क के आगमन से पहले की भारत की संस्कृति की प्रशंसा की, उस ग्रामीण भारत की जो अभी भी अस्तित्व में था ‘जहाँ यह अभिशापित आधुनिक सभ्यता नहीं पहुँची थी’। उन्होंने भारत की आध्यात्मिक विरासत को पश्चिमी विचारों और प्रौद्योगिकी द्वारा दूषित माना: ‘जो कुछ आप और मैंने अब तक भारत के लिए लाभकारी समझा है, वह अब मुझे ऐसा नहीं लगता… रेलवे, वकीलों और डॉक्टरों ने देश को इतना गरीब बना दिया है कि यदि हम समय रहते नहीं जागे, तो हम बर्बाद हो जाएँगे।’ 9 रेलवे ने महामारी फैलाई; वकील आलसी थे और संदिग्ध सेवाओं के लिए अत्यधिक पारिश्रमिक लेते थे; डॉक्टर उन बीमारियों का प्रभावी ढंग से इलाज करके बीमारी को बढ़ावा देते थे जो लोगों की जीवनशैली बेहतर होने पर उत्पन्न नहीं होतीं। ‘मैंने दुराचार किया, मुझे कोई बीमारी हो गई, डॉक्टर ने मेरा

इलाज किया, संभावना यही है कि मैं फिर से वही दुराचार दोहराऊँगा।’ 10 गांधी ने कहा था कि एक समय उनकी इच्छा डॉक्टर बनने की थी, लेकिन अब उनकी यह इच्छा नहीं रही। उन्होंने कहीं और लिखा: ‘जब मैंने चिकित्सा प्रशिक्षण लेने के बारे में सोचा तो मैं पूरी तरह से गलत था। अस्पतालों में होने वाली घृणित गतिविधियों में भाग लेना मेरे लिए किसी भी तरह से पाप होगा।’ 11 उन्होंने कारखानों, हवाई परिवहन और प्रकाशन पर भी हमला किया। औद्योगिक क्रांति से पहले की उस सुखमय अवस्था में लौटने का मार्ग ‘असंयमित प्रतिरोध’ था, जिसे ‘व्यक्तिगत कष्टों द्वारा अधिकारों को सुरक्षित करने की विधि’ के रूप में परिभाषित किया गया था; यह ‘हथियारों द्वारा प्रतिरोध का विपरीत’ है… जो लोग देश की सेवा के लिए असंयमित प्रतिरोधक बनना चाहते हैं, उन्हें पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करना होगा, गरीबी अपनानी होगी, सत्य का अनुसरण करना होगा और निर्भीकता का विकास करना होगा।’ गांधी ने चेतावनी दी: ‘अपवित्र व्यक्ति अपनी शक्ति खो देता है, नपुंसक और कायर हो जाता है। जिसका मन पशुवत वासना में लीन रहता है, वह किसी भी महान प्रयास के योग्य नहीं होता।’ 12
हिंद स्वराज की सबसे पहली आश्चर्यजनक बात इसकी लेखन शैली है – सुकरात
के संवाद की शैली, जिससे गांधीजी ने जेल में रहते हुए प्लेटो को पढ़कर परिचित हुए थे। 'संपादक' गांधीजी का प्रतिनिधित्व करता है, जबकि 'पाठक' उनके उन विरोधियों का, जो प्रत्यक्ष कार्रवाई के अधिक हिंसक साधनों को प्राथमिकता देते हैं। जिन संदर्भों का उन्होंने उल्लेख किया है, वे लगभग सभी पश्चिमी हैं: टॉलस्टॉय की छह पुस्तकें, रस्किन और थोरो की दो-दो पुस्तकें, साथ ही आर.एच. शेरार्ड की औद्योगिक श्रमिकों की दुर्दशा पर लिखी पुस्तक 'द व्हाइट स्लेव्स ऑफ इंग्लैंड' (1897), और समलैंगिक आदर्शवादी समाजवादी एडवर्ड कारपेंटर की 'सभ्यता: इसका कारण और इलाज', जिसमें सभ्यता को मानव समुदायों की बीमारी बताया गया है। कारपेंटर शाकाहारी थे और शेफ़ील्ड के पास अपना एक छोटा सा समुदाय चलाते थे। गांधीजी द्वारा उनका उल्लेख विशेष रूप से उल्लेखनीय है, क्योंकि कारपेंटर ने लैंगिक समानता और यौन संबंधों के बारे में अधिक खुलेपन का आग्रह किया था, और सभ्यता के बंधन से मुक्ति के एक सामान्य हिस्से के रूप में यौन संबंधों की शालीनता और सुंदरता को मान्यता देने की बात कही थी। गांधी जी, हमेशा की तरह चुनिंदा रवैया अपनाते हुए, इस चर्चा में शामिल नहीं हुए।

हिंद स्वराज आधुनिकता को अस्वीकार करने के मामले में क्रांतिकारी था; अन्य मुक्ति आंदोलनों ने राष्ट्रीय आत्मनिर्णय और मानवाधिकारों की मांग करते हुए पश्चिमी उदारवाद के आधार पर अपने आकाओं को नकार दिया था। गांधी ने इन सभी को नकारते हुए विशुद्ध भारतीय मॉडल को अपनाया, जिसमें कृषि और ग्राम अर्थव्यवस्था को आदर्श मानक के रूप में प्रस्तुत किया गया, जबकि राष्ट्र आधुनिकता से मुंह मोड़ लेगा। गांधी 'अंग्रेजों के बिना अंग्रेजी शासन' नहीं चाहते थे। उनका तर्क था कि अंग्रेजों की ताकत नहीं, बल्कि भारतीयों की कमजोरी और अंधा स्वार्थ ही अंग्रेजों को भारत में रोके रखने का कारण था।
उन्होंने इससे पहले एनी बेसेंट की राष्ट्रवादी रचना पढ़ी थी और 1907 में इंडियन ओपिनियन में उनके निबंध 'हाउ टू बिल्ड अ नेशन' को पुनर्प्रकाशित किया था; वे रूढ़िवादी कैथोलिक जी.के. चेस्टरटन के इस विचार से भी प्रभावित थे कि यदि भारतीय राष्ट्रवाद केवल पश्चिमी संस्थाओं की लालसा रखता है तो वह वास्तव में भारतीय नहीं है। यह नव शताब्दी के क्रांतिकारी घोषणापत्रों का दौर था। कुछ ही वर्ष पूर्व, 1902 में, लेनिन ने अपना पैम्फलेट 'व्हाट इज टू बी डन?' लिखा था, जिसमें साम्यवाद के लिए आगे का मार्ग प्रशस्त किया गया था। उन्होंने कहा था कि श्रमिक वर्ग से क्रांति को स्वतः आगे बढ़ाने की अपेक्षा नहीं की जा सकती - इससे केवल ट्रेड-यूनियन चेतना ही उत्पन्न होगी। उन्हें समर्पित पेशेवर क्रांतिकारियों के एक समूह की आवश्यकता थी जो उनका नेतृत्व और मार्गदर्शन कर सकें। गांधी, अपने आश्रम-प्रशिक्षित सत्याग्रहियों और केंद्रीकृत सैद्धांतिक आधार के साथ, इस आदर्श से बहुत दूर नहीं थे। वे असाधारण थे, लेकिन वे अपने समय के भी व्यक्ति थे: जिन प्रभावों ने उन्हें प्रभावित किया था, उनका प्रभाव उन अन्य लोगों पर भी पड़ा था जो दुनिया को नया रूप देना चाहते थे।
आधुनिकता और भौतिक प्रगति को अपनाने वाले साम्यवादियों के विपरीत (आखिरकार, उनका मूल दर्शन द्वंद्वात्मक भौतिकवाद था), गांधी का मानना था कि पूर्ण सामंजस्य की स्थिति केवल आध्यात्मिक साधनों से ही प्राप्त की जा सकती है। हालाँकि, वे अन्य क्रांतिकारियों की उपलब्धियों से अनभिज्ञ नहीं थे और बोल्शेविज़्म के बारे में उन्होंने कहा था कि 'लेनिन जैसे महान आत्माओं के बलिदानों से पवित्र हुआ आदर्श व्यर्थ नहीं जा सकता।' 13 और

साम्यवादियों की तरह, गांधी भी मार्क्सवादियों द्वारा 'बुर्जुआ लोकतंत्र' कहे जाने वाले सिद्धांत पर अविश्वास करते थे। वे मतदाताओं की राय में होने वाले उतार-चढ़ाव और राजनीतिक प्रक्रिया पर राजनीतिक दलों के नियंत्रण से असहज थे, जिससे व्यक्तिगत अंतरात्मा की गांधीवादी प्रधानता के लिए बहुत कम गुंजाइश बचती थी। यद्यपि उन्होंने हमेशा घोषित लोकतांत्रिक उद्देश्य वाले संगठनों के भीतर काम किया, गांधी स्वयं को लोकतंत्र के लिए एक योद्धा के रूप में समर्पित नहीं करना चाहते थे। जब उनसे पूछा गया कि वे भारत में किस प्रकार की सरकार के लिए संघर्ष कर रहे हैं, तो उन्होंने कहा: ‘मुझे शब्दों में कोई रुचि नहीं है, और मैं सरकार के स्वरूप के बारे में कभी चिंता नहीं करता।’ 14 यह संदेह होना स्वाभाविक है कि गांवों के राष्ट्र पर शासन करने वाला एक दयालु राजा गांधीजी को बहुत पसंद आता। वे श्रम और पूंजी के बीच संघर्ष के बजाय सहयोग में विश्वास करते थे। उन्हें घनश्याम दास बिरला से समर्थन स्वीकार करने में कोई कठिनाई नहीं हुई, जो लगभग हर उद्योग में रुचि रखने वाले एक प्रमुख उद्योगपति थे और गांधीजी के भारत लौटने के तुरंत बाद से लेकर उनकी मृत्यु तक बत्तीस वर्षों तक उनके संरक्षक और अनुयायी रहे।
भारत के दूरदर्शी पर्यवेक्षकों ने हिंद स्वराज में प्रचारित कष्टों
के माध्यम से मुक्ति में ईसाई विचारधारा की जड़ों को पहचाना। श्यामजी कृष्णवर्मा ने अपनी मासिक पत्रिका 'द इंडियन सोशियोलॉजिस्ट' ('स्वतंत्रता और राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक सुधार का मुखपत्र') में गांधी को 'यीशु मसीह का प्रशंसक' बताया और तर्क दिया कि वे 'अतिवादी ईसाई सिद्धांत' को व्यवहार में लाने का प्रयास कर रहे थे। उन्होंने साम्राज्यवादियों के ईसाई धर्म में विश्वास का व्यंग्य किया: 'ऐसा लगता है कि वे सोचते हैं कि यीशु मसीह का मतलब था कि अंग्रेज ही सब कुछ करें और उनके भारतीय पीड़ित केवल गाल फेर लें।' 15 कृष्णवर्मा, एक अन्य अंग्रेजी-शिक्षित बैरिस्टर राष्ट्रवादी, ने गांधी के 'आत्म-बलिदान या स्वैच्छिक समर्पण के सिद्धांत' की आलोचना की। उनका यह मानना सही था कि गांधी ईसाई धर्म में कष्टों के महत्व को स्वीकार करते थे: उन्होंने अपने भारतीय अनुयायियों को भजन 'व्हेन आई सर्वे द वंडरस क्रॉस' के बोल सिखाए; वह हमेशा ऐसी पंक्तियों को सुनकर भावुक हो जाते थे और उनकी आंखों में आंसू आ जाते थे, जैसे कि 'देखो

उनके सिर से, उनके हाथों से, उनके पैरों से/दुःख और प्रेम मिलकर बह रहे हैं।' 16
हिंद स्वराज दक्षिण अफ्रीका में इंडियन ओपिनियन में धारावाहिक रूप से प्रकाशित हुआ, फिर गुजराती में एक पुस्तक के रूप में। मार्च 1910 में बंबई सरकार ने हिंद स्वराज की प्रतियां राजद्रोह के आरोप में जब्त कर लीं, साथ ही गांधी द्वारा प्लेटो की 'डिफेंस ऑफ सुकरात' और रस्किन की 'अनटू दिस लास्ट' के गुजराती अनुवाद भी जब्त कर लिए। जैसा कि गांधी ने कहा: 'वे घबराए हुए हैं और कुछ करने की इच्छा से वे ऐसे साहित्य के प्रसार को रोकना चाहते हैं जो थोड़ी सी भी स्वतंत्रता दर्शाता हो।' उन्होंने भारतीय सरकार को हिंसा के प्रसार को रोकने का एक तरीका सुझाते हुए कहा: 'इस बीमारी को जड़ से खत्म करने का एकमात्र तरीका सही विचारधारा वाले अहिंसक प्रतिरोध को लोकप्रिय बनाना है। कोई भी अन्य तरीका, विशेषकर दमन, अंततः विफल हो जाएगा।' 17 इस तरह के दमन के प्रति गांधी की विशिष्ट प्रतिक्रिया यह थी कि उन्होंने उसी अपराध को दोहराया: हिंद स्वराज का अपना अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित किया।
दक्षिण अफ़्रीकी अभियान की समाप्ति के बाद, गांधी जी भारतीय स्वतंत्रता के अपने कार्य को आगे बढ़ा सके। जुलाई 1914 में वे कस्तूरबा और कैलेनबैक के साथ लंदन के लिए रवाना हुए। कैलेनबैक अपने साथ अपनी बहुमूल्य दूरबीन ले गए, जिसे गांधी जी ने अपने मित्र को सांसारिक वस्तुओं से विरक्त होने की आवश्यकता समझाने के लिए खिड़की से बाहर फेंक दिया। संभवतः यह अच्छा ही हुआ, क्योंकि अगस्त 1914 में एक शक्तिशाली दूरबीन के साथ किसी जर्मन का अंग्रेजी बंदरगाह पर पहुंचना जासूस माना जाता। जब गांधी जी और कैलेनबैक समुद्र में थे, तब यूरोप युद्ध की ओर बढ़ रहा था।
गांधी जी ने एक बार फिर एम्बुलेंस कोर में सेवा देने के लिए स्वेच्छा
से आगे आए, लेकिन यह उनके लिए पहले की तुलना में कम संतोषजनक अनुभव रहा, क्योंकि वे प्रशिक्षकों द्वारा थोपे जा रहे अनुशासन को चुनौती देने में उलझ गए थे। ये प्रशिक्षक केवल नए रंगरूट थे और वे बाकी लोगों पर अनुशासन थोपने की कोशिश कर रहे थे – उन्होंने इसे ‘लघु सत्याग्रह’ कहा। गांधी जी को फुफ्फुसशोथ (प्लूरिसी) हो गया और इसलिए उन्हें नर्सिंग ड्यूटी पर नहीं लगाया गया। मनीलाल और जेकी के पतन पर उनके उपवास और अत्यधिक आहार के कारण उनका सामान्य स्वास्थ्य और रोग प्रतिरोधक क्षमता कमजोर हो गई थी: उस समय

वे मूंगफली, केले, नींबू, जैतून का तेल, टमाटर और अंगूर खा रहे थे, लेकिन दूध, अनाज या दालें नहीं खा रहे थे। उन्होंने फिर कभी दूध या घी न लेने का गंभीर संकल्प लिया।
लंदन में उनसे भारत के अवर सचिव चार्ल्स रॉबर्ट्स और उनकी पत्नी लेडी सेसिलिया मिलने आए। लेडी सेसिलिया उनकी सेहत को लेकर चिंतित थीं और उन्होंने उन्हें दूध पीने के लिए प्रोत्साहित किया, यहाँ तक कि उनके लिए दूध के विकल्प के तौर पर एक पेय भी ढूंढा, लेकिन गांधीजी ने पहचान लिया कि वह वास्तव में पाउडर वाला दूध था और उसे त्याग दिया। उनकी बीमारी का इलाज उनकी इच्छाओं के प्रति अधिक संवेदनशीलता से करने के लिए, उन्होंने वेजिटेरियन सोसाइटी के अपने पुराने सहयोगी डॉ. एलिसन को बुलाया, जिन्होंने उन्हें आश्वस्त किया कि उन्हें दूध पीने की आवश्यकता नहीं है और साथ ही उन्हें वसा रहित आहार, ताजी हवा और गर्म पानी से स्नान करने की सलाह दी। लेकिन चिकित्सकों का मत था कि गांधीजी इंग्लैंड की जलवायु में कभी ठीक नहीं होंगे और उनके लिए भारत लौट जाना बेहतर होगा, जो उनका पूर्व निर्धारित लक्ष्य था। कैलेनबैक उनके साथ जाने वाले थे, लेकिन शत्रु देश के नागरिक होने के कारण उन्हें भारत में प्रवेश की अनुमति नहीं दी जा सकी, इसलिए वे दक्षिण अफ्रीका लौट गए।
गांधी जी अपने भावी राजनीतिक करियर पर चर्चा करने के लिए लंदन में गोखले से मिलने की उम्मीद कर रहे थे, लेकिन उनके गुरु मधुमेह के इलाज के लिए फ्रांस गए थे और युद्ध के कारण वहीं फंस गए थे। गोखले ने अपनी मित्र, राष्ट्रवादी कवयित्री सरोजिनी नायडू से गांधी जी से मिलने का अनुरोध किया। इस मुलाकात से एक लंबे और स्नेहपूर्ण रिश्ते की शुरुआत हुई, जिसमें गांधी जी के प्रति वैसी चापलूसी नहीं थी, जैसी उनके कई करीबी लोगों के साथ उनके संबंधों में झलकती थी। नायडू, एक शिक्षित और स्वतंत्र महिला, हमेशा उनके आध्यात्मिक अभिमान पर कटाक्ष करते हुए अपने सम्मान को हास्य से संतुलित करती थीं। जब नायडू पहली बार उनसे मिलीं, तो वे 'एक छोटे कद के व्यक्ति की जीती-जागती तस्वीर' थे, जिनका सिर मुंडा हुआ था, जो फर्श पर एक काले जेल के कंबल पर बैठे थे और लकड़ी के जेल के कटोरे में कुचले हुए टमाटर और जैतून के तेल का बेतरतीब भोजन कर रहे थे। महान नेता के इस असंभावित दृश्य को देखकर वह खिलखिलाकर हंस पड़ीं। गांधी जी ने उन्हें अपने साथ

भोजन करने के लिए आमंत्रित किया: "नहीं, धन्यवाद," मैंने सूंघते हुए उत्तर दिया। "यह कितना घिनौना है।" 18
होटल सेसिल में ब्रिटिश और भारतीय प्रशंसकों द्वारा उनके सम्मान में
एक स्वागत समारोह आयोजित किया गया। उपस्थित लोगों में सरोजिनी नायडू और मोहम्मद अली जिन्ना भी शामिल थे, जो संसद में पैरवी करने के लिए लंदन आए कांग्रेस प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व कर रहे थे। गांधी ने श्रोताओं से कहा कि उनके निर्धन मजदूर 'भारत का नमक' हैं; 'इन्हीं पर भावी भारतीय राष्ट्र का निर्माण होगा।' 19 यह एक नई बात थी: पूर्व की आकांक्षाओं के अनुरूप स्वतंत्र भारत का निर्माण भारतीय मध्यम वर्ग के वकीलों और प्रशासकों द्वारा किया जाना था - अज्ञानी जनता को इसमें शामिल करना गांधी का योगदान था।
जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, विभिन्न अवसरों पर क्या पहनना है, यह गांधी जी के लिए हमेशा एक चिंता का विषय रहा है। हाल ही में उन्होंने पहनावे को जलवायु के अनुरूप परिभाषित किया था, न कि किसी अन्य चीज़ के आधार पर, और इस प्रचलित धारणा की निंदा की थी कि 'हमारे लिए यूरोपीय पोशाक पहनना सबसे अच्छा है, क्योंकि यह अधिक प्रभावशाली है और लोगों से हमें अधिक सम्मान दिलाता है'। उन्होंने स्वीकार किया कि 'यूरोपीय पोशाक यूरोप के ठंडे देशों के लिए उपयुक्त है, जबकि भारतीय पोशाक भारत में हिंदू और मुस्लिम दोनों के लिए उपयुक्त है'। 20 1914 के अंत में अरब जहाज से भारत जाते समय गांधी जी ने यूरोपीय पोशाक को छोड़कर एक बंधुआ मजदूर के कपड़े पहन लिए, इस प्रकार उन्होंने स्वयं को अपनी सबसे बड़ी जीत से जोड़ा, हालांकि उन्होंने यह भी तय किया कि भविष्य में वे गुजरात में अपने वर्ग की 'पारंपरिक पोशाक' पहनेंगे - पगड़ी, कमीज, धोती, लबादा और दुपट्टा। यह पहली बार नहीं था जब वे एक ओर साम्राज्य को चुनौती देने पर विचार कर रहे थे, और दूसरी ओर अपने कपड़ों को लेकर चिंतित थे। जब गांधी जी 9 जनवरी 1915 को अपने परिवार के साथ बंबई पहुंचे, तो यह स्पष्ट था कि अपनी वेशभूषा को लेकर उनकी चिंता जायज़ थी: एक विशाल जनसमूह महान नेता को अपने वतन लौटते देखने के लिए इंतज़ार कर रहा था। उनके सम्मान में आयोजित स्वागत समारोहों में उनका भव्य अभिनंदन किया गया, जिनमें से एक गुजराती समुदाय द्वारा आयोजित किया गया था और जिसकी अध्यक्षता गुजरात के प्रमुख राजनीतिज्ञ जिन्ना ने की थी। गांधी जी ने अपने साधारण भारतीय परिधान और अंग्रेज़ी के बजाय अपनी

मातृभाषा गुजराती में बोलने के आग्रह से मेजबानों को आश्चर्यचकित कर दिया।
जिन्ना के शालीन स्वागत भाषण पर उनकी प्रतिक्रिया यह थी कि उन्हें यह जानकर खुशी हुई कि एक मुसलमान न केवल उनके क्षेत्र की सभा का सदस्य है, बल्कि उसकी अध्यक्षता भी कर रहा है। 21 उन्होंने यह टिप्पणी सकारात्मक रूप से की थी, लेकिन यह पहली बार था, हालांकि आखिरी बार नहीं, जब वे जिन्ना को पूरी तरह से समझने में विफल रहे, जिनके लिए उनका धर्म उनकी कद-काठी या बालों के रंग की तरह एक तथ्य था, न कि जीवन जीने का मार्ग, और निश्चित रूप से ऐसा कोई विषय नहीं था जिसे वे अलग से उल्लेख करना चाहते हों।
बंबई के एक धनी परिवार की पुत्री रायहाना त्याबजी ने गांधी जी के जानबूझकर साधारण दिखने के बावजूद उनके आकर्षण की गवाही देते हुए कहा: ‘मैं किशोरी थी। रेशम और ब्रोकेड, झालरदार वस्त्रों और जगमगाते गहनों के बीच मैंने उनकी एक झलक देखी। उन्होंने खुरदरी खादी (हाथ से बुनी) की धोती पहनी हुई थी और वे किसी मामूली दर्जी की तरह लग रहे थे जो गलती से यहाँ आ गया हो। मैं उन पर मोहित हो गई। वे मेरे पिता, मेरी माता, मेरे प्रेमी, मेरी बेटी, मेरे बेटे, मेरे शिक्षक, मेरे गुरु बन गए।’ 22
उनकी उपलब्धियों ने साम्राज्यवादियों को भी प्रभावित किया था: बंबई के गवर्नर लॉर्ड विलिंगडन उनसे मिलना चाहते थे। गवर्नर ने अपने अतिथि से पूछा कि क्या उनका सरकार के विरुद्ध कोई कार्रवाई करने का इरादा है, जिस पर गांधीजी ने सहर्ष सहमति दे दी। विलिंगडन ने आगे कहा: 'आप जब चाहें मुझसे मिल सकते हैं, और आप देखेंगे कि मेरी सरकार जानबूझकर कोई गलत काम नहीं करती।' 23 बाद में, 1915 में, उन्हें दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों की सेवा के लिए भारत सरकार द्वारा कैसर-ए-हिंद स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया। इस प्रकार अंग्रेजों ने गांधीजी के प्रति अपने राजनीतिक संदेह को उनके निर्विवाद नेतृत्व गुणों की प्रशंसा से कम कर दिया, इस उम्मीद में कि वे उन्हें बाल गंगाधर तिलक जैसे उग्र नेता के बजाय गोपाल कृष्ण गोखले जैसे सुधारक की भूमिका में ढाल सकें, जिन्हें पिछले वर्ष ही जेल से रिहा किया गया था।
श्रमिकों ने विरामगाम स्टेशन (रियासतही काठियावाड़ और ब्रिटिश भारत के बीच स्थित स्टेशन) पर लगाए गए दमनकारी सीमा शुल्क घेरे के बारे में गांधीजी से संपर्क किया था। गांधीजी ने विलिंगडन से बात की, जिन्होंने

सहानुभूति तो जताई, लेकिन कहा कि यह राष्ट्रीय सरकार का मामला है। जब 1917 में गांधीजी को वायसराय से मिलने का अवसर मिला (उस समय तक यह पद लॉर्ड चेम्सफोर्ड के पास था), तो उन्होंने यह मुद्दा उठाया और सीमा शुल्क घेरा हटा दिया गया। गांधीजी ने इसे सत्याग्रह की सफलता के रूप में प्रस्तुत किया – हालांकि वस्तुनिष्ठ रूप से देखा जाए तो यह एक अनुचित प्रक्रिया के विरोध में होने वाले सविनय अवज्ञा आंदोलन को रोकने के लिए अपनाई गई नियमित कूटनीति की तरह प्रतीत होता था।
लक्ष्मीदास का निधन मार्च 1914 में हुआ था, और उनके मंझले भाई करसनदास का निधन पिछले वर्ष ही हो गया था, जिससे गांधी परिवार के मुखिया बन गए थे। वे अपने शोक संतप्त रिश्तेदारों से मिलने राजकोट और पोरबंदर गए; वहाँ का काम समाप्त होने के बाद, वे अपने परिवार से मिलने के लिए उत्सुक थे। गांधी के समर्थकों का यात्रा करने वाला समुदाय पहले ही कलकत्ता के पास स्थित एक शिक्षा केंद्र, शांतिनिकेतन पहुँच चुका था, जिसकी स्थापना कवि और बंगाली राष्ट्रवादी रवींद्रनाथ टैगोर ने की थी, जिन्हें 1913 में साहित्य के लिए नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। वहाँ उन्हें शांतिनिकेतन के एक शिक्षक, चार्ल्स फ्रीर एंड्रयूज का सहयोग प्राप्त हुआ। एक पूर्व एंग्लिकन पादरी, एंड्रयूज की मुलाकात गांधी से अंतिम चुनाव प्रचार के दौरान दक्षिण अफ्रीका में हुई थी, जब गोखले ने उन्हें भारत से अवलोकन और सहायता के लिए भेजा था। वे गांधी के सबसे उत्साही (हालाँकि आलोचनात्मक भी) समर्थकों में से एक बन गए, और उन्होंने पश्चिमी दर्शकों के बीच उनके संदेश को बढ़ावा देने के लिए कई पुस्तकें लिखीं।
फीनिक्स दल को गांधी के चचेरे भाई मगनलाल की देखरेख में अलग कमरे दिए
गए थे, और उन्होंने यह सुनिश्चित करने का जिम्मा उठाया कि गांधी के सभी नियमों का कड़ाई से पालन हो। जब गांधी शांतिनिकेतन पहुंचे, तो उन्होंने वहां के विद्यार्थियों को भी आत्मनिर्भरता का संदेश देने का प्रयास किया और उनसे रसोइयों को हटाकर रसोई के सभी काम खुद संभालने को कहा। इसका सर्वत्र स्वागत नहीं हुआ – वे केंद्र में शिक्षा प्राप्त करने आए थे, रसोई में काम करने नहीं। उन्होंने संक्षेप में कहा, “वहां रोज़ाना चर्चाएँ होती थीं।” यह ‘प्रयोग’ बंद कर दिया गया। हालांकि गांधी भारत में अपने सत्याग्रह सिद्धांतों को लागू करने के लिए उत्सुक थे, गोखले ने उन्हें सलाह दी थी कि वे सीधे सक्रियता में न उतरें, बल्कि एक साल तक अवलोकन और

अध्ययन करें। गोखले को हिंद स्वराज इतना अपरिष्कृत और जल्दबाजी में लिखा हुआ लगा कि उन्हें लगा कि गांधी भारत में एक साल बिताने के बाद किताब को नष्ट कर देंगे। वास्तव में, 1921 में गांधी ने इसकी प्रशंसा करते हुए कहा: “यह घृणा के स्थान पर प्रेम का उपदेश देता है।” यह हिंसा को आत्म-बलिदान से प्रतिस्थापित करता है, यह आत्मिक शक्ति को क्रूर बल के विरुद्ध खड़ा करता है।' 24
जब 19 फरवरी 1915 को पुणे में गोखले का निधन हुआ, तो गांधीजी तुरंत
वहाँ गए। उन्होंने इसे एक सुखद मृत्यु माना: ‘उनका निधन कार्य करते हुए हुआ। वे अंत तक अपनी सभी इंद्रियों का पूर्ण उपयोग कर रहे थे और काम करते रहे।’ 25 गोखले के उनके लिए व्यक्तिगत संदेश के बारे में उन्होंने लिखा: ‘[वे] मुझसे कहा करते थे कि मैं इतना कठोर था कि लोग मुझसे भयभीत हो जाते थे और केवल भयवश या मुझे प्रसन्न करने के प्रयास में अपनी इच्छा के विरुद्ध मेरे पास आने देते थे, और जो लोग खुद को बहुत कमजोर पाते थे, वे अंत में बनावटी रवैया अपना लेते थे। मैंने लोगों पर बहुत अधिक बोझ डाल दिया था।’ 26
गांधी जी ने गोखले की 'सर्वेंट्स ऑफ इंडिया सोसाइटी' में कभी सदस्यता नहीं ली थी, क्योंकि उनका मानना था कि किसी संगठन के बंधन में बंधे बिना केवल गोखले के आदेशों का पालन करना ही पर्याप्त था। गोखले के न रहने पर गांधी जी ने सोसाइटी की सदस्यता के लिए आवेदन किया, जिसका अर्थ था कि अपने अनुभव और राष्ट्रीय प्रतिष्ठा को देखते हुए वे अब नेतृत्वहीन संगठन का नेतृत्व संभालने की स्थिति में होंगे। पुणे में हुई सोसाइटी की बैठक में कुछ सदस्यों ने उनके प्रवेश का समर्थन किया, जबकि अन्य ने इसका कड़ा विरोध किया। संभवतः उन्हें डर था कि उनके शामिल होने के कुछ ही समय में सोसाइटी केवल गांधी जी के विचारों को प्रसारित करने का माध्यम बन जाएगी। उन्होंने अधिक असहमति पैदा होने से पहले ही सदस्यता के लिए अपना आवेदन वापस ले लिया।
उन्होंने कुंभ मेले में भाग लिया, जो बारह वर्ष में एक बार आयोजित होने वाला एक धार्मिक उत्सव है। वहाँ उन्हें उस तरह के जीवन का अनुभव हुआ जिसकी उन्हें सार्वजनिक रूप से उपस्थित होने पर अपेक्षा करनी चाहिए: उनका पूरा समय एक तंबू में बैठकर तीर्थयात्रियों के साथ धार्मिक चर्चा करने और दर्शन के पात्र के रूप में माना जाने में व्यतीत होता था - एक उच्च व्यक्ति

के दर्शन करने से प्राप्त होने वाला धार्मिक पुण्य। अब जब गांधी स्वयं भी ऐसे ही एक व्यक्ति थे, तो उन्हें अपने शेष जीवन में कभी भी अकेला नहीं छोड़ा जाना था। उन्होंने उत्सव में शिकायत की: 'ये दर्शन चाहने वाले स्नान घाट तक मेरा पीछा करते रहे, और भोजन करते समय भी उन्होंने मुझे अकेला नहीं छोड़ा।' उन्होंने उनके 'अंध प्रेम' के बारे में लिखा जिससे उन्हें क्रोध और 'मन में पीड़ा' हुई। 27 लालची साधुओं की अधार्मिकता और कई तीर्थयात्रियों के पाखंड और लापरवाही से आहत होकर, गांधी ने 'वहाँ व्याप्त अधर्म के प्रायश्चित के लिए और स्वयं को शुद्ध करने के लिए' आत्म-त्याग का कार्य करने का निश्चय किया। 28 इसलिए उन्होंने अप्रैल 1915 में यह प्रतिज्ञा ली कि वे दिन में केवल पाँच खाद्य पदार्थ खाएंगे, जिनमें इलायची जैसी स्वाद बढ़ाने वाली वस्तुओं को अलग-अलग वस्तुओं के रूप में गिना जाएगा, और अंधेरा होने के बाद कभी नहीं खाएंगे।
मई 1915 में गांधी ने अहमदाबाद के पास कोचरब में सत्याग्रह आश्रम की स्थापना की, जहाँ फीनिक्स आश्रम के अनुयायी एक स्थानीय वकील द्वारा किराए पर दी गई ज़मीन पर बने एक घर में मुख्य केंद्र के रूप में बसे। गांधी गुजरात को अपना गृह प्रांत (और कई आश्रमवासियों का भी) बनाना चाहते थे, लेकिन अहमदाबाद के करीब भी रहना चाहते थे क्योंकि यह लंबे समय से हथकरघा बुनाई का केंद्र रहा था और उन्होंने यह दृढ़ निश्चय कर लिया था कि स्वतंत्रता आंदोलन में बुनाई का महत्वपूर्ण योगदान होगा। उन्होंने यह भी स्पष्ट रूप से कहा कि इस समृद्ध शहर में शुभचिंतकों से ही आवश्यक धन प्राप्त करना सबसे अच्छा होगा। यह भी महत्वपूर्ण था कि वे किसी ब्रिटिश क्षेत्र में रहें, न कि (राजकोट की तरह) किसी रियासत में, क्योंकि गांधी भारत में ब्रिटिश सत्ता को ही चुनौती देने वाले थे।
जबकि पहला आश्रम, फीनिक्स, इंडियन ओपिनियन की सफलता सुनिश्चित करने के लिए धन बचाने हेतु स्थापित किया गया था, और दूसरा, टॉल्स्टॉय फार्म, कारावास में बंद निष्क्रिय प्रतिरोधियों को आश्रय देने के लिए, अब गांधी ने मद्रास मेल को बताया कि उनका उद्देश्य ‘युवा पुरुषों, साथ ही महिलाओं और बच्चों को मातृभूमि की दीर्घ सेवा के लिए प्रशिक्षित करना’ था। सभी को कुछ न कुछ शारीरिक श्रम करना चाहिए; पहली बार ‘हस्तबुनाई शुरू करने का भी प्रस्ताव रखा गया’ और, स्वाभाविक रूप से, ‘संस्था में गरीबी और ब्रह्मचर्य दोनों की प्रतिज्ञाओं का कड़ाई से पालन किया जाएगा’। 29

गांधी जी द्वारा लागू किया गया अनुशासन दक्षिण अफ़्रीकी आश्रमों की तुलना में कहीं अधिक कठोर था। उन्होंने अपने पहले से ही सख्त आचरण नियमों को और स्पष्ट किया: ‘यदि मुझे अपने शरीर को ढकने के लिए केवल एक कमीज़ की आवश्यकता है और मैं दो का उपयोग करता हूँ, तो मैं दूसरे से एक कमीज़ चुराने का दोषी हूँ। क्योंकि, जो कमीज़ किसी और के काम आ सकती थी, वह मेरी नहीं है। यदि पाँच केले मेरे लिए पर्याप्त हैं, तो छठा केला खाना एक प्रकार की चोरी है।’ 30 उन्होंने आश्रम के लिए औजारों और रसोई के बर्तनों की सूचियाँ तैयार कीं, जिनका भुगतान गोखले द्वारा किए गए वादे के अनुसार सर्वेंट्स ऑफ इंडिया सोसाइटी द्वारा किया जाना था। इस बार नियम पहले से ही लिखित रूप में तैयार कर लिए गए थे। आश्रमवासियों को तीन वर्गों में विभाजित किया गया था: नियंत्रक, नौसिखिए और विद्यार्थी। नियंत्रकों ने सत्यनिष्ठा की शपथ ली थी, जिसमें देश के हित में भी झूठ न बोलने का संकल्प; अहिंसा; ब्रह्मचर्य; ‘स्वाद पर नियंत्रण’; चोरी न करने (जिसका अर्थ स्पष्ट चोरी और समुदाय से अपनी मूलभूत आवश्यकताओं से अधिक कुछ न लेना दोनों है) और अपरिग्रह का संकल्प लिया गया था। उनसे स्वदेशी (भारतीय निर्मित) उत्पादों का उपयोग करने, निडर होने, अंग्रेजी के बजाय भारतीय भाषाओं का उपयोग करने, शारीरिक श्रम करने और हथकरघे पर कपड़ा बुनने की भी अपेक्षा की जाती थी। दो निम्न श्रेणियों के लोगों से भी इसी प्रकार के मानकों का पालन करने की उम्मीद की जाती थी।
बाद में नियमों को परिष्कृत किया गया और आश्रमवासियों से यह अपेक्षा
की गई कि वे छुआछी पर हिंदू मान्यताओं का त्याग करें और जाति व्यवस्था से बाहर रहकर व्यवहार करें – हालांकि जातिगत अनुशासन को भंग किए बिना। गांधी ने हिंदू मान्यताओं के पूर्ण त्याग के बीच एक नाजुक संतुलन बनाए रखा, क्योंकि इससे उनके विशाल संभावित समर्थक वर्ग उनसे दूर हो सकते थे, और छुआछी जैसी प्रथाओं का भी विरोध किया जो सामान्य शिष्टाचार के विपरीत थीं।
गांधी के एक सहयोगी ने आश्रम के लिए नम्रता की प्रतिज्ञा का सुझाव
दिया, शायद इसलिए कि उन्होंने आश्रमवासियों के आध्यात्मिक अहंकार को देखा था; लेकिन गांधी ने इस सुझाव को अस्वीकार कर दिया, क्योंकि उन्हें डर था कि ‘शमन प्रतिज्ञा का विषय बनते ही नम्रता नहीं रह जाएगी’। 31 चार्ल्स एंड्रयूज को भी नियमों के बारे में कुछ शंकाएँ थीं – उन्होंने याद किया:

‘मैंने उनके लिए एक लंबा पत्र लिखा, जिसमें मैंने उनसे ब्रह्मचर्य की प्रतिज्ञा वापस लेने का आग्रह किया, जो मुझे हिंदू धर्म के लिए अनुपयुक्त और अपरिहार्य बुराई लाने वाला एक शॉर्टकट प्रतीत होता था।’ गांधी ने विस्तार से उत्तर दिया, जिसमें अन्य बातों के साथ यह भी कहा: ‘जो लोग राष्ट्रीय सेवा करना चाहते हैं, या जो लोग वास्तविक धार्मिक जीवन का अनुभव करना चाहते हैं, उन्हें ब्रह्मचर्य का जीवन व्यतीत करना चाहिए, चाहे वे विवाहित हों या अविवाहित।’ 32 उनके समर्थक, उनके विरोधियों की तरह, आलोचना के प्रति उनके इस दृष्टिकोण से परिचित हो गए, जो मूल प्रस्ताव को और अधिक बल देकर दोहराता था। एंड्रयूज टैगोर की बस्ती में ही रहे और गांधी के समूह में शामिल नहीं हुए।
गांधी जी लंबे समय से विवाहित जोड़ों को शामिल करने के लिए यौन संबंध
पर अपने निषेध को परिष्कृत कर रहे थे, और अब यह स्पष्ट नहीं था कि वे संतानोत्पत्ति के उद्देश्य से भी यौन संबंध को जायज़ मानते थे। उन्होंने लिखा कि यौन भोग-विलास और उसके परिणामस्वरूप होने वाली हानि से बहुत शारीरिक नुकसान होता है। वर्षों में विकसित मन और शरीर की शक्ति एक बार के यौन संबंध से इतनी क्षीण हो जाती है कि उसे पुनः प्राप्त करने में लंबा समय लगता है और फिर भी, मूल स्थिति पूरी तरह से कभी बहाल नहीं होती... मुझे उस क्षण से पहले की उच्च मानसिक स्थिति और उसके बाद की दयनीय स्थिति की स्पष्ट यादें हैं।' उनकी सलाह थी कि पतियों को अपनी पत्नियों के साथ अकेले नहीं रहना चाहिए, उन्हें अलग-अलग कमरों में सोना चाहिए, उपयोगी गतिविधियों और शुद्ध विचारों में पूरी तरह से व्यस्त रहना चाहिए, और जब उन्हें कामुकता महसूस हो तो उन्हें ठंडे पानी से स्नान करना चाहिए। 33 समय बीतने के साथ-साथ और भी कठोर अनुशासन लागू किया गया, यहाँ तक कि
1920 के दशक के अंत तक नियमों के तीन उल्लंघन का मतलब निष्कासन था; बार-बार उल्लंघन में प्रार्थना सभाओं में देर से आना और प्रतिदिन निर्धारित मात्रा में सूत न कातना शामिल था। कई नियमों और निश्चित व्यवस्था का अनुशासन के संदर्भ में एक कार्य था, ठीक उसी तरह जैसे सेना जीवन में कई नियम होते हैं जिनका स्वतंत्र रूप से कोई खास महत्व नहीं होता, लेकिन वे आज्ञाकारिता की आदत को प्रोत्साहित करते हैं। ब्रह्मचर्य का अंध अनुशासन में योगदान के अतिरिक्त एक कार्य था: गांधी जैसे पंथ नेता द्वारा यौन शोषण

स्वयं के प्रति भक्ति को बढ़ाता है, दंपतियों के बीच संबंधों को कमजोर करता है और गुरु के प्रति आसक्ति को बढ़ाता है। 34
आश्रम का दिन सुबह 4 बजे शुरू होता था, 5 बजे प्रार्थना होती थी, फिर नाश्ता और 7 से 8:30 बजे तक शारीरिक श्रम होता था। इसके बाद बच्चों की स्कूल की पढ़ाई होती थी, फिर दोपहर का भोजन, उसके बाद 12 से 3 बजे तक और पढ़ाई, फिर शारीरिक श्रम। शाम का भोजन 5 से 6 बजे के बीच होता था और 6:30 बजे प्रार्थना होती थी। शाम 7 बजे से आश्रमवासी पढ़ाई करने और आगंतुकों से मिलने के लिए स्वतंत्र होते थे। कोई वेतनभोगी शिक्षक नियुक्त नहीं थे, लेकिन पैंतीस आश्रमवासियों में से पाँच शिक्षक थे और बच्चों को शिक्षित करने का कार्यभार संभाल सकते थे, इसलिए कम से कम जीवन का यह पहलू गांधी जी के पिछले आश्रमों की तुलना में उतना उपेक्षित नहीं था।
1917 की गर्मियों में कोचरब में प्लेग के प्रकोप के कारण, आश्रम को अहमदाबाद से लगभग चार मील उत्तर में एक नए स्थान पर स्थानांतरित कर दिया गया। गांधी जी साबरमती केंद्रीय जेल के निकट होने से प्रसन्न थे, क्योंकि सत्याग्रहियों को अक्सर इसी स्थान पर बंदी बनाया जाता था। कई लोग आश्रम में राजनीतिक गतिविधियों की कमी से निराश थे, जहाँ समय नीरस कार्यों और प्रार्थनाओं में व्यतीत होता था, लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं था कि गांधी जी अपने अनुयायियों को एक ऐसे पवित्र युद्ध के लिए तैयार कर रहे थे जिसमें कुछ लोग शहीद भी हो सकते थे। एक शाम प्रार्थना के बाद, जब वे आश्रम के अनुशासन के महत्व और स्वतंत्रता संग्राम में इसकी भूमिका के बारे में बता रहे थे, तब उन्होंने कहा कि
वह उस दिन का बेसब्री से इंतज़ार कर रहा था जब वह आश्रम के उन
सभी निवासियों को, जिन्हें उन अनुशासनों में प्रशिक्षित किया
गया था, अहिंसा की वेदी पर स्वयं को बलिदान करने के लिए
बुलाएगा। वह अविचलित होकर उन्हें गोलियों की बौछार के सामने एक-
एक करके गिरते हुए देखेगा, उनके दिलों में न तो डर होगा और न ही
घृणा, बल्कि केवल प्रेम होगा। और फिर, जब उनमें से अंतिम गिर
जाएगा, तो वह स्वयं भी गिर जाएगा। 35
अंततः गांधी ने अपने अनुयायियों को आत्महत्या करने का आदेश नहीं दिया, लेकिन बीसवीं सदी के उत्तरार्ध में जॉनस्टाउन में जिम जोन्स, वाको में

डेविड कोरेश और रैंचो सांता फे में मार्शल एप्पलव्हाइट के पंथों के आलोक में, गांधी के उपदेश असहज रूप से आधुनिक प्रतीत होते हैं।
गांधी जी के सामने एक चुनौतीपूर्ण सुधार यह था कि आश्रम से "अस्पृश्यता की इस दयनीय, घृणित, दासतापूर्ण भावना" को प्रतिबंधित किया जाए... "यह एक ऐसा कलंक है जो आज भी हिंदू धर्म पर लगा हुआ है।"36 आश्रमवासियों ने अछूतों के विरुद्ध भेदभाव का विरोध करने की शपथ ली थी, लेकिन यह शपथ लेना तब आसान था जब आस-पास कोई अछूत मौजूद ही न हो। इस तिरस्कृत वर्ग से आश्रम में प्रवेश करने की कोई अपेक्षा नहीं थी - उन्होंने दूसरों के प्रति अपने घृणा भाव को आत्मसात कर लिया था और शायद ही कभी अन्य जातियों के साथ घुलने- मिलने का प्रयास किया हो। फिर, सितंबर 1915 में आश्रम की स्थापना के कुछ महीनों बाद, गांधी जी को एक विश्वसनीय समर्थक के माध्यम से एक अछूत परिवार को आश्रम में शामिल करने का अनुरोध प्राप्त हुआ। उन्होंने यह उम्मीद नहीं की थी कि अस्पृश्यता का विरोध करने की प्रतिज्ञा को इतनी जल्दी चुनौती दी जाएगी, लेकिन उन्होंने बॉम्बे के एक शिक्षक दुदाभाई, उनकी पत्नी और बेटी का इस शर्त पर स्वागत किया कि वे अन्य लोगों की तरह नियमों का पालन करेंगे।
अब जब आश्रम 'अशुद्ध' हो गया था, तो सभी वित्तीय सहायता बंद हो गई। कुएं का रखवाला, जिसका उपयोग आश्रम अन्य स्थानीय लोगों के साथ साझा करता था, यह मानता था कि दुदाभाई द्वारा बाल्टियों से पानी की कुछ बूँदें उसे अशुद्ध कर देंगी, इसलिए वह आश्रमवासियों को गालियाँ देने लगा और दुदाभाई का यौन उत्पीड़न करने लगा। उन्हें सामाजिक बहिष्कार की धमकी दी गई - उन्हें समाज से बहिष्कृत कर दिया जाएगा और सामुदायिक सुविधाओं से वंचित कर दिया जाएगा ताकि उन्हें आश्रम छोड़ने के लिए मजबूर किया जा सके। गांधी ने दुदाभाई से कहा कि वे दुर्व्यवहार सहन करें और किसी भी कीमत पर पानी भरते रहें। इसका सकारात्मक परिणाम निकला: उसकी धमकियों का कोई प्रभाव नहीं पड़ा, और दुर्व्यवहार करने वाला कुएँ का रखवाला 'शर्मिंदा हो गया और उसने हमें परेशान करना बंद कर दिया'। 37
गांधी ने आलोचकों को अपने विशिष्ट साहस से जवाब दिया: यदि उन्हें इस क्षेत्र से बेदखल किया गया, तो वे पूरे समुदाय को अहमदाबाद के अछूत क्षेत्र में ले जाकर वहाँ बसा लेंगे। वे अन्याय के आगे झुकने को तैयार नहीं थे। उन्हें जल्द ही पता चला कि आश्रम में धन की कमी हो गई है और अगले

महीने के लिए उनके पास कुछ भी नहीं है। कुछ समय बाद, आश्रम के बाहर एक कार आकर रुकी और एक संदेशवाहक ने गांधी को बुलवाया। कार के मालिक अंबलाल साराभाई थे, जो अहमदाबाद की सबसे बड़ी कपड़ा मिलों में से एक चलाते थे। उन्होंने गांधी को आश्रम के एक साल के भविष्य को सुरक्षित करने के लिए पर्याप्त धन दिया – आर्थिक रूप से, अब वे इस कठिन समय का सामना कर सकते थे। हालांकि, आश्रम के भीतर भी शत्रुता का माहौल था: महिलाएं विशेष रूप से अछूतों की उपस्थिति से आहत थीं। दुदाभाई की पत्नी और बेटी को रसोई में जाने की अनुमति नहीं थी, और बच्ची जिस भी चीज को छूती थी, उसे धोना पड़ता था। कस्तूरबा और मगनलाल की पत्नी संतोकबेन सबसे सख्त थीं, जो अछूत परिवार से किसी भी तरह का संपर्क रखने से पूरी तरह बचती थीं।
नवस्थापित आश्रम के लिए यह चुनौती उसकी आर्थिक परेशानियों से कहीं
अधिक बड़ी थी। एक दिन नियमित शाम की प्रार्थना सभा में गांधीजी ने एक स्पष्ट चेतावनी दी: दुदाभाई और उनके परिवार को पूर्णतः स्वीकार किया जाना चाहिए – जो कोई भी उन्हें स्वीकार नहीं करना चाहता, उसे आश्रम छोड़ना होगा। उन्होंने यह बात कस्तूरबा से व्यक्तिगत रूप से कही: ‘मैंने श्रीमती गांधीजी से कहा है कि वे मुझे छोड़कर जा सकती हैं और हम अच्छे मित्र बनकर विदा होंगे।’ 38 गांधीजी की रूढ़िवादिता के प्रति विरोधाभासी अपील से प्रभावित होकर कस्तूरबा वहीं रहीं: ‘यह तर्क कि एक महिला अपने पति के पदचिन्हों पर चलकर कोई पाप नहीं करती, उन्हें भा गया और वे शांत हो गईं।’ 39 कई आश्रमवासी गांधीजी के कमरे में गए और उनसे क्षमा मांगी, और कुछ ने अछूत परिवार से माफी मांगने के लिए उनसे संपर्क किया। हालांकि, गांधीजी के सबसे विश्वसनीय शिष्य मगनलाल ने अछूतों को आश्रम में प्रवेश देने के विरोध में उपवास किया। गांधीजी ने भी इसके जवाब में उपवास किया, और मगनलाल अपनी पत्नी के साथ आश्रम छोड़कर चले गए।
इस प्रकार गांधीजी का दृष्टिकोण सिद्ध हुआ: उनके समर्थकों को यह
स्पष्ट हो गया कि अस्पृश्यता का विरोध करना कोई धार्मिक भावना नहीं, बल्कि एक वास्तविकता है। उन्होंने बाद में यह भी उल्लेख किया कि आश्रम के बढ़ते खर्चों को पूरा करने में सबसे रूढ़िवादी हिंदुओं ने ही योगदान दिया; इस सिद्धांत पर उनकी दृढ़ता ने उन्हें उनसे दूर नहीं किया।
गांधी जी सक्रिय रूप से ऐसे योग्य लोगों की तलाश में थे जो उनके लिए उपयोगी होने के साथ-साथ आज्ञाकारी भी हों। यह एक महत्वपूर्ण संयोजन था।

समस्या यह थी कि आश्रमवासी कर्तव्यनिष्ठ तो थे, लेकिन उनमें स्वतंत्र रूप से कार्य करने की क्षमता का अभाव था, जबकि कांग्रेस कार्यकर्ताओं में ठीक विपरीत गुण थे - अत्यधिक स्वतंत्रता और गांधीवादी विचारों के प्रति पर्याप्त आज्ञाकारिता का अभाव।
महादेव देसाई, जो एक वकील और एनी बेसेंट की होम रूल लीग के सदस्य थे, एक नए शिष्य थे जिन्होंने अमिट छाप छोड़ी। अगस्त 1917 में हुई अपनी मुलाकात के बारे में उन्होंने लिखा कि गांधी ने उनमें प्रेम, निराशा और आनंद की मिश्रित भावनाएँ उत्पन्न कीं। पच्चीस वर्षीय आदर्शवादी देसाई से गांधी ने कहा था: “मैंने तुम्हें प्रतिदिन अपने घर आने के लिए कहा है, और इसका एक कारण है। मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे साथ रहो। पिछले तीन दिनों में मैंने तुम्हारी क्षमता देखी है। मुझे तुममें ठीक वैसा ही युवक मिला है जिसकी मुझे पिछले दो वर्षों से तलाश थी।” उन्होंने कहा कि उन्होंने इससे पहले केवल तीन लोगों - पोलक, श्लेसन और मगनलाल - से इस तरह बात की थी, लेकिन मगनलाल के बारे में उन्होंने कहा: “चलो मगनलाल को छोड़ देते हैं। जो बुद्धिमत्ता मैंने तुममें पाई है, वह मैंने उनमें नहीं देखी।” 40 गांधी के शब्दों में, देसाई ‘मेरे आदमी’ बन गए। वह और उनकी पत्नी आगामी नील अभियान के लिए चंपारण में उनके साथ शामिल हुए, और देसाई पच्चीस साल बाद गांधी के साथ अपनी मृत्यु तक उनके निरंतर साथी और सहायक बने रहे।
आश्रम में भी गांधी का अपने बच्चों के प्रति तानाशाही व्यवहार जारी रहा। 1916 में उन्होंने मनीलाल को आश्रम से निकाल दिया क्योंकि उसने अपने निर्धन भाई हरिलाल की मदद की थी। हरिलाल को सहायता की आवश्यकता थी क्योंकि उसने अपने नियोक्ता के धन से सट्टेबाजी में पैसा गंवा दिया था और इस प्रकार उसकी नौकरी चली गई थी। गांधी ने कैलेनबैक को लिखा, 'यह पत्र आपको परेशान कर देगा। फिर भी मुझे आपको यह जानकारी देनी ही होगी। मनीलाल ने मुझे फिर धोखा दिया है। उसने हरिलाल को कुछ पैसे दिए और जब मैंने उससे पूछताछ की तो उसने इस बारे में किसी भी जानकारी से इनकार कर दिया।' 41 मनीलाल को आश्रम से मद्रास भेज दिया गया, जहाँ उसे अपने संसाधनों पर निर्भर रहना था; वह तभी लौट सकता था जब वह हरिलाल को दिए गए पैसे और यात्रा के खर्च की भरपाई कर ले। गांधी ने उपवास किया। वे यह समझ नहीं पा रहे थे कि मनीलाल को अपने पिता की अवज्ञा करने या अपने भाई को छोड़ने का विकल्प देना उस युवक पर एक असहनीय नैतिक बोझ डालना था। गांधी के लिए कोई भी कार्य या तो

सही होता था या गलत। हालाँकि, बाद में उन्होंने मद्रास के एक प्रकाशक को पत्र भेजकर मनीलाल को एक मुद्रण कंपनी में नौकरी के लिए सिफारिश की। शायद कस्तूरबा की मौन निंदा ने ही गांधीजी को मनीलाल पर दया करने के
लिए प्रेरित किया होगा; वह उनके निर्णयों की सीधे तौर पर आलोचना नहीं करती थीं, लेकिन उनकी नाराजगी स्पष्ट थी। उन्होंने कहा: ‘मैंने अपनी पत्नी से अहिंसा का पाठ सीखा। एक ओर तो मेरी इच्छा का उनका दृढ़ प्रतिरोध, और दूसरी ओर मेरी मूर्खता से उत्पन्न पीड़ा के प्रति उनका मौन समर्पण, अंततः मुझे स्वयं पर शर्मिंदा कर दिया और मेरी मूर्खता को दूर कर दिया।’ 42 बाद में गांधीजी ने शिकायत की कि मनीलाल ‘आराम और विलासिता के रास्ते खोज रहे हैं। उनके लिए अनुशासन का जीवन समाप्त हो गया है। भोग-विलास का जीवन शुरू हो गया है।’ 43 हरिलाल अपनी पत्नी गुलाब का भरण-पोषण करने में असमर्थ थे और उन्हें अपने माता-पिता के पास वापस जाना पड़ा; वह आश्रम भी जाती थीं, जहाँ गांधीजी को अपने बच्चों की तुलना में अपने पोते-पोतियों की उपस्थिति का आनंद लेना अधिक आसान लगता था।
गांधी ने अब अपना निर्वाचन क्षेत्र निर्धारित कर लिया था। दक्षिण अफ्रीका में उनकी बड़ी सफलता गरीबों के बीच थी, और अब वे अपने पहनावे, आश्रम में अपने जीवन स्तर, अंग्रेजी के बजाय स्थानीय भाषा के प्रयोग और ट्रेन के निम्नतम श्रेणी के डिब्बों में अथक यात्रा के माध्यम से उनसे और अधिक जुड़ते जा रहे थे। कांग्रेस ने आम जनता की उपेक्षा की थी, और कभी भी भारत के लाखों गरीब और निरक्षर लोगों की आवाज़ होने का दावा नहीं किया था। अंग्रेजों ने अशांत मध्यम वर्ग को प्रोत्साहित किया था: उनके चुनावी अधिकार कर योग्य आय या शिक्षा पर आधारित थे। गांधी ने आत्म-सुधार के लिए अभियान चलाया: वे चाहते थे कि उनके देशवासी व्यक्तिगत स्वच्छता और सफाई पर अधिक ध्यान दें, और उन्होंने रेल और नाव यात्रियों के लिए बेहतर सुविधाओं की मांग के लिए अधिकारियों से आग्रह किया।
उन्होंने एक साझा भाषा की वकालत की, शुरू में हिंदी को बढ़ावा दिया, लेकिन बाद में जब उन्हें लगा कि हिंदी पर्याप्त रूप से समावेशी नहीं है, तो उन्होंने हिंदुस्तानी को अपनाने का आह्वान किया। हिंदी और उर्दू का मिश्रण, हिंदुस्तानी, लिखित रूप में राष्ट्रीय भाषा के रूप में लिखित उर्दू (एक संशोधित अरबी लिपि) का स्थान लेगी, जिसे देवनागरी लिपि (अक्षरों के ऊपर से गुजरने वाली विशिष्ट रेखा उन्हें जोड़ती है) से लिखा जाता था।

इसलिए यह एक सीधा-सादा मामला नहीं था और हिंदुओं, जो हिंदी के शुद्ध रूप को राष्ट्रीय भाषा बनाना चाहते थे, और मुसलमानों, जो उर्दू को ही राष्ट्रीय भाषा बनाए रखना चाहते थे, के बीच फूट का एक और संभावित कारण बन गया। गांधी ने अंततः सुझाव दिया कि सभी विद्यार्थियों को दोनों लिपियों में लिखी जाने वाली हिंदुस्तानी सीखनी चाहिए। भाषा के मुद्दे पर उनके द्वारा अंग्रेजी के उदार उपयोग के कारण, उन पर बेईमानी का आरोप लगाने वालों ने उनकी आलोचना की। उन लोगों ने भी उनकी आलोचना की, जिन्हें लगा कि मुसलमानों को खुश करने के लिए हिंदी के आकर्षण और शुद्धता का बलिदान किया जा रहा है। एक कड़े आलोचक (और हिंदू उग्रवादी), नाथूराम गोडसे ने टिप्पणी की: 'भारत में हर कोई जानता है कि हिंदुस्तानी नाम की कोई भाषा नहीं है; इसका कोई व्याकरण नहीं है, इसका कोई शब्दकोष नहीं है।' यह महज एक बोली है, बोली तो जाती है, लेकिन लिखी नहीं जाती। यह एक मिश्रित भाषा है, हिंदी और उर्दू का घालमेल है, और महात्मा गांधी की वाक्पटुता भी इसे लोकप्रिय नहीं बना सकी। फरवरी 1916 में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के उद्घाटन समारोह में गांधीजी ने अपने भाषणों में से एक ऐसा भाषण दिया जिसे उनके सबसे उत्तेजक भाषणों में से एक माना जाता है। यह भाषण एनी बेसेंट के भाषण के बाद दिया गया था, जिन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य के भीतर भारत की संवैधानिक स्थिति के विकास की वकालत की थी। गोखले द्वारा तय किए गए एक वर्ष से अधिक के राजनीतिक मौन का पालन कर चुके गांधीजी अब अधिक कट्टरपंथी हो गए थे। वायसराय लॉर्ड हार्डिंग (जो संयोगवश गांधीजी के प्रति सहानुभूति रखते थे और बंधुआ मजदूरी प्रथा को समाप्त करने के लिए काम कर चुके थे) पर हुए हालिया बम हमले के बाद के तनावपूर्ण माहौल में, उन्होंने राष्ट्रवादी आंदोलन में हिंसा के खिलाफ बात की। उनके भाषण की बारीकियां शायद अस्पष्ट हो गईं, क्योंकि वे राजनीतिक हिंसा की बात कर रहे थे और 'अराजकतावादियों' की भावना की सराहना कर रहे थे, हालांकि उनके कार्यों की नहीं। एनी बेसेंट ने कहा, 'कृपया इसे रोकें,' और मंच पर मौजूद राजकुमार एक साथ उठकर चले गए, शायद इस गलतफहमी में कि वे राजनीतिक शासक वर्ग पर हमलों का समर्थन कर रहे हैं।
तालियों की गड़गड़ाहट के बीच गांधी ने आगे कहा: ‘मैं धनी रईसों की तुलना लाखों गरीबों से करता हूँ। और मेरा मन करता है कि मैं इन रईसों से कहूँ: “भारत का कोई समाधान नहीं है जब तक आप अपने ये आभूषण त्यागकर भारत में

हमारे देशवासियों के लिए धरोहर न बन जाएँ… हमारा उद्धार केवल किसान के माध्यम से ही हो सकता है। न तो वकील, न डॉक्टर, न ही धनी जमींदार इसे सुनिश्चित कर पाएँगे।”’ 45 जो बात इतनी भड़काऊ, यहाँ तक कि साम्यवाद के समान प्रतीत होती थी, वह वास्तव में वैसी नहीं थी: वे किसानों से अपने स्वामियों को उखाड़ फेंकने का आह्वान नहीं कर रहे थे, बल्कि स्वामियों से गरीबों के प्रति अपने नैतिक दायित्वों को समझने का आह्वान कर रहे थे। 1916 में भारत में राष्ट्रवादी राजनीति में प्रगति हो रही थी, जिसमें गांधी की भूमिका नाममात्र की थी, या शायद नगण्य ही थी। चूंकि नरमपंथी नेता फिरोजशाह मेहता और गोखले दोनों का 1915 में निधन हो गया था, इसलिए कट्टरपंथियों के लिए प्रगति का मार्ग प्रशस्त हो गया था: तिलक और बेसंत दोनों ने 1916 में क्रमशः पुणे और मद्रास में होम रूल लीग की शुरुआत की, और जिन्ना बाद में बंबई में होम रूल लीग के अध्यक्ष बने। उस समय 'होम रूल' का अर्थ ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, कनाडा, न्यूफ़ाउंडलैंड और दक्षिण अफ्रीका की तरह साम्राज्य के अंतर्गत डोमिनियन का दर्जा प्राप्त होना था।
सभी राष्ट्रवादी स्वतंत्रता के बाद भारत की एकता को लेकर चिंतित थे; मुसलमानों को स्वशासन में लाने के लिए व्यापक प्रयास किए गए। भारत की जनसंख्या का पाँचवाँ हिस्सा मुस्लिम थे, और उन्हें डर था कि अंग्रेजों के चले जाने पर देश के 'हिंदूकरण' में वे दब जाएँगे। यह डर निराधार नहीं था। मुसलमानों ने सोलहवीं शताब्दी में भारत पर विजय प्राप्त की थी, और फिर अंग्रेजों ने उन्हें विस्थापित कर दिया था; कई हिंदुओं के लिए स्वशासन का अर्थ एक हिंदू राष्ट्र की पुनर्स्थापना था, और गांधी की गहरी हिंदू आस्था ने इस धारणा को और पुष्ट किया। जिन्ना और नेहरू परिवार जैसे पश्चिमी विचारधारा वाले धर्मनिरपेक्ष लोग एक ऐसे राज्य के लिए बेहतर विकल्प थे जिसमें नागरिकता धर्म से अधिक महत्वपूर्ण हो, लेकिन ऐसा राज्य गांधी के विचारों के बिल्कुल विपरीत था।
हालांकि जिन्ना को हिंदू-मुस्लिम एकता के दूत के रूप में जाना जाता था, लेकिन वे एक पारंपरिक मुसलमान से बहुत दूर थे। वे एक परिष्कृत, पश्चिमीकृत, धर्मनिरपेक्ष मुसलमान थे जो शराब पीते थे, सूअर का मांस खाते थे और उन्होंने एक पारसी महिला से शादी की थी, जो उनके एक मित्र की बेटी थी, जिनसे उन्हें सोलह वर्ष की उम्र में पहली नजर में ही प्यार हो गया था।

उन्हें पश्चिम और पूर्व दोनों की संस्कृति और जीवन की सुख-सुविधाओं का आनंद लेने में कोई शर्म नहीं थी। इसलिए, वे गांधी से उतने ही अलग थे जितना कि एक व्यक्ति का एक ही मंच पर रहते हुए हो सकता है - अक्टूबर 1916 में अहमदाबाद में आयोजित बॉम्बे प्रांतीय सम्मेलन में गांधी ने सफलतापूर्वक प्रस्ताव रखा कि मोहम्मद अली जिन्ना को अध्यक्षता करनी चाहिए।
सन् 1906 में मुस्लिम लीग की स्थापना के समय जिन्ना इसके सदस्य नहीं
थे, क्योंकि उस समय लीग भारत में ब्रिटिश सरकार की अवधारणा के प्रति निष्ठावान थी। हालाँकि, 1913 में लीग ने अपना मंच बदलकर भारतीय स्वतंत्रता का कर दिया। इसके बाद जिन्ना मुस्लिम लीग और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस दोनों में शामिल हो गए और दोनों के प्रमुख नेता बन गए। उनका मानना था कि स्वतंत्र भारत में मुसलमानों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए संसद की एक तिहाई सीटें उनके पास होनी चाहिए।
जिन्ना 1910 में इंपीरियल लेजिस्लेटिव काउंसिल के सदस्य बने थे। एक अन्य सदस्य मोतीलाल नेहरू थे, जो एक बेहद सफल वकील थे और अपने व्यवहार में कट्टर धर्मनिरपेक्ष थे: वे अपने आलीशान घर में अंग्रेजी बोलने पर जोर देते थे, बेहतरीन शराब पीते थे, धर्म को बहुत कम महत्व देते थे और हिंदू कट्टरता के प्रति अपनी अवमानना के प्रतीक के रूप में, ब्राह्मण होने के बावजूद, एक 'अछूत' को अपना निजी नौकर रखते थे।
लखनऊ समझौता भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच हुआ था। दिसंबर 1916 में संयुक्त प्रांत के इलाहाबाद में नेहरू परिवार के घर पर हुई एक बैठक में, कांग्रेस और लीग, जो उसी समय लखनऊ में एकत्रित हुई थीं, ने संवैधानिक व्यवस्था, प्रत्यक्ष चुनाव और धार्मिक अल्पसंख्यकों के लिए अलग निर्वाचक मंडल की व्यवस्था के आधार पर शीघ्र स्वशासन के लिए मिलकर काम करने पर सहमति व्यक्त की। इन राजनीतिक दांव-पेचों में गांधी की कोई खास भूमिका नहीं थी। वास्तव में, धार्मिक अल्पसंख्यकों के हितों की रक्षा के लिए अलग निर्वाचक मंडल वाले भारत की उनकी धर्मनिरपेक्ष सोच, रामायण में वर्णित आत्मनिर्भर गांवों और आध्यात्मिक साधना से एकजुट लोगों के भारत के उनके विचार से बिल्कुल अलग थी।
1916 में गांधी जी की पहली मुलाकात वल्लभभाई पटेल से हुई, जो एक किसान परिवार से थे, लेकिन अपने प्रयासों से लंदन से प्रशिक्षित वकील बने थे। वे गुजरात के रहने वाले थे, जैसे गांधी और जिन्ना। भारत की पहली सरकार में

गृह मंत्री और उप प्रधानमंत्री बनने वाले पटेल गांधी जी के सनकी विचारों के कारण उन्हें संदेह की नजर से देखते थे और एक बार तो उन्होंने यह भी कहा था कि “मैं तुमसे पूछूंगा कि क्या तुम्हें गेहूं से कंकड़ अलग करना आता है। और क्या इससे आजादी मिलेगी?” 46 उसी साल बाद में जब कांग्रेस और मुस्लिम लीग की बैठक लखनऊ में हुई, तो उनकी मुलाकात दोबारा हुई और पटेल गांधी जी के प्रभाव में आ गए। बाद में गांधी जी ने पटेल को गुजरात के खेड़ा जिले में अन्यायपूर्ण कर मांगों का विरोध कर रहे किसानों के सत्याग्रह का नेतृत्व सौंपा; यहीं से पटेल को गांधी जी के चुनावी अभियान में उनका सबसे भरोसेमंद सहयोगी माना जाने लगा।
गांधी जी की कार्यशैली हमेशा की तरह चुनावी तंत्र के बजाय धर्म के माध्यम से थी। उन्होंने अली बंधुओं से संबंध स्थापित किए, जो दो शिक्षित मुस्लिम थे और कलकत्ता में छात्रों को दिए गए उनके एक भाषण के बाद उनसे संपर्क में आए थे। कई मुसलमानों की तरह, ये बंधुआ भी इस बात से चिंतित थे कि ब्रिटिश साम्राज्य में भारत की स्थिति के कारण 1914 में शुरू हुए युद्ध में वे खुद को ओटोमन साम्राज्य के विरुद्ध खड़ा पा रहे थे। सोलहवीं शताब्दी से ही प्रत्येक ओटोमन सम्राट स्वयं को खलीफा, या विश्वासियों के समुदाय का प्रमुख घोषित करता था, इस प्रकार स्वयं को धार्मिक और राजकीय दोनों ही अधिकार प्रदान करता था। चूंकि तुर्की का अरब पर प्रभुत्व था, जहां इस्लाम के पवित्र स्थल स्थित थे, इसलिए ओटोमन के समर्थक यह दावा कर सकते थे कि उनके साम्राज्य पर हमला वास्तव में उनके धर्म और पैगंबर के उत्तराधिकारियों पर हमला है। यही खिलाफत थी, जिसे भारत में खिलाफत कहा जाता है। मोहम्मद अली और शौकत अली को ब्रिटिश युद्ध प्रयासों का विरोध करने और खिलाफत का समर्थन करने के लिए भारत रक्षा अधिनियम के तहत जेल में डाल दिया गया था।
गांधी जी खिलाफत के मुद्दे को अपने दिल के बेहद करीब मानते थे, क्योंकि इसमें धर्म और ब्रिटिश-विरोधी भावना का गहरा जुड़ाव था। उनका मानना था कि यह एक ऐसा मुद्दा है जिस पर वे हिंदू और मुसलमानों को एकजुट कर सकते हैं। हालांकि, प्रथम विश्व युद्ध में ब्रिटेन की मुश्किलों का फायदा उठाना उन्हें अनुचित लगा था, इसलिए उन्होंने उस समय अपनी ब्रिटिश-विरोधी भावना को कुछ हद तक नरम कर लिया था। दूसरी ओर, एनी बेसेंट का मानना था कि 'इंग्लैंड की जरूरत भारत के लिए अवसर है' और उन्होंने संकटग्रस्त

का और भी शोषण किया और उनके किराए में हेरफेर किया। किसान कानूनी लड़ाइयों में उलझ गए थे, जिनमें उनके वकीलों ने उनकी समस्याओं का समाधान किए बिना उन्हें और भी गरीब बना दिया था। शुक्ला एक अपेक्षाकृत संपन्न छोटा किसान था, जो जमींदारों के खिलाफ आंदोलन में शामिल था और अपने अभियान के कारण कुछ समय के लिए जेल भी गया था। यह महसूस करते हुए कि वह इस मामले में असमर्थ है और कोई प्रगति नहीं कर पा रहा है, उसने गांधी जी की प्रेरणा का सहारा लिया।
जब वे आधी रात से ठीक पहले अपने गंतव्य पर पहुँचे, तो छात्रों की भीड़
उस महान व्यक्ति की प्रतीक्षा कर रही थी, लेकिन पहले तो उन्हें निराशा हुई क्योंकि वे उन्हें प्रथम या द्वितीय श्रेणी के डिब्बों में नहीं पा सके। उन्होंने शुक्ला, जो एक अशिक्षित किसान थे, की अनदेखी की, जब तक कि उन्होंने यह खुलासा नहीं किया कि गांधी उनके साथ हैं। शुक्ला उन्हें उनके पास ले गए और कहा: 'ये रहे महात्मा।' संभवतः यह पहली बार था जब गांधी के लिए 'महान आत्मा' की उपाधि का प्रयोग किया गया था, जो भारत में आमतौर पर आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करने वाले लोगों के लिए प्रयुक्त होती है। 47 छात्र उनकी उपस्थिति से इतने अभिभूत थे कि उन्होंने उनके लिए भेजे गए डिब्बे से जानवरों को अलग कर दिया और उसे स्वयं खींचने लगे।
गांधी जी का पहला संगठनात्मक कार्य किसानों का प्रतिनिधित्व कर रहे वकीलों को बुलाना और उनसे कहना था कि वे अदालती मुकदमों को भूल जाएं – इस स्थिति को राजनीतिक रूप से संभालना होगा। उन्हें किसानों के बयान दर्ज करने होंगे ताकि यह साबित हो सके कि स्थिति कितनी खराब हो चुकी है, और इस काम के लिए उन्हें कोई शुल्क नहीं लेना होगा। गांधी जी स्थानीय भाषाओं में से दो को नहीं समझ पाते थे और क्षेत्रीय बोली में बोली जाने वाली हिंदी को समझने में उन्हें कठिनाई होती थी, इसलिए उन्हें अनुवादकों की आवश्यकता थी। छह वकील उनके साथ काम करने के लिए सहमत हो गए, शायद गांधी जी के सुझाव की नवीनता और साहस तथा उनके व्यक्तित्व के प्रबल प्रभाव से प्रभावित होकर। सहायकों में से एक, वकील (अदालती पैरवीकार) और अनुवादक, राजेंद्र प्रसाद थे, जो बाद में भारत के पहले राष्ट्रपति बने।
अप्रैल 1917 में गांधी ने ब्रिटिश प्लांटर्स एसोसिएशन से मुलाकात कर उन्हें अपने कार्यों की जानकारी दी और स्वयं हालात का जायजा लेने के लिए ग्रामीण इलाकों का दौरा शुरू किया। उन्होंने धनी बिहारियों से चंदा

इकट्ठा किया और अखबारों में सार्वजनिक घोषणाएं करवाईं ताकि देश को उपमहाद्वीप के इस सुदूर कोने में हो रही घटनाओं की जानकारी मिल सके। उन्होंने स्वयंसेवकों को गांवों में सूचना जुटाने के लिए भेजा, जो पैदल और हाथी पर सवार होकर दूरदराज के इलाकों तक गए। कांग्रेस या राष्ट्रीय राजनीति से अनभिज्ञ ग्रामीणों के बीच गांधी का एक आदर्श स्वरूप था। उन्हें उनके दुखों का निडर प्रतिशोधक, रामायण के नायकों का उत्तराधिकारी माना जाता था। बागान मालिकों के इशारों पर चलने वाली स्थानीय सरकार ने उन्हें गांव छोड़ने का आदेश दिया। जाने से इनकार करने पर उन पर मुकदमा चलाया गया।
बिहार सरकार ने गांधी के खिलाफ मामले को स्थगित करने का प्रयास किया, लेकिन वे प्रांत छोड़ने के आदेश को मानने से इनकार करने के अपराध को स्वीकार करने और बयान देने के लिए दृढ़ थे। उन्होंने बताया कि वे किसानों और नील उत्पादकों के बीच की समस्याओं का अध्ययन करने आए थे, 'यदि संभव हो तो प्रशासन और उत्पादकों की सहायता से', जिनसे उन्होंने उनकी राय जानने के लिए संपर्क किया था। 48 गांधी ने वायसराय और अन्य गणमान्य व्यक्तियों को भी स्थिति का विस्तृत विवरण लिखकर भेज दिया था। कुछ समय बाद, उनके खिलाफ मामला वापस ले लिया गया और उन्हें जांच में आधिकारिक सहायता का आश्वासन दिया गया।
गांधी जी ने अपने सहयोगियों के साथ एक घर में अपना ठिकाना बनाया, जहाँ किसान आकर अपनी कहानियाँ सुनाते थे या सिर्फ गांधी जी के दर्शन करने आते थे। उनके आयोग ने बयान दर्ज करते समय सरकारी जासूसों की उपस्थिति को सहन किया और इन बिन बुलाए मेहमानों के साथ शिष्टाचारपूर्वक व्यवहार किया, ताकि साक्षात्कारकर्ताओं को डराने के बजाय, वे कार्यवाही को आधिकारिक स्वीकृति प्रदान करें। छह महीने की अवधि में 850 गाँवों से लगभग 8,000 बयान लिए गए।
बिहार में एक अलग ही कहानी चल रही थी। वहाँ बागान मालिकों का दबदबा था, लेकिन राष्ट्रीय सरकार के समझदार अधिकारी जानते थे कि बिहार एक पिछड़ा प्रांत है और वहाँ के कुकर्मों का अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उतना कड़ा विरोध नहीं होगा जितना गांधी जी के कार्यों का हो सकता था। गांधी जी के सत्याग्रह को भारत सरकार का समर्थन प्राप्त था – सरकार बिहार प्रशासन को

बागान मालिकों के भ्रष्ट लाभ के लिए उनके समर्थकों पर अत्याचार करने की अनुमति नहीं देगी।
परिणामस्वरूप, लेफ्टिनेंट गवर्नर सर एडवर्ड गेट ने गांधीजी से
मुलाकात की और उन्हें बताया कि वे सरकारी जांच कराने के लिए तैयार हैं। गांधीजी गठित समिति में शामिल हुए, जिसने सर्वसम्मति से किसानों के पक्ष में एक रिपोर्ट प्रस्तुत की, जिसमें बागान मालिकों को किसानों को कुछ पैसा लौटाने की सिफारिश की गई और सरकार से कानून द्वारा अनिवार्य खेती पर रोक लगाने का आह्वान किया गया। अंततः, 1917 के चंपारण कृषि अधिनियम ने नील की जबरन खेती को समाप्त कर दिया और किसानों पर लगाए गए किराए में वृद्धि को कम कर दिया। इससे क्षेत्र में किसानों और उनके जमींदारों के बीच अशांति समाप्त नहीं हुई, लेकिन गांधीजी के संगठनात्मक कौशल की व्यापक रूप से प्रशंसा की गई।
अहमदाबाद के मिल-श्रमिकों के विवाद के साथ, जो आश्रम के द्वार पर एक संघर्ष था, गांधी ने कहीं अधिक विवादास्पद क्षेत्र में कदम रखा। मिल मालिकों का प्रतिनिधित्व अंबलाल साराभाई कर रहे थे, जो गांधी के प्रति सहानुभूति रखते थे, जैसा कि उन्होंने पहले बीमार आश्रम को धन दान करके दिखाया था। उन्होंने अपने घर पर गांधी के ऐसे सहयोगियों जैसे रवींद्रनाथ टैगोर, मोतीलाल नेहरू, हैरी और मिली पोलक और सी.एफ. एंड्रयूज का स्वागत किया। वे अन्य मायनों में भी अपरंपरागत थे: उन्होंने अपनी पत्नी के साथ समानता का व्यवहार किया और वह उनकी पसंद की दुल्हन थीं, न कि उनके माता- पिता की। बाद में उन्होंने कहा कि गांधी के साथ उनकी मित्रता भारतीय समाज में जाति और अन्य असमानताओं को समाप्त करने के साझा जुनून और ब्रिटिश प्रभुत्व को समाप्त करने के साझा हित पर आधारित थी। 49 गांधी ने स्वदेशी कपड़ों को बढ़ावा देने के लिए स्वदेशी आंदोलन का समर्थन किया था, जिसने साराभाई की मिल जैसी भारतीय कपड़ा मिलों को जबरदस्त बढ़ावा दिया था; लेकिन गांधी अब कारखाने में अपनाई जाने वाली पद्धतियों के खिलाफ हो गए थे और जल्द ही हाथ से कताई को बढ़ावा देने वाले थे - हालांकि यह अभी तक वह जुनून नहीं बना था जो बाद में बनने वाला था।
मिल श्रमिकों का प्रतिनिधित्व अंबालाल की बहन अनुसूया ने किया। उनकी शादी कम उम्र में हो गई थी, लेकिन उन्होंने वैवाहिक जीवन त्याग दिया और चिकित्सा की पढ़ाई के लिए इंग्लैंड चली गईं, फिर उन्होंने समाज कार्य का

अध्ययन किया। भारत लौटने पर, उन्होंने औद्योगिक श्रमिकों को प्रभावित करने वाले सामाजिक मुद्दों के लिए खुद को समर्पित कर दिया और उन्हें 'श्रमिक संघ की माता' के नाम से जाना जाने लगा। उन्होंने महिला श्रमिकों के अधिकारों के लिए अभियान चलाया और कारखाने के बच्चों के लिए स्कूल स्थापित किए।
अहमदाबाद में महामारी फैलने के बाद कारखाने मालिकों ने श्रमिकों को
काम पर बनाए रखने के उद्देश्य से 'महामारी बोनस' का भुगतान किया था, जबकि कई श्रमिक शहर छोड़कर भाग रहे थे। यह बोनस उनके मूल वेतन का 70 प्रतिशत तक हो सकता था। महामारी समाप्त होने पर बोनस भी बंद हो गया और श्रमिकों ने वेतन वृद्धि की मांग की। अनुसूया ने गांधी जी से उनसे बात करने का अनुरोध किया। गांधी जी श्रम संबंधों में हस्तक्षेप करने के लिए उत्सुक थे - आखिरकार, दक्षिण अफ्रीका में उन्हें यही एकमात्र वास्तविक सफलता मिली थी। उन्होंने एक भाषण दिया जिसमें उन्होंने श्रमिकों से केवल उचित मांगें रखने, स्वच्छ जीवनशैली अपनाने, व्यसनों से दूर रहने और अपने बच्चों की शिक्षा सुनिश्चित करने का आह्वान किया।
आंदोलन के मद्देनजर, मिल मालिकों ने किसी भी औद्योगिक कार्रवाई को रोकने के लिए पहल करते हुए 22 फरवरी 1918 से तालाबंदी लागू कर दी। मिल मालिकों के प्रतिनिधि के रूप में, अंबलाल साराभाई अब न केवल अपनी बहन बल्कि गांधी जी का भी विरोध कर रहे थे, जिनके कार्यों के लिए वे आर्थिक सहायता दे रहे थे। तालाबंदी की शर्तों के अनुसार, केवल उन्हीं श्रमिकों को काम करने की अनुमति दी जाएगी जो अपने मूल वेतन में 20 प्रतिशत की अनिवार्य वृद्धि स्वीकार करने को तैयार थे। श्रमिकों ने आपस में 35 प्रतिशत की वृद्धि की मांग पर समझौता कर लिया।
गांधी जी ने मध्यस्थता करने की पेशकश की और अनुसूया और अपने कुछ समर्थकों के साथ सुबह-शाम मजदूरों के इलाकों में बिताते थे, उन्हें सलाह देते थे, चिकित्सा सहायता प्रदान करते थे और पर्चे बांटते थे जिन्हें कुछ पढ़े-लिखे मजदूर दूसरों को पढ़कर सुनाते थे। गांधी जी बबूल के पेड़ के नीचे बैठकर कष्ट सहने की अनिवार्यता और ईश्वर के भय के बारे में उपदेश देते थे। फिर वे चाय के लिए अंबालाल के घर लौटते थे, जहां अंबालाल अक्सर उनके साथ शामिल होकर दिन भर की घटनाओं पर चर्चा करते थे; या वे गांधी जी के

घर आकर मजदूरों के प्रतिनिधियों के साथ आश्रम का बेस्वाद भोजन करते और विवाद पर विचार-विमर्श करते थे।
तालाबंदी समाप्त हुई और 11 मार्च को हड़ताल शुरू हो गई। हड़तालियों की हालत और बिगड़ गई और जब गांधीजी ने उन्हें मिलों के सामने धरना देने से मना किया तो वे बेचैन हो गए; यह स्पष्ट रूप से उनके समझे गए औद्योगिक विवाद जैसा नहीं था। जैसे-जैसे हड़ताल लंबी खिंचती गई, बड़ी दैनिक बैठकों में श्रमिकों की उपस्थिति घटती गई और जो उपस्थित होते थे वे भी निराश थे। 15 मार्च को जब गांधीजी के भतीजे और सहयोगी छगनलाल उन्हें बैठक में बुलाने गए, तो उन्हें मना कर दिया गया। अनुसूया और गांधीजी 'अपनी कार में आते-जाते हैं, वे शानदार भोजन करते हैं, लेकिन हम मृत्यु की पीड़ा झेल रहे हैं; बैठकों में भाग लेने से भुखमरी नहीं रुकती,' उन्होंने विरोध जताया।
अगली बैठक में गांधी जी दुखी थे, लेकिन उनकी प्रतिक्रिया स्पष्ट थी: ‘बिना किसी आग्रह के और स्वयं ही मेरे होठों से ये शब्द निकले: “जब तक हड़ताली एकजुट होकर समझौता होने तक या मिलों को पूरी तरह से छोड़ने तक हड़ताल जारी नहीं रखते, मैं भोजन को हाथ नहीं लगाऊंगा।”’ मजदूर उनकी ईमानदारी से तुरंत प्रभावित हुए और उनसे ऐसा न करने की विनती की, लेकिन एक बार प्रतिज्ञा कर लेने के बाद गांधी जी उसे निभाने के लिए दृढ़ थे। उन्होंने बाद में समझाया: ‘मेरी प्रतिज्ञा का उद्देश्य मिल मजदूरों को अपनी प्रतिज्ञा का सम्मान करना सिखाना और उन्हें प्रतिज्ञा का महत्व समझाना था… मैंने देखा कि उन्हें उदाहरण देकर यह दिखाना आवश्यक था कि अपनी प्रतिज्ञा के लिए कितना कष्ट सहना पड़ता है।’ 51
गांधी के अनुयायी भी इस प्रयास में उनका साथ देना चाहते थे, लेकिन उन्होंने उन्हें यह कहकर मना कर दिया: ‘यह मुझ पर छोड़ दो, उपवास मेरा काम है।’ 52 यह आखिरी बार नहीं था जब उन्होंने किसी ऐसे संघर्ष में अपने शरीर का इस्तेमाल किया हो जिससे वे जुड़े हुए थे, लेकिन वेतन वृद्धि से जुड़े एक साधारण औद्योगिक विवाद के लिए इस तरह के नैतिक हथियार का सहारा लेना अतिवादी था। इससे पहले उन्होंने व्यक्तिगत आध्यात्मिक कारणों से या (संभवतः) अवज्ञा करने वालों को दंडित करने के लिए उपवास किया था। अब उपवास उनके परिवार या आश्रम के सदस्यों के व्यवहार की प्रतिक्रिया से विकसित होकर बाहरी घटनाओं को प्रभावित करने का एक प्रयास बन गया था। वे इसका इस्तेमाल उद्योगपतियों पर दबाव डालने के लिए कर रहे थे, हालांकि उन्होंने

इस स्पष्ट निष्कर्ष को स्पष्ट रूप से खारिज कर दिया और उपवास को हड़तालियों को अपना वचन निभाने के लिए बाध्य करने के साधन के रूप में बताया।
अपने ही घर में इस विवाद में गांधीजी की हार उनकी राष्ट्रीय प्रतिष्ठा के लिए बुरी बात होती। वे चाहते थे कि मजदूर अपने द्वारा दिए गए 35 प्रतिशत वेतन वृद्धि के वादे पर कायम रहें, लेकिन मिल मालिकों ने भी 20 प्रतिशत से अधिक वेतन वृद्धि न देने का वादा किया था: एक वादे का महत्व क्यों हो और दूसरे का नगण्य? अंबालाल ने 35 प्रतिशत वेतन वृद्धि स्वीकार करने की पेशकश की, बशर्ते गांधीजी अहमदाबाद में सभी श्रम विवादों से हमेशा के लिए दूर रहने का वादा करें। मनोवैज्ञानिक एरिक एरिकसन, जिन्होंने गांधीजी के जीवन की इस घटना का विस्तार से अध्ययन किया और इसमें शामिल कई लोगों से बात की, का मानना है कि इस समय गांधीजी के मन में अत्यधिक उतार-चढ़ाव आए, एक क्षण वे उपवास को अखिल भारतीय नेतृत्व की दिशा में एक आवश्यक कदम मानते थे, दूसरे क्षण सत्याग्रह के सिद्धांतों के साथ विश्वासघात। 'अपनी मातृभूमि को राष्ट्रीय नेतृत्व तक पहुंचने के मंच के रूप में उपयोग करने के प्रयास में, उन्हें संदेह था कि वे बनिया व्यापारियों के झगड़ों के दलदल में फंस सकते हैं।' 53
तीन दिन के उपवास के बाद 18 मार्च को हड़ताल समाप्त हुई, जब मिल मालिकों ने मध्यस्थता स्वीकार कर ली और एक समझौता हुआ – पहले दिन 35 प्रतिशत, फिर 20 प्रतिशत और उसके बाद मध्यस्थ के निर्णय आने तक अंतरिम अवधि के लिए एक जटिल फार्मूला लागू किया गया। गांधीजी ने इसे उस प्रतिज्ञा की पूर्ति माना जिसमें उन्होंने कहा था कि 35 प्रतिशत वेतन वृद्धि के बिना मिल मजदूर काम पर नहीं लौटेंगे, हालांकि उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि केवल एक दिन की यह वृद्धि प्रतिज्ञा की भावना के बजाय केवल शाब्दिक अर्थ को पूरा करती है। मिल मालिकों और हड़तालियों ने समझौता इसलिए स्वीकार किया क्योंकि कोई भी गांधीजी की मृत्यु का दोष अपने ऊपर नहीं लेना चाहता था। यह सत्रह सार्वजनिक उपवासों में से पहला था।
चल रहे युद्ध के बावजूद, ब्रिटिश सरकार भारतीय सरकार में सुधार के प्रस्तावों पर काम जारी रखे हुए थी, जिसकी शुरुआत 1909 में मोर्ले-मिंटो सुधारों से हुई थी, जिसमें भारतीयों को विधान परिषदों के लिए सीधे चुनाव की व्यवस्था की गई थी। भारत के नए सचिव, एडविन मोंटेगू, जो भारत से सच्चा

प्रेम रखते थे, ने भारत कार्यालय में अपने कार्यकाल की शुरुआत इस घोषणा के साथ की कि यद्यपि अब स्वशासन का वह स्पष्ट समर्थन नहीं था जैसा कि पहले इरादा था, फिर भी स्वतंत्रता की ओर निरंतर बढ़ते कदम के सिद्धांतों को इसमें समाहित किया गया था: 'महामहिम की सरकार की नीति, जिससे भारत सरकार पूरी तरह सहमत है, प्रशासन की हर शाखा में भारतीयों की भागीदारी बढ़ाने और स्वशासी संस्थानों के क्रमिक विकास की है, ताकि ब्रिटिश साम्राज्य के अभिन्न अंग के रूप में भारत में उत्तरदायित्वपूर्ण सरकार की प्रगतिशील प्राप्ति हो सके।' 54
1917 में, नए वायसराय लॉर्ड चेम्सफोर्ड के साथ मिलकर भारतीयों को अधिक राजनीतिक अवसर प्रदान करने के तरीकों की जांच करने के लिए मोंटेगु भारत आए। अन्य लोगों के अलावा, उनकी मुलाकात गांधी, जेल से रिहा हो चुकी एनी बेसेंट और जिन्ना से हुई। यह व्यापक रूप से माना जाता था (और शायद स्वयं जिन्ना भी यही मानते थे) कि जब सत्तर वर्ष से अधिक आयु के बेसेंट और तिलक की मृत्यु हो जाएगी या वे कम से कम अस्वस्थ हो जाएंगे, तो जिन्ना ही एकमात्र भारतीय होंगे जिनके पास राष्ट्रवादी नेता बनने का अनुभव और क्षमता होगी। मोंटेगु ने टिप्पणी की कि गांधी 'कुली की तरह कपड़े पहनते हैं' और 'लगभग हवा पर ही जीते हैं'। 55
एक सहानुभूतिपूर्ण वायसराय और उतने ही सहानुभूतिपूर्ण विदेश सचिव के समर्थन से गांधीजी को लगा कि वे भारतीय स्वतंत्रता की ओर पर्याप्त रूप से अग्रसर हैं और वे राष्ट्रीय सुधार के बारे में अपने क्रांतिकारी विचारों को अमल में ला सकते हैं। उनका लक्ष्य स्वतंत्रता के बाद समाज में होने वाला परिवर्तन था; गांधीजी के लिए, अधिकांश राजनेताओं की तरह, राष्ट्रीय स्वशासन अपने आप में लक्ष्य नहीं था।
जुलाई 1918 में विदेश सचिव और वायसराय ने मोंटेगू-चेम्सफोर्ड रिपोर्ट प्रस्तुत की, जिसमें 'साम्राज्य के भीतर राष्ट्रवाद' का प्रस्ताव रखा गया था। इसके अनुसार, निर्वाचित प्रतिनिधि भारत के सभी मामलों को संभालेंगे, सिवाय विदेश संबंध, वित्त और कानून व्यवस्था से संबंधित मामलों के। अगस्त के अंत में कांग्रेस ने बंबई में प्रस्तावों पर चर्चा करने के लिए एक विशेष अधिवेशन आयोजित किया, जिसके परिणामस्वरूप 1919 का भारत सरकार अधिनियम पारित हुआ। इस अधिनियम ने मताधिकार का विस्तार किया और केंद्रीय एवं प्रांतीय विधान परिषदों की शक्तियों को बढ़ाया। इसने 'द्वैध शासन' की

अवधारणा को प्रस्तुत किया, जिसमें सत्ता कथित तौर पर ब्रिटिश साम्राज्यवादी और भारतीय लोकतांत्रिक अधिकारियों के बीच साझा की जाती थी। यह अवधारणा मूल रूप से गांधी के पुराने प्रतिद्वंद्वी, दक्षिण अफ्रीका के लियोनेल कर्टिस और उनके राजनीतिक विचारकों के गोलमेज समूह द्वारा प्रस्तावित की गई थी। इन प्रगतिशील साम्राज्यवादियों का मानना था कि साम्राज्य को केवल स्वशासित भागों के संघ के रूप में ही संरक्षित किया जा सकता है।
इन दिनों अंग्रेजों के प्रति गांधी का रवैया सौहार्दपूर्ण था। उन्होंने अप्रैल 1918 में एक युद्ध सम्मेलन में भाग लेने का निमंत्रण स्वीकार किया, जहाँ उन्होंने एक बार फिर साम्राज्य के प्रति अपना समर्थन दोहराया। उन्होंने वायसराय को लिखा कि यदि यह उनके अधिकार में होता, तो 'मैं भारत को अपने सभी सक्षम पुत्रों को साम्राज्य के इस नाजुक क्षण में बलिदान के रूप में अर्पित करने के लिए बाध्य करता; और मैं जानता हूँ कि इस कार्य से ही भारत साम्राज्य का सबसे प्रिय भागीदार बन जाएगा और नस्लीय भेदभाव अतीत की बात हो जाएगा।' 56 उन्होंने अपने भारतीय मित्रों से तर्क किया कि अंग्रेजों की सहायता करना उनका कर्तव्य है, कि जब तक भारतीयों के पास सैन्य परंपरा नहीं होगी, वे देश की रक्षा नहीं कर सकते, और सैन्य प्रशिक्षण प्राप्त करना स्वशासन की दिशा में एक कदम है। यदि वे ऑस्ट्रेलिया और कनाडा के समान अंग्रेजों के साथ दर्जा चाहते हैं, तो उन्हें 'वर्तमान समय में सरकार को हर संभव सहायता प्रदान करनी चाहिए... हमारी आशा साम्राज्य के अस्तित्व में निहित है... इसके अलावा, हम साम्राज्य की सहायता करते हुए सैन्य अनुशासन सीखेंगे, सैन्य अनुभव प्राप्त करेंगे और अपनी रक्षा करने की शक्ति प्राप्त करेंगे।' 57 उन्होंने एक भर्ती पत्रक तैयार किया और उसे व्यापक रूप से प्रसारित किया: ‘हमें कायर समझा जाता है। यदि हम इस कलंक से मुक्त होना चाहते हैं, तो हमें शस्त्रों का प्रयोग सीखना चाहिए।’ 58 एंड्रयूज के इस प्रश्न के उत्तर में कि यह उनके घोषित अहिंसा से कितना अलग है, गांधी ने टिप्पणी की कि आप किसी ऐसे व्यक्ति को अहिंसा नहीं सिखा सकते जो मार नहीं सकता – वह शायद कायर ही हो। यह एक ऐसा तर्क था जिसका प्रयोग उन्होंने बाद में यौन संबंध के बारे में भी किया – कि एक नपुंसक पुरुष के संभोग से परहेज करने में कोई सद्गुण नहीं है। अंग्रेजों के प्रति अपनी दीर्घकालिक प्रशंसा को

दोहराते हुए उन्होंने कहा: ‘यह इसलिए है क्योंकि प्रत्येक अंग्रेज अपने पैरों पर खड़ा हो सकता है और किसी भी आक्रमणकारी से अपने घर और अपने गाँव की रक्षा कर सकता है, इसीलिए अंग्रेजी गाँव हमारे गाँवों की तुलना में अतुलनीय रूप से श्रेष्ठ प्रतीत होते हैं।’ 59
भर्ती अभियान निराशाजनक और अकेलापन भरा था, और उन्हें अपने कई पूर्व प्रशंसकों का समर्थन नहीं मिल रहा था। कांग्रेस युद्ध के लिए बिना शर्त समर्थन और मोंटेगू-चेम्सफोर्ड सुधारों के लिए बिना शर्त समर्थन, दोनों के खिलाफ थी, क्योंकि उनका मानना था कि ये सुधार पर्याप्त नहीं थे। गांधी जी अलग-थलग पड़ गए थे, सिवाय उनके हाल ही में अनुयायी बने वल्लभभाई पटेल के, जो गुजरात के खेड़ा क्षेत्र में उनके साथ प्रतिदिन बीस मील तक पैदल चलते थे, जहाँ वे अन्यायपूर्ण करों के खिलाफ अभियान चला रहे थे। हालाँकि, भर्ती अभियान में केवल कुछ ही लोग शामिल हुए: कई लोगों का मानना था कि सरकार ने उनके लिए कुछ खास नहीं किया है, और वे गांधी जी के जटिल आध्यात्मिक तर्क को समझ नहीं पाए और उनका मानना था कि उनसे हथियार उठाने का अनुरोध करना उनकी अहिंसा की शिक्षा का स्पष्ट खंडन था।
उन्होंने लिखा कि उनका सीमित आहार पहले से ही उन्हें परेशान कर रहा था: ‘मेरी त्वचा बहुत कोमल और नाजुक हो गई है। चाकू इसे आसानी से फाड़ सकता है, किसी और की त्वचा की तुलना में कहीं अधिक आसानी से। हालांकि मैं हमेशा नंगे पैर चलता हूं, फिर भी मेरे पैरों के तलवे दूसरों की तरह सख्त और मजबूत नहीं हो पाते। मेरे मसूड़े ढीले पड़ गए हैं और मेरे बचे हुए कुछ दांत उपयोगिता से अधिक दिखावटी हैं।’ 60 अब भर्ती अभियान पर, किसानों से परिवहन या भोजन के मामले में बहुत कम व्यावहारिक सहायता प्राप्त करते हुए, और मूंगफली के मक्खन और नींबू पर ही अपना जीवन गुजारते हुए, गांधीजी बीमार पड़ गए। स्वाभाविक रूप से, उन्होंने अपनी बीमारी का मुकाबला उपवास से किया। वे आश्रम लौट आए जहां कस्तूरबा ने उनकी कमजोर स्थिति को देखकर उन्हें उनके पसंदीदा भोजन खिलाकर उनका पेट भरने का फैसला किया। उनका मानना था कि उन्होंने तब अधिक खाने का पाप किया: ‘शैतान केवल अवसर की प्रतीक्षा कर रहा था। बहुत कम खाने के बजाय मैंने पेट भरकर भोजन किया। यह मृत्यु के दूत को पर्याप्त निमंत्रण था।’ एक घंटे के भीतर ही पेचिश गंभीर रूप ले चुकी थी। 61 वे अपनी अगली अपॉइंटमेंट के लिए गए, लेकिन उन्हें कमोड की ज़रूरत पड़ी और फिर से बीमारी के आगे घुटने टेक दिए। उन्होंने कहा,

“मैं हमेशा यही सोचता था कि मेरा शरीर लोहे का है, लेकिन मैंने पाया कि मेरा शरीर अब मिट्टी का ढेर बन गया है।” उन्होंने चिकित्सा सहायता लेने से इनकार कर दिया, इसलिए उनके मेज़बानों ने अंबलाल साराभाई को बुलाया, जो उन्हें अपने घर ले गए और डॉक्टर को बुलाने पर ज़ोर दिया। डॉक्टर ने बताया कि गांधी जी खराब खान-पान के कारण कमज़ोरी से बढ़ चुके तंत्रिका तंत्र के टूटने से पीड़ित थे।
लगभग एक महीने की बीमारी के बाद वे आश्रम लौट आए, फिर भी उन्हें यही विश्वास था कि उनकी मृत्यु निकट है। उन्होंने अपने बच्चों को विदाई पत्र लिखे: ‘मुझे ऐसा लग रहा है कि मैं अब जा रहा हूँ। बस कुछ ही दिन बचे हैं।’ उन्होंने अपने बच्चों को अपने द्वारा दिए गए चरित्र के उपहार को संजोने का आग्रह किया। 62 वे मुश्किल से ही बोल पाते थे और अपना समय आश्रम के सदस्यों द्वारा भगवद् गीता के पाठ को सुनने में व्यतीत करते थे। उनके मित्रों और समर्थकों ने उनसे अधिक पोषण, विशेष रूप से दूध लेने का आग्रह किया। उनकी पत्नी उनकी देखभाल करती थीं, लेकिन उन्होंने मगनलाल को लिखा, ‘मैं बा का चेहरा देख ही नहीं सकता। उनका भाव अक्सर एक शांत गाय के भाव जैसा होता है और ऐसा लगता है, जैसे गाय कभी-कभी अपने मौन भाव से कुछ कह रही हो… उनकी कोमलता मुझे अभिभूत कर देती है।’ 63 कस्तूरबा उनकी आदतों को जानती थीं और उन्होंने जनवरी 1919 में, महीनों की बीमारी के बाद, उन्हें बताया कि उनका संयम का व्रत केवल गाय के दूध से संबंधित था, इसलिए वे बकरी का दूध पी सकते थे। इस प्रकार नैतिक दुविधा का समाधान हो गया और एक अन्य खुर वाले जानवर के दूध ने उन्हें स्वस्थ कर दिया - साथ ही जर्मनी और उसके सहयोगियों की नवंबर 1918 में हुई हार के बाद उन्हें आराम और भर्ती संबंधी अपनी कठिन जिम्मेदारियों से राहत भी मिली।
1918 में इन्फ्लूएंजा महामारी ने आश्रम को अपनी चपेट में ले लिया,
जिससे हरिलाल के तीसरे बेटे और उनकी पत्नी गुलाब, जो वहीं ठहरे हुए थे, तथा आश्रम के कुछ अन्य लोग भी मारे गए। गांधीजी ने अपने बेटे को सांत्वना देते हुए अपने अनोखे अंदाज में कहा: ‘मैं भली-भांति समझता हूँ कि इस समय तुम्हारी स्थिति किसी स्वप्नलोक जैसी है। तुम्हारी जिम्मेदारियाँ बढ़ गई हैं, तुम्हारी चुनौतियाँ बढ़ गई हैं और तुम्हारे प्रलोभन भी उसी प्रकार बढ़ेंगे। एक परिवार वाले व्यक्ति के लिए, पत्नी का होना, एक बड़ी बाधा होती है। अब वह बाधा तुम पर से हट गई है। अब तुम जहाँ खड़े हो, वहाँ से

दो रास्ते निकलते हैं। तुम्हें तय करना है कि तुम कौन सा रास्ता चुनोगे।’ 64 हरिलाल, जो अब अट्ठाईस वर्ष के थे, तेजी से शराब की लत में डूबते चले गए।
राजनीतिक रूप से, गांधी को संविधानवादी मोतीलाल नेहरू और जिन्ना ने हाशिए पर धकेल दिया था, जिन्होंने धर्म को मतदान प्रतिशत का मुद्दा बना दिया था और साम्राज्यवादी सत्ता को समझ में आने वाली भाषा में बात की थी। ब्रिटिश सरकार की प्रगतिशील सुधारवादी सोच ने ब्रिटिश साम्राज्य के भीतर एक स्वतंत्र, लोकतांत्रिक राष्ट्र की ओर धीरे-धीरे बढ़ने के इरादे को रेखांकित किया। अगर अंग्रेजों ने मार्च 1919 के रॉलेट एक्ट में निहित घोर त्रुटि न की होती, तो एक प्रमुख राजनीतिक व्यक्तित्व के रूप में गांधी का करियर यहीं समाप्त हो सकता था।

7

भारत को जगाना
प्रथम विश्व युद्ध में विजय में भारत के योगदान पर गर्व करना जायज़ था: 1,400,000 से अधिक भारतीयों ने स्वेच्छा से सेवा में भाग लिया था। गांधी जी की भर्ती में असफलता का एक कारण यह भी था कि जो लोग सक्षम और इच्छुक थे, वे पहले ही युद्ध में भाग ले चुके थे। उनका योगदान सराहनीय था, खासकर इसलिए क्योंकि 1916 के बाद ब्रिटेन में सैन्य सेवा के विपरीत, यह स्वैच्छिक थी, अनिवार्य नहीं। यदि ब्रिटेन अपने वादे पर खरा उतरता, तो भारतीय अपनी वफादारी के लिए पुरस्कार की उम्मीद कर सकते थे।
ब्रिटिश कानून निर्माता, जो शासकों और शासितों के पुराने विचारों से ग्रस्त थे और लोकतंत्र के प्रति संशय रखते थे, भारत रक्षा अधिनियम के तहत युद्ध के दौरान प्राप्त शक्तियों को छोड़ने के लिए तैयार नहीं थे। भारत सरकार ने 1917 में न्यायमूर्ति सिडनी रॉलेट की अध्यक्षता में एक राजद्रोह समिति नियुक्त की, जिसका उद्देश्य भारत में क्रांतिकारी गतिविधियों की जांच करना था। समिति की बैठकें गुप्त रूप से हुईं, इसलिए उसकी चर्चाओं का विवरण सार्वजनिक नहीं था और न ही उस पर दिन-प्रतिदिन की निगरानी रखी जाती थी। अप्रैल 1918 में अपनी रिपोर्ट में, समिति ने भारत की राजनीतिक समस्याओं को उन राष्ट्रवादियों के कारण उत्पन्न बताया जिन्हें हिंसक और अराजकतावादी माना गया। रिपोर्ट में एकमात्र समाधान यही सुझाया गया कि राजनीतिक स्वतंत्रता को सीमित करने के लिए नए कानून बनाए जाएं, और युद्धकालीन प्रतिबंधों को उस राष्ट्र पर भी लागू किया जाए जिसने युद्ध में इतना योगदान दिया था।
रॉलेट विधेयक उन सिद्धांतों पर आधारित थे जो मोंटेगु-चेम्सफोर्ड रिपोर्ट में निहित सिद्धांतों के बिल्कुल विपरीत थे, जिसमें नागरिकता पर जोर दिया गया था न कि प्रजा होने पर। मोंटेगु से अधिक सशक्त विदेश सचिव या चेम्सफोर्ड से अधिक साहसी वायसराय रॉलेट समिति के निष्कर्षों पर ध्यान देते और आगे बढ़ जाते। रॉलेट रिपोर्ट ने भारत में राजनीतिक सुधार के कट्टर विरोधियों को बल दिया, और इसके लेखक मोंटेगु और चेम्सफोर्ड से कहीं अधिक दृढ़ थे।

रॉलेट विधान ब्रिटिश शासन के पूरे कालखंड में भारत के संबंध में अंग्रेजों की सबसे बड़ी गलती थी: विरोधियों का दमन ब्रिटिश प्रशासन के अंत की शुरुआत थी। 6 फरवरी 1919 को पेश किए गए इन प्रस्तावों की भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और होम रूल लीग ने कड़ी निंदा की थी और गांधी के समर्थक वल्लभभाई पटेल सहित इंपीरियल लेजिस्लेटिव काउंसिल के सभी भारतीय सदस्यों ने इनका विरोध किया था।
गांधी जी अपने जीवन में केवल एक बार सरकारी विधानमंडल की कार्यवाही
में विधेयकों पर हुई बहस सुनने के लिए उपस्थित हुए (उनकी सामान्य अनुपस्थिति लोकतंत्र की कार्यप्रणाली में उनकी अरुचि को दर्शाती है)। वे उदारवादी श्रीनिवास शास्त्री की वाक्पटुता से प्रभावित हुए, लेकिन वायसराय नहीं। शास्त्री और जिन्ना ने सरकार के हठधर्मी रवैये के विरोध में विधान परिषद से इस्तीफा दे दिया।
गांधी जी अभी भी अस्वस्थ थे। उन्होंने शास्त्री को लिखा कि वे ऐसा कर सकते हैं:
अब मैं बिस्तर पर लेटे-लेटे इन विधेयकों की प्रगति नहीं देख
सकता। मेरे लिए ये विधेयक एक गहरी बीमारी के और भी गंभीर लक्षण
हैं। ये सिविल सेवा के हमारे ऊपर अपना शिकंजा कसने के दृढ़
संकल्प का स्पष्ट प्रमाण हैं... मैं इन विधेयकों को हमारे लिए एक
खुली चुनौती मानता हूँ। अगर हम झुक गए तो हमारा अंत निश्चित
है... अगर ये विधेयक केवल न्याय और नैतिकता के उल्लंघन का एक
छिटपुट उदाहरण होते, तो मुझे कोई आपत्ति नहीं होती, लेकिन जब ये
स्पष्ट रूप से दमनकारी नीति का प्रमाण हैं, तो सविनय अवज्ञा
व्यक्तिगत और सार्वजनिक स्वतंत्रता के प्रत्येक प्रेमी पर
थोपा गया कर्तव्य प्रतीत होता है।
उन्होंने डॉक्टरों की सलाह के बावजूद सक्रिय रहने का निश्चय किया। 24 फरवरी को उन्होंने बंबई से कुछ स्वशासन नेताओं - सरोजिनी नायडू, बंबई क्रॉनिकल के संपादक बी.जी. हॉर्निमन, वल्लभभाई पटेल और अनुसूया साराभाई - को आश्रम में बुलाया। फिर उन्होंने सत्याग्रह की प्रतिज्ञा तैयार की कि यदि विधेयक कानून बन जाते हैं, और जब तक उन्हें वापस नहीं लिया जाता, 'हम इन कानूनों और भविष्य में नियुक्त होने वाली समिति द्वारा उचित समझे जाने वाले अन्य कानूनों का शालीनता से पालन करने से इनकार करेंगे।' इस प्रकार,

यदि सरकार सर्वव्यापी कानून बना सकती है, तो गांधी जी भी उनका सर्वव्यापी विरोध कर सकते हैं। उन्होंने प्रतिज्ञा करने वालों को 'भारतीय प्रतिज्ञाकर्ता' माना, जो पहली बार खुले तौर पर अंग्रेजों को चुनौती दे रहे थे।
हालांकि इंपीरियल लेजिस्लेटिव काउंसिल के भारतीय सदस्य प्रस्तावित कानूनों के सर्वसम्मति से विरोधी थे, फिर भी उन्होंने सविनय अवज्ञा आंदोलन का समर्थन करने से इनकार कर दिया। कांग्रेस नेता जन आंदोलन नहीं चाहते थे। न ही एनी बेसेंट और न ही जिन्ना सत्याग्रह को एक व्यवहार्य विकल्प मानते थे। बेसेंट का मानना था कि कानूनों की अंधाधुंध अवज्ञा के लिए उकसाना खतरनाक था; जिन्ना का मानना था कि चालाक राजनेता ही माहौल बनाते हैं - उन्होंने जनता को संगठित करने पर विचार नहीं किया। फिर भी, गांधी ने 7 मार्च 1919 को सत्याग्रह सभा की स्थापना की, उन लोगों की अवहेलना के बावजूद जिन्हें वह 'बुद्धिजीवी' कहते थे और जिन्होंने उनके कार्य करने के तरीकों और सभा में गुजराती भाषा के उपयोग पर उनके जोर पर सवाल उठाए (क्योंकि यह भारतीयों के एक क्षेत्रीय अल्पसंख्यक द्वारा बोली जाती थी, इसलिए राष्ट्रीय आंदोलन के लिए यह वास्तव में एक अजीब विकल्प था)।
गांधी जी को यह समझ नहीं आ रहा था कि आंदोलन कैसे शुरू किया जाए, लेकिन उन्होंने बताया कि सोते समय वे इसी बारे में सोच रहे थे और तभी उन्हें इसका हल मिल गया। उन्होंने तुरंत समझाया: ‘कल रात सपने में मुझे यह विचार आया कि हमें देश से आम हड़ताल करने का आह्वान करना चाहिए। सत्याग्रह आत्म-शुद्धि की प्रक्रिया है, और हमारा संघर्ष पवित्र है, इसलिए मुझे लगता है कि इसकी शुरुआत आत्म-शुद्धि से ही होनी चाहिए। अतः भारत के सभी लोग उस दिन अपना कामकाज बंद कर दें और उस दिन को उपवास और प्रार्थना के दिन के रूप में मनाएं।’ 2
गांधी जी का जनवरी 1919 में बवासीर का ऑपरेशन हुआ था और मई में वे
सभाओं को बैठकर संबोधित कर रहे थे, क्योंकि वे अभी भी खड़े होने के लिए बहुत कमजोर थे। उन्हें यह देखकर खुशी हुई कि गृह शासकों के मध्यम वर्ग ने उनका उत्साहपूर्वक समर्थन किया, और उनका विरोध उपवास, प्रार्थना, हड़ताल और जनसभाओं के साथ एक राष्ट्रव्यापी अभियान में बदल गया। कई और लोग सत्याग्रह की प्रतिज्ञा पर हस्ताक्षर करने के लिए आगे आए। बाद में

उन्होंने समर्थकों से कहा कि यह उन अवसरों में से एक था जब उन्होंने ईश्वर को देखा: 'उन्होंने लोगों की प्रतिक्रिया प्राप्त करने में मिली सफलता का श्रेय ईश्वर के हस्तक्षेप को दिया।' 3 उन्होंने ऐसे कानूनों का सुझाव दिया जिनका अहिंसक रूप से उल्लंघन किया जा सकता था, उदाहरण के लिए, अपनी प्रतिबंधित पुस्तकों, हिंद स्वराज और रस्किन की 'अनटू दिस लास्ट' के अपने अनुवाद का वितरण करके, लेकिन सरकार ने मुकदमा चलाने से इनकार कर दिया। उन्होंने बंबई के पुलिस आयुक्त को एक पत्र भेजा: 'प्रिय श्री ग्रिफ़िथ, क्या मैं आपको आज मेरे द्वारा संपादक के रूप में जारी किए गए अपंजीकृत समाचार पत्र की एक प्रति भेज सकता हूँ? आपका सादर, एम.के. गांधी', लेकिन इस उकसावे के बावजूद भी राजद्रोह के आरोप में उनकी गिरफ्तारी नहीं हुई। 4 राष्ट्रीय हड़ताल की तारीख 30 मार्च तय की गई थी, जिसे बाद में बदलकर 6 अप्रैल कर दिया गया। हालांकि, कुछ स्थानों, विशेष रूप से दिल्ली में, संदेशों में भ्रम के कारण पहले वाली तारीख ही मान्य रही। शहर ठप हो गए और लोग सड़कों पर उतर आए और 'महात्मा गांधी की जय!' के नारे लगाने लगे। ऐसा लगा मानो पूरा भारत इसी आदेश का इंतजार कर रहा था। हिंदू और मुसलमान, अपनी- अपनी शिकायतों के साथ, इस विरोध प्रदर्शन में शामिल हुए। मस्जिदों और मंदिरों में जुलूस और भाषण हुए, लेकिन विरोध प्रदर्शन जल्द ही हिंसा में तब्दील हो गए। इसकी शुरुआत दिल्ली में एक दंगे से हुई, जब सत्याग्रहियों ने रेलवे स्टेशन के बाहर भारतीय चाय विक्रेताओं का सामना किया, जो हड़ताल में शामिल होने को तैयार नहीं थे, संभवतः इसलिए क्योंकि वे एक दिन की कमाई का नुकसान बर्दाश्त नहीं कर सकते थे। लाहौर और अमृतसर में भी हिंसा हुई। तार काट दिए गए और रेलवे पुलों में तोड़फोड़ की गई, दुकानों और घरों को लूटा गया, सरकारी इमारतों को नष्ट कर दिया गया।
गांधी जी को दिल्ली जाने की कोशिश में गिरफ्तार कर लिया गया, फिर रिहा
कर दिया गया और वे बंबई लौट आए, जहाँ उन्होंने घुड़सवार पुलिस को भीड़ पर लात मारते देखा। वे अहमदाबाद लौट आए, जहाँ मिल मजदूरों की हिंसा के बाद मार्शल लॉ लागू था। उन्होंने एक सभा आयोजित की, तीन दिन के उपवास का संकल्प लिया, हिंसा के लिए जिम्मेदार लोगों से अपना अपराध स्वीकार करने का आह्वान किया और अभियान को अस्थायी रूप से स्थगित कर दिया - उनके स्वयंसेवकों की संख्या कम हो गई थी, और जो स्वयंसेवक आगे आए वे अनुशासनहीन थे और किसी भी प्रकार का प्रशिक्षण स्वीकार करने को तैयार नहीं थे। यह

सत्याग्रह के बारे में गांधी जी की सोच से मेल नहीं खाता था। वे जल्द ही समझ गए थे कि विरोध प्रदर्शन बेकाबू हो रहे हैं और अमृतसर की घटनाओं की जानकारी होने से पहले ही उन्होंने स्वीकार कर लिया था कि अप्रशिक्षित आबादी में सविनय अवज्ञा का आह्वान करना एक 'हिमालयी भूल' थी।
अमृतसर के अधिकारियों ने हिंदू-मुस्लिम सद्भाव के राजनीतिक निहितार्थों को लेकर चिंता जताते हुए कांग्रेस के दो नेताओं को गिरफ्तार कर लिया, जिनमें से एक-एक नेता दोनों धार्मिक समुदायों से थे। इसके विरोध में हुए प्रदर्शनों के चलते सेना ने भीड़ पर गोलियां चलाईं और दंगे भड़क उठे। इमारतों में आग लगा दी गई, ब्रिटिश अधिकारियों की हत्या कर दी गई और एक महिला धर्म प्रचारक पर बेरहमी से हमला किया गया। ब्रिगेडियर जनरल रेजिनाल्ड डायर ने सैन्य नियंत्रण अपने हाथ में ले लिया और सभी सार्वजनिक सभाओं पर प्रतिबंध लगा दिया। 13 अप्रैल 1919 को जब जलियांवाला बाग में एक सभा बुलाई गई, तो लगभग दस हजार लोग वहां जमा हो गए। जनरल डायर ने अपने गोरखा और बलूची सैनिकों को ऊंचे स्थान पर तैनात किया और उन्हें भीड़ पर तब तक गोलियां चलाने का आदेश दिया जब तक कि उनका गोला-बारूद खत्म नहीं हो गया: 379 लोग मारे गए और 1,137 घायल हुए। डायर ने अमृतसर की जनता को अपमानित करने के उद्देश्य से कई आदेश जारी किए, जैसे कि भारतीयों को उस गली से गुजरते समय चारों हाथों-पैरों के बल चलने का आदेश देना जहां अंग्रेज धर्म प्रचारक पर हमला हुआ था। 'रेंगने का आदेश' भले ही कभी लागू न हुआ हो, लेकिन कर्फ्यू के आदेश की अवहेलना करने और ब्रिटिश अधिकारियों को सलाम करने से इनकार करने जैसे छोटे-मोटे अपराधों के लिए कोड़े मारने की सजा दी जाती थी। लागू सेंसरशिप के कारण खबर फैलने में कुछ समय लगा। भारत, ब्रिटिश साम्राज्य और फिर शेष विश्व ने स्वाभाविक रूप से घृणा व्यक्त की। ऐसा लगा मानो दस मिनट की सुनियोजित हत्या में अंग्रेजों ने नैतिक अधिकार का सारा दिखावा त्याग दिया हो। गांधी, अपने स्वभाव के अनुरूप, मौतों से उतने दुखी नहीं थे (क्योंकि मृत्यु को हमेशा उद्देश्य के लिए वीरता के रूप में देखा जा सकता था) जितना कि मार्शल लॉ के तहत मनमानी सजाओं और 'अराजक दमन' में कानून के शासन के उल्लंघन से: 'ये न्यायाधिकरण न्याय के न्यायालय नहीं थे बल्कि एक निरंकुश शासक की मनमानी को लागू करने के साधन थे। सजाएं सबूतों के आधार पर अनुचित और न्याय का घोर उल्लंघन करते हुए सुनाई गईं।' 5

इन अत्याचारों में से एक था बॉम्बे क्रॉनिकल के संपादक और गांधी के समर्थक बी.जी. हॉर्निमन की गिरफ्तारी और निर्वासन, साथ ही अखबार का दमन। क्रॉनिकल पर नियंत्रण रखने वाले राष्ट्रवादियों के पास एक अंग्रेजी साप्ताहिक अखबार 'यंग इंडिया' भी था, जिसे उन्होंने क्रॉनिकल के स्थान पर अधिक बार प्रकाशित करने का सुझाव दिया और गांधी को इसका संपादक बनाने का प्रस्ताव रखा। इस प्रकार उन्हें वह मिल गया जिसकी उन्हें भारत में पहले कमी थी - एक नियमित राष्ट्रीय प्रकाशन का मुखपत्र, जिसका लाभ उन्हें दक्षिण अफ्रीका में 'इंडियन ओपिनियन' के दिनों से नहीं मिला था। उन्होंने गुजराती अखबार 'नवजीवन' का संपादकीय नियंत्रण भी अपने हाथ में ले लिया। हालांकि उन्होंने अन्य कामों के दबाव का हवाला देते हुए 'यंग इंडिया' के संपादक पद पर बने रहना छोड़ दिया, लेकिन वे अपने विचार व्यक्त करने के लिए इसका उपयोग करते रहे।
ब्रिटेन में भी जनमत उत्तेजित हुआ, और अंततः भारत सरकार द्वारा एक आधिकारिक आयोग का गठन किया गया जिसने जनरल डायर की निंदा की और उन्हें उनके पद से हटा दिया गया। विदेश मंत्री एडविन मोंटेगु ने डायर के व्यवहार की आलोचना की, लेकिन कंजर्वेटिव पार्टी के निचले स्तर के सांसदों के हमले का शिकार हुए: ब्रिटेन में डायर के उत्साही समर्थक थे। कई ऐसे कारक थे जिनका भारत से कोई संबंध नहीं था, लेकिन उन्होंने मोंटेगु को कमजोर कर दिया: उनके मित्र कम थे, उनके राजनीतिक गठबंधन कमजोर थे, और कुछ साथी सांसदों के यहूदी-विरोधी रवैये ने उन्हें और भी कमजोर कर दिया।
रॉलेट अधिनियमों और अमृतसर नरसंहार का सबसे बड़ा प्रभाव भारतीय राष्ट्रवादियों के बीच उदारवादी विचारों का पूरी तरह से सफाया करना था। नेहरू परिवार जैसे पश्चिमीकृत मध्यवर्गीय सदस्यों में भी क्रमिक प्रगति का कोई विश्वास नहीं रह गया था। मोतीलाल नेहरू के पुत्र जवाहरलाल नेहरू ने हैरो और कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त की थी और मिडिल टेंपल में वकालत की उपाधि प्राप्त की थी। 1916 में इलाहाबाद लौटने पर उनका विवाह एक पारंपरिक कश्मीरी ब्राह्मण लड़की से तय हुआ था और अगले वर्ष उनकी पुत्री इंदिरा, जो भविष्य में प्रधानमंत्री बनीं, का जन्म हुआ। एनी बेसेंट नेहरू परिवार की मित्र थीं और जवाहरलाल नेहरू होम रूल लीग की स्थानीय शाखा के सचिव बने। इंग्लैंड में शिक्षा पूरी करने के बाद जवाहरलाल नेहरू ने वकालत शुरू की और राष्ट्रवादी राजनीति में रुचि लेने

लगे। उन्होंने 1916 के लखनऊ कांग्रेस में गांधीजी से मुलाकात की थी, क्योंकि वे दक्षिण अफ्रीका में उनके कार्यों के कारण दूर से ही उनकी प्रशंसा करते थे, 'लेकिन हममें से कई युवाओं को वे बहुत दूर, भिन्न और राजनीति से परे लगते थे।'
नेहरू ने रॉलेट एक्ट्स के खिलाफ गांधी के सत्याग्रह के संकल्प के बारे में पढ़ा था और वे भी इस अभियान में शामिल होना चाहते थे, लेकिन मोतीलाल, जो एक प्रमुख वकील और संवैधानिक राजनीतिज्ञ थे, अपने बेटे को कानून तोड़कर जेल जाते हुए नहीं देख सकते थे। अपने पिता के प्रति सम्मान के कारण, जवाहरलाल ने खुद को कुछ उत्तेजक व्यवहारों तक ही सीमित रखा, जैसे कि अपना भोजन, जिसमें वे केवल रोटी और दूध होने पर जोर देते थे, एक स्टील के कटोरे में खाना, जो परिवार के चांदी और क्रिस्टल के बर्तनों के साथ बेमेल लगता था। मोतीलाल ने ज़मीन पर सोने का अभ्यास किया, ताकि उन्हें भी उस कठिनाई का कुछ अनुभव हो सके जो उनके प्रिय पुत्र को जेल जाने पर झेलनी पड़ती।
नेहरू परिवार में मतभेद इस हद तक बढ़ गए थे कि तनाव कम करने के लिए मोतीलाल ने गांधीजी को अपने आलीशान घर में रहने के लिए आमंत्रित किया, जो इलाहाबाद में रहने के दौरान उनका घर बन गया था। मोतीलाल ने एक बार टिप्पणी की थी: 'मैं गांधीजी की किसी भी बात से सहमत नहीं हूँ, और वे यह जानते हैं, फिर भी वे अपने उन मंदबुद्धि शिष्यों की तुलना में मेरा अधिक सम्मान करते हैं।' 7 गांधीजी ने बुद्धिमानी से जवाहरलाल को धैर्य रखने और अपने पिता को नाराज़ न करने की सलाह दी। जब वे चले गए, तो वे मोतीलाल की बेटी सरूप को अपने साथ ले गए, जिसने हिंदू-मुस्लिम एकता को कुछ ज़्यादा ही आगे बढ़ा दिया था और अपने पिता के एक मुस्लिम कर्मचारी से प्रेम कर बैठी थी। उसे देश छोड़ने के लिए प्रोत्साहित किया गया; उसे गांधीजी के आश्रम भेज दिया गया, जिसे उसने 'अत्यंत कठोर' पाया, जहाँ दिन की शुरुआत सुबह 4 बजे होती थी, भोजन भयानक होता था, चाय-कॉफी नहीं मिलती थी, और प्रेम संबंधों को बढ़ावा नहीं दिया जाता था। 8 मोतीलाल ने अपनी सबसे बड़ी बेटी के लिए तुरंत एक धनी ब्राह्मण पति ढूंढ लिया, जिसने बाद में विजया लक्ष्मी नाम अपना लिया। शादी के बाद दंपति गांधी जी से आशीर्वाद लेने गए और उन्होंने उन्हें राष्ट्र के लिए बलिदान पर प्रवचन दिया और ब्रह्मचर्य की प्रतिज्ञा लेने का आग्रह किया। विजया, जो भविष्य में संयुक्त राष्ट्र में भारतीय राजदूत

बनीं, ने इस चुनौती को स्वीकार किया। उन्होंने पूछा, ‘अगर आपको लगता था कि पति-पत्नी के रूप में हमारा साथ रहना गलत है, तो आपने हमारी शादी की अनुमति क्यों दी? मैं एक सामान्य वैवाहिक जीवन जीना चाहती हूँ।’ गांधी जी पीछे हट गए।
मोतीलाल नेहरू अमृतसर हत्याकांड से जवाहरलाल नेहरू की तुलना में अधिक प्रभावित हुए थे, क्योंकि जवाहरलाल नेहरू को अंग्रेजों की शालीनता, निष्पक्षता और स्वतंत्रता की दिशा में निरंतर प्रगति पर पूरा भरोसा था। मोतीलाल नेहरू 1888 से कांग्रेस में सक्रिय थे और दिसंबर 1919 से जनवरी 1920 तक अमृतसर में कांग्रेस के अध्यक्ष रहे। इसी दौरान भारत सरकार अधिनियम को अनिच्छा से स्वीकार किया गया, लेकिन अपर्याप्त बताकर इसकी निंदा की गई और इसमें आगे सुधारों और रॉलेट अधिनियमों को निरस्त करने की मांग की गई। वास्तव में रॉलेट अधिनियमों का कभी प्रयोग नहीं किया गया और 1922 में इन्हें निरस्त कर दिया गया। किसी भी साम्राज्यवादी शक्ति ने इतने कम के लिए इतना बड़ा बलिदान नहीं दिया।
जवाहरलाल नेहरू ने अमृतसर में कांग्रेस का वर्णन करते हुए कहा, ‘यह
पहली गांधी कांग्रेस थी… अधिकांश प्रतिनिधि, और उससे भी अधिक बाहर मौजूद विशाल जनसमूह, नेतृत्व के लिए गांधी की ओर देख रहे थे।’ गांधी को कांग्रेस के संविधान का आधुनिकीकरण करने के लिए कहा गया, जिसे उन्होंने इस प्रकार किया कि सदस्यता की आवश्यकता इतनी कम हो गई कि यह भारत में सभी के लिए खुली थी। नेहरू ने बाद में गांधी द्वारा पूर्व समर्थकों के एक समूह से बातचीत का वर्णन किया।
वह विनम्र थे, लेकिन साथ ही स्पष्ट और हीरे की तरह कठोर, सुखद और मृदुभाषी लेकिन अटल और बेहद गंभीर थे। उनकी आँखें सौम्य और गहरी
थीं, फिर भी उनमें से एक प्रचंड ऊर्जा और दृढ़ संकल्प की ज्वाला
निकलती थी। उन्होंने कहा, यह एक महान संघर्ष होने वाला है, एक
बहुत शक्तिशाली प्रतिद्वंद्वी के साथ। यदि आप इसे स्वीकारना चाहते हैं, तो आपको सब कुछ खोने के लिए तैयार रहना होगा, और आपको स्वयं को कठोर अहिंसा और अनुशासन के अधीन करना होगा। जब युद्ध की घोषणा होती है, तो मार्शल लॉ लागू होता है, और हमारे अहिंसक संघर्ष में भी, यदि हमें जीतना है, तो हमारे पक्ष में तानाशाही और मार्शल लॉ होना आवश्यक होगा। 10

जवाहरलाल नेहरू ने इलाहाबाद में अपने घर पर पहली बार देखे गए व्यापक उत्साह का सजीव वर्णन किया, जब किसानों का एक प्रतिनिधिमंडल गांधीजी से मिलने आया था। जवाहरलाल उनसे मिलने गए, फिर उनके गांवों में गए जहां वे क्रूर जमींदारी के उत्पीड़न की शिकायत कर रहे थे। अधिकांश भारतीयों के निवास स्थानों का दौरा नेहरू के लिए एक नया अनुभव था: उन्होंने पाया कि पूरा ग्रामीण इलाका उत्साह से भरा हुआ था, लोगों के बीच चर्चा से ही बड़ी- बड़ी सभाएँ बन जाती थीं, 'लोग उमड़ पड़ते थे या जितनी तेज़ी से दौड़ सकते थे दौड़ते हुए आते थे। वे फटे-पुराने कपड़ों में थे, पुरुष और महिलाएं, लेकिन उनके चेहरे उत्साह से भरे थे और उनकी आँखें चमक रही थीं और ऐसा लग रहा था जैसे वे किसी चमत्कार की उम्मीद कर रहे हों जो उनके लंबे दुख को समाप्त कर देगा।' 11 इस प्रकार नेहरू ने भारत की वास्तविकता को समझा, जैसा कि गांधीजी ने समझा था: जनता लामबंद होने के लिए तैयार थी।
1919 के मध्य तक आश्रम में वे न केवल कपड़ा बुनने (जैसा कि वे लंबे समय से मिल के सूत का उपयोग करके करते आ रहे थे) बल्कि अपना सूत स्वयं कातने में भी काफी आगे बढ़ चुके थे। गांधी ने आर्थिक कारणों से कताई और बुनाई के उपयोग पर सर्वप्रथम बल दिया: गाँव कपड़े के मामले में आत्मनिर्भर हो सकते थे, और भारत को इसे अन्य देशों से आयात नहीं करना पड़ता – विशेष रूप से ब्रिटेन से, जहाँ भारत लंकाशायर की सूती मिलों के लिए एक मजबूत बाजार था। गांधी ने बाद में कताई के आध्यात्मिक लाभों का वर्णन किया और स्वदेशी व्रत का आग्रह किया: कि लोगों को भारत में निर्मित कपड़े का ही उपयोग करने और विदेशी कपड़े को नष्ट करने की शपथ लेनी चाहिए। उन्होंने 'ईश्वर के छोटे पहियों' का वर्णन किया जो 'धीरे-धीरे, लेकिन अत्यंत प्रभावी ढंग से घूमते हैं'। 12
दिलचस्प बात यह है कि खिलाफत के लिए मुस्लिम आंदोलन में गांधी का दबदबा कायम हो गया। अली बंधुओं के जेल से रिहा होने के बाद, वे कांग्रेस में शामिल हो गए और गांधी खिलाफत समिति में शामिल हो गए। यह गांधी के अधिक गंभीर समर्थकों के लिए एक समस्या थी, जो यह सोच रहे थे कि जब वे हमेशा साम्राज्यवाद के खिलाफ होने का दावा करते थे, अंग्रेजों के खिलाफ नहीं, तो वे ब्रिटिश साम्राज्य पर हमला करते हुए ओटोमन साम्राज्य के अधिकारों की रक्षा करने के लिए इतने उत्सुक क्यों थे। उन्होंने हैरी पोलक को तिरस्कारपूर्ण ढंग से लिखा: 'आप उस धार्मिक दृष्टिकोण को नहीं समझ सकते जो

इस मामले में मेरा मार्गदर्शन करता है।' 13 यहां तक कि वफादार मगनलाल ने भी सुझाव दिया कि वे सुविधा के लिए खिलाफत का समर्थन कर रहे थे, जिस पर उन्होंने स्पष्ट रूप से, हालांकि व्यंग्यात्मक रूप से, आध्यात्मिक सागर को मक्खन में बदलने की उपमा का उपयोग करते हुए जवाब दिया: 'खिलाफत भारत रूपी सागर की महान मंथन प्रक्रिया है। हमें इस बात की चिंता क्यों करनी चाहिए कि आंदोलन से क्या निकलेगा (विष या अमृत)? यह पर्याप्त है कि हम निश्चित हैं कि यह गतिविधि शुद्ध और धर्मी है।' 14
वास्तव में इस मामले का कोई धार्मिक आधार नहीं था – अरब के लोग, जो तुर्की शासन से मुक्ति पाने के लिए संघर्ष कर रहे थे, इस्लाम के पवित्र स्थलों की देखभाल करने में पूरी तरह सक्षम थे। खिलाफत आंदोलन भारत में मुस्लिम जनमत को भड़काने का एक अवसरवादी तरीका था; शेष मुस्लिम जगत, अपनी समस्याओं में उलझा हुआ था, इसलिए तुर्की के सुल्तान में उसकी कोई खास दिलचस्पी नहीं थी। खिलाफत के लिए गांधी के समर्थन का मतलब था कि उन्हें तुर्कों की अपने साम्राज्य को बनाए रखने की क्षमता को बढ़ा-चढ़ाकर पेश करना था और उनके कुशासन को कम करके दिखाना था। हाल की घटनाओं में 1914-18 के युद्ध के दौरान लगभग सवा दस लाख अर्मेनियाई लोगों का नरसंहार शामिल था, जो ब्रिटिश साम्राज्य द्वारा किए गए किसी भी अत्याचार से कहीं अधिक भयावह था। गांधी ने इस नरसंहार को स्वीकार करने से इनकार कर दिया: उन्होंने कहा, 'मुझे अर्मेनियाई मामले पर भरोसा नहीं है।' 15 यह नैतिक उपेक्षा का एक उदाहरण था जो बाद में होलोकॉस्ट की भयावहता को समझने में उनकी विफलता में भी झलकता है। वह अपने आध्यात्मिक प्रकाश से अंधा होकर यह सोचने लगा कि केवल एक ही चीज महत्वपूर्ण है, यानी ईश्वर का व्यक्तिगत अनुभव, और उसने व्यापक परिदृश्य को नजरअंदाज कर दिया।
जवाहरलाल नेहरू ने भारतीय ग्रामीण इलाकों की अपनी यात्राओं में पाया
कि अधिकांश ग्रामीण क्षेत्रों में किसान 'खिलाफत' शब्द को 'खिलाफ' से आया हुआ मानते थे, जो एक उर्दू शब्द है जिसका अर्थ 'विरुद्ध' होता है, और वे इसे सरकार के खिलाफ विरोध के रूप में समझते थे, क्योंकि उन्हें सत्ता के हाथों कई कष्ट झेलने पड़ते थे।
राष्ट्रवादियों ने गौहत्या जैसे मुद्दों पर हिंदुओं और मुसलमानों के बीच व्याप्त शत्रुता को दूर करने का प्रयास करके खिलाफत के प्रश्न पर मुसलमानों के लिए हिंदू समर्थन जुटाने की कोशिश की। मुसलमानों द्वारा

गोमांस के उपयोग से हिंदू क्रोधित थे, और यद्यपि गांधी जी भी गौहत्या से आहत थे, उन्होंने उन्हें यह याद दिलाया कि बैलों के साथ की जाने वाली क्रूरता एक ऐसी बुराई है जिसे दूर करना उनके बस में है; और गाय मारने वाले मुसलमान को मारना धर्म का कार्य नहीं है। वे गायों के प्रति अंधभक्तिपूर्ण नहीं थे, बल्कि उन्होंने हिंदू धर्म में उनकी स्थिति को तर्कसंगत बनाते हुए एंड्रयूज से कहा: 'गाय की पूजा मानवतावाद के विकास में हिंदू धर्म का अनूठा योगदान है। यह समस्त जीवन की एकता और इसलिए उसकी पवित्रता में विश्वास का व्यावहारिक अनुप्रयोग है।' पुनर्जन्म का महान सिद्धांत, या पुनर्जन्म, उस विश्वास का प्रत्यक्ष परिणाम है।' 16 उन्होंने मुसलमानों द्वारा आधिकारिक तौर पर खिलाफत के लिए हिंदू समर्थन को गायों की हत्या से परहेज करने से जोड़ने के प्रस्ताव का विरोध किया, यह महसूस करते हुए कि उन्हें सद्भावना के रूप में ऐसा करना चाहिए।
गांधी ने कांग्रेस की सहमति के बिना ही यह निर्णय लिया कि सरकार के साथ असहयोग आंदोलन 1 अगस्त 1920 से शुरू होगा। संयोगवश, इसी दिन तिलक का निधन हुआ, जिससे गांधी अब प्रमुख राष्ट्रवादी नेता के रूप में और भी स्पष्ट रूप से पहचाने जाने लगे – अन्य या तो मर चुके थे या उन्हें दरकिनार कर दिया गया था।
असहयोग आंदोलन में सरकारी समारोहों में भाग लेने से इनकार करना,
बच्चों को सरकारी स्कूलों और कॉलेजों से निकालना, ब्रिटिश अदालतों का बहिष्कार करना, चुनावों से दूर रहना, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करना और बड़े पैमाने पर स्वदेशी नीति अपनाना शामिल था। इस रणनीति में अंग्रेजों द्वारा प्रदत्त उपाधियों और मानद पदों को वापस करना भी शामिल था; इसी के अनुरूप, गांधी ने अपने कैसर-ए-हिंद, जुलू युद्ध और बोअर युद्ध के पदक वायसराय को लौटा दिए - उन्होंने कहा कि 'ऐसा करते समय उन्हें काफी दुख हुआ'। 17
अपने विद्यार्थियों से स्कूल और कॉलेज छोड़ने की अपील करते हुए, गांधीजी राष्ट्रीय क्रांति के लिए उनके माता-पिता की अनदेखी करते हुए युवाओं को संबोधित कर रहे थे, ठीक वैसी ही अपील जो बाद में माओ त्से तुंग ने चीन में की थी। उनकी इस क्रांतिकारी अपील के कारण उदार शिक्षाविदों से उनका टकराव हुआ, जो शिक्षा को बढ़ावा देने को ब्रिटिश शासन का एक सकारात्मक पहलू मानते थे। अपने बच्चों की शिक्षा के प्रति उनके

दृष्टिकोण से (हालांकि स्वयं की शिक्षा के प्रति नहीं) यह स्पष्ट है कि गांधीजी शिक्षा के प्रभाव पर अविश्वास करते थे। यदि उन्होंने छात्रों को ब्रिटिश साम्राज्य से शिक्षा प्राप्त करने में निहित भारत के प्रति विश्वासघात के बारे में आश्वस्त कर दिया था, तो उन्होंने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के छात्रों को आदेश दिया, 'विश्वविद्यालय में एक पल भी मत रहो, इसकी हवा में भी सांस मत लो।' 18 दो सौ छात्रों ने अपनी शिक्षा जारी न रखने की प्रतिज्ञा ली। कई पूर्व समर्थकों, विशेष रूप से टैगोर ने, इस अभियान में गांधीजी का विरोध किया।
खिलाफत आंदोलन और असहयोग आंदोलन के मुद्दों पर विचार करने के लिए 4 से 9 सितंबर 1920 तक कलकत्ता में कांग्रेस का विशेष अधिवेशन आयोजित किया गया। गांधी का जिन्ना और एनी बेसंत ने विरोध किया, लेकिन अली बंधुओं और मोतीलाल नेहरू के समर्थन और खिलाफत आंदोलन के समर्थकों की भारी भीड़ के कारण उन्हें स्पष्ट बहुमत प्राप्त हुआ। अंत में, गांधी की नीतियों के पक्ष में 1,855 और विपक्ष में 873 मत पड़े।
गांधी बंबई में होम रूल लीग की एक बैठक में गए और उन्होंने इसके कार्यक्रम को पूर्ण स्वशासन में बदलने पर जोर दिया, जबकि जिन्ना ने तर्क दिया कि 'ब्रिटिश राष्ट्रमंडल के भीतर स्वशासन' अभी भी सबसे यथार्थवादी लक्ष्य है। जिन्ना और अन्य लोगों ने इस्तीफा दे दिया; यह उनके बीच कड़वी प्रतिद्वंद्विता की शुरुआत थी। गांधी ने जिन्ना को वापस आमंत्रित किया, लेकिन उन्होंने जवाब दिया कि उन्हें पूरा विश्वास है कि गांधी का कार्यक्रम 'विनाश की ओर ले जाएगा'। उन्होंने घोषणा की, 'आपके तरीकों ने अब तक आपके द्वारा अपनाए गए लगभग हर संस्थान में और देश के सार्वजनिक जीवन में न केवल हिंदुओं और मुसलमानों के बीच, बल्कि हिंदुओं और हिंदुओं, मुसलमानों और मुसलमानों के बीच और यहां तक कि पिता और पुत्रों के बीच भी फूट और विभाजन पैदा कर दिया है।' गांधी का चरम कार्यक्रम सफल रहा क्योंकि इसने 'क्षणिक रूप से, ज्यादातर अनुभवहीन युवाओं, अज्ञानी और निरक्षर लोगों की कल्पना को प्रभावित किया था'। 19
उसी वर्ष दिसंबर में नागपुर में आयोजित कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन में, जिन्ना हमेशा की तरह पश्चिमी शैली के परिधानों में सजे-धजे उपस्थित हुए। वे खादी के वस्त्र पहने कांग्रेस प्रतिनिधियों के सामने खड़े हुए और असहयोग नीति के कार्यक्रम का विरोध किया, जिसे उन्होंने 'श्री गांधी का'

बताया। सम्मेलन कक्ष 'महात्मा गांधी!' के नारों से गूंज उठा। जिन्ना के भाषण को हूटिंग, सीटियों और अपशब्दों से दबा दिया गया, अंततः उन्हें मंच से हटा दिया गया, जिससे उनकी सुंदर युवा पत्नी के सामने उन्हें अपमानित होना पड़ा। बाद में उन्होंने कांग्रेस से इस्तीफा दे दिया और अपना जीवन अपनी सफल वकालत और स्वतंत्र राजनीतिक करियर में समर्पित कर दिया। गांधी का इस राजनीतिक अपमान को चुपचाप सहना एक बड़ी गलती थी, जिसका कड़वा फल उन्हें पच्चीस साल बाद भुगतना पड़ा।
सम्मेलन के बाहर लोग विदेशी कपड़ों की आग जला रहे थे, शराब की दुकानों
के सामने धरना दे रहे थे और अछूतों से मेलजोल बढ़ा रहे थे – पहली बार कांग्रेस ने अपने कार्यक्रम में अस्पृश्यता के खिलाफ अभियान को शामिल किया। एक साल के भीतर ही इसके छह मिलियन नए सदस्य जुड़ गए। कांग्रेस ने स्वतंत्र भारत का प्रतिनिधित्व करने के लिए एक ध्वज अपनाया: तिरंगा जिसमें हिंदुओं के लिए नारंगी, मुसलमानों के लिए हरा और अन्य लोगों के लिए सफेद रंग था (आयरलैंड के ध्वज की तर्ज पर: कैथोलिकों के लिए हरा, प्रोटेस्टेंटों के लिए नारंगी और उनके बीच शांति का प्रतीक सफेद रंग)। गांधी ने यह भी प्रस्ताव रखा कि ध्वज के केंद्र में चरखा होना चाहिए। कताई को बढ़ावा देना अब एक प्रमुख उद्देश्य बन गया था, जिसे गांधी के इस विश्वास से बल मिला कि अंग्रेजों के आने से पहले पूरा भारत आत्मनिर्भर था, हर परिवार अपना सूत खुद कातता था। यह सच नहीं था: भारत में कई ऐसे स्थान थे जहाँ अंग्रेजों के आने से पहले कताई नहीं होती थी; लेकिन गांधी के बाद कताई करने वालों की ऐसी कोई कमी नहीं रही। कताई न केवल गरीबों के लिए एक आवश्यक गतिविधि बन गई, जिससे उन्हें बुवाई और कटाई न कर पाने पर काम मिलता था, बल्कि सभी राष्ट्रवादियों के लिए भी। रवींद्रनाथ टैगोर ने 'चक्र की पूजा' की आलोचना करते हुए तर्क दिया कि 'मनुष्य के मन की रचना करते समय, ईश्वर ने मकड़ी जैसी मानसिकता को अपना आदर्श नहीं बनाया जो जाले बनाने में निरंतर एकरूपता के लिए अभिशप्त हो... इसे चक्की में पीसकर एक समान आकार, आकृति और उद्देश्य वाली किसी मानकीकृत वस्तु में बदलना मानव स्वभाव पर एक अत्याचार है।' 20
गांधी जी ने कहा कि जब उन्होंने हिंद स्वराज में भारत की समस्याओं के समाधान के रूप में हाथ से कपड़ा बुनने का सुझाव दिया था, तब उन्होंने हथकरघा या चरखा भी नहीं देखा था। अब वे हाथ से कताई को न केवल आर्थिक रूप

से लाभदायक बल्कि आध्यात्मिक रूप से आवश्यक बताकर बढ़ावा दे रहे थे। उन्होंने चरखे पर प्रतिदिन एक घंटा कताई करने का कार्य शुरू किया और आश्रमवासियों को अपने कपड़े कातने और बुनने के लिए तकनीकी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। जल्द ही वे सभी मोटे सफेद खादी के वस्त्र पहनने लगे। यह पूरे भारत में राष्ट्र की स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता की पुकार का प्रतीक बन गया। कपड़ों के महत्व को पहचानते हुए गांधी जी ने अपने राष्ट्र-मुक्तिदूतों को इस तरह से वस्त्र पहनाए जो साम्राज्य और उसके उत्पादों के प्रति उनके विद्रोह को स्पष्ट रूप से दर्शाता था।
मोटा कपड़ा बनाना एक बात थी, लेकिन यह सुनिश्चित करना कि लोग उसे पहनें, दूसरी बात। इस काम में उनकी सहयोगी सरलादेवी चौधरी थीं, जो एक बंगाली राष्ट्रवादी कार्यकर्ता थीं और जिनका विवाह लाहौर के एक राष्ट्रवादी रामभुज दत्त चौधरी से हुआ था। जब अमृतसर हत्याकांड से संबंधित प्रतिबंध हटने के बाद गांधी को पंजाब जाने की आधिकारिक अनुमति मिली, तब चौधरी जेल में थे और सरलादेवी उनकी मेज़बान थीं। वह राष्ट्रवादी परिवार की एक प्रतिष्ठित सदस्य थीं, रवींद्रनाथ टैगोर की भतीजी थीं और लंबे समय से कांग्रेस में सक्रिय थीं; 1920 में जब गांधी पहली बार उनके घर रुके थे, तब वह सैंतालीस वर्ष की थीं और गांधी पचास वर्ष के। वह बौद्धिक क्षमता और स्त्री सहभागिता का प्रतीक थीं, जो कस्तूरबा कभी प्रदान नहीं कर पाई थीं। उन्होंने कैलेनबैक को लिखा, 'मैं उन्हें अपनी आध्यात्मिक पत्नी कहता हूं। एक मित्र ने इसे बौद्धिक विवाह कहा है।' 21
वह वह काम भी कर सकती थीं जो उनके पुरुष अनुयायी नहीं कर सकते थे - खादी के परिधानों को चटख रंगों में पहनकर एक फैशन मॉडल के रूप में काम करना, जिससे उन महिलाओं के लिए खादी को अपनाने का रास्ता खुल गया जिनके लिए राष्ट्रवादी भावना उनके पहनावे के चुनाव को प्रभावित करने के लिए पर्याप्त नहीं थी। सरलादेवी गांधी जी के साथ पंजाब की यात्राओं पर जाती थीं, उनकी सभाओं में भाषण देती थीं या राष्ट्रवादी गीत गाती थीं, और हाथ से बुने कपड़ों के गुणों का प्रचार करती थीं।
मार्च 1920 में वह उनके साथ रह रहे थे और अपने सामान्य स्नेहपूर्ण शब्दों में लिख रहे थे: 'सरलादेवी हर संभव तरीके से मुझ पर अपना प्यार बरसा रही हैं।' 22 जब उनकी तबीयत खराब थी, तब भी उन्होंने उन्हें स्नेहपूर्वक लिखा: 'आज मेरी तबीयत में कोई सुधार नहीं है। मुझे बिस्तर पर ही रहना होगा।

तुम अब भी मुझे नींद में भी सताती हो।' 23 जब वह आश्रम आती थीं, तो अन्य निवासियों ने उनके साथ अकेले बिताए गए समय और उन्हें घरेलू कामों से छूट देने के तरीके पर ईर्ष्यापूर्ण आलोचना की - उन्हें शौचालय खाली करने का काम नहीं दिया जाता था। हालाँकि, उन्होंने घरेलू क्षेत्र में उनकी महत्वाकांक्षा की कमी पर उन्हें फटकारा: 'तुम चाहे कितनी भी महान और अच्छी क्यों न हो, घरेलू काम करने की क्षमता हासिल किए बिना तुम एक पूर्ण स्त्री नहीं हो।' उन्होंने पत्र पर 'एलजी' यानी विधि-निर्माता के हस्ताक्षर किए, जो एक चिढ़ाने वाला नाम था जिसका इस्तेमाल वह उनके लिए करती थीं। 24 उन्होंने सरलादेवी के साथ बहुविवाह पर भी चर्चा की, और बाद में उस घटना का वर्णन इस प्रकार किया:
एक महिला से मेरी बहस हुई, जिस पर मैं लगभग मोहित हो गया था। यह
इतनी निजी बात है कि मैंने इसे अपनी आत्मकथा में नहीं लिखा।
हमने इस बात पर विचार किया कि क्या आध्यात्मिक सहभागिता संभव
है। विवाह संबंध एक अनुबंध का मामला है। आपके माता-पिता बचपन
में ही इसकी व्यवस्था कर देते हैं और इसमें आपका कोई हाथ नहीं
होता। मैं एक अनपढ़ महिला के संपर्क में आया। फिर मैं एक व्यापक सांस्कृतिक शिक्षा प्राप्त महिला से मिला। क्या हम दोनों के
बीच घनिष्ठ संबंध विकसित नहीं हो सकते? मैंने खुद से कहा। यह एक तर्कसंगत तर्क था, और मैं लगभग गिर ही गया था। 25
1920 के अंत में जब वह रिश्ते को ठंडा करना चाह रहे थे, तो उन्होंने उनके प्रति अपने स्नेह के तिरस्कारपूर्ण स्वभाव पर इस तरह ज़ोर दिया कि बीस वर्षों से कांग्रेस मंच पर सक्रिय रहीं एक परिपक्व महिला को यह बात निश्चित रूप से परेशान कर देती: 'जहाँ तक मैं हमारे रिश्ते को देख सकता हूँ, यह भाई-बहन का रिश्ता है। मुझे तुम्हारे लिए नियम बनाने होंगे, और इस तरह तुम्हें नाराज़ करना होगा। मुझे एक भाई की तरह विनम्रता से विनती करनी होगी, हमेशा सही शब्दों का इस्तेमाल करने का ध्यान रखते हुए, ठीक वैसे ही जैसे मैं अपनी सबसे बड़ी बहन से करता हूँ।' 26 उनके बेटे देवदास और उनके सहायक महादेव देसाई सहित अन्य लोगों ने उन्हें खतरे के बारे में आगाह किया, जिससे रिश्ते का अंत हुआ। संभवतः सरलादेवी के साथ उनकी अत्यधिक निकटता के बारे में ऐसी चेतावनियाँ तब आईं जब वह ग्रहणशील मनोदशा

में थे, क्योंकि सरलादेवी की माँगें बढ़ रही थीं और उन्हें लग रहा था कि वह उनके बिना भी काम चला सकते हैं।
अपने साधारण कद-काठी के बावजूद, गांधी जी हमेशा महिलाओं को आकर्षित
करते थे और उनका ध्यान आकर्षित करना उन्हें अच्छा लगता था। सरलादेवी उनके सबसे गंभीर मुलाकातों में से एक थीं। आमतौर पर ये मुलाकातें आश्रम में रहने वाली अविवाहित महिलाओं से संबंधित होती थीं, जैसे कि खूबसूरत डेनिश मिशनरी एस्थर फेरिंग, जिन्हें गांधी जी से कई स्नेहपूर्ण पत्र मिले थे। मिली पोलक ने गांधी जी के आकर्षण की अपनी व्याख्या इस प्रकार की: 'अधिकांश महिलाएं पुरुषों को उन गुणों के लिए प्यार करती हैं जिन्हें आमतौर पर मर्दाना माना जाता है। फिर भी महात्मा गांधी को कई महिलाओं का प्यार उनकी स्त्रीत्व के कारण मिला: उन सभी गुणों के लिए जो महिलाओं से जुड़े होते हैं - महान विश्वास, महान दृढ़ता, महान भक्ति, महान धैर्य, महान कोमलता और महान सहानुभूति।' 27
गांधी का जादू पुरुषों पर भी चला। अमृतसर हत्याकांड के बाद गांधी की मुलाकात प्यारेलाल से हुई, जो आगे चलकर उनके सबसे निष्ठावान शिष्यों में से एक, उनके निरंतर साथी और जीवनीकार बने। प्यारेलाल नायर (जिन्हें हमेशा उनके पहले नाम से ही जाना जाता था) उस समय छात्र थे और उस प्रतिनिधिमंडल का हिस्सा थे जो 1919 के अंत में अमृतसर में आयोजित कांग्रेस के दौरान गांधी से मिलने आया था। प्रतिनिधिमंडल मार्शल लॉ से संबंधित मुकदमों में फंसे एक व्यक्ति की ओर से सलाह लेने आया था। क्या गांधी माफी की सिफारिश कर सकते हैं? वे यह जानना चाहते थे। प्यारेलाल ने गांधी के बारे में अपनी पहली छाप का वर्णन इस प्रकार किया:
उन्होंने अभी-अभी स्नान किया था और दोपहर के भोजन के लिए जा रहे
थे। सफेद कश्मीरी पश्मीना शॉल में लिपटे हुए, वे सीधे बैठे थे,
गरिमा और शांति की मूर्ति प्रतीत हो रहे थे। उनकी सादगी में एक
भव्यता थी। उनकी मधुर गहरी आवाज किसी को भी मंत्रमुग्ध कर देती
थी। उनकी आँखों में असीम दया, करुणा और शांति झलकती थी। शरीर दुबला-पतला था, लेकिन उनकी चौड़ी छाती जबरदस्त शक्ति का आभास देती थी। उनके चौड़े, चिकने माथे पर एक भी झुर्री नहीं थी। उनका चेहरा तेजस्वी था, त्वचा रेशम जैसी चिकनी और रंग साफ था। 28

छात्रों ने उनसे पूछा कि ऐसे माहौल में राजनीतिक हत्या का जुर्म कबूल करने वाले व्यक्ति से वे क्या उम्मीद रख सकते हैं? गांधी ने कहा: 'मैं सबसे जघन्य हत्यारे को भी फांसी पर नहीं चढ़ने दूंगा। मेरे आश्रम में कई ऐसे लोग हैं जो राजनीतिक हत्या के मामलों में शामिल थे। उन्होंने अपना जुर्म कबूल कर लिया। अहिंसा का मार्ग अपनाकर वे आज मेरे सबसे भरोसेमंद कार्यकर्ताओं में से हैं।' प्यारेलाल, जिन्होंने कम उम्र में ही अपने पिता, जो न्यायपालिका के एक अधिकारी थे, को खो दिया था, गांधी में प्रशंसा के सारे गुण देखते थे।
उनकी आवाज़ में एक शांत आत्मविश्वास और असीम करुणा थी, जो एक
अलौकिक वैराग्य से जुड़ी हुई थी, जो विचित्र रूप से सुकून देने
वाली थी; एक शांत गरिमा और राजसीपन का भाव, जो किसी छिपे हुए
शक्ति भंडार तक पहुँच का संकेत देता था, जो किसी बाधा को नहीं
पहचानता था, कभी पराजित नहीं होता था और मानो किसी अभेद्य
ग्रेनाइट की दीवार को भी भेदने का रास्ता खोज लेता था... इसे
महसूस किया जा सकता था। यह गहराई का गहराई को पुकारना था। यही
वह था जिसकी मुझे तलाश थी - आत्मा की शक्ति की एक झलक, जो स्वयं
अपनी मुहर और स्वीकृति है, जिसे पृथ्वी पर कोई भी शक्ति वश में
नहीं कर सकती और जो कभी विफल नहीं होती।
1920 की शरद ऋतु में, प्यारलेल ने असहयोग आंदोलन के आह्वान के जवाब में अपनी पढ़ाई छोड़ दी और साबरमती के आश्रम में शामिल हो गए। जल्द ही, वे महादेव देसाई के साथ, अपना सारा समय गांधीजी को समर्पित करने लगे। उन्होंने बताया कि गांधीजी कैसे दिन-प्रतिदिन, सप्ताह-दर-सप्ताह केवल तीन या चार घंटे की नींद के साथ काम करते रहते थे, और कैसे वे दूसरों से भी अपने उच्च प्रदर्शन स्तर को बनाए रखने की अपेक्षा करते थे। 'किसी भी आपात स्थिति के लिए पल भर में तैयार रहना पड़ता था। किसी कार्य की कठिनाई या संसाधनों की कमी को कभी भी काम न करने के बहाने के रूप में स्वीकार नहीं किया जाता था।' 30 गांधीजी यथासंभव सब कुछ स्वयं करने पर जोर देते थे। 'यदि उन्हें कोई कागज़ देखना होता या अपना थूकदान मंगवाना होता, तो वे किसी को आदेश देने के बजाय स्वयं जाकर उसे ले आते थे; वे अपने कपड़े भी स्वयं सिलते थे।' उन्हें बोलकर लिखवाने की बजाय लिखना ज़्यादा पसंद था।’ एक दिन प्यारेलाल ने गांधीजी द्वारा अपने हाथ से लिखे पचास पत्र गिने, जिसके बाद

वे इतने थक गए कि उन्होंने अपने हाथों से अपनी कनपटी दबाई और ‘जहाँ बैठे थे वहीं ज़मीन पर गिर पड़े, यहाँ तक कि जिस बिस्तर पर वे टिके थे उसे भी नहीं बिछाया। उन्होंने बस उसे एक तरफ़ हटा दिया।’ 31
वह फाइलों और कागजों को रखने के लिए लाल खादी के एक टुकड़े का इस्तेमाल थैले के रूप में करते थे, वे स्टील की निब से लिखते थे और हमेशा अपनी मेज को साफ रखने पर जोर देते थे: 'उनके किसी भी कर्मचारी का बुरा हाल होगा जो उन्हें अड़तालीस घंटे से अधिक पुराना पत्र भेजेगा।' 32 जब दूसरे उनके लिए पत्र लिखते थे, तो उन्हें संक्षिप्त उत्तर पसंद थे - पाँच या दस पंक्तियों से अधिक के उत्तर वे फेंक देते थे। अब उनका आहार बकरी के दूध, किशमिश और अन्य फलों से बना होता था जिन्हें वे सावधानी से नापकर खाते थे। एक बार प्यारेलाल ने किशमिश की संख्या उन्नीस से बढ़ाकर तेईस कर दी, लेकिन 'उन्होंने इसे भांप लिया और मुझे 'अंध प्रेम' के खतरे पर एक लंबा-चौड़ा भाषण दिया।' 33 प्रत्येक भोजन का मेनू सावधानीपूर्वक इस बात के अनुसार समायोजित किया जाता था कि उनके शरीर ने पिछले भोजन पर कैसी प्रतिक्रिया दी थी, उन्हें कितनी नींद आई थी या आने वाली थी, और पहले से ही या भविष्य में होने वाले शारीरिक और मानसिक तनाव को ध्यान में रखा जाता था।
1921 तक गांधी जी ने अपने अनूठे उद्यम के सभी तत्व स्थापित कर लिए थे: आश्रम में एक सुरक्षित आधार; प्रतिभाशाली शिष्यों का एक दल, जिनमें देसाई और प्यारेलाल सबसे निपुण थे; कांग्रेस में उनकी इच्छाओं के प्रति आज्ञाकारी एक राष्ट्रीय पार्टी; खादी में उनकी सेना के लिए एक वर्दी; कताई और आत्मनिर्भरता पर आधारित एक आर्थिक कार्यक्रम, उनके साप्ताहिक घोषणाओं के लिए एक समाचार पत्र, और अपने अनुयायियों को प्रेरित और प्रोत्साहित करने के लिए सत्याग्रह का एक दर्शन।
नए वायसराय, वकील लॉर्ड रीडिंग (पूर्व में रूफस आइज़ैक्स), ने 1921 में गांधीजी से छह बार मुलाकात की और सफेद धोती और टोपी पहने नंगे पैर वाले इस व्यक्ति की उपस्थिति में उन्हें कुछ भी असामान्य नहीं लगा।
मुझे सड़क पर बिना देखे ही उसके पास से गुजर जाना चाहिए था।
लेकिन जब वह बोलता है तो मेरा नजरिया बदल जाता है। वह सीधा
बोलता है और अंग्रेजी में अच्छी तरह से अपनी बात रखता है,
शब्दों के महत्व को बखूबी समझता है। उसमें कोई झिझक नहीं है और
उसकी हर बात में ईमानदारी झलकती है, सिवाय कुछ राजनीतिक मुद्दों

पर चर्चा के... उसके धार्मिक और नैतिक विचार प्रशंसनीय हैं और वास्तव में बहुत ऊंचे हैं, लेकिन मुझे यह स्वीकार करना होगा कि राजनीति में उनके इन विचारों को व्यवहार में लाना मेरे लिए
मुश्किल है।
गांधी जी ने वादा किया कि एक वर्ष के भीतर स्वशासन प्राप्त किया जा सकता है, जो अंग्रेजों के साथ असहयोग के माध्यम से और एक रचनात्मक कार्यक्रम के तहत हासिल किया जाएगा। इस कार्यक्रम में अस्पृश्यता का उन्मूलन, हिंदू-मुस्लिम एकता, हाथ से कताई और बुनाई को बढ़ावा देना और शराब एवं मादक पदार्थों पर प्रतिबंध शामिल था। उन्होंने पूरे भारत में निरंतर यात्रा की और विशाल जनसमूहों को असहयोग और अहिंसा का संदेश दिया। इनमें से कई लोग उन्हें सुन नहीं पाते थे, लेकिन सफेद खादी पहने उस जीवंत संत के दर्शन मात्र से ही संतुष्ट हो जाते थे।
उन्होंने 1 अगस्त 1921 तक विदेशी कपड़ों के पूर्ण बहिष्कार का आह्वान किया, जिसके परिणामस्वरूप 31 जुलाई को बड़े पैमाने पर आगजनी हुई। बंबई में जलाए गए कपड़ों का ढेर लगभग एक मील व्यास का था। गांधी जी ने स्वयं जलती हुई माचिस से उस पर आग लगाई, जिससे हिंदू पौराणिक कथाओं में विनाश और नवीनीकरण के प्रतीकात्मक महत्व की धारणा को बल मिला। यहूदी, ईसाई और मुस्लिम परंपराएं इस बर्बादी की निंदा करतीं; गांधी जी के समर्थक चार्ल्स एंड्रयूज ने 'विदेश में अपने साथी पुरुषों और महिलाओं की उत्कृष्ट कारीगरी को आग में नष्ट करने' का विरोध किया। 35 गांधी जी से पूछा गया, "घर पर या अन्य देशों में गरीबों को कपड़ा क्यों नहीं दिया जाता?" उन्होंने उत्तर दिया कि विदेशी कपड़ा 'पापपूर्ण' है - 'हमें विदेशी कपड़े को गंदगी के समान देखना चाहिए और जिस प्रकार हम अपने शरीर पर लगी गंदगी दूसरों को नहीं देते, उसी प्रकार हमें विदेशी कपड़े की इस गंदगी को भी दूसरों को नहीं देना चाहिए।' 36 हालांकि, जिस लेख में उन्होंने यह लिखा था, उसके अंत में उन्होंने अपना रुख नरम किया और उल्लेख किया कि मुसलमान स्मिरना से आए तुर्की शरणार्थियों की मदद के लिए विदेशी कपड़ा भेज रहे थे।
उन्होंने अपनी आध्यात्मिक साधना जारी रखी। 1921 की वसंत ऋतु में उन्होंने तय किया कि वे सप्ताह में एक दिन मौन रहेंगे – सोमवार को वे केवल आपात स्थिति में ही बोलेंगे – और यह एक ऐसा अनुशासन था जिसे उन्होंने अपने जीवन के अंत तक बनाए रखा। 1921 के अंत में उन्होंने प्रतिदिन आधे घंटे तक

सूत कातने का संकल्प लिया। उन्होंने अपने पहनावे को और भी परिष्कृत करने का भी निर्णय लिया। उन्होंने लंबी धोती, बिना आस्तीन की जैकेट और टोपी पहनना छोड़ दिया और उसी वर्ष 23 सितंबर को वे केवल एक धोती पहनकर बुनकरों की एक सभा में गए। उन्होंने इसे उन गरीबों के साथ एकजुटता का प्रतीक बताया जो विदेशी कपड़े के बदले पर्याप्त खादी नहीं खरीद सकते थे, जिसे वे जलाने पर जोर दे रहे थे। उन्होंने यह भी तर्क दिया कि वर्तमान में खादी की इतनी कमी है कि सभी के लिए पर्याप्त नहीं है, इसलिए 'यदि अधिकांश पुरुष उनके जितना कम कपड़ा इस्तेमाल कर लें, तो महिलाओं के लिए पर्याप्त खादी होगी' – हालांकि उन्होंने कभी दूसरों को उनके जितना कम कपड़ा पहनने के लिए प्रेरित नहीं किया (और यह तर्क स्पष्ट रूप से केवल अल्पकालिक रूप से ही मान्य था, यदि बिल्कुल भी नहीं)। 37 मुसलमानों द्वारा स्वेच्छा से केवल लंगोटी पहनने का तो कभी कोई सवाल ही नहीं था - शरिया कानून के अनुसार पुरुषों और महिलाओं दोनों को ही कपड़ों में शालीनता बरतनी चाहिए - इसलिए एकता की बात के बीच मतभेद का एक और स्पष्ट संकेत था।
लगभग नग्न होकर वह साधुओं के वस्त्रों – या वस्त्रहीनता – की नकल कर रहा था। साधु भारत में भीख मांगने वाले और बांझ महिलाओं को गर्भाधान जैसे आध्यात्मिक वरदान देने वाले भिक्षु होते हैं। भविष्य में वह नंगे बदन, नंगे पैर और एक लंगोटी के साथ, और तापमान के अनुसार शॉल ओढ़कर या बिना शॉल ओढ़े भी चलेगा। ऐसा लग रहा था मानो अपने कांग्रेस समर्थकों को खादी के वस्त्र पहनने के लिए राजी करने के बाद, अब उसे और भी आगे जाना था। तीस साल पहले लंदन में वह विंग कॉलर और टॉप-हैट पहने हुए था। जब सोन्या श्लेसिन ने दक्षिण अफ्रीका से लिखा कि इस तरह नग्न रहना महज़ तमाशा है, दिखावा है, कोई आध्यात्मिक सार नहीं, तो उसने जवाब दिया कि यह तो उसकी सोच का स्वाभाविक विकास है। 'विश्वास कीजिए, लंगोटी में कुछ भी तमाशा नहीं है।' 38
स्वराज कार्यक्रम के अगले चरण में, यदि जनता का असहयोग सफल नहीं होता,
तो गांधी जी सरकारी अधिकारियों से अपने पद छोड़ने और सैनिकों से हथियार डालने का आह्वान करते, तथा एक चयनित क्षेत्र में कर हड़ताल शुरू करवाते। यदि 'एक वर्ष के भीतर स्वराज' के वादे को पूरा करना था, तो उन्हें 1921 के अंत से पहले स्वतंत्रता प्राप्त करनी थी। उनके बयान उत्तरोत्तर हताश होते जा रहे थे: 'हमें शराब नहीं पीनी चाहिए और जुआ नहीं खेलना चाहिए',

'हमें अपनी शारीरिक वासनाओं पर नियंत्रण रखना चाहिए। यदि हम ऐसा करते हैं, तो निश्चित रूप से हमें स्वराज प्राप्त हो सकता है।' 39
अब वह ब्रिटिश शासन को शैतानी शासन के रूप में प्रस्तुत कर रहा था –
रावण राज, राम राज नहीं; एक राक्षस का शासन, देवता का नहीं – और कह रहा था कि इसका अंत होना ही चाहिए। उसने अपने आंदोलन को ‘धर्म और अधर्म, प्रकाश की शक्तियों और अंधकार की शक्तियों’ के बीच संतुलन स्थापित करने वाले आंदोलन के रूप में प्रस्तुत किया। मुसलमानों और हिंदुओं का मकसद ‘धर्म और सम्मान’ था, जबकि यूरोपीय सभ्यता ‘शैतान की आत्मा’ का प्रतिनिधित्व करती थी। 40 वेल्स के राजकुमार, जो बाद में एडवर्ड अष्टम बने, की यात्रा का
बहिष्कार किया गया (जिनमें युवा लुई माउंटबेटन भी शामिल थे) और शाही दल को खाली सड़कें मिलीं। 21 नवंबर 1921 को बंबई में हिंसा भड़क उठी जब असहयोग आंदोलन के आत्म-बलिदान वाले तत्व ने अपना कुरूप रूप दिखाया। यह हिंसा अंग्रेजों पर हमला नहीं थी, बल्कि उन भारतीयों के साथ दुर्व्यवहार था जिन्होंने बहिष्कार का पालन नहीं किया। शराब की दुकानें तोड़ दी गईं, ट्राम रोक दी गईं और यात्रियों के साथ दुर्व्यवहार किया गया, उनके पश्चिमी कपड़े जबरन उतार दिए गए: पारसियों, ईसाइयों और यहूदियों पर हमले किए गए। पांच पुलिसकर्मी और तिरपन प्रदर्शनकारी मारे गए। गांधी ने भीड़ द्वारा दुकानों को लूटने और 'महात्मा गांधी की जय!' के नारे लगाने की हिंसा देखी। दंगों के बाद सी.एफ. एंड्रयूज ने उनका वर्णन 'थके-हारे और कमजोर' के रूप में किया, मानो वे 'मृत्यु के साये से गुजरे हों'। 41 उन्होंने घोषणा की कि वे तब तक उपवास करेंगे जब तक हिंदू और मुसलमान उन अन्य समुदायों के साथ सुलह नहीं कर लेते जिनके सदस्यों पर हमला किया गया था। विभिन्न समूहों द्वारा अच्छे व्यवहार का आश्वासन दिए जाने पर उन्होंने दो दिन बाद उपवास तोड़ा।
राजकुमार की यात्रा के दौरान हुई हिंसा के जवाब में सभाओं पर प्रतिबंध लगा दिया गया था, और गांधी ने अपने सैनिकों से प्रतिबंधों की अवहेलना करते हुए सभाएँ आयोजित करने और कारावास के लिए तैयार रहने का आह्वान किया। नेहरू पिता और पुत्र सहित कई लोगों को कारावास की सजा हुई। जनवरी 1922 के अंत तक तीस हजार लोगों को गिरफ्तार किया जा चुका था। असहयोग आंदोलन को इतनी प्रगति तक ले जाने के बाद, 1 फरवरी को गांधी ने वायसराय को पत्र लिखकर सरकार के खिलाफ एक व्यापक सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू करने का प्रस्ताव

रखा। राष्ट्रीय सविनय अवज्ञा की दिशा में पहले कदम के रूप में उन्होंने गुजरात के बारडोली क्षेत्र को चुना, एक बार फिर परीक्षण के लिए उस प्रांत को चुना जिससे वे सबसे अच्छी तरह परिचित थे।
4 फरवरी को उनकी योजनाएँ धराशायी हो गईं: संयुक्त प्रांत के चौरी चौरा गाँव में 'महात्मा गांधी की जय!' के नारे लगाते हुए एक जुलूस में भीड़ ने उद्घोषणाएँ कीं और फिर पुलिस के साथ झड़प हुई, जिससे पुलिस भयभीत हो गई और उसने गोलियाँ चला दीं। उनका गोला-बारूद जल्द ही खत्म हो गया और उन्होंने पुलिस स्टेशन में शरण ली, जिस पर भीड़ ने हमला किया और फिर आग लगा दी, जिसमें बाईस पुलिसकर्मियों को जलाकर या काटकर मार डाला गया। 12 फरवरी को गांधी ने कांग्रेस कार्य समिति को सविनय अवज्ञा आंदोलन स्थगित करने के लिए राजी किया: असहयोग आंदोलन को कताई, संयम, शिक्षा में सुधार और स्थानीय अछूतों के साथ काम करके उनकी स्थिति में सुधार लाने के कार्यक्रम से प्रतिस्थापित किया जाना था। उन्होंने कहा कि वे 'आधा हिंसक और आधा अहिंसक' आंदोलन का नेतृत्व करने से इनकार करते हैं, भले ही इससे तथाकथित स्वराज की प्राप्ति हो सके। 42 इस प्रकार उन्होंने नैतिक रूप से उच्च स्थान बनाए रखा, हिंसा को न तो उचित ठहराया और न ही उससे समझौता किया।
जवाहरलाल नेहरू ने याद किया कि उन्हें और अन्य कैदियों को इस नवीनतम घटनाक्रम के बारे में जानकर ‘आश्चर्य और घबराहट हुई… क्या एक दूरदराज का गाँव और एक सुनसान जगह पर उत्तेजित किसानों की भीड़ कम से कम कुछ समय के लिए हमारे राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम को समाप्त करने जा रही थी?’ 43 नेहरू और अन्य लोगों को मार्च में रिहा कर दिया गया। बाद में उन्होंने विचार किया कि गांधी ने लगभग सहज प्रवृत्ति से काम किया था, धीरे-धीरे जनता के व्यवहार को समझते हुए: ‘सारा संगठन और अनुशासन गायब हो रहा था; हमारे लगभग सभी अच्छे लोग जेल में थे, और जनता को अब तक अपने दम पर आगे बढ़ने के लिए बहुत कम प्रशिक्षण मिला था।’ 44
आंदोलन कमजोर पड़ रहा था, और जो थोड़ी-बहुत गति बची थी, उस पर अराजकतावादी तत्वों का कब्जा हो गया था। गांधीजी द्वारा राष्ट्र को प्रेरित करना भले ही प्रभावशाली था, लेकिन उसकी सफलता सीमित रही। न्यायालय, विद्यालय और महाविद्यालय सुचारू रूप से चलते रहे, पुलिस और सेना साम्राज्य के प्रति वफादार बनी रहीं। खिलाफत आंदोलन को एक निरर्थक अवधारणा के रूप में देखा जाने लगा था, जो हमेशा से ही बेतुकी थी। 1922 में

धर्मनिरपेक्ष तुर्कों ने सुल्तान को गद्दी से हटा दिया, जिसे भारतीय लोग महान खलीफा मानते थे, लेकिन इस्लाम की नींव नहीं हिली। तुर्कों ने एक धर्मनिरपेक्ष गणराज्य की घोषणा की और 1924 में कमाल अतातुर्क ने खिलाफत को समाप्त घोषित कर दिया। अतातुर्क एक आधुनिक नेता थे, जो गांधीजी की तुलना में जवाहरलाल नेहरू के विचारों से अधिक मिलते-जुलते थे। इस प्रकार खिलाफत आंदोलन का अंत हो गया, जो भारतीय राष्ट्रवादी अभियान में हिंदू- मुस्लिम एकता का अंतिम महत्वपूर्ण प्रतीक था।
10 मार्च 1922 को गांधीजी को आश्रम से गिरफ्तार कर लिया गया। पूछे
जाने पर उन्होंने अपनी उम्र 53 वर्ष और पेशा 'किसान और बुनकर' बताया। आठ दिन बाद उन पर यंग इंडिया पत्रिका में तीन लेखों के माध्यम से महामहिम की सरकार के विरुद्ध असंतोष भड़काने का मुकदमा चलाया गया। उन्होंने अपना अपराध स्वीकार करते हुए कहा कि वे दया की भीख नहीं मांगते: 'मैं यहाँ कानून द्वारा जानबूझकर किए गए अपराध और एक नागरिक के रूप में मुझे दिखाई देने वाले सर्वोच्च कर्तव्य के लिए मुझ पर लगाए जा सकने वाले उच्चतम दंड को सहर्ष स्वीकार करने के लिए उपस्थित हूँ।' 45 उन्हें छह साल की कैद की सजा सुनाई गई, लेकिन न्यायाधीश ने इतनी सहानुभूति दिखाई कि उन्होंने आशा व्यक्त की कि भारत में घटनाक्रम के कारण सरकार के लिए सजा कम करना और उन्हें रिहा करना आसान हो जाएगा। भारतीय स्वतंत्रता का पहला महान अभियान समाप्त हो गया।

8

नमक मार्च
पूना के येरवदा जेल में गांधी अपने साथ भगवद गीता, एक शब्दकोश, कुरान का अनुवाद और बाइबिल जैसी कुछ पुस्तकें ले गए थे। वे अपना चरखा भी ले गए थे, जिससे उनका गहरा लगाव हो गया था और वे उसकी सरसराहट को मंत्र की तरह सुनते थे, लेकिन जेलरों ने उसे छीन लिया। उन्होंने कहा कि अगर उन्हें चरखा नहीं सूतने दिया गया तो वे उपवास करेंगे, और चरखा उन्हें वापस मिल गया। जेल में पहली रात उन्होंने यंग इंडिया के संपादक शंकरलाल बैंकर से कहा, जो उनके साथ जेल में थे: 'भगवान का नाम लो और सो जाओ। सभी कठिनाइयों को दूर करने का सबसे अच्छा तरीका रामनाम का जाप करना है।'
‘आखिरकार मुझे शांति का समय मिल रहा है,’ उन्होंने अपनी दस फुट चौकोर कोठरी से चार्ल्स एंड्रयूज को लिखा। 2 वे सुबह 4 बजे उठते और रात 10 बजे सोते, दिन भर गतिविधियों में व्यस्त रहते; वे प्रतिदिन छह घंटे इतिहास, जीवनी, धर्मशास्त्र और यहाँ तक कि किपलिंग की कुछ कविताएँ पढ़ने में बिताते थे। यहीं पर उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह लिखा और इसे यंग इंडिया में धारावाहिक रूप से प्रकाशित किया, जिसे उन्होंने अपने समर्पित चचेरे भाई और शिष्य मगनलाल गांधी को बोलकर लिखवाया था। वह चार या उससे अधिक घंटे तक चरखा चलाते और संबंधित कार्य करते, सुबह एक घंटा और शाम को आधा घंटा बाहर टहलते; यदि बारिश हो रही होती तो वे अपनी कोठरी में चक्कर लगाते। सूर्योदय और सूर्यास्त के समय वे प्रार्थना करते, शास्त्र पढ़ते और भक्ति गीत गाते। वे प्रतिदिन एक घंटा शंकरलाल को संस्कृत पढ़ाने में लगाते, जिसने स्वयं को गांधी का सेवक नियुक्त किया था; वह शाम को सोने से पहले अपने स्वामी के सिर और पैरों की मालिश करता, उनके लिए खाना बनाता, उनकी कोठरी साफ करता और उनके कपड़े धोता। बाद में गांधी ने ये अंतिम दो कार्य स्वयं करने शुरू कर दिए क्योंकि उन्हें लगा कि वे अपने मित्र की तुलना में कोठरी को अधिक साफ रख सकते हैं और कपड़े धोते समय कम साबुन का उपयोग कर सकते हैं। शंकरलाल ने गांधी की देखभाल से संबंधित अन्य विशिष्टताओं का उल्लेख किया: उनके स्वामी माचिस की डिब्बी में माचिस की तीलियाँ गिनते और यह हिसाब लगाते कि ठीक सात दिनों के लिए कितनी तीलियाँ

होनी चाहिए, और वे नाश्ते में ठीक सौ किशमिश और परोसी जाने वाली रोटी के सभी टुकड़ों के बराबर आकार होने पर जोर देते थे।
गांधी जी को बीच-बीच में पेट में तेज दर्द हो रहा था, जो जनवरी 1924 की शुरुआत में बढ़ गया। उन्हें कर्नल मैडॉक की देखरेख में पुणे के ससून अस्पताल में भर्ती कराया गया, जो उस क्षेत्र के सर्जन जनरल थे। 12 जनवरी को उनका अपेंडिक्स का ऑपरेशन हुआ। हालांकि 5 फरवरी को उन्हें बिना शर्त रिहा कर दिया गया, लेकिन वे अपनी सेहत सुधारने के लिए एक महीने और अस्पताल में रहे। गांधी जी के विशिष्ट आदर्शों के अनुरूप, उन्होंने मार्च 1928 में अपनी छह साल की सजा पूरी होने तक साम्राज्य पर हमला न करने का संकल्प लिया, इस प्रकार उन्होंने अपनी सजा की भावना का सम्मान किया।
उन्होंने अपने कुछ समय का उपयोग साहित्यिक गतिविधियों के लिए किया: उन्होंने यंग इंडिया और नवजीवन के संपादन का कार्यभार पुनः ग्रहण किया और अपनी दो आत्मकथात्मक रचनाएँ धारावाहिक रूप से प्रकाशित कीं, पहली 'दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह' और फिर 1925 से 'एक आत्मकथा या सत्य के साथ मेरे प्रयोगों की कहानी'। 1926 से उन्होंने भगवद गीता पर अपने प्रवचन प्रकाशित किए।
राजनीतिक मोर्चे पर, गांधी जी के जाने के बाद कांग्रेस में कुछ अव्यवस्था थी। उन्होंने 1920 के चुनावों का बहिष्कार किया था, लेकिन अब कई लोगों का तर्क था कि उन्हें चुनाव लड़ना चाहिए और भारत की विधानसभाओं में स्वतंत्रता के विचारों का प्रतिनिधित्व करना चाहिए। अंततः मोतीलाल नेहरू, सी.आर. दास और विट्ठलभाई पटेल ने स्वराज पार्टी का गठन किया। इसी के माध्यम से वे राष्ट्रीय राजनीति में वापस लौटे: नवंबर 1923 में वे राष्ट्रीय सभा के लिए चुने गए, जहाँ उन्हें एक बार फिर जिन्ना का साथ मिला, जो एक स्वतंत्र मुस्लिम उम्मीदवार के रूप में निर्वाचित हुए थे। जिन्ना की कुशल राजनीतिक रणनीति ने एक स्वतंत्रता-समर्थक गुट को जन्म दिया, जिसमें उनके निर्दलीय सदस्यों और स्वराजवादियों का समूह शामिल था, जिनकी संख्या साम्राज्यवादी वफादारों से कहीं अधिक थी।
गांधी जी स्वराजवादियों के विधायिका के साथ सहयोग करने से प्रसन्न
नहीं थे; उनका मानना था कि इससे लोगों का ध्यान राष्ट्रीय जीवन के पुनरुत्थान से भटक रहा है, जिसे वे स्वतंत्रता का आदर्श मार्ग मानते थे। उन्होंने कांग्रेस में प्रमुख पदों पर स्वराजवादियों को आने से रोकने का

प्रयास किया, लेकिन उनके विरुद्ध हुए मतदान में मामूली अंतर से जीत हासिल करने के बाद वे नरम पड़ गए। उन्होंने इस शर्त पर उनकी बात मान ली कि वे खादी के मुद्दे पर उनका समर्थन करेंगे: वे उन परिषदों में बने रह सकते हैं जिनमें वे कांग्रेस प्रतिनिधि के रूप में चुने गए थे, बशर्ते वे यह स्वीकार कर लें कि अब कांग्रेस की सदस्यता केवल चरखे का उपयोग करने वालों के लिए ही खुली है। अब उनका व्यापक समाज से जुड़ाव खादी, हिंदू-मुस्लिम एकता और अस्पृश्यता के विरोध पर केंद्रित हो गया।
गांधी जी अकेले ऐसे ब्रिटिश विरोधी नहीं थे जिन्हें रिहा किया गया, और
न ही वे अकेले ऐसे व्यक्ति थे जो भारत की सच्ची संस्कृति के प्रतिनिधि होने का दावा करते थे। कई ब्रिटिश अधिकारियों की हत्या में शामिल विनायक सावरकर को 1924 में रिहा कर दिया गया था। उन्होंने 1925 में 'हिंदू संस्कृति की रक्षा' के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के गठन में भाग लिया। यह एक अर्ध-सैनिक संगठन था जो अभ्यास और सलामी देता था और जिसका अपना झंडा था; वैचारिक रूप से वे मुस्लिम विरोधी थे और जातिगत विभाजन को बनाए रखने और अछूतों को दबाए रखने के पक्षधर थे। कुछ हिंदू स्पष्ट रूप से अपने धर्म की अधिक युद्धपरक व्याख्याओं की ओर देख रहे थे। गांधी जी ने युद्ध के मैदान में कृष्ण को अर्जुन द्वारा दी गई सलाह के आध्यात्मिक, चिंतनशील पक्ष पर जोर दिया था, और भगवद गीता में वर्णित युद्ध को एक आध्यात्मिक युद्ध के रूप में देखा था। कई लोगों के लिए, शाब्दिक व्याख्या ही सही थी: अर्जुन को जिस युद्ध में लड़ने का आदेश दिया गया था वह वास्तविक था।
भारत में असहयोग आंदोलन का विचार इस आशा और विश्वास के साथ जागृत हुआ
था कि इससे धार्मिक सद्भाव स्थापित होगा और एक आत्मनिर्भर एवं शांतिपूर्ण राष्ट्र का निर्माण होगा। हालांकि, यह एक सोए हुए जानवर को जगाने जैसा था, और इस बात की कोई निश्चितता नहीं थी कि जागृत होने पर वह शांत रहेगा। गांधी जी ने दर्ज किया कि सरोजिनी नायडू ने उन्हें लिखा था, 'शांति पर भाषण और उपदेश पर्याप्त नहीं होंगे। मुझे एक प्रभावी उपाय खोजना होगा। उन्होंने मुझ पर यह जिम्मेदारी डालकर सही किया था। क्या मैं ही जनता की इस विशाल ऊर्जा को उत्पन्न करने का माध्यम नहीं था? यदि यह ऊर्जा आत्मघाती सिद्ध हुई, तो मुझे इसका उपाय खोजना ही होगा।' 4 इसलिए सितंबर 1924 में उन्होंने उत्तर-पश्चिम सीमांत में हिंदू-मुस्लिम एकता

के लिए उपवास किया, जहां दंगे हुए थे। उन्होंने यह तर्क दिया कि यह उपवास स्वयं पूरी तरह से अहिंसक न होने के लिए एक व्यक्तिगत प्रायश्चित था, एक ऐसा तर्क जिसकी तर्कसंगतता उनके सबसे समर्पित अनुयायियों को भी समझ नहीं आई। अब इस प्रक्रिया में अनुभवी हो चुके गांधीजी ने इक्कीस दिनों तक उपवास रखा, केवल पानी पिया और दिन में दो बार एनीमा लिया। उन्होंने दिल्ली में मुहम्मद अली के घर पर उपवास किया। मुहम्मद अली का मानना था कि अतिथि द्वारा इस तरह की प्रक्रिया शुरू करने से पहले कम से कम उनसे परामर्श तो लिया जाना चाहिए था, क्योंकि इससे आतिथ्य सत्कार पर दबाव पड़ सकता था। गांधीजी के पास हिंदू और मुस्लिम दोनों नेता इकट्ठा हुए और उन्होंने हिंदू-मुस्लिम संबंधों को एक प्रमुख राष्ट्रीय मुद्दा बना दिया। उनके जीवन के लिए पूरे देश में प्रार्थनाएं की गईं; मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता में दिल्ली में विभिन्न हित समूहों के लगभग दो सौ राष्ट्रीय नेताओं का एकता सम्मेलन आयोजित किया गया। उन्होंने स्वीकृत मतभेदों के प्रति सहिष्णुता का आह्वान किया, हालांकि उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि मुसलमानों द्वारा गायों की बलि देने या हिंदुओं द्वारा मस्जिदों से सुनाई देने वाला संगीत बजाने से कोई नहीं रोक सकता - ये दोनों सांप्रदायिक अशांति के सबसे आम कारण हैं।
लेकिन हिंदू-मुस्लिम एकता की भी सीमाएँ थीं: 1926 में मनीलाल गांधी ने दक्षिण अफ्रीका से अपने माता-पिता को संदेश भेजा कि वे फातिमा गुल से विवाह करना चाहते हैं, जो एक मुस्लिम व्यापारी की पुत्री थीं और परिवार की लंबे समय से मित्र थीं। गांधी सीनियर ने जवाब दिया, 'तुम्हारा विवाह हिंदू-मुस्लिम प्रश्न पर गहरा प्रभाव डालेगा। अंतर-सामुदायिक विवाह इस समस्या का समाधान नहीं हैं। तुम यह नहीं भूल सकते और न ही समाज भूलेगा कि तुम मेरे पुत्र हो।' चेतावनियों के बाद धमकियाँ भी आईं - यदि वे फातिमा से विवाह करते हैं, तो 'मुझे डर है कि तुम इंडियन ओपिनियन चलाने के लिए उपयुक्त व्यक्ति नहीं रहोगे' - इसलिए उन्हें अपनी नौकरी खोनी पड़ेगी। गांधी ने यह भी सुझाव दिया कि मनीलाल अपने परिवार से अलग हो जाएँगे: 'मुझे लगता है कि इसके बाद तुम्हारे लिए भारत आकर बसना असंभव होगा।' 5 मनीलाल हमेशा की तरह पीछे हट गए, और पारिवारिक सद्भाव बनाए रखने के लिए गांधी ने विवाह के विचार पर इतना समझौता किया कि मनीलाल के लिए एक गुजराती बनिया लड़की ढूँढी। उन्होंने अपने पुत्र से एक गंभीर आश्वासन माँगा: 'कि तुम उसे

अपनी साथी की तरह मानोगे, कभी दासी की तरह नहीं; कि तुम उसकी उतनी ही देखभाल करोगे जितनी अपनी; कि तुम उसे अपनी वासना के आगे झुकने के लिए मजबूर नहीं करोगे, बल्कि उसकी सहमति से ही अपना सुख प्राप्त करोगे। मैं तुम्हें सलाह दूंगा कि तुम अपने आनंद पर कुछ सीमाएँ निर्धारित करो।’ 6 अन्य संस्कृतियों के प्रति सम्मान तब तक ठीक था जब तक वे एक-दूसरे से दूरी बनाए रखती थीं। यह गांधी के जाति व्यवस्था के प्रति दृष्टिकोण से कुछ मिलता-जुलता था: उन्होंने 1916 में कहा, ‘मैंने जाति व्यवस्था के विषय पर बहुत विचार किया है और इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि हिंदू समाज इसके बिना नहीं रह सकता, यह जाति के अनुशासन के कारण ही कायम है।’ 7 अब वे सुधार के विरोधी थे: ‘जाति व्यवस्था एक पूर्णतः प्राकृतिक संस्था है… मैं इस व्यवस्था को नष्ट करने के लिए चलाए जा रहे आंदोलनों का विरोध करता हूँ… हम अन्य समुदायों के सदस्यों के साथ भोजन नहीं करते या उनके साथ विवाह संबंध नहीं बनाते।’ 8 उनका मानना था कि एक पुरुष जितनी कम महिलाओं के प्रति वासना महसूस कर सकता है, उतना ही बेहतर है; और यदि उसकी वासना केवल उसकी जाति की महिलाओं तक ही सीमित रहे तो ‘आप महिलाओं के चुनाव के दायरे को सीमित करके आध्यात्मिक रूप से लाभान्वित हो रहे हैं।’ 9 हमेशा की तरह वे इस बात को समझने में विफल रहे कि यौन इच्छा स्त्री से भी उत्पन्न हो सकती है।
जाति आधारित समस्या तब उत्पन्न हुई जब उनके सत्ताईस वर्षीय पुत्र देवदास ने गांधीजी के एक प्रमुख राजनीतिक समर्थक चक्रवर्ती राजगोपालाचारी (जो बाद में भारत के गवर्नर जनरल बने) की पंद्रह वर्षीय पुत्री लक्ष्मी से विवाह करने की इच्छा व्यक्त की। उन्हें कुछ वर्ष अलग रहने के लिए कहा गया, ताकि यह देखा जा सके कि एक-दूसरे से न मिलने और न ही पत्र लिखने के बाद भी वे विवाह करना चाहते हैं या नहीं। माता-पिता की सहमति न देने के जो कारण बताए गए हैं, वे ये हैं कि लक्ष्मी एक उच्च ब्राह्मण थीं और गांधी परिवार निम्न जाति के बनिया थे; लक्ष्मी को अपने मन की बात जानने के लिए बहुत छोटी माना जाता था; और राजगोपालाचारी ने कहा कि गांधीजी और वे दोनों 'महसूस करते थे कि हमारे राजनीतिक संबंध को विवाह बंधन से मजबूत नहीं किया जाना चाहिए'। 10 छह वर्ष बाद दोनों का विवाह हुआ। दोनों परिवारों के लिए एक अधिक अनुकूल रिश्ता गांधीजी के तीसरे पुत्र रामदास का विवाह था, जो एक अन्य काठियावाड़ी बनिया निर्मला से हुआ था।

निर्मला अनाथ थीं और गांधीजी के आश्रम में अपनी मौसी के साथ रहती थीं (गांधीजी के कई शिष्य पिताहीन या अनाथ थे)। गांधीजी ने सोलह वर्ष की उम्र में निर्मला को रामदास की पत्नी के रूप में चुना, लेकिन उन्हें कुछ समय इंतजार करने को कहा; उनकी शादी अठारह वर्ष की उम्र में हुई, जबकि रामदास तीस वर्ष के थे। वैवाहिक जीवन के शुरुआती वर्ष बारडोली के किसानों के बीच काम करते हुए बीते, लेकिन रामदास की जीवनशैली से पता चलता था कि उनके पिता की शिक्षा का इच्छित प्रभाव के विपरीत भी हो सकता है। निर्मला ने बताया, “रामदास जी ने हमारे लिए एक बड़ा घर लिया और उसे महंगी अंग्रेजी चीजों से भर दिया – चम्मच, चीनी मिट्टी के बर्तन, घड़ियाँ – और वे हमेशा मुझे सुंदर कपड़े देते थे। वे स्वयंसेवी कार्यकर्ता के रूप में केवल चालीस रुपये प्रति माह कमाते थे। मैं उनसे कहती थी, “हमें अपनी आमदनी के अनुसार ही जीना चाहिए। वैसे भी, इस सारी शान-शौकत और ऐशो-आराम का क्या मतलब है? आपको कभी भी जेल भेजा जा सकता है।” और वह कहते थे, “यह घर शायद हमारा आखिरी घर हो, इसलिए खुश रहें, अच्छा खाएं और बेफिक्र रहें। कल की चिंता हम खुद कर लेंगे।” जब उन्होंने उसे गांधी जी के ब्रह्मचर्य संबंधी लेखों में से एक पढ़ते हुए पाया तो उन्होंने कहा, “तुम ये सब क्यों पढ़ रही हो?” 11 टॉल्स्टॉय के एक अन्य प्रशंसक, रोमेन रोलैंड ने 1924 में गांधी की जीवनी लिखी, जिसने उन्हें एक व्यापक और सहानुभूतिपूर्ण पाठक वर्ग से परिचित कराया। 1915 के नोबेल पुरस्कार विजेता द्वारा चुना गया कठोर शीर्षक, महात्मा गांधी: वह व्यक्ति जो सार्वभौमिक सत्ता के साथ एक हो गया, एक कम आलोचनात्मक दृष्टिकोण का संकेत देता है। इस पुस्तक का प्रकाशन विश्व व्यक्तित्व के रूप में गांधी की प्रतिष्ठा के विकास में एक महत्वपूर्ण चरण था। रोलैंड के पहले शब्द गांधी की उस सार्वभौमिक छवि को दर्शाते हैं जो आगे चलकर बनी: 'कोमल काली आँखें, एक छोटा, दुर्बल व्यक्ति, पतले चेहरे और उभरी हुई आँखों वाला, सिर पर एक छोटी सफेद टोपी, शरीर पर मोटे सफेद कपड़े, नंगे पैर। वह चावल और फल खाकर जीवन यापन करता है और केवल पानी पीता है। वह ज़मीन पर सोता है - बहुत कम सोता है, और निरंतर काम करता है।' 12 रोलैंड ने गांधी के प्रकृति-प्रेम के विचारों को, जो पूर्वी रहस्यवाद से ओतप्रोत थे, उत्तरी गोलार्ध में प्रस्तुत किया, जो राजनीतिक रूप से दक्षिणपंथी या वामपंथी ध्रुवीकरण का आदी था। आध्यात्मिक लोग गांधी जी की ओर देखकर भौतिकवाद की दुनिया में एक वैकल्पिक समाधान देख

सकते थे: 'यदि भारत की आत्मा अब मंदिरों और जंगलों से उभर रही है, तो इसका कारण यह है कि इसमें वह संदेश निहित है जिसके लिए दुनिया तरस रही है,' रोलैंड ने लिखा। 13
मैडेलीन स्लेड सत्य की खोज करने वाली उन महिलाओं में से एक थीं जो इस पुस्तक से प्रभावित हुईं: इसे पढ़ने और गांधीजी को पत्र लिखने के बाद उन्होंने भारत की यात्रा की। एडमिरल सर एडमंड स्लेड की पुत्री, वह बचपन से ही एकांतप्रिय थीं और प्रकृति एवं संगीत से प्रेम करती थीं। रोलैंड से उनकी मुलाकात तब हुई जब वह गांधीजी के बारे में लिख रहे थे, और इसी मुलाकात ने उन्हें बीथोवेन से महात्मा गांधी की ओर आकर्षित किया। रोलैंड की पुस्तक पढ़ते ही उनके मन में 'भोर की रोशनी और भी तेज हो गई, और जब तक मैंने इसे पूरा पढ़ा, सत्य का सूर्य अपनी किरणें मेरी आत्मा में बिखेर रहा था।' 14 जब उन्होंने 1925 में पहली बार गांधीजी को देखा तब उनकी उम्र तैंतीस वर्ष थी, और वह उनके सामने घुटने टेककर बैठ गईं। गांधीजी ने कहा, 'तुम मेरी पुत्री बनोगी,' जिनके पास कभी कोई पुत्री नहीं थी और ऐसा लगता है कि वे एक पुत्री की कामना करते थे। मेडेलीन ने आध्यात्मिक भक्ति के प्रतीक के रूप में अपने लंबे काले बाल कटवाने पर जोर दिया (जिससे आश्रम की अन्य महिलाएं हैरान थीं क्योंकि उन्हें ऐसा करने की कोई आवश्यकता नहीं दिखती थी)। उन्हें मीरा नाम दिया गया, जो एक राजकुमारी के नाम पर था जिसने ईश्वर के लिए सब कुछ त्याग दिया था, और उनके नाम के अंत में 'बहन' जोड़ा गया, इसलिए उन्हें मीराबेन - बहन मीरा कहा जाने लगा। गांधीजी जब शाही अधिकारियों को पत्र लिख रहे थे या अपनी आत्मकथा सहित गुजराती रचनाओं का अंग्रेजी अनुवाद कर रहे थे, तब मेडेलीन ने उनके अंग्रेजी अनुवादों की संपादक के रूप में अमूल्य योगदान दिया।
इसलिए कुछ समय के लिए वह सचिवीय तिकड़ी का हिस्सा बनीं, जिसमें महादेव देसाई मुख्य सहायक और प्यारेलाल तीसरे (और कम व्यावहारिक) सहायक थे। दिसंबर 1925 में गांधी जी लिख रहे थे, 'तुम लगातार मेरे विचारों में रही हो। ये तीन दिन का अलगाव अच्छा अनुशासन है' - जिससे उनके साथ बिताए जाने वाले सामान्य समय का कुछ अंदाजा लगता है। 15 इंग्लैंड में आध्यात्मिक ज्ञान की खोज में पूर्व की ओर जाने का विचार गपशप करने वालों के दिमाग में सबसे ऊपर नहीं था, और वे इसे विचित्र मानते थे कि एक उच्च वर्ग की लड़की घर पर शादी की संभावनाओं को छोड़कर एक अर्धनग्न भारतीय के साथ समय बिताए।

आश्रम में भी उनकी नज़दीकी को लेकर गपशप होती थी - अपने तमाम आध्यात्मिक दिखावों के बावजूद, आश्रम हमेशा गपशप का अड्डा बना रहता था। गांधी जी को इस अति संवेदनशील महिला से निपटना दिन-प्रतिदिन कठिन होता जा रहा था, और उनके पत्रों से उनके प्रति उनकी निराशा झलकती है: 'मेरे एक साधारण से निर्दोष टिप्पणी पर किसी और को आत्महत्या करने जैसा महसूस नहीं होता... यह बीमारी मूर्तिपूजा है। अगर नहीं, तो मेरी संगति के लिए तरस क्यों रही हो!' उन पैरों को क्यों छूना या चूमना जो एक दिन निर्मल होकर ठंडे पड़ जाएंगे?’ 16 अंततः उसने उसे दूसरे आश्रमों में काम करने के लिए भेज दिया, हालाँकि उसने उसे विलाप भरे पत्र लिखे: ‘तुम मेरे दिमाग में छाई रहती हो। मैं अपने आस-पास देखता हूँ और तुम्हें याद करता हूँ… जब तुम अपना सारा प्यार मुझ पर लुटा रही थीं, तो मुझे दुरुपयोग का अपराधबोध होता था। और मैं छोटी-छोटी बातों पर भड़क उठता था। अब जब तुम मेरे साथ नहीं हो, तो मेरा गुस्सा मुझ पर ही निकलता है क्योंकि मैंने तुम्हें इतनी बुरी तरह डांटा था। लेकिन जब तक मैं तुम्हारी सेवा स्वीकार कर रहा था, मैं जलती हुई राख के बिस्तर पर लेटा हुआ था।’ 17 उसने एक बार एक मित्र से कहा: ‘मैंने किसी भी पुरुष या स्त्री को उतना नहीं रुलाया जितना मैंने उसे रुलाया है।’ 18
गांधी जी अपने जीवनशैली से पश्चिमी देशों के लोगों को लगातार आकर्षित करते रहे। बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध तक भारत से अन्य आध्यात्मिक नेता उभर कर पूर्व के आध्यात्मिक रहस्यों को अंग्रेजी में प्रस्तुत करने लगे थे – महर्षि महेश योगी, भगवान श्री रजनीश (ओशो) और सत्य साई बाबा – सभी के अपने-अपने आश्रम और अनूठे संदेश थे। संभवतः गांधी जी का आश्रम पहला ऐसा आश्रम था जहाँ भारतीयों ने भारतीय मान्यताओं को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आकर्षक रूप देने का सफल प्रयास किया। उनके तत्काल पूर्ववर्ती, एनी बेसेंट और उनकी गुरु मैडम ब्लावत्स्की, यूरोपीय थीं जिन्होंने भारतीय धार्मिक चिंतन में गहरी रुचि विकसित की थी; गांधी जी तो भारत के मूल निवासी थे। पश्चिमी लोगों को आश्रम में बहुत कुछ जाना-पहचाना लगा; गांधी जी की प्रार्थना सभाओं में ईसाई भजन और आशीर्वाद शामिल थे, और रस्किन और टॉल्स्टॉय के विचारों के प्रमाण आसानी से देखे जा सकते थे। संपत्ति और अन्य भौतिक बंधनों से मुक्त होने का महत्व भारतीय आध्यात्मिक जीवन की अवधारणा में गहराई से निहित था; लेकिन स्वयं के हाथों से काम करना और श्रम की गरिमा यूरोपीय समाजवादी चिंतन से आयातित थे।

गांधी जी के कार्य करने के तरीके पर व्यापक और तीखे हमले में उनके
पुत्र हरिलाल ने नमक, दूध या अन्य किसी भी चीज़ के बारे में उनके द्वारा दिए जाने वाले छोटे-मोटे नियमों पर उनके ज़ोर देने की निंदा की - हरिलाल ने कहा कि इनका चरित्र से कोई लेना-देना नहीं है। चरित्र के अन्य, अधिक वांछनीय पहलू थे जिन्हें प्रोत्साहित किया जाना चाहिए: निस्वार्थता, दान, साहस। इन पहलुओं को बढ़ावा देने के बजाय, गांधी जी ने ऐसे अनुयायियों को पोषित किया जो आश्रम के उच्च सिद्धांतों का केवल दिखावा करते थे, जबकि वास्तव में वे केवल आहार संबंधी नियमों का बारीकी से पालन करके और उनके हर शब्द का बिना किसी प्रश्न के पालन करके ही उन्हें प्रसन्न करते थे। 19 आश्रम के एक सदस्य ने बाद में गांधी जी पर अपनी निर्भरता की तुच्छता के बारे में बात करते हुए कहा: 'हम उन पर इतने निर्भर हो गए थे कि हम उनसे परामर्श किए बिना कोई निर्णय नहीं ले सकते थे: "बापू, मुझे कितना बाली का तेल लगाना चाहिए?" "बापू, क्या मुझे अपना सिर मुंडवाना चाहिए?" "बापू, क्या मुझे एक या दो चम्मच सोयाबीन का पेस्ट खाना चाहिए?"' 20
आश्रम जीवन में एनीमा एक अभिन्न अंग था, और ऐसा प्रतीत होता है कि यह दक्षिण अफ्रीका के समय से ही चला आ रहा था। गांधी जी एक यूरोपीय लड़की की कहानी सुनाया करते थे जो दक्षिण अफ्रीका में उनके बहुत करीब थी और लगातार सिरदर्द से पीड़ित थी। उन्होंने उससे कहा: 'तुम्हें कब्ज होगी। मैं तुम्हें एनीमा दूंगा।' जब वे सिरिंज तैयार कर रहे थे, तब वह लड़की अपने कपड़े उतारकर, संभवतः उस व्यक्ति से खुद को रोक न पाने के कारण, जो उसे अपने तरीके से शारीरिक रूप से प्रभावित करने वाला था, उनके पास आई और उन्हें गले लगा लिया। गांधी जी ने कहा: 'क्या तुम मुझे अपना पिता मानती हो या अपना प्रेमी?' वह शर्मिंदा होकर पीछे हट गई; उन्होंने उसे एनीमा दिया और, अपनी आदत के अनुसार, उसे अपने मित्रों और परिवार के सामने अपनी गलती स्वीकार करने के लिए मजबूर किया। 21
गांधी जी को छोड़ दें (क्योंकि वे पुरानी कब्ज से पीड़ित थे), तो सवाल
यह उठता है कि क्या आश्रम में रहने वाले शाकाहारी लोग वास्तव में कब्ज से ग्रस्त थे या गांधी जी अपने लक्षणों को उन पर थोप रहे थे – या फिर एनीमा को लेकर उनका जुनून सिर्फ भीतर और बाहर से स्वच्छता के प्रति एक सनकीपन था? वे प्रतिदिन एनीमा लेते थे और इस उपचार की व्यापक रूप से सलाह देते थे; उन्होंने कस्तूरबा को अपनी भावी बहू निर्मला को एनीमा देने के लिए कहा,

जिसने कहा: ‘मुझे अपनी भावी सास से एनीमा लेने में बहुत शर्म आ रही थी, लेकिन बा बहुत कोमल और ममतामयी थीं। कुछ दिनों बाद, मैंने खुद एनीमा लेना सीख लिया।’ 22 हालांकि वे आश्रमवासियों को एनीमा लेने की सलाह देते थे, लेकिन यह स्पष्ट नहीं है कि वे अक्सर खुद एनीमा देते थे। ऐसा करना (विशेषकर भारतीय महिलाओं के लिए, जिनके लिए शालीनता एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक आवश्यकता थी) गांधी जी के लिए भी अतिवादी व्यवहार होता। ‘शांत वर्षों’ की महान व्यक्तिगत घटनाओं में से एक अप्रैल 1928 में बिहार में उनके दाहिने हाथ माने जाने वाले मगनलाल का संक्षिप्त बीमारी के बाद निधन था। अठ्ठावन वर्ष की आयु में गांधी जी उस व्यक्ति को खोकर व्याकुल हो गए, जिसे उन्होंने ‘अपने सर्वस्व का उत्तराधिकारी चुना था’। अपने शोक संदेश में उन्होंने मगनलाल के ब्रह्मचर्य की विशेष रूप से प्रशंसा की: ‘जब मैंने अपने सहकर्मियों के समक्ष ब्रह्मचर्य को सत्य की खोज में लगे विवाहित पुरुषों के लिए भी जीवन के नियम के रूप में प्रस्तुत किया, तो वे इस अभ्यास की सुंदरता और आवश्यकता को समझने वाले पहले व्यक्ति थे और यद्यपि मेरी जानकारी के अनुसार उन्हें इसके लिए बहुत संघर्ष करना पड़ा, फिर भी उन्होंने इसे सफलतापूर्वक निभाया।’ 23
हालांकि, किसी भी क्षेत्र में असफलता मिलने पर आश्रम का प्रेम वापस ले लिया जाता था। छगनलाल गांधी कई वर्षों से छोटी-मोटी चोरियों के दोषी थे, जिनमें मामूली रकम की चोरी शामिल थी: इसलिए उन्होंने आश्रम छोड़ दिया। आश्रमवासियों को लगा कि छगनलाल को आश्रम में शामिल होने के समय जमा की गई 10,000 रुपये की बचत में से कुछ या पूरी रकम देना उचित होगा, ताकि वे और उनका परिवार आश्रम से बाहर के जीवन में मदद पा सकें। गांधी ने इनकार कर दिया, जिससे कई आश्रमवासी निराश हुए, क्योंकि उनका मानना था कि उनके सिद्धांतों में दानशीलता का भाव अधिक उपयुक्त होता।
उन्होंने नवजीवन पत्रिका में गुजराती भाषा में एक लेख लिखकर कस्तूरबा के पापों को उजागर करना आवश्यक समझा: ‘मेरा मानना है कि उनका जीवन निष्कलंक था। यह सच है कि उनका त्याग जीवन के मूलभूत सिद्धांतों की बुद्धिमत्तापूर्ण समझ पर आधारित नहीं था, बल्कि एक अंधी पत्नी-भक्ति से प्रेरित था… परन्तु इन सद्गुणों की सफेद सतह पर गहरे काले धब्बे भी हैं।’ 24 यद्यपि पत्नी-भक्ति की भावना से प्रेरित होकर उन्होंने सांसारिक वस्तुओं का त्याग किया, फिर भी उनके प्रति लालसा इतनी प्रबल थी कि

उन्होंने विभिन्न लोगों द्वारा दिए गए धन में से कुछ सौ रुपये अपने उपयोग के लिए बचा लिए। यह बात तब सामने आई जब उनके कमरे से वह छोटी सी राशि चोरी हो गई और वे इससे बहुत दुखी हुईं।
जब एक विधवा और एक युवा अविवाहित पुरुष के बीच प्रेम संबंध स्थापित हो गया, तो गांधी ने आश्रम का भविष्य ईश्वर के हाथों में सौंप दिया। उन्होंने 'अग्नि के संपर्क में न आए' यानी कच्चे 'प्राण खाद्य पदार्थों' के साथ एक और प्रयोग शुरू किया। 25 बाईस लोग अनियंत्रित भावनाओं को नियंत्रित करने के प्रयास में इस प्रयोग में उनके साथ शामिल हुए, लेकिन उन्हें आंतों की समस्या हो गई, गांधी जी को पेचिश हो गई, और उन्होंने प्रयोग बंद कर दिया। गांधीजी 1925 में कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गए; अब उन्होंने हिंदू- मुस्लिम संबंधों पर बहुत कम ध्यान दिया और कहा: ‘फिलहाल मैंने इस हिंदू- मुस्लिम उलझन को एक तरफ रख दिया है। इसका मतलब यह नहीं है कि मैंने समाधान की उम्मीद छोड़ दी है… लेकिन मुझे आज आपसे यह स्वीकार करना होगा कि मैं कोई ऐसा व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत नहीं कर सकता जिसे आप स्वीकार करें।’ यह भविष्य की एक दुखद भविष्यवाणी थी। शौकत अली जैसे 26 मुस्लिम शिकायत कर रहे थे कि यद्यपि उन्होंने गांधीजी की यात्राओं और मोतीलाल नेहरू के स्वतंत्र समाचार पत्र सहित असहयोग आंदोलन को आर्थिक सहायता दी थी, फिर भी अब कांग्रेस उनके हितों का समर्थन नहीं कर रही थी। गांधीजी ने एक दुखी पत्र लिखकर कहा कि खिलाफत समिति ने उनके आग्रह पर उनके खर्चों का भुगतान किया था, और अब वे ब्याज सहित पूरी राशि लौटाने के लिए इच्छुक थे। 1925-27 के दौरान गांधी ने व्यापक यात्रा की, पूर्वी और उत्तरी भारत का दौरा किया और फिर दक्षिणी भारत और श्रीलंका गए। 1929 में उन्होंने हिमालय, उत्तरी भारत, सिंध और बर्मा का दौरा किया। गांधी के एक बाद के अनुयायी, जी. रामचंद्रन ने बताया कि कैसे सत्रह वर्ष की आयु में उन्होंने पहली बार अपने भावी नेता को देखा: 'त्रावणकोर में निम्न, दलित अछूत अचानक उन सड़कों पर चलने लगे जो सदियों से उच्च जाति के हिंदुओं के लिए आरक्षित थीं। महाराजा ने उनमें से सैकड़ों को गिरफ्तार कर लिया। बापू [गांधी] वहाँ पहुँचे, और अछूतों ने उनका भाषण सुनने के लिए एक रैली का आयोजन किया।' रामचंद्रन के माता-पिता ने उन्हें रैली में जाने की अनुमति नहीं दी, लेकिन वे चुपके से घर से निकल गए और विशाल भीड़ के बीच से दूर से गांधी को देखते रहे, जिन्होंने केवल अपनी उंगली उठाकर भीड़ को चुप रहने का आह्वान किया।

उन्होंने समझाया: ‘भीड़ को उम्मीद थी कि बापू महाराजा पर हमला करेंगे, लेकिन व्यावहारिक रूप से उन्होंने सबसे पहले यही कहा, “मैं हरिजनों को आत्मसम्मान दिलाने में मदद करने के लिए तीर्थयात्रा पर आया हूँ, लेकिन मैं आपके महान महाराजा को भी प्रणाम करने आया हूँ।”’ गांधी जानते थे कि महाराजा के जासूस यह प्रणाम उन तक पहुँचा देंगे। भीड़ शत्रुतापूर्ण होने लगी थी, लेकिन गांधी ने उन्हें रामचंद्रन द्वारा ‘उनकी जादुई उंगली’ कहे जाने वाले तरीके से नियंत्रित किया। रैली के कुछ ही दिनों के भीतर, गांधी ने महाराजा को अछूतों को सड़कों पर चलने की अनुमति देने के लिए राजी कर लिया। 27
भारतीय राजनीतिक सुधारों को लेकर अंग्रेजों का रवैया नासमझी भरा था,
जो 1919 के भारत सरकार अधिनियम के अनुरूप आगे बढ़े। स्टेनली बाल्डविन की रूढ़िवादी सरकार ने सर जॉन साइमन की अध्यक्षता में एक वैधानिक आयोग का गठन किया, जिसे 1928 में भारत का दौरा करना था। उन्होंने सात सदस्यीय आयोग में एक भी भारतीय को नियुक्त न करके गलती की, जिससे राष्ट्रवादी आंदोलन में एकता का भाव पैदा हो गया – सभी भारतीय राजनेता समान रूप से आहत हुए। पहले शांत पड़ा देश अब जागृत हो गया, और आयोग, जिसमें भावी प्रधानमंत्री क्लेमेंट एटली भी शामिल थे, के दौरे के दौरान काले झंडे लहराते हुए प्रदर्शनकारियों ने 'साइमन, वापस जाओ!' के नारे लगाए। साइमन आयोग विरोधी प्रदर्शनों की हिंसा में कई लोग गंभीर रूप से घायल हुए और एक प्रमुख नेता लाला राजपूत राय की मृत्यु हो गई, जिसके परिणामस्वरूप आक्रोशित पंजाबी युवाओं ने अधिकारियों के खिलाफ बम हमले किए। गांधीजी ने साइमन के बहिष्कार में सक्रिय रूप से भाग नहीं लिया, क्योंकि उन्हें डर था कि इससे एक राष्ट्रीय विद्रोह भड़क सकता है, जो अप्रस्तुत और विरोध के अलावा किसी स्पष्ट लक्ष्य के बिना होगा।
कांग्रेस की राजनीति दो गुटों में बंटी हुई थी: एक गुट ब्रिटिश साम्राज्य के अधीन एक स्वतंत्र इकाई का दर्जा चाहता था, जिसमें मुख्य रूप से पुरानी पीढ़ी के नेता शामिल थे; और दूसरा गुट जवाहरलाल नेहरू और सुभाष चंद्र बोस जैसे युवा क्रांतिकारी नेता थे, जो पूर्ण स्वतंत्रता की वकालत करते थे। बोस एक सैन्यवादी युवा कार्यकर्ता थे, जिन्हें वर्दी पहनना पसंद था और वे भारतीय स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए अहिंसा को अपर्याप्त साधन मानते थे। वे गांधी जी के आकर्षण से अप्रभावित थे और उनकी सीमित

रणनीतिक सोच की आलोचना करते थे; उनका मानना था कि स्वतंत्रता कम से कम कुछ हद तक सशस्त्र संघर्ष के माध्यम से ही प्राप्त की जा सकती है।
साइमन आयोग द्वारा किए गए कथित अपमान और इस अप्रत्यक्ष संकेत के जवाब में कि भारतीय अपना स्वयं का कार्यशील संविधान नहीं बना सकते, मोतीलाल नेहरू ने राजनेताओं की एक कार्यकारी समिति की अध्यक्षता की, जिसने नेहरू रिपोर्ट पर काम किया, जो अंततः स्वतंत्र भारत के संविधान का आधार बनी। इसका सबसे महत्वपूर्ण प्रावधान सार्वभौमिक मताधिकार था, जिसने पुरुषों और महिलाओं को समान रूप से मताधिकार प्रदान किया। यह एक लोकतांत्रिक प्रगति थी जिसे ब्रिटेन में केवल 1928 में लागू किया गया था, जिस वर्ष नेहरू रिपोर्ट तैयार की गई थी।
1928 के अंत में कलकत्ता कांग्रेस में गांधी ने पूर्ण स्वतंत्रता के लिए अभियान चलाने वालों और प्रभुत्व का दर्जा चाहने वालों के बीच एक समझौता प्रस्ताव रखा। उन्होंने प्रस्ताव दिया कि अंग्रेजों के लिए एक समय सीमा तय की जाए: 31 दिसंबर 1929 से पहले नेहरू रिपोर्ट की तर्ज पर संविधान के साथ प्रभुत्व का दर्जा, जिसके अभाव में वे पूर्ण स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करेंगे। गांधी ने कांग्रेस अध्यक्ष पद के लिए जवाहरलाल नेहरू की उम्मीदवारी में बोस के मुकाबले उनका समर्थन किया। कुछ समय से वे जवाहरलाल नेहरू को नेतृत्व के लिए पसंद कर रहे थे, हालांकि जवाहरलाल नेहरू समाजवाद की ओर आकर्षित थे, जो गांधी द्वारा अत्यधिक भौतिकवादी मानकर विरोध किया जाने वाला एक प्रतिद्वंद्वी विचारधारा थी। नेहरू में एक नेता बनने का आकर्षण और क्षमता थी, लेकिन विचारों की कमी थी; ये कमी गांधी ने पूरी की। उन्होंने लिखा, 'ईश्वर आपको आने वाले कई वर्षों तक जीवित रखे और आपको भारत को गुलामी के बंधन से मुक्त कराने का अपना चुना हुआ साधन बनाए।' 28 मोतीलाल, जवाहरलाल और गांधी की तिकड़ी ने स्वतंत्रता आंदोलन पर अपना दबदबा कायम रखा: जानकारों का कहना था कि यह आंदोलन पिता, पुत्र और ईश्वर की शक्ति द्वारा संचालित हो रहा था।
वायसराय लॉर्ड इरविन ने घोषणा की कि भारत की संवैधानिक प्रगति का स्वाभाविक परिणाम डोमिनियन का दर्जा प्राप्त करना था। लेकिन यह पहले कही गई बात से अधिक कुछ नहीं था – राष्ट्रवादी एक तारीख चाहते थे। हालाँकि, ब्रिटिश सरकार और संसद दोनों ही विभाजित थे। प्रधानमंत्री बाल्डविन ने डोमिनियन के दर्जे के बारे में कहा कि कोई नहीं जानता कि 'वह तारीख निकट है

या दूर'। 29 लंदन में एक गोलमेज सम्मेलन आयोजित किया जाना था, लेकिन कांग्रेस ने इसका बहिष्कार किया। कांग्रेस के नरमपंथी शायद विचार-विमर्श करना चाहते थे, लेकिन कट्टरपंथी गुट और कांग्रेस के बाहर के उन चरमपंथियों ने, जो बमों और भड़काऊ भाषा का इस्तेमाल करते थे, पार्टी को कट्टरपंथी बनने के लिए मजबूर कर दिया, अन्यथा उन्हें पहल खोने का जोखिम उठाना पड़ता।
ब्रिटेन ने डोमिनियन स्टेटस के लिए कोई समय-सीमा तय करने से इनकार कर दिया; कांग्रेस द्वारा दी गई समय-सीमा समाप्त होने तक साइमन आयोग की दो खंडों वाली रिपोर्ट अभी भी तैयार हो रही थी। जवाहरलाल नेहरू ने 1929 में नव वर्ष की पूर्व संध्या पर, कड़ाके की ठंड में, लाहौर में तिरंगा झंडा फहराया और ध्वजदंड के चारों ओर कुछ अकड़कर नृत्य किया। गांधी ने सभी देशभक्तों से 26 जनवरी 1930 को इकट्ठा होकर स्वतंत्रता की शपथ लेने और इसे प्राप्त करने के लिए कानून तोड़ने की अपनी तत्परता व्यक्त करने का आह्वान किया। इस शपथ में ब्रिटिश शासन को 'चार गुना आपदा' घोषित किया गया: आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक।
गांधी जी उस राष्ट्रीय जन आंदोलन को साकार करने की प्रक्रिया में लीन थे जिसका उन्होंने वादा किया था; उन्होंने निर्णय लिया कि पहले केवल उनके प्रशिक्षित समर्थक ही सविनय अवज्ञा आंदोलन में भाग लेंगे, उसके बाद अप्रशिक्षित सत्याग्रही। यदि उनके आंदोलन से संबंधित कोई हिंसा उचित ठहराई जा सकती थी, तो वे अभियान रोक देंगे। लेकिन वे किस बात पर अभियान चलाएंगे?
फरवरी 1930 में गांधीजी को अपनी असाधारण रूप से सरल योजना सूझी। उन्होंने दुनिया के सामने घोषणा की कि वे कानून तोड़ेंगे, और फिर ऐसा करने के लिए समुद्र तट तक दो सौ मील पैदल चलेंगे। जिस कानून को वे तोड़ने वाले थे, वह अंग्रेजों को कर चुकाए बिना नमक के उत्पादन और बिक्री पर रोक लगाने वाला कानून था। ऐसे बेतुके कानून के लिए एक बेतुका कानून तोड़ना ही आवश्यक था: वे नमक का प्रसंस्करण करेंगे और दूसरों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित करेंगे।
सन् 1891 में लंदन में छात्र रहते हुए ही उन्होंने नमक में रुचि दिखाई थी और कहा था कि ‘भारत में हज़ारों लोग ऐसे हैं जिन्हें एक दिन में एक पैसे (एक रुपये का सौवां हिस्सा) पर गुज़ारा करना पड़ता है। ये लोग रोटी और नमक

पर जीते हैं, जो एक भारी कर योग्य वस्तु है।’ 30 कानून के अनुसार कर योग्य नमक के अलावा किसी भी प्रकार के नमक का उत्पादन प्रतिबंधित था; अवैध नमक रखना और बेचना अपराध था। भारत से सालाना प्राप्त होने वाले 8 करोड़ पाउंड के राजस्व में से कर के रूप में 2 करोड़ पाउंड आते थे, लेकिन यह पैसा मुख्य रूप से सबसे गरीब लोगों से आता था। हर किसी को नमक की आवश्यकता होती थी, लेकिन शारीरिक श्रम करने वालों को इसकी सबसे अधिक आवश्यकता थी, और इसकी लागत उनकी कम आय का एक बड़ा हिस्सा होती थी। यह कर इसलिए भी घोर अन्याय था क्योंकि भारत में नमक प्रचुर मात्रा में था: तट के कुछ हिस्सों से इसे आसानी से प्राप्त किया जा सकता था, लेकिन यह सरकार का एकाधिकार था। प्रचार के प्रतीक के रूप में नमक का एक और आकर्षण था: इसकी आवश्यकता हिंदुओं और मुसलमानों दोनों को समान रूप से थी, इसलिए यह उनके बीच एकता का प्रतीक था। व्यक्तिगत रूप से, गांधी जी नमक का उपयोग बहुत कम करते थे – वास्तव में उन्होंने इसे अपने आहार से पूरी तरह से हटाने की कोशिश की थी। उन्होंने एक मित्र को लिखा: ‘कृत्रिम भूख पैदा करके, यह हमें अधिक खाने के लिए प्रेरित करता है और इंद्रियों को अनावश्यक रूप से उत्तेजित करता है… मैं मुख्य रूप से फलों से युक्त नमक रहित आहार पर रहता हूँ। मैं ऐसा शरीर को कष्ट देने के लिए नहीं करता, बल्कि इसलिए करता हूँ ताकि शरीर, मन और आत्मा स्वयं पर अधिक नियंत्रण रख सकें और अधिक शुद्ध हो सकें।’ 31
उन्होंने वायसराय ('प्रिय मित्र') को पत्र लिखकर कहा कि ब्रिटिश शासन एक अभिशाप था जिसने महंगे सैन्य और नागरिक प्रशासन के माध्यम से भारत के लाखों लोगों को गरीब बना दिया था, हालांकि उन्होंने आश्वस्त करते हुए कहा: 'मैं आम तौर पर अंग्रेजों को पृथ्वी पर किसी भी अन्य लोगों से बदतर नहीं मानता।' उन्होंने भारत के ब्रिटिश प्रशासन को दुनिया का सबसे खर्चीला प्रशासन पाया और चतुराई से लॉर्ड इरविन को अपने वेतन की तुलना ब्रिटिश प्रधानमंत्री के वेतन से करने के लिए आमंत्रित किया: 'आप भारत की औसत आय से पांच हजार गुना से भी अधिक कमा रहे हैं। ब्रिटिश प्रधानमंत्री ब्रिटेन की औसत आय का केवल नब्बे गुना कमा रहे हैं। मैं आपसे घुटने टेककर इस घटना पर विचार करने का अनुरोध करता हूं।' 32 उन्होंने घोषणा की: 'मेरी महत्वाकांक्षा अहिंसा के माध्यम से ब्रिटिश जनता को परिवर्तित करने और इस प्रकार उन्हें भारत के प्रति उनके द्वारा किए गए अन्याय को देखने के अलावा और कुछ नहीं है।' 33 यदि सरकार मांगों की सूची को स्वीकार नहीं करती

तो वे सविनय अवज्ञा अभियान शुरू करेंगे। उन्होंने इसमें नमक कर का उन्मूलन भी शामिल किया, लेकिन इस पर जोर नहीं दिया; अन्य मुद्दों में शराब पर प्रतिबंध, सरकारी वेतन में कटौती और हथियार रखने का अधिकार शामिल थे। जवाहरलाल नेहरू पहली या आखिरी बार नहीं, बल्कि कई बार असमंजस में पड़
गए थे: ‘कुछ राजनीतिक और सामाजिक सुधारों की सूची बनाने का क्या मतलब था – जो अपने आप में अच्छे थे, इसमें कोई शक नहीं – जब हम स्वतंत्रता की बात कर रहे थे? क्या गांधीजी का भी वही मतलब था जो हमारा था, या हम दोनों की भाषा अलग थी?’ 34
गांधी ने 5 मार्च 1930 को आश्रम में आयोजित एक सभा में नमक के मुद्दे
पर आंदोलन करने की घोषणा की। वल्लभभाई पटेल, मोतीलाल और जवाहरलाल नेहरू जैसे राजनेता इससे प्रभावित नहीं हुए। नमक कर मामूली था, उस समय कोई भी इसके खिलाफ विरोध नहीं कर रहा था, शिक्षित वर्ग इसे कोई महत्व नहीं देता था। ऐसा प्रतीत नहीं हुआ कि इससे साम्राज्य को कुचलने की वह रणनीति कारगर साबित होगी जिसका वादा किया गया था। अंग्रेजों ने इस अभियान को बचकाना दिखावा बताकर खारिज कर दिया और इस तरह यह उनकी कड़ी निगरानी से बच गया - और यही उद्देश्य था। उन्होंने कोई कार्रवाई न करने का फैसला किया और विरोध को अपने आप शांत होने दिया।
12 मार्च को साठ वर्षीय आंदोलनकारी अपने साथ अठहत्तर सत्याग्रहियों
को लेकर सुबह 6 बजे साबरमती आश्रम (जिसे सत्याग्रह आश्रम भी कहा जाता है) से दांडी के लिए रवाना हुए, जहाँ अरब सागर की लहरों ने नमक के मैदान बना दिए थे, जहाँ से आसानी से नमक निकाला जा सकता था। मालाओं से सजे और संगीत की धुन पर चलते हुए, जुलूस में शामिल लोग अहमदाबाद से गुजरे, जहाँ हजारों लोगों ने उनका अभिवादन किया। ये लोग महान महाकाव्य युद्धों को याद कर रहे थे और उनमें से कई रो रहे थे, यह सोचकर कि जुलूस में शामिल लोग अपनी मृत्यु की ओर जा रहे हैं।
गांधी जी ने धोती पहनी थी, जिस पर एक बड़ी घड़ी लगी थी, और एक शॉल ओढ़ी
थी। सभी यात्रियों की तरह, उन्होंने भी कंधे पर एक थैला रखा हुआ था जिसमें पलंग, कपड़े बदलने के लिए कुछ कपड़े, सूत कातने के लिए चरखा, डायरी और एक मग था। योजना यह थी कि पश्चिमी तट के गांवों से होकर सावधानीपूर्वक निर्धारित मार्ग पर पच्चीस दिनों तक पैदल मार्च किया जाए। दुनिया से संपर्क बनाए रखने के लिए, गांधी जी प्रतिदिन दर्जनों पत्र लिखते थे और

कभी-कभी तो मार्च शुरू होने से पहले यंग इंडिया के लिए अपना लेख लिखने के लिए सुबह 3 बजे उठ जाते थे। वे ऐसे गांवों से गुजरे जिन्हें पहले से ही बुनियादी भोजन, सोने की जगह और शौचालय खोदने के लिए जगह उपलब्ध कराने के लिए तैयार किया गया था। हजारों की संख्या में नगरवासी मार्च का उत्साहवर्धन करने के लिए निकले, गांवों को सजावट से सजाया गया था और धूल को कम करने के लिए सड़कों पर पानी छिड़का गया था।
गांधी ने इस पदयात्रा को कताई के पक्ष में और अस्पृश्यता के विरुद्ध संदेशों को बढ़ावा देने का अवसर बनाया। दभान गाँव में वे मंदिर के पास से होते हुए अछूतों की बस्ती में गए, जहाँ उन्होंने 'अछूतों' के कुएँ से पानी निकाला और स्नान किया। फिर उन्होंने स्वागत समिति के उच्च जाति के हिंदुओं को अछूतों को सभा में शामिल होने की अनुमति देने के लिए राजी किया। अधिकांश गाँवों ने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया; कुछ गाँवों में कोई स्वागत समिति नहीं थी और पदयात्रा करने वालों को अपने आगमन पर लोगों की रुचि जगाने के लिए प्रयास करने पड़े। पदयात्रा की रिपोर्ट करते हुए एक पुलिस अधिकारी ने अपने वरिष्ठों को सूचित किया: 'गांधी दिन-प्रतिदिन कमजोर होते जा रहे हैं। यह उनके थके हुए चेहरे से स्पष्ट है। अब उन्हें अपनी दोपहर की पदयात्रा पूरी करने में उतना ही समय लगता है जितना शुरुआत में लगता था। वे अब अपने भाषणों में भी जल्दबाजी करते हैं। कभी-कभी वे स्वयं कहते हैं, "मैं थक गया हूँ।"' 35
उन्होंने पच्चीस दिनों में 241 मील की दूरी तय की और 5 अप्रैल को दांडी पहुंचे। सरोजिनी नायडू और अन्य कार्यकर्ता उनका स्वागत करने के लिए वहां मौजूद थे। यात्रा के अंतिम पड़ाव में, आश्रमवासियों के साथ हजारों समर्थक जुड़ गए थे। लंबे समय से चल रही तैयारियों ने दुनिया भर के पत्रकारों को इकट्ठा होने का मौका दिया, जिन्हें गांधी ने यह संदेश दिया: 'मैं इस लड़ाई में शक्ति के विरुद्ध सत्य की लड़ाई में विश्व की सहानुभूति चाहता हूं।' 36 6 अप्रैल को उन्होंने समुद्र में स्नान किया, नमक के नियमों का उल्लंघन करते हुए एक चुटकी नमक (वास्तव में नमकीन मिट्टी) उठाया, जो पूरे भारत के लोगों के लिए ऐसा ही करने का संकेत था। तटवर्ती इलाकों में, ग्रामीण समुद्र में उतरे या खारी मिट्टी से नमक इकट्ठा किया; शहरों में कांग्रेस के स्वयंसेवकों ने सड़कों पर अवैध रूप से उत्पादित नमक (कुछ हद तक संदिग्ध गुणवत्ता वाला) बेचा। गांधी ने कुछ नमक निकाला, जिसे सबसे ऊंची

बोली लगाने वाले को बेच दिया गया और इस उद्देश्य के लिए 1,600 रुपये जुटाए गए।
नमक उत्पादन और बिक्री के आरोप में हजारों लोगों को गिरफ्तार किया गया, या फिर हाथ में पकड़े नमक को छोड़ने से इनकार करने जैसे अपराधों के लिए उनकी पिटाई की गई। दक्षिणी तट से लेकर बंगाल और उत्तर-पश्चिम सीमांत प्रांत तक प्रदर्शन हुए जो अधिकतर शांतिपूर्ण थे, लेकिन पेशावर में भारतीय सैनिकों ने निहत्थे प्रदर्शनकारियों पर गोली चलाने से इनकार कर दिया - अंग्रेजों के लिए यह एक गंभीर घटनाक्रम था। बंगाल, जो लंबे समय से हिंसक विरोध का गढ़ रहा था, में राष्ट्रवादियों ने चटगांव में एक सेना डिपो पर हमला किया और हथियार छीन लिए। अंग्रेजों ने यंग इंडिया और नवजीवन सहित राष्ट्रवादी समाचार पत्रों पर प्रतिबंध लगा दिया और लोकतांत्रिक विधानमंडलों को दरकिनार करते हुए अध्यादेश द्वारा शासन किया।
गांधीजी ने स्थिति को और गंभीर बनाने और सरकारी नमक डिपो पर मार्च का नेतृत्व करने की योजना बनाई थी, लेकिन 5 मई की आधी रात के बाद उन्हें उनकी झोपड़ी में उन्नीसवीं सदी के शुरुआती दौर के एक कानून के तहत गिरफ्तार कर लिया गया, जो बिना मुकदमे के हिरासत में रखने की अनुमति देता था। उन्होंने अपना सामान इकट्ठा किया, अपने कुछ दांत साफ किए और अपने प्रमुख गायक से प्रार्थना गाने की अनुमति ली – शिविर पहले से ही जागृत था और चुपचाप उनके जाने की प्रतीक्षा कर रहा था। उन्हें ट्रेन और कार से वापस पुणे की येरवदा जेल ले जाया गया, जहाँ उन्हें पहले भी कैद किया गया था। जब उनकी जांच की गई तो उनका वजन 100 पाउंड और लंबाई पांच फीट पांच इंच पाई गई। उन्होंने वहाँ से लिखे पत्रों में जेल को येरवदा आनंदगृह कहा, मानो वे कारावास द्वारा दी गई शांति से प्रसन्न थे। 37
सरोजिनी नायडू के नेतृत्व में धरसाना स्थित सरकारी नमक डिपो पर प्रस्तावित मार्च हुआ, जिसमें हजारों सत्याग्रही भारी किलेबंदी वाली इमारत की ओर बढ़े और जब उन्हें भारी लाठियों से पीटा गया तो उन्होंने कोई प्रतिरोध नहीं दिखाया। इस शानदार घटना की खबर पूरी दुनिया में फैली; यूनाइटेड प्रेस के संवाददाता वेब मिलर के शब्दों में: 'जहां मैं खड़ा था, वहां से मैंने असुरक्षित खोपड़ियों पर लाठियों की भयानक मार सुनी... जो लोग गिर पड़े, वे बेहोश होकर इधर-उधर लुढ़क रहे थे या टूटी खोपड़ियों या टूटे कंधों के साथ तड़प रहे थे।' 38 जैसा कि वायसराय लॉर्ड इरविन ने राजा

को लिखा, 'यह सारा मामला प्रचार था और इस तरह इसने अपना उद्देश्य बखूबी पूरा किया।' 39 विशेष रूप से अमेरिकी मीडिया को ब्रिटिश साम्राज्य को चुनौती देते हुए गांधी की छवि बेहद आकर्षक लगी, जिसने 1776 के चाय कर की याद दिला दी, जिसका अमेरिकी क्रांति के इतिहास में एक प्रतिष्ठित स्थान है।
गिरफ्तारियां तेजी से जारी रहीं और नेताओं को गिरफ्तार करते ही उनकी जगह नए नेता आ जाते थे। जवाहरलाल नेहरू की गिरफ्तारी के बाद मोतीलाल नेहरू कांग्रेस के अध्यक्ष बने, उनके बाद वल्लभभाई पटेल और फिर राजेंद्र प्रसाद अध्यक्ष बने – कांग्रेस संगठन के हर स्तर पर गिरफ्तारी और प्रतिस्थापन का यही सिलसिला चलता रहा। कुल मिलाकर लगभग पचास हजार लोगों को जेल भेजा गया, लेकिन सरकार की उम्मीदों के विपरीत, दमन का उल्टा असर हुआ: सविनय अवज्ञा आंदोलन और भी आक्रामक हो गया और हिंसा बढ़ गई।
भारत के संविधान पर गोलमेज सम्मेलन (जिसे बाद में प्रथम गोलमेज सम्मेलन के रूप में जाना गया) का आयोजन लेबर पार्टी के प्रधानमंत्री रैमसे मैकडोनाल्ड द्वारा लंदन में 12 नवंबर 1930 को जॉर्ज पंचम द्वारा किया गया था। इतने उच्च स्तरीय समर्थन के बावजूद, यह सम्मेलन सफल नहीं हो सका क्योंकि यह स्पष्ट रूप से हिंदू राष्ट्रवादी बहुमत का प्रतिनिधित्व नहीं करता था। जिन्ना और आगा खान ने मुसलमानों का प्रतिनिधित्व किया और पहली बार किसी राजनीतिक सम्मेलन में राजकुमारों का सशक्त प्रतिनिधित्व देखने को मिला। सम्मेलन में उपस्थित सभी लोग भारतीय संघ के सिद्धांत और तत्काल डोमिनियन दर्जा दिए जाने की वांछनीयता पर सहमत हुए, डोमिनियन दर्जा कांग्रेस समर्थकों की मांग के काफी करीब था। यह न्यूनतम रियायत थी जो ब्रिटिश दे सकते थे, और यदि उन्होंने यह रियायत देने में तेजी दिखाई होती तो बहुत सी परेशानियों से बचा जा सकता था। यदि ब्रिटिश कांग्रेस के विरोध में अपनी ताकत जुटाने का प्रयास कर रहे थे, तो उनकी यह चाल विफल रही। साइमन रिपोर्ट, जब अंततः जारी की गई, तो उसमें अखिल भारतीय संघ का प्रस्ताव रखा गया, जो अगले सत्रह वर्षों तक ब्रिटिश संविधान निर्माताओं के लिए एक मायावी लक्ष्य बना रहा।
इस स्तर की सहमति को देखते हुए, भारत सरकार कांग्रेस के साथ समझौता
करने की दिशा में कदम उठाने को तैयार थी, और 26 जनवरी 1931 को बातचीत संभव बनाने के लिए सभी प्रमुख प्रदर्शनकारियों को रिहा कर दिया गया। गांधी ने

अपनी रिहाई पर एसोसिएटेड प्रेस को एक कड़ा बयान दिया: 'मैं पूरी तरह से खुले दिमाग से, शत्रुता से मुक्त, तर्क में निष्पक्ष और हर दृष्टिकोण से पूरी स्थिति का अध्ययन करने के लिए तैयार होकर जेल से बाहर आया हूँ।' 40 मोतीलाल नेहरू का उसी फरवरी में निधन हो गया; जब गांधीजी उनसे मिलने गए तो बीमार व्यक्ति ने पानी मांगा। गांधीजी ने कहा कि उन्हें भगवद् गीता का पाठ करना चाहिए और आध्यात्मिक बातों पर विचार करना चाहिए। ‘मैं सांसारिक बातों को आप और मेरी पत्नी पर छोड़ता हूँ। जब तक मैं इस धरती पर हूँ, मैं सांसारिक ही रहूँगा,’ उस बुजुर्ग वकील ने कहा। 41 बुद्धिमान और व्यंग्यशील मोतीलाल नेहरू के चले जाने से, गांधीजी पर पुरानी पीढ़ी का आखिरी संयमकारी प्रभाव, चाहे अच्छा हो या बुरा, समाप्त हो गया। अगले दस वर्षों तक कांग्रेस की ओर से जो कुछ भी हुआ, वह सब उनके निर्देशन में था – उसकी सफलता या विफलता उनके हाथों में थी।
कांग्रेस ने गांधी को वायसराय के साथ सविनय अवज्ञा अभियान के निपटारे के लिए बातचीत करने का अधिकार दिया, इसलिए उन्होंने लॉर्ड इरविन को पत्र लिखा और वे फरवरी और मार्च 1931 में मिले। विंस्टन चर्चिल आक्रोशित थे, और उन्होंने गांधी को 'दुष्ट विध्वंसक कट्टरपंथी' कहकर संबोधित किया: 'श्री गांधी, एक राजद्रोही मिडिल टेंपल वकील [वास्तव में, इनर टेंपल], अब पूर्व में प्रसिद्ध एक प्रकार के फकीर के रूप में, वायसराय महल की सीढ़ियों पर अर्धनग्न अवस्था में चढ़ते हुए देखना भयावह और घृणित था, जबकि वे अभी भी राजा-सम्राट के प्रतिनिधि के साथ समान शर्तों पर बातचीत करने के लिए सविनय अवज्ञा का एक विद्रोही अभियान आयोजित और संचालित कर रहे थे।' 42 चर्चिल भारत में सेवा कर चुके थे और उन्हें अच्छी तरह पता था कि यह भूमि विभिन्न अवस्थाओं में नग्न अवस्था में स्वघोषित साधुओं से भरी पड़ी है, जो पहले से ही गरीब लोगों से भीख मांगते हैं और नकली इलाज का दावा करते हैं। गांधी ऐसे नहीं थे - वे पूरी तरह से सच्चे थे; लेकिन चर्चिल के लिए उन्हें धोखेबाजों के साथ भ्रमित करना अनुचित नहीं था।
चर्चिल का मानना था कि यदि भारत भयंकर नस्लीय और धार्मिक मतभेदों से ग्रस्त है और ब्रिटिश संरक्षण की वापसी का अर्थ मध्ययुगीन युद्धों की तत्काल पुनरावृत्ति होगा, तो ब्रिटेन द्वारा डोमिनियन दर्जा देना एक 'अपराध' होगा। उनका विचार था कि राजनीतिक वर्ग 35 करोड़ भारतीयों के एक छोटे से स्वार्थी हिस्से का प्रतिनिधित्व करता है और कोई भी समुदाय

डोमिनियन दर्जा पाने का हकदार नहीं हो सकता जो अपने 60 करोड़ सदस्यों, साथी मनुष्यों को, जो उनके साथ काम कर रहे हैं, 'अछूत' के रूप में कलंकित करता है और उनके साथ ऐसा व्यवहार करता है, जिनका आना-जाना अपमान है और जिनकी उपस्थिति ही अपवित्रता है। 43 इस प्रकार वे व्यापक हिंदू-मुस्लिम संघर्ष की भयावहता और अस्पृश्यता के अपराध पर गांधी से सहमत थे; लेकिन जहाँ गांधी इनके विरुद्ध व्यावहारिक कदम उठा रहे थे, वहीं चर्चिल ने भारतीय समाज के इन नकारात्मक पहलुओं को स्वतंत्रता की दिशा में उठाए जाने वाले कदमों में देरी करने के कारणों के रूप में प्रस्तुत किया, शायद अनिश्चित काल के लिए। चर्चिल ने अपने पार्टी नेता बाल्डविन द्वारा भारतीय संवैधानिक परिवर्तन के समर्थन के कारण कंजर्वेटिव शैडो कैबिनेट से इस्तीफा दे दिया - जो भविष्य के युद्ध नेता का सबसे दूरदर्शी कदम नहीं था। हालांकि, चर्चिल इस बात को इंगित करने में सही थे कि दोनों पक्षों की बैठक का वास्तविक महत्व भारतीय नेताओं और ब्रिटिश प्रशासन को मिली समानता की धारणा में निहित था: गांधी ने इरविन से याचना करने वाले के रूप में नहीं, बल्कि एक समान व्यक्ति के रूप में संपर्क किया था।
इरविन, जो बाद में लॉर्ड हैलिफ़ैक्स बने, द्वितीय विश्व युद्ध से पूर्व तुष्टीकरण की नीति अपनाने वाले विदेश सचिव के रूप में कुख्यात हुए। कुलीन कद-काठी (छह फीट पाँच इंच) वाले इरविन भारत के छोटे कद के संत गांधी जी से कहीं अधिक लंबे थे। गांधी जी की 'वास्तव में प्रतिकूल' शारीरिक बनावट पर उन्होंने एक पत्र में टिप्पणी की: 'छोटे कद के, झुर्रियों वाले, दुबले- पतले, सामने के दांत नहीं हैं, ऐसा व्यक्तित्व जो दुनियावी दिखावे से बिल्कुल भी सुसज्जित नहीं है। फिर भी आप उनकी तेज छोटी आँखों और अत्यंत सक्रिय और तीक्ष्ण बुद्धि के पीछे छिपे चरित्र की दृढ़ता को महसूस किए बिना नहीं रह सकते।' 44 गांधी जी के लंगोटी और शॉल में दिखने या मीराबेन (जो पहले मैडेलीन स्लेड थीं, आखिरकार एक महिला थीं) के गांधी जी की सेवा में तड़पने से, जो उनके भोजन के समय के बाद चर्चाएँ जारी रहने पर वायसराय महल में खजूर और बकरी का दूध लाती थीं, उन्हें कोई शर्म नहीं थी। वहाँ मौजूद एक राजनयिक ने टिप्पणी की, ‘मुझे याद है गांधीजी ज़मीन पर उकड़ू बैठे थे और थोड़ी देर बाद एक लड़की कुछ गंदा पीला पदार्थ लेकर आई जिसे उन्होंने बिना अनुमति लिए ही खाना शुरू कर दिया।’ 45

इरविन ने गांधी के चरित्र का प्रारंभिक आकलन किया और उनकी 'सत्ता और व्यक्तित्व के अभिमान' को भुनाने का निर्णय लिया। 46 इरविन को 'होली फॉक्स' (उनकी उपाधि पर एक व्यंग्य) उपनाम दिया जाना था क्योंकि वे धार्मिक और धूर्त दोनों थे, और इसलिए गांधी के लिए एक उपयुक्त प्रतिद्वंद्वी साबित होने चाहिए थे। लेकिन प्रगति धीमी थी। इरविन ने अपने पिता को लिखा: मैं लगातार खुद से यही सवाल पूछता रहा, ‘क्या वह व्यक्ति पूरी
तरह ईमानदार था?’ मुझे लगता है कि जैसे-जैसे हमारी बातचीत आगे
बढ़ी, इस बारे में मेरी सोच दोहरी होती चली गई। मुझे इस बात में
कोई संदेह नहीं रहा कि अगर श्री गांधी किसी भी बात पर मुझे अपना
वचन देते हैं, तो वह वचन बिल्कुल पक्का है और मैं उस पर पूरी तरह
भरोसा कर सकता हूँ। दूसरी ओर, मेरी जो धारणा हमेशा से थी, वह
पुष्ट होती चली गई, यानी कि यद्यपि वे जानबूझकर पूरी तरह
ईमानदार थे, फिर भी कुछ मामलों में वे अवचेतन आत्म-भ्रम के
शिकार थे। 47
उनकी आठ बार मुलाकात हुई और 4 मार्च 1931 को एक समझौते पर सहमति बनी, जिसे दिल्ली समझौता या गांधी-इरविन समझौता के नाम से जाना गया। गांधी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन समाप्त कर दिया और दूसरे गोलमेज सम्मेलन में शामिल होने के लिए सहमत हो गए। अंग्रेजों ने भारतीयों से लंकाशायर के सूती कपड़ों का बहिष्कार बंद करने को कहा, क्योंकि इससे सूती कस्बों में कामगारों को कठिनाई हो रही थी। यह बात मान ली गई, हालांकि भारतीय वस्त्रों को प्रोत्साहन देना भी समझौते का हिस्सा था। शराब की दुकानों के सामने अहिंसक धरना प्रदर्शन की अनुमति दी गई। वायसराय नमक कर समाप्त करने पर सहमत नहीं हुए, लेकिन उन्होंने कुछ गांवों के लोगों को अपने उपयोग के लिए नमक बनाने और उसे व्यक्तिगत रूप से बेचने की अनुमति दी। उन्होंने अभियान के दौरान पुलिस की ज्यादतियों की जांच शुरू करने से इनकार कर दिया। उन्होंने सभी अहिंसक कैदियों को रिहा कर दिया, लेकिन बम हमलों में शामिल लोगों को फांसी से नहीं बख्शा। इसके चलते पहली बार गांधी को अपने खिलाफ प्रदर्शनों का सामना करना पड़ा। भगत सिंह, जिसने ब्रिटिश और भारतीय सदस्यों से भरी विधानसभा में दो बम फेंके थे और बाद में एक युवा ब्रिटिश पुलिसकर्मी की हत्या कर दी थी, के समर्थकों ने मार्च 1931 में कराची

कांग्रेस में गांधी के आगमन पर काले झंडे लहराते हुए और 'गांधी वापस जाओ!' के नारे लगाते हुए उनका स्वागत किया।
गांधी जी ने एक बार फिर कांग्रेस सदस्यों को धोखा दिया। दूसरी बार उन्होंने अभियान रोक दिया था, और इससे कोई खास लाभ भी नहीं हुआ था। हालांकि, यह कहा जा सकता है कि उन्होंने चतुराई से दोनों सविनय अवज्ञा आंदोलनों को तब रोका जब वे कमजोर पड़ रहे थे, जिससे आंदोलन को मजबूती मिली। जवाहरलाल नेहरू फूट-फूटकर रोए और गांधी जी से कहा कि अगर उनके पिता जीवित होते तो ऐसा समझौता कभी नहीं हो पाता: 'क्या इसी के लिए हमारी जनता ने एक साल तक इतना साहस दिखाया था? क्या हमारे सारे साहसी शब्द और कर्म इसी में समाप्त होने वाले थे?' नमक सत्याग्रह शुरू होने से पहले ही, डोमिनियन स्टेटस की कोई शर्त रखे बिना एक गोलमेज सम्मेलन में 48 सीटें प्रस्तावित की गई थीं।
इस प्रकार भारतीय स्वतंत्रता का दूसरा अभियान समाप्त हुआ। अंततः इसकी एकमात्र उपलब्धि यह थी कि गांधीजी अब वार्ता करने की स्थिति में आ गए थे। उन्होंने अपने कांग्रेस सहयोगियों पर दबाव डालकर अपनी प्रतिष्ठा को बहुत बढ़ाया, ताकि उन्हें एकमात्र प्रतिनिधि के रूप में बैठने की अनुमति मिल सके, जबकि सरकार ने सोलह सीटें आवंटित की थीं। गांधीजी जानते थे कि यदि वे अकेले वार्ता करेंगे तो कांग्रेस के भीतर के मतभेद स्पष्ट नहीं होंगे; और उन्हें यह भी पता था कि सभी की निगाहें उन पर होंगी। 1930-31 में उनकी उपस्थिति ने गांधीजी को विश्व व्यक्तित्व के रूप में स्थापित कर दिया।

9

विश्व प्रतीक
गांधी जी 29 अगस्त 1931 को एसएस राजपुताना जहाज से लंदन के लिए रवाना हुए। उनके साथ मीराबेन, महादेव देसाई, प्यारेलाल और उनके पुत्र देवदास भी थे। वे कांग्रेस के एकमात्र प्रतिनिधि थे और उन्हें अंतिम समय के प्रस्तावों पर निर्णय लेने का पूर्ण अधिकार प्राप्त था। सरोजिनी नायडू भारतीय महिलाओं का प्रतिनिधित्व करते हुए उनके साथ थीं; जी.डी. बिड़ला व्यापार जगत का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। गांधी जी ने द्वितीय श्रेणी में यात्रा की, लेकिन अपना अधिकांश समय डेक पर पत्र लिखवाने और उनसे मिलने के इच्छुक लोगों से बातचीत करने में बिताया।
हिंदू-मुस्लिम मतभेदों के समाधान न होने और गांधी-इरविन समझौते का पालन न होने के कारण वे यह तय नहीं कर पा रहे थे कि उन्हें जाना चाहिए या नहीं, लेकिन अंततः उन्होंने ईश्वरीय मार्गदर्शन को मान लिया। एसोसिएटेड प्रेस के माध्यम से उन्होंने कहा, 'मेरी आस्था ईश्वर में है। ऐसा लगता है कि उन्होंने मेरे लिए लंदन जाने का रास्ता साफ कर दिया है। इसलिए मुझे उम्मीद है कि वे मानवता की सेवा के लिए मुझे अपने साधन के रूप में इस्तेमाल करेंगे।' 1 प्रेस द्वारा यह पूछे जाने पर कि क्या वे सलाहकार ले जा रहे हैं, उन्होंने उत्तर दिया: 'मेरे सलाहकार ईश्वर हैं। अगर मुझे सलाहकार ले जाने का कोई विचार होता तो मैं उन्हें प्रतिनिधि के रूप में ले जाता।' 2
एक अमेरिकी उपदेशक, जॉन हेन्स होम्स ने उस समय गांधी का वर्णन इस
प्रकार किया:
उसका सिर मुंडा हुआ है, कान उभरे हुए हैं, होंठ मोटे हैं और मुँह
में कई दाँत नहीं हैं। लेकिन उसके शॉल की सफेद पृष्ठभूमि पर
उसका सांवला रंग बेहद खूबसूरत लगता है, उसकी आँखें रात में मोमबत्ती की तरह चमकती हैं और उसका पूरा चेहरा सुबह के सूरज की तरह खिली मुस्कान से दमकता है। जो बात आपको प्रभावित करती है,
वह उसका शारीरिक रूप नहीं बल्कि उसकी आध्यात्मिक उपस्थिति है। आप तुरंत उसकी सादगी, उसकी ईमानदारी और उसकी मासूमियत के बारे

में सोचते हैं। वह एक छोटे बच्चे की सहजता और स्वाभाविकपन के
साथ आपके पास आता है।
भारत में इस बात पर काफी चर्चा हुई थी कि गांधी जी इंग्लैंड की कुख्यात खराब जलवायु में क्या पहनेंगे; उनके लिए यह उनकी वास्तविक स्थिति की परीक्षा थी, और उन्होंने बिना किसी झिझक के इसका जवाब दिया। वे 'अर्धन भूखे, लगभग नग्न ग्रामीण' के प्रतिनिधि के रूप में गए और इसी रूप में उन्होंने केवल अपनी धोती पहनी: 'मेरी धोती मेरे जीवन का एक सहज विकास है। यह स्वाभाविक रूप से, बिना किसी प्रयास, बिना किसी पूर्वचिंता के आई'; उन्होंने निश्चय किया कि 'जलवायु की आवश्यकता के अनुसार धोती में कुछ भी अतिरिक्त नहीं जोड़ा जाएगा'। 4
जब वे फोल्केस्टोन में उतरे तो बारिश हो रही थी; उन्हें सबसे पहले क्वेकर्स के मुख्यालय, फ्रेंड्स मीटिंग हाउस ले जाया गया, जहाँ समाजवादी लेखक लॉरेंस हाउसमैन के नेतृत्व में एक भीड़ ने उनका स्वागत किया। इस स्वागत समिति की संरचना से पता चलता है कि इंग्लैंड में गांधीजी को समर्थन कहाँ से मिल रहा था: चर्चों में, महिला संगठनों में और राजनीतिक वामपंथियों में, जिनका प्रतिनिधित्व ट्रेड यूनियन और लेबर पार्टी कर रही थी, जिसके दिग्गज नेता फेनर ब्रॉकवे उस दिन वहाँ मौजूद थे।
गांधी जी किंग्सले हॉल गए, जो लंदन के ईस्ट एंड में गरीबों के लिए एक धार्मिक केंद्र था। वहां वे मूरियल लेस्टर के अतिथि थे, जो एक शांतिवादी और शराबबंदी समर्थक थीं और साबरमती आश्रम में उनसे मिलने आई थीं। उन्हें फैशनेबल वेस्ट एंड के आलीशान घरों में रहने का निमंत्रण मिला था, लेकिन उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि वे अपने लोगों, गरीबों के बीच रहना चाहते हैं। उन्होंने उत्साह से बताया, 'इस पूरे केंद्र में कहीं भी अतिरिक्त फर्नीचर नहीं है; यहां रहने वाले लोग छोटी-छोटी कोठरियों में रहते हैं।' 5 गांधी जी का एक कमरा था जो खुली छत से जुड़ा हुआ था। यह पाँच फीट चौड़ा और सात या आठ फीट लंबा था, जिसकी दीवारें बिल्कुल सादी थीं और इसमें केवल एक मेज, एक कुर्सी और फर्श पर एक पतली चटाई बिछी थी। उन्होंने एक नियमित दिनचर्या बना रखी थी: तीन बजे उन्हें प्रार्थना के लिए जगाया जाता, फिर वे गलियों में थोड़ी देर टहलते, उसके बाद नाश्ता करते, अपने सचिवों से मिलते और साक्षात्कार करते। दस बजे वे कार से सम्मेलन के लिए जाते, 'उनके पीछे हाँफते हुए जासूस और उनके कुछ कर्मचारी प्रसिद्ध चरखा और उनके भोजन से

भरी हरी टोकरी पकड़े चलते थे', जैसा कि एक पर्यवेक्षक ने बताया। 6 सात बजे वे अपनी शाम की प्रार्थना करते, फिर साक्षात्कार और सम्मेलन देर रात तक चलते। उनकी सहनशक्ति अद्भुत थी, लेकिन उनके व्यस्त कार्यक्रम के कारण शायद वे सम्मेलन का पूरा लाभ नहीं उठा पाते थे; उन्हें अक्सर आँखें बंद करके चुपचाप बहस सुनते हुए देखा जाता था, शायद वे सो रहे होते थे।
यह मिशन शुभचिंतकों, जिज्ञासुओं और पत्रकारों से घिरा हुआ था। गांधीजी के प्रति अमेरिकी रुचि सीबीएस पर प्रसारित आधे घंटे के एक कार्यक्रम से स्पष्ट हुई, जिसमें उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता के लिए रक्तहीन क्रांति के अपने आदर्श का प्रचार किया। अमेरिका में पहले से ही उनके बहुत से अनुयायी थे; टाइम पत्रिका ने 'संत गांधी' को 1930 का 'मैन ऑफ द ईयर' घोषित किया था। उनकी मुलाकात विश्व के एक और प्रसिद्ध व्यक्तित्व चार्ली चैपलिन से हुई। गांधीजी चैपलिन से मिलना नहीं चाहते थे, क्योंकि उनका कहना था कि उन्हें अभिनेताओं में कोई दिलचस्पी नहीं है और उन्होंने कभी कोई फिल्म नहीं देखी थी, लेकिन चैपलिन के बचपन की गरीबी के बारे में सुनकर वे उनसे मिले। उनकी मुलाकात लॉयड जॉर्ज से भी हुई और उन्होंने वेजिटेरियन सोसाइटी के अपने पुराने मित्रों को संबोधित किया।
लंदन में उन्हें गरीबों के घरों का दौरा करने में बहुत आनंद आता था। मूरियल लेस्टर ने वर्णन किया कि कैसे, हमेशा की तरह एक बड़ी भीड़ के साथ, उन्होंने पास की एक गली में परिवारों से मिलने का फैसला किया:
वह गली के दोनों ओर बने घरों में अंदर-बाहर घूमता रहा। औरतें हद
से ज़्यादा स्वाभिमानी थीं। उन्हें ज़रा भी आगाह नहीं था कि वह
आ रहा है; कुछ इस्त्री कर रही थीं, कुछ सफ़ाई कर रही थीं, लेकिन
सभी अपने छोटे से घर का हर कोना उसे दिखाने के लिए तैयार थीं
ताकि वह उसका निरीक्षण कर सके, उसके बारे में पूछ सके और उसकी प्रशंसा कर सके। वह जानना चाहता था कि आस-पास के पुरुष क्या काम करते हैं, घरों का किराया कितना है, नालियों और सफ़ाई के मामले में स्वच्छता अधिकारियों का क्या काम है, बेरोज़गारी के दौरान परिवार की देखभाल के लिए क्या इंतज़ाम किया गया है... उन्होंने उसे अपने पालतू जानवर, खरगोश और मुर्गियाँ दिखाईं; कभी-कभी उन्हें गर्व करने लायक पियानो भी दिख जाता था, और हमेशा यह स्पष्ट होता था कि हर चीज़ का बेहतरीन इस्तेमाल कैसे किया जा

रहा है और सुंदरता से भरपूर हर चीज़ को कितना संजोकर रखा जाता
है।
कभी-कभी ईस्ट एंड के उद्दंड बच्चे उनके पीछे चिल्लाते थे: 'गांधी जी, आपकी पतलून कहाँ है?'
उनकी हाजिरजवाबी ने उन्हें गंभीर राजनेताओं की आदी जनता का चहेता बना दिया और दुनिया को गांधी जी के वे विशिष्ट किस्से दिए जो अनगिनत बार दोहराए जाते रहे हैं। जब उनसे पश्चिमी सभ्यता के बारे में पूछा गया, तो उन्होंने जवाब दिया कि उन्हें लगता है कि यह एक अच्छी बात होगी। राजा से मुलाकात के बाद जब उनसे पूछा गया कि क्या उन्हें लगता है कि उन्होंने कम कपड़े पहने हैं, तो उन्होंने समझाया कि 'राजा ने हम दोनों के लिए पर्याप्त कपड़े पहने थे'।
चार्ल्स एंड्रयूज के अनुरोध पर उन्होंने लंकाशायर के मिल कस्बों का दौरा किया, जहाँ उनकी मुलाकात उन श्रमिकों से हुई जो आर्थिक मंदी और उच्च बेरोजगारी के दौर में विदेशी कपड़ों का विरोध करने की स्वदेशी नीति से बुरी तरह प्रभावित हुए थे। उन्होंने भारत में गरीबों के जीवन स्तर का वर्णन किया - जो उनके अनुसार इंग्लैंड के गरीबों के जीवन स्तर से कहीं बदतर था - और बताया कि वे अपने देश में कुटीर उद्योगों को पुनर्जीवित करने का प्रयास कैसे कर रहे हैं। एक क्षण, जिसे फिल्म में कैद किया गया, में वे मुख्य रूप से महिला मिल श्रमिकों से घिरे हुए थे, जिन्होंने उन्हें गले लगाया और उनका उत्साह बढ़ाया। उन्होंने साम्राज्य के महान संस्थानों के लोगों से भी बात की: ईटन के छात्रों और ऑक्सफोर्ड और कैम्ब्रिज के विद्वानों से। ऑक्सफोर्ड के एक प्रोफेसर, मिशनरी और इतिहासकार एडवर्ड थॉम्पसन ने टिप्पणी की: 'सुकरात के बाद से दुनिया ने पूर्ण आत्म-संयम और संयम के मामले में उनके जैसा कोई नहीं देखा है', लेकिन उन्होंने आगे कहा कि वे यह समझने में सक्षम थे कि एथेंसवासियों ने सुकरात को हेमलॉक क्यों पिलाया था। 8
किंग्सले हॉल में जीवन गांधीजी के लिए शायद अधिक अनुकूल था, लेकिन आठ मील दूर आयोजित हो रहे सम्मेलन के लिए यह असुविधाजनक था। इसलिए लंदन में उनके मामलों का प्रबंधन कर रहे एंड्रयूज और हैरी पोलक ने नाइट्सब्रिज का 88 नंबर का मकान किराए पर लिया, जहां गांधीजी के कर्मचारी ठहरते थे और जिसे वे कार्यालय के रूप में इस्तेमाल करते थे।

लंदन की यात्रा की तैयारी करते समय, ब्रिटेन का राजनीतिक परिदृश्य बदल रहा था। 24 अगस्त को लेबर सरकार की जगह कंजर्वेटिव-प्रभुत्व वाली गठबंधन सरकार बन गई थी, हालांकि रामसे मैकडोनाल्ड अभी भी प्रधानमंत्री थे। आम तौर पर भारत में राष्ट्रवादियों के लिए लिबरल या लेबर पार्टियों से ही लाभ की उम्मीद करना बेहतर समझा जाता था, लेकिन 1930 के दशक में पार्टियों की नीतियां संवैधानिक सुधार की आवश्यकता पर केंद्रित हो रही थीं, और 1935 के भारत सरकार अधिनियम को लागू करने की प्रक्रिया एक ऐसे संसद में संपन्न हुई जिसमें कंजर्वेटिवों का भारी बहुमत था। ब्रिटिश सांसदों की अपनी समय-सारणी थी; भारतीय राजनीतिक संस्थाओं में सुधार राष्ट्रवादियों की मांगों के बावजूद जारी रहा, क्योंकि आखिरकार वे ब्रिटिश शासन के तहत बेहतर सरकार की मांग नहीं कर रहे थे।
जब गांधीजी सम्मेलन में पहुँचे, तो यह स्पष्ट हो गया कि वे जाने या न जाने को लेकर दुविधा में क्यों थे: ब्रिटिश भारत के अड़सठ अन्य प्रतिनिधियों, रियासतों के तेईस और ब्रिटेन के बीस प्रतिनिधियों के बीच बैठे हुए, वे अनेकों आवाजों में से एक मात्र थे। पूरे भारत का प्रतिनिधित्व करने के उनके दावे को उन लोगों ने तिरस्कार की दृष्टि से देखा, जो मानते थे कि वे केवल अपने विशिष्ट दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। अकेले सम्मेलन में भाग लेने और कांग्रेस के अन्य पदों पर न बैठने का उनका निर्णय जनसंपर्क की दृष्टि से शानदार था: सभी मीडिया का ध्यान उन पर केंद्रित था। लेकिन सम्मेलन कक्ष में वे अलग-थलग पड़ गए और प्रतिनिधि के रूप में नहीं दिखे। उनका प्रदर्शन भी अनुकरणीय नहीं था; यद्यपि गांधीजी स्पष्ट रूप से सम्मेलन में सबसे वरिष्ठ भारतीय थे, फिर भी पर्यवेक्षक निराश थे। द टाइम्स में एक गुमनाम लेखक ने लिखा:
यहां कई लोगों में एक प्रतिभाशाली व्यक्ति को देखने की जो
उम्मीद थी, वह पूरी नहीं हुई। उन्हें बारीकियों की कोई समझ नहीं
थी: संवैधानिक समस्याओं में उनकी कोई रुचि नहीं थी। वे एक कुशल वक्ता नहीं थे; उनके भाषण बैठकर दिए जाते थे और धीमी, एकसमान आवाज़ में होते थे, चाहे उनका विषय कुछ भी हो। चर्चा में उनका हस्तक्षेप मुख्य रूप से प्रचारवादी होता था और अक्सर विषय से उसका कोई वास्तविक संबंध नहीं होता था। उन्होंने सम्मेलन के कार्य में कोई वास्तविक रचनात्मक योगदान नहीं दिया।

उन्होंने जॉर्ज बर्नार्ड शॉ के साथ बातचीत में अपनी कठिनाइयों को समझाया, जिनसे उन्होंने कहा कि सम्मेलन में ‘जॉब के समान धैर्य की आवश्यकता है। यह सब एक बड़ा छलावा है, और जो भाषण हमें सुनने को मिल रहे हैं, वे केवल समय बिताने के लिए हैं। मैं उनसे पूछता हूँ, क्यों न आप अपनी नीति की घोषणा कर दें और हमें अपना निर्णय लेने दें? लेकिन ऐसा करना अंग्रेज़ों की राजनीतिक प्रकृति में नहीं लगता।’ 10 वास्तव में, गांधी की राजनीतिक प्रकृति में यह समझना नहीं था कि किसी समाधान तक पहुँचने के लिए संबंधित पक्षों के साथ चर्चा करना ही वास्तव में नीति थी। गांधी के लिए, सार्वजनिक जीवन सत्य की खोज थी, और जब उन्हें यह विश्वास हो जाता कि उन्होंने इसे पा लिया है, तो उन्हें इसे बाकी दुनिया के सामने प्रस्तुत करना होता था, और इसे स्वीकार करवाने के लिए हर संभव प्रयास करना होता था। ब्रिटिश राजनेता ऐसे समझौते से खुश होते जिसमें किसी की मृत्यु न हो। विशेष रूप से, स्वतंत्रता पर विचार करने से पहले, ब्रिटिश मौजूदा सांप्रदायिक मतभेदों के समाधान के लिए प्रतिबद्ध थे। उनका मानना था कि अल्पसंख्यकों की रक्षा करना आवश्यक है: मुसलमान, अछूत, सिख, ईसाई, पारसी और यूरोपीय। इसके अलावा, ब्रिटिशों द्वारा स्वतंत्रता या लोकतंत्र की दिशा में उठाया गया कोई भी कदम पूरे भारत पर बाध्यकारी नहीं हो सकता था, बल्कि केवल ब्रिटेन के नियंत्रण वाले तीन-पांचवें हिस्से पर ही लागू होगा; राजकुमारों को अपने-अपने क्षेत्र में अपने भविष्य का निर्णय स्वयं करना था। मुस्लिम लीग ने पूरे भारत के मुसलमानों का प्रतिनिधित्व करने का दावा किया, जबकि गांधी की कांग्रेस ने सभी भारतीयों का प्रतिनिधित्व करने का दावा किया; उनके बीच मतभेद अपूरणीय थे। इसके अलावा, अछूतों के प्रतिनिधित्व के दावे में गांधी को विशेष समस्याओं का सामना करना पड़ा, जिन्होंने सिखों को छोड़कर अन्य सभी अल्पसंख्यकों की तरह अलग निर्वाचक मंडल की मांग की थी। लेकिन अन्य अल्पसंख्यक गैर-हिंदू थे, जबकि अछूत, प्रथागत रूप से धर्म से बहिष्कृत होने के कारण, हिंदू धर्म का हिस्सा थे। अछूतों के प्रतिनिधि डॉ. बी.आर. अंबेडकर थे, जिनका मानना था कि गांधी जी की तुलना में उन्हें अछूतों का प्रतिनिधित्व करने का बेहतर अधिकार है। ब्रिटिश सेना में सेवारत एक अछूत के पुत्र, अंबेडकर ने प्राथमिक विद्यालय में शिक्षा प्राप्त की और अलगाव तथा क्रूरतापूर्ण व्यवहार के बावजूद उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। क्रूर भेदभाव के बावजूद वे बंबई के सरकारी हाई

स्कूल में पहले अछूत छात्र थे और फिर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले पहले अछूत बने। उन्हें अमेरिका के कोलंबिया विश्वविद्यालय में अध्ययन करने के लिए छात्रवृत्ति मिली, जहाँ उन्होंने अर्थशास्त्र में पीएचडी की उपाधि प्राप्त की; उन्होंने लंदन में लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स में अपनी पढ़ाई जारी रखी, जहाँ उन्होंने एक और पीएचडी की और ग्रेज़ इन बार में काम करने लगे। 1920 के दशक में भारत लौटने पर उन्होंने अछूतों को पीने के पानी और मंदिरों तक पहुँच दिलाने के लिए नागरिक अधिकार आंदोलनों का नेतृत्व किया।
गांधी जी नेहरू जैसे अपने उच्च जाति के मित्रों को दुख और गरीबों के बारे में उपदेश दे सकते थे, लेकिन अंबेडकर को वे कुछ नहीं बता सकते थे। अछूतों के नेता का मानना था कि उनके समुदाय के उत्थान का सबसे अच्छा तरीका शिक्षा और जीवन स्तर में सुधार लाना है। उनका मानना था कि अस्पृश्यता एक ऐसी व्यवस्था का परिणाम है जो स्वयं हानिकारक है; उन्होंने तर्क दिया कि जाति व्यवस्था को समाप्त कर देना चाहिए - गांधी जी के विपरीत, जिन्होंने जाति व्यवस्था का बचाव तो किया लेकिन उसमें अछूतों को भी शामिल करना चाहते थे।
दोनों के बीच निर्वाचक मंडल के मुद्दे पर तीक्ष्ण मतभेद थे: अंबेडकर ने अछूतों के लिए अलग निर्वाचक मंडल और आरक्षित सीटों का समर्थन किया; गांधी ने अल्पसंख्यक मुस्लिम धार्मिक समुदायों और सिखों को छोड़कर किसी भी अन्य को वैधानिक संरक्षण देने का विरोध किया। उनका मानना था कि हिंदू धर्म में सुधार होना चाहिए ताकि अस्पृश्यता को समाप्त किया जा सके। उनका मानना था कि अलग निर्वाचक मंडल भारतीय समाज को विभाजित कर देगा: 'मैं स्वयं अछूतों के विशाल जनसमूह का प्रतिनिधित्व करने का दावा करता हूं,' उन्होंने कहा। अछूतों के लिए अलग निर्वाचक मंडल उनके अपमान के सिद्धांत को कानून में स्थापित कर देगा: 'क्या अछूत हमेशा के लिए अछूत ही रहेंगे? मैं अस्पृश्यता के जीवित रहने की बजाय हिंदू धर्म के नष्ट होने को कहीं अधिक पसंद करूंगा।' 11 अलग निर्वाचक मंडल गांवों को विभाजित कर देगा, जिससे गांधी के उस दृष्टिकोण का खंडन होगा जिसमें उन्होंने एक ऐसे सुधरे हुए हिंदू धर्म की कल्पना की थी जहां सवर्ण हिंदू अछूतों के प्रति अपने दायित्वों को समझेंगे।

जब अल्पसंख्यक समिति के अध्यक्ष रैमसे मैकडोनाल्ड ने अलग निर्वाचक मंडल की मांग का समर्थन किया, तो गांधीजी ने समिति से हटने का फैसला किया। संविधान पर सहमति बने बिना ही सम्मेलन समाप्त हो गया; लेकिन अगली बैठक तक तीन समितियों को समस्या के विभिन्न पहलुओं पर काम जारी रखना था। गांधीजी ने सम्मेलन के पूर्ण सत्र में तर्क दिया कि भारत की समस्याओं का समाधान बहस नहीं, बल्कि सविनय अवज्ञा है, और उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि आतंकवाद का एकमात्र विकल्प सविनय अवज्ञा ही है।
गांधी जी की वापसी यात्रा पेरिस से होकर गुजरी, जहाँ गैरे डू नॉर्ड में भारी भीड़ ने उनका स्वागत किया, फिर वे स्विट्जरलैंड गए जहाँ वे रोमेन रोलैंड के अतिथि थे। जिज्ञासु यूरोपीय लोगों ने इस महान व्यक्ति को परेशान किया: एक इतालवी महिला ने गांधी जी को पत्र लिखकर अगली लॉटरी के दस विजेता अंक पूछे; स्विस-जर्मन नग्नतावादियों ने उन्हें अपने आंदोलन में शामिल करना चाहा; प्रेस ने रोलैंड के विला के आसपास डेरा डाल दिया और होटल उन लोगों से भरे हुए थे जो गांधी जी को दर्शन देने के लिए पश्चिमी दर्शन के उस स्वरूप में आए थे जिसमें लोग मशहूर हस्तियों की तलाश में रहते हैं। रोलैंड और गांधी ने ईश्वर के शाश्वत सिद्धांत पर चिंतन करते हुए कुछ
समय साथ बिताया, हालांकि रोलैंड ने पाया कि गांधी अपने विचारों में इतने दृढ़ थे कि बहुत कम चर्चा संभव हो पाई। एक महत्वपूर्ण टिप्पणी में, अंग्रेजी में बोलते हुए (जिसका रोलैंड की बहन ने फ्रेंच में अनुवाद किया), गांधी ने कहा कि उन्होंने इतिहास से बहुत कम सीखा है: 'मेरी पद्धति अनुभवजन्य है, मेरे सभी निष्कर्ष व्यक्तिगत अनुभव पर आधारित हैं।' 12 वे इटली गए जहाँ उनकी मुसोलिनी से मुलाकात हुई: उन्होंने मुसोलिनी को आश्वासन दिया कि स्वतंत्र भारत एक लोकतांत्रिक संविधान चाहता है - न कि, जैसा कि मुसोलिनी ने सुझाव दिया था, एक तानाशाही।
अगर ब्रिटिशों के लिए गोलमेज सम्मेलन संवैधानिक समाधान न मिलने के
कारण असफल रहा, तो गांधी जी के लिए यह एक बड़ी सफलता थी, क्योंकि उन्होंने इसे अपने लिए एक विश्वव्यापी मंच बना दिया था। गांधी जी की तपस्वी जीवनशैली और जोशीले, विद्रोही भाषणों की शैली, जिसमें थोड़ी शरारत भी झलकती थी, अब धोती पहने चरखा चलाने वाले गांधी जी की छवि से जुड़ गई थी। हर अखबार पढ़ने वाले के लिए, राजनीतिक कार्टूनों ने उन्हें तुरंत पहचाने जाने योग्य व्यक्ति बना दिया था।

कांग्रेस के लिए यह सम्मेलन एक बड़ी विफलता साबित हुआ। पार्टी अब
गांधी से इतनी गहराई से जुड़ चुकी थी कि स्वतंत्र रूप से काम करना संभव ही नहीं था; कांग्रेस नेताओं को उनसे अलग होकर स्वतंत्र रूप से काम करने में सोलह साल लग गए। कांग्रेस को सम्मेलन में भारत के सभी विभिन्न गुटों को एकजुट करना चाहिए था, समझौते करने चाहिए थे और एक संघ की स्थापना करनी चाहिए थी। ऐसा करने में विफलता ही वह पहली बड़ी गलती थी जिसने भारत को विभाजन के रास्ते पर धकेल दिया। गांधी एक महान नेता थे, लेकिन एक कमज़ोर राजनीतिज्ञ: उन्हें राजनीति नेहरू और राजगोपालाचारी जैसे लोगों के लिए छोड़ देनी चाहिए थी।
28 दिसंबर 1931 को जब गांधी जी एसएस पिल्सना जहाज से बंबई पहुंचे, तो उनका जोरदार स्वागत हुआ; जनता के लिए महात्मा गांधी कोई गलती नहीं कर सकते थे। हालांकि, न केवल कोई प्रगति नहीं हुई थी, बल्कि कई मायनों में स्थिति उनके देश छोड़ने के समय से भी बदतर थी: हिंसा बढ़ गई थी और राजनीति और भी खंडित हो गई थी। सरकार अब बंगाल और उत्तर-पश्चिम सीमा प्रांत में आतंकवादी घटनाओं और सविनय अवज्ञा से निपटने के लिए आपातकालीन शक्तियों का उपयोग कर रही थी। गांधी जी की अनुमति (इंग्लैंड से) से कांग्रेस ने संयुक्त प्रांत में किराया-विरोधी अभियान शुरू किया था, जिसका उद्देश्य किराए के साथ वसूले जाने वाले उच्च करों के खिलाफ था। नए वायसराय लॉर्ड विलिंगडन, जिन्हें गांधी जी बंबई के राज्यपाल रहते हुए जानते थे, ने नेताओं को जेल में डाल दिया। गांधी ने सुझाव दिया कि सविनय अवज्ञा को पुनः शुरू करना होगा, और उन्हें 3 जनवरी 1932 को गिरफ्तार कर लिया गया। विलिंगडन ने टिप्पणी की कि 'एक ऐसे व्यक्ति से निपटना जो संत और बनिया का मिश्रण है, वास्तव में बहुत कठिन है।' 13 अंग्रेजों के लिए संदेश यह था कि गांधी के साथ बातचीत से न तो संवैधानिक रूप से सकारात्मक परिणाम मिले और न ही भारत में नागरिक शांति स्थापित हुई।
गांधी जी को उनके पुराने 'घर' येरवदा जेल ले जाया गया। उस समय वल्लभभाई पटेल भी वहीं कैदी थे, और बाद में गांधी जी के सचिव महादेव देसाई भी उनके साथ शामिल हो गए। गांधी जी को गैर-राजनीतिक विषयों पर असीमित संख्या में पत्र लिखने और प्राप्त करने की अनुमति दी गई थी।
नए आपातकालीन अध्यादेश जारी किए गए, जिन्होंने अधिकारियों को अशांति को दबाने के लिए व्यापक अधिकार प्रदान किए। हजारों लोगों ने अध्यादेशों

का उल्लंघन किया और उन्हें जेल में डाल दिया गया या पुलिस ने लाठियों से पीटा। यदि यह नीति का शाब्दिक अर्थ था, तो संवैधानिक परिवर्तन का प्रलोभन भी था जो सत्ता के गलियारों में धीरे-धीरे अपना रास्ता बना रहा था। भारत में अशांति के जवाब में भारत के राज्य सचिव सर सैमुअल होरे ने कहा, 'कुत्ते भौंकते हैं लेकिन कारवां चलता रहता है।' उपमहाद्वीप का इतिहास केवल कांग्रेस के दृष्टिकोण से बताने पर ये नागरिक अशांतियाँ परिवर्तन की प्रेरक शक्ति प्रतीत होती हैं, जबकि वास्तव में परिवर्तन अपनी गति से आगे बढ़ रहा था। भारतीय राजनीतिक जगत में कई लोग ऐसे भी थे जो स्वतंत्रता की ओर प्रगति के लिए अंग्रेजों पर भरोसा करने को तैयार थे; जबकि 1930 के दशक की प्रमुख घटनाओं में कांग्रेस ने पहल खो दी, अंग्रेजों ने पूर्व में कहीं और मौजूद लोकतंत्र की तुलना में अधिक उन्नत लोकतंत्र स्थापित करने में सफलता प्राप्त की। गांधी ने आगे का रास्ता समझ लिया था और अब इस बात पर विचार कर रहे थे कि क्या कांग्रेस नए संविधान के तहत चुनाव लड़ेगी। उन्होंने पटेल से यह भी पूछा कि स्वशासन मंत्रिमंडल में वे कौन सा पोर्टफोलियो चाहेंगे: 'मैं भिखारी का कटोरा भी स्वीकार कर लूंगा,' पटेल ने कहा, इस प्रकार उन्होंने गांधी को वही बताया जो वे सुनना चाहते थे। उन्हें प्रधानमंत्री बनने की पूरी उम्मीद थी और वास्तव में वे इसके बेहद करीब पहुंच गए थे। 14
गांधी जी ने संविधान में हो रहे बदलावों को मौन रूप से स्वीकार कर लिया था, लेकिन अगस्त 1932 में जब सरकार ने अल्पसंख्यक प्रतिनिधित्व के लिए अस्थायी योजना की घोषणा की, तो उनकी स्वीकृति का रुख बदल गया। इस योजना में हिंदुओं और मुसलमानों के लिए अलग-अलग निर्वाचक मंडल का प्रावधान था, जैसा कि पहले से था, लेकिन साथ ही अछूतों या 'पिछड़े वर्गों' के लिए भी, जैसा कि अंग्रेजों ने उन्हें कहा था। गांधी जी ने 18 अगस्त 1932 को रैमसे मैकडोनाल्ड को पत्र लिखकर कहा: 'मुझे आपके इस फैसले का अपने जीवन से विरोध करना होगा। ऐसा करने का एकमात्र तरीका यही है कि मैं नमक वाले या बिना नमक वाले पानी और सोडा को छोड़कर किसी भी प्रकार के भोजन से परहेज करते हुए आजीवन उपवास करूं।' 15 हालांकि यह पत्र 17 अगस्त को लिखा गया था, गांधी जी ने अपनी शैली के अनुसार घोषणा की कि उपवास 20 सितंबर से शुरू होगा, ताकि सरकार पर दबाव बनाने के लिए प्रचार करने का अधिकतम समय मिल सके।

मैकडोनाल्ड ने एक लंबे और विचारपूर्ण पत्र में आश्चर्य व्यक्त किया कि 'आप स्वयं को भूखा रखकर मृत्यु को प्राप्त करने का चरम मार्ग अपनाने का प्रस्ताव कर रहे हैं... केवल दलित वर्गों को, जो आज वास्तव में भयानक कठिनाइयों से पीड़ित हैं, विधानसभाओं में अपनी ओर से बोलने के लिए अपनी पसंद के कुछ प्रतिनिधियों को सुरक्षित करने से रोकने के लिए।' 16 नेहरू ने लिखा, 'लोगों को झटका देने की उनमें कितनी क्षमता थी!' नेहरू 'एक राजनीतिक प्रश्न के प्रति गांधी के धार्मिक और भावुक दृष्टिकोण से नाराज थे' और इसलिए भी कि उन्होंने 'अपने अंतिम बलिदान के लिए एक गौण मुद्दे को चुना था'। 17 कांग्रेस नेता भले ही उपवास के प्रति तिरस्कारपूर्ण रहे हों, लेकिन वे गांधी को खोना नहीं चाहते थे; वे न केवल उनके सच्चे स्नेह का विषय थे, बल्कि वे एक ऐसे प्रतीक थे जिनके बिना कांग्रेस जनता का प्रतिनिधित्व करने का दावा नहीं कर सकती थी।
अंबेडकर के अनुसार, ‘महात्मा की सोच विचित्र है और निश्चित रूप से मेरी समझ से परे है’; अछूतों के हाथ में मौजूद न्यूनतम राजनीतिक शक्ति को बढ़ाने की इच्छा रखने के बजाय, ‘इसके विपरीत उन्होंने उन्हें दी जा रही थोड़ी सी शक्ति से भी वंचित करने के लिए अपना जीवन दांव पर लगा दिया’। 18 जिस दिन गांधी ने उपवास शुरू किया, उसी दिन उन्होंने मीराबेन को लिखा: ‘जब मैंने अपना व्रत बताते हुए वह पहला पत्र लिखा, तो मुझे तुम्हारा और बा का ख्याल आया… तुम दोनों इसे कैसे सहन करोगी?’ 19 उपवास की अधिकांश अवधि में वे जेल के प्रांगण में रहे, जहाँ सरोजिनी नायडू ने उनकी देखभाल की, जिन्हें जेल के महिला क्षेत्र से स्थानांतरित किया गया था। बाद में कस्तूरबा को भी उनके साथ रहने के लिए दूसरी जेल से लाया गया। ‘फिर वही पुरानी कहानी,’ उनकी पत्नी ने कहा, जो लंबे समय से इस स्थिति से जूझ रही थीं। 20
अब अंबेडकर पर दबाव डाला जा रहा था, क्योंकि वे जानते थे कि गांधी की मृत्यु के परिणामस्वरूप पूरे भारत में अछूतों का नरसंहार होगा। कांग्रेस के नेताओं और धनी समर्थकों ने अनशन शुरू होने के दिन बंबई के बिड़ला हाउस में अंबेडकर से मुलाकात की। उन्होंने मिलकर नामांकन और अछूतों के लिए आरक्षित सीटों की एक जटिल योजना तैयार की और उसे गांधी के समक्ष प्रस्तुत किया। प्रतिनिधिमंडलों को उनसे जेल में मिलने की अनुमति दी गई - अधिकारी

जानते थे कि वे उन्हें अनशन जारी रखने के लिए प्रेरित नहीं करेंगे। उनका रक्तचाप खतरनाक रूप से बढ़ गया था, जिससे उनकी जान को गंभीर खतरा था। अंबेडकर ने 22 सितंबर को गांधीजी से मुलाकात की, जब वे दो दिनों के उपवास से पहले ही कमजोर हो चुके थे; फिर वे दूसरे और तीसरे दिन वापस आए और अछूतों के लिए आरक्षित सीटों की संख्या और अछूत उम्मीदवारों के लिए प्रस्तावित प्राथमिक चुनावों जैसे मुद्दों पर बातचीत की। अंबेडकर के अनुसार, अंतिम समाधान - अलग निर्वाचक मंडलों के लिए नहीं बल्कि अधिक संख्या में आरक्षित सीटों के लिए - गोलमेज सम्मेलन में उपलब्ध था, लेकिन गांधीजी ने इसे अस्वीकार कर दिया। अंबेडकर ने टिप्पणी की: 'मैंने मानवता की पुकार का जवाब दिया और गांधीजी को संतुष्ट करने वाले तरीके से सांप्रदायिक पुरस्कार [धार्मिक समुदायों के बीच सीटों का वितरण] में बदलाव करने पर सहमत होकर गांधीजी का जीवन बचाया।' 2 1
येरवदा संधि के नाम से जाना जाने वाला यह समझौता मुख्य वार्ताकारों द्वारा तैयार और हस्ताक्षरित किया गया, फिर इसे लंदन भेजा गया जहाँ एंड्रयूज और पोलक ने इसे सरकार को सौंप दिया। यह रविवार का दिन था और राजनेताओं को इकट्ठा करना आसान नहीं था, लेकिन देरी के खतरे को भांपते हुए रैमसे मैकडोनाल्ड और सर सैमुअल होरे ने 10 डाउनिंग स्ट्रीट में आधी रात तक बैठक की और भारत और लंदन की सरकारों ने 26 सितंबर को समझौते को मंजूरी देने की घोषणा की। गांधीजी ने उसी दिन एक गिलास संतरे का रस पीकर अपना व्रत तोड़ा।
अंबेडकर ने इस उपवास को एक राजनीतिक हथकंडा समझा, लेकिन यह निर्विवाद
था कि गांधी जी ने सवर्ण हिंदुओं को अस्पृश्यता के मुद्दे पर उस तरह से विचार करने के लिए प्रेरित किया जैसा उन्होंने पहले कभी नहीं किया था। उन्होंने अछूतों के लिए मंदिरों के द्वार खोल दिए, उन्हें कुओं का उपयोग करने की अनुमति दी और यहां तक कि उनके साथ मेलजोल भी रखा। यह सुधार अल्पकालिक रहा, मंदिर जल्द ही फिर से बंद कर दिए गए, लेकिन सिद्धांत स्थापित हो चुका था। कहा जाता है कि इस उपवास ने अस्पृश्यता के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ लाया: पहले अछूतों के साथ मेलजोल रखना सामाजिक रूप से अनुचित माना जाता था; इसके बाद, अस्पृश्यता का पालन करना एक प्रतिक्रियावादी कट्टरपंथी की निशानी बन गया। गांधी के समर्थकों ने इस घटना को 'महाकाव्य उपवास' के रूप में प्रस्तुत किया, जिसे प्यारेलाल की एक

पुस्तक का शीर्षक भी बनाया गया। इसमें राजगोपालाचारी ने गांधी के उपवास की तुलना सुकरात की आत्महत्या और यीशु की क्रूस पर मृत्यु से की। यह अतिशयोक्तिपूर्ण था; हालांकि यह कष्टदायक था, फिर भी यह गांधी द्वारा किए गए सबसे चरम उपवासों में से एक नहीं था।
गांधी ने अछूतों के मुद्दे पर अपनी कार्रवाई से राष्ट्रीय नेता के रूप में कुछ हद तक अपनी पहल पुनः प्राप्त कर ली थी। उन्होंने 1933 में आठ पृष्ठों का अंग्रेजी साप्ताहिक 'हरिजन' शुरू करके अपनी स्थिति को और मजबूत किया, जिसने उनके सरकारी अखबार 'यंग इंडिया' का स्थान लिया, जिसे सरकार ने बंद कर दिया था। लगभग उसी समय, अखबार व्यवसाय में निपुण हो चुके गांधी ने 'हिंदू हरिजन सेवक' और गुजराती 'हरिजनबंधु' शुरू किए। 'हरिजन', जिसका अर्थ है 'ईश्वर की संतान', गांधी द्वारा अछूतों के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द था, जिसका प्रयोग उन्होंने सितंबर 1932 में शुरू किया था। अंबेडकर इसे संरक्षणवादी मानते थे और कहते थे कि यह बहिष्कृतों के लिए एक नरम शब्द है, जिसका प्रयोग यह दर्शाता है कि गांधी वास्तव में यह नहीं मानते थे कि अछूत जाति व्यवस्था में समाहित हो जाएंगे। अंबेडकर ने गांधी के प्रति अछूतों की राय का प्रतिनिधित्व करते हुए कहा: ‘जब गांधी जाति व्यवस्था को बनाए रखना चाहते हैं और अस्पृश्यता को समाप्त करना चाहते हैं, तो वे उन्हें अपना मित्र कैसे मान सकते हैं? यह स्पष्ट है कि अस्पृश्यता जाति का ही विस्तारित रूप है और इसलिए जाति व्यवस्था के उन्मूलन के बिना अस्पृश्यता के उन्मूलन की कोई आशा नहीं है?’ 22
गांधीजी अस्पृश्यता को समाप्त करने में रुचि रखते थे, लेकिन हिंदू
धर्म को अक्षुण्ण बनाए रखने की इच्छा से विवश थे। उन्होंने कहा: ‘यदि संभव हो तो हमें रूढ़िवादिता को अपने दृष्टिकोण में लाने का प्रयास करना चाहिए। किसी भी हालत में हम ऐसा कुछ नहीं करेंगे जिससे किसी की भावनाओं को ठेस पहुंचे।’ 23 उन्होंने एक योजना प्रस्तावित की जिसके तहत मंदिर दिन में कुछ समय अछूतों और उनके प्रवेश का समर्थन करने वालों के लिए खुले रहेंगे, लेकिन अन्य समय में अछूतों के लिए बंद रहेंगे और उन लोगों के लिए खुले रहेंगे जिनके लिए अस्पृश्यता ‘एक गहरी धार्मिक आस्था’ थी। 24 कुछ वर्षों बाद, 1935 में, उन्होंने जाति प्रथा के उन्मूलन की दिशा में कदम बढ़ाया, लेकिन फिर से इसे नीति के बजाय अंतरात्मा का विषय बनाया – भले ही

सामूहिक अंतरात्मा का – यह कहते हुए कि ‘जनमत इसे जितनी जल्दी समाप्त कर दे, उतना ही बेहतर है’। 25
अपनी ‘महाकालीन भूख हड़ताल’ के तुरंत बाद गांधीजी को लगा कि छुआछीटी पर उनके काम को पर्याप्त समर्थन नहीं मिल रहा है। उन्होंने खुद को इसके लिए जिम्मेदार माना और आश्रम के उन सदस्यों को भी दोषी ठहराया जो पर्याप्त रूप से पवित्र नहीं थे; आश्रम के एक सदस्य का गुप्त संबंध था और जब पत्र मिले, तो वे गांधीजी को सौंप दिए गए – आश्रमवासी एक-दूसरे की निंदा करने में आनंद लेते थे। इसलिए गांधीजी ने छुआछीटी के खिलाफ और इसके विरोधियों की आध्यात्मिक शक्ति के लिए 8 मई 1933 से इक्कीस दिनों तक फिर से भूख हड़ताल करने की घोषणा की। यह देखते हुए कि छह दिन की भूख हड़ताल में लगभग उनकी जान ले चुकी थी, यह एक खतरनाक कदम था। सरकार ने फैसला किया कि अब बहुत हो चुका है और उनकी मृत्यु के लिए किसी भी तरह से जिम्मेदार न ठहराए जाने की इच्छा से उन्होंने भूख हड़ताल शुरू करने वाले दिन ही उन्हें रिहा कर दिया। वे बच गए और 29 मई को पुणे के एक आलीशान घर में अपनी भूख हड़ताल पूरी की। वे सविनय अवज्ञा के भविष्य को लेकर अनिश्चित थे: उन्होंने कांग्रेस से इसे जारी रखने के लिए तर्क दिया, फिर घोषणा की कि यह समाप्त हो गया है, फिर कहा कि सविनय अवज्ञा के व्यक्तिगत कार्य जारी रहेंगे। उनका जहाज बिना पतवार के था।
गांधी ने संघर्ष का कोई हल निकालने के लिए वायसराय से मिलने का
प्रस्ताव रखा, लेकिन वे सौदेबाजी की स्थिति में नहीं थे। वायसराय ने उनसे मिलने से इनकार कर दिया। विलिंगडन के लिए गांधी का आकर्षण उनके पूर्ववर्ती की तुलना में कम हो गया था: 'गांधी एक प्रकार के जेकिल और हाइड हैं,' उन्होंने कहा, 'और हालांकि उनमें एक संत जैसा पक्ष हो सकता है, दूसरी ओर वे सबसे अधिक धूर्त, सौदेबाजी न करने वाले राजनीतिक पाखंडी हैं जिनसे मैं कभी मिला हूं।' 26 गांधी का जादू अब न तो अंग्रेजों पर और न ही कांग्रेस पर चल रहा था, जो अब बिखर रही थी, सुभाष चंद्र बोस जैसे कट्टरपंथी एक गुट का नेतृत्व कर रहे थे, वामपंथी दूसरे का और रूढ़िवादी हिंदू तीसरे का।
गांधी ने दांडी मार्च के दौरान घोषणा की थी कि विजय प्राप्त होने और
नमक कर समाप्त होने तक वे साबरमती आश्रम नहीं लौटेंगे। वे वहाँ स्थायी निवास बनाने के लिए नहीं लौटे। आश्रम भूमि कर का भुगतान नहीं कर रहा था,

इसलिए सरकारी कर वसूलकर्ताओं ने उसकी संपत्ति जब्त कर बेच दी थी। उनके बिना समुदाय में अशांति थी, और वे निस्संदेह उनके आपसी झगड़ों से तंग आ चुके थे। अंततः, 1933 में उन्होंने आश्रम बंद कर दिया; यह स्थान अछूतों की सहायता के लिए एक ट्रस्ट बन गया और इसका नाम बदलकर हरिजन आश्रम कर दिया गया।
उसी वर्ष उन्होंने खेड़ा के रस तक आश्रम से पदयात्रा करने का इरादा किया, ताकि वहाँ के उन किसानों के साथ एकजुटता प्रदर्शित कर सकें जिनकी ज़मीनें छिन गई थीं। लेकिन ऐसा करने से पहले ही उन्हें और उनके बत्तीस साथियों को गिरफ्तार कर लिया गया। उन्हें रिहा किया गया और फिर से गिरफ्तार कर लिया गया, क्योंकि उन्होंने आवाजाही पर प्रतिबंध लगाने वाले आदेशों का पालन करने से इनकार कर दिया था। उन्होंने आश्रम के सदस्यों को सविनय अवज्ञा आंदोलन करने के लिए भेजा, लेकिन अब उनकी संख्या इतनी कम थी कि कोई खास फर्क नहीं पड़ा। गांधी को फिर से गिरफ्तार किया गया, उन्होंने एक और उपवास किया और रिहा हो गए। उनके लिए कुछ भी कारगर नहीं हो रहा था - न छुआछीटी अभियान, न आश्रम और न ही सविनय अवज्ञा। जल्द ही वे आश्रमवासियों से कहने लगे कि वे फिर से जेल जाने के बजाय अपना गुजारा करने के लिए नौकरी ढूंढ लें। अंततः उन्होंने अप्रैल 1934 में सविनय अवज्ञा के सभी रूपों को समाप्त कर दिया।
सितंबर 1933 के अंत में वे मध्य प्रांतों में स्थित वर्धा चले गए, जो भारत के भौगोलिक केंद्र के निकट है। वहाँ वे एक प्रमुख वित्तपोषक और कपास व्यापारी जमनालाल बजाज के अतिथि थे। उन्होंने गांधीजी को पास के सेगाँव गाँव के बगल में एक नया आश्रम स्थापित करने के लिए ज़मीन दी। गांधीजी के वहाँ जाने का एक और कारण यह था कि उनके एक अनुयायी, विद्वान और तपस्वी विनोबा भावे, वर्धा के पास ही सेवा कर रहे थे। नए आश्रम का स्थान, जिसे उन्होंने सेवाग्राम (सेवा का गाँव) नाम दिया, उस क्षेत्र के लिए भी बेहद दुर्गम था: जलवायु कठोर थी और ज़मीन समतल थी, जो लंबी गर्मियों में सूख जाती थी और धूल भरी आंधी से ग्रस्त रहती थी। आश्रमवासियों के आने से पहले, उस स्थान पर केवल बिच्छू और विषैले साँप ही पाए जाते थे - और ये अभी भी वहीं थे, जिन्हें चिमटे की मदद से अहिंसक रूप से रहने वाले क्षेत्रों से दूर किया जाता था। मानसून के साथ राहत मिलती थी, लेकिन तब जलमग्न ज़मीन मच्छरों के प्रजनन का केंद्र बन जाती थी। एक कच्ची सड़क आश्रम को निकटतम

शहर वर्धा से जोड़ती थी। सेगांव गांव में मुख्य रूप से अछूत लोग रहते थे जो बीमारी और कुपोषण से ग्रस्त थे। वहां एक कुएं के अलावा कोई दुकान या सुविधा नहीं थी। एक अनुयायी ने गांव में गांधीजी का वर्णन करते हुए कहा: 'बापू के बारे में मेरी शुरुआती यादों में से एक यह है कि मैंने उन्हें पटरियों पर चलते हुए देखा था, वे गांव वालों द्वारा कुत्तों की तरह छोड़े गए मल को साफ कर रहे थे, यहां तक कि कुएं के पास भी। यह उनका उदाहरण पेश करने का तरीका था, गांव वालों को उन सभी पाठों में सबसे बुनियादी पाठ सिखाने का तरीका था जो वे सिखाना चाहते थे - कि मानव और पशु की गंदगी पूरे देश में बीमारियों का मुख्य कारण है।' 27
आश्रम मिट्टी और बांस की झोपड़ियों का एक समूह था, जो एक बजरी वाले आंगन के चारों ओर बना था। वहां रहने वाले लोग सामूहिक शौचालय बनाते थे और उससे निकलने वाले पानी का इस्तेमाल गन्ने और सब्जियों जैसी अपनी मुख्य फसलों को उगाने के लिए खाद के रूप में करते थे। एक पूर्व आश्रमवासी ने एक सामान्य दिनचर्या का वर्णन इस प्रकार किया: भोजन कक्ष में लगी घड़ी गांधी जी की हमेशा साथ रहने वाली घड़ी के अनुसार चलती थी (उन्हें अपने लिए आवंटित समय का पूरा उपयोग करना पसंद था)। सुबह 4 बजे जब घंटा बजता था, तो आभा, जो गांधी जी की देखभाल करती थी (और बाद में उनके पोते कानू से शादी की), एक दीपक और उनके शौच के सामान लेकर आती थी। इनमें एक लोहे का कटोरा, पानी का एक गिलास, कोयले और बादाम-अखरोट के छिलकों से बना एक पाउडर और नीम के पेड़ की एक टहनी शामिल थी। गांधी जी अपने बचे हुए दांतों (दिसंबर 1936 में निकाले जाने से पहले) या मसूड़ों को साफ करते और जीभ को धोते थे, जबकि आभा उनके बिस्तर के पास रखे पीतल के थूकदान को ले जाती थी। वह साफ धोती और चश्मा पहनकर आंगन के अंत में एक पेड़ के पास जाते, जहाँ वे तकिये पर पालथी मारकर बैठ जाते। कस्तूरबा समेत आश्रमवासी ठीक 4:20 बजे प्रार्थना के लिए एकत्रित होते थे। आश्रम की अपनी प्रार्थना पुस्तक, आश्रम भजनावली थी, जिसमें विभिन्न परंपराओं की प्रार्थनाएँ और भजन शामिल थे, जिन्हें आश्रम आने वाले लोगों ने भी जोड़ा था। एक सामान्य प्रार्थना सभा में बौद्ध मंत्र, हिंदू प्रार्थना, कुरान का पाठ, पारसी प्रार्थना और ईसाई भजन शामिल होते थे - गांधीजी का पसंदीदा भजन 'लीड, काइंडली लाइट' था। आश्रमवासी हिंदू परंपरा के विभिन्न नामों से ईश्वर का आह्वान करते थे - 'हरे कृष्ण', 'हरे राम' इत्यादि। गांधीजी को जैसे-जैसे जाप तेज और ऊँचा होता जाता, वैसे-वैसे

और अधिक आनंद आता जाता: 'बापू को इससे ज्यादा आनंद किसी चीज से नहीं मिलता था। जब ईश्वर के नाम हम पर गूंजते थे, तो वे परमानंद में होते थे।' 2 8 गांधी जी सुबह गर्म पानी में बेकिंग सोडा, शहद और नींबू का रस मिलाकर अपनी झोपड़ी में पीते थे और फिर डेढ़ घंटे काम में जुट जाते थे। वे खादी के कपड़े से ढके एक उल्टे साबुन के डिब्बे पर काम करते थे। इस अस्थायी मेज पर कुछ चुनिंदा और अक्सर हाथ से बनी चीजें, पुराने पेन, ढीली निब और स्याही रखी होती थी। महादेव देसाई और प्यारेलाल उनकी सेवा में रहते थे, जिनके साथ अब उनकी छोटी बहन सुशीला नायर भी थीं, जो पश्चिमी देशों से प्रशिक्षित डॉक्टर थीं और गांधी जी के रक्तचाप की निगरानी करती थीं और हिंदी में लिखवाती भी थीं। जब मीराबेन उनके साथ रहती थीं, तब वे अंग्रेजी भाषा की सामग्री पर काम करती थीं, लेकिन 1935 के बाद उन्होंने मीराबेन से दूरी बना ली। गांधी जी अपने क्षेत्र में काम करने वाले कार्यकर्ताओं के भी लगातार संपर्क में रहते थे, जो राष्ट्रीय सुधार के लिए उनके विचारों को बढ़ावा देते थे और उन्हें रिपोर्ट देते थे।
सुबह 6:30 बजे वे आश्रम के बच्चों के साथ सुबह की सैर पर निकलते थे। रास्ते में तीर्थयात्री और स्थानीय किसान उनका आदर करते थे, जिनमें से कुछ उनके गुजरने पर प्रणाम भी करते थे। 1932 में उन्होंने अपने साथ चलने वाली महिलाओं के कंधों पर हाथ रखकर सहारा लेने की प्रथा बंद कर दी थी। उन्होंने समझाया: ‘जहां तक मुझे याद है, मुझे कभी यह एहसास नहीं हुआ कि मैं कुछ गलत कर रहा हूं, जब तक कि कुछ साल पहले साबरमती में आश्रम के एक करीबी ने मुझे बताया कि जब मैं इस प्रथा को वयस्क लड़कियों और महिलाओं तक बढ़ाता हूं, तो यह शालीनता की स्वीकृत धारणा का उल्लंघन करती है।’ 29 फिर भी उन्हें इस बात का यकीन नहीं था कि इसमें कुछ गलत है – और गांधीजी के जीवन के अंतिम दस वर्षों में ली गई कई तस्वीरों में यह बात बेमानी नहीं लगती – 1936 में उन्होंने आश्रम की लड़कियों, आमतौर पर आभा और सुशीला के सहारे चलना फिर से शुरू कर दिया। वे उन्हें अपनी ‘छड़ी’ कहते थे। उनका उनसे पहला सवाल होता, ‘बहनो, क्या आज सुबह आपका पेट ठीक से साफ हुआ?’ 30 आंतों को लेकर उनकी चिंता कम नहीं हुई थी – उन्होंने इन आश्रमवासियों को एक-दूसरे को एनीमा देना सिखाया, जैसा कि उन्होंने अन्य आश्रमों में किया था।
सुशीला नायर 1920 से गांधीजी के दर्शन के लिए आती रही थीं, जब उनकी मां उन्हें छह साल की उम्र में उनसे मिलने ले गई थीं। जब वह उनकी गोद में बैठी

थीं, तब गांधीजी ने उनकी मां से कहा कि वह बच्ची को उन्हें भेंट कर दें। बाद में, किशोरावस्था में वह आश्रम गईं और चिकित्सा की डिग्री लेने के बाद उनकी निजी चिकित्सक बन गईं। आश्रम के अन्य सदस्यों की तरह, वह गांधीजी की शारीरिक इच्छाओं को ज्यादा महत्व नहीं देती थीं - शायद इसलिए कि आश्रम में बहुत कुछ सामान्य व्यवहार से परे था, इसलिए वे कम विचित्र लगती थीं। सुशीला अक्सर गांधीजी के साथ सोती थीं। उन्होंने कहा: 'बापू के बगल में सोने में कुछ खास नहीं था... मैं उनके साथ वैसे ही सोती थी जैसे अपनी मां के साथ। वह कहते, "मेरी पीठ में दर्द हो रहा है, थोड़ा दबाव डालो।" तो मैं थोड़ा दबाव डाल देती या उनकी पीठ पर लेट जाती और वह सो जाते। शुरुआती दिनों में, इसे ब्रह्मचर्य प्रयोग कहना संभव नहीं था। यह तो बस प्राकृतिक चिकित्सा का एक हिस्सा था।' 31 सुशीला के गांधीजी के साथ जीवन के इन 'शुरुआती दिनों' में, उनकी पत्नी कस्तूरबा भी थीं, जिनके साथ शायद उन्होंने ब्रह्मचर्य का पालन किया होगा। इन दोनों महिलाओं के बीच कोई टकराव नहीं था। कस्तूरबा और सुशीला का घनिष्ठ संबंध था। अगर सुशीला को गांधी जी के स्नेह के लिए किसी प्रतिद्वंदी का सामना करना पड़ा, तो वह निर्वासित मीराबेन थीं।
आभा के साथ उनका रिश्ता विशेष रूप से सौहार्दपूर्ण था; आभा ने उनके बीच की नोकझोंक का वर्णन करते हुए कहा: ‘एक बार मैं उन्हें नहला रही थी और उन्होंने मुझे जल्दी करने को कहा। उनकी एक अपॉइंटमेंट थी। उन्होंने मुझे तीन बार जल्दी करने को कहा और मैंने कहा, “आप एक प्रसिद्ध महात्मा हैं और फिर भी आप किसी आम इंसान की तरह इतने अधीर हैं। अगर आपको थोड़ी देर हो जाए तो क्या फर्क पड़ता है?”’ गांधीजी को उनका यह स्वभाव पसंद आया – वे हँसे और बोले: ‘केवल एक माँ ही अपने बच्चे से इस तरह बात करने की हिम्मत कर सकती है जैसे तुम मुझसे बात करती हो।’ 32
अपनी सैर के बाद वे अपने कमरे में लौट आते और अपने बाथरूम में कम से कम बीस मिनट तक कमोड पर बैठे रहते। 1970 के दशक की शुरुआत में लेखक वेद मेहता से बात करने वाली एक महिला आश्रमवासी के अनुसार, गांधी जी पेशाब और शौच करने में बिल्कुल सहज थे, मानो एक बच्चे की तरह। उनका मानना था कि ये शारीरिक क्रियाएं भोजन जितनी ही स्वाभाविक और पवित्र हैं, और वे कहते थे, "बाथरूम एक मंदिर है, यह इतना साफ और आकर्षक होना चाहिए कि कोई भी वहां भोजन करने का आनंद ले।" अगर हममें से कोई उनसे बात करना चाहता था, तो हम

अपनी मर्जी से अंदर-बाहर आ-जा सकते थे। 33 गांधी जी अक्सर भोजन और शौच की तुलना करते थे: "भोजन की प्रक्रिया उतनी ही अशुद्ध है जितनी मल त्याग, फर्क सिर्फ इतना है कि मल त्याग से राहत मिलती है, जबकि भोजन, अगर जीभ पर नियंत्रण न रखा जाए, तो असुविधा लाता है।" 34 इस क्रिया को करने के बाद, गांधी जी को एक ऊँची बांस की मेज पर लिटाया जाता और सुशीला और आभा सरसों के तेल और नींबू के रस से उनके शरीर की मालिश करतीं। वह स्नान करने के लिए बाथरूम में लौटता और टब में बैठकर प्यारेलाल उसकी दाढ़ी बनाते। फिर वह आश्रम के बीमारों से मिलने से पहले एक घंटे के लिए कागजी काम में जुट जाता, और अपनी चिकित्सा शैली के अनुसार उन्हें मालिश या एनीमा देता। आश्रमवासी सभी सुबह 11 बजे एक साथ भोजन करते थे; हॉल में 100 से अधिक
लोग होते थे, जिनमें से कई गांधीजी का ध्यान आकर्षित करने की होड़ में रहते थे। उन्होंने सीख लिया था कि बीमार होने पर ही वे आसानी से उनका ध्यान आकर्षित कर सकते हैं, इसलिए आश्रम अक्सर बीमारों के घर जैसा लगता था। भोजन करने के लिए, गांधीजी को उनके कृत्रिम दांत पानी के कटोरे में लाकर दिए जाते थे, जिन्हें वे निकालकर लगाते थे। वे भोजन को अच्छी तरह चबाते थे, एक बार के भोजन में लगभग एक घंटा लगाते थे और अंत में बकरी का दूध पीते थे। उबली हुई सब्जियों के साथ वे पिसी हुई नीम की पत्तियां और कुटा हुआ लहसुन खाते थे, जिन्हें वे स्वास्थ्य के लिए अच्छा मानते थे। दोपहर के भोजन के बाद वे अपनी कुटिया में आभा द्वारा तैयार की गई मिट्टी की पट्टी सिर और पेट पर लगाकर सो जाते थे। वे इसी अवस्था में लिखते या साक्षात्कार देते थे। महादेव देसाई ने लिखा: 'गर्मी के मौसम में सिर पर मिट्टी की पट्टी एक अतिरिक्त चीज होती है', और गांधीजी आगंतुकों को 'धरती माता के अद्भुत गुणों' का वर्णन करने में आनंदित होते थे। 35
गांधी जी ने कस्तूरबा को शिक्षित करने का प्रयास जारी रखा और अपनी नींद के बाद उन्हें गुजराती की प्राथमिक पुस्तक पढ़ने और अक्षर नकल करने के लिए कहते थे; हालांकि अब तक वह पढ़ना सीख चुकी थीं, फिर भी कहा जाता था कि अगले दिन वह सब कुछ भूल जाती थीं। उनकी ताकत व्यावहारिक कार्यों में थी, आश्रम को एक विशाल परिवार की तरह व्यवस्थित करने में। वह रसोई की पूरी ज़िम्मेदारी संभालती थीं और कठोर नियमों को यथासंभव चुनौती देती थीं। वह आश्रम के बच्चों के लिए मिठाई रखती थीं और चुपके से मेहमानों को चाय-कॉफी पिलाती थीं।

गांधी जी बीस मिनट तक कमोड पर आराम करते, फिर एक-दो घंटे सूत कातने में बिताते। सूत कातते समय कभी-कभी उनसे मिलने वाले लोग भी आते, जिनमें ग्राम सेवा के रचनात्मक कार्यक्रम के कार्यकर्ता, कांग्रेस सदस्य और सलाह लेने आए विभिन्न अधिकारी शामिल होते थे। सचिव लगातार उपस्थित रहते और नोट्स बनाते रहते, जिनकी गांधी जी समीक्षा करते और यदि उन्हें लगता कि वे पर्याप्त रुचिकर हैं, तो वे उन्हें अपने किसी साप्ताहिक समाचार पत्र में प्रकाशित करवा देते। उनका दिन एक और झपकी के साथ शुरू होता, फिर वे शाम पाँच बजे के भोजन तक पढ़ते और लिखते, फिर एक लंबी सैर करते और मिट्टी के तेल के दीपों से रोशन शाम की प्रार्थना सभा में शामिल होते। इस सभा में गांधी जी स्वच्छता, ब्रह्मचर्य या किसी अन्य पसंदीदा विषय पर प्रवचन देते। आश्रमवासियों की हाजिरी ली जाती, यह देखने के लिए कि प्रत्येक ने दिन भर में कितना सूत काता है, और वे बातचीत करने या सोने के लिए स्वतंत्र होते, जबकि गांधी जी सोने से पहले पढ़ने और एनीमा लेने के लिए अपनी कुटिया में लौट जाते। रात 9:30 बजे तक लालटेन बुझ जाती और आश्रम में सब सो जाते। जन्म नियंत्रण की अग्रणी मार्गरेट सैंगर ने 1935 में गांधीजी से मुलाकात की और उनके द्वारा प्रचारित कपास की खेती, कागज बनाने, तेल निकालने और चक्र-आधारित सिंचाई का निरीक्षण किया। उन्होंने लिखा: ‘मैं उत्साहित नहीं थी। यह एक बहुत ही दयनीय प्रयास प्रतीत हुआ, जैसे आगे बढ़ने के बजाय पीछे जाना।’ इस सिद्धांत को पूरे भारत में लागू करने का प्रयास ‘लाखों लोगों को छोटे-मोटे हस्त-कार्यों में श्रम करते रहने के लिए मजबूर करने’ के समान था, ताकि उन्हें काम दिया जा सके जिससे वे अपना जीवन यापन कर सकें। 36
जैसे-जैसे उनके पोते-पोतियां बड़े होते गए, गांधीजी ने उन्हें अपने तरीके से जनसेवा में शामिल किया। उनके बेटे रामदास की सबसे बड़ी बेटी सुमित्रा एक बुद्धिमान और दृढ़ निश्चयी बच्ची थी, जिसने गांधीजी के उसे शिक्षा से वंचित करने के प्रयास का विरोध किया, जैसा कि उन्होंने उसके पिता के साथ किया था। गांधीजी चाहते थे कि उनके सभी पोते-पोतियां सेवाग्राम आश्रम स्थित उनके प्राथमिक शिक्षा केंद्र में जाएं, लेकिन सुमित्रा ने इससे पूरी तरह इनकार कर दिया। बाद में उन्होंने याद करते हुए कहा, “इससे दादाजी और मेरे बीच बहुत मतभेद पैदा हो गए। वे बहुत क्रोधित थे।” हालांकि, जब वह दस साल की हुई और स्पष्ट रूप से उनकी इच्छा के आगे

नहीं झुकी, तो उन्होंने उसे एक हाई स्कूल में जाने दिया जो कुछ हद तक एक अंग्रेजी बोर्डिंग स्कूल जैसा था। वहां से स्नातक होने के बाद, गांधीजी ने फिर से उसे शिक्षा से दूर करने की कोशिश की: “आगे की औपचारिक शिक्षा की क्या आवश्यकता है? उन्होंने कहा। ‘आओ और मेरी सचिव बनो – मैं तुम्हें प्रशिक्षित करूंगा।’
सुमित्रा ने उत्तर दिया: ‘मैं आपकी उन तुच्छ सचिवों में से एक नहीं बनना चाहती जो आपके कपड़े और बर्तन धोती हैं, आपके भोजन का प्रबंध करती हैं, नियुक्तियाँ करती हैं, लोगों को अंदर-बाहर लाती-ले जाती हैं और आत्ममग्न रहती हैं।’ उन्होंने बाद में कहा कि उन्होंने गौर किया था कि ‘नेहरू जैसे वास्तव में श्रेष्ठ लोग कभी दादाजी के सचिव नहीं रहे। उन्होंने इंग्लैंड में शिक्षा प्राप्त की थी और इतने स्वतंत्र थे कि उन्हें उनके साथ रहने की आवश्यकता ही महसूस नहीं हुई।’ 37 अपनी कमियों के बावजूद, गांधीजी हमेशा ईमानदारी और साहस की प्रशंसा करते थे, और उन्होंने सुमित्रा को भारत में विश्वविद्यालय जाने की अनुमति दी। बाद में सुमित्रा ने अमेरिका में अध्ययन किया और संसद सदस्य बनने के लिए घर लौट आईं।
जनता पर गांधी के प्रभाव के प्रति नेहरू के सम्मान के बावजूद, वे यौन संबंध के प्रति उनके दृष्टिकोण की कड़ी आलोचना करते थे, जिसे उन्होंने 1936 में 'अस्वाभाविक और चौंकाने वाला' बताया था। उन्होंने कहा था, 'मुझे लगता है कि गांधीजी इस मामले में पूरी तरह गलत हैं। उनकी सलाह कुछ मामलों में उपयुक्त हो सकती है, लेकिन एक सामान्य नीति के रूप में यह केवल निराशा, अवरोध, मनोविकार और सभी प्रकार की शारीरिक और तंत्रिका संबंधी बीमारियों को जन्म दे सकती है।' 38 नेहरू का मानना था कि उनका एक निजी जीवन था जिसमें यौन संबंध की भूमिका थी, लेकिन यह उन पर हावी नहीं था और न ही उन्हें अन्य गतिविधियों से विचलित करता था।
दिसंबर 1935 की शुरुआत में मार्गरेट सैंगर ने गांधीजी को जन्म
नियंत्रण का समर्थन करने के लिए राजी करने का कठिन और चुनौतीपूर्ण प्रयास किया। उन्होंने सुनियोजित मातृत्व को बढ़ावा देने के साधन के रूप में आसानी से उपलब्ध गर्भनिरोधकों का सुझाव दिया। गांधीजी का तर्क था कि संतानोत्पत्ति के उद्देश्य को छोड़कर यौन संबंध पाप है। उन्होंने अपने जीवन का उदाहरण देते हुए कहा: ‘मैं अपने अनुभव से जानता हूँ कि जब तक मैं अपनी पत्नी को कामुक दृष्टि से देखता रहा, हमारे बीच कोई वास्तविक समझ

नहीं थी… जिस क्षण मैंने कामुक सुखों से भरे जीवन को त्याग दिया, हमारा पूरा रिश्ता आध्यात्मिक हो गया। वासना का अंत हो गया और प्रेम का राज हो गया।’ यदि इन मामलों पर कस्तूरबा की राय कभी जानी गई, तो इसका कोई रिकॉर्ड नहीं है, हालाँकि उन्होंने यह जरूर बताया था कि ‘वह अक्सर संयम दिखाती थीं, लेकिन उन्होंने शायद ही कभी मेरा विरोध किया हो, हालाँकि वह अक्सर अनिच्छा दिखाती थीं।’ 39
सैंगर ने गांधी जी के साठ के दशक का एक ज्ञानवर्धक चित्र प्रस्तुत किया है, जिसमें वे नए विचारों को अपनाने के बजाय अपने सुनियोजित मतों को ही दोहराते हुए प्रतीत होते हैं। उन्होंने कहा, 'मुझे लगा कि उनकी भावनाओं को समझने की क्षमता कुंद हो गई थी। जब आप उनके किसी प्रश्न का उत्तर दे रहे होते थे, तब भी वे अपने किसी विचार या चिंतन पर अड़े रहते थे, और जैसे ही आप रुकते थे, वे ऐसे बोलना शुरू कर देते थे मानो उन्होंने आपको सुना ही न हो... वास्तव में, खुले विचारों वाले होने के अपने दावे के बावजूद, उन्हें अपने विचारों को न बदलने पर गर्व था।' 40 देसाई टिप्पणी करते हैं कि गांधी जी जन्म नियंत्रण की लयबद्ध विधि को अपनाने के लिए प्रेरित हुए, क्योंकि उन्हें लगा कि इससे कम से कम 'असुरक्षित' माहवारी के दौरान कुछ हद तक आत्मसंयम बरता जा सकता है। सैंगर से मिलने के कुछ दिनों बाद एक बीमारी के दौरान वे कामुक विचारों से ग्रस्त हो गए: उन्होंने हरिजन पत्रिका में लिखा, 'मुझे खुद से घृणा हो रही थी। जैसे ही यह भावना आई, मैंने अपने परिचारकों और चिकित्सकों को अपनी स्थिति से अवगत कराया। वे मेरी कोई मदद नहीं कर सके... इस दुखद अनुभव को स्वीकार करने से मुझे बहुत राहत मिली।' 41 प्रिमाबेन कांतक, जो उनकी प्रमुख महिला समर्थकों में से एक थीं, ने महसूस किया कि यह लेख थोड़ा अस्पष्ट था और उन्होंने एक पत्र में अधिक जानकारी मांगी। उन्होंने उत्तर दिया, 'मुझे स्राव हुआ था,' लेकिन आश्वस्त करते हुए कहा: 'लेकिन मैं जागा हुआ था और मेरा मन नियंत्रण में था।' 42 संभवतः उन्होंने आगे पूछताछ की क्योंकि बाद में उन्होंने स्पष्टवादिता के साथ समझाया:
मुझे हमेशा अनैच्छिक स्राव होते रहे हैं। दक्षिण अफ्रीका में
ये कई वर्षों के अंतराल पर होते थे। यहाँ भारत में ये महीनों के
अंतराल पर होते हैं… यदि मेरा ब्रह्मचर्य स्रावों से पूरी तरह
मुक्त होता, तो मैं दुनिया के सामने उससे कहीं अधिक कर पाता

जितना मैंने किया है। लेकिन यह व्यावहारिक रूप से असंभव लगता है
कि कोई व्यक्ति जिसने पंद्रह से तीस वर्ष की आयु तक, शायद केवल
अपनी पत्नी के साथ, यौन सुख का आनंद लिया हो, ब्रह्मचर्य की
प्रतिज्ञा लेने पर अपने वीर्य स्राव को पूरी तरह नियंत्रित कर
सके। 43
1930 के दशक के मध्य में वे हरिलाल को पत्र लिख रहे थे, जो सुलह का प्रयास कर रहे थे। उन्होंने पूछा, ‘क्या तुमने वहाँ से मुझे अपना पहला पत्र लिखने के बाद कभी शराब को हाथ लगाया है? क्या तुमने मन, वाणी या शरीर से यौन सुख का अनुभव किया है? क्या तुम धूम्रपान करते हो?’ उन्होंने हमेशा की तरह धमकी भरे लहजे में पूछा – उस व्यक्ति को जो अब छियालीस वर्ष का हो चुका था – ‘यदि तुमने कभी भी मुझसे किया वचन तोड़ा या यह सिद्ध हो गया कि तुमने मुझे धोखा दिया है, तो मैं कम से कम सात दिन उपवास करूँगा।’ 44 बाद में उन्होंने लिखा कि हरिलाल उनसे मिलने आए थे और ऐसा प्रतीत होता था कि उन्होंने शराब से परहेज किया था और विवाह की इच्छा के अलावा उनमें कोई ‘कामुक वासना’ नहीं थी, लेकिन वे अभी भी धूम्रपान के आदी थे; गांधी ने उन्हें ‘मेरी अनुमति से दिन में तीन सिगरेट’ पीने की इजाजत दी। 45
हरिलाल फिर से उसी राह पर चल पड़े। उनका पूरा जीवन अपने पिता द्वारा
किए गए दुर्व्यवहार के विरुद्ध एक आक्रोशपूर्ण विद्रोह जैसा प्रतीत होता था: वे सार्वजनिक रूप से शराब पीते, वेश्याओं के साथ संगति करते और गांधी नाम का दुरुपयोग करते हुए संदिग्ध व्यापारिक सौदों में लिप्त रहते। 14 मई 1936 को उन्होंने बंबई में सार्वजनिक रूप से इस्लाम धर्म अपना लिया। गांधी ने एक प्रेस विज्ञप्ति में जवाब दिया: ‘हरिलाल का धर्मत्याग हिंदू धर्म के लिए कोई हानि नहीं है और यदि, जैसा कि मुझे आशंका है, वे पहले जैसे ही बिगड़े हुए बने रहते हैं, तो उनका इस्लाम में प्रवेश हिंदू धर्म के लिए कमजोरी का स्रोत है… अत्यधिक भोग-विलास ने उनके मस्तिष्क को सुस्त कर दिया है और सही-गलत, सत्य-असत्य की उनकी समझ को कमजोर कर दिया है।’ 46 वे इस घटना पर मुसलमानों के बीच सार्वजनिक रूप से मनाए जा रहे उत्सव से आहत थे, जिसके लिए उन्हें कोई धार्मिक प्रेरणा नजर नहीं आती थी।
1933 में गांधी जी ने पूरे देश का दौरा किया, जिसमें उन्होंने 13,000 मील की दूरी तीसरी श्रेणी की ट्रेन, कार और पैदल चलकर तय की। उन्होंने छुआछीटी के खिलाफ प्रचार किया और एक दिन में पाँच सभाएँ कीं। उन्होंने अछूतों के

लिए कुएँ खुदवाने और स्कूलों के लिए धन जुटाया। स्वच्छ जल और शिक्षा अपने आप में अच्छी बातें थीं, लेकिन सामुदायिक सुविधाओं का उपयोग करने से वंचित लोगों के लिए अलग प्रावधान ने अछूतों की अलगाव की भावना को और पुष्ट किया।
उनकी यात्राओं के दौरान अनौपचारिक रात्रिभोज और संगीत कार्यक्रम आयोजित किए जाते थे ताकि समुदायों को एक साथ लाया जा सके, और कभी-कभी अछूतों के लिए मंदिरों का औपचारिक उद्घाटन भी होता था। कई जगहों पर यह बदलाव अल्पकालिक रहा होगा, और उनके जाने पर मंदिर फिर से बंद हो गए होंगे, लेकिन संदेश तो दिया ही जा चुका था। इससे भी अधिक गंभीर बात यह है कि एक सच्चे सुधारक के दृष्टिकोण से, गांधी प्रसिद्धि के अभिशाप से ग्रस्त थे: लोग उन्हें देखने आते थे, इस प्रसिद्ध व्यक्ति के दर्शन के लिए - उन्हें इस बात में कोई विशेष रुचि नहीं थी कि वे क्या कहना चाहते हैं। उन्होंने विनती की: 'मेरे पास देने के लिए कोई नया धर्म नहीं है, न ही कोई नया सत्य है जिसका प्रतिपादन करना है। मेरी विनम्र भूमिका शाब्दिक और आध्यात्मिक दोनों रूप से एक सफाईकर्मी की है। मैं सड़कों, शौचालयों और शौचालयों की सफाई की बाहरी कला जानता हूँ, और मैं अपनी क्षमता के अनुसार अपने भीतर को भी शुद्ध करने का प्रयास कर रहा हूँ, ताकि मैं सत्य का एक निष्ठावान व्याख्याकार बन सकूँ जैसा कि मैं इसे देखता हूँ।' 47 गांधी भीड़ की अज्ञानता के बारे में स्पष्ट हो सकते थे; एक प्रश्नकर्ता ने उनसे पूछा कि हिंदू उत्पीड़न से बचने के लिए अछूतों को इस्लाम या ईसाई धर्म में परिवर्तित क्यों नहीं होना चाहिए, तो उन्होंने उत्तर दिया: ‘कुछ अछूत समझ के मामले में गायों से भी बदतर हैं। मेरा मतलब है कि वे इस्लाम, हिंदू धर्म और ईसाई धर्म के सापेक्ष गुणों में उतना ही अंतर कर सकते हैं जितना कि एक गाय।’ 48 फिर भी, वे अछूतों को हिंदू धर्म में बनाए रखने के लिए उत्सुक थे, विशेष रूप से 1935 के बाद जब हिंदू धर्म द्वारा बुनियादी मानवाधिकार प्रदान करने में असमर्थता से निराश होकर, अछूतों के प्रतिनिधि अंबेडकर ने एक नए धर्म में परिवर्तित होने की अपनी मंशा की घोषणा की।
गांधी जी के अस्पृश्यता विरोधी रुख ने हिंसक कट्टरपंथी हिंदुओं को उकसाया कि वे उन स्थानों पर वैकल्पिक सभाएँ आयोजित करें जहाँ गांधी जी के आने की संभावना हो, उनकी तस्वीरें जलाएँ और उनके आने पर काले झंडे लहराएँ।

एक बार पुणे में, जिस कार में गांधी जी के यात्रा करने का अनुमान था, उस पर बम फेंका गया और सात लोग घायल हो गए।
15 जनवरी 1934 को बिहार प्रांत के एक बड़े हिस्से में भीषण भूकंप आया। हजारों लोग मारे गए और लाखों बेघर हो गए। गांधी जी ने प्रभावित क्षेत्र का दौरा करने के लिए अपना रास्ता बदल लिया, गांवों के बीच पैदल चलकर लोगों को सांत्वना दी, लेकिन साथ ही, आश्चर्यजनक रूप से, फटकार भी लगाई। उन्होंने कहा कि यह भूकंप पाप का दंड था, विशेषकर अस्पृश्यता के पाप का।
पहली बार जब उन्होंने तिन्नेवल्ली में एक सार्वजनिक सभा में इस विचार को संबोधित किया, तो उन्होंने कहा: 'मुझ जैसा व्यक्ति यह मानने के लिए बाध्य है कि यह भूकंप हमारे पापों के लिए ईश्वर द्वारा भेजा गया एक दिव्य दंड है।' 49 फिर बाद में: 'मेरे साथ विश्वास कीजिए कि बिहार में इस बिल्कुल अकल्पनीय विपत्ति के लिए आपके और मेरे पाप जिम्मेदार हैं... मैं आपको बताता हूँ कि मेरा विश्वास बढ़ता जा रहा है कि यह विपत्ति हमें अस्पृश्यता के इस जघन्य पाप के कारण आई है।' 50 इस प्रश्न का उत्तर देते हुए कि सदियों पुराने पाप के लिए अब दंड क्यों? उदाहरण के लिए, बिहार को क्यों दंडित किया जाए और देश के दक्षिण भाग को क्यों नहीं? उन्होंने कहा: 'मैं ईश्वर नहीं हूँ। इसलिए मुझे उनके उद्देश्य का सीमित ज्ञान है।’ 51 यहाँ जो तंत्र काम कर रहा है, उसका उनका व्यावहारिक स्पष्टीकरण, यदि इसे ऐसा कहा जा सकता है, तो नैतिक सिद्धांतों को ब्रह्मांडीय घटनाओं से जोड़ना था: ‘भौतिक वस्तुएँ उसी ऊर्जा स्रोत से उत्पन्न होती हैं जिससे आध्यात्मिक वस्तुएँ उत्पन्न होती हैं, इसलिए भौतिक और आध्यात्मिक वस्तुओं के बीच कोई अभेद्य खाई नहीं है।’ 52 गांधी की उनके अधिक परिष्कृत समर्थकों द्वारा व्यापक रूप से आलोचना की गई, विशेष रूप से रवींद्रनाथ टैगोर द्वारा, जिन्होंने बताया कि उन्होंने रूढ़िवादियों के लिए यह दावा करने का मार्ग प्रशस्त कर दिया था कि भूकंप गांधी के अस्पृश्यता के विरुद्ध कार्य पर दैवीय क्रोध का परिणाम था।
अक्टूबर 1934 में, कांग्रेस के आपस में लड़ रहे गुटों को एकजुट करने
में असमर्थ रहने के कारण उन्होंने कांग्रेस से इस्तीफा दे दिया। भविष्य, कम से कम निकट भविष्य, संविधान निर्माताओं द्वारा निर्मित किया जाना था, नेतृत्व का वह क्षेत्र जिसके लिए गांधी के पास समय नहीं था। उन्होंने सही अनुमान लगाया कि इस स्तर पर राजनीतिक प्रक्रिया में उनका योगदान बहुत कम

है। उन्होंने खेद व्यक्त करते हुए कहा, 'कांग्रेस के बुद्धिजीवियों द्वारा की जाने वाली निरर्थक राजनीति लगभग गायब हो गई है, आम जनता को इसमें कोई विश्वास नहीं है।' कांग्रेस कार्यकर्ताओं के पाखंड और टालमटोल के लिए उन्हें दोषी ठहराया जा रहा था, जो उनके सिद्धांतों का दिखावा करते हुए भी अपने राजनीतिक स्वार्थों का पालन कर रहे थे। 53 उन्होंने समझाया: 'मैं कांग्रेस को उस बोझ को उठाने के लिए छोड़ रहा हूँ जिसने इसे दबा रखा है, ताकि यह विकसित हो सके और मैं स्वयं भी विकसित हो सकूँ।' प्रश्नों के उत्तर में वे और भी स्पष्ट थे: 'आज मुझे लगता है कि मैंने आपको अपने विचार से सहमत कराने की शक्ति खो दी है। मैं असहाय हो गया हूँ। मुझ जैसे व्यक्ति को सत्ता की बागडोर सौंपने का कोई लाभ नहीं है, जिसने अपनी शक्ति खो दी है।' 54
राष्ट्रवादियों के लिए अब पुरस्कार विधानसभाओं में वास्तविक सत्ता थी
– कांग्रेस ने पहले तो इस राह पर धीरे-धीरे कदम रखा, फिर उत्साहपूर्वक इसे अपनाया। अंग्रेजों द्वारा धैर्यपूर्वक संविधान निर्माण की गई प्रक्रिया की यह एक बड़ी सफलता थी, क्योंकि 1935 में पुराने चुनावी नियमों के तहत हुए चुनावों में भारतीय समाज के सभी वर्गों ने भाग लिया (1935 का भारत सरकार अधिनियम अभी लागू नहीं हुआ था)। परिणाम स्वरूप भारत का विभाजन हुआ: सरकार और उनके समर्थकों को दो-पांचवां हिस्सा सीटें मिलीं, कांग्रेस और कट्टरपंथी हिंदू 'कांग्रेस राष्ट्रवादियों' को दो-पांचवां हिस्सा, और निर्दलीय उम्मीदवारों (मुख्य रूप से मुसलमानों) को एक-पांचवां हिस्सा। जिन्ना मुस्लिम निर्दलीय उम्मीदवारों के नेता के रूप में उभरे; अपने इस समूह के वोटों का कुशलतापूर्वक उपयोग करने की उनकी क्षमता ने उन्हें भारतीय लोकतंत्रवादियों के इस समूह का राजनीतिक गुरु साबित कर दिया। भारत के राज्य सचिव सर सैमुअल होरे ने एक व्यावहारिक संविधान बनाने के लिए अथक परिश्रम किया। गोलमेज सम्मेलनों के परिणामों पर विचार करने के लिए एक चयन समिति का गठन किया गया। लगभग दो वर्षों (1933-34) के बाद, विंस्टन चर्चिल के नेतृत्व वाले कंजर्वेटिव दक्षिणपंथी धड़े की कड़ी आलोचना के बावजूद, भारत सरकार का नया अधिनियम तैयार हुआ। रियासतों सहित संघीकरण के इसके प्रावधान कभी लागू नहीं किए गए – द्वितीय विश्व युद्ध शुरू होने के समय भी इस पर चर्चा जारी थी – लेकिन ग्यारह सीधे निर्वाचित

राज्यपालों और विधानमंडलों के अधीन प्रांतीय स्वायत्तता अत्यंत सफल रही।
1937 के चुनाव में कांग्रेस नेताओं ने जनता से संपर्क साधने की अपनी क्षमता का प्रदर्शन किया – नेहरू ने हाथी से लेकर हवाई जहाज तक हर तरह के परिवहन का इस्तेमाल करते हुए 50,000 मील की यात्रा तय की; कुल मिलाकर दस मिलियन लोगों ने उन्हें देखा। गांधी ने कोई राजनीतिक भाषण नहीं दिया, बल्कि गाँव-गाँव पैदल चलकर गरीबों के उत्थान के लिए अपनी नई अखिल भारतीय ग्राम उद्योग संघ का प्रचार किया। यह जॉन रस्किन और लियो टॉल्स्टॉय से लिए गए और अपने द्वारा परिष्कृत किए गए विचारों का राष्ट्रव्यापी अनुप्रयोग था।
कांग्रेस ने ग्यारह प्रमुख प्रांतों में से पाँच में पूर्ण बहुमत
हासिल किया और तीन अन्य प्रांतों में सबसे बड़ी एकल पार्टी बनी। पूर्ण सत्ता से इतर किसी भी सत्ता को ग्रहण करने को लेकर सामान्य दुविधा के बाद, कांग्रेस ने मार्च 1937 में सत्ता संभाली और छह प्रांतों में सरकारें बनाईं। मुस्लिम लीग का प्रदर्शन निराशाजनक रहा, उसे कुल मुस्लिम वोटों का 5 प्रतिशत से भी कम मिला। कांग्रेस सदस्यों ने अपनी राजनीतिक अनुभवहीनता का परिचय देते हुए ऐसा विजयप्रसंग दिखाया मानो सत्ता का वर्तमान संतुलन हमेशा बना रहेगा; उन्होंने मुस्लिम लीग के साथ गठबंधन करना आवश्यक नहीं समझा, जबकि लीग के सामाजिक और आर्थिक कार्यक्रम उनके अपने कार्यक्रमों के समान थे। उन्होंने लीग को एक साझा लक्ष्य के लिए प्रयासरत साथी भारतीयों के बजाय एक राजनीतिक विपक्ष के रूप में अधिक माना।
मुस्लिम लीग के उम्मीदवारों को कांग्रेस में शामिल हुए बिना मंत्रिमंडल में पद देने से इनकार कर दिया गया। मोहम्मद अली जिन्ना ने बंबई की स्थिति को लेकर गांधीजी से संपर्क किया, जहाँ लीग ने मुस्लिम मतदाताओं के बीच विशेष रूप से अच्छा प्रदर्शन किया था, लेकिन गांधीजी ने एक रहस्यमय कथन के साथ उत्तर दिया: 'एकता में मेरा विश्वास पहले की तरह ही उज्ज्वल है; बस मुझे इस घने अंधकार में कोई प्रकाश दिखाई नहीं देता, और इस संकट में मैं प्रकाश के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ।' 55 जिन्ना गांधीजी से मिलना चाहते थे, लेकिन उन्होंने कहा कि उन्हें कांग्रेस के एक मुस्लिम सदस्य अबुल कलाम आजाद का मार्गदर्शन प्राप्त है, और जिन्ना को उनसे बात करनी चाहिए। इस प्रकार आसानी से और खतरों को बिना समझे, गांधीजी

ने सर्वोच्च राजनीतिक स्तर पर हिंदू-मुस्लिम एकता के अवसर को त्याग दिया। अभिमानी जिन्ना ने इस अस्वीकृति को हल्के में नहीं लिया: वे जल्द ही कांग्रेस को एक हिंदू पार्टी के रूप में वर्णित करने लगे जो मुसलमानों को सरकार में अपनी बात रखने से रोकने की साजिश रच रही थी। इस सोच का अंतिम परिणाम अलगाववाद था, एक ऐसा विचार जो मुस्लिम हलकों में तेजी से स्वीकार्यता प्राप्त कर रहा था।
उस समय बहुत कम ध्यान आकर्षित करने वाले एक कदम में, चौधरी रहमत अली नामक एक विद्वान ने, 1933 में समाप्त हुए तीसरे गोलमेज सम्मेलन में हुई चर्चाओं से प्रेरित होकर, भारत से अलग किए जा सकने वाले एक मुस्लिम राष्ट्र के लिए एक नाम सुझाया था। उन्होंने पंजाब, अफ़गान प्रांत (उत्तर-पश्चिम सीमांत), कश्मीर, सिंध और बलूचिस्तान के अक्षरों को मिलाकर अर्ध-संक्षिप्त शब्द 'पाकिस्तान' बनाया, जो उर्दू शब्द 'पाकिस्तान' के निकट था, जिसका अर्थ है 'पवित्रों की भूमि'। अब मुसलमानों के पास एक लक्ष्य था।

10

भारत छोड़ो
विश्व के सर्वोत्कृष्ट नैतिक विचारकों में से एक होने के नाते, गांधी से यह अपेक्षा की जा सकती थी कि वे 1930 के दशक में राज्य द्वारा प्रेरित हिंसा के बारे में कुछ कहेंगे। उस दशक में एशिया के मानचित्र को नया रंग देने वाले साम्राज्यवादी, उन यूरोपीय लोगों की तुलना में अधिक निकट थे जिन्होंने पहले वहाँ अपनी छाप छोड़ी थी: जापानी, जिन्हें लगता था कि यूरोपीय लोगों का प्रभुत्व बहुत लंबे समय तक रहा है, सुदूर पूर्व में फ्रांसीसी, डच और ब्रिटिश कब्जों पर और चीन पर विजय प्राप्त करने पर उनकी निगाहें टिकी हुई थीं।
1931 में जापान द्वारा मंचूरिया पर कब्ज़ा करने के बाद, 1937 में एक पूर्ण पैमाने पर आक्रमण हुआ, जिसमें अभूतपूर्व स्तर पर बलात्कार और नरसंहार हुआ। गांधी ने अहिंसक प्रतिरोध का सुझाव दिया: ‘40 करोड़ की आबादी वाले राष्ट्र, चीन जैसे सुसंस्कृत राष्ट्र के लिए, जापान के आक्रमण का मुकाबला जापान के ही तरीकों से करना अशोभनीय है। यदि चीनियों के पास मेरी अवधारणा के अनुसार अहिंसा होती, तो जापान के पास मौजूद विनाश के नवीनतम उपकरणों की कोई आवश्यकता नहीं होती।’
जर्मनी में यहूदी आबादी पर हुए हमले गांधी जी के दक्षिण अफ्रीका और
भारत में किए गए कार्यों से अधिक मिलते-जुलते थे, क्योंकि उनमें भी आबादी के एक वर्ग के खिलाफ अन्यायपूर्ण कानूनों को थोपा गया था। उन्होंने कहा, 'मेरी पूरी सहानुभूति यहूदियों के साथ है... वे ईसाई धर्म के अछूत रहे हैं... अगर मानवता के नाम पर और मानवता के लिए कभी कोई न्यायसंगत युद्ध हो सकता है, तो जर्मनी के खिलाफ युद्ध, एक पूरी जाति के अंधाधुंध उत्पीड़न को रोकने के लिए, पूरी तरह से न्यायसंगत होगा। लेकिन मैं किसी भी युद्ध में विश्वास नहीं करता।' 2 उनकी सलाह थी: 'अगर मैं एक यहूदी होता और जर्मनी में पैदा हुआ होता और वहीं अपनी आजीविका कमाता, तो मैं जर्मनी को अपना घर मानता, ठीक वैसे ही जैसे कोई सबसे लंबा गैर-यहूदी जर्मन मान सकता है, और उसे मुझे गोली मारने या कालकोठरी में डालने की चुनौती देता।' 3 यह कमजोर प्रतिक्रिया, जिसकी उस समय बहुत आलोचना हुई थी, और भी उल्लेखनीय है क्योंकि जब गांधी जी के घनिष्ठ मित्र कैलेनबैक ने 1930 के दशक में उनसे

मुलाकात की, तो उन्होंने यहूदी उत्पीड़न पर विस्तार से चर्चा की; और गांधी की स्थायी शिष्यों में से एक, मार्गरेट स्पीगल, जिन्हें अमला के नाम से जाना जाता था, एक यहूदी स्कूल शिक्षिका थीं जो नाजी उत्पीड़न से भाग गई थीं।
एडॉल्फ हिटलर अविवाहित, धूम्रपान न करने वाला, शराब न पीने वाला, शाकाहारी राष्ट्रवादी था, जिसमें व्यक्तिगत मिशन की प्रबल भावना थी। वह ठीक उसी प्रकार का व्यक्ति था जिसकी गांधीजी प्रशंसा करते थे - यह टिप्पणी बिना उपहास किए की जा सकती है, क्योंकि गांधीजी वास्तव में किसी व्यक्ति के खान-पान और धूम्रपान करने जैसी बातों को नैतिक संकेतक मानते थे। उन्होंने कहा: 'मैं मित्र राष्ट्रों की हार नहीं देखना चाहता। लेकिन मैं हिटलर को उतना बुरा नहीं मानता जितना उसे चित्रित किया जाता है। वह एक अद्भुत क्षमता दिखा रहा है और ऐसा लगता है कि वह बिना अधिक रक्तपात के अपनी जीत हासिल कर रहा है।' 4 1930 के दशक में दुनिया पर फैल रही बुराई की गुणवत्ता पर ध्यान देने के बजाय, गांधीजी ने नैतिक समानता की खोज की। उनका मानना था कि अंग्रेज नाजियों जितने ही बुरे थे: 'हम ब्रिटिश साम्राज्यवाद का उतना ही विरोध करते हैं जितना नाजीवाद का। यदि कोई अंतर है तो वह मात्रा में है।' 5 'मैं फासीवादी या नाजी शक्तियों और मित्र राष्ट्रों के बीच कोई अंतर नहीं देखता। सभी शोषक हैं, सभी क्रूरता का सहारा लेते हैं।' 6 ‘मेरा कोई शत्रु नहीं है’ की घोषणा करते हुए, उन्होंने दिसंबर 1940 में हिटलर को एक पत्र लिखा, जिसमें उन्हें ‘प्रिय मित्र’ कहकर संबोधित किया गया था। यह उस समय की बात है जब ब्रिटेन पर रात में बमबारी हो रही थी: ‘हमें आपकी बहादुरी या अपने देश के प्रति समर्पण पर कोई संदेह नहीं है, और न ही हम मानते हैं कि आप वह राक्षस हैं जैसा कि आपके विरोधियों ने आपको बताया है [हालाँकि] आपके कई कार्य राक्षसी और मानवीय गरिमा के अशोभनीय हैं, विशेष रूप से मेरे जैसे लोगों की दृष्टि में जो सार्वभौमिक मित्रता में विश्वास करते हैं।’ 7 हिटलर ने गांधी से निपटने के अपने विचार को पूर्व वायसराय लॉर्ड इरविन को, जो बाद में विदेश सचिव लॉर्ड हैलिफ़ैक्स बने, अपने समक्ष व्यक्त किया था। तानाशाह ने तेज़ी से टिप्पणी की, ‘आपको बस इतना करना है कि गांधी को गोली मार दें। यदि आवश्यक हो तो कांग्रेस के और नेताओं को भी गोली मार दें। आप आश्चर्यचकित होंगे कि समस्या कितनी जल्दी शांत हो जाएगी।’ 8

गांधी जी में कम से कम अपनी लाचारी स्वीकार करने का नैतिक साहस तो था। 1938 में ही उन्होंने कहा था कि जब वे यह सोचते हैं कि आक्रमणकारियों द्वारा आक्रमण किए गए देश में वे क्या करेंगे, तो उनका सिर चकराने लगता है। आप शायद यह तर्क दें कि पचास वर्षों के अनुभव के बाद भी अहिंसा ने केवल इतनी ही प्रगति की है, तो यह हमारे संघर्ष में कितनी मदद कर सकती है। अगर आप ऐसा सोचते हैं, तो आप इसे छोड़ सकते हैं। मेरे लिए इसे छोड़ने का कोई सवाल ही नहीं है। इसमें मेरा विश्वास अटूट है। हालांकि, मुझे हमेशा इस बात का अफसोस रहेगा कि भगवान ने मुझे इतनी स्पष्टता से अपनी बात कहने की क्षमता नहीं दी कि मैं अपने विचारों को दूसरों को समझा सकूं।9 राज्य द्वारा प्रेरित हिंसा की सुनियोजित बुराई को समझने में उनकी विफलता तब स्पष्ट हो गई थी जब वे खिलाफत की नैतिक वैधता का बखान करते हुए अर्मेनियाई लोगों के खिलाफ (तुर्की सेना द्वारा किए गए) नरसंहार को स्वीकार नहीं कर पाए थे। अपने आप में, यह कोई बड़ी विफलता नहीं थी - उन्हें हर विश्व घटना पर टिप्पणी क्यों करनी चाहिए? कोई पूछ सकता है। हालांकि, यह कट्टरपंथी बुराई को समझने में एक निरंतर, अंतर्निहित विफलता को उजागर करता है। बीसवीं शताब्दी की विपत्तियों के बारे में उनका दृष्टिकोण भयावह रूप से एक ऐसे आध्यात्मिक भ्रम में परिणत हुआ, जिसने उस अराजकता का स्वागत किया जिससे कथित तौर पर व्यवस्था उत्पन्न होगी, क्योंकि भारत विभाजन की आपदा की ओर बढ़ रहा था।
कांग्रेस के राजनेता शासन चलाने की कठिनाइयों को समझने लगे थे। उन्होंने जुलाई 1937 में सात प्रांतों में सरकारें बनाईं और एक साल बाद आठवें प्रांत में भी सरकार बन गई। साक्षरता और कृषि एवं सामाजिक सुधार के लिए चलाए गए उनके अभियान लागत और प्रशासनिक अनुभव की कमी से बाधित थे, लेकिन सुधार के प्रति उनके उत्साह ने काफी हद तक इसकी भरपाई कर दी। गांधी ने शराबबंदी जैसे अपने दीर्घकालिक लक्ष्यों को बढ़ावा देने के अलावा कोई खास योगदान नहीं दिया, जिसे उन्होंने 'शायद सदी का सबसे बड़ा नैतिक आंदोलन' बताया था। 10
यद्यपि प्रांत अब भारतीय राजनीतिक नियंत्रण में थे, फिर भी किसानों के मार्च, हड़तालें और धरना प्रदर्शन बंद नहीं हुए। सत्ता के लालच में भ्रष्ट लोग कांग्रेस पार्टी में शामिल हो रहे थे और नेतृत्व के नैतिक संदेश को दूषित कर रहे थे। सत्ता का इस्तेमाल वर्चस्व के हथियार के रूप

में किया जा रहा था। कई कांग्रेसी नेताओं के उग्र राष्ट्रवाद ने मुसलमानों को यह महसूस कराया कि उनका हिंदूकरण किया जा रहा है। ध्यान अक्सर शिक्षा पर केंद्रित होता था: बच्चों को मूर्तिपूजा से जुड़े कार्य करने के लिए मजबूर किया जाता था, जैसे कि 'वंदे मातरम' गाना, जिसमें भारत माता को दुर्गा (देवी पार्वती का अवतार) के रूप में पुकारा जाता है। बच्चों को गांधी जी के चित्र को प्रणाम करने और उनकी स्तुति में भजन गाने के लिए भी बाध्य किया जाता था - निश्चित रूप से यह वह बात नहीं थी जिसे स्वयं गांधी जी प्रोत्साहित करते। प्रांतीय कांग्रेसी सरकारों ने गायों के वध और गोमांस के सेवन को रोकने का प्रयास किया, जबकि मुस्लिम संस्कृति की रक्षा के लिए कोई समान प्रयास नहीं किए गए।
जिन्ना ने शिकायत की: ‘कांग्रेस का वर्तमान नेतृत्व, विशेष रूप से
पिछले दस वर्षों में, विशुद्ध रूप से हिंदू नीति अपनाकर भारत के मुसलमानों को और अधिक अलग-थलग करने के लिए जिम्मेदार रहा है, और चूंकि उन्होंने उन छह प्रांतों में सरकारें बनाई हैं जहां वे बहुमत में हैं, इसलिए उन्होंने अपने शब्दों, कार्यों और कार्यक्रमों से यह और भी स्पष्ट कर दिया है कि मुसलमान उनसे किसी भी प्रकार के न्याय या निष्पक्षता की अपेक्षा नहीं कर सकते।’ 11 सांप्रदायिक हिंसा जारी रही, अब कांग्रेस के मंत्री दंगाइयों को दबाने के लिए सेना को बुला रहे थे, जैसा कि मार्च 1938 में इलाहाबाद में हुआ, जिससे गांधी जी बेहद दुखी हुए। हिंदू-मुस्लिम एकता के बारे में उनके तमाम अच्छे शब्दों के बावजूद, आम जनता ने उनकी बात मानने से इनकार कर दिया, बल्कि अपने पैतृक द्वेषों को अंजाम दिया।
जिन्ना को मुस्लिम पक्ष का प्रमुख खिलाड़ी मानते हुए, गांधी जी ने देर से ही सही, अप्रैल 1938 में उनसे मिलने की तैयारी की ताकि हिंदू-मुस्लिम एकता के कुछ अंशों को पुनः प्राप्त किया जा सके। हालाँकि, यह मुलाकात एक अनोखी गांधीवादी घटना से विवश हो गई। 7 अप्रैल को आश्रम में अपने सहायकों के साथ लेटे हुए, उन्हें अनैच्छिक वीर्यपात का अनुभव हुआ। यह महत्वपूर्ण था क्योंकि उन्हें लगता था कि अब तक उन्होंने अपनी यौन प्रकृति पर पूरी तरह से नियंत्रण कर लिया था, और वीर्य की शक्ति में उनके लगभग जादुई विश्वास के कारण भी। उन्होंने लिखा, 'जो अपने प्राणिक द्रव को संरक्षित करता है, वह अटूट शक्ति प्राप्त करता है। मुझे क्षणिक सुख के लिए अपनी प्राण शक्ति क्यों खोनी चाहिए?' 12 ठीक एक सप्ताह बाद यही घटना फिर घटी।

उन्होंने मीराबेन को इसका वर्णन करते हुए कहा: '14 अप्रैल का वह अपमानजनक, गंदा, यातनापूर्ण अनुभव मुझे अंदर तक झकझोर गया और मुझे ऐसा महसूस हुआ जैसे ईश्वर ने मुझे एक काल्पनिक स्वर्ग से फेंक दिया हो जहाँ मुझे अपनी अपवित्रता में रहने का कोई अधिकार नहीं था।' 13
उन्होंने अपने साथ मौजूद बाकी महिलाओं को पूरी घटना समझाई, जो गांधी जी की वर्णन करने की असाधारण क्षमता के लिए भी काफी चुनौतीपूर्ण रही होगी। इसके बाद उन्होंने उनसे दूरी बना ली, लेकिन उन्हें इन महिलाओं की विनतियों के आगे झुकना पड़ा, जो उनके करीब रहना चाहती थीं: ‘एक समय मैंने सुशीला [नायर] से सभी निजी सेवाएं लेने से इनकार कर दिया था, लेकिन बारह घंटे के भीतर ही मेरे कोमल हृदय ने उस इरादे को बदल दिया। मैं सुशीला के आँसू और प्रभावाती के बेहोश होने को सहन नहीं कर सका।’ 14 वे घोर निराशा में डूब गए। उन्होंने एक प्रेस विज्ञप्ति में लिखा, ‘अपने सार्वजनिक और निजी जीवन में पहली बार मुझे ऐसा लग रहा है कि मैंने आत्मविश्वास खो दिया है। मैं फिलहाल खुद को बातचीत या ऐसी किसी भी चीज के लिए उपयुक्त नहीं समझता… मैं जनता से अनुरोध करता हूं कि वे साक्षात्कार को कोई अतिरंजित महत्व न दें।’ 15 ऐसी आशंकाओं के साथ वे जिन्ना के साथ तीन घंटे की बातचीत के लिए आगे बढ़े।
1938 की वसंत ऋतु में हुई बैठकें निरर्थक रहीं। जिन्ना चाहते थे कि गांधी उन्हें मुसलमानों का नेता मानें जबकि गांधी हिंदुओं के नेता थे; लेकिन गांधी ने पूरे भारत का प्रतिनिधित्व करने का दावा किया। साल के अंत तक जिन्ना गांधी के इस आरोप का जवाब दे रहे थे कि उन्होंने राष्ट्रवाद को त्यागकर सांप्रदायिक राजनीति अपना ली है: ‘मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि श्री गांधी ही उस आदर्श को नष्ट कर रहे हैं जिसके साथ कांग्रेस की शुरुआत हुई थी। वे ही कांग्रेस को हिंदू धर्म के पुनरुद्धार का साधन बनाने के लिए जिम्मेदार हैं। उनका आदर्श हिंदू धर्म को पुनर्जीवित करना और इस देश में हिंदू राज स्थापित करना है।’ 16
उस समय गांधीजी को रात में कंपकंपी के दौरे पड़ते थे – शायद ठंड के
कारण, या शायद मनोदैहिक विकार के कारण। युवतियों के साथ लेटने से उन्हें आराम मिलता था। जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, वे निजी कार्यों के दौरान अक्सर अपने आसपास महिलाओं को रखते थे। एक बार पूछे जाने पर उन्होंने समझाया: ‘सुशीला स्नानघर में तब मौजूद थीं जब मैंने नग्न अवस्था

में स्नान किया था और उनकी अनुपस्थिति में बा [कस्तूरबा], प्रभावती या लीलावती ने मेरी सेवा की थी।’ 17 गांधीजी को निजी सेवाएं प्रदान करना उनकी कृपा का एक बहुप्रतीक्षित संकेत था और आश्रमवासियों के बीच ईर्ष्या पैदा करता था। मीराबेन ने उन्हें महिला आश्रमवासियों से दूरी बनाए रखने की सलाह दी। वह कभी भी उनके ब्रह्मचर्य के ‘प्रयोगों’ में भागीदार नहीं रही थीं, शायद इसलिए कि उन्हें डर था कि वह पर्याप्त संयम नहीं दिखाएंगी – या वे स्वयं ऐसा करेंगे। संभवतः उन्हें अन्य महिलाओं को दी गई शारीरिक निकटता (और इसलिए विश्वास) से ईर्ष्या होती थी।
उन्होंने मीराबेन से पूछा: ‘क्या मुझे सुशीला द्वारा दी गई सेवा से खुद को वंचित रखना चाहिए? क्या मुझे लीलावती या आमतुल सलाम से मालिश करवाने से मना कर देना चाहिए? या क्या आप यह कहना चाहती हैं कि मुझे कभी भी लड़कियों के कंधों पर सहारा नहीं लेना चाहिए?’ 18 उन्होंने मीराबेन की सलाह मानते हुए महिलाओं के साथ शारीरिक संपर्क वाली उन निजी सेवाओं से खुद को वंचित कर लिया और आश्रम के उन सदस्यों से माफी मांगी जो विद्रोह के संकेत दे रहे थे। उन्होंने ‘खुद को दी गई स्वतंत्रता’ से उन्हें वंचित करने के लिए माफी मांगी… मेरा यह कार्य अहंकार और ईर्ष्या से प्रेरित था… मेरा प्रयोग ब्रह्मचर्य के स्थापित मानदंडों का उल्लंघन था।’ ये यौन ‘प्रयोग’ वास्तव में स्वीकृत मानदंडों का उल्लंघन थे। महिलाओं के साथ शारीरिक संपर्क और उनके साथ सोना गांधी का ब्रह्मचर्य के अभ्यास में अपना योगदान था। इन्हें किसी भी परंपरा द्वारा पवित्र नहीं माना गया था और वास्तव में, इस विषय पर लिखे ग्रंथों में इन्हें वर्जित बताया गया था। उन्होंने न केवल अपनी ‘नैतिक चूक’ की ज़िम्मेदारी ली, बल्कि आश्रम में दूसरों की भी। 19 ‘यहाँ तक कि एक स्त्री की निकटता, वाणी, दृष्टि, पत्र आदि भी उतना ही बुरा प्रभाव डाल सकते हैं जितना उसका स्पर्श,’ उन्होंने विचार किया। एक ओडिपस जैसी टिप्पणी में उन्होंने कहा, ‘मुझे अपनी आँखें निकाल लेनी चाहिए, बजाय इसके कि मेरे भीतर का पशु जागृत हो।’ 20 उन्होंने सुशीला के साथ यौन संबंध पर विस्तार से चर्चा की, जो 1938 में चौबीस वर्ष की थीं। उन्हें एक पत्र में स्नेहपूर्ण अपमान – ‘मूर्ख लड़की’ – के साथ संबोधित करते हुए उन्होंने लिखा: ‘यदि तुमने भी इच्छा का अनुभव किया है, तो यह अच्छा है। क्योंकि तब हम दोनों एक ही दुर्दशा में हैं और हम दोनों को सतर्क रहना चाहिए… मेरे 69 वर्षों के बाद तुम्हारे भीतर का विकार [वासना]

मुझ पर प्रभाव नहीं डाल सकता। मैं अपने स्वयं के विकार से जल रहा हूँ।’ अपने विकार के कारण मैं स्वयं को किसी भी स्त्री से सेवा लेने के अयोग्य समझता हूँ।’ 21 तीन महीने के भीतर ही उन्होंने संयम के इस ‘प्रयोग’ को पूरी तरह त्याग दिया: उन्होंने स्त्रियों पर हाथ रखना पुनः शुरू कर दिया और अपने शरीर की व्यक्तिगत सेवाएँ फिर से शुरू कर दीं। सितंबर 1938 में ‘एक परिपत्र पत्र’ में उन्होंने अपने निकटतम लोगों को समझाया कि कैसे वे और सुशीला एक साथ स्नान करते थे: ‘स्नान की व्यवस्था इस प्रकार है: वह बाथटब के पीछे की जगह में स्नान करती है और जब वह स्नान कर रही होती है तो मैं अपनी आँखें कसकर बंद रखता हूँ। मुझे उसके स्नान करने का तरीका नहीं पता – कि वह नग्न स्नान करती है या अपने अंतर्वस्त्र के साथ। मैं ध्वनि से बता सकता हूँ कि वह साबुन का उपयोग करती है। मैंने उसके शरीर का कोई भी ऐसा भाग नहीं देखा है जो यहाँ मौजूद किसी ने न देखा हो।’ फिर वह नग्न अवस्था में लेटे हुए उनकी मालिश करती थी। 22 उन्होंने कांग्रेस की नैतिक रूप से पतित स्थिति के लिए अपने ब्रह्मचर्य में कमियों को दोषी ठहराया। 23
महिलाओं से मिलने वाली सेवाओं को लेकर वह लगातार परेशान रहते थे और इस विषय पर टिप्पणी करते रहते थे। फरवरी 1939 में उन्होंने वल्लभभाई पटेल को बताया, “कल से मैंने उनके पास सोना बंद कर दिया है। यानी, लड़कियां मुझसे इतनी दूर सोती हैं कि मेरी बाहों में न आ सकें।” 24 1970 के दशक में पूछे जाने पर, सुशीला ने खुलासा करते हुए महिलाओं के साथ शारीरिक संपर्क को जीवनशैली का हिस्सा बताया; इस व्यवहार की आलोचना के जवाब में इसे ब्रह्मचर्य प्रयोग का दर्जा दिया गया। उन्होंने कहा: “बाद में, जब लोगों ने महिलाओं के साथ उनके शारीरिक संपर्क के बारे में सवाल पूछना शुरू किया
– मनु [उनकी पोती], आभा [एक और पोती], मेरे साथ – तो ब्रह्मचर्य प्रयोगों का विचार विकसित हुआ।” 25
सितंबर 1939 में जब जर्मनी के खिलाफ युद्ध की घोषणा हुई, तो भारत स्वतः ही इसमें शामिल हो गया और युद्ध में भाग लेने लगा। उपनिवेशों ने अपने-अपने निर्णय लिए और ब्रिटेन के साथ खड़े होने का संकल्प लिया (जैसा कि भारत भी विकल्प दिए जाने पर लगभग निश्चित रूप से करता)। उपमहाद्वीप को युद्ध में शामिल करने से पहले लोकतांत्रिक परामर्श का अवसर न देना अंग्रेजों की एक गंभीर गलती थी। भारत में रॉलेट अधिनियमों की यादें अभी भी ताज़ा थीं - यह

आशंका स्वाभाविक थी कि युद्धकालीन उपाय के रूप में अपनाई गई आपातकालीन शक्तियों को आगे बढ़ाया जाएगा।
कांग्रेस ने घोषणा की कि वे लोकतंत्र की रक्षा के लिए युद्ध में शामिल होना चाहते हैं, लेकिन वे भारत में पूर्ण लोकतंत्र की स्थापना भी चाहते थे, जिसमें भारतीय राजनेताओं को अपना संविधान निर्धारित करने का अधिकार हो। युद्ध के बारे में चर्चा करने के लिए वायसराय से मिलने के निमंत्रण पर, गांधी ने कहा कि वेस्टमिंस्टर एब्बे और संसद भवन पर बमबारी की कल्पना करके उनकी आँखों में आँसू आ गए। लेकिन वे कांग्रेस सदस्यों को अपनी यह भावना व्यक्त नहीं कर पाए: कार्य समिति में उन्होंने कहा कि उन्हें यह सोचकर खेद है कि मैं अकेला हूँ जो यह सोचता है कि अंग्रेजों को जो भी समर्थन दिया जाना चाहिए, वह बिना शर्त दिया जाना चाहिए। 26 इसके बजाय, 14 सितंबर 1939 को कांग्रेस ने नेहरू द्वारा तैयार किया गया एक विस्तृत बयान जारी किया, जिसमें महत्वपूर्ण रूप से कहा गया था: 'यदि ग्रेट ब्रिटेन लोकतंत्र के रखरखाव और विस्तार के लिए लड़ता है, तो उसे अनिवार्य रूप से अपने क्षेत्रों में साम्राज्यवाद को समाप्त करना होगा, भारत में पूर्ण लोकतंत्र स्थापित करना होगा, और भारतीय लोगों को अपना संविधान बनाकर आत्मनिर्णय का अधिकार होना चाहिए।' 27
गांधी जी ने फिर निष्ठापूर्वक कांग्रेस की नीति का पालन किया: आगामी युद्ध में अंग्रेजों का समर्थन करने की उनकी नीति, जैसा कि ज़ुलू विद्रोह, बोअर युद्ध और प्रथम विश्व युद्ध में हुआ था, समाप्त कर दी गई। कार्रवाई का कोई प्रस्तावित कार्यक्रम भी नहीं था। नेहरू ने लिखा: 'हमारी स्थिति असहयोग की है, लेकिन हमने अभी तक इससे आगे कुछ नहीं सोचा है।' 28 दूसरी ओर, जिन्ना मुस्लिम लीग का समर्थन करने के लिए तैयार थे, लेकिन इस शर्त पर कि उन्हें मुस्लिम भारत की एकमात्र आवाज़ के रूप में स्वीकार किया जाए और लीग की सहमति के बिना कोई संवैधानिक परिवर्तन न किया जाए। अंग्रेज इस बात को मानने को तैयार नहीं थे, लेकिन यद्यपि लीग इस कारण से ब्रिटिश युद्ध प्रयासों का पूरी तरह से समर्थन नहीं कर रही थी, फिर भी उन्होंने इसमें बाधा डालने के लिए कुछ नहीं किया।
तत्कालीन वायसराय लॉर्ड लिनलिथगो ने गांधी, नेहरू और जिन्ना सहित कई नेताओं को साक्षात्कार के लिए आमंत्रित किया और 17 अक्टूबर को एक बयान जारी कर कहा कि भारत में ब्रिटिश नीति का लक्ष्य डोमिनियन दर्जा प्राप्त

करना है और युद्ध की समाप्ति के बाद भारत सरकार अधिनियम में संशोधन किया जा सकता है। लिनलिथगो की दूरदर्शिता और प्रशासनिक कौशल की कमी ने उनके लंबे कार्यकाल (1936-43) की पहले से ही गंभीर समस्याओं को और बढ़ा दिया, जिसमें भारतीय राजनीति की कुछ सबसे नाटकीय घटनाएँ शामिल थीं और जिसमें पूरी तरह से टाला जा सकने वाला बंगाल का अकाल भी शामिल था।
ब्रिटिश नीतिगत बयानों की तरह ही, लिनलिथगो की टिप्पणियाँ भी अपर्याप्त और देर से आईं; लेकिन यदि ब्रिटिश दृष्टिकोण गलत था, तो कांग्रेस का दृष्टिकोण विनाशकारी था। कांग्रेस के विचारकों ने प्रभुत्व की स्थिति बनाम पूर्ण स्वतंत्रता के मुद्दे पर अपने आंतरिक विवादों के कारण खुद को एक कोने में धकेल दिया था। आपस में और अधिक बहस के बाद, कांग्रेस को ब्रिटिशों के साथ सहयोग करने से इनकार करना पड़ा, जिससे उन्होंने अपना चुनावी लाभ खो दिया और कई लोगों के लिए शासन का एकमात्र अनुभव भी गंवा दिया। उन्होंने ब्रिटिशों पर अपना प्रभाव भी खो दिया, जो संविधान निर्माण की प्रक्रिया में निर्णायक थे और भविष्य में भी भारत के स्वरूप को लेकर निर्णायक बने रहेंगे।
कांग्रेस की कार्यकारी समिति की बैठक 22 और 23 अक्टूबर 1939 को वर्धा में हुई, जिसमें वायसराय के बयान की निंदा की गई और सभी कांग्रेस सरकारों को महीने के अंत तक इस्तीफा देने का आदेश दिया गया। यदि किसी एक घटना को भारत को अलगाववादी मुसलमानों के हवाले करने का श्रेय दिया जा सकता है, तो वह यही थी – राजनीतिक विफलता के रूप में यह एक मिसाल थी: कांग्रेस ने राजनीतिक रूप से खुद को कमजोर कर लिया, जिसका लाभ मुस्लिम लीग के अलावा किसी और को नहीं मिला।
जिन्ना ने राहत के प्रतीक के रूप में 'मुक्ति और कृतज्ञता दिवस' की घोषणा की, क्योंकि कांग्रेस शासन अंततः समाप्त हो गया है... [उन्होंने] कांग्रेस के इस दावे को झूठा साबित कर दिया है कि वह सभी हितों का निष्पक्ष और पूर्ण रूप से प्रतिनिधित्व करती है, अपनी स्पष्ट रूप से मुस्लिम विरोधी नीति से। 29 अन्य अल्पसंख्यक समूहों, विशेष रूप से अंबेडकर और उनके अछूतों ने जिन्ना का समर्थन किया। जिन्ना पहले ही एक अलग मुस्लिम राष्ट्र के पक्ष में निर्णय ले चुके थे, लेकिन वे इतने चतुर राजनीतिज्ञ थे कि उन्होंने इसे गुप्त रखा। अगले वर्ष, मार्च 1940 में, मुस्लिम लीग ने एक अलग पाकिस्तान की घोषणा की।

जिन्ना बीमार थे। उन्हें गंभीर तपेदिक था और लाहौर में जनसभा से कुछ ही दिन पहले दिल्ली में केंद्रीय विधानसभा जाते समय वे बेहोश हो गए थे। इसी जनसभा में उन्होंने 'पाकिस्तान प्रस्ताव' की घोषणा की थी (हालाँकि उन्होंने स्वयं कभी इस शब्द का प्रयोग नहीं किया)। कमज़ोर होने के बावजूद, उन्होंने दो घंटे तक एक लाख लोगों की भीड़ को संबोधित किया, जिनमें से बहुत कम लोग ही उन्हें समझ पा रहे थे, क्योंकि वे अंग्रेज़ी में बोल रहे थे। उन्होंने कहा, 'मुसलमान अल्पसंख्यक नहीं हैं। मुसलमान हर मायने में एक राष्ट्र हैं।' यदि ब्रिटिश वास्तव में शांति और खुशहाली में रुचि रखते थे, तो 'हम सभी के लिए एकमात्र रास्ता यही था कि प्रमुख राष्ट्रों को अलग-अलग मातृभूमि दी जाए, भारत को "स्वायत्त राष्ट्रीय राज्यों" में विभाजित करके।' 30 उन्होंने गांधी के इस दावे को खारिज कर दिया कि हिंदू, मुसलमान, पारसी और अछूत सभी एक समान हैं: 'आप अपने लोगों का गर्व से प्रतिनिधित्व करते हुए एक हिंदू नेता के रूप में क्यों नहीं आते?' जिन्ना ने उनसे पूछा, 'और मुझे आपसे मिलने दें, जो गर्व से मुसलमानों का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं?' 31 लीग ने बाद में एक प्रस्ताव पारित किया जिसमें स्पष्ट रूप से कहा गया कि भारत के उत्तर-पश्चिमी और पूर्वी क्षेत्रों को स्वतंत्र राज्य होना चाहिए।
गांधी जी स्तब्ध रह गए: ‘मैं पूरे दिल से मानता हूँ कि कुरान का ईश्वर ही गीता का ईश्वर है और हम सब, चाहे हमें किसी भी नाम से पुकारा जाए, एक ही ईश्वर की संतान हैं। मुझे इस बात पर बहुत आपत्ति है कि कुछ दिन पहले लाखों भारतीय जो हिंदू थे, उन्होंने अपना धर्म और राष्ट्रीयता दोनों बदल लीं।’ 32 इसलिए वे यह तर्क दे रहे थे कि भले ही मुसलमान हिंदू न हों, फिर भी वे भारतीय ही हैं। हालाँकि, गांधी जी सभी हिंदुओं की ओर से नहीं बोल रहे थे। अति रूढ़िवादी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सदस्यों ने भी जिन्ना के विचारों का समर्थन करते हुए तर्क दिया कि भारत में गैर-हिंदुओं के लिए कोई स्थान नहीं है।
कांग्रेस के लिए निराशा की बात यह थी कि सिद्धांतों के लिए सत्ता का उनका महान बलिदान भारत की जनता के समान उत्साह में परिलक्षित नहीं हुआ: युवा भर्ती केंद्रों पर उमड़ पड़े, युद्ध सेवा के लिए स्वेच्छा से आगे आने वालों की संख्या सरकार की जरूरत से कहीं अधिक थी।

मई 1940 में चर्चिल ने प्रधानमंत्री पद संभाला। वे भारतीय राष्ट्रवादियों के कट्टर विरोधी थे, हालांकि वे एक जटिल व्यक्तित्व थे, जिन्होंने पांच साल पहले ही कहा था कि गांधीजी द्वारा अछूतों के लिए आवाज उठाने के बाद से उनकी नजर में उनका सम्मान बढ़ गया है। जुलाई 1940 में, ब्रिटेन की लड़ाई के समय, गांधीजी ने लिखा:
मैं हर ब्रिटिश नागरिक से, चाहे वह कहीं भी हो, अपील करता हूँ कि राष्ट्रों के बीच संबंधों के सामंजस्य के लिए युद्ध के बजाय
अहिंसा का मार्ग अपनाएँ… आपके सैनिक भी जर्मनों की तरह ही
विनाशकारी कार्य कर रहे हैं। अंतर केवल इतना है कि शायद आपका
कार्य जर्मनों जितना व्यापक नहीं है… मैं चाहता हूँ कि आप नाज़ीवाद से निहत्थे लड़ें, या यदि मैं अहिंसक शब्दावली का प्रयोग करूँ, तो अहिंसक हथियारों से लड़ें… आप श्री हिटलर और श्री मुसोलिनी को उन देशों में से जो चाहें लेने के लिए आमंत्रित करेंगे जिन्हें आप अपनी संपत्ति कहते हैं। उन्हें आपके सुंदर द्वीप और आपकी कई सुंदर इमारतों पर कब्ज़ा करने दें।
आप ये सब दे देंगे, लेकिन न तो अपनी आत्मा और न ही अपना मन। यदि
ये सज्जन आपके घरों पर कब्ज़ा करना चाहें, तो आप उन्हें खाली कर
देंगे। यदि वे आपको सुरक्षित बाहर निकलने का रास्ता नहीं देते
हैं, तो आप स्वयं को, पुरुष, स्त्री और बच्चे, सभी को, वध होने
देंगे, लेकिन आप उनके प्रति निष्ठा रखने से इनकार करेंगे। 33
एचएम सरकार ने उत्तर दिया: ‘हमें नहीं लगता कि आप जिस नीति की वकालत कर रहे हैं, उस पर विचार करना हमारे लिए संभव है।’ 34
ब्रिटिशों के साथ असहयोग की कांग्रेस की नीति का एक विकल्प ब्रिटेन के शत्रुओं से जुड़ना था। सुभाष चंद्र बोस, गांधी जी के विपरीत, 1939 में कांग्रेस के अध्यक्ष थे, और इस पद पर रहते हुए उन्होंने प्रस्ताव रखा कि अंग्रेजों को छह महीने में देश छोड़ने या पूर्ण सविनय अवज्ञा का सामना करने का अल्टीमेटम दिया जाना चाहिए। गांधी जी और अन्य कांग्रेस नेताओं का मानना था कि भारत इस तरह के संघर्ष के लिए तैयार नहीं है, जो न केवल विफल होगा बल्कि कांग्रेस की बदनामी करेगा और स्वतंत्रता संग्राम के लिए विनाशकारी साबित होगा। बोस इस नीति पर हार गए, उन्होंने अपनी हार को स्वीकार किया और कांग्रेस छोड़कर अपनी अलग पार्टी, फॉरवर्ड ब्लॉक का गठन

किया, जिसने जर्मन, इतालवी और जापानी शासनों के हिंसक राष्ट्रवाद का अनुकरण किया।
राष्ट्रीय राजनीति में मुस्लिम लीग के बढ़ते प्रभाव के साथ, कांग्रेस हाशिए पर चली गई और उसकी कार्यकारी समिति विभाजित हो गई। फिर भी, सितंबर 1940 में उन्होंने गांधीजी को सविनय अवज्ञा के एक नए अभियान का नेतृत्व करने के लिए आमंत्रित करने का निर्णय लिया। गांधीजी ऐसे अभियान का नेतृत्व करने के इच्छुक नहीं थे, क्योंकि उन्हें लगा कि देश इसके लिए तैयार नहीं है, लेकिन उन्होंने घोषणा की कि सत्याग्रह के व्यक्तिगत कार्य होने चाहिए, विशेष रूप से कांग्रेस के नेताओं को युद्ध के विरुद्ध आवाज़ उठानी चाहिए। नेहरू, राजगोपालाचारी और अन्य ने अधिकारियों को अपने कार्यों की जानकारी दी और भाषणों के माध्यम से गिरफ्तारी को आमंत्रित किया - नेहरू को अपना भाषण देने से पहले ही गिरफ्तार कर लिया गया और चार साल की जेल की सजा सुनाई गई। प्रमुख सदस्यों की गिरफ्तारी के बाद, आम सदस्य भी इसमें शामिल हो गए और अंततः, 1941 की गर्मियों तक बीस हजार लोगों को दोषी ठहराया जा चुका था - कांग्रेस की सदस्यता और भारत की जनसंख्या को देखते हुए यह संख्या बहुत कम थी। असल बात यह थी कि जनता विरोध के उद्देश्य को समझ नहीं पाई थी, और ब्रिटिश प्रशासक भी उतने ही असमंजस में थे। युद्ध भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए लाभकारी था; यह भारत को अपने उद्योगों को बढ़ावा देने, रोजगार और धन लाने में मदद कर रहा था। युद्ध संबंधी कार्यों के दबाव से निपटने के लिए वायसराय ने अपनी कार्यकारी परिषद का विस्तार करके बारह सदस्यों तक सीमित कर दिया था, जिनमें से आठ अब भारतीय थे, जो भारतीयों को सत्ता हस्तांतरण की उनकी निरंतर मंशा को दर्शाता है। इसके अलावा, नई कार्यकारी परिषद ने सुलह के संकेत के रूप में वायसराय से नेहरू सहित उन सभी सविनय अवज्ञा कार्यकर्ताओं को रिहा करने का आग्रह किया, जो अभी भी हिरासत में थे।
जापानियों द्वारा पर्ल हार्बर पर हमला करने और दक्षिण-पूर्व एशिया में आगे बढ़ने से कुछ ही समय पहले उन्हें रिहा कर दिया गया था। अंततः उन्होंने हांगकांग, मलाया, सिंगापुर और बर्मा पर कब्जा कर लिया। चीनी नेता च्यांग काई-शेक ने फरवरी 1942 में भारत का दौरा किया और गांधी, नेहरू और अन्य नेताओं से मुलाकात कर उन्हें जापानी आक्रमण के खिलाफ युद्ध में भारत की भूमिका के महत्व से अवगत कराया। गांधी से मुलाकात के दौरान, च्यांग ने चीन

में जापानियों द्वारा किए गए अत्याचारों का सजीव वर्णन किया। गांधी पूरी बैठक के दौरान अपने अनुभव बताते रहे और अंत में उन्होंने च्यांग को अपने द्वारा सुनाए गए वृत्तांत से अवगत कराया, जिससे च्यांग निश्चित रूप से चकित रह गए।
सुभाष चंद्र बोस ने नई साम्राज्यवादी शक्ति के साथ समझौता करने का प्रयास किया और जापान के संरक्षण में अपनी भारतीय राष्ट्रीय सेना (आईएनए) की स्थापना की, जिसमें मुख्य रूप से भारतीय युद्धबंदियों को शामिल किया गया था। भारत में बहुत कम भारतीय इतने मूर्ख थे कि वे यह मान लें कि जापानी साम्राज्य के अधीन जीवन सुखमय होगा, और बोस के विचारों को भारत में बहुत कम सफलता मिली। इसका अपवाद बंगाल था, जहाँ युद्ध के शेष समय के दौरान अंग्रेजों के खिलाफ आतंकवादी घटनाएं होती रहीं। 1944 की शुरुआत में, बोस और उनकी आईएनए को भारतीय सीमा पार करनी थी, लेकिन तब तक युद्ध का रुख जापान और उसके सहयोगियों के खिलाफ हो चुका था, और आईएनए ने आत्मसमर्पण कर दिया। 1942 तक, जापान की बढ़ती ताकत के साथ, जिस युद्ध में भारत की भागीदारी अपेक्षित थी, वह अब दूर यूरोप में नहीं, बल्कि पड़ोसी देश बर्मा में चल रहा था। जब भारत की सीमाएँ ही खतरे में थीं, तब एक नई सहमति बन सकती थी। गांधी जी की सलाह के विरुद्ध – हमेशा की तरह वे अहिंसा को प्राथमिकता देना चाहते थे – कांग्रेस ने जापानियों के खिलाफ पूर्ण सहयोग की पेशकश की, जिसके बदले में तत्काल राष्ट्रीय सरकार का गठन और युद्ध के बाद स्वतंत्रता का वादा मांगा गया। लेकिन चर्चिल को इसमें कोई दिलचस्पी नहीं थी – कांग्रेस अतीत में भरोसेमंद नहीं रही थी, और भारत बिना कांग्रेस के भी युद्ध में अच्छी तरह से सहयोग कर रहा था।
उप प्रधानमंत्री और लेबर पार्टी के नेता क्लेमेंट एटली को भारत की
गहरी समझ थी। वे साइमन आयोग के सदस्य रह चुके थे और अब 1942 में गठित भारत समिति के अध्यक्ष थे, जिसने भारत में राजनीतिक समझौता कराने के लिए भेजे जाने वाले प्रतिनिधिमंडल के कार्यक्षेत्र का निर्धारण किया था। यही प्रतिनिधिमंडल क्रिप्स मिशन बना, जिसका नेतृत्व सर स्टैफोर्ड क्रिप्स ने किया, जो चर्चिल की गठबंधन सरकार के सदस्य थे और गांधीजी से बातचीत के लिए एक उपयुक्त विकल्प थे। एक कठोर समाजवादी, शराब न पीने वाले और शाकाहारी, प्रथम विश्व युद्ध में शांतिवादी रहे क्रिप्स दृढ़ सिद्धांतों वाले व्यक्ति थे, जिनके कारण उन्हें एक समय लेबर पार्टी से निष्कासित भी किया

गया था। क्रिप्स पहले भी गांधीजी से मिल चुके थे, 1939 में वर्धा गए थे और गांधीजी की कुटिया में प्रवेश करते समय जूते उतारकर उन्होंने एक विशिष्ट शिष्टाचार का परिचय दिया था - यह शिष्टाचार कुछ ही अंग्रेज आगंतुकों में देखने को मिलता है।
क्रिप्स नेहरू के इतने करीबी दोस्त थे कि वे उनकी बेटी इंदिरा गांधी और फिरोज गांधी के विवाह की तैयारियों के दौरान मौजूद थे। पारसी मूल के फिरोज गांधी मोहनदास गांधी के रिश्तेदार नहीं थे, लेकिन इससे इंदिरा गांधी के प्रभावशाली राजनीतिक करियर को कोई नुकसान नहीं हुआ, क्योंकि कई लोग उन्हें रिश्तेदार मानते थे। महात्मा गांधी दूल्हा-दुल्हन को ब्रह्मचर्य का पालन करने के लिए मनाने में हमेशा की तरह सफल रहे; उनके दो बच्चे हुए, जिनमें से पहले राजीव गांधी प्रधानमंत्री बने, जैसे उनकी माता और दादा बने थे; राजीव की पत्नी सोनिया गांधी ने कांग्रेस का नेतृत्व किया।
क्रिप्स को एक प्रस्ताव के साथ भेजा गया था, लेकिन उनके पास बातचीत की कोई गुंजाइश नहीं थी; चर्चिल ने उनके हाथ बांध रखे थे। समझौता यह था कि भारत को डोमिनियन का दर्जा मिलेगा और एक संविधान सभा संविधान बनाएगी, जिसमें प्रांतों को किसी भी संवैधानिक व्यवस्था से अलग होने का अधिकार होगा। इसका मतलब यह था कि रियासतें या मुस्लिम राज्य ब्रिटेन के साथ रहने का विकल्प चुन सकते थे। भारत की रक्षा नीति भी ब्रिटिश नियंत्रण में रहेगी। चर्चिल, जो हमेशा से एक कट्टर साम्राज्यवादी थे, क्रिप्स की सफलता नहीं चाहते थे, लेकिन वे ब्रिटिश, भारतीय और (लगातार महत्वपूर्ण होते जा रहे) अमेरिकी जनमत को शांत करना चाहते थे। अमेरिकी ब्रिटिश साम्राज्य से अलग होने पर गर्व महसूस करते थे - वे दूसरों को अधीन रखने के लिए लड़ते हुए नहीं दिखना चाहते थे। क्रिप्स, जिन्होंने 1938 में ब्रिटेन में नेहरू और एटली के साथ संवैधानिक समाधानों पर चर्चा की थी (जब नेहरू क्रिप्स के घर अतिथि थे), अपने दृष्टिकोण में पूरी तरह से ईमानदार थे।
गांधी जी उनसे मिलने दिल्ली गए। उन्होंने इस प्रस्ताव को पूरी तरह से खारिज कर दिया, खासकर इसलिए क्योंकि इसमें भावी भारत में रियासतों को शामिल करने का प्रस्ताव था, चाहे उसका स्वरूप कुछ भी हो। भले ही उन्हें संविधान सभा में प्रतिनिधित्व मिले, उनके प्रतिनिधियों को उनके शासकों द्वारा मनोनीत किया जाएगा, जो एक अलोकतांत्रिक प्रक्रिया होगी। उन्होंने

मुस्लिम बहुल और अन्य राज्यों के इससे बाहर रहने की संभावना को भी अस्वीकार कर दिया; और अस्पष्ट रूप से रक्षा प्रस्ताव का भी विरोध किया। गांधी जी को व्यापक रूप से इस कहावत का श्रेय दिया जाता है कि क्रिप्स का प्रस्ताव 'एक पोस्टडेटेड चेक' था, हालांकि यह वाक्यांश उनके लेखन या क्रिप्स के विवरण में नहीं मिलता है। 36 उन्होंने इसमें 'एक विफल बैंक पर' वाक्यांश नहीं जोड़ा, जो एक पत्रकार की मनगढ़ंत कहानी थी - गांधी जी को ब्रिटेन की कठिनाइयों से कोई खुशी नहीं थी। क्रिप्स मिशन की विफलता के लिए उनके कठोर रवैये को जिम्मेदार ठहराया गया है, हालांकि मुस्लिम 'राष्ट्रवाद' को मान्यता देने के प्रस्ताव को अस्वीकार करना जिन्ना के लिए भी इसे अस्वीकार करने के लिए पर्याप्त था। इस अस्वीकृति पर निश्चित रूप से व्यापक निराशा थी। एटली ने बाद में लिखा: 'यह बहुत दुख की बात थी कि अंततः भारतीयों ने इसे ठुकरा दिया, क्योंकि पूर्ण स्वशासन को कुछ वर्षों पहले लागू किया जा सकता था।' 37
इन चर्चाओं के दौरान, जापानी नौसेना हिंद महासागर में प्रवेश कर चुकी थी और उसने श्रीलंका के कोलंबो बंदरगाह में छह ब्रिटिश जहाजों को डुबो दिया। दो ब्रिटिश क्रूजर भी उनके पीछे आए, फिर एक ही दिन में बंगाल की खाड़ी में बीस जहाज डुबो दिए गए। भारतीय बंदरगाहों और रक्षा कर रहे विमान अड्डों पर हमले जारी रहे। गांधी ने कांग्रेस को एक प्रस्ताव भेजा जिसमें आक्रमण की स्थिति में जापानियों के खिलाफ प्रतिरोध, यानी अहिंसक असहयोग का आह्वान किया गया था। इससे स्पष्ट रूप से आक्रमण को रोकने के उद्देश्य से किए जा रहे युद्ध में किसी भी प्रकार की सक्रिय भागीदारी से इनकार किया गया। कुछ कांग्रेसी नेता उनके इस प्रस्ताव के विरोध में थे: नेहरू आक्रमण की स्थिति में जापानियों के खिलाफ गुरिल्ला युद्ध का आयोजन करना चाहते थे; राजगोपालाचारी मुसलमानों और अन्य लोगों के साथ एक संयुक्त मोर्चा बनाना चाहते थे।
गांधी जी के विचारों में अब एक विचित्र मोड़ आया: उन्होंने कहा, ‘मुझे पूरा विश्वास है कि अंग्रेजों की उपस्थिति ही जापानी आक्रमण का कारण है। यदि अंग्रेज बुद्धिमानी से पीछे हटकर भारत को अपने मामलों का प्रबंधन स्वयं करने दें, तो जापानी अपने योजनाओं पर पुनर्विचार करने के लिए बाध्य होंगे।’ 38 उनका मानना था कि ‘संभवतः जापानी भारत पर आक्रमण नहीं करना चाहेंगे, क्योंकि उनका शिकार उनके हाथ से निकल चुका है।’ 39 जापानी प्रचार

प्रसारणों में भी यही कहा गया था कि जापान के युद्ध उद्देश्यों में से एक भारत को ब्रिटिश शासन से मुक्त कराना था। यह निस्संदेह सत्य था, क्योंकि अंतिम उद्देश्य भारत को जापानी साम्राज्य की सेवा में लगाना था। भारत के प्रति जापान का आकर्षण वही था जो अंग्रेजों और मुगलों के लिए था: भारत की अपार संपत्ति और जनशक्ति। यदि जापान को आक्रमण करने की अनुमति दी जाती, और यदि जापानियों को कलकत्ता में उसी प्रकार के अत्याचार करने का अवसर दिया जाता, जैसे उन्होंने नानजिंग में किए थे, तो ब्रिटिश और जापानी साम्राज्यों के बीच का अंतर स्पष्ट हो जाता।
गांधीजी को उम्मीद थी कि ब्रिटिश सत्ता के हटने के साथ ही 'समझदार नेता अपनी जिम्मेदारी समझेंगे, कुछ समय के लिए अपने मतभेदों को भुला देंगे और एक अंतरिम सरकार का गठन करेंगे।' हालांकि, उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि 'राष्ट्रीय सरकार के गठन के बाद मेरी आवाज शायद अनसुनी रह जाए और राष्ट्रवादी भारत युद्ध के उन्माद में डूब जाए।' 40 लेकिन क्या इससे कोई फर्क पड़ता है? उन्होंने मन ही मन सोचा। 'अगर मेरे कहने पर अहिंसक संघर्ष शुरू हुआ है और बाद में हिंसा भड़क उठती है, तो मैं उसे भी सहन कर लूंगा, क्योंकि अंततः ईश्वर ही मुझे प्रेरित कर रहे हैं और चीजें उनकी इच्छा के अनुसार ही घटित होंगी। अगर वह मुझे अपने हथियार के रूप में इस्तेमाल करके हिंसा के माध्यम से दुनिया को नष्ट करना चाहते हैं, तो मैं इसे कैसे रोक सकता हूं?' 41
क्रिप्स को लगा था कि गांधी 'वास्तव में अराजकता की स्थिति उत्पन्न
करना चाहते होंगे।' 42 यह उनकी संवैधानिक मिशन की विफलता से उत्पन्न निराशा में की गई एक क्षणिक टिप्पणी हो सकती है, लेकिन इस समय गांधी के कुछ कथन एक ऐसे आध्यात्मिक प्रयोग का प्रस्ताव देने के बेहद करीब प्रतीत होते हैं जिसमें राष्ट्रीय भावनाओं का उथल-पुथल अंततः विवेक और व्यवस्था उत्पन्न करेगा। 'उन्हें भारत को ईश्वर के हवाले कर देना चाहिए या आधुनिक भाषा में कहें तो अराजकता के हवाले। तब सभी दल कुत्तों की तरह आपस में लड़ेंगे, या जब वास्तविक जिम्मेदारी उनके सामने आएगी, तो एक उचित समझौते पर पहुँचेंगे।' 43 ऐसा प्रतीत होता है कि वे ब्रिटिश वापसी के बाद अराजकता के दौर का स्वागत कर रहे थे, क्योंकि 'वह अराजकता कुछ समय के लिए आंतरिक युद्ध या बेलगाम डकैती को जन्म दे सकती है।' इन्हीं से उस झूठे भारत की जगह एक सच्चा भारत उभरेगा जिसे हम देखते हैं।’ 44 उन्होंने यूरोप में हवाई

हमलों से हुई तबाही में तकनीकी रूप से उन्नत सभ्यता का अंत देखा, जो चरखे में उनके विश्वास की पुष्टि थी: ‘शहरों का युग समाप्त हो रहा है। “गांवों की ओर लौटो” का नारा आज से पहले कभी इतना सच नहीं था।’ 45
गांधी ने संशयवादी सहयोगियों को यह समझाने का प्रयास किया कि उपमहाद्वीप को अहिंसा के लिए एक परीक्षण स्थल बनाना कितना लाभकारी है, एक ऐसा अराजकता का केंद्र जहाँ अहिंसा को हर समस्या का समाधान माना जाता है। गांधी के कांग्रेस कार्य समिति को दिए गए प्रस्ताव के अनुसार समिति को यह कहना अनिवार्य था कि ‘ब्रिटिशों को भारत से वापस चले जाना चाहिए… समिति को आशा है कि जापान की भारत पर कोई योजना नहीं होगी।’ हमले की स्थिति में ‘समिति कांग्रेस से मार्गदर्शन लेने वाले सभी लोगों से अपेक्षा करती है कि वे जापानी सेनाओं को पूर्ण अहिंसक असहयोग प्रदान करें और उन्हें किसी भी प्रकार की सहायता न दें।’ 46
गांधी के प्रस्ताव में नेहरू और उनके अन्य सहयोगियों ने कार्यकारी समिति की बैठक में महत्वपूर्ण बदलाव किए, ताकि धुरी शक्तियों के प्रति स्पष्ट सहानुभूति को हटाकर मित्र देशों के प्रति सहानुभूति के संकेत शामिल किए जा सकें। यही प्रस्ताव 'भारत छोड़ो प्रस्ताव' के नाम से जाना गया (यह वाक्यांश गांधी का नहीं था), जिसे अंततः 14 जुलाई 1942 को कार्यकारी समिति द्वारा पारित किया गया और 7-8 अगस्त को बंबई में पूर्ण कांग्रेस के समक्ष रखा गया। अब इसमें जापान के विरुद्ध युद्ध जारी रखने के इच्छुक लोगों की इच्छाओं का सम्मान करते हुए यह आश्वासन भी शामिल किया गया था कि मित्र देशों की सशस्त्र सेनाएँ जापानी आक्रमण का प्रतिरोध करने और चीन की सहायता करने के लिए भारत में रह सकती हैं। यह भी एक विचारणीय बिंदु था कि कांग्रेस अमेरिका को नाराज़ नहीं करना चाहती थी, क्योंकि अमेरिका भारतीय स्वतंत्रता के प्रति सहानुभूति रखता था। नेहरू ब्रिटिशों के लिए समस्याएँ पैदा करने के इच्छुक नहीं थे, क्योंकि वे फासीवाद से लड़ने में व्यस्त थे, लेकिन उन्होंने गांधी का साथ दिया। गांधी ने समिति को एक मंत्र दिया: ‘करो या मरो। हम या तो भारत को आज़ाद कराएंगे या इस प्रयास में मर जाएंगे; हम अपनी गुलामी को कायम रहते नहीं देखेंगे।’ 47 यह प्रस्ताव गैर-कांग्रेसी भारतीयों के बीच सर्वसम्मति से पारित हुआ: मुसलमानों और उदारवादियों से लेकर अछूतों और रियासतों तक, सभी ने इसकी निंदा की। जिन्ना का मानना था कि संवैधानिक समझौते के बिना

अंग्रेजों की वापसी का उद्देश्य एक हिंदू राज की स्थापना करना होगा जिसमें अल्पसंख्यकों के हितों को बेरहमी से कुचल दिया जाएगा। कांग्रेस भविष्य की समझ खो चुकी थी, वे अतीत की लड़ाइयाँ लड़ रहे थे: यदि भारत की स्वतंत्रता के कट्टर विरोधी चर्चिल ने भी यह स्वीकार कर लिया था कि युद्ध के बाद डोमिनियन का दर्जा मिलेगा, तो स्वतंत्रता के लिए संघर्ष अब अंग्रेजों के साथ नहीं रह गया था। युद्ध के बाद कांग्रेस को भारत के भीतर विभिन्न समूहों, विशेष रूप से मुसलमानों और रियासतों पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता थी।
गांधी जी को किसी शत्रु पर तब हमला करने में जो झिझक थी, जब वह शत्रु
किसी ऐसी विपत्ति का सामना कर रहा हो जिसका मौजूदा मामले से कोई संबंध न हो, वह अब मानो भुला दी गई थी। तीन साल पहले उन्होंने सुभाष चंद्र बोस को चेतावनी दी थी कि भारत अंग्रेजों को जाने के लिए कहने को तैयार नहीं है, और तब से ऐसा कुछ भी नहीं हुआ जिससे देश इस मामले में अधिक तैयार हो सके। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया था कि हिंसा भड़कने पर भी वे अभियान नहीं रोकेंगे – हालांकि उनका इरादा हिंसा भड़काने का नहीं था, लेकिन इससे हिंसा को रोकने का भी कोई आशय नहीं था।
चर्चिल के युद्ध मंत्रिमंडल ने अपने सर्वोत्तम प्रस्ताव के ठुकराए
जाने के बाद अराजकतापूर्ण विकल्प के लिए तैयारी कर ली थी और वायसराय को कांग्रेस के खिलाफ कड़े कदम उठाने का अधिकार दे दिया था। उनके अनुसार, 1930 की सबसे बड़ी गलती गांधी को समय रहते गिरफ्तार न करना थी, जिसके कारण नमक विरोध प्रदर्शन को गति मिली। वे यह गलती दोबारा नहीं दोहराना चाहते थे। 8 अगस्त की रात को 'भारत छोड़ो प्रस्ताव' पारित किया गया; अगली सुबह तड़के ही कांग्रेस कार्य समिति के सभी सदस्यों को गिरफ्तार कर लिया गया। जो लोग रिहा हुए, वे भूमिगत हो गए और कांग्रेस समर्थकों को सरकार को हर संभव तरीके से पंगु बनाने का निर्देश दिया। दंगाई भीड़ ने ब्रिटिश संपत्ति और ब्रिटिश शासन के प्रतीकों, जैसे रेलवे स्टेशनों और डाकघरों पर हमला किया, जिनमें से सैकड़ों नष्ट या क्षतिग्रस्त हो गए। अधिक संगठित विरोध प्रदर्शनों में युद्ध प्रयासों को बाधित करने के प्रयास किए गए: टेलीफोन और टेलीग्राफ के तार काट दिए गए और पुलों को उड़ा दिया गया। हालांकि, सैनिक वफादार बने रहे: अधिकारियों ने करारा जवाब दिया, सैकड़ों सैनिक मारे गए और विद्रोह कुछ ही हफ्तों में शांत हो गया। यदि कभी इस बात

का प्रमाण चाहिए था कि भारतीय राष्ट्रवाद के लिए अहिंसा सही रणनीति थी, तो निश्चित रूप से यह हिंसा की किसी भी राजनीतिक उद्देश्य को प्राप्त करने में विफलता ही थी।
गांधी जी को सरोजिनी नायडू, मीराबेन और महादेव देसाई के साथ पुणे के
पास आगा खान महल में नजरबंद कर दिया गया था, जिसे अंग्रेजों ने युद्ध सेवा के लिए अधिग्रहित कर लिया था। देसाई उनके साथ ज्यादा समय तक नहीं रहे; उनकी गिरफ्तारी के एक सप्ताह से भी कम समय बाद गांधी जी के वफादार सचिव को दिल का दौरा पड़ गया। गांधी जी ने उनका नाम पुकारते हुए कहा, 'काश वो अपनी आंखें खोलकर मुझे देख लेते तो वो नहीं मरते', लेकिन मात्र पचास वर्ष के देसाई का निधन हो चुका था। 48 गांधी जी इस बात से दुखी थे कि देसाई की मृत्यु पर राष्ट्रीय प्रतिक्रिया इतनी शांत और संयमित थी; शोक की कोई बड़ी अभिव्यक्ति नहीं हुई। गांधी जी शायद इस बात को समझने में विफल रहे कि उनके लिए महत्वपूर्ण व्यक्ति और राष्ट्र के लिए महत्वपूर्ण व्यक्ति में क्या अंतर है, शायद उन्होंने दोनों को एक ही मान लिया था।
प्यारेलाल को देसाई के स्थान पर गांधीजी के सचिव के रूप में शामिल होने की अनुमति दी गई। हमेशा की तरह, गांधीजी ने सबसे कठिन समय में एक नेता के रूप में अपने सर्वोत्तम गुण दिखाए, और अपने सहयोगियों को मृत्यु से निपटने के लिए प्रेरित करते हुए हर दिन को व्यस्त कार्यक्रम में शामिल किया: अध्ययन, प्रार्थना और अन्य गतिविधियाँ। उन्होंने कहा, 'हमें खुद को इतना व्यस्त रखना चाहिए कि व्यर्थ के विचारों के लिए समय ही न बचे, चाहे वे निराशाजनक हों या कुछ और।' 49 उन्हें एक ऐसा काम करने के लिए राजी किया गया, जिसमें वे अपने साथियों को अपनी जीवन कहानी सुनाते थे, इसलिए उनके प्रमुख जीवनीकारों प्यारेलाल और सुशीला नायर ने कई ऐसे विवरण सुने जो उनकी आत्मकथाओं में नहीं मिलते।
कस्तूरबा को हालांकि शुरुआती कार्रवाई में गिरफ्तार नहीं किया गया था, लेकिन एक दिन के भीतर ही उन्हें हिरासत में ले लिया गया क्योंकि उन्होंने गांधी जी के स्थान पर एक विरोध सभा में भाषण देने की धमकी दी थी। उनके साथ आई सुशीला नायर को भी हिरासत में ले लिया गया। कस्तूरबा अपने पति को फटकार लगाने में सक्षम रहीं: 'क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि इस शक्तिशाली सरकार से झगड़ा मत करो? तुमने मेरी बात नहीं मानी और अब हम सबको इसका खामियाजा भुगतना पड़ रहा है।' 50

वायसराय ने पूरे भारत में हो रही हिंसा के लिए गांधी को दोषी ठहराया, इस आरोप से वे इतने आहत हुए कि 9 फरवरी 1943 से उन्होंने इक्कीस दिनों का उपवास रखा। अधिकारियों को पूरी उम्मीद थी कि उनकी मृत्यु हो जाएगी और उन्होंने समाचारों पर थोड़े समय के लिए रोक लगाने जैसी आकस्मिक व्यवस्थाएँ कर रखी थीं, ताकि उनकी मृत्यु की स्थिति में स्थानीय सरकारों को संभावित अशांति से निपटने के लिए समय मिल सके। वास्तव में, यह उपवास, जिसके दौरान उनके पीने के पानी में नींबू का रस, नमक और अन्य खनिज मिलाए गए थे, बिना किसी घटना के संपन्न हुआ। लॉर्ड लिनलिथगो ने चर्चिल को तार भेजा कि गांधी 'दुनिया के सबसे सफल पाखंडी' हैं - दोनों को उपवास में कुछ धोखाधड़ी का संदेह था, लेकिन यह साबित नहीं हुआ। चर्चिल ने जवाब दिया, 'अब तो लगभग निश्चित लगता है कि यह बूढ़ा बदमाश अपने तथाकथित उपवास से और भी बेहतर होकर उभरेगा।' 51 हो सकता है कि कोई और, शायद सुशीला, उनकी जानकारी के बिना उनके पानी में ग्लूकोज या अन्य पोषक तत्व मिला रही हो, हालाँकि उन्होंने स्पष्ट रूप से इससे इनकार किया।
गांधी जी के कारागार जीवन के बारे में रिपोर्टों में यह उल्लेख मिलता
है कि उन्होंने अपनी पत्नी को वही शिक्षा देना जारी रखा जो उन्होंने शादी के बाद शुरू की थी: वे अब उन्हें भारत का इतिहास और भूगोल पढ़ा रहे थे। कहा जाता है कि उनकी पत्नी ने मासूमियत से पूछा, 'आप अंग्रेजों को भारत छोड़ने के लिए क्यों कह रहे हैं? हमारा देश विशाल है, हम सभी वहां रह सकते हैं। अगर वे चाहें तो रह सकते हैं, लेकिन उनसे कहिए कि वे हमारे भाई बनकर रहें।' 52
कस्तूरबा अनियमित हृदय गति, सांस फूलने और सीने में दर्द से पीड़ित
थीं; उन्हें 1943 के अंत में पहला दिल का दौरा पड़ा और अगले वर्ष की शुरुआत में दो और दौरे पड़े। वह बरामदे में बैठी रहती थीं और गांधी जी उनका हाथ थामे रहते थे। पश्चिमी या आयुर्वेदिक, किसी भी दवा का उन पर कोई असर नहीं हो रहा था, इसलिए गांधी जी ने उन्हें बंद कर दिया। उनके बच्चे और परिवार के अन्य सदस्य उनसे मिलने आते थे, सिवाय हरिलाल के, जिनके लिए उन्होंने अनुरोध किया था। गांधी जी ने पुलिस को हरिलाल की तलाश करने को कहा और पता चला कि उन्होंने अपनी मां से मिलने की कोशिश की थी, लेकिन आगा खान महल के द्वार पर इतने नशे में पहुंचे थे कि उन्हें अंदर नहीं आने दिया गया। बाद में वह उनसे मिल पाए, और रामदास और देवदास के भी आने के कारण वह

अपने चार बेटों में से तीन से मिल पाईं (मनीलाल दक्षिण अफ्रीका में थे)। अगली बार जब हरिलाल उनसे मिलने आए तो वह फिर से नशे में थे, जिससे उनकी मां इतनी परेशान हो गईं कि उन्होंने मुट्ठी से अपना माथा पीटना शुरू कर दिया; उन्हें बाहर निकाल दिया गया और फिर वापस आने की अनुमति नहीं दी गई।
22 फरवरी 1944 को गांधी जी की गोद में कस्तूरबा का निधन हो गया। उनका वैवाहिक जीवन साठ वर्षों से अधिक चला। गांधी जी ने अन्य महिलाओं के साथ मिलकर उनके पार्थिव शरीर को स्नान कराया और उनकी इच्छा के अनुसार अपने बुने हुए धागे से बनी साड़ी में लपेटा। सरकार एक बड़ा सार्वजनिक अंतिम संस्कार नहीं चाहती थी, क्योंकि इससे प्रदर्शन का रूप ले सकता था। इसलिए उनका अंतिम संस्कार महल परिसर में ही किया गया। इसके लिए वही लकड़ी इस्तेमाल की गई जो गांधी जी के अंतिम संस्कार के लिए महल में लाई गई थी, यदि उनका अंतिम उपवास के दौरान निधन हो जाता। मित्रों और रिश्तेदारों को परिसर में आने की अनुमति दी गई थी। उनका अंतिम संस्कार परिसर के उस कोने में किया गया जहाँ पहले देसाई के पार्थिव शरीर का अंतिम संस्कार हुआ था। गांधी जी चिता के पास तब तक बैठे रहे जब तक वह पूरी तरह जलकर राख नहीं हो गई। कई बार उन्हें आराम करने के लिए कहा गया, लेकिन उन्होंने यह कहते हुए इनकार कर दिया: 'बासठ वर्षों के साथ के बाद मैं उन्हें इस हालत में कैसे छोड़ सकता हूँ? मुझे यकीन है कि वह मुझे इसके लिए कभी माफ नहीं करेंगी।' कस्तूरबा की चूड़ियाँ राख में सुरक्षित पाई गईं - यह उन लोगों के लिए एक शुभ संकेत था जो संकेतों और प्रतीकों में विश्वास करते हैं।
‘ऐसा लगा जैसे बापू का एक अंश शरीर से अलग हो गया हो,’ मीराबेन ने कस्तूरबा की मृत्यु के बारे में कहा। 54 उन्होंने इस पर चिंतन करना सीखा और उनकी मृत्यु के एक वर्ष बाद वे लिख पाए: ‘शायद आप नहीं जानते कि बा की कमियों के कारण मेरी कितनी योजनाएँ विफल हो गईं। मैंने यथासंभव सख्ती बरती। लेकिन सीमा हमेशा सामने आ जाती थी।’ 55 बाद के वर्षों में वे यह बताते हुए प्रसन्न होते थे कि उन्होंने कस्तूरबा के अपनी इच्छा के विरुद्ध जाने से कितना कुछ सीखा। वह अक्सर उनके नियमों का उल्लंघन करती थीं, यहाँ के एक निवासी के अनुसार, ‘बापू को अंत में हार माननी पड़ी और यह घोषणा करनी पड़ी कि बा आश्रम के नियमों से मुक्त हैं।’ 56 उनके पोते अरुण गांधी को आश्रम की अपनी पहली यात्रा याद है जब वे चार वर्ष के थे। जब वे पहुँचे तो उन्हें बुखार था और गांधी ने उन्हें एक सप्ताह का उपवास रखने को

कहा। तीसरे दिन बुखार उतर गया और उनकी माँ ने गांधी से पूछा कि क्या अब वे खाना खा सकते हैं। जब गांधी ने मना कर दिया, तो बच्चा रोने लगा। कस्तूरबा ने बिना बहस किए उसे संतरे का रस देते हुए कहा: ‘मैं इस बच्चे को भूखा नहीं रहने दूंगी।’ गांधी जी ने मना कर दिया, और अरुण को उनकी ‘अजीब सी मुस्कान और थोड़ी सी निराशा’ याद रह गई। 57
गांधी ने उन्हें राष्ट्रीय अभियानों से संबंधित नियमों का उल्लंघन
करने पर फटकार लगाई थी। उनके सभी अनुयायियों को उन हिंदू मंदिरों का बहिष्कार करना था जो अछूतों को प्रवेश नहीं देते थे। उड़ीसा की यात्रा के दौरान, कस्तूरबा और महादेव देसाई की पत्नी ने जगन्नाथ पुरी मंदिर का दौरा किया, जो भारत के सबसे महत्वपूर्ण मंदिरों में से एक है, लेकिन वहां अछूतों का प्रवेश वर्जित था। गांधी ने उसी शाम एक सार्वजनिक प्रार्थना सभा में उनके व्यवहार की निंदा की, लेकिन मुख्य रूप से स्वयं और महादेव को अपनी पत्नियों को बेहतर शिक्षा न देने के लिए दोषी ठहराया; दोनों ने उपवास किया। कस्तूरबा ने कभी भी 'गांधीवाद' नहीं अपनाया था; वह हमेशा एक रूढ़िवादी हिंदू थीं, लेकिन इसी कारण उन्हें अपने पति का साथ देना पड़ा। उनके एक मित्र ने उनसे कहा: 'हमें अपने रूढ़िवादी विचारों पर कायम रहना चाहिए और अपने घरों में अछूतों को प्रवेश नहीं देना चाहिए और किसी मुसलमान द्वारा छुआ हुआ पानी नहीं पीना चाहिए, लेकिन ये बातें आपके लिए नहीं हैं। आपके लिए उच्च आदर्श अपने पति का अनुसरण करना है।' 58
चाहे वह सचमुच, जैसा कि गांधी ने साहसपूर्वक कहा था, 'अहिंसक असहयोग की कला और अभ्यास में मेरी शिक्षिका' थीं, उन्होंने निश्चित रूप से उनके दुखों को साझा किया। 59 गांधी ने अपने बचपन के नायक राजा हरिश्चंद्र के सबक को सचमुच जिया था, जिनके परिवार को उनके महान सिद्धांतों के लिए कष्ट सहना पड़ा था: हरिलाल की मृत्यु 1948 में पचास वर्ष की आयु में तपेदिक से हुई, जो शराब की लत से और बढ़ गई थी।
अपनी पत्नी और सचिव की मृत्यु के साथ-साथ, गांधीजी अपने दो करीबी दोस्तों, 1940 में चार्ल्स एंड्रयूज और 1942 में कपास व्यापारी जमनालाल बजाज की मृत्यु से भी गहरे सदमे में थे। इसी दौरान उन्हें मलेरिया का गंभीर दौरा पड़ा; उनका रक्तचाप वर्षों में सबसे अधिक था। सुशीला, जो उनके स्वास्थ्य की निगरानी कर रही थीं, ने पाया कि वे एनीमिया, हुकवर्म, पेचिश, तेज बुखार और अवसाद से पीड़ित थे। नए वायसराय लॉर्ड वेवेल को लगा कि

हिरासत में तीसरी मृत्यु से भारत छोड़ो आंदोलन को नई ऊर्जा मिलेगी, जो उस समय लगभग निष्क्रिय हो चुका था। सैन्य स्थिति भी कम खतरनाक थी: भारतीय सेना अपनी सबसे बड़ी संख्या में थी, अच्छी स्थिति में थी, और जापानी सेना धीरे-धीरे पीछे हट रही थी। 6 मई 1944 को गांधीजी को अंतिम बार जेल से रिहा किया गया। अपने चौहत्तर वर्षों में से वे दक्षिण अफ्रीका और भारत में छह से अधिक वर्षों तक जेल में रहे थे।

11

विभाजन और मृत्यु पेशेवर सैनिक लॉर्ड वेवेल को वाद-विवाद में पड़ने की बजाय कार्यकुशलता में अधिक रुचि थी। उन्होंने कांग्रेस और अन्य संगठनों द्वारा भारत की समस्याओं को व्यावहारिक तरीके से हल करने का स्वागत किया; उन्हें 'भारत छोड़ो' या किसी अन्य नारेबाज़ी के प्रति कोई सम्मान नहीं था। उन्होंने अकालग्रस्त बंगाल के लिए तुरंत राहत कार्य का आयोजन किया, एक ऐसा कार्य जिसे उनके कुलीन पूर्ववर्ती ने उपेक्षित कर दिया था। एक सुसंस्कृत और बहुमुखी प्रतिभा के धनी, कविता लेखक वेवेल, उन प्रशासकों की निम्न गुणवत्ता से स्तब्ध थे जिन्हें भारत का शासन चलाने के लिए छोड़ दिया गया था जबकि बेहतर लोग युद्ध कार्य में लगे हुए थे। उन्होंने इस विषय पर अपने स्वयं के विचारों के बावजूद गांधी को रिहा कर दिया: 'व्यक्तिगत रूप से मुझे नहीं लगता कि मृत्यु के कगार पर उन्हें रिहा करके हमें कोई विशेष श्रेय मिलेगा; और यदि वे मृत्यु के कगार पर नहीं थे तो इतनी जल्दी करने की कोई आवश्यकता नहीं थी।'
चर्चिल गांधी को रिहा करने के लिए इसलिए सहमत हुए थे क्योंकि यह माना
जा रहा था कि उनका स्वास्थ्य इतना अच्छा नहीं होगा कि वे सक्रिय राजनीति में लौट सकें। लेकिन अपने दुश्मनों को चौंकाने की अपनी आदत के चलते, गांधी अपने धनी समर्थकों के घरों में स्वास्थ्य लाभ करते हुए जल्दी ही स्वस्थ हो गए और पहले जैसे हो गए। उन्होंने (अभी भी कैद में मौजूद) कांग्रेस कार्य समिति के सदस्यों और वायसराय से मिलने की इच्छा जताई। संयुक्त प्रांत के गवर्नर सर मौरिस हैलेट गांधी को 'बंदरों से भरी गाड़ी जितना चालाक' मानते थे और उन्होंने वेवेल को उनसे न मिलने की सलाह दी। 2 चर्चिल, यह सोचकर कि गांधी अभी तक मरे क्यों नहीं, वायसराय द्वारा खराब स्वास्थ्य के आधार पर हाल ही में रिहा किए गए कैदी को शाही तरजीह देने के खिलाफ थे। वेवेल ने केवल इतना सुझाव दिया कि यदि गांधी के पास 'भारत के कल्याण को बढ़ावा देने के लिए कोई निश्चित और रचनात्मक नीति' हो, तो वे उस पर विचार करने के लिए तैयार होंगे। 'भारत छोड़ो आंदोलन' ने राष्ट्रवादियों को भारी कीमत चुकानी पड़ी थी, क्योंकि ब्रिटिश सरकार ने उन्हें काफी छूट देने की पेशकश की थी। वेवेल की यह इच्छा कि वे अपने पत्राचार में कम से कम विनम्र

रहें, इस तथ्य से विफल हो गई कि उनसे अपेक्षा की जाती थी कि वे गांधी को लिखे गए हर पत्र के लिए लंदन की स्वीकृति प्राप्त करें, इसलिए व्हाइटहॉल के हस्तक्षेप से उनके मसौदे को और अधिक तीक्ष्ण और अहंकारी बना दिया गया। गांधी जी अक्सर कहते थे: ‘मैं भारत का विभाजन पाप मानता हूँ’, लेकिन वास्तव में दृष्टिकोण में एक बड़ा बदलाव आ चुका था। 3 वरिष्ठ कांग्रेसी नेता राजगोपालाचारी ने भारत छोड़ो आंदोलन में भाग नहीं लिया था और इसलिए वे स्वतंत्र रहे। एक सम्मानित राजनीतिज्ञ होने के नाते और परिवार के सदस्य होने के नाते (उनकी बेटी का विवाह गांधी जी के पुत्र देवदास से हुआ था) उनकी गांधी जी तक पहुँच थी, और उन्होंने फरवरी 1943 में आगा खान पैलेस का दौरा किया। वहाँ उन्होंने एक योजना रखी, जिसे गांधी जी ने स्वीकार कर लिया, जिसमें कांग्रेस-मुस्लिम लीग की राष्ट्रीय सरकार और मुस्लिम बहुल प्रांतों के अलग होने की इच्छा का निर्धारण करने के लिए जनमत संग्रह का प्रस्ताव था। अलगाव की स्थिति में, रक्षा, वाणिज्य और संचार जैसे मामलों को आपसी समझौतों के माध्यम से सुलझाया जाएगा। यह एक ऐसा संघ होगा जिसमें मुस्लिम बहुल प्रांतों में स्थानीय मुस्लिम शासन का वादा होगा। दूरदर्शी राजगोपालाचारी, जो बाद में पहले भारतीय गवर्नर जनरल बने, के दो उद्देश्य थे। पहला उद्देश्य युद्ध के दौरान भारत की अखंडता को बनाए रखना और जापान की चुनौती का सामना करना था, जिसे वे अपने देश का प्रमुख शत्रु मानते थे। दूसरा, वे स्वतंत्रता मिलने के बाद भारत को एक संयुक्त हिंदू और मुस्लिम राज्य के रूप में बरकरार रखना चाहते थे, जब आक्रमण का भय और अंग्रेजों के प्रति असंतोष अतीत की बात हो जाएगी; और एक लोकप्रिय सरकार को राष्ट्र के भविष्य का निर्धारण करना होगा।
जुलाई 1944 तक राजगोपालाचारी अपना फॉर्मूला जनता के सामने पेश करने के लिए तैयार थे। उन्होंने जिन्ना से कहा कि गांधी अड़ियल नहीं हैं, लेकिन जिन्ना को यह बात स्वयं गांधी से सुननी होगी, और देश के संवैधानिक भविष्य पर दोनों के बीच बातचीत की घोषणा की गई। गांधी की जिन्ना से मुलाकातों का दूरगामी प्रभाव विनायक सावरकर के समर्थकों को प्रेरित करना था, जो एक हिंदू उग्रवादी थे जिनके विचारों से गांधी का पैंतीस साल पहले लंदन में मतभेद हुआ था, और जिनके तर्कों के जवाब में उन्होंने हिंद स्वराज लिखा था। जब गांधी की जिन्ना से मुलाकात की घोषणा हुई, तो सावरकर के दो अनुयायी, नाथूराम गोडसे और एल.जी. थाट्टे, कुछ समर्थकों के साथ सेवाग्राम स्थित

गांधी के आश्रम पहुंचे, ताकि उन्हें वहां से जाने से रोकने के लिए धरना दे सकें। पुलिस ने नेताओं को गिरफ्तार कर लिया और थाट्टे के पास से एक खंजर बरामद किया, जिसने कहा कि गांधी को एक शहीद मार डालेगा। अखिल भारतीय हिंदू महासभा के अध्यक्ष के रूप में सावरकर ने भारत के लिए राज्य सचिव लियो एमरी को चेतावनी दी थी: 'हिंदू महासभा के अनुयायी अपने वतन और पवित्र भूमि भारत के संघ के टूटने को कभी बर्दाश्त नहीं कर सकते।' 4
गांधी ने जिन्ना से चौदह बार बात की, हर बार वे माउंट प्लेजेंट रोड पर बिड़ला परिवार के साथ जहां ठहरे थे, वहां से बॉम्बे के उसी विशिष्ट मालाबार हिल इलाके में स्थित जिन्ना के घर तक पैदल गए। गांधी को जिन्ना के साथ मुलाकातें थका देने वाली लगीं; जिन्ना ने पहले पूछा था कि अगर वे केवल अपना ही प्रतिनिधित्व कर रहे हैं तो उनसे बात करने का क्या मतलब है। गांधी ने राजगोपालाचारी को समझाया, 'यह धैर्य की परीक्षा थी। मैं अपने ही धैर्य पर चकित था।' पाकिस्तान के मुद्दे पर जोर दिए जाने पर, गांधी ने जिन्ना से कहा: 'मैं राजजी [राजगोपालाचारी] के सूत्र का समर्थन करता हूं और आप चाहें तो इसे पाकिस्तान कह सकते हैं।' 5
इसलिए गांधी जी राजगोपालाचारी के फार्मूले की तरह, स्वतंत्रता के बाद जनमत संग्रह द्वारा अलगाव के लिए कांग्रेस से अनुरोध करने को तैयार थे। फिर भी यह जिन्ना को संतुष्ट नहीं कर पाया, जो अपने पाकिस्तान को गांधी जी द्वारा समर्थित शक्तियों से कहीं अधिक बड़ा और संप्रभु बनाना चाहते थे, और वे इसे स्वतंत्रता से पहले ही चाहते थे। सिद्धांत पर सहमति तो बन गई, लेकिन गांधी जी बाद में पीछे हट गए। उन्होंने भारत में मुसलमानों के एक अलग राष्ट्र होने के पूरे सिद्धांत की फिर से आलोचना करना शुरू कर दिया, विशेष रूप से इसलिए कि यदि जनमत संग्रह होता, तो जिन्ना मुस्लिम-बहुसंख्यक प्रांतों में गैर-मुसलमानों को इस मुद्दे पर मतदान का अधिकार नहीं देना चाहते थे - जो कि एक लोकतांत्रिक प्रक्रिया नहीं थी।
वेवेल दोनों नेताओं को ‘हठी, अड़ियल और धूर्त बूढ़े’ मानते थे, लेकिन कम से कम उन्हें इतना तो लगता था कि वे कुछ हासिल कर सकते हैं। पर उनका निष्कर्ष था: ‘दो विशाल पर्वत टकराए हैं, पर एक चूहा भी नहीं निकला।’ 6 वेवेल ने उनके बीच के अंतरों का विश्लेषण किया: जिन्ना पहले पाकिस्तान चाहते थे और बाद में स्वतंत्रता, ‘जबकि गांधी पहले स्वतंत्रता चाहते थे और मुसलमानों को किसी प्रकार का आत्मनिर्णय देना चाहते थे, जो एक अंतरिम

सरकार द्वारा दिया जाना था, जिसमें मुख्य रूप से हिंदू बहुमत होगा।’ 7 जिन्ना को यह विश्वास ही नहीं था कि हिंदू-बहुसंख्यक सरकार मुसलमानों को किसी भी स्तर का आत्मनिर्णय देगी। वे अंग्रेजों के जाने से पहले उनसे पाकिस्तान हासिल करने की उम्मीद कर रहे थे।
जनवरी 1945 में दोनों बीमार पड़ गए थे, जिन्ना को फुफ्फुसशोथ
(प्लूरिसी) हो गया था, जिसके कारण उनकी बैठकें जारी नहीं रह सकीं, जो वैसे भी सौहार्दपूर्ण नहीं रह गई थीं। गांधी जी अक्सर राष्ट्रीय संघर्ष में अपना पूरा शरीर समर्पित करने के लिए जाने जाते थे, और जिन्ना भी कम नहीं थे: बीमारी से जूझते हुए भी उन्होंने एक भावहीन व्यक्तित्व बनाए रखा; हर सार्वजनिक उपस्थिति के लिए उन्हें दृढ़ इच्छाशक्ति का प्रयास करना पड़ता था।
जिन्ना ने थोड़ा आराम महसूस करते हुए गांधीजी को बताया कि उनके एक पैर में तंत्रिका संबंधी दाने हो गए हैं। गांधीजी ज़मीन पर घुटने टेककर बैठ गए और उनसे अपने जूते-मोज़े उतारने को कहा। फिर उन्होंने प्रभावित हिस्से को छूते हुए कहा, “मुझे पता है कि आपको क्या ठीक करेगा। मैं इसे कल सुबह भेज दूंगा।” उन्होंने उपचार करने वाली मिट्टी का एक डिब्बा भेजा, जिसे जिन्ना ने हमेशा की तरह विनम्रता से स्वीकार कर लिया और कहा कि उन्हें सुधार दिखाई दे रहा है, लेकिन वास्तव में उन्होंने गांधीजी द्वारा दी गई किसी भी अन्य चीज़ की तरह इसका भी कोई उपयोग नहीं किया। 8 जहाँ तक स्वयं गांधीजी के स्वास्थ्य की बात है, वे थकावट, अमीबिक पेचिश और श्वासावरोध की खांसी से पीड़ित थे। इन बीमारियों के इलाज के लिए उन्होंने उपवास का सुझाव दिया। राजगोपालाचारी ने बड़ी चतुराई से एक महीने के लिए ‘कार्य-उपवास’ का सुझाव दिया। गांधीजी को नई चीजों का शौक था, इसलिए उन्होंने उपवास कर लिया।
वेवेल ने अन्य कांग्रेस नेताओं की रिहाई के लिए ब्रिटिश राजनेताओं से पैरवी की – चर्चिल ने उन्हें तब तक कैद में रखा था जब तक कि उनकी हिरासत का कोई उपयोगी उद्देश्य पूरा नहीं हो गया था। अंततः जून 1945 में वायसराय एक रेडियो प्रसारण में कांग्रेस कार्यकारी समिति की रिहाई की घोषणा करने में सक्षम हुए। भारतीय नेताओं को अब शिमला में वायसराय के साथ एक नई अंतरिम सरकार परिषद के गठन पर चर्चा करने के लिए आमंत्रित किया गया था। गांधी को आमंत्रित किया गया था, और वे परामर्श के लिए शहर गए लेकिन बैठकों

में शामिल नहीं हुए। ट्रेन से अपनी यात्रा के दौरान उनका स्वागत 'प्रेम या आनंद से उन्मादी और बहरे' भीड़ ने किया। 9 जिन्ना ने सोचा कि सम्मेलन में शामिल न होने का विकल्प 'गांधी की एक और चाल थी; जब उनके लिए उपयुक्त होता था तो वे कांग्रेस से संबंधित होने का दिखावा नहीं करते थे, लेकिन जब आवश्यक होता था तो वे कांग्रेस के तानाशाह के रूप में प्रकट होते थे, जिसे हर कोई जानता था कि वे थे।' 10
वेवेल के सम्मेलन की कार्यवाही जिन्ना के इस ज़िद के कारण बाधित हो गई कि केवल लीग ही मुसलमानों का प्रतिनिधित्व करे। इसका कुछ कारण जिन्ना का स्वभाव था, लेकिन यह सरकारी नीति का भी परिणाम था। न तो वेवेल और न ही चर्चिल कांग्रेस के प्रभुत्व वाले संवैधानिक सम्मेलन को देखने के लिए तैयार थे, इसलिए उन्होंने लीग को कांग्रेस के बराबर दर्जा दे दिया। यह एक ऐसा खतरा था जिसे कांग्रेस को 1939 में ही भांप लेना चाहिए था जब उन्होंने प्रांतीय मंत्रालयों से खुद को अलग कर लिया और मुस्लिम लीग के लिए एक राजनीतिक शून्य छोड़ दिया। जिन्ना का हठधर्मी रुख राजनीतिक रूप से उनके लिए सही था: उन्होंने गैर-मुस्लिम लीग के सहधर्मियों के खिलाफ़ अपनी स्थिति मजबूत की, जिन्हें अब लगता था कि लीग के बाहर प्रगति संभव नहीं है। भारत में घटनाक्रम 1945 के ब्रिटिश चुनावों से गति पकड़ गए, जिसमें जुलाई में लेबर पार्टी सत्ता में आई; लेबर या लिबरल पार्टी की जीत हमेशा से प्रगतिशील भारतीय राजनीति के लिए शुभ मानी जाती रही थी। सरकार का नेतृत्व क्लेमेंट एटली कर रहे थे, जिन्होंने 1942 में क्रिप्स को डोमिनियन स्टेटस का प्रस्ताव देने के लिए भेजा था। साइमन आयोग के सदस्य होने के नाते, वे संवैधानिक समस्याओं और भारतीय राष्ट्रवादी भावना की प्रबलता दोनों से भली-भांति परिचित थे।
भारत में 1945-46 में केंद्रीय विधानसभा और प्रांतीय विधानसभाओं के लिए चुनाव होने थे। ये चुनाव हुए और स्वतंत्रता के पक्ष में मतदान हुआ, जो कि 1935 के भारत सरकार अधिनियम के तहत हुए। कांग्रेस ने स्वतंत्रता के सिद्धांत पर चुनाव प्रचार किया, जबकि मुस्लिम लीग ने पाकिस्तान के निर्माण के सिद्धांत पर। दोनों दलों के बीच लगभग सीधा मुकाबला हुआ, जिसमें मुस्लिम लीग ने विधानसभा की सभी आरक्षित सीटें और प्रांतीय विधानसभाओं की 80 प्रतिशत से अधिक मुस्लिम सीटें जीत लीं; कांग्रेस विधानसभा में सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी और प्रांतीय सीटों में से 90

प्रतिशत सीटें जीतकर आठ प्रांतों में सरकार बनाई और एक अन्य प्रांत में गठबंधन सरकार में हिस्सेदारी हासिल की।
गांधी ने इन मामलों में कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई। उन्होंने स्पष्ट
किया, ‘मैं वर्षों से चुनावों में भाग नहीं ले रहा हूँ।’ 11 उन्होंने जवाहरलाल नेहरू से भारत के उनके दृष्टिकोण पर बहस की, जैसा कि उन्होंने हिंद स्वराज में व्यक्त किया था और उसके बाद अक्सर व्यक्त किया था, जिसमें कृषि और घरेलू कताई से पोषित एक ग्रामीण राष्ट्र की कल्पना की गई थी, जो शारीरिक श्रम के शुद्धिकरण प्रभाव का आनंद लेता है। नेहरू ने विज्ञान और औद्योगीकरण के माध्यम से प्रगति की वकालत की।
गांधी ने नेहरू को कांग्रेस के अगले अध्यक्ष के रूप में आगे बढ़ाया था, जिसका अर्थ था कि वे आगे चलकर प्रधानमंत्री बनेंगे। वे अकेले उम्मीदवार नहीं थे, लेकिन गांधी ने अन्य दो उम्मीदवारों, वल्लभभाई पटेल और जे. आर. कृपलानी पर अपना नाम वापस लेने का दबाव डाला। इसलिए नेहरू को अंतरिम सरकार का प्रमुख चुना गया, जिसने ब्रिटिश शासन और स्वतंत्रता के बीच की खाई को पाटा। नेहरू स्वाभाविक नेता थे, जिन्हें गांधी ने मतभेदों के बावजूद अपना उत्तराधिकारी घोषित किया था। सुभाष चंद्र बोस सुदूर पूर्व से वापस नहीं लौटेंगे: उनकी विमान दुर्घटना में मृत्यु हो गई थी। पटेल, जो दूसरा व्यावहारिक विकल्प थे, गांधी के प्रभाव में थे और उन्हीं के आदेश का पालन करते थे।
अगस्त से अक्टूबर 1945 तक गांधी जी ने बीमारों के इलाज के अपने जुनून
को फिर से जगाया और पुणे के पास एक क्लिनिक में काम किया। वे भगवान के नाम का जाप (रामनाम), धूप सेंकना, कूल्हे की सफाई और दूध, फल और फलों के रस से युक्त सरल आहार लेने की सलाह देते थे, जिसमें भरपूर मात्रा में साफ ताजा पानी शामिल था। उन्होंने समझाया: ‘सभी मानसिक और शारीरिक बीमारियों का एक ही कारण होता है। इसलिए यह स्वाभाविक है कि उनका एक ही इलाज हो… इसलिए मैंने आज सुबह मेरे पास आए सभी मरीजों को रामनाम और लगभग एक जैसा इलाज बताया।’ 12 वे मरीजों के घर भी जाते थे और उनकी साफ-सफाई और स्वच्छता व्यवस्था पर टिप्पणी करते थे।
अगस्त 1945 में जापान पर परमाणु बम के इस्तेमाल के बाद उन्होंने इस पर कोई टिप्पणी नहीं की, और एक पत्रकार को विचित्र ढंग से जवाब देते हुए कहा: 'जितना मैं सोचता हूँ, उतना ही मुझे लगता है कि मुझे परमाणु बम पर नहीं

बोलना चाहिए। अगर मैं कर सकता हूँ, तो मुझे कार्रवाई करनी चाहिए।' 13 हालाँकि, उन्होंने इसे हिंसा के चक्र के रूपक के रूप में इस्तेमाल किया: 'दुनिया हिंसा के बदले हिंसा करने के परमाणु युद्ध के चरण तक पहुँच गई है। आइए हम ईश्वर से प्रार्थना करें कि वह हमें इस परमाणु बम मानसिकता से बचाए। मैं सभी को दुर्व्यवहार या हिंसा के जवाब में मौन रहने के लिए मनाता रहा हूँ।' 14
वे आश्रम लौट आए थे, आश्रमवासियों के झगड़ों, मतभेदों और स्वभाव से हमेशा की तरह चिढ़ते रहते थे; कभी-कभी वे सोचते थे कि क्या आश्रम बंद करके घुमंतू जीवन व्यतीत करने लगें। 1946 की शुरुआत में, राजनीतिक प्रक्रिया से अलग-थलग पड़ जाने के कारण – क्योंकि वे न तो चुनाव लड़ रहे थे और न ही सरकार से बातचीत कर रहे थे – गांधी जी ने बंगाल, असम, उड़ीसा और दक्षिण भारत की यात्रा की, जहाँ लोग इस महान व्यक्तित्व की एक झलक पाने के लिए मीलों पैदल चलते थे।
इसी बेचैन भावना के साथ वे ब्रह्मचर्य के और भी कठिन प्रयोगों की ओर
बढ़ गए। उन्होंने समझाया, ‘मैं जानबूझकर मानसिक रूप से नपुंसक बनना चाहता हूँ। अगर मैं इसमें सफल हो जाता हूँ, तो मैं शारीरिक रूप से भी नपुंसक बन जाऊँगा।’ 15 उन्होंने यौन रूप से चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में वीर्यपात को नियंत्रित करने की सटीक कठिनाई का विस्तार से वर्णन किया: ‘मैंने बा के साथ प्रयोग किए थे, लेकिन वह पर्याप्त नहीं था। अगर तब वीर्यपात हो जाता, तो नैतिक रूप से वह अब होने वाले किसी भी वीर्यपात से कम निंदनीय होता। तब वीर्यपात संभव था। मुझे लगता है कि अब यह संभव नहीं है।’ 16 यह स्पष्ट नहीं है कि वास्तव में क्या हो रहा था, लेकिन यह संभव है कि ‘प्रयोगों’ में केवल नग्न महिलाओं की उपस्थिति ही शामिल नहीं थी, बल्कि कुछ और उत्तेजना भी शामिल थी जिसके दौरान उन्हें वीर्यपात को रोकना आवश्यक था ताकि प्रयोग को सफल माना जा सके।
उन्होंने अपने विनम्र आश्रम प्रबंधक मुन्नालाल शाह और कुछ हद तक ज़िद्दी कंचन के ब्रह्मचर्य विवाह को आशीर्वाद दिया था, और उनके व्यवहार के बारे में निर्देशों की कोई कमी नहीं थी। मुन्नालाल को उन्होंने लिखा: ‘तुम्हें अकेले नहीं मिलना चाहिए, न ही एक-दूसरे को छूना चाहिए… तुम्हें एक-दूसरे से बात नहीं करनी चाहिए, न ही साथ काम करना चाहिए, न ही एक-दूसरे से सेवा लेनी चाहिए। मैं तुम्हें कुछ समय के लिए कहीं दूर चले जाने की

सलाह देता हूँ।’ 17 बाद में एक पत्र में गांधी ने मुन्नालाल को बताया कि कैसे उन्होंने कंचन को अपने साथ सोने के लिए विवश किया था: ‘आभा मुश्किल से तीन रात मेरे साथ सोई। कंचन केवल एक रात सोई। वीना का मेरे साथ सोना एक संयोग कहा जा सकता है। बस इतना ही कहा जा सकता है कि वह मेरे करीब सोई।’ यह एक दिलचस्प टिप्पणी है, जिसका अर्थ है कि प्रयोग की भावना को वास्तव में आत्मसात करना गांधी के करीब सोने से कहीं अधिक था। उन्होंने आगे कहा: ‘कंचन का मामला काफी दुखद था। मैं उसे बिल्कुल नहीं समझ पाया।’ आभा या कंचन ने मुझे जो बताया वह यह था: कि उसका [कंचन का] ब्रह्मचर्य का पालन करने का कोई इरादा नहीं था, बल्कि वह यौन सुख का आनंद लेना चाहती थी। इसलिए वह अनिच्छा से ही रुकी और मुझे ठेस पहुँचाने के डर से ही उसने अपने कपड़े उतारे। अगर मुझे ठीक से याद है, तो वह मेरे साथ एक घंटे भी नहीं रही।’ 18 मुन्नालाल शाह के वैवाहिक जीवन पर इस जानकारी का क्या प्रभाव पड़ा होगा, इसकी केवल कल्पना ही की जा सकती है।
अपने व्यवहार की आलोचना के बावजूद, वह महिलाओं के साथ शारीरिक संबंध बनाना जारी रखता था, और इस तर्क से खुद को सही ठहराता था कि अब इसे रोकना यह स्वीकार करना होगा कि उसने शुरुआत गलत की थी। ‘अगर मैं हमेशा के लिए महिलाओं के साथ सोना बंद कर दूं तो इसका मतलब होगा कि मैं गलत था। वरना मैं इसे क्यों रोकूं? दोस्तों की खातिर इससे दूर रहने की भी एक सीमा होती है।’ हालांकि, यह दूसरों के लिए अनुकरण करने योग्य मार्ग नहीं था: ‘इस प्रयोग का अनुकरण नहीं किया जाना चाहिए। लेकिन अगर मैं इसके द्वारा एक पूर्ण ब्रह्मचारी बन सकता हूं, तो क्या मैं दुनिया के कल्याण में अधिक योगदान नहीं दे पाऊंगा?’ 19 इसलिए, वह अपने द्वारा प्राप्त किए जा सकने वाले यौन संयम की मात्रा को मानवता के प्रति अपने योगदान से जोड़ रहा था। वह बढ़ती यौन चुनौतियों का जितना अधिक विरोध कर सकता था, उतना ही बेहतर होता। कस्तूरबा की मृत्यु के बाद गांधी जी ने अपने परिवार को अधिक महत्व देना शुरू कर दिया। उनके पोते अरुण, जो मनीलाल के पुत्र थे, ने 1945 और 1946 में अपने पिता से मुलाकात की। वे 'उनके स्नेही और दादाजी जैसे व्यवहार और अगले ही पल एक गंभीर राजनीतिज्ञ बनने की क्षमता से चकित थे। वे हर दिन मेरे साथ एक घंटा बिताते थे, मुझे कहानियां सुनाते थे और मेरे पाठों की समीक्षा करते थे।' 20 मनीलाल, जो दक्षिण अफ्रीका में इंडियन ओपिनियन का संपादन कर रहे थे, ने गौर किया कि गांधी जी का रवैया उनके बचपन से कितना बदल गया था।

मुझे ऐसा लगता था कि वे अपने अत्यधिक प्रेम और स्नेह से अपने आस-पास के लोगों को बिगाड़ देते थे। वे मानो उनके लाड़ले बच्चे बन गए थे, और मेरी माँ के इस दुनिया से चले जाने के बाद तो और भी ज़्यादा... मुझे सबसे ज़्यादा प्रभावित करने वाली बात यह थी कि पिताजी का व्यवहार, जब हम चारों भाई उनके अधीन थे, तब की तुलना में अब बहुत नरम हो गया था... यह देखकर मैं कई बार उन्हें चिढ़ाता और पिताजी से कहता, 'बापू, जब हम आपके अधीन थे, तब से आप बहुत बदल गए हैं। आपने हमें कभी लाड़-प्यार नहीं किया; मुझे याद है कि आप
हमसे कपड़े धुलवाते थे और लकड़ी कटवाते थे; कड़ाके की ठंड वाली सुबहों में हमें कुदाल और फावड़ा लेकर बगीचे में खुदाई करवाते
थे, खाना बनवाते थे और मीलों पैदल चलवाते थे। और मुझे आश्चर्य
होता है कि अब आप अपने आस-पास के लोगों को कितना लाड़-प्यार करते
हैं।'
गांधीजी सुनते और फिर दिल खोलकर हंस पड़ते। वे कहते, ‘बच्चों, क्या तुम मनीलाल की बातें सुन रहे हो?’ और वे उन्हें वैसे ही प्यार और दुलार देते जैसे उनके अपने बच्चे पाना चाहते थे। 21
भारतीय स्वतंत्रता के सिद्धांत को 15 मार्च 1946 को प्रधानमंत्री एटली ने हाउस ऑफ कॉमन्स में बिना किसी धूमधाम के स्वीकार कर लिया था। एक ब्रिटिश पत्रकार, एच.एन. ब्रेल्सफोर्ड ने गांधीजी से मुलाकात के दौरान उन्हें 'खुश' पाया, क्योंकि भारतीय बहस में श्री एटली के भाषण ने भारतीय स्वतंत्रता का मार्ग प्रशस्त कर दिया था। वे स्वस्थ दिख रहे थे और अपनी उम्र से काफी छोटे लग रहे थे... उनका व्यवहार कभी गंभीर नहीं होता था और वे अक्सर विनोदी हंसी के साथ आराम महसूस करते थे।' 22
भारत के लिए लेबर पार्टी के राज्य सचिव फ्रेडरिक पेथिक-लॉरेंस गांधी
के पुराने मित्र थे, जो कभी महिला मताधिकार आंदोलन के प्रमुख समर्थक थे; गांधी ने प्रथम विश्व युद्ध से पहले लंदन में उनकी पत्नी एम्मेलिन का भाषण सुना था। एक शांतिवादी, समाजवादी और स्वयं महिला मताधिकार के समर्थन में अपने कार्यों के लिए जेल जा चुके तथा भूख हड़ताल कर चुके पेथिक-लॉरेंस अधिकांश ब्रिटिश राजनेताओं की तुलना में गांधीवादी विचारधारा के अधिक प्रबल समर्थक थे। पेथिक-लॉरेंस और स्टैफोर्ड क्रिप्स को मार्च 1946 में एक अंतरिम राष्ट्रीय सरकार बनाने और संवैधानिक समाधान के माध्यम से

पाकिस्तान की समस्या का समाधान करने के उद्देश्य से कैबिनेट मिशन के तहत भेजा गया था। पेथिक-लॉरेंस ने दिल्ली के रीडिंग रोड स्थित अछूतों की बस्ती में गांधी से मुलाकात की, जहाँ वे रह रहे थे, और उनकी कुछ प्रार्थना सभाओं में भी भाग लिया।
भारत में सांप्रदायिक आकांक्षाओं की समस्या को सुलझाने के लिए केवल सद्भावना ही पर्याप्त नहीं थी। वेवेल और कैबिनेट मिशन 3 अप्रैल को गांधीजी से मिले – वेवेल ने निराशापूर्वक लिखा, ‘वे केवल धोती पहने हुए थे और आश्चर्यजनक रूप से स्वस्थ दिख रहे थे।’ उन्होंने टिप्पणी की कि पेथिक-लॉरेंस ने ‘इस द्वेषपूर्ण बूढ़े राजनेता के प्रति अपनी सामान्य लापरवाही भरी दयालुता से शुरुआत की, जो अपनी तमाम पाखंडी बातों के बावजूद, मुझे यकीन है, अपने स्वभाव में जरा भी कोमलता नहीं रखते थे।’ 23 गांधीजी ने नमक कर के बारे में बात करना शुरू किया; वेवेल ने अपनी डायरी में लिखा कि उन्होंने गांधीजी के अलावा किसी और को इसे दमनकारी बताते हुए कभी नहीं सुना था, लेकिन गांधीजी इसे हटवाना चाहते थे, क्योंकि इसी कारण उन्हें जेल जाना पड़ा था, और यह उनके अहंकार को संतुष्ट करने का एक तरीका था। वेवेल को लगा कि कैबिनेट मिशन ने गांधीजी के प्रति ‘अत्यंत सम्मान’ दिखाया, जिन्होंने ‘अस्पष्टता की तकनीक में महारत हासिल कर ली थी और वे कभी भी ऐसा बयान नहीं देते थे जो किसी न किसी तरह से सीमित या शब्दों में व्यक्त किया गया हो, जिससे उन्हें किसी भी निश्चित बात पर बांधा न जा सके।’ 24 गांधी विस्तृत वार्ताओं से दूर रहे, हालाँकि उन्होंने मिशन के समक्ष सरकार के अपने विचार रखे: पाकिस्तान के निर्माण की दिशा में किसी भी कदम से पहले स्वतंत्रता, और यदि उन्हें इस प्रक्रिया में बनाए रखने के लिए यही आवश्यक हो तो जिन्ना सरकार का नेतृत्व करेंगे।
मंत्रिमंडल के मिशन ने भारतीय राजनीति के जटिल परिदृश्य में न केवल मुसलमानों और हिंदुओं, बल्कि सिखों और अछूतों से भी बातचीत की, जो भावी संविधान में अपनी बात रखना चाहते थे। मई 1946 में एक और शिमला सम्मेलन आयोजित किया गया; गांधी जी फिर से उपस्थित नहीं हुए, लेकिन पास ही में रहे, और नेता हर सुबह उनके बंगले में उनसे मिलने जाते थे। वेवेल ने टिप्पणी की कि गांधी जी 'गृह युद्ध की संभावना से बिल्कुल भी विचलित नहीं दिखे। मुझे लगता है कि उन्होंने पटेल के इस सिद्धांत को अपना लिया था कि यदि हम दृढ़ रहें तो मुसलमान युद्ध नहीं करेंगे।' 25 मुसलमान इस तर्क को जानते थे, और

उनका लड़ने का पूरा इरादा था; बल्कि, जिन्ना को अपने सहधर्मियों को रोकने में मुश्किल हो रही थी।
16 मई 1946 को मंत्रिमंडल के मिशन ने एक संघबद्ध भारत की योजना की
घोषणा की, जिसमें मजबूत प्रांतीय सरकारें होंगी और रक्षा, विदेश मामलों और संचार की जिम्मेदारी केंद्र सरकार के पास रहेगी। उन्होंने एक अलग पाकिस्तान की अवधारणा को अस्वीकार कर दिया, लेकिन प्रांतों को मध्यवर्ती प्रशासन के लिए तीन समूहों में बाँटा गया: पंजाब, अफ़गान प्रांत (उत्तर-पश्चिम सीमांत), सिंध और बलूचिस्तान - एक बड़े प्रांतीय समूह के रूप में। दूसरे समूह में भारी मुस्लिम आबादी वाला बंगाल और पड़ोसी प्रांत असम शामिल होंगे; और तीसरे समूह में शेष पूरा भारत शामिल होगा। मिशन चाहता था कि यह वह संवैधानिक आधार हो जिस पर विधानसभा की बैठक हो - एक ऐसा समझौता जिस पर सभी सहमत हों।
समझौते की दिशा में धीमी प्रगति प्रतीत हो रही थी। क्रिप्स और पेथिक-लॉरेंस ने 20 मई तक गांधी पर अपना विश्वास बनाए रखा, जब उन्होंने संवैधानिक स्थिति चाहे जो भी हो, अंग्रेजों को देश छोड़ने का आह्वान किया और कहा कि संवैधानिक सभा बुलाए जाने से पहले एक भारतीय राष्ट्रीय सरकार का गठन होना चाहिए। इसका अर्थ यह होगा कि मुस्लिम लीग के दावों का निपटारा किए बिना ही अंग्रेज देश छोड़ देंगे। यह प्रभावी रूप से वही था जो वह 1942 में मांग रहे थे - कि अंग्रेज भारतीयों को उनके विवादों में अकेला छोड़ दें, जिसका अर्थ हिंदू बहुमत को देखते हुए मुसलमानों पर उनका प्रभुत्व था
- ठीक वही जिसे जिन्ना रोकने का प्रयास कर रहे थे। वेवेल ने इस दृश्य का आनंद लिया: 'मैंने गांधी के इस वास्तविक रूप को देखकर तीन लोगों को इतना हैरान कभी नहीं देखा... क्रिप्स और विदेश मंत्री पूरी तरह हिल गए थे।' 26 वे गांधीवादी तर्क के तथ्यों को सीख रहे थे: उन्होंने झूठ नहीं बोला, लेकिन सत्य की उनकी अपनी व्याख्या थी। पेथिक-लॉरेंस ने घोषणा की कि भविष्य में केवल कैबिनेट मिशन के सदस्य ही गांधी से मिलें और सभी बैठकों का रिकॉर्ड रखा जाए।
कई हफ्तों की खींचतान के बाद, कांग्रेस ने मिशन की दीर्घकालिक संवैधानिक सभा योजनाओं - प्रांतों को एक प्रारंभिक पाकिस्तान में 'समूहीकृत' करने - को स्वीकार कर लिया, जिसका उन्होंने विरोध किया था, और यह कांग्रेस में गांधी के घटते प्रभाव का संकेत था। प्यारेलाल ने उस क्षण का

वर्णन किया जब उन्होंने हार स्वीकार की और कांग्रेस की कार्यकारी पार्टी, जिसकी अध्यक्षता अबुल कलाम आजाद कर रहे थे, जो एक मुस्लिम थे लेकिन मुस्लिम लीग के विरोधी थे, ने उन्हें जाने दिया: 'सभा में सन्नाटा छा गया। कुछ देर तक कोई नहीं बोला। [अबुल कलाम आजाद] ने अपनी अचूक सतर्कता से तुरंत स्थिति को भांप लिया। “आप क्या चाहते हैं? क्या बापू को और हिरासत में रखने की कोई आवश्यकता है?” उन्होंने पूछा। सब चुप थे। सब समझ गए थे। निर्णय के उस क्षण में उन्हें बापू की कोई आवश्यकता नहीं थी। उन्होंने पायलट को छोड़ने का फैसला किया। बापू अपने निवास पर लौट गए।' 27
जिन्ना और मुस्लिम लीग ने इस योजना को इस आधार पर स्वीकार किया था कि यदि वे इसे स्वीकार कर लेते हैं और कांग्रेस इसे अस्वीकार कर देती है, तो वेवेल जिन्ना से अंतरिम सरकार बनाने के लिए कहेंगे। मंत्रिमंडल का प्रतिनिधिमंडल जून के अंत में ब्रिटेन लौट आया, यह मानते हुए कि उन्होंने अपना लक्ष्य प्राप्त कर लिया है।
संभवतः गांधी के प्रभाव में आकर, नेहरू ने जुलाई की शुरुआत में समझौते को रद्द कर दिया, जब कांग्रेस की बैठक इसे अनुमोदित करने के लिए बुलाई गई थी। उन्होंने कहा कि 'समूहीकरण' काम नहीं करेगा - वे केवल इस बात पर सहमत हुए थे कि वे एक विधानसभा के रूप में कार्य करेंगे और वह विधानसभा अपनी इच्छानुसार कुछ भी करने के लिए स्वतंत्र होगी, इस प्रकार जिन्ना को संतुष्ट करने के लिए किए गए आश्वासनों को छीन लिया गया। मुस्लिम लीग ने खुद को धोखा महसूस किया - उन्होंने कैबिनेट मिशन द्वारा अनुमोदित प्रस्तावों के तहत ही भारतीय संघ को स्वीकार किया था। यदि ये सभी समझौते रद्द हो जाते, तो वे भारतीय संघ में शामिल नहीं होते। वे पूर्णतः स्वतंत्र पाकिस्तान के अपने उद्देश्य पर लौट आए, 'अपनी प्रतिष्ठा को बनाए रखने और वर्तमान ब्रिटिश गुलामी और भविष्य में होने वाले जाति-हिंदू वर्चस्व से मुक्ति पाने के लिए'। 28
नेहरू बहुत ही स्पष्टवादी थे – पटेल या आज़ाद जैसे बेहतर राजनीतिज्ञ समझौते के अंतिम रूप से तय होने से पहले ही इसके पीछे के इरादे को उजागर नहीं करते। यहाँ तक कि गांधी ने भी उनसे कहा कि समझौते पर उनकी टिप्पणी 'अच्छी नहीं लगती। अगर यह सही ढंग से रिपोर्ट की गई है, तो कुछ स्पष्टीकरण की आवश्यकता है।' 29 गांधी श्रोता को भ्रमित करने के लिए शब्दों का जाल बुनने में कहीं अधिक कुशल थे। इसका परिणाम यह हुआ कि मंत्रिमंडल मिशन की

योजना धराशायी हो गई – गांधी की स्थिति (पहले बिना किसी शर्त के स्वतंत्रता, फिर संवैधानिक समझौता) कांग्रेस अध्यक्ष की नीति बनकर रह गई। वेवेल का मानना था कि गांधी ने अपने शिमला सम्मेलन और मंत्रिमंडल मिशन की योजना दोनों को ही कमजोर कर दिया था। इसके बावजूद, गांधी का प्रभाव राजनीतिज्ञों के बीच कम होता जा रहा था, जो अब भविष्य में अपनी स्थिति और शक्ति की ओर देख रहे थे।
दोनों पक्षों के बीच कोई समझौता न होने पर, वेवेल ने सबसे बड़ी पार्टी कांग्रेस के प्रमुख के रूप में नेहरू से अंतरिम सरकार बनाने का अनुरोध किया। मुस्लिम लीग अपनी इच्छानुसार सत्ता में आ सकती थी। जिन्ना और लीग ने गांधी से सीखी एक तरकीब से राजनीतिक माहौल को और गरमा दिया: उन्होंने 16 अगस्त को अपनी मुस्लिम हड़ताल की घोषणा कर दी।
इस तारीख को ‘महान कलकत्ता हत्याकांड’ की शुरुआत के रूप में जाना जाने लगा। उस समय इसे भारत के इतिहास का सबसे भीषण सांप्रदायिक दंगा बताया गया था, हालांकि अब इसे आने वाली और भी बुरी घटनाओं का पूर्वाभास माना जाता है। लाठी और खंजर से लैस मुस्लिम युवक शहर में घूम रहे थे, पाकिस्तान समर्थक नारे लगा रहे थे और कमजोर व निहत्थे हिंदुओं को निशाना बना रहे थे; घरों और दुकानों को लूटा और जलाया गया। दूसरे दिन हिंदुओं ने भी उतनी ही उग्रता से जवाब दिया और सिखों ने भी मुसलमानों पर हमले में साथ दिया। चार दिनों तक दंगे हुए और अंततः पाँच हज़ार से अधिक लोग मारे गए और बीस हज़ार घायल हुए। इस विनाश की एक विशेषता यह थी कि यूरोपीय लोगों को कोई नुकसान नहीं पहुँचाया गया: उन्हें पहले ही हाशिए पर धकेला जा रहा था – आने वाली लड़ाईयाँ भारतीयों के बीच होनी थीं।
कलकत्ता हत्याकांड के बाद, वेवेल ने गांधी और नेहरू को वायसराय निवास
पर बुलाया ताकि उन्हें कैबिनेट मिशन के बयान को स्वीकार करने के लिए राजी किया जा सके, जिसे कांग्रेस ने पहले समर्थन दिया था और जिसकी व्याख्या पर नेहरू ने बाद में सवाल उठाए थे। वेवेल चाहते थे कि संवैधानिक सभा के आयोजन से पहले प्रांतों के 'समूहीकरण' को लेकर एक स्पष्ट और असंदिग्ध बयान दिया जाए।
गांधी ने कानूनी पेचीदगियों पर बहस शुरू कर दी और वेवेल ने झल्लाकर कहा कि वे खुद 'एक साधारण आदमी हैं, वकील नहीं'। वेवेल के अनुसार, जब बहस गरमा गई तो गांधी ने कहा: 'अगर भारत खून-खराबा चाहता है, तो उसे भुगतना पड़ेगा।'

30 वेवेल ने कहा कि उन्हें गांधी के मुंह से ऐसे शब्द सुनकर गहरा सदमा लगा। हमारे पास इस टिप्पणी का केवल वेवेल का रिकॉर्ड है, लेकिन यह ब्रिटिश शासन के बाद भारत के संघर्षों के समाधान के बारे में गांधी द्वारा की गई अन्य टिप्पणियों के बेहद करीब है। उन्होंने कैबिनेट मिशन के साथ आए वुडरो वायट से कहा, 'खून-खराबा हो सकता है। अगर मैं भारत को अपने रास्ते पर चलने के लिए मना सकूं, तो यह दो दिनों में अहिंसा से सुलझ जाएगा, वरना यह संघर्ष और लंबा चल सकता है।' 31 यहां तक कि गांधी के मित्र और प्रशंसक लॉर्ड पेथिक-लॉरेंस भी 'यह मानने लगे थे कि गांधी को इस बात की परवाह नहीं थी कि दो या तीन मिलियन लोग मरें और वे समझौता करने के बजाय मरना पसंद करेंगे।' 32
गांधी के इस दृष्टिकोण में कुछ हद तक निरंतरता थी। 1941 में मुस्लिम लीग और कांग्रेस के बीच बढ़ती खाई को लेकर अंग्रेजों की चिंताओं के जवाब में उन्होंने कहा था कि अगर अंग्रेज पीछे हट जाते हैं,
मैं वादा करता हूँ कि कांग्रेस, लीग और अन्य सभी दल भारत सरकार
के लिए स्वदेशी समाधान निकालने में अपना हित पाएंगे। यह
वैज्ञानिक न हो, पश्चिमी पद्धति पर आधारित न हो, लेकिन टिकाऊ
होगा। हो सकता है कि उस सुखद स्थिति तक पहुँचने से पहले हमें
आपस में ही लड़ना पड़े। लेकिन अगर हम किसी बाहरी शक्ति की
सहायता न लेने पर सहमत हो जाते हैं, तो यह समस्या शायद दो सप्ताह
तक ही चलेगी। और इसका मतलब यूरोप में आज की तरह एक दिन के लिए भी
मानव सिर कलम करना नहीं होगा, क्योंकि ब्रिटिश शासन के कारण हम
निहत्थे हैं। 33
उन्होंने खतरों को कम करके आंका: ‘राजनीतिक रूप से जागरूक मुसलमान और हिंदू ही लड़ेंगे। वे लाठियों, डंडों और सोडा-पानी की बोतलों से लड़ेंगे, लेकिन वे जल्द ही थक जाएंगे, और हमारे बीच इतने बुद्धिमान लोग होंगे जो सम्मानजनक शांति स्थापित कर सकेंगे।’ 34 गांधी भारत में सांप्रदायिक भावनाओं की भड़काऊ प्रकृति से भलीभांति परिचित थे। उन्होंने सही अनुमान लगाया कि 1941 के वसंत में चार क्षेत्रों में हुए सांप्रदायिक दंगे ‘गृह युद्ध का पूर्वाभ्यास’ थे या, जैसा कि उन्होंने बाद में कहा, ‘एक लघु गृहयुद्ध की तरह’ थे। 35 यदि ‘कुछ भी’ का अर्थ भारत के विभाजन की ओर बढ़ना होता, तो वे हिंसा को रोकने के लिए कुछ भी करने को तैयार नहीं थे। उनकी

हठधर्मिता ने उस समझौते के सर्वोत्तम अवसर को बर्बाद कर दिया जिससे कम से कम अल्पकालिक रूप से शांति सुनिश्चित हो सकती थी।
नेहरू ने 2 सितंबर 1946 को प्रधानमंत्री पद का कार्यभार संभाला। उसी सुबह, वे और उनके मंत्री अछूतों की बस्ती में गए जहाँ गांधी जी रहते थे। वह सोमवार का दिन था, जिस दिन गांधी जी मौन धारण करते थे (यह अनुशासन उन्होंने स्वयं पर 1921 में लागू किया था), इसलिए भारत के प्रधानमंत्री को उनकी सलाह लिखित रूप में थी: 'सुबह की प्रार्थना के बाद से आप मेरे विचारों में हैं। नमक कर समाप्त करें, दांडी मार्च को याद रखें। हिंदू और मुसलमानों को एकजुट करें। अस्पृश्यता को दूर करें। खादी को अपनाएँ।' 36 गांधी जी ने प्रत्येक मंत्री को अपना आशीर्वाद दिया और इस प्रकार तैयार होकर वे भारत की समस्याओं का सामना करने के लिए निकल पड़े; पुराने जादूगर उन्हें कुछ भी नया नहीं दे सकते थे।
जिन्ना ने उस दिन को शोक दिवस के रूप में मनाया – लाखों मुसलमान काले झंडे लहराते हुए सड़कों पर उतर आए। मुस्लिम लीग अगले महीने सरकार में शामिल हो गई, लेकिन उसने केवल उसके कामकाज में बाधा डाली ताकि यह प्रदर्शित किया जा सके कि कांग्रेस-लीग गठबंधन व्यावहारिक नहीं था: उन्हें एक संयुक्त भारत को चलाने में कोई दिलचस्पी नहीं थी।
गांधी जी सेवाग्राम स्थित अपने आश्रम लौटने का विचार कर रहे थे, लेकिन पूर्वी बंगाल के नोआखली में हुए नरसंहार की खबर ने उनका रुख मोड़ दिया। नोआखली में एक छोटे से हिंदू अल्पसंख्यक समुदाय पर एक बड़े मुस्लिम बहुसंख्यक समुदाय ने हमला कर दिया था। शरणार्थियों ने सामूहिक हत्याओं के बारे में बताया, जिनमें सुनियोजित गिरोह गाँव-गाँव जाकर हत्या, जबरन धर्म परिवर्तन, बलात्कार, जबरन विवाह, घरों को नष्ट करना, जबरन गोमांस खिलाना और मंदिरों को अपवित्र करना जैसे कृत्य कर रहे थे। गांधी जी को लगा कि नोआखली के गाँवों में जाकर शांति स्थापित करना उनके लिए सबसे उपयोगी होगा। अपनी कमियों के बावजूद, अपने साथियों के प्रति उनके कर्तव्य का भाव इतना प्रबल था कि वे मदद करने के लिए हर संभव प्रयास करने को तैयार थे। इसलिए, 77 वर्षीय गांधी जी 28 अक्टूबर 1946 को कलकत्ता जाने वाली ट्रेन में सवार हुए। हमेशा की तरह, ट्रेन में चढ़ने वाले और खिड़कियों पर भीड़ लगाकर उन्हें पुकारने और दर्शन की माँग करने वाले लोगों ने उनकी यात्रा

में बाधा डाली। उन्होंने शोर से बचने के लिए अपने कानों में उंगलियाँ डाल रखी थीं।
जब वे नोआखली जाते हुए कलकत्ता पहुँचे, तब तक बिहार में हिंदुओं द्वारा मुसलमानों के विरुद्ध प्रतिशोध की कार्रवाई शुरू हो चुकी थी। कांग्रेस के अन्य प्रमुख सदस्य भी भारतीय गृहयुद्ध की संभावित शुरुआत को रोकने के प्रयास में सक्रिय थे। नेहरू ने अशांति को दबाने के लिए हवाई बमबारी का इस्तेमाल करने की धमकी दी (जो व्यावहारिक रूप से हवाई शक्ति की क्षमताओं की समझ की कमी को दर्शाता है)। गांधी ने जवाब दिया: ‘लेकिन यह तो अंग्रेजों का तरीका था। सैन्य सहायता से दंगों को दबाकर वे भारत की स्वतंत्रता को दबा रहे थे।’ 37 उन्होंने कम भोजन करना शुरू कर दिया और निकट भविष्य में उपवास करने की धमकी दी। गांधी ने अब बिहार के हिंदुओं को व्यापक रूप से वितरित किए जाने वाले पर्चों में लिखा, जहाँ संभवतः सात हज़ार मुसलमानों की हत्या कर दी गई थी: ‘आपको तब तक चैन से नहीं बैठना चाहिए जब तक कि प्रत्येक मुस्लिम शरणार्थी अपने घर वापस न आ जाए, जिसका आपको पुनर्निर्माण करना चाहिए और अपने मंत्रियों से ऐसा करने में आपकी सहायता करने के लिए कहना चाहिए… आपने जो किया है वह स्वयं को नीचा दिखाना और भारत को नीचे गिराना है।’ 38
6 नवंबर को वे अपने दल और कई प्रांतीय सरकारी अधिकारियों के साथ बंगाल सरकार द्वारा आयोजित ट्रेन से नोआखली गए। चांदपुर में वे एक स्टीमर पर सवार हुए जो उन्हें नदी के ऊपर उस दूरस्थ हरे-भरे क्षेत्र में ले गया जहाँ धनी जमींदार हिंदू अल्पसंख्यक अपने अधिक संख्या वाले, गरीब मुस्लिम पड़ोसियों के हमलों का शिकार थे। उन्होंने श्रीरामपुर में अपना डेरा जमाया जहाँ उनके लिए एक कुटिया का इंतजाम किया गया था, और उन्होंने प्रार्थना सभाएँ आयोजित कीं और राजनेताओं के लिए एक केंद्र बिंदु के रूप में कार्य किया: प्रांतीय वाणिज्य मंत्री ने गांधी और स्थानीय पुलिस के साथ मिलकर उस स्थान पर सद्भाव बहाल करने की योजना बनाई जहाँ लगभग तीन सौ घरों को लूटा और जला दिया गया था। उनका मन यीशु के उदाहरण से भरा हुआ था, 'एक ऐसा व्यक्ति जो पूरी तरह से निर्दोष था, जिसने अपने शत्रुओं सहित दूसरों की भलाई के लिए स्वयं को बलिदान के रूप में अर्पित किया'। यीशु की कहानी की सत्यता के बारे में एक अलंकारिक प्रश्न का उत्तर देते हुए उन्होंने कहा: 'मेरे लिए यह इतिहास से भी अधिक सत्य है क्योंकि मैं इसे

संभव मानता हूँ और यह एक शाश्वत नियम को स्थापित करता है - अपने सच्चे अर्थों में लिया गया प्रतिनिधि और निर्दोष पीड़ा का नियम।' 39
वह गाँव-गाँव भटकते रहे, घरों का विनाश, लोगों की खोपड़ियाँ और जले हुए अवशेष, सार्वजनिक भवनों की राख देखी। टूटे हुए कांच, कंटीली झाड़ियाँ और गंदगी को जानबूझकर उनके रास्ते में बिखेरने के बावजूद, वह नंगे पैर चलते रहे, इसे अपनी तपस्या का हिस्सा मानते थे। गाँवों में उनके इस सफर ने नंगे पैर गांधी जी की एक प्रतिष्ठित छवि को जन्म दिया, जिसमें वे मुंडे हुए सिर, धोती, बड़ी जेब घड़ी और कभी-कभी शॉल ओढ़े हुए, एक लंबी बांस की छड़ी लिए खड़े हैं।
लेकिन दुनिया की बुराइयों के खिलाफ अकेले खड़े संत की छवि पत्रकारिता
की देन थी। उनके साथ प्रेस के अलावा, उनका नियमित दल, पुलिस और स्थानीय स्वयंसेवक भी थे, जिनमें दुभाषिया के रूप में काम करने वाले प्रोफेसर निर्मल कुमार बोस और स्थानीय 'सहयोगी' चारू चौधरी शामिल थे। चौधरी ने टिप्पणी की: 'चूंकि उन्हें जिन सभी चीजों की आवश्यकता थी - बाल्टियाँ, बाथटब, कमोड, सिरिंज, और अन्य - वे सब हमें साथ ले जानी पड़ती थीं, इसलिए एक गाँव से दूसरे गाँव जाना आसान काम नहीं था।' 40 यह कुछ हद तक अतिशयोक्ति है
- वहाँ केवल एक कमोड और एक हाथ धोने का बेसिन था। सिरिंजों का उल्लेख यह दर्शाता है कि गांधी अपने एनीमा के नियम का पालन कर रहे थे। उनके पास बीस पुस्तकों का एक चलता-फिरता पुस्तकालय भी था, जिनमें मुहम्मद के वचन, यहूदी विचार की एक पुस्तक और बंगाली भाषा की प्रारंभिक पुस्तकें शामिल थीं। वे स्थानीय लोगों से संवाद करने में मदद के लिए नियमित रूप से बंगाली भाषा के पाठ ले रहे थे; आत्मसुधार की यह ललक उनमें कभी नहीं छूटी - जिस दिन उनकी मृत्यु हुई, उस दिन भी वे बंगाली भाषा की एक प्रारंभिक पुस्तक पढ़ रहे थे। एक सुबह, जब उन्हें वहाँ आए दो सप्ताह भी नहीं हुए थे, उन्होंने अपने अनुयायियों को इकट्ठा किया और फिर प्यारेलाल, सुशीला, आभा और अन्य को सात दंगाग्रस्त गाँवों में शांति के केंद्र के रूप में रहने के लिए भेज दिया। उन्होंने विरोध किया - जैसा कि एक ने याद किया, उन्होंने कहा कि 'अगर हम साथ नहीं रहे तो हम सभी मारे जाएँगे।' लेकिन बापू ने जोर देकर कहा कि केवल अकेले रहकर ही वे अपनी राह खोज सकते हैं और सत्य और अहिंसा में, बल्कि ईश्वर में भी, अपने विश्वास की परीक्षा ले सकते हैं। 41 उनके अधिकांश साथियों की अनुपस्थिति का अर्थ था कि मुस्लिम किसानों का सामना करते समय

गांधी को कम समर्थन प्राप्त था, लेकिन साथ ही वे ब्रह्मचर्य 'प्रयोग' को लेकर प्रत्यक्ष चुनौतियों से मुक्त थे, जिसे वे अब एक यज्ञ या बलिदान के रूप में देख रहे थे।
यह शायद महज संयोग नहीं था कि 17 दिसंबर 1946 को जब सुशीला उनसे मिलने
आई तो उन्हें दोनों से बहस करते हुए सुना गया। वे दोनों अकेले थे और सुबह करीब 3:20 बजे, सामान्य जागने के समय से लगभग चालीस मिनट पहले, एक-दूसरे पर चिल्ला रहे थे। जब बोस यह देखने गए कि क्या हो रहा है तो उन्होंने पाया कि दोनों रो रहे थे और गांधीजी सुशीला को वहाँ से चले जाने का इशारा कर रहे थे। कई महीनों बाद ही वे फिर से एक-दूसरे के करीब आए। संभवतः इसी घटना से यह भी जुड़ा हुआ है कि कुछ ही दिनों के भीतर गांधीजी ने सुशीला की लगभग आधी उम्र की एक महिला के साथ यौन संबंध शुरू कर दिए।
उन्होंने उन्नीस वर्षीय मनु गांधी के पिता को पत्र लिखकर कहा कि
उन्हें उनके समर्थन की आवश्यकता है। मनु उनकी पोती थीं, जिन्हें वे अक्सर अपनी पोती कहते थे। बारह वर्ष की आयु में उनकी माँ का निधन हो गया था और कस्तूरबा ने उनकी देखभाल की थी। सोलह वर्ष की आयु में मनु ने भी आगा खान महल में कस्तूरबा की अंतिम बीमारी के दौरान उनकी सेवा की थी। कस्तूरबा की मृत्यु के बाद गांधी जी उस लड़की के लिए 'माँ' बन गए, उसे बाल संवारने और कपड़े पहनने के तरीके बताते और उसके शारीरिक विकास में रुचि लेते थे। हालाँकि गांधी जी के आसपास ऐसी कई महिलाएँ थीं जो किसी लड़की को अंतरंग मामलों पर सलाह दे सकती थीं - उनका हस्तक्षेप कोई अनिवार्यता नहीं थी। उन्हें मनु की कामुकता - या उसकी कमी - आकर्षक लगी। प्यारेलाल लिखते हैं कि 'उसने दावा किया कि वह अपनी उम्र की लड़कियों में आम तौर पर पाई जाने वाली यौन जागृति से पूरी तरह अनजान थी', और गांधी जी ऐसी स्वाभाविक पवित्रता की ओर चुंबकीय रूप से आकर्षित हुए। 42
जब उन्होंने उसके पिता से संपर्क किया, तब तक वे नोआखली से मनु को पत्र लिख चुके थे, जिसमें उन्होंने कहा था: ‘यदि आप आकर मुझसे बात करें तो मुझे प्रसन्नता होगी। मैं आप पर कोई दबाव नहीं डालना चाहता। मेरी हार्दिक इच्छा है कि आप जीवन भर पवित्र कुंवारी रहें और अपना जीवन सेवा में व्यतीत करें।’ 43 वह 19 दिसंबर को श्रीरामपुर स्थित उनके अस्थायी मुख्यालय पहुंचीं। 20 तारीख की सुबह तड़के बोस गांधी के कमरे में दाखिल हुए और उन्हें एक साथ बिस्तर पर पाया। गांधी ने बाद में बोस को समझाया कि वे एक

‘साहसिक और मौलिक प्रयोग’ पर चर्चा कर रहे थे, जिसका ‘प्रभाव बहुत तीव्र होगा’। केवल वही लोग उनके साथ रहें जो इसे समझते हों और अपने पदों पर बने रहने के लिए तैयार हों। 44
जैसा कि सुशीला ने बाद में बताया, गांधी ने उन्हें समझाया कि 'पहली रात को बिस्तर पर लेटते ही कुछ ही मिनटों में मनु खर्राटे लेने लगे थे।' कुछ समय बाद जब उन्होंने मनु से कहा: 'मुसलमान किसी भी समय हम दोनों को मार सकते हैं। हम दोनों को अपनी पवित्रता की अंतिम परीक्षा देनी चाहिए, ताकि हम जान सकें कि हम सबसे पवित्र बलिदान दे रहे हैं, और अब हम दोनों को नग्न सोना शुरू कर देना चाहिए', तो सुशीला मान गईं। 45 दिसंबर के अंत में वे प्यारेलाल को यह सूचना देने में सक्षम हुए: 'वह नग्न सोती है, लेकिन गहरी नींद सोती है।' 46
गांधी जी ने ब्रह्मचारी की अपनी अवधारणा का वर्णन इस प्रकार किया:
वह व्यक्ति जिसके मन में कभी कोई कामुक भावना न हो, जो ईश्वर की
निरंतर स्तुति से सचेत या अचेत वीर्यपात से मुक्त हो गया हो, जो
कितनी भी सुंदर स्त्रियों के साथ नग्न अवस्था में लेटने में
सक्षम हो, बिना किसी भी प्रकार से कामुक रूप से उत्तेजित हुए...
जो प्रतिदिन ईश्वर की ओर निरंतर प्रगति कर रहा हो और जिसका
प्रत्येक कार्य केवल उसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए किया गया
हो। 47
अब तक उनका तर्क आध्यात्मिक था, लेकिन स्वतंत्रता की ओर अग्रसर भारत के उथल-पुथल भरे माहौल में उन्होंने अपने यौन प्रयोगों को राष्ट्रीय महत्व का समझना शुरू कर दिया: 'मेरा मानना है कि देश की सच्ची सेवा के लिए यह आवश्यक है,' उन्होंने कहा। 48 प्यारेलाल ने मनु के संबंध में अपनी विचार प्रक्रियाओं की जांच की:
गांधीजी ने दावा किया था कि वह उनकी माँ हैं और उन्होंने भी इस
दावे का समर्थन किया था। यदि इसकी सत्यता की जाँच की जा सके, तो
इससे उस समस्या का सुराग मिल जाएगा जो उन्हें उलझन में डाल रही
थी। संयोगवश, इससे उन्हें यह भी पता चल जाएगा कि वे पूर्ण
ब्रह्मचर्य – पूर्ण व्यभिचार – के मार्ग पर कितना आगे बढ़ चुके हैं… उन्होंने उनके लिए वह सब कुछ किया जो एक माँ आमतौर पर अपनी बेटी के लिए करती है। उन्होंने उनकी शिक्षा, भोजन, पहनावे, आराम

और नींद की निगरानी की। अधिक गहन निगरानी और मार्गदर्शन के लिए उन्होंने उन्हें अपने साथ एक ही बिस्तर पर सुलाया। अब, यदि किसी
लड़की का मन शुद्ध है, तो वह अपनी माँ के साथ सोने में कभी शर्म
महसूस नहीं करती।’ 49
ऐसा लगता है कि मनु ने इस बात को मान लिया था - गांधी जी के साथ बिताए अपने समय के बारे में उन्होंने जो किताबें लिखीं, उनमें से एक का शीर्षक है 'बापू - मेरी माँ'।
प्यारेलाल ने समझाया कि यह भारत के सामने मौजूद चुनौती से कैसे
संबंधित है: ‘यदि उनकी ईमानदारी भारत पर अपनी छाप छोड़ सके और उसमें उन सभी गुणों को जगा सके जिनका उन्होंने लक्ष्य रखा था, तो यह सिद्ध होगा कि सत्य की उनकी खोज सफल रही है। उनकी ईमानदारी तब मुसलमानों, मुस्लिम लीग में उनके विरोधियों और यहां तक कि जिन्ना पर भी अपनी छाप छोड़ेगी, जिन्होंने उनकी ईमानदारी पर संदेह किया था, जो उनके और भारत दोनों के लिए हानिकारक होगा।’ 50 गांधी ने इस प्रकार अपनी शारीरिक स्थिति को एक संयुक्त भारत के अस्तित्व से जोड़ा। कहा जाता है कि उन्होंने अपने यौन परीक्षणों के बारे में कहा था: ‘यदि मैं इस पर काबू पा लेता हूं, तो मैं जिन्ना को भी हरा सकता हूं।’ 51
गांधी के व्यवहार पर व्यापक चर्चा और आलोचना हुई। उन्होंने अपने पुत्र मनीलाल को लिखा: ‘मनु के मेरे साथ सोने की बात से विचलित मत होना। मेरा मानना है कि ईश्वर ने ही मुझे यह कदम उठाने के लिए प्रेरित किया है।’ 52 फरवरी 1947 में अपने समाचार पत्र हरिजन में प्रकाशित एक प्रार्थना सभा में हुई आलोचना के जवाब में, उन्होंने कहा कि उनके ‘प्रयोग’ उनके द्वारा किए जा रहे यज्ञ का अभिन्न अंग थे। उन्होंने स्वीकार किया कि उनके व्यवहार के कारण कई मित्र नाराज़ हो गए थे, लेकिन उन्होंने आपत्तियों को अपने यज्ञ को जारी रखने का एक और कारण मान लिया: ‘यदि मैं लोगों के सामने ठीक वैसा ही प्रकट न होऊं जैसा मैं भीतर से हूं, तो क्या यह मेरी अहिंसा पर कलंक नहीं होगा? … यदि मैं मनु को अपने साथ सोने न दूं, हालांकि मैं इसे आवश्यक मानता हूं, तो क्या यह मुझमें कमजोरी का संकेत नहीं होगा, और उस स्थिति में क्या मेरी मृत्यु, क्योंकि मैं पूर्ण अहिंसा को प्राप्त करने में असफल रहा हूं, मेरे लिए सबसे अच्छी बात नहीं होगी?’ 53

वह अक्सर रात में मनु को जगाकर उससे बातें करते थे और अपनी डायरी में
कुछ लिखते थे। 2 जनवरी 1947 को उन्होंने लिखा: ‘मैं सुबह 2 बजे से जागा हुआ हूँ। केवल ईश्वर की कृपा से ही मेरा जीवन चल रहा है। मुझे लगता है कि मुझमें कहीं कोई गंभीर दोष है जो इन सब का कारण है। मेरे चारों ओर घोर अंधकार है। ईश्वर मुझे इस अंधकार से कब निकालकर अपने प्रकाश में लाएँगे?’ 54 इसमें कोई संदेह नहीं था कि जब मनु स्वेच्छा से नोआखली में उनके पास गईं तो वह वास्तव में खतरे में थीं। हिंसा हर जगह व्याप्त थी, और गांधी के मिशन का विरोध किया जाता था। एक बार पुलिस अधीक्षक ने उन्हें शत्रुतापूर्ण मुसलमानों द्वारा लगाए गए पोस्टर दिखाए जिनमें उनके निष्कासन की मांग की गई थी। वे प्रतिदिन पैदल यात्रा करते थे, गांधी रास्ते में मिलने वाले ग्रामीणों को संबोधित करते और उनसे संवाद करते थे। शाम को जब वे ठंडी हवाओं से झुलसी झोपड़ियों में रहते थे, तो मनु उनके कटे हुए पैरों की देखभाल करती थीं।
नोआखली में उनके साथ रहे दो लोगों को उन्होंने खो दिया: आर.पी. परशुराम, जो उनके सचिव थे, और निर्मल कुमार बोस; दोनों ने मनु के साथ गांधी के व्यवहार की आलोचना करते हुए पत्र लिखे। उनकी अनुपस्थिति में हरिजन का संपादन कर रहे दो समर्थकों ने भी गांधी के उन प्रवचनों के अंशों को छापने से इनकार करने के बाद इस्तीफा दे दिया, जिनमें उनके सोने की व्यवस्था का जिक्र था। उनके पुत्र देवदास ने उन्हें पत्र लिखकर बताया कि वे गलत रास्ते पर चल रहे हैं। कांग्रेस नेताओं पटेल और कृपलानी (नवंबर 1946 से कांग्रेस अध्यक्ष) ने भी अपनी असहमति व्यक्त की, हालांकि कृपलानी ब्रह्मचर्य के मार्ग पर चल रहे थे - उनका सुचेता नाम की महिला से ब्रह्मचर्य का वैवाहिक जीवन था, जो कभी-कभी गांधी के साथ भी रहती थीं। उसी वर्ष मार्च में, गांधीजी के प्रमुख शिष्यों में से एक और अछूतों की सहायता करने और गांवों का विकास करने वाले उनके संगठनों के प्रमुख व्यक्ति अमृतलाल वी. ठक्कर को प्रसन्न करने के लिए मनु के साथ सोने की उनकी आदत बंद कर दी गई। ठक्कर ने फरवरी के अंत में गांधीजी के साथ एक सप्ताह बिताया था और उन्हें समझाया था कि इस प्रथा के बारे में फैली अफवाहें उनके काम को प्रतिकूल रूप से प्रभावित कर रही हैं। उन्होंने बुद्धिमानी से मनु से भी कहा कि वह गांधीजी से ऐसा न करने के लिए कहें। इस मामले में मनु का हस्तक्षेप निर्णायक कारक प्रतीत होता है: गांधीजी ने

मनु के साथ सोना बंद कर दिया, लेकिन उन्होंने कभी भी यह स्वीकार नहीं किया कि उन्होंने कुछ गलत किया है। मनु इस विवाद से भली-भांति परिचित थीं; एक बार ऐसा दर्ज है कि उन्होंने बोस के लिए एक आलोचक के गुजराती पत्र का अनुवाद किया था, जिसमें लिखा था कि 'गांधीजी स्पष्ट रूप से विपरीत लिंग के साथ अपने संबंधों के संबंध में आत्म-भ्रम से ग्रस्त थे।' 55
गांधी जी के प्रति मनु की भक्ति सच्ची थी। उन्होंने गांधी जी के साथ बिताए समय के बारे में पाँच पुस्तकें और पुस्तिकाएँ लिखीं (या उनके लेखन में योगदान दिया), और उनमें उन्होंने अपने सोने की व्यवस्था के बारे में कोई शिकायत नहीं की, हालाँकि गांधी जी द्वारा उन्हें छोटे-मोटे कामों के लिए भेजे जाने पर उन्होंने शिकायत ज़रूर की। उन्होंने भयंकर बारिश, तेज़ हवाओं, फिसलन भरी सड़कों और पगडंडियों, और दलदली गड्ढों का वर्णन किया है जिन्हें उन्हें बाँस के अस्थायी पुलों की मदद से पार करना पड़ता था। गांधी जी के साथ उनके कभी-कभार होने वाले झगड़ों के बावजूद, उनकी यादें अत्यंत प्रेमपूर्ण और सहानुभूतिपूर्ण हैं। उन्होंने अपनी डायरी में लिखा, 'इस चिलचिलाती और घुटन भरी ठंड में नंगे पैर तीर्थयात्रा करने वाले संत के साथ यात्रा करने का अवसर पाकर मैं खुद को भाग्यशाली मानती हूँ।' एक बार नदी पार करते समय, गांधी जी ने अपना सिर मनु की गोद में रख दिया और सो गए। उन्होंने लिखा: 'मैं नाव में अकेली थी, सिवाय एक नाविक के, जिसका कोई साथ नहीं था, और मेरे साथ दुनिया की सबसे महान आत्माओं में से एक थीं, जो आराम से मेरी गोद में लेटी थीं और मेरी हथेली उनके माथे पर थी।' यह महज पांच मिनट का क्षण था, लेकिन मेरे लिए वे पांच मिनट आनंद से भरे हुए थे।' 56 प्रसिद्धि के आकर्षण को देखते हुए, सभी विवरणों से पता चलता है कि गांधी की किसी भी तरह से सेवा करने के लिए उत्सुक युवा महिलाओं की कोई कमी नहीं थी।
गांधी जी द्वारा ब्रह्मचर्य प्रयोगों की पूरी रिपोर्ट देने के आग्रह
के बावजूद, सदा वफादार प्यारेलाल भी आश्चर्यजनक रूप से संकोची थे। उन्होंने मनु के साथ गांधी जी की गतिविधियों की रिपोर्ट तो दी, लेकिन अपनी बहन सुशीला के साथ उनकी गतिविधियों की नहीं। गांधी जी और उनके शिष्यों के इस अंतहीन मनोवैज्ञानिक नाटक में एक और पहलू यह था कि सैंतालीस वर्षीय प्यारेलाल मनु के प्रति आसक्त थे और उनसे विवाह करना चाहते थे। गांधी जी ने उनके इस प्रयास को अस्वीकार कर दिया, लेकिन सुशीला ने मनु को प्यारेलाल

से शादी करने के लिए उन पर दबाव डाला, संभवतः इसलिए कि इससे मनु गांधी जी से अलग हो जातीं और उनकी जगह खाली हो जाती जिसे वह स्वयं भर सकती थीं। गांधी जी ने प्यारेलाल को समझने की कोशिश की: उन्होंने लिखा, 'मुझे लगता है कि आप बहुत निराश हुए हैं। आप नहीं जानते कि मैंने उनसे कितनी बातें की हैं और उन्हें मनाने की कितनी कोशिश की है।' लेकिन अंत में उन्होंने अपने सहायक से कहा: 'मैं देख सकता हूँ कि आप मनु को पत्नी के रूप में स्वीकार नहीं कर पाएंगे।' 57
नोआखली में वाकई कुछ महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हासिल हुईं – लूटी गई कुछ संपत्ति वापस मिली और अगवा की गई कुछ महिलाओं को उनके घर लौटा दिया गया; भागे हुए हिंदू भी लौट आए। गांधी और उनके अनुयायियों को मिली प्रसिद्धि ने गलत कामों को हतोत्साहित किया। पत्रकारों ने भी अपराधियों को यह भरोसा दिलाने में अहम भूमिका निभाई कि उनके कारनामों पर पूरी दुनिया की नज़र है। गांधी को हमेशा प्रेस का अच्छा समर्थन प्राप्त रहा। कई पत्रकारों ने निष्पक्षता का दिखावा नहीं किया: उनके साथ यात्रा करने वाले यूपीआई और द हिंदू के दो पत्रकारों ने तो गांधी के पत्रों को बड़े चाव से टाइप किया। मुसलमानों ने गांधीजी पर ताना मारा था कि वे यहाँ पीड़ित हिंदुओं की देखभाल कर रहे हैं, लेकिन बिहार में जिन मुसलमानों पर हमला हुआ था उनका क्या? वहाँ हिंदू भीड़ ने कम से कम सात सौ मुसलमानों को मार डाला था। उन्होंने कहा कि उन्हें अंदर से कोई बुलावा नहीं आया था, लेकिन जब बिहार सरकार ने उन्हें आमंत्रित करते हुए संदेश भेजा, तो वे मार्च 1947 में चले गए। इससे बंगाल के राज्यपाल सर फ्रेडरिक बरोज़ प्रसन्न हुए, जिन्होंने वेवेल से कहा कि वे 'गांधीजी के बंगाल छोड़ने से बहुत राहत महसूस कर रहे हैं, क्योंकि उनकी सुरक्षा के लिए उनके बीस सर्वश्रेष्ठ पुलिसकर्मियों को तैनात किया गया था; और उन्होंने एक अमेरिकी संवाददाता के "गांधी अकेले चलते हैं" शीर्षक वाले लेख पर व्यंग्य किया।' 58
बिहार में हुई हिंसा का गांधीजी पर गहरा असर पड़ा क्योंकि कुछ जगहों पर हिंदू भीड़ ने 'महात्मा गांधी की जय' के नारे लगाते हुए मुसलमानों पर बर्बरता की थी। उन्होंने फिर से हिंदुओं से विनती की कि वे जितना हो सके उतना प्रायश्चित करें: 'अपने हाथों से उनके घर फिर से बनाएँ, उनके कुएँ साफ करें, मारे गए मुसलमानों के शवों से भरे कुओं की जगह नए कुएँ खुदवाएँ।' 59 उन्होंने कांग्रेस कार्यकर्ताओं से कहा, जिनमें से कुछ के बारे में उनका

मानना था कि उन्होंने अशांति में भाग लिया था: 'मैंने करो या मरो की प्रतिज्ञा की है। मैं न तो चैन से बैठूंगा और न ही दूसरों को बैठने दूंगा। मैं पैदल ही हर जगह घूमूंगा और वहाँ पड़े कंकालों से पूछूंगा कि यह सब कैसे हुआ। मेरे अंदर ऐसी आग धधक रही है कि जब तक मुझे इस सब का कोई हल नहीं मिल जाता, तब तक मुझे चैन नहीं मिलेगा।' 60
जब गांधी जी अपने प्रिय ग्रामीण जीवन पर सांप्रदायिकता के अत्याचारों को देख रहे थे, तब भारत धीरे-धीरे ब्रिटिश शासन और एकीकृत राज्य के अंत की ओर बढ़ रहा था। एटली ने घोषणा की कि जून 1948 तक भारत को सत्ता का नियंत्रण सौंप दिया जाएगा, भले ही इसका अर्थ प्रांतीय सरकारों को सत्ता हस्तांतरित करना हो। उन्होंने वेवेल के प्रस्थान की भी घोषणा की; वायसराय ने गांधी जी को विदाई उपहार के रूप में अपनी कविता संग्रह 'अदर मेन्स फ्लावर्स' की एक प्रति भेंट की। उनके स्थान पर मुक्त दक्षिण-पूर्व एशिया के सर्वोच्च सहयोगी कमांडर, राजा के चचेरे भाई और नौसेना अधिकारी लॉर्ड माउंटबेटन को नियुक्त किया गया। मार्च 1947 में माउंटबेटन का आगमन कैबिनेट मिशन की योजना के अनुसार एकात्मक सरकार स्थापित करने के उद्देश्य से हुआ था। यदि वे 1 अक्टूबर तक इसमें विफल रहते, तो उन्हें सत्ता हस्तांतरण के लिए व्यावहारिक वैकल्पिक प्रस्तावों के साथ रिपोर्ट प्रस्तुत करनी थी। मुस्लिम लीग कैबिनेट स्तर पर भारत को शासनहीन बनाने में सफल हो चुकी थी और अब संविधान सभा में भाग लेने से इनकार कर रही थी। कांग्रेस के यथार्थवादी इस तथ्य को स्वीकार करने लगे थे कि उनके पास विभाजन और गृहयुद्ध के बीच ही विकल्प था – और गृहयुद्ध का अंत संभवतः विभाजन में ही होता। पंजाब में अशांति इतनी बढ़ गई थी कि उस वर्ष मार्च तक वे कम से कम उस प्रांत को मुस्लिम और गैर-मुस्लिम क्षेत्रों में विभाजित करने के लिए तैयार हो चुके थे। इसलिए कांग्रेस ने वेवेल की सहमति से गुप्त रूप से लंदन को एक प्रस्ताव भेजा, जिसमें दो सरकारों को सत्ता हस्तांतरण का सुझाव दिया गया था, जिनमें से दोनों को ब्रिटिश राज के अधीन डोमिनियन का दर्जा प्राप्त होता। इस प्रकार, डोमिनियन का दर्जा, जो लंबे समय से कांग्रेस के कट्टरपंथियों का प्रतीक रहा था, अब स्वीकार किया जाना था, क्रिप्स मिशन के हिस्से के रूप में प्रस्तावित किए जाने के पाँच कष्टदायक वर्षों बाद। अपने कार्यकाल के शुरुआती दिनों में माउंटबेटन ने भारतीय राजनीति के सभी प्रमुख व्यक्तियों से मुलाकात की, जिनमें गांधी भी शामिल थे। गांधी

ने हमेशा की तरह पहली मुलाकातों में अपने व्यक्तित्व की दृढ़ता से वायसराय को प्रभावित किया। उन्होंने भारत की एकता बनाए रखने के प्रयास में जिन्ना को अपना प्रशासन नियुक्त करने के लिए कहने का सुझाव दिया, एक ऐसा विचार जो शुरू में माउंटबेटन को कुछ हद तक पसंद आया; लेकिन कांग्रेस ने इस विचार को खारिज कर दिया और वायसराय के सलाहकारों ने इसे एक पुराना और अव्यावहारिक प्रस्ताव बताया। बंगाल और बिहार में गांधी के अनुभवों ने समस्या के कारणों पर उनके मत को नहीं बदला था; माउंटबेटन के प्रेस सचिव ने गांधी के इस कथन को दर्ज किया: ‘ब्रिटिश “बांटो और राज करो” प्रणाली ने ऐसी स्थिति पैदा कर दी थी जिसमें केवल दो ही विकल्प थे: कानून और व्यवस्था बनाए रखने के लिए ब्रिटिश शासन का जारी रहना, या भारतीय रक्तपात। रक्तपात का सामना करना और उसे स्वीकार करना ही होगा।’ 61
माउंटबेटन के कहने पर जिन्ना हिंसा और हिंसा भड़काने को रोकने की अपील पर हस्ताक्षर करने के लिए सहमत हो गए, लेकिन मुस्लिम नेता ने शर्त रखी कि इस पर केवल दो ही लोग हस्ताक्षर करें - स्वयं वह मुसलमानों का प्रतिनिधित्व करते हुए और गांधी जी हिंदुओं का प्रतिनिधित्व करते हुए। इस प्रकार एक मानवीय अपील राजनीतिक बयान में बदल गई। गांधी जी बिहार लौट गए और दिल्ली में सत्ताधारी उनके हस्तक्षेप के बिना ही समाधान की ओर बढ़ गए। नेहरू ने माउंटबेटन से कहा कि विभाजन स्वीकार कर लिया गया है, लेकिन प्रांतों का विभाजन होना चाहिए - वे पूरी तरह से अलग नहीं हो सकते। जिन्ना क्रोधित हो गए, लेकिन माउंटबेटन ने समझाया कि भारत को मुस्लिम और गैर-मुस्लिम में विभाजित करने का जो तर्क है, वही तर्क इसके प्रांतों के विभाजन पर भी लागू होता है।
जिन्ना की अपने नए राष्ट्र को साकार होते देखने की तीव्र इच्छा केवल अंग्रेजों के जाने से ही नहीं बढ़ी थी: वे जानते थे कि उनके दिन गिने-चुने हैं; उनकी आँखें धँसी हुई थीं और वे कंकाल की तरह दुबले-पतले थे, इसलिए वे हर कदम पर अपनी ऊर्जा बचा रहे थे। यदि वे पाकिस्तान चाहते थे, तो उन्हें शीघ्रता से कदम उठाना होगा। अंततः उन्हें एक 'खस्ताहाल' पाकिस्तान को स्वीकार करना पड़ा, जैसा कि उन्होंने स्वयं कहा था। विभाजन के लिए माउंटबेटन योजना की औपचारिक घोषणा 3 जून 1947 को की गई, जिसके तहत भारत के पश्चिम में स्थित मुस्लिम बहुल प्रांत अलग हो गए और पूर्वी पंजाब और पश्चिम बंगाल के गैर-मुस्लिम हिस्से भारत के साथ चले गए। गांधीजी स्तब्ध

रह गए: उन्होंने कहा, 'भारत का नक्शा बदलना ब्रिटिश सरकार का काम नहीं है।' ‘उसे बस भारत से पीछे हटना है, यदि संभव हो तो व्यवस्थित तरीके से, शायद अराजकता में भी, लेकिन किसी भी हालत में पीछे हटना होगा।’ अब उन्हें कैबिनेट मिशन के उस रुख की खूबियाँ नज़र आने लगीं, जिसे उन्होंने पहले खारिज कर दिया था, और कहा कि वे ‘हर देशभक्त और निश्चित रूप से ब्रिटिश सत्ता से, चाहे कितनी भी हिंसा क्यों न हो, कैबिनेट मिशन के दस्तावेज़ के तहत भारत छोड़ने का आग्रह करेंगे’। 62
माउंटबेटन को विभाजन के लिए हिंदू, सिख और मुस्लिम नेताओं की सहमति
पहले ही मिल चुकी थी, इसलिए गांधीजी से इस समझौते पर चर्चा करने में उन्हें कुछ झिझक भी हुई, क्योंकि उन्हें डर था कि गांधीजी इस योजना को बिगाड़ देंगे। माउंटबेटन की खुशी का ठिकाना नहीं रहा जब गांधीजी 2 जून 1947 को वायसराय महल पहुंचे और अपने होठों पर उंगली रखे कमरे में दाखिल हुए: यह उनका मौन दिवस था। माउंटबेटन ने योजना समझाई और गांधीजी ने पुराने लिफाफों के पीछे कुछ नोट्स लिखकर जवाब दिया। योजना में यह प्रावधान था कि वे सोमवार को वायसराय जैसे वरिष्ठ अधिकारी से जरूरी मामलों पर बात करने के लिए अपना मौन व्रत तोड़ सकते हैं, लेकिन स्पष्ट रूप से उन्होंने यह तय कर लिया था कि इसमें उनका कोई फायदा नहीं है।
माउंटबेटन, जिन्हें अब भी चिंता थी कि गांधी इस योजना को विफल कर देंगे, बाद में उनसे फिर मिले और उनसे आग्रह किया कि वे समझौते को माउंटबेटन की योजना के रूप में नहीं बल्कि गांधी की योजना के रूप में देखें, क्योंकि वायसराय ने कहा था कि उन्होंने इसमें गांधी के प्रमुख सिद्धांतों जैसे कि गैर-दबाव, आत्मनिर्णय और अंग्रेजों की वापसी की यथाशीघ्र तिथि को शामिल करने का प्रयास किया था। माउंटबेटन की कूटनीति का प्रमाण यह है कि उस रात अपनी प्रार्थना सभा में गांधी ने कहा: 'विभाजन के लिए ब्रिटिश सरकार जिम्मेदार नहीं है। वायसराय का इसमें कोई हाथ नहीं था। वास्तव में, वे विभाजन के उतने ही विरोधी हैं जितना स्वयं कांग्रेस, लेकिन अगर हम दोनों - हिंदू और मुसलमान - किसी और बात पर सहमत नहीं हो सकते, तो वायसराय के पास कोई विकल्प नहीं बचता।' 63
विभाजन पर किसी समझौते की लंबे समय से उम्मीद थी, लेकिन 4 जून को माउंटबेटन द्वारा प्रेस कॉन्फ्रेंस में घोषित समय सारिणी ने सबको चौंका दिया: सत्ता का हस्तांतरण 15 अगस्त को होना था – ब्रिटिश राज का अंत

बहत्तर दिनों में होना था। गांधी ने दुख से कहा, ‘लगता है मेरे जीवन का काम खत्म हो गया है। मुझे उम्मीद है कि ईश्वर मुझे और अपमान से बचाएगा।’ 64 गांधी के प्रस्तावों को राष्ट्र द्वारा अस्वीकार किए जाने के एक स्थायी प्रतीक के रूप में, नए भारत का ध्वज कांग्रेस का तिरंगा था, लेकिन उसमें वह चरखा नहीं था जिसे उन्होंने केंद्र में रखा था। उसके स्थान पर तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व के एकीकृत भारत के राजा अशोक का चरखा था।
गांधी बिहार जा रहे थे, लेकिन कलकत्ता से गुजरते समय शहर के मुसलमानों ने उनसे कम से कम आजादी के बाद तक वहीं रुकने का आग्रह किया। वे इस शर्त पर मान गए कि वे मुस्लिम लीग पर अपना प्रभाव इस्तेमाल करके यह सुनिश्चित करेंगे कि मुसलमान नोआखली में हिंदुओं पर हमला न करें। उन्होंने लूटपाट और हत्या से भागकर आए मुसलमानों द्वारा छोड़े गए घरों में से एक में अपना निवास स्थान बनाया, और अब हिंदू उन पर मुसलमानों का पक्ष लेने का आरोप लगाते हुए उनकी निंदा करने लगे। उन्होंने अपने आसपास के वातावरण पर शांति का प्रभाव डाला; पंजाब की तुलना में बंगाल शांति का स्वर्ग था। माउंटबेटन ने उन्हें 'एक अकेला सीमा रक्षक' कहकर वीरतापूर्वक श्रद्धांजलि दी। 65 फरवरी 1947 के अंत में उन्होंने मनु के साथ सोना बंद कर दिया था, लेकिन मई में उन्होंने ब्रह्मचर्य की चुनौतियों को फिर से शुरू किया, इस विश्वास के साथ कि यदि उन्हें पूर्ण संतुलन प्राप्त हो जाएगा तो उनके आसपास की हिंसा समाप्त हो जाएगी - और निरंतर हिंसा का अर्थ था कि उन्हें और अधिक आध्यात्मिक पवित्रता प्रदर्शित करनी होगी। उन्होंने मनु से कहा, 'यह पिछले साठ वर्षों से मेरे प्रयासों की पराकाष्ठा है। तुम इसमें एक साधन बन गई हो। इस यज्ञ में मुझे सत्य और पवित्रता के उस आदर्श की झलक मिली जिसके लिए मैं प्रयासरत था।' 66
गांधी के पोते कानू गांधी की अठारह वर्षीय पत्नी आभा जुलाई में उनके दल में फिर से शामिल हो गईं, और अगस्त के अंत तक वह दोनों लड़कियों के साथ एक ही समय में शारीरिक संबंध बना रहे थे। आभा सोलह वर्ष की आयु से ही उनके साथ शारीरिक संबंध बना रही थीं, हालांकि मनु की तुलना में उनकी इच्छाशक्ति कम थी। आभा ने बाद में याद करते हुए कहा: 'उन्होंने मुझसे कपड़े उतारने को कहा था। लेकिन, जहाँ तक मुझे याद है, मैं आमतौर पर अपनी पेटीकोट और चोली पहने रहती थी।' 67 कानू समेत गांधी के दल के पुरुषों ने उन्हें रोकने के लिए कहा, लेकिन वह नहीं रुके। शायद उन्हें लगा कि उस समय की चुनौतियों का

सामना करने के लिए उन्हें अतिरिक्त आध्यात्मिक शक्ति की आवश्यकता है। एक नग्न किशोरी के आकर्षण का विरोध करना पर्याप्त नहीं था - शायद दो लड़कियाँ इन कठिन दिनों में आवश्यक शक्ति प्रदान कर सकती थीं। यह कल्पना करना कठिन है कि आगे उन्होंने किस तरह के यौन प्रयोग के बारे में सोचा होगा।
गांधी जी का सबसे बड़ा विरोध मुसलमानों से नहीं, बल्कि हिंसक हिंदू राष्ट्रवादियों से हुआ, जिनका मानना था कि उन्होंने मुसलमानों का साथ दिया और भारत की बलि दे दी। पाकिस्तान एक राष्ट्र के रूप में अव्यवहारिक प्रतीत हो रहा था, जिसका पश्चिमी भाग विशाल था और भारत से एक हजार मील से भी अधिक दूर, बंगाल से अलग किया गया एक घनी आबादी वाला पूर्वी भाग था। पुराने संयुक्त भारत की संपत्तियाँ – सरकारी कार्यालय, रेलवे लाइनें, सैन्य साजो-सामान, वित्त – अब भारत के शेष भाग और नए राज्य के बीच बाँट दी गईं।
राष्ट्रवादियों की अंतिम विजय पर मीडिया में बयान देने के लिए कहे जाने पर, गांधी ने दुख के साथ इनकार कर दिया – यह जश्न मनाने का समय नहीं था। उन्होंने 15 अगस्त, स्वतंत्रता दिवस, उपवास और चरखा चलाने में बिताया। मनु ने लिखा: ‘उनका चेहरा गंभीर था। जबकि उनके कमरे में लोग खुशी मना रहे थे, उनका मन दंगाग्रस्त क्षेत्रों में पीड़ित लोगों के बारे में सोचता रहा।’ 68
हालात और भी बदतर होने वाले थे। बंगाल और पंजाब के विभाजन के लिए सीमा आयोग की रिपोर्ट स्वतंत्रता दिवस समारोह के बाद तक विलंबित रही। घोषणा के कुछ ही दिनों के भीतर, सिखों और हिंदुओं ने पूर्वी पंजाब के मुसलमानों पर हमला कर दिया, जबकि मुसलमानों ने पश्चिम में सिखों पर हमला किया। इस नरसंहार ने शरणार्थियों के पलायन को और भी तेज कर दिया, यहाँ तक कि लाखों लोग भारत-पाकिस्तान सीमा पार कर गए - संभवतः ग्यारह मिलियन तक, जो शायद इतने कम समय में इतिहास का सबसे बड़ा मानव पलायन था। किसी ने भी स्थिति की भयावहता का अनुमान नहीं लगाया था, हालाँकि कांग्रेस नेताओं के लिए यह सदमा और भी गहरा गया क्योंकि वे पहले इस भ्रामक धारणा में जी रहे थे कि सांप्रदायिक हिंसा साम्राज्यवाद का परिणाम है - जैसा कि नेहरू ने कहा था: 'जब अंग्रेज चले जाएंगे, तो भारत में कोई सांप्रदायिक अशांति नहीं होगी।' 69 गाड़ियों और सामान से लदे विशाल काफिलों पर हमले हुए; शरणार्थी ट्रेनें अपने गंतव्य पर पहुँचतीं तो उनमें कोई जीवित यात्री नहीं होता -

सभी को मार डाला गया था। गांधी का यह मानना कि स्वतंत्रता के साथ होने वाली हिंसा चरमपंथी नहीं हो सकती क्योंकि अंग्रेजों ने भारतीयों को हथियार देने से मना कर दिया था, घोर गलत साबित हुआ: पड़ोसियों के बीच यह हिंसा और भी भयावह थी क्योंकि उनके पास हथियार नहीं थे – हत्याएं खेती और रसोई के औजारों से की गईं। हजारों लोगों को सबसे आदिम औजारों से बेरहमी से मार डाला गया, कभी-कभी इससे पहले उन्हें अपमान और यातनाएं भी सहनी पड़ीं। हालांकि गांधी को इसका अंदाजा नहीं था (और उन्होंने पंजाब में जो कुछ हुआ उसकी पूरी भयावहता को कभी नहीं समझा), लगभग पांच लाख लोग एक महीने तक चले हत्याओं के तांडव में मारे गए, और अनगिनत महिलाओं का बलात्कार या अपहरण किया गया। गांधी ने टिप्पणी की: 'मुझे बताया गया है कि मुझे आंकड़े गिनने चाहिए। मुझे कौन से आंकड़े गिनने चाहिए? ... और आंकड़े जानने के बाद मैं क्या करूंगा?'
स्वतंत्रता दिवस के दो सप्ताह बाद, हिंसा पर आमादा युवकों की एक उग्र भीड़ कलकत्ता में गांधीजी के घर में जबरदस्ती घुस गई और दरवाजे, खिड़कियां और छत के पंखे तोड़ दिए। गांधीजी आभा और मनु के बीच बिस्तर पर लेटे थे। वे उठे और आक्रमणकारियों के पास जाकर पारंपरिक अभिवादन के रूप में हाथ जोड़कर अभिवादन किया। उन पर प्रहार किया गया और उनके लिए फेंकी गई एक ईंट उनके बगल में बैठे एक मुसलमान को जा लगी। मनु और आभा उनके पास ही रहीं। हालांकि यह उनका मौन दिवस था, फिर भी उन्होंने उनसे कहा, “क्या बात है? मुझे मार डालो, मुझे मार डालो… मुझे क्यों नहीं मार डालते? मेरे ईश्वर मुझसे पूछते हैं, तुम कहां हो?… मैं बहुत दुखी हूं।” 71 पुलिस मौके पर पहुंची, हमलावरों को घर से बाहर खदेड़ दिया और बाहर जमा भीड़ को आंसू गैस से तितर-बितर कर दिया। गांधीजी ने लिखा कि उन्होंने भीड़ पर चिल्लाया था, लेकिन उन्हें चुप कराने में असमर्थ रहे, और चूंकि वे बंगाली थे और वे हिंदुस्तानी में बोल रहे थे, इसलिए यह व्यर्थ प्रयास था। अगली सुबह उन्होंने वल्लभभाई पटेल को लिखा, “मैं पूरी तरह से खोया हुआ महसूस कर रहा हूं।” 72 कुछ कांग्रेसी नेताओं ने गांधी के हिंदू संदेश को तो अपनाया, लेकिन उसके अहिंसा वाले पहलू को नजरअंदाज कर दिया, जिसे वे अंग्रेजों के खिलाफ महज एक अवसरवादी हथियार मानते थे। उन्होंने सार्वभौमिकता को भी नकार दिया और पटेल के साथ यह महसूस किया कि भारत में मुस्लिम सत्ता के 'संगनी अंग' को काट देना, उसे निरंतर प्रभाव डालने देने से बेहतर है।

गांधी ने कुछ मुसलमानों के शव देखने के बाद उपवास करने का फैसला किया, जिनकी हत्या तब हुई जब उन्हें सुरक्षित स्थानों पर ले जा रहे ट्रक में एक हथगोला फेंका गया। जो लोग उन्हें अपने जीवन को खतरे में डालने से रोकने की कोशिश कर रहे थे, उनसे उन्होंने कहा: “अगर दंगे जारी रहे तो मेरे जीवित रहने मात्र से क्या लाभ होगा? मेरे जीने का क्या फायदा? अगर मुझमें लोगों को शांत करने की भी शक्ति नहीं है, तो मेरे पास करने के लिए और क्या बचा है?” 73 1 सितंबर की शाम को जैसे ही उपवास की घोषणा हुई, उसका असर दिखने लगा: हत्याएं और लूटपाट कम हो गईं। कई पुलिसकर्मियों और अन्य कलकत्तावासियों ने सहानुभूति जताते हुए प्रतीकात्मक रूप से एक दिन का उपवास रखा, विश्वविद्यालय के छात्रों ने सड़कों और घरों से हथियार इकट्ठा करके गांधी को सौंप दिए। गुंडों के गिरोह उनसे मिलने उनके बिस्तर के पास गए और हिंसा से दूर रहने का संकल्प लिया। उनके घर के गेट पर हथियारों का ढेर लगा दिया गया। 4 सितंबर को पुलिस ने बताया कि शहर में चौबीस घंटे से शांति बनी हुई है।
वे दिल्ली के लिए रवाना हुए, उनका इरादा पंजाब जाने का था जहाँ वे शांति को बढ़ावा देने की उम्मीद कर रहे थे, लेकिन वे अपने दल के साथ वहीं रुक गए, जिनमें मनु और आभा भी शामिल थे; बाद में प्यारेलाल भी उनसे जुड़ गए। वे हमेशा की तरह अछूतों के इलाके में नहीं रह सके क्योंकि वहाँ शरणार्थी रह रहे थे, इसलिए वे गांधी के धनी उद्योगपति मित्र के अतिथि के रूप में बिड़ला हाउस गए। दिल्ली में उनके लिए काफी काम था, जहाँ 5 सितंबर को हिंसा भड़क उठी थी। हिंदू और सिख शरणार्थी बेकाबू हो गए थे, उन्होंने मुस्लिम घरों और व्यवसायों पर हमला किया, जिससे कई मुसलमान अपने ही शहर में शरणार्थी बन गए। पश्चिमी पंजाब के शरणार्थी तीन शिविरों में जमा हो गए। गांधी ने ईश्वर से प्रार्थना की कि वे भारत की पीड़ा देखने के बजाय मर जाएँ। उन्होंने दिल्ली के ठीक होने तक वहीं रहने का निश्चय किया और बाद में पंजाब जाने का प्रस्ताव रखा। उन्होंने कहा, 'मुझे यहाँ या तो करना है या मरना है। अगर दिल्ली में हृदय एकता बहाल नहीं हुई, तो मैं पूरे भारत में आग की लपटें देख सकता हूँ।' 74
अधिकारियों पर काबू पा लिया गया था। नेहरू ने अपनी तरफ से हर संभव प्रयास किया, कभी-कभी हत्यारों के गिरोहों और उनके पीड़ितों के बीच खुद को खड़ा कर दिया। वे आध्यात्मिक शांति के लिए हर शाम गांधी जी से मिलने जाते

थे। वायसराय की पत्नी एडविना भी अक्सर गांधी जी से मिलने जाती थीं, साथ ही उन्होंने शरणार्थी शिविरों में स्वच्छता और स्वास्थ्य सुविधाओं को व्यवस्थित करने का स्वैच्छिक कार्य भी किया। नेहरू की बेटी इंदिरा अपने पिता के घर के आसपास डेरा डाले शरणार्थियों के साथ काम करती रहीं, जब तक कि गांधी जी ने उनसे मुस्लिम शिविरों में काम करने के लिए नहीं कहा। वह अभी भी कमजोर थीं, क्योंकि उन्होंने अभी-अभी बच्चे को जन्म दिया था, लेकिन जाने के लिए तैयार थीं। उन्होंने पूछा कि उनके साथ कौन जाएगा और गांधी जी ने उत्तर दिया: 'मेरी प्यारी बेटी, अगर मेरे पास जाने के लिए कोई और होता, तो मैं तुमसे नहीं कहता।' 75 वह हर दिन उन्हें रिपोर्ट देती थीं, या अगर समय नहीं होता तो वे फूल या संदेश भेज देते थे।
सुशीला नायर बताती हैं कि कैसे वह दिल्ली में गांधीजी के साथ कार में थीं, जब वे एक ऐसे मोड़ पर पहुँचे जहाँ सड़क पर मुस्लिम शरणार्थियों की एक उग्र और खतरनाक भीड़ जमा हो गई थी। चालक ने तेजी से भागने के लिए गाड़ी की रफ्तार बढ़ा दी। गांधीजी ने उसे रुकने के लिए कहा, लेकिन उसने इनकार कर दिया। गांधीजी क्रोधित हो गए और चालक पर चिल्लाए, जिसके बाद वह आखिरकार रुक गया। भीड़, जो थोड़ी दूरी पर पीछे छूट गई थी, ने तुरंत कार को घेर लिया। सुशीला ने लिखा:
गांधीजी एक उदास, दुर्बल आकृति के रूप में बाहर आए और अपने
दोनों ओर खड़े दो क्रोधित युवकों के कंधों पर सहारा देते हुए
उन्हें लॉन में आने को कहा। जैसे ही वे बैठे, गांधीजी ने उन्हें
संबोधित किया। वे उनके प्रेम और उनकी सहायता करने की उनकी इच्छा
की प्रबलता को देख और महसूस कर सकते थे। क्षण भर पहले घृणा की चिंगारी उगल रही उनकी आँखें आँसुओं से भर उठीं और उन्होंने
उन्हें अपने दुखों और विभिन्न प्रकार की शिकायतों के बारे में
बताया, जिनमें चिकित्सा सुविधाओं की कमी भी शामिल थी।
गांधी ने डॉक्टर के रूप में उनकी देखभाल करने के लिए नायर को भेजा। 76 विभाजन के बाद, रियासतों का भारत या पाकिस्तान में विलय उपमहाद्वीप के लिए एक प्रमुख संवैधानिक समस्या बन गया। अधिकांश हिंदू आबादी वाली रियासतों ने भारत में विलय कर लिया, कुछ ने धमकी के तहत विलय किया, हालांकि किसी में भी रक्तपात नहीं हुआ। कश्मीर में मुस्लिम आबादी थी और शासक हिंदू था, हालांकि कश्मीर के मुसलमान पारंपरिक रूप से मुस्लिम लीग की

तुलना में कांग्रेस के अधिक करीब थे। पाकिस्तान ने कश्मीर पर अपना दावा किया (आखिरकार, नाम में 'क' का अर्थ यही था), लेकिन कश्मीर के महाराजा ने भारत में विलय कर लिया। कश्मीर पर पाकिस्तानी नेताओं द्वारा उकसाए गए कबायलियों ने आक्रमण किया था ताकि उन्हें पाकिस्तान में विलय के लिए मजबूर किया जा सके। इसके बाद भारत ने हवाई मार्ग से सेना भेजी, पाकिस्तानी सेना ने आक्रमण किया और भारत-पाकिस्तान के बीच पहला युद्ध शुरू हो गया। भारत सरकार ने पुराने भारत की संपत्ति के तय हिस्से के 55 करोड़ रुपये रोककर पाकिस्तान पर दबाव बनाने की कोशिश की। गांधीजी को लगा कि भारत सरकार बेईमानी कर रही है। गांधीजी हमेशा पैसे और कर्ज चुकाने के मामले में बहुत सतर्क रहते थे। बाज़ार के लिहाज़ से यह एक अच्छा गुण था, लेकिन जैसा कि पटेल ने कहा, पाकिस्तानी इस पैसे का इस्तेमाल भारतीयों को मारने के लिए हथियार खरीदने में करेंगे। कश्मीर में जान बचाने के लिए पैसे को सौदेबाजी के हथियार के रूप में इस्तेमाल करना सिद्धांतों के विरुद्ध नहीं होता। फिर भी, गांधीजी ने 13 जनवरी 1948 को दिल्ली में शांति के लिए उपवास शुरू किया, जिसमें पैसा हिंदू और मुसलमानों के बीच शांति का प्रतीक था। इस बार उन्हें पहले से कम समर्थन मिला; विरोधियों ने बिड़ला हाउस के बाहर 'गांधी मरें' लिखे बैनर लेकर धरना दिया।
वल्लभभाई पटेल ने अनशन समाप्त करने की शर्त पर इस्तीफ़ा देने की पेशकश की, लेकिन गांधी जी चाहते थे कि वे और नेहरू सरकार में साथ रहें। तीन दिन बाद, 16 जनवरी को, भारत सरकार ने पाकिस्तान को देय नकद राशि जारी करने का निर्णय घोषित किया। जिस मंत्रिमंडल की बैठक में यह निर्णय लिया गया, उसमें पटेल की आँखों में आँसू आ गए – और स्वाभाविक भी थे। कश्मीर समस्या का समाधान न हो पाना उस समय घोर अन्याय था; साठ साल से भी अधिक समय बाद भी प्रांत में इसके परिणामस्वरूप संघर्ष जारी था।
सकारात्मक पक्ष यह था कि पाकिस्तान में इस पहल की सराहना की गई: अपहृत हिंदू और सिख महिलाओं को छुड़ाने में सहायता के प्रस्ताव दिए गए। धार्मिक समुदायों के एक प्रतिनिधिमंडल ने गांधीजी से मुलाकात कर दिल्ली में मुसलमानों को अपने घरों में लौटने और कब्ज़े में ली गई मस्जिदों को वापस करने के लिए प्रोत्साहित करने का वचन देने का आग्रह किया। इससे आश्वस्त होकर गांधीजी ने 18 जनवरी को संतरे के रस का एक गिलास पीकर अपना अंतिम उपवास समाप्त किया।

20 तारीख की शाम को, जब वे प्रार्थना के बाद प्रवचन दे रहे थे, तभी एक ज़ोरदार धमाका हुआ – गांधीजी जहाँ बैठे थे, उसके पास की दीवार में एक विस्फोटक फट गया था। मनु डर के मारे उनके पैरों से लिपट गई। गांधीजी ने उससे पूछा, ‘मान लो कोई सचमुच हमें गोली मारने आ जाए, तो तुम क्या करोगी?’ 77 जब श्रोता घबरा गए, तब गांधीजी ने ऑल इंडिया रेडियो द्वारा स्पष्ट रूप से रिकॉर्ड की गई आवाज़ में कहा: ‘सुनो! सुनो! सुनो! कुछ नहीं हुआ है।’ शांति बहाल हुई और उन्होंने फिर से बोलना शुरू किया – उनका शारीरिक साहस हमेशा बेमिसाल था। हालाँकि, हमलावरों का साहस टूट गया। उन्होंने विस्फोट के बाद रिवॉल्वर और ग्रेनेड से गांधीजी पर हमला करने की योजना बनाई थी, लेकिन वे घबरा गए और अफरा-तफरी में भाग गए – सिवाय एक के, पाकिस्तान से आया एक शरणार्थी मदनलाल पाहवा, जिसे गिरफ्तार कर लिया गया।
दस दिन बाद, 30 जनवरी को शाम 5 बजे के ठीक बाद, गांधीजी मनु और आभा के कंधों पर हाथ रखकर बिरला हाउस से बाहर निकले। प्रार्थना सभा के बीच से गुजरते हुए, उन्होंने अभिवादन के लिए लड़कियों के कंधों से हाथ हटाकर हथेलियाँ आपस में जोड़ लीं। खाकी रंग की जैकेट पहने एक हट्टे-कट्टे युवक ने कोहनी मारते हुए उनकी ओर बढ़ने की कोशिश की। मनु को लगा कि वह गांधीजी के पैर छूने की कोशिश कर रहा है और उसने उससे कहा कि वे प्रार्थना के लिए पहले ही देर हो चुकी है। उसने मनु को धक्का देकर दूर कर दिया, जिससे उसकी नोटबुक, थूकदान और माला गिर गईं। मनु उन्हें उठाने के लिए झुकीं, तभी वह व्यक्ति गांधीजी के सामने खड़ा हो गया और 9mm बेरेटा से उन पर तीन गोलियां चला दीं। गांधीजी 'हे, रामा' या 'रा...म' कहते हुए गिर पड़े। गिरते समय आभा ने उसका सिर पकड़ लिया और भीड़ उसे पकड़ने के लिए आगे बढ़ी। लेकिन शाम 5:17 बजे तक उसकी मौत हो चुकी थी, उसके सफेद कपड़े खून से लथपथ थे और वह फर्श पर पड़ा था। उसके शव को बिरला हाउस वापस ले जाया गया। गोलियों की आवाज के निकट होने के कारण अस्थायी रूप से बहरी हो चुकी मनु, जिसके कपड़े गांधी के खून से सने थे, ने मदद करने की कोशिश की। सुशीला ने दयनीय स्वर में कहा कि उसकी प्राथमिक चिकित्सा पेटी में 'कोई कारगर दवा नहीं थी'। 79
गांधी ने कहा था कि उन्हें आशा है कि उनकी मृत्यु शांतिपूर्वक, मुस्कुराते हुए और अपने चुने हुए ईश्वर को याद करते हुए होगी। 80 उन्होंने मनु से कहा था: “यदि अंतिम सांस लेते समय मेरे मन में राम का नाम

लेने का विचार आए, तो इसे मेरे प्रयास की सफलता का प्रमाण माना जाए [पूर्ण अनासक्ति प्राप्त करने का]।” 81 मनु ने भी उनकी अच्छी मृत्यु की खोज के बारे में लिखा था। केवल उन्होंने ही उनके अंतिम शब्दों का उल्लेख किया; जब हत्यारे से पूछताछ की गई तो उसे याद आया कि गांधी ने कुछ नहीं कहा था। हो सकता है कि उन्होंने केवल यह सोचा हो कि उनके अंतिम शब्द ईश्वर का नाम थे। शायद उन्होंने, परिस्थितियों को देखते हुए, हमले के समय ‘हे भगवान!’ कहा हो। या, ईश्वर के नाम के उनके निरंतर पुनरावर्तन को देखते हुए, यह संभव है कि यही उनका अंतिम शब्द था।
एक डॉक्टर मौके पर पहुंचा और विस्तृत जांच करने के बाद, उन्हें तीन गोलियों से मृत घोषित कर दिया, जिनमें से एक गोली अभी भी उनके दाहिने फेफड़े में फंसी हुई थी। नेहरू, पटेल और माउंटबेटन घटनास्थल पर पहुंचे। एक क्रोधित भीड़ जमा हो गई थी। किसी ने कहा कि गांधी की हत्या एक मुसलमान ने की है। तेज बुद्धि वाले माउंटबेटन ने जवाब दिया: 'अरे मूर्ख, सबको पता है कि यह एक हिंदू ने किया था!' उन्हें इस तरह की कोई जानकारी नहीं थी, लेकिन उन्हें एहसास था कि अगर किसी मुसलमान का नाम आता है तो हिंसा भड़क उठेगी। 82 कहा जाता है कि नेहरू गांधी के पार्थिव शरीर पर कुछ क्षणों तक फूट-फूटकर रोए; फिर उन्होंने खुद को संभाला और एक बार फिर राजनेता बन गए। माउंटबेटन ने उन्हें तनाव कम करने के लिए राष्ट्र के नाम भाषण देने के लिए प्रेरित किया। मौके का फायदा उठाते हुए, नेहरू ने एक शानदार और यादगार भाषण की शुरुआत की:
मित्रों और साथियों, हमारे जीवन से प्रकाश चला गया है और चारों
ओर अंधकार छाया हुआ है। मुझे नहीं पता कि मैं आपको क्या बताऊँ
या कैसे कहूँ। हमारे प्रिय नेता, जिन्हें हम बापू कहते थे,
राष्ट्रपिता, अब हमारे बीच नहीं रहे। शायद यह कहना गलत हो। फिर
भी, हम उन्हें फिर कभी उस रूप में नहीं देख पाएंगे जैसे हमने उन्हें इतने वर्षों तक देखा था। हम उनसे सलाह लेने और उनसे सांत्वना पाने के लिए उनके पास नहीं जा पाएंगे, और यह न केवल मेरे लिए बल्कि इस देश के लाखों-करोड़ों लोगों के लिए एक भयानक आघात है... मैंने कहा था कि प्रकाश चला गया है, और फिर भी मैं गलत था। क्योंकि इस देश में जो प्रकाश चमका वह कोई साधारण प्रकाश नहीं था... क्योंकि वह प्रकाश तात्कालिक वर्तमान से कहीं अधिक

का प्रतीक था, वह जीवंत, शाश्वत सत्यों का प्रतीक था, जो हमें
सही मार्ग की याद दिलाता था, हमें गलतियों से दूर करता था, इस
प्राचीन देश को स्वतंत्रता की ओर ले जाता था। 83
गांधीजी के पुत्र देवदास के साथ मनु ने गांधीजी के अंतिम संस्कार में उनके पार्थिव शरीर को स्नान कराया। उन्होंने चंदन का लेप लगाया और उनके हाथों में माला और हाथ से बुने हुए धागे की माला पहनाई। पार्थिव शरीर को फूलों से सजे कमरे में रखा गया; उनके सिर के पास गुलाब की पंखुड़ियों से 'हे राम' लिखा गया था। अब बड़ी संख्या में लोग पार्थिव शरीर को देखने के लिए उमड़ रहे थे, इसलिए उसे घर की बालकनी में ले जाकर एक ऊंचे चबूतरे पर रखा गया ताकि अधिक से अधिक लोग उसे देख सकें।
अगले दिन, 31 जनवरी को, जल्दबाजी में आयोजित राजकीय अंतिम संस्कार के दौरान झंडे आधे झुके हुए थे। पार्थिव शरीर को सफेद चादर से ढके सेना के हथियार ढोने वाले वाहन पर रखकर साढ़े पांच मील के श्मशान घाट तक ले जाया गया। गांधीजी के मशीनों के विरोध को देखते हुए, वाहन को दो सौ वर्दीधारी सैनिकों द्वारा खींचा गया। भीड़ ने 'महात्मा गांधी अमर हो गए!' के नारे लगाए और शवयात्रा के धीरे-धीरे आगे बढ़ने पर पवित्र शंख बजाए। लोग छतों, टेलीग्राफ के खंभों और पेड़ों पर दूर-दूर तक उमड़ पड़े थे। भारतीय वायु सेना के विमान फूलों की वर्षा करते हुए चक्कर लगा रहे थे, जिससे रामायण में वर्णित उड़ते रथ की याद आ गई। यमुना नदी के पास राजघाट पर बारह फुट चौकोर एक ऊंचा चबूतरा बनाया गया था। गांधीजी के पुत्र रामदास ने वैदिक रीति-रिवाजों का पालन किया; पार्थिव शरीर पर चंदन की लकड़ी रखी गई और चिता को प्रज्वलित किया गया, जिससे लाल लपटें आकाश में ऊंची उठ गईं। मनु ने पटेल की गोद में अपना चेहरा छिपा लिया और रोने लगी। चिता चौदह घंटे तक जलती रही, इस दौरान पुरोहितों ने भगवद् गीता का संपूर्ण पाठ किया।
गांधी जी के नाखूनों के टुकड़ों को अंतिम धरोहर के रूप में सहेज कर
रखने वाली मनु को तुरंत वहाँ से हटा दिया गया। हालाँकि गांधी जी ने रामदास को लिखा था: 'मैंने उससे मेरे साथ बिस्तर साझा करने के बारे में लिखने को कहा है', फिर भी उनकी छवि के रक्षक अब उसे चुप कराने के लिए उत्सुक थे। 84 देवदास, सुशीला और अन्य लोग उसके साथ दिल्ली स्टेशन तक गए। ट्रेन लेट थी और देवदास ने इस अवसर का लाभ उठाकर मनु को एक तरफ ले जाकर उससे बात की। उसने लिखा: 'उनकी बातचीत का मुख्य विषय मेरी डायरी थी... काका [चाचा] ने

मुझे चेतावनी दी कि मैं अपनी डायरी की सामग्री किसी को न बताऊँ और साथ ही महत्वपूर्ण पत्रों की सामग्री भी किसी को न बताऊँ... उन्होंने कहा, "तुम बहुत छोटी हो लेकिन तुम्हारे पास बहुत सारा मूल्यवान साहित्य है। और तुम भोली भी हो।"' 85 हालाँकि उसने गांधी जी के बारे में पाँच पुस्तकें लिखीं (या क्या वे उसकी यादों से किसी और ने लिखी थीं?), उसने ब्रह्मचर्य प्रयोगों के अपने पक्ष को कभी प्रकट नहीं किया।
गांधी जी की अस्थियों को 12 फरवरी को गंगा, हुगली, साबरमती और भारत की अन्य प्रमुख नदियों में, साथ ही समुद्र में चार स्थानों पर विसर्जित किया गया था। हत्यारा, सैंतीस वर्षीय नाथूराम गोडसे, जो मराठी पत्रिका हिंदू राष्ट्र (हिंदू राजनीति) का संपादक था, उन षड्यंत्रकारियों में से एक था जिन्होंने कुछ दिन पहले बम विस्फोट किया था। इस षड्यंत्र में शामिल कम से कम आठ अन्य लोगों में पत्रिका के प्रबंधक, चौंतीस वर्षीय नारायण आप्टे, एक होटल मालिक और नाथूराम गोडसे का भाई गोपाल शामिल थे।
हिंदू उग्रवादी नेता विनायक सावरकर, जिनसे गांधी ने 1909 में हिंद स्वराज लिखने से पहले लंदन में बहस की थी, इस षड्यंत्र से प्रत्यक्ष रूप से जुड़े न होते हुए भी उससे संबंधित थे। गोडसे और आप्टे अगस्त 1947 में उनके साथ थे और संभवतः जनवरी 1948 में दो बार उनके साथ रहे थे। मुकदमे के दौरान, जिसमें सावरकर को बरी कर दिया गया था, यह गवाही दी गई कि वे उनके घर गए थे और उन्होंने पहले हत्या के प्रयास से कुछ दिन पहले उन्हें शुभकामनाएं दी थीं।
गोडसे को तुरंत गिरफ्तार कर लिया गया था और उसने कोई पश्चाताप नहीं जताया था। वह उन लोगों में से एक था जो 1944 में गांधी के आश्रम के बाहर धरना देने के लिए इकट्ठा हुए थे और जिन्ना से उनकी मुलाकात रोकने की कोशिश कर रहे थे। वह कई हिंदू चरमपंथी समूहों का सदस्य भी था। उसका मकसद गांधी की मुसलमानों के प्रति सहानुभूति से उपजे आक्रोश से प्रेरित था, और वह अहिंसा और चरखे से जुड़ी हर बात से नफरत करता था; उसकी राय में गांधी हिंदू समाज को कमजोर कर रहे थे।
इस हत्या के राजनीतिक परिणाम हुए। बंबई के एक प्रोफेसर, जो मदनलाल
पाहवा की मदद करने की कोशिश कर रहे थे, यह जानकर स्तब्ध रह गए कि पाकिस्तान से आए इस युवा शरणार्थी को पहले हमले के आरोप में गिरफ्तार कर लिया गया है। उन्हें याद था कि पाहवा गांधी की हत्या की साजिश की बात कर रहे थे और

उन्होंने अधिकारियों को इसकी सूचना दी थी, जिससे बंबई सरकार के प्रमुख सदस्यों को भी इस षड्यंत्र की जानकारी मिल गई थी। यह जानकारी पटेल तक पहुंची, जिन्होंने गांधी से बात की, लेकिन गांधी ने अपनी प्रार्थना सभाओं में पुलिस की मौजूदगी से इनकार कर दिया और उपस्थित लोगों की हथियारों के लिए तलाशी की अनुमति भी नहीं दी। अन्य साजिशकर्ताओं के बारे में कोई जांच नहीं की गई, जिससे उन्हें अपना दूसरा हमला करने की छूट मिल गई। पटेल द्वारा इस मामले को ठीक से न संभालने के कारण उनकी साख धूमिल हुई और नेहरू के साथ उनके संघर्षों में वे कमजोर पड़ गए। वे अपनी पहले वाली प्रतिष्ठा कभी वापस नहीं पा सके।
विश्व के हर कोने से भारत में आ रहे शोक संदेशों से यह स्पष्ट था कि गांधीजी से लोगों के चाहे जो भी मतभेद रहे हों, वे धरती पर सबसे प्रसिद्ध और सम्मानित हिंदू थे। देश ने अपनी एक महान धरोहर खो दी थी। उनकी मृत्यु के कुछ सप्ताह बाद, नेहरू ने अपने अनूठे अंदाज में, आत्मीयता और भव्यता दोनों का संगम करते हुए, गांधीजी के अखबार हरिजन के लिए एक लेख लिखा: ‘हम उन्हें उस गुरु के रूप में याद रखेंगे, जिनके कदम अंत तक हल्के थे, जिनकी मुस्कान संक्रामक थी और जिनकी आंखें हंसी से भरी थीं। हम उनके साथ शरीर या मन की किसी भी दुर्बलता को नहीं जोड़ेंगे। वे अपने जीवन और मृत्यु के समय अपनी शक्ति और सामर्थ्य के चरम पर थे, हमारे मन में और हमारे युग के मन में एक ऐसी छवि छोड़ गए हैं जो कभी मिट नहीं सकती।’ 86

12

परंपरा
गांधी और गांधीवाद की सबसे तीखी आलोचना, शायद आश्चर्य की बात नहीं है, उनके हत्यारे नाथूराम गोडसे ने की। उसने हत्यारे की भूमिका चुनी, पूरी तरह से पकड़े जाने की उम्मीद रखते हुए और भागने की कोई योजना नहीं बनाई, क्योंकि मुकदमा उसे गांधी की निंदा करने का मंच प्रदान करता। उसने 8 नवंबर 1948 को अंग्रेजी में पांच घंटे तक भाषण दिया। गांधी ने व्यंग्यपूर्वक स्वीकार किया होगा कि उनके हत्यारे ने एक बहुत ही गांधीवादी चाल चली: एक ऐसे कार्य के लिए सजा स्वीकार करना जिसे वे न्यायसंगत मानते थे, ताकि परिणामी मुकदमे को अपने विचारों के प्रचार के साधन के रूप में इस्तेमाल कर सके।
महाराष्ट्र के एक ब्राह्मण परिवार में 1910 में जन्मे गोडसे गांधी के प्रारंभिक अनुयायियों में से एक थे। एक प्रतिबद्ध राष्ट्रवादी होने के साथ-साथ वे हिंदू सुधार के भी समर्थक थे: ‘मैंने सार्वजनिक रूप से जाति- विरोधी आंदोलनों में भाग लिया और यह तर्क दिया कि सभी हिंदुओं को सामाजिक और धार्मिक अधिकारों के मामले में समान दर्जा मिलना चाहिए और उनका उत्थान या पतन केवल योग्यता के आधार पर होना चाहिए’; वे जाति-विरोधी भोजों में भाग लेते थे जिनमें हजारों हिंदू एक साथ भोजन करके अंतरजातीय नियमों का उल्लंघन करते थे। 1 बाद में वे हिंदू समर्थक संगठनों में शामिल हो गए और सावरकर के प्रभाव में आ गए, जिन्होंने उन्हें अपने विचारों का प्रचार करने के लिए एक समाचार पत्र शुरू करने के लिए धन दिया।
वे गांधी के सत्य और अहिंसा के सिद्धांतों पर आपत्ति नहीं कर सकते थे: ‘कोई भी समझदार या प्रबुद्ध व्यक्ति इन नारों पर आपत्ति नहीं कर सकता। वास्तव में इनमें कुछ भी नया या मौलिक नहीं है। ये हर संवैधानिक जन आंदोलन में निहित हैं।’ लेकिन यह सोचना मात्र एक भ्रम था, उन्होंने आगे कहा, कि अहिंसा हर परिस्थिति में लागू हो सकती है, जब मान-सम्मान, कर्तव्य, परिवार और देश प्रेम के लिए बल प्रयोग आवश्यक हो। गांधी, ‘विरोधाभासी प्रतीत होते हुए भी, एक हिंसक शांतिवादी थे जिन्होंने सत्य और अहिंसा के नाम पर देश पर अनगिनत विपत्तियाँ लाईं।’ 2

गोडसे ने दक्षिण अफ्रीका में गांधी के कार्यों की प्रशंसा की, लेकिन कहा कि जब वह भारत लौटेंगे तो क्या होगा।
उन्होंने एक ऐसी व्यक्तिपरक मानसिकता विकसित कर ली थी जिसके
तहत वे स्वयं को सही या गलत का अंतिम निर्णायक मानते थे। यदि
देश को उनका नेतृत्व चाहिए था, तो उसे उनकी अचूकता को स्वीकार
करना ही था... या तो कांग्रेस को अपनी इच्छा उनके आगे समर्पित
करनी पड़ती और उनकी सभी विलक्षणताओं, सनक, दार्शनिक विचारों और आदिम दृष्टि के आगे नतमस्तक रहना पड़ता, या फिर उनके बिना ही आगे बढ़ना पड़ता। वे स्वयं ही हर चीज और हर किसी के निर्णायक थे... 'एक सत्याग्रही कभी असफल नहीं हो सकता' उनकी अपनी अचूकता घोषित करने का सूत्र था और उनके सिवा कोई नहीं जानता था कि
सत्याग्रही क्या होता है। इस प्रकार महात्मा गांधी अपने ही
पक्ष में न्यायाधीश और वकील बन गए। ये बचकानी मूर्खताएं और
हठधर्मिता, जीवन की अत्यंत कठोर तपस्या, निरंतर परिश्रम और
उदात्त चरित्र ने गांधी को दुर्जेय और अजेय बना दिया। 3
गोडसे के अनुसार, गांधीजी राष्ट्रपिता होने के बजाय मुसलमानों को प्रोत्साहित और खुश करने वाले थे, उन्होंने राष्ट्र के विभाजन में उनकी सहायता की थी; वे भारत के पिता नहीं, बल्कि पाकिस्तान के पिता थे। गोडसे को लगता था कि गांधीजी का सरकार पर लगातार बुरा प्रभाव पड़ रहा है और उन्हें रोकने का एकमात्र तरीका उन्हें मार डालना है। मनीलाल और रामदास गांधी द्वारा दया की अपील के बावजूद, गोडसे और आप्टे को 15 नवंबर 1949 को फांसी दे दी गई।
गोडसे का हालात का आकलन पूरी तरह गलत साबित हुआ। कम से कम 'भारत छोड़ो आंदोलन' की विफलता के बाद से गांधीजी का प्रभाव कम होता जा रहा था। पाकिस्तान को बकाया राशि के तत्काल भुगतान के लिए उनका अनशन शायद उनकी आखिरी कोशिश थी। उनका अगला कदम कांग्रेस को एक राजनीतिक दल के रूप में भंग करने और उसके समर्थकों से देश भर में अच्छे कार्यों में खुद को समर्पित करने का आह्वान करना था। राजनेताओं में उच्च नैतिक मूल्यों की उनकी उम्मीदें निश्चित रूप से टूट जातीं: इतने लंबे समय तक राजनीतिक स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने वाले लोग सत्ता के अवसर को, व्यक्तिगत पद

और धन की बात तो छोड़ ही दें, आसानी से नहीं छोड़ते। उनकी प्रतिष्ठा में गिरावट जारी रहने वाली थी।
राजनीतिक दृष्टि से, गांधी जी की हत्या करके गोडसे ने जो सबसे महत्वपूर्ण काम किया, वह था हिंदू कट्टरपंथियों की साख को धूमिल करना, जिसके चलते अगले पचास वर्षों तक उनकी स्थिति में सुधार नहीं हो सका। 2002 तक हिंदू भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) गांधी जी के पुराने विरोधी विनायक सावरकर को अपना नायक और आदर्श व्यक्ति मानने में सक्षम नहीं हो पाई थी। गांधी जी की प्रतिष्ठा के संदर्भ में, गोडसे के कृत्य ने उनके शिकार को देवत्व प्रदान करने की प्रक्रिया पूरी कर दी। गांधी जी भारत के एक चिरस्थायी प्रतीक हैं; बुद्ध के साथ वे उन दो भारतीयों में से एक हैं जिनके बारे में हर किसी ने सुना है, जिनकी छवि तुरंत याद आ जाती है। गांधी जी को अपनी उपलब्धियों पर हमेशा गर्व रहा है, जिनमें से कई समय की कसौटी पर खरी उतरी हैं। बीसवीं शताब्दी के आधुनिकतावादी पूर्वार्ध में उनके विचार पुराने पड़ गए थे, विशेषकर नेहरू जैसे प्रगतिशील लोगों को। लेकिन इक्कीसवीं शताब्दी ने एक ऐसी दुनिया को जन्म दिया जिसमें उनके कई विचार, जिन्हें पहले सनकी माना जाता था, अब मुख्यधारा बन गए हैं। विकसित देशों में गांधी जी धूम्रपान के प्रति अपनी असहिष्णुता के लिए एकजुट होते, जिसे वे शराब पीने से भी बदतर मानते थे; यूरोप में आज धूम्रपान को निश्चित रूप से कम सहन किया जाता है। उनके आहार संबंधी प्रयोग उनके समय में एक विलक्षणता की निशानी थे। आज लाखों लोग आहार के बारीक विवरणों पर ध्यान देते हैं, जैसे कि एक दिन में एक निश्चित मात्रा से अधिक कैलोरी न खाना, केवल एक ही प्रकार का भोजन करना, कार्बोहाइड्रेट न खाना, प्रतिदिन पाँच सब्जियां खाना और ऐसे ही अनगिनत विकल्प। गांधी जी निश्चित रूप से एक आधुनिक आहार विशेषज्ञ हो सकते थे, और उनकी मितव्ययिता और आत्मनिर्भरता जैसे गुण एक बार फिर सद्गुण के रूप में उभर कर सामने आए हैं, जिन्हें अब पृथ्वी को बचाने के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है।
गांधी जी को सार्वजनिक उपवास के लिए हमेशा याद किया जाता है, जो एक आध्यात्मिक अभ्यास था जिसे उन्होंने राजनीतिक उद्देश्यों के लिए भी अपनाया। उन्होंने कलकत्ता में शांति के लिए सफलतापूर्वक उपवास किया, लेकिन तब भी उपवास किया जब उनके आश्रम के सदस्य एक-दूसरे के प्रति आकर्षित होकर नैतिक रूप से भ्रष्ट हो गए थे। जब उन्होंने सवर्ण हिंदुओं और अछूतों

के लिए संयुक्त निर्वाचक मंडल के लिए 'महाकाव्य उपवास' किया, तो वे अपनी आध्यात्मिक पवित्रता के कारण नहीं, बल्कि इसलिए सफल हुए क्योंकि यदि वे अछूतों के हित में लड़ते हुए मर जाते, तो अछूतों का नरसंहार हो जाता। नियंत्रित उपवास प्रमुख धर्मों में एक मानक प्रथा है। हालांकि, राजनीतिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए आमरण उपवास करने वालों का संबंध आमतौर पर आयरिश रिपब्लिकन आर्मी, तमिल टाइगर्स और पशु अधिकार कार्यकर्ताओं जैसे आतंकवादी संगठनों से रहा है। उपवास का कार्य नियंत्रित हिंसा की उग्रता से जुड़ा है, एक ऐसी हिंसा जो और अधिक नुकसान नहीं पहुंचा सकती, बल्कि स्वयं पर ही पलटवार करती है। उपवास करने वाले की शक्ति उस निर्धन या स्वेच्छा से मूक रहने वाले व्यक्ति के समान होती है, जिसका अपने शरीर के कार्यों के एक छोटे से क्षेत्र पर नियंत्रण होता है, और वह उस पर चरम सीमा तक प्रभुत्व स्थापित करने का निश्चय करता है। अंततः आमरण उपवास एक आक्रामक कृत्य है, ठीक उसी तरह जैसे आत्महत्या करने वाला कहता है: 'मैं सचमुच खुद को चोट पहुँचाऊँगा और तब तुम्हें पछतावा होगा।' इस क्षेत्र में गांधी के कुछ ही अनुयायी हुए हैं, और सरकारें आम तौर पर रियायत देने के बजाय उपवास करने वालों को मरते हुए देखना पसंद करती हैं। भारतीय स्वतंत्रता से एक सप्ताह पहले गांधी ने लिखा: ‘जब तक मेरा विश्वास प्रज्वलित रहेगा, जैसा कि मुझे आशा है कि यह तब भी प्रज्वलित रहेगा जब मैं अकेला खड़ा रहूंगा, मैं कब्र में भी जीवित रहूंगा और इससे भी बढ़कर, वहां से बोलूंगा।’ 4 झूठी विनम्रता के अप्रतिरोध्य, उन्होंने कहा: ‘यदि मैं बिना अहंकार और उचित विनम्रता के साथ ऐसा कह सकता हूं, तो मेरा संदेश और विधि वास्तव में अपने मूल रूप में पूरे विश्व के लिए हैं।’ 5 वास्तव में, उन्हें अपने ही वर्ग के भारतीयों तक सीमित न रहकर, समान मानवाधिकारों के अपने संदेश को व्यापक रूप से लागू करने में कुछ समय लगा। दक्षिण अफ्रीका में उनका तर्क था कि श्वेत राजनीतिक आकाओं को राजनीतिक अधिकारों के मामले में भारतीयों के साथ अपने जैसा व्यवहार करना चाहिए, न कि मूल अफ्रीकियों जैसा; इसमें उन्होंने अफ्रीकी हीनता की मौन स्वीकृति दिखाई। हालांकि, समय बीतने के साथ, गांधी ने अन्य राष्ट्रवादी अभियानों को भी अपने समान ही दृष्टि से देखा। 1944 में वे तर्क दे रहे थे कि ‘भारत की स्वतंत्रता एशियाइयों और अन्य शोषित राष्ट्रों के लिए आशा लाएगी। आज

नीग्रो लोगों के लिए कोई आशा नहीं है, लेकिन भारतीय स्वतंत्रता उन्हें आशा से भर देगी।’ 6
अमेरिकी नागरिक अधिकार आंदोलन ने गांधीजी को अपना मार्गदर्शक मान
लिया। अफ्रीकी-अमेरिकी लोग 1920 के दशक से ही 'द क्राइसिस' जैसी पत्रिकाओं में उनके धार्मिक प्रतिरोध के संदेश के बारे में पढ़ते आ रहे थे। मार्टिन लूथर किंग, जिन्हें कभी-कभी 'काला गांधी' भी कहा जाता है, ने 1959 में भारत में एक महीना बिताया। उन्होंने कहा, 'अन्य देशों में मैं पर्यटक बनकर जा सकता हूँ, लेकिन भारत में मैं तीर्थयात्री बनकर आता हूँ।' 7 युवावस्था में गांधीजी पर एक व्याख्यान सुनने के बाद, उन्होंने उनके जीवन और कार्यों पर आधा दर्जन किताबें खरीदीं। उन्होंने कहा कि इन किताबों ने उन्हें सिखाया कि अहिंसा का ईसाई उपदेश, जिसे वे केवल व्यक्तियों के बीच संघर्षों में ही मान्य मानते थे, राष्ट्रों के साथ संघर्षरत नस्लीय समूहों पर भी लागू किया जा सकता है। उन्होंने गांधीजी के संदेश की व्याख्या 'बुराई के विरुद्ध अहिंसक प्रतिरोध' के रूप में की। जब वे मोंटगोमरी, अलबामा में एक पादरी के रूप में गए और खुद को नागरिक अधिकार आंदोलन का प्रवक्ता पाया, तो उन्होंने कहा कि वे 'पहाड़ी उपदेश' और गांधीवादी पद्धति की ओर लौट गए। 8 नेल्सन मंडेला ने दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद के खिलाफ अपनी लड़ाई में गांधी के प्रभाव का उल्लेख किया है। गांधी 'औपनिवेशिक क्रांति के आदर्श थे। उनकी असहयोग की रणनीति, उनका यह कथन कि हम तभी दब सकते हैं जब हम अपने उत्पीड़कों के साथ सहयोग करें, और उनका अहिंसक प्रतिरोध, हमारी सदी में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर औपनिवेशिक और नस्लवाद विरोधी आंदोलनों के लिए प्रेरणास्रोत रहे।' 9 गांधी के आदर्श 1960 के दशक तक अफ्रीकी महाद्वीप पर राष्ट्रवादी आंदोलनों के लिए प्रेरक शक्ति थे। हालांकि, उन्होंने स्वीकार किया कि अफ्रीकी राष्ट्रीय कांग्रेस गांधी के आदर्शों को केवल एक हद तक ही आगे ले जा सकी, जहाँ तक संभव हो अहिंसक प्रतिरोध जारी रखा, लेकिन फिर 1961 में 'स्पीयर ऑफ द नेशन' विंग की स्थापना के साथ गुरिल्ला युद्ध शुरू करने के लिए विवश महसूस किया। इसी संगठन से जुड़े होने के कारण मंडेला को एक चौथाई सदी से अधिक समय तक कारावास भुगतना पड़ा, जिसके बाद उन्हें रिहा कर लोकतांत्रिक दक्षिण अफ्रीका के पहले राष्ट्रपति बनाया गया।

गांधी जी अपने समय के आम रूढ़िवादी लोगों की तरह ही यौन विविधता को महत्व नहीं देते थे, यही कारण है कि गांधीवादी विचारधारा के सबसे विशिष्ट विरोध प्रदर्शनों में से कुछ यौन संबंधी रहे हैं। मध्य लंदन में सार्वजनिक रूप से चुंबन करने के आरोप में दो पुरुषों की गिरफ्तारी के बाद, समलैंगिक कार्यकर्ता समूह आउटरेज! ने सितंबर 1990 में पिकाडिली सर्कस में इरोस की मूर्ति के सामने एक 'किस-इन' का आयोजन किया। अहिंसक सविनय अवज्ञा के चरम रूप में, प्रदर्शनकारियों ने केवल चुंबन किया और पुलिस को चुनौती दी कि वे जो चाहें करें, क्योंकि उन्हें पता था कि दमन का कोई भी कार्य अधिकारियों की छवि खराब करेगा। इसी तरह, फिल्म निर्माता माइकल मूर ने अपने एक टेलीविजन कार्यक्रम के लिए अमेरिका के उन राज्यों में एक 'सोडोमोबाइल' चलाई, जहां समलैंगिकता विरोधी कानून अभी भी लागू थे, और यह घोषणा की कि वैन में निषिद्ध कृत्य हो रहे हैं। स्पष्ट रूप से, ऐसे बेतुके कानूनों को लागू करने से अधिकारियों का उपहास होगा और मूर को प्रचार मिलेगा। गांधी जी के नमक विरोध की भावना ऐसे ही शरारती विरोध प्रदर्शनों में झलकती है।
परमाणु निरस्त्रीकरण अभियान भी गांधी को आध्यात्मिक गुरु मानता है, हालांकि उन्होंने एक पत्रकार को बताया था कि उन्हें इस बात पर गहरा संदेह था कि परमाणु युग के आगमन से मानवीय समस्याओं पर कोई खास असर पड़ेगा। 10 इस विषय पर पूछे जाने पर उन्होंने बाद में कहा: ‘अहिंसा परमाणु बम से कहीं अधिक शक्तिशाली हथियार है। अगर हिरोशिमा के लोग हजारों की संख्या में प्रार्थना और सद्भावना के साथ मर भी जाते, तो भी स्थिति किसी चमत्कार की तरह बदल जाती।’ 11 गांधी को इस बात के लिए चुनौती नहीं दी जा सकती कि परमाणु हथियारों की होड़, जो उनके निधन के समय मुश्किल से शुरू ही हुई थी, के सभी जवाब उनके पास नहीं थे, लेकिन यह उनकी सोच की एक बार-बार होने वाली कमी को उजागर करता है: उनकी नैतिक दृष्टि गहरी थी, लेकिन वह व्यक्तिगत संतुष्टि पर केंद्रित थी। वे व्यक्तिगत शत्रुता को समझ सकते थे, लेकिन नरसंहार जैसी तबाही उनकी समझ से परे थी। अर्मेनियाई नरसंहार, जापानी नरसंहार, नाज़ी होलोकॉस्ट जैसी भीषण बुराई का सामना करने पर उनका दर्शन डगमगा गया। इसने अंतहीन पीड़ा का वादा किया, लेकिन मुक्ति का कोई रास्ता नहीं दिखाया। गांधी एक महान राष्ट्रवादी थे, लेकिन उनके प्रतिद्वंद्वी

चर्चिल 1930 के दशक में विश्व के देशों के सामने आने वाली चुनौतियों के लिए एक बेहतर आदर्श थे।
गांधी का योगदान एक ऐसा दृष्टिकोण था जो वहाँ कारगर साबित हुआ जहाँ एक साझा सिद्धांत और नागरिक आज्ञापालन की अपेक्षा थी; जहाँ एक ऐसा कानूनी ढाँचा था जिसमें न्यायालय कम से कम निष्पक्षता का दिखावा करते थे; जहाँ सामान्य शिष्टाचार का एक ऐसा मानक था जिसका वे सहारा ले सकते थे; जहाँ अन्याय को उजागर करने के लिए एक स्वतंत्र प्रेस और उससे चिंतित जनता थी; जहाँ उनके विरोधियों के बीच राष्ट्रवादी विचारधारा के समर्थक थे जो अपने विचार खुलकर व्यक्त कर सकते थे। भारत के मामले में, वे ऐसी स्थिति में काम कर रहे थे जहाँ अंग्रेजों ने पहले ही अंतिम स्वतंत्रता के सिद्धांत को स्वीकार कर लिया था; सवाल यह था कि यह कब होगा। एक अधिनायकवादी राज्य के जीवन से इसकी कोई तुलना नहीं थी; लोकतंत्रों और धुरी शक्तियों के बीच नैतिक समानता का गांधी का सुझाव दर्शाता है कि वे वास्तविक तानाशाही को नहीं जानते थे या जानने में उनकी कोई रुचि नहीं थी।
जिन्ना द्वारा अपनाए गए राष्ट्रवादी प्रगति के पश्चिमी संवैधानिक मॉडल को अस्वीकार करते हुए और ग्राम-आधारित मॉडल पर जोर देते हुए, गांधी ने राष्ट्रवादियों के बीच विभाजन को बढ़ावा दिया। उनके विचार, पृथ्वी पर तत्वों पर काम करने वाली आध्यात्मिक शक्तियों में उनका विश्वास, स्वतंत्रता से प्राप्त होने वाली उपलब्धियों के बारे में उनकी सर्वनाशकारी धारणाएँ, ग्रामीण क्षेत्रों में तो खूब चलीं, लेकिन वे राजनेता के गुणों से मेल नहीं खाती थीं।
विभाजन प्रक्रिया और बांग्लादेश संघर्ष के कारण हुए नरसंहार के अलावा, विभाजन उपमहाद्वीप के लिए दीर्घकालिक कारणों से भी विनाशकारी साबित हुआ। विभाजन एक प्रशासनिक आपदा भी थी: इसने अंग्रेजों द्वारा एक सदी से अधिक समय में विकसित की गई सैन्य, आर्थिक और प्रशासनिक एकता को नष्ट कर दिया। इसका एक परिणाम भारत की तुलना में पाकिस्तान का दयनीय आर्थिक प्रदर्शन रहा है; पाकिस्तान एक अविकसित धर्मतांत्रिक राज्य बन गया है, जैसा कि गांधी जी ने भारत के लिए आशा की थी। विभाजन ने भारत में सांप्रदायिक समस्याओं का भी अंत नहीं किया; स्वतंत्रता के बाद से हर साल सांप्रदायिक हिंसा होती रही है और इस बात के प्रमाण हैं कि स्थिति और भी बदतर होती जा

रही है। भारत और पाकिस्तान ने स्वतंत्रता के बाद से लगभग हर दशक में युद्ध लड़ा है, और दोनों अब परमाणु हथियारों से लैस हैं।
क्या गांधी किसी भी तरह से विभाजन के लिए जिम्मेदार थे, जो उनके
हत्यारे द्वारा लगाया गया मुख्य आरोप था? भारतीय राष्ट्रवादियों के मन में दो गलत धारणाएँ थीं, जिन्हें गांधी ने बढ़ावा दिया था: एक यह कि सांप्रदायिक तनाव साम्राज्यवादी व्यवस्था का परिणाम था, और दूसरी यह कि पश्चिम की तुलना में पूर्व आध्यात्मिक रूप से अधिक उन्नत था। गांधी ने समझाया: 'भारत में विभाजन के लिए ब्रिटिश राजनेता जिम्मेदार हैं, और यह विभाजन तब तक जारी रहेगा जब तक ब्रिटिश तलवार भारत को गुलामी में रखेगी।' 12 सांप्रदायिक क्रूरताओं को देखते हुए भारतीय राष्ट्रवादियों ने इस मनगढ़ंत कहानी से खुद को सांत्वना दी कि हिंदू-मुस्लिम फूट ब्रिटिश फूट डालो और राज करो नीति का परिणाम थी; अंग्रेजों के बिना कोई फूट नहीं होती। यह समझने के लिए किसी गहन विचारक की आवश्यकता नहीं थी कि किसी शासक द्वारा शोषण किए जाने के लिए फूट का पहले से मौजूद होना आवश्यक था।
गांधी, उनके अनुयायियों और एनी बेसेंट और चार्ल्स एंड्रयूज जैसे आध्यात्मिक साहसी लोगों ने भारतीय नैतिक श्रेष्ठता की धारणा को बढ़ावा दिया था। नए राष्ट्र के शुरुआती दिनों में ही यह धारणा धराशायी हो गई, जब ब्रिटिश राज के दौरान हुई किसी भी घटना से कहीं अधिक भयानक अत्याचार हुए। मुसलमान, सिख और हिंदू एक-दूसरे के समान ही बुरे व्यवहार कर रहे थे; किसी में भी अपने धर्म का पालन करने या जिम्मेदार नेतृत्व का कोई उदाहरण नहीं था। शांति स्थापना में गांधी का योगदान साहसी और सराहनीय था, लेकिन अधिकांश स्थानों पर गांधी मौजूद नहीं थे, या वे नरसंहारों के बाद पहुंचे थे। यह एक कड़वी सच्चाई है, लेकिन 1940 के दशक की घटनाओं में पूर्व की आध्यात्मिक श्रेष्ठता और पश्चिम के नैतिक पतन का खुलासा नहीं हुआ, बल्कि एक कहीं अधिक गंभीर तथ्य सामने आया: मानवता की नैतिक एकता – हर कोई दूसरे के समान ही बुरा है।
इन गलतफहमियों का मतलब यह था कि राष्ट्रवादियों का मूल आधार – कि स्वतंत्रता के बाद सब कुछ बेहतर हो जाएगा – घोर गलत था। धूर्त अंग्रेजों और दृढ़ निश्चयी जिन्ना को जीवन की वास्तविकताओं की बेहतर समझ थी। गांधी के लिए राजनीति असंभव को संभव करने की कला थी – सदियों पुराने हिंदू- मुस्लिम संघर्षों को एक एकीकृत भारत में ग्रामीण संबंधों के नैतिक रूप से

बेहतर मॉडल को लागू करके सुलझाया जा सकता था। अधिक अनुभवी राजनेताओं ने उनसे भारत की संवैधानिक समस्याओं के समाधान को स्वीकार करने की विनती की। कैबिनेट मिशन ने पाकिस्तान के निर्माण को अस्वीकार कर दिया था क्योंकि इससे सांप्रदायिक समस्या का समाधान नहीं होता – प्रांतों को मुस्लिम-बहुसंख्यक क्षेत्रों में समूहित करना बेहतर समझा गया। यह कहना संभव नहीं है कि 'समूहीकरण' कारगर होता या नहीं, लेकिन हम इतना जानते हैं कि स्वतंत्रता के तेरह महीनों के भीतर ही जिन्ना की मृत्यु हो जाती। यदि कैबिनेट मिशन की योजना लागू होती, भले ही जिन्ना अपने मुस्लिम-बहुसंख्यक प्रांतों को शेष भारत से अलग करना चाहते, तो शायद उनकी कुशलता और दृढ़ संकल्प के बिना पाकिस्तान का निर्माण ही न होता। गांधी जी निश्चित रूप से कैबिनेट मिशन के प्रस्ताव का समर्थन करने से इनकार करने के लिए कुछ हद तक जिम्मेदार हैं, क्योंकि तब तक बहुत देर हो चुकी थी और पाकिस्तान का निर्माण अपरिहार्य हो चुका था।
पाकिस्तान की इतनी तीव्र इच्छा के लिए गांधीजी को ही जिम्मेदार ठहराया जा सकता है कि वे इसके लिए भारत को विभाजित करने को भी तैयार थे। उन्हें राजनीति के हिंदूकरण के लिए भी जिम्मेदार ठहराया जा सकता है, जिसके कारण मुसलमान एक ऐसे राष्ट्र में लगातार अलग-थलग पड़ते जा रहे थे जहाँ हिंदू बहुसंख्यक रामराज की वापसी की आशा कर रहे थे। गांधीजी के राजनीतिक उद्देश्य हिंदू धर्म के सुधार से जुड़े हुए थे। उनकी उपलब्धि हिंदू धर्म के अनुयायियों को राजनीति में लाना थी; उनकी विफलता स्वतंत्रता को हिंदू सुधार के लक्ष्यों से इतनी गहराई से जोड़ना था कि राजनीतिक रूप से मुसलमानों के विशाल अल्पसंख्यक समुदाय या अछूतों के लिए कोई स्थान नहीं बचा, जिनके लिए हिंदू धर्म वरदान नहीं, बल्कि अभिशाप लेकर आया था। इससे भी बुरा यह था कि उन्होंने भारतीय राजनीति को धार्मिक धुंध में इस कदर डुबो दिया कि हर चीज की व्याख्या आध्यात्मिक प्राप्ति के संदर्भ में की जानी थी – एक ऐसा वातावरण जिसने जिन्ना और अन्य धर्मनिरपेक्ष राजनेताओं को अलग-थलग कर दिया, लेकिन उन पाखंडियों को सशक्त बनाया जिनके लिए धार्मिक भावनाओं का प्रदर्शन ही उनकी उन्नति के लिए पर्याप्त साबित हुआ।
भारत के दूसरे बड़े अल्पसंख्यक समुदाय, अछूतों के लिए गांधीजी के प्रयासों का फल मिला, लेकिन उस तरह से नहीं जैसा उन्होंने सोचा था। अछूतों के लिए अलग निर्वाचक मंडल का विरोध करके वे चाहते थे कि हिंदू इस तिरस्कृत

वर्ग के प्रति अपने आध्यात्मिक दायित्वों को समझें और उन्हें अपनाएं। इसके बाद जो हुआ वह स्वार्थ से कहीं अधिक प्रेरित था। गांधीजी के समय में, अछूत संयुक्त भारत की कुल जनसंख्या का एक छोटा सा हिस्सा थे। आधुनिक भारत की जनसंख्या में 'पिछड़ी जातियां' लगभग 20 प्रतिशत हैं। चुनाव जीतने की उम्मीद रखने वाले राजनेता उनकी जरूरतों को नजरअंदाज नहीं कर सकते; राजनीतिक दलों को स्थानीय आबादी का प्रतिनिधित्व करने का दावा करने के लिए अछूतों को अपने एजेंडे में शामिल करना आवश्यक है। गांधीजी के विरोधी बी.आर. अंबेडकर द्वारा अनुरोधित अलग निर्वाचक मंडल उनके बीच माने गए अंतर की पुष्टि करता; संयुक्त निर्वाचक मंडल इसे कमजोर करता है।
अंबेडकर ने अस्पृश्यता प्रथा को गैरकानूनी घोषित करने के लिए भारत का संविधान तैयार किया, और शहरों में इस दिशा में काफी प्रगति हुई है। विडंबना यह है कि आज के भारत में 'अस्पृश्यता का पाप' गांधी के आदर्श गांवों में ही सबसे अधिक स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। भारतीय जीवन के उनके औद्योगीकरण-विरोधी मॉडल को अन्य राष्ट्रवादी नेताओं ने स्वीकार नहीं किया: उदाहरण के लिए, नेहरू ने राष्ट्रव्यापी औद्योगीकरण और एक महत्वाकांक्षी परमाणु कार्यक्रम को आगे बढ़ाया। भारत की आर्थिक शक्ति अब राष्ट्रीय गौरव का विषय है। भारतीयों को इस बात से बहुत संतोष हुआ है कि इक्कीसवीं सदी की शुरुआत में ब्रिटेन के सबसे धनी व्यक्ति भारतीय उद्योगपति लक्ष्मी मित्तल थे; और भारतीय टाटा समूह ने 2007 में कभी शक्तिशाली रहे ब्रिटिश इस्पात उद्योग का अधिग्रहण कर लिया। टाटा परिवार के सदस्य दक्षिण अफ्रीका में गांधी के दिनों से ही उनके कार्यों में योगदान दे रहे थे। औद्योगीकरण और उससे जुड़ी समृद्धि का भविष्य ऐसा नहीं था जिसकी गांधी ने भारत के लिए भविष्यवाणी की हो, और न ही वह इसकी कामना करते थे। उन्हें यह जानकर अत्यंत क्षोभ होता कि 15 से 25 प्रतिशत भारतीय (उपयोग किए गए मानदंडों के आधार पर) अभी भी घोर गरीबी में जीवन यापन कर रहे हैं; लेकिन इससे उनके उत्तराधिकारियों को इस बात से कुछ हद तक संतोष मिल सकता है कि, चाहे किसी भी माप का उपयोग किया जाए, यह आंकड़ा 1970 के दशक के मध्य से औद्योगिक विकास के अनुरूप तेजी से गिर रहा है।
आम जनता गांधी को रिचर्ड एटनबरो की प्रशंसात्मक फिल्म 'गांधी' से
ज्यादा जानती है, न कि फिरोज अब्बास खान की फिल्म 'गांधी माई फादर' से, जिसमें उनके परिवार के साथ उनके जटिल संबंधों का वर्णन किया गया है। अगर

गांधी किसी भी तरह से आदर्श हैं, तो एक पति और पिता के रूप में नहीं। उनका व्यवहार कस्तूरबा के प्रति सबसे खराब था, अपने बेटों के प्रति भी बुरा था और अपने मित्रों और समर्थकों के प्रति भी हमेशा अच्छा नहीं था, लेकिन जिन लोगों को वे नहीं जानते थे, उनके प्रति उनका व्यवहार अद्भुत था और उन मेहनतकश जनता के प्रति उनमें सहज परोपकार की भावना थी जिनसे वे व्यक्तिगत रूप से कभी नहीं मिले।
अपने बच्चों के प्रति उनका बुरा बर्ताव उनकी शारीरिक वासना से घृणा के कारण था, मानो वे अपने बेटों में संभोग की उस तीव्र इच्छा का साक्षात रूप देखते हों जिसे वश में करना आवश्यक था। जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, गांधी जी को अपने बचपन के विवाह से इसलिए घृणा थी क्योंकि इसने उन्हें अपनी कामुकता का त्याग करने और अपने आध्यात्मिक स्वरूप पर ध्यान देने का अवसर मिलने से पहले ही उसे जानने के लिए बाध्य कर दिया था। युवावस्था में भी कामुकता से दूषित आत्मा को शुद्ध करने के लिए वयस्क अवस्था में साधारण संयम से प्राप्त होने वाली शुद्धि से कहीं अधिक अनुशासन की आवश्यकता होती है। गांधी जी की यौन संबंधी सनक जगजाहिर थी और उनके जीवनकाल में ही उनकी प्रतिष्ठा को धूमिल कर रही थी। कांग्रेस पार्टी के नेतृत्व ने उन्हें इस बारे में चेतावनी दी थी, साथ ही उनके साथियों और उनके लिए काम करने वाले अन्य लोगों ने भी, जिनमें नोआखली में उनके अखबार का संपादन करने वाले भी शामिल थे, जिन्होंने गांधी जी के यौन व्यवहार संबंधी स्वयं के लेखों को छापने के बजाय इस्तीफा दे दिया था। नेहरू सहित उनके कुछ समर्थक उनकी यौन कुकर्मों को नजरअंदाज कर सकते थे या उन्हें चिढ़कर सहन कर सकते थे, लेकिन उनके विरोधी ऐसा नहीं कर सकते थे। सर सी.पी. त्रावणकोर के प्रधानमंत्री रामास्वामी अय्यर ने माउंटबेटन से कहा था कि गांधी 'एक बेहद खतरनाक, अर्ध-दबा हुआ कामुक विक्षिप्त व्यक्ति' थे। 13 यह कोई मामूली अपमान नहीं था: प्रधानमंत्री अपने राज्य की संपत्ति, जिसमें थोरियम के भंडार भी शामिल थे, को कांग्रेस पार्टी के हाथों में जाने से रोकने के लिए बातचीत कर रहे थे, जो गांधी जैसे व्यक्ति के प्रभाव में आ गई थी।
गांधी जी का यौनिक चिंतन आकस्मिक या सतही नहीं था: उनके विवरण बार-बार और विस्तृत होते थे। उनके सहायक प्यारेलाल, यह जानते हुए कि उनकी स्वयं आलोचना होगी, गांधी जी के बारे में लिखते समय ब्रह्मचर्य पर अपने विचार रखने का बचाव इस आधार पर करते थे कि यह 'गांधीजी के जीवन दर्शन का मूलभूत

और अभिन्न अंग था, और इसलिए भी क्योंकि उन्होंने स्वयं इसे बहुत महत्व दिया था और मुझे भी इस संबंध में निर्देश दिया था।' 14 गांधी जी अपने आध्यात्मिक जीवन की तुलना में अपने राजनीतिक जीवन को दिए गए सापेक्षिक महत्व के बारे में बहुत स्पष्ट थे: 'मेरी महात्मागिरी व्यर्थ है। यह मेरी बाहरी गतिविधियों, मेरी राजनीति के कारण है, जो मेरा सबसे छोटा हिस्सा है और इसलिए क्षणभंगुर है। जो स्थायी मूल्य का है वह सत्य, अहिंसा और ब्रह्मचर्य पर मेरा दृढ़ संकल्प है।' 15
गांधी के विचार और लेखन कामुकता से ओतप्रोत थे। इस विषय पर खुलकर चर्चा करके वे बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध और इक्कीसवीं शताब्दी के आरंभिक दौर से पूरी तरह सहमत थे, जिसमें समाज का यौनिकरण तेजी से बढ़ा है। अंतर यह है कि यद्यपि गांधी का प्रवचन स्पष्ट रूप से कामुकता को हतोत्साहित करने के उद्देश्य से था, फिर भी वे इसका लगातार उल्लेख करते रहे, इसलिए कामुकता उनके लेखन में सर्वत्र विद्यमान रही।
यदि ‘यौन संबंध’ का अर्थ जननांगों का प्रवेश है, तो अपने जीवन के अंतिम चालीस वर्षों में गांधीजी, जैसा कि वे स्वयं कहते थे, पवित्र थे। लेकिन यदि हम यौन इच्छा को उम्र के साथ अधिक सामान्यीकृत होते हुए देखें, तो वे ऐसा नहीं थे। यदि गांधीजी ने यौन इच्छा को दबाने के बजाय उसे समझने में अधिक समय बिताया होता, तो शायद उन्होंने ध्यान दिया होता कि वृद्ध पुरुषों में, टेस्टोस्टेरोन के उत्पादन में कमी के साथ, यौन इच्छा अधिक व्यापक हो जाती है। जहाँ एक युवा पुरुष के लिए प्रवेश और स्खलन अनिवार्य है, वहीं वृद्ध पुरुषों के लिए कम विशिष्ट कामुकता पर्याप्त प्रतीत होती है – महिलाओं की आवाज़, स्त्री का स्पर्श, नग्नता का दर्शन। कोई यह तर्क दे सकता है कि वृद्ध पुरुषों को सक्रिय यौन संबंध के कम अवसर मिलते हैं, इसलिए उन्हें कम में ही संतुष्ट रहना पड़ता है। चाहे जो भी दृष्टिकोण अपनाया जाए, गांधीजी ने निश्चित रूप से अपने यौन अवसरों का भरपूर लाभ उठाया; उनके शब्दों में, उन्होंने ऐसा इसलिए किया ताकि उनका त्याग और भी अधिक स्पष्ट हो सके – उन कांग्रेसी सहयोगियों की उपेक्षा के बावजूद जो उनसे कहीं अधिक व्यावहारिक थे। साठ और सत्तर के दशक में गांधी, अपनी दैनिक नग्न मालिश, संयुक्त स्नान और युवा महिलाओं के साथ बिस्तर साझा करने के कारण, यौन उद्योग के दिग्गजों और धनी विलासी लोगों की तुलना में कहीं अधिक अंतरंग महिला संपर्क प्राप्त कर रहे थे। ईमानदार सुशीला, जिनकी सत्य की

अवधारणा गांधी की अवधारणा की तुलना में स्वीकृत मानदंडों के अधिक करीब थी, ने स्पष्ट किया कि महिलाओं के साथ सोना उनकी प्राथमिकता थी, जबकि इसे एक प्रकार का आध्यात्मिक प्रयोग मानने की धारणा उनके व्यवहार पर सवाल उठने के बाद उभरी। सुशीला का निधन 2001 में अविवाहित अवस्था में हुआ; साठ के दशक में उन्होंने अपनी आध्यात्मिक आस्था दूसरे गुरु, सत्य साई बाबा को समर्पित कर दी। आभा का निधन 1995 में अड़सठ वर्ष की आयु में हुआ; उन्होंने और उनके पति कानू गांधी ने अपना जीवन कस्तूरबा आश्रम के संचालन में समर्पित कर दिया था, जो कस्तूरबा के कुछ स्मारकों में से एक है। मनु गांधी ने सुरेंद्र मशरूवाला से विवाह किया और 1969 में चालीस वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया।
हिंदू और ईसाई धर्म में ब्रह्मचारी होते हैं, लेकिन गांधीजी
ब्रह्मचर्य को जो महत्व देते थे, उसके लिए वे उल्लेखनीय थे। हालांकि, उनके यौन प्रयोगों और पवित्रता पर उनके विचारों का दुनिया पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा है, बल्कि इससे उनकी शिक्षाओं को नुकसान ही हुआ है। उनके प्रशंसक आमतौर पर उनकी अहिंसा का सम्मान करते हैं, लेकिन उस पवित्रता का नहीं जिसे वे अपने जीवन का एक अत्यंत महत्वपूर्ण पहलू मानते थे। गांधीजी ने स्पष्ट रूप से बताया कि उनके मार्ग पर चलने वाले लोगों को क्या करना चाहिए और क्यों करना चाहिए। उन्होंने माना कि सत्य एक व्यक्तिपरक विषय हो सकता है, इसलिए सत्य की खोज करने वाले किसी भी व्यक्ति को - जिसे उन्होंने ईश्वर के समान माना - अपनी परिस्थितियों को मानकीकृत करना चाहिए, ठीक उसी तरह जैसे किसी वैज्ञानिक प्रयोग के लिए परिस्थितियों को मानकीकृत करना आवश्यक होता है ताकि वह प्रयोग हो सके। उन्होंने घोषणा की: 'जो लोग सत्य - ईश्वर - की लगन से खोज करना चाहते हैं, उन्हें इन व्रतों का पालन करना चाहिए: सत्य का व्रत - सत्य बोलना और सोचना - ब्रह्मचर्य का व्रत, अहिंसा का व्रत, दरिद्रता और अपरिग्रह का व्रत।' यदि आप ये पाँच प्रतिज्ञाएँ नहीं लेते हैं तो आप इस प्रयोग में भाग नहीं ले सकते।’ 16
इस दुनिया की चीज़ों से खुद को अलग करने की उनकी इच्छा ने उन्हें दिखावटी गरीबी की ओर धकेल दिया, एक तरह की दिखावटी दरिद्रता जिसे उनके धनी समर्थकों को वहन करना पड़ता था, क्योंकि गांधी की भारत यात्रा के दौरान विशेष रूप से किराए पर ली गई ट्रेनों में केवल तृतीय श्रेणी के डिब्बों में यात्रा करने के लिए यही खर्चा उठाना पड़ता था। सरोजिनी नायडू अक्सर

कहती थीं, 'काश बापू को पता होता कि उन्हें गरीबी में रखने की कीमत क्या थी।' 17 गांधी की सबसे बड़ी आलोचना यह हो सकती है कि वे संकीर्ण सोच वाले थे: हमेशा यह संदेह बना रहता है कि कपड़ों, भोजन और यौन संयम के प्रति उनका अत्यधिक लगाव उनकी महान प्रतिभा का दुरुपयोग था। इस तरह की चुनौती के जवाब में वे कहते कि उनका शरीर उनकी शिक्षाओं का साधन था और उन्हें उस साधन को निखारना था।
गांधी जी को व्यापक रूप से भारत की स्वतंत्रता दिलाने वाले के रूप में देखा जाता है, और वे निस्संदेह स्वतंत्रता के समय भारत के सबसे प्रसिद्ध नेताओं में से एक थे। उनके अहिंसा के सिद्धांतों को नैतिक आदर्शों के रूप में अक्सर उद्धृत किया जाता है, व्यवहार में लाने की अपेक्षा कम ही की जाती है, फिर भी वे दूसरों के लिए प्रेरणा रहे हैं। उनके द्वारा कामुकता, शराब और यहां तक कि स्वादिष्ट भोजन का त्याग करने से अनुकरणकर्ताओं की कोई भीड़ नहीं बनी। हालांकि, नस्लवाद के प्रति उनका प्रतिरोध और सभी धर्मों के महत्व के प्रति उनकी सराहना एक आधुनिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है। एक व्यक्ति के रूप में, वे अपने लंबे, जटिल आध्यात्मिक सफर में हर दिन, शायद हर मिनट, आगे बढ़ने के लिए समर्पित करने और कभी भी एक ही स्थान पर स्थिर न होने के लिए सबसे अधिक उल्लेखनीय हैं।
उन्होंने कभी हार नहीं मानी। सत्तर वर्ष की आयु में भी वे संघर्षरत
रहे, यह महसूस करते हुए कि सत्य और अहिंसा के प्रति उनका दृष्टिकोण 'दिन-प्रतिदिन स्पष्ट होता जा रहा है'। 18 वे अंततः वीर, आध्यात्मिक योद्धा थे। जैसा कि उन्होंने नोआखली के जंगलों में, जब उनके पास जीने के लिए एक वर्ष से भी कम समय बचा था, चुनौती भरे लहजे में घोषित किया: 'पूरी दुनिया मुझे त्याग सकती है, लेकिन मैं उस सत्य को छोड़ने का साहस नहीं कर सकता जिसे मैं अपने लिए सत्य मानता हूँ। यह एक भ्रम और जाल हो सकता है। यदि ऐसा है, तो मुझे इसे स्वयं समझना होगा। मैंने इससे पहले भी विनाश का जोखिम उठाया है। यदि यही वास्तविकता होनी है, तो इसे स्वीकार कर लो।' 19

□□□□□

□□□□□□□□□□

□□□□□□□	□□.□□. □□□□□: □□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□
□□□□□□□□	□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□; □□□□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□, □□□□□□ □□ □□□ CW 80 p. 209
□□□□□□□□	□□□□□□ □□□□□□□ □□□ □□.□□. □□□□□ □□ □□□□□□□□□

□□□□□

1. □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ (□□ □□□□□□: □□□□□□□ □□□□□, □□□□□ □□□ □□□□□□□ □□□□□□□□, □□□□ □□□□□, □□□ 1-100) 1958-97. □□□□□□□□□ 80 □□□□□ 209 □□. 30 □□ 1945 2 □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□: ‘“□□□□□□□” □□□□ □□ □□□□□□□□ □□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□□ □□ “□□□□□□□” □□□□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□ □□ □□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□ □□□ □□□□ “□□□□□□□” □□□□ □□□□□□, □□ □□□ □□□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□’ □□□□□□ □□□□□, □□□□□ □□ □□□ □□□-□□□□□□□□: □□□□ □□ □□□□□, □□□ 4, 1968-9 (□□□□□□□: □□□□ □□□□ □□□ □□□□□□□), □□□□□ 152, 31 □□□□□ 1924□ □□ □□□□□ □□□ ‘□□□□□□□’ □□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□ □□, □□□ □□ □□□□□, □□□□□□, □□□□□ □□□ □□□□ □□□□□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□ 3. □□□□ □□□□ □□ □□□□□□ '□□ □ □□□□□ □□□□□' (□□ □□□□□□: □□□□□□□□□□□□□□) 1997 □□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□ 4 □□□□□□□□□ 90 □□□□□□□□□□ 5 □□.□□. □□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ (□□□□: □□□□□□□) 1982 □□. 16. 6 □□□□□□□□□ 8 8 □□□□□ 1908 7 Sushila Nayar Mahatma Gandhi vol. 7 Preparing for Swaraj (Ahmedabad: Navajivan) 1996 p. 19 8 □□□□□□□□□ 21 □□. 61 6 □□□□□□□ 1921 9 □□□□□□□□□ 51 □□. 343 4 □□□□□ 1932 10 □□□□□□□□□ 80 □□. 77 6 □□ 1945 11 Pyarelal, Mahatma Gandhi vol. 9 The Last Phase part 1 (Ahmedabad: Navajivan)

1997 p. 60 12 सीडब्ल्यू 55 पृ. 61 29 अप्रैल 1933 13 सीडब्ल्यू 70 पृ. 203 25 सितंबर 1939 14 सीडब्ल्यू 70 पृ. 181 18 सितंबर 1939 15 एम.के. गांधी हिंद स्वराज या भारतीय स्वशासन (अहमदाबाद: नवजीवन) 1938 पृ. 53 16 सीडब्ल्यू 9 पृ. 446 1 अक्टूबर 1909 17 आत्मकथा पृष्ठ 14
18 सीडब्ल्यू 23 पृ. 349 3 अप्रैल 1924
1 बचपन और विवाह
1 सीडब्ल्यू 1 पृष्ठ 40 4 अप्रैल 1991 आत्मकथा पृष्ठ 19 3 आत्मकथा पृष्ठ 15 4. वी.जी. देसाई, महादेव देसाई की डायरी (अहमदाबाद: नवजीवन) 1953, खंड 1, पृष्ठ 51 5 आत्मकथा पृष्ठ 20 और आगे भी 6 Pyarelal Mahatma Gandhi vol. 1 The Early Phase (Ahmedabad: Navajivan) 1965 quoting Young India 27 April 1921 7 Pyarelal Early Phase p. 215 8 आत्मकथा पृष्ठ 23 और आगे भी 9. अरुण गांधी, मध्यरात्रि की पुत्री: गांधी की बाल दुल्हन (लंदन: ब्लेक) 1998, पृष्ठ 12 10 आत्मकथा पृ. 26; विवाह के अन्य अंतरंग विवरण, पूरे पाठ में। 11 आत्मकथा पृष्ठ 35 12 सीडब्ल्यू 72 पृष्ठ 127, 3 जून 1940 के बाद 13 वही। 14 आत्मकथा पृष्ठ 37 15 आत्मकथा पृष्ठ 4 1 16 प्यारेलाल प्रारंभिक चरण पृष्ठ 44 और आगे भी 17 सीडब्ल्यू 1 पृ. 54 13 जून 1891 18 आत्मकथा पृष्ठ 51 19 सीडब्ल्यू 1 पृ. 57 13 जून 1891 20 सीडब्ल्यू 1 पृष्ठ 4 (डिजिटल संस्करण, सीडब्ल्यू के प्रथम संस्करण में नहीं) 12 नवंबर 1888 21 आत्मकथा पृष्ठ 51 और आगे भी 22 सीडब्ल्यू 1 पृ. 58 13 जून 1891 23 आत्मकथा पृष्ठ 53 24 सीडब्ल्यू 1 पृ. 59 13 जून 1891 25 आत्मकथा पृष्ठ 54
26 सीडब्ल्यू 1 पृष्ठ 10 (डिजिटल संस्करण) 4 सितंबर 1888
2 लंदन पाठ
1 आत्मकथा पृष्ठ 58 2 आत्मकथा पृष्ठ 87 3 आत्मकथा पृष्ठ 59 4. जेम्स डी. हंट, लंदन में गांधी (नई दिल्ली: प्रोमिला एंड कंपनी) 1978, पृष्ठ 27 5 Pyarelal Early Phase p. 262 6 सीडब्ल्यू 1 पृ. 32 28 फरवरी 1891 7 आत्मकथा पृष्ठ 67 8 आत्मकथा पृष्ठ 63 9. गाय ए. एल्ड्रेड द्वारा लिखित ‘गांधी, शांतिवाद और भारत’, गांधी हत्याकांड मुकदमे में: द वर्ड क्वार्टरली, वसंत 1950, पृष्ठ 6 10 आत्मकथा पृष्ठ 63 11 Pyarelal Early Phase p. 252 12 हंट गांधी पृ. 7 13 Pyarelal Mahatma Gandhi vol. 3 The

Birth of Satyagraha: From Petitioning to Passive Resistance (Ahmedabad: Navajivan) 1986 p. 114 14 Mahadev Desai Day to Day with Gandhi (Varanasi: Sarva Seva Sangh Prakashan) 1968–9 vol. 4 p. 243 15 मुन्नी रावल दादाभाई नौरोजी: भारतीय राष्ट्रवाद के एक पैगंबर (नई दिल्ली: अनमोल प्रकाशन) 1989 पी। 13 16 रावल पैगंबर पृ. 14 17 आत्मकथा पृष्ठ 69 18 सीडब्ल्यू 1 पृ. 29 21 फरवरी 1891, 19 ए.एफ. हिल्स के शाकाहार पर निबंध (लंदन: आइडियल पब्लिशिंग यूनियन) 1894 पृष्ठ 247 20 हिल्स शाकाहार पृ. 7 9 21 हिल्स शाकाहार पृ. 81 22 आत्मकथा पृष्ठ 70 23 आत्मकथा पृष्ठ 80 24 आत्मकथा पृष्ठ 75 25 सीडब्ल्यू 16 पृ. 201 1 अक्टूबर 1919 26 हंट गांधी पृ. 34 27 सीडब्ल्यू 93 पृ. 228 3 जनवरी 1947 28 आत्मकथा पृष्ठ 93 29 सीडब्ल्यू 1 पृ. 52 13 जून 1891 30 सीडब्ल्यू 1 87 28 अप्रैल 1894
31 सीडब्ल्यू 1 पृ. 64 9 अप्रैल 1892
नेटाल में 3 रोमांचक यात्राएँ
1. अरुण गांधी की पुस्तक "डॉटर ऑफ मिडनाइट: द चाइल्ड ब्राइड ऑफ गांधी" (लंदन: ब्लेक) 1998, पृष्ठ 46 और आत्मकथा, पृष्ठ 92 2 आत्मकथा पृष्ठ 95 3 आत्मकथा पृष्ठ 98 4 आत्मकथा पृष्ठ 101 और आगे भी 5 Pyarelal Early Phase p. 298 6 आत्मकथा पृष्ठ 115 7 आत्मकथा पृष्ठ 120 8 आत्मकथा पृष्ठ 133 9 Pyarelal Early Phase p. 303 10 आत्मकथा पृष्ठ 126 11 आत्मकथा पृष्ठ 126 12 आत्मकथा पृष्ठ 137 13 मॉरीन स्वान गांधी: दक्षिण अफ्रीकी अनुभव (जोहान्सबर्ग: रेवेन प्रेस) 1985 पृ. 49 14 आत्मकथा पृष्ठ 138 15 सीडब्ल्यू 2 पृष्ठ 74, बॉम्बे में दिया गया भाषण, 26 सितंबर 1896। एक महीने बाद उन्होंने इसी धारणा का प्रयोग करते हुए 'भारतीय को एक अशिक्षित काफ़िर के स्तर तक गिराने की नीति' का उल्लेख किया। सीडब्ल्यू 2 पृष्ठ 100 16 सीडब्ल्यू 1 पृष्ठ 202, लॉर्ड रिपन को याचिका, मई 1895 17 एम.के. गांधी का दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह (अहमदाबाद: नवजीवन) 1950 पृ. 9 18 आत्मकथा पृ. 200 19 आत्मकथा पृष्ठ 151 20 स्वान एक्सपीरियंस पृ. 47 21 सीडब्ल्यू 2 पृ. 317 21 मई 1897 से पहले 22 आत्मकथा पृष्ठ 153 23 आत्मकथा पृष्ठ 159 24 सीडब्ल्यू 72 पृष्ठ 127, 3 जून 1940 के बाद 25 आत्मकथा पृष्ठ 157 26 Pyarelal Mahatma Gandhi vol. 2 The Discovery of Satyagraha – On the Threshold (Ahmedabad: Navajivan) 1980 p. 6 27 Gandhi Satyagraha p. 47 28 आत्मकथा पृष्ठ 181 29 स्वान एक्सपीरियंस पृ.

66 30 □□□□□□□□ □□□□□□ 183 31 □□□□□□□□ □□□□□□ 191 32 □□□□□□□□ □□. 255–6 33 □□□□□□□□ □□□□□□ 202 34 □□□□□□□□□□ 1 □□. 165–6 1 □□□□□□ 1895 35 □□□□□□□□□□ 1 □□. 139 3 □□□□□□□ 1894 36 □□□□□□□□□□ 1 □□. 166 1 □□□□□□ 1895 37 □□□□□□□□□□ 1 □□. 90 □□□ 1894 38 □□□□□□□□ □□. 194 39 □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□.□□. □□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ (□□□□□: □□□ □□□ □□□□□□) 1931 □□ □□□□□□□□□ VII □□□ □□□□□□ 364 □□ □□□□□ □□□ □□□

40 □□□□□□□□ □□□□□□ 209

4 □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□

1 □□.□□. □□□□□□, □□□□□□, □□□□□ □□□□□□□□□ □□□□□ (□□□□□□□□□: □□□□□□□) 1955 □□. 47 2 □□□□□□□□□□ 3 □□. 214 27 □□□□□□□ 1901 3 □□□□□□□□ □□□□□□ 222 4 □□□□□□□□ □□□□□□ 226 5 □□□□□□□□ □□□□□□ 232 6 □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□, □□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□-□□□□□ □□□□□□□□, □□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ 7 Gandhi Satyagraha p. 78 8 □□□□□□□□ □□□□□□ 245 9 □□□□□□□□□□ 6 □□. 430 □□. 20 □□□□□□□ 1907. □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□: '□□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□'□ 10 Pyarelal Mahatma Gandhi vol. 3 The Birth of Satyagraha: From Petitioning to Passive Resistance (Ahmedabad: Navajivan) 1986 p. 37 0 11 □□□□□□□□□□ 5 □□. 334 27 □□ 1906 12 Pyarelal Birth p. 358 13 Pyarelal Birth p. 26 14 Pyarelal Birth p. 439 15 □□□□□□□□□□ 6 □□. 308 □□□□□□□ □□□□□□□□ 2 □□□□□□ 1907 16 □□□□□□□□□□ 6 □□. 270 5 □□□□□□ 1907 17 □□□□□□□□ □□□□□□ 85 18 □□□□□□ □□□□□□□□□□□□ □□. 112 19 □□□□□□□□□□ 3 □□. 453 24 □□□□□□□ 1903 20 □□□□□□□□ □□□□□□ 274 21 Pyarelal Birth p. 435 22 □□□□□□□□□□ 96 □□. 32 14 □□□□□□ 1909 23 □□□□□□□□ □□□□□□ 289 24. □□□□□□ □□□□□□□□□□, □□□□□□ 91 □□ □□□□□□□□, □□□□□□ 289 25 □□□□□□ □□ □□ □□ □□□□ 4 □□□□□□ 249 26 □□□□□□□□□□ 7 □□. 457. □□□□□□□ □□□□□□□□ 28 □□□□□□□ 1907 27 □□□□□□□□ □□. 197 28 □□□□□□□□ □□□□□□ 299 29 □□□□□□□□ □□□□□□ 23 30 □□□□□□□□□□ 6 □□. 34 27 □□□□□□□□ 1906 31 Pyarelal Mahatma Gandhi vol. 1 The Early Phase (Ahmedabad: Navajivan) 1965 p. 550 32 □□□□□□□□□□ 9 □□. 230 29 □□ 1909

33 □□□□□□□□□□ 96 □□. 13 3 □□□□□□ 1909

5 गरीबों की सेना
1. लुई फिशर, महात्मा गांधी का जीवन (लंदन: जोनाथन केप) 1951, पृष्ठ 72 2 लियोनेल कर्टिस सिविटास देई (लंदन: मैकमिलन) 1934-7 खंड 1 पृष्ठ 164 3 जे.सी. स्मट्स जन क्रिश्चियन स्मट्स (लंदन: कैसल) 1952 पृ. 106 4 सीडब्ल्यू 5 पृ. 417 9 सितंबर 1906 5 सीडब्ल्यू 5 पृ. 441 22 सितंबर 1906 6 Gandhi Satyagraha p. 97 7 सीडब्ल्यू 7 पृ. 72 6 जुलाई 1907 8 सीडब्ल्यू 4 पृ. 105 14 जनवरी 1904 9 Gandhi Satyagraha p. 101 10 Sushila Nayar Mahatma Gandhi vol. 4: Satyagraha at Work (Ahmedabad: Navajivan) 1989 p. 12 2 11 सीडब्ल्यू 96 पृ. 9, 25 21 जून 1909 और 30 अगस्त 1909 12 नायर सत्याग्रह एट वर्क पृ. 463 13 सीडब्ल्यू 96 पृ. 25, 26 30 अगस्त 1909 और 10 सितंबर 1909 14 Gandhi Satyagraha p. 165 15 सीडब्ल्यू 8 पृष्ठ 24, 10 जनवरी 1908 का नोट 16 सीडब्ल्यू 84 पृ. 295 6 जून 1946 17 जॉर्ज पैक्सटन सोन्या श्लेसिन: गांधी की दक्षिण अफ्रीकी सचिव (ग्लासगो: पैक्स बुक्स) 2006 पृ. 10. श्लेसिन का भाषण वास्तव में गांधी द्वारा पढ़ा गया था। 18 सीडब्ल्यू 6 पृ. 30 26 अक्टूबर 1906 19 सीडब्ल्यू 6 पृ. 336 23 फरवरी 1907 20 सीडब्ल्यू 7 पृ. 230 14 सितंबर 1907 21 सीडब्ल्यू 8 पृ. 3–4 4 जनवरी 1908 22 सीडब्ल्यू 8 पृ. 99 22 फरवरी 1908 23 Gandhi Satyagraha p. 141 24 सीडब्ल्यू 7 में पृष्ठ 441 के विपरीत पुनः प्रस्तुत किया गया। 25 सीडब्ल्यू 7 पृ. 443 21 दिसंबर 1907 26 स्वान एक्सपीरियंस पृ. 162 27 सारा गर्ट्रूड मिलिन जनरल स्मट्स वॉल्यूम। 1 (लंदन: फैबर एंड फैबर) 1936 पी. 238 28 Gandhi Satyagraha p. 147 29 वही। 30 Gandhi Satyagraha p. 157 31 सीडब्ल्यू 9 पृ. 149 16 जनवरी 1909 32 सीडब्ल्यू 8 पृ. 120 7 मार्च 1908 33 सीडब्ल्यू 8 पृ. 135 7 मार्च 1908 34 सीडब्ल्यू 9 पृ. 161 23 जनवरी 1909 35. अरुण गांधी, मध्यरात्रि की पुत्री: गांधी की बाल दुल्हन (लंदन: ब्लेक) 1998, पृष्ठ 158 36 सीडब्ल्यू 10 पृष्ठ 447 मगनलाल को पत्र, 9 मार्च 1911 37 सीडब्ल्यू 96 पृ. 182–3 कैलेनबैक को 12 अप्रैल 1914 38 Gandhi Satyagraha p. 214 39 हेनरी ट्रॉयट टॉल्स्टॉय (लंदन: पेंगुइन) 1970 पृ.
874. गांधी ने टॉल्स्टॉय का एक लंबा पत्र छपवाकर 'एक हिंदू को पत्र' के रूप में वितरित करवाया; इसमें भारतीयों की ब्रिटिश शासन को स्वीकार करने में उनकी आज्ञाकारिता की आलोचना की गई थी। 40 Gandhi Satyagraha p. 222

41 Gandhi Satyagraha p. 217 42 सीडब्ल्यू 10 पृ. 282 2 जुलाई 1910 43 आत्मकथा पृष्ठ 309 44 नरेंद्र सिंह सरीला वन्स ए प्रिंस ऑफ सरीला (लंदन: आई.बी. टॉरिस) 2008 पी। 30; गांधी सत्याग्रह प. 24 2 45 Gandhi Satyagraha p. 223 46 सीडब्ल्यू 9 पृ. 495 22 अक्टूबर 1909 47 सीडब्ल्यू 12 पृ. 190 18 सितंबर 1913 48 सीडब्ल्यू 10 पृ. 429 5 मार्च 1911 49 अरुण गांधी, डॉटर ऑफ मिडनाइट, पृष्ठ 175 50 सीडब्ल्यू 11 पृ. 78 18 मई 1911 51 Sushila Nayar Mahatma Gandhi vol. 5 India Awakened (Ahmedabad: Navajivan) 1994 p. 243 आत्मकथा पृष्ठ 313, 52। तीस साल बाद उपवासों को याद करते हुए उन्होंने लिखा: ‘मनीलाल ने एक गंभीर गलती की थी, जिसके लिए मैंने सात दिन उपवास किया और एक साल तक हर दिन एक भोजन छोड़ा। मैंने जेकी के कारण चौदह दिन उपवास किया।’ सीडब्ल्यू 72 पृष्ठ 143, 6 जून 1940 53 नायर सत्याग्रह एट वर्क पृ. 599 54 सीडब्ल्यू 12 पृ. 410 22 अप्रैल 1914 55 सीडब्ल्यू 96 पृ. 189 13 मई 1914 56 कैथरीन टिड्रिक गांधी: एक राजनीतिक और आध्यात्मिक जीवन (लंदन: आई.बी. टॉरिस) 2006 पृ. 97 57 सीडब्ल्यू 6 पृ. 431 सी. 20 अप्रैल 1907 58 योगेश चड्ढा द्वारा गांधी की पुनः खोज (लंदन: सेंचुरी) 1997 पृ. 145 59 अरुण गांधी डॉटर ऑफ मिडनाइट पृ. 167 60 Gandhi Satyagraha p. 227 61 अरुण गांधी, डॉटर ऑफ मिडनाइट, पृष्ठ 176 62 Gandhi Satyagraha p. 244 63 Gandhi Satyagraha p. 257 64 Gandhi Satyagraha p. 259 65 सीडब्ल्यू 96 पृ. 150 23 अक्टूबर 1913 66 चड्ढा रीडिस्कवरिंग पृ. 183 67 Gandhi Satyagraha p. 271 68 सी.एफ. एंड्रयूज महात्मा गांधी के विचार (लंदन: एलन एंड अनविन) 1931 पृ. 194
69 चड्ढा रीडिस्कवरिंग पृ. 191
6 ग्राम कार्यकर्ता
1 Gandhi Hind Swaraj p. ix 2 चड्ढा रीडिस्कवरिंग पृ. 146 3 सीडब्ल्यू 9 पृ. 508 30 अक्टूबर 1909 4 सीडब्ल्यू 10 पृ. 245 11 दिसंबर 1909 5 एरिक एच. एरिकसन गांधी का सत्य: उग्र अहिंसा की उत्पत्ति पर (लंदन: फेबर एंड फेबर) 1970 पृ. 21 7 6 Gandhi, Hind Swaraj p. ix 7 Gandhi Hind Swaraj p. xii 8 गांधी हिंद स्वराज पृ. xii, 183 9 Gandhi Hind Swaraj p. 59 10 Gandhi Hind Swaraj p. 88 11 नायर सत्याग्रह एट वर्क पृ. 497 12 Gandhi Hind Swaraj pp. 131, 142 & 143 13 सीडब्ल्यू 37 पृ. 380 21 अक्टूबर 1928 14 सीडब्ल्यू 43 पृष्ठ 40, 11 मार्च 1930 को या उससे पहले 15 श्यामजी

कृष्णवर्मा भारतीय समाजशास्त्री अक्टूबर 1913 पृ. 3 16 Sushila Nayar Mahatma Gandhi vol. 6 Salt Satyagraha: The Watershed (Ahmedabad: Navajivan) 1995 p. 402 17 सीडब्ल्यू 10 पृ. 245 7 मई 1910 18 Sushila Nayar Mahatma Gandhi vol. 5 India Awakened (Ahmedabad: Navajivan) 1994 p. 7 19 सीडब्ल्यू 12 पृ. 524 8 अगस्त 1914 20 सीडब्ल्यू 12 पृ. 39 19 अप्रैल 1913 21 स्टैनली वोल्परट जिन्ना ऑफ पाकिस्तान (नई दिल्ली: ओयूपी) 2005 पृ. 37 22 वेद मेहता महात्मा गांधी और उनके शिष्य (लंदन: पेंगुइन) 1977 पृ. 211 23 आत्मकथा पृ. 340 24 Gandhi Hind Swaraj p. v 25 सीडब्ल्यू 96 पृ. 203 2 मार्च 1915 26 सीडब्ल्यू 12 पृ. 410 22 अप्रैल 1914 27 आत्मकथा पृष्ठ 352 28 आत्मकथा पृष्ठ 353 29 सीडब्ल्यू 13 पृ. 54 22 अप्रैल 1915 30 सीडब्ल्यू 13 पृष्ठ 38, 14 मार्च 1915 के बाद 31 आत्मकथा पृष्ठ 358 32 सी.एफ. एंड्रयूज महात्मा गांधी के विचार (लंदन: एलन एंड अनविन) 1931 पृ. 101, 105. गांधी की प्रतिक्रिया अधिक परिष्कृत संस्करण से है: सी.डब्ल्यू. 13 पृ. 229 'आश्रम प्रतिज्ञाओं पर भाषण'। 33 सीडब्ल्यू 12 पृ. 46, 50, 51 26 अप्रैल 1913 34 ‘ब्रह्मचर्य को यौन अंतरंगता से उच्चतर अवस्था के रूप में प्रस्तुत करने पर यह वैवाहिक संबंधों को कमजोर करता है। इससे, वास्तव में, जोड़े में लोग एक-दूसरे के बजाय गुरु के प्रति समर्पित हो जाते हैं। गुरु अपने अनुयायियों पर सबसे बुनियादी क्षेत्रों में नियंत्रण रख सकते हैं, यह निर्धारित करके कि वैवाहिक संबंध की अनुमति है या नहीं, कौन किससे विवाह करेगा, कितनी बार और किन परिस्थितियों में यौन संबंध की अनुमति है, क्या जोड़े सहवास कर सकते हैं, और यहां तक कि क्या वे संतान उत्पन्न करेंगे और बच्चों का पालन-पोषण कैसे करेंगे।’ जोएल क्रेमर और डायना अल्स्टैड, द गुरु पेपर्स: मास्क ऑफ अथॉरिटेरियन पावर (बर्कले: फ्रॉग लिमिटेड) 1993, पृष्ठ 9। 35 Pyarelal Early Phase p. 15 36 सीडब्ल्यू 13 पृ. 232 ‘आश्रम की प्रतिज्ञाओं पर भाषण’ 16 फरवरी 1916 37 आत्मकथा पृष्ठ 359 38 सीडब्ल्यू 13 पृ. 127 3 सितंबर 1915 39 सीडब्ल्यू 50 पृ. 222 11 जुलाई 1932 40 एरिकसन गांधी का सत्य पृ. 311 41 सीडब्ल्यू 96 पृ. 237 24 जून 1916 42 अरुण गांधी, मध्यरात्रि की पुत्री, पृष्ठ 212 43 सीडब्ल्यू 96 पृ. 240 10 सितंबर 1916 44 नाथूराम गोडसे ने महात्मा गांधी की हत्या क्यों की (नई दिल्ली: सूर्य भारती प्रकाशन) 1993 पृष्ठ। 63 45 सीडब्ल्यू 13 पृ. 214 6 फरवरी

1916 46 Raojibhai Patel Hind Ke Sardar (Ahmedabad: Navajivan) 1972 p. 33 47 नायर इंडिया अवेकेंड पृ. 147. ऐसा कहा जाता है कि टैगोर ने सबसे पहले इस शब्द का प्रयोग किया था; निःसंदेह यह कई लोगों के मन में एक ही समय में आया होगा। 48 आत्मकथा पृ. 373 49 एरिकसन, गांधी का सत्य, पृष्ठ 299, अंबलाल साराभाई के साथ उनके साक्षात्कार से। 50 सीडब्ल्यू 14 पृ. 256 15 मार्च 1918 51 सीडब्ल्यू 14 पृ. 263 17 मार्च 1918 52 एरिकसन गांधी का सत्य पृ. 352 53 एरिकसन गांधी का सत्य पृ. 356 54 एंथनी रीड और डेविड फिशर द प्राउडेस्ट डे: इंडियाज लॉन्ग रोड टू इंडिपेंडेंस (लंदन: जोनाथन केप) 1997 पृ. 134 55 राजमोहन गांधी: गांधी: द मैन, हिज पीपल एंड द एंपायर (लंदन: हॉस) 2007 पृ. 194 56 आत्मकथा पृष्ठ 403 57 सीडब्ल्यू 14 पृ. 438 21 जून 1918 58 सीडब्ल्यू 14 पृ. 440 22 जून 1918 59 सीडब्ल्यू 13 पृ. 483 14 जुलाई 1918 60 सीडब्ल्यू 14 पृ. 171 24 जनवरी 1918 61 आत्मकथा पृ. 405 62 नायर इंडिया अवेकेंड पृ. 235 63 सीडब्ल्यू 15 पृ. 70 10 जनवरी 1919
64 सीडब्ल्यू 15 पृ. 65 26 नवंबर 191 8
7 भारत को उत्तेजित करना
1 सीडब्ल्यू 15 पृ. 87 9 फरवरी 1919 2 आत्मकथा पृष्ठ 413 3 नायर इंडिया अवेकेंड पृ. 262 4 सीडब्ल्यू 15 पृ. 195 7 अप्रैल 1919 5 आत्मकथा पृष्ठ 425 6 जवाहरलाल नेहरू की आत्मकथा (लंदन: बॉडली हेड) 1953, पृष्ठ 35 7. जैड एडम्स और फिलिप व्हाइटहेड, द डायनेस्टी: द नेहरू-गांधी स्टोरी (लंदन: पेंगुइन) 1997, पृष्ठ 55 8. विजया लक्ष्मी पंडित: सुख का दायरा (लंदन: वेडेनफेल्ड एंड निकोलसन) 1979, पृष्ठ 63 9 पंडित सुख पृ. 73 10 नेहरू की आत्मकथा, पृष्ठ 45, 46 11 नेहरू की आत्मकथा पृष्ठ 54 12 सीडब्ल्यू 31 पृ. 369 8 सितंबर 1926 13 सीडब्ल्यू 96 पृ. 274 17 जून 1920 14 देसाई डे टू डे खंड 2 1968 पृष्ठ 154 15 देसाई, दिन-प्रतिदिन, खंड 2, पृष्ठ 163 16 सी.एफ. एंड्रयूज महात्मा गांधी के विचार (लंदन: एलन एंड अनविन) 1931 पृ. 360 17 सीडब्ल्यू 18 पृ. 104 1 अगस्त 1920 18 सीडब्ल्यू 19 पृ. 30 26 नवंबर 1920 19 स्टैनली वोल्परट, जिन्ना ऑफ पाकिस्तान (नई दिल्ली: ओयूपी) 2005, पृष्ठ 70 20 रवींद्रनाथ टैगोर ‘चक्र की पूजा’ मॉडर्न रिव्यू सितंबर 1925 21 सीडब्ल्यू 18 पृ. 130 10 अगस्त 1920 22 सीडब्ल्यू 16 पृ. 497 23 जनवरी 1920 23 सीडब्ल्यू 17 पृ. 375 2 मई 1920 24 सीडब्ल्यू 17

पृ. 366 1 मई 1920 25. मार्गरेट सैंगर द्वारा लिखित ‘जन्म नियंत्रण पर एक शिखर सम्मेलन’, नॉर्मन कजिन्स (संपादक) द्वारा संपादित ‘प्रोफाइल्स ऑफ गांधी: अमेरिका रिमेम्बर्स ए वर्ल्ड लीडर’ (नई दिल्ली: इंडियन बुक कंपनी) 1969, पृष्ठ 39 26 सीडब्ल्यू 19 पृ. 138 17 दिसंबर 1920 27 मिली पोलक, चंद्रशंकर शुक्ला (संपादक) गांधीजी जैसा हम उन्हें जानते हैं (बॉम्बे: वोरा एंड कंपनी) 1945, पृष्ठ 47 28 Pyarelal, Mahatma Gandhi vol. 1 The Early Phase (Ahmedabad: Navajivan) 1965 p. 8 29 Pyarelal, Early Phase p. 7 30 Pyarelal, Early Phase p. 10 31 Pyarelal, Early Phase p. 1 2 32 वही। 33 वही। 34 ह्यू टिंकर वायसराय: कर्ज़न से माउंटबेटन (कराची: ओयूपी) 1997 पृ. 94 35 नायर इंडिया अवेकेंड पृ. 354 36 सीडब्ल्यू 20 पृ. 381–2 17 जुलाई 1921 37 नायर इंडिया अवेकेंड पृ. 355 38 सीडब्ल्यू 47 पृ. 307 18 अगस्त 1931 39 सीडब्ल्यू 21 पृ. 183 22 सितंबर 1921 40 सीडब्ल्यू 18 पृ. 235 8 सितंबर 1920 41 बी.आर. नंदा महात्मा गांधी: एक जीवनी (नई दिल्ली: ओयूपी) 1996 पृ. 234 42 सीडब्ल्यू 22 पृ. vii 8 फरवरी 1922 43 नेहरू की आत्मकथा पृ. 81–2 44 नेहरू की आत्मकथा पृष्ठ 85
45 सीडब्ल्यू 23 पृ. 118–19 18 मार्च 1922
8 नमक मार्च
1 Sushila Nayar Mahatma Gandhi vol. 5 India Awakened (Ahmedabad: Navajivan) 1994 p. 411 2 सीडब्ल्यू 23 पृ. 93 13 मार्च 1922 3 Nayar Salt Satyagraha p. 413 4 सीडब्ल्यू 25 पृ. 200 22 सितंबर 1924 5 सीडब्ल्यू 35 पृ. 229 3 अप्रैल 1926 6 सीडब्ल्यू 33 पृ. 55 8 फरवरी 1927 7 सीडब्ल्यू 13 पृ. 277 5 जून 1916 8 सीडब्ल्यू 13 पृ. 301 अक्टूबर 1916 से पहले 9 सीडब्ल्यू 21 पृ. 188 23 सितंबर 1921 10 Mehta Mahatma Gandhi p. 48 11 Mehta Mahatma Gandhi p. 51 12 रोमेन रोलैंड महात्मा गांधी (न्यूयॉर्क: सेंचुरी कंपनी) 1924 पृ. 3 13 रोलैंड महात्मा गांधी पृ. 239 14 एम.के. गांधी बापू के मीरा को लिखे पत्र (अहमदाबाद: नवजीवन) 1949 पृ. 5 15 सीडब्ल्यू 29 पृ. 298 4 दिसंबर 1925 16 सीडब्ल्यू 41 पृ. 78 24 जून 1929 17 सीडब्ल्यू 47 पृ. 49 24 जून 1931 18 सीडब्ल्यू 49 पृ. 157 25 फरवरी 1932 19 Sushila Nayar Mahatma Gandhi vol. 5 India Awakened (Ahmedabad: Navajivan) 1994 p. 243 20 Mehta Mahatma Gandhi p. 7 21 मेहता महात्मा गांधी पृ. 213. दक्षिण अफ्रीका में गांधी

के इतने करीब यूरोपीय लड़कियां नहीं थीं; संदेह होना चाहिए कि यह सोन्या श्लेसिन थी। 22 Mehta Mahatma Gandhi p. 50 23 सीडब्ल्यू 36 पृ. 261 26 अप्रैल 1928 24 सीडब्ल्यू 40 पृ. 210 8 अप्रैल 1929 25 Nayar Salt Satyagraha p. 201 26 सीडब्ल्यू 26 पृ. 244 7 मार्च 1925 27 Mehta Mahatma Gandhi p. 216 28 एडम्स और व्हाइटहेड राजवंश पृ. 79 29 टिंकर वाइसरॉय पृ. 116 30 सीडब्ल्यू 1 पृ. 25 7 फरवरी 1891 31 सीडब्ल्यू 11 पृ. 169 22 अक्टूबर 1911 32 सीडब्ल्यू 43 पृ. 5 2 मार्च 1930 33 वही। 34 Nayar Salt Satyagraha p. 236 35. थॉमस वेबर, नमक मार्च पर: गांधीजी के दांडी मार्च का इतिहासलेखन (नई दिल्ली: हार्परकॉलिन्स) 1997, पृष्ठ 224 36 Nayar Salt Satyagraha p. 257 37 सीडब्ल्यू 43 पृ. 420 25 मई 1930 38 चड्ढा रीडिस्कवरिंग पृ. 296 39 चड्ढा रीडिस्कवरिंग पृ. 297 40 सीडब्ल्यू 51 पृ. 71 26 जनवरी 1931 41 एडम्स और व्हाइटहेड राजवंश पृ. 89 42 मार्टिन गिल्बर्ट विंस्टन एस. चर्चिल खंड 5 1922-1939 (लंदन: हेनेमैन) 1976 पृष्ठ 390 43 गिल्बर्ट चर्चिल पृ. 356–7 44 अर्ल बर्केनहेड हैलिफ़ैक्स (लंदन: हैमिश हैमिल्टन) 1965 पृ. 299 45 बर्केनहेड हैलिफ़ैक्स पृ. 299 46 एंड्रयू रॉबर्ट्स द होली फॉक्स: ए लाइफ ऑफ लॉर्ड हैलिफ़ैक्स (लंदन: पेपरमैक) 1991 पृ. 39 47 टिंकर वाइसरॉय पृ. 122
48 नेहरू की आत्मकथा पृष्ठ 258
9 विश्व आइकन
1 सीडब्ल्यू 47 पृ. 384 29 अगस्त 1931 2 सीडब्ल्यू 47 पृ. 133, 15 जुलाई 1931 से पहले 3. जॉन हेन्स होम्स, चंद्रशंकर शुक्ला (संपादक) द्वारा संपादित पुस्तक "गांधीजी जैसा हम उन्हें जानते हैं" (बॉम्बे: वोरा एंड कंपनी) 1945, पृष्ठ 99 4 सीडब्ल्यू 47 पृ. 119–20 9 जुलाई 1931 5. मुरियल लेस्टर द्वारा लिखित 'एंटरटेनिंग गांधी' (लंदन: आइवर निकोलसन एंड वाटसन) 1932, पृष्ठ 241 6. जेम्स डी. हंट, लंदन में गांधी (नई दिल्ली प्रोमिला एंड कंपनी) 1978, पृष्ठ 200 7 लेस्टर एंटरटेनिंग पृ. 69 8 हंट गांधी पृ. 213 9. द टाइम्स में प्रकाशित शोक संदेश, 31 जनवरी 1948, पृष्ठ 6 10 सीडब्ल्यू 48 पृ. 272–3 6 नवंबर 1931 11 सीडब्ल्यू 48 पृ. 297–8 13 नवंबर 1931 12 लुई फिशर महात्मा गांधी का जीवन (लंदन: जोनाथन केप) 1951 पृ. 319 13 टिंकर वाइसरॉय पृ. 130 14. वी.जी. देसाई, महादेव देसाई की

□□□□□, □□□ 1 (□□□□□□□□: □□□□□□), 1953, □□□□□ 130 15 □□□□□□□□□ 50 □□. 383 18 □□□□□ 1932 16. □□.□□. □□□□□□□: □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□ (□□□□□□: □□□□ □□□ □□□□□) 1945, □□□□□ 85 17 □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ 370 18 □□□□□□□ □□□□ □□. 313 19 □□□□□□□□□ 50 □□. 102 20 □□□□□□ 1932 20 Pyarelal The Epic Fast (Ahmedabad: Mohanlal Maganlal Bhatt) 1932 p. 49 21 □□□□□□□ □□□□ □□. 88 22 □□□□□□□ □□□□ □□. 260 23 □□□□□□□□□ 52 □□. 312 31 □□□□□□ 1932 24 □□□□□□□□□ 53 □□. 3 11 □□□□□ 1933 25 □□□□□□□□□ 62 □□. 121 16 □□□□□ 1935 26 Sushila Nayar Mahatma Gandhi vol. 7 Preparing for Swaraj (Ahmedabad: Navajivan) 1996 p. 5 27 Mehta Mahatma Gandhi p. 7 28 Mehta Mahatma Gandhi p. 11 29 □□□□□□□□□ 61 □□. 36 21 □□□□□□ 1935 30 Mehta Mahatma Gandhi p. 13 31 Mehta Mahatma Gandhi p. 203 32 Mehta Mahatma Gandhi p. 200 33 Mehta Mahatma Gandhi p. 14 34 □□□□□□□□□ 13 □□. 301 □□□□□□□ 1916 □□ □□□□ 35 □□□□□ (□□.) □□□□□□□ □□□ □□□□□ □□. 123 36 □□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ (□□□□: □□□□□□ □□□□□□□□) 1939, □□□□□ 458 37 Mehta Mahatma Gandhi p. 5 4 38 □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ 513 39 □□□□□□□□□ 62 □□. 159 3/4 □□□□□□ 1935 40 □□□□□ □□□□□□□ □□□□□ 460 41 □□□□□□□□□ 62 □□. 212 29 □□□□□ 1936 42 □□□□□□□□□ 62 □□. 372 6 □□ 1936 43 □□□□□□□□□ 62 □□. 428–9 21 □□ 1936 44 □□□□□□□□□ 59 □□. 111 3 □□□□□□□ 1934 45 □□□□□□□□□ 61 □□. 37 5 □□ 1935 46 □□□□□□□□□ 63 □□. 7 6 □□□ 1936 47 □□□□□□□□□ 64 □□. 253 16 □□□□□ 1937 48 □□□□□□□□□ 64 □□. 37 13/14 □□□□□ 1936 49 □□□□□□□□□ 57 □□. 44 24 □□□□□ 1934 50 □□□□□□□□□ 57 □□. 51 26 □□□□□ 1934 51 □□□□□□□□□ 57 □□. 87 2 □□□□□ 1934 52 □□□□□□□□□ 57 □□. 392 15 □□□□□□ 1934 53 □□□□□□□□□ 59 □□. 4 17 □□□□□□ 1934 54 □□□□□□□□□ 59 □□. 214, 218 23 □□□□□□□ 1934
55 □□□□□□□□□ 65 □□. 231 22 □□ 1937

10 □□□□ □□□□□

1 □□□□□□□□□ 68 □□. 203–4 12 □□□□□□ 1938 2 □□□□□□□□□ 68 □□. 137–8 20 □□□□□ 1938 3 □□□□□□□□□ 68 □□. 138–9 20 □□□□□ 1938 4 □□□□□□□□□ 72 □□. 70 15 □□ 1940 ‘□□□□□ [□□□□□ □□□] □□□ □□□□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□’ □□□□□□□□□ 75 □□. 177 17

दिसंबर 1941 5 सीडब्ल्यू 73 पृ. 255 24 दिसंबर 1940 6 सीडब्ल्यू 76 पृ. 187 6 जून 1942 7 सीडब्ल्यू 73 पृ. 254 24 दिसंबर 1940 8 अर्ल एवन ऑफ द ईडन मेमोयर्स: फेसिंग द डिक्टेटर्स (लंदन: कैसल) 1962 पृ. 516 9 सीडब्ल्यू 66 पृ. 436 27 मार्च 1938 10 सीडब्ल्यू 66 पृ. 82 28 अगस्त 1937 11 जिन्ना का लखनऊ में दिया गया भाषण, 15 अक्टूबर 1937, सीडब्ल्यू 66 पृष्ठ 468 में पुनः प्रकाशित। 12 सीडब्ल्यू 70 पृ. 288 22 अक्टूबर 1939 13 सीडब्ल्यू 67 पृ. 61 3 मई 1938 14 सीडब्ल्यू 67 पृ. 117 11 जून 1938. प्रभावती, कांग्रेस के समाजवादी सदस्य जयप्रकाश नारायण की पत्नी थीं। गांधी के प्रभाव में आने के बाद, प्रभावती ने अपने विवाह पर ब्रह्मचर्य का पालन करने का नियम लागू किया। 15 सीडब्ल्यू 67 पृ. 37 22 अप्रैल 1938 16 स्टैनली वोल्परट, जिन्ना ऑफ पाकिस्तान (नई दिल्ली: ओयूपी) 2005, पृष्ठ 166 17 सीडब्ल्यू 67 पृ. 117 11 जून 1938 18 सीडब्ल्यू 67 पृ. 60 3 मई 1938 19 सीडब्ल्यू 67 पृ. 104 2 जून 1938 20 सीडब्ल्यू 67 पृ. 118 11 जून 1938 21 सीडब्ल्यू 93 पृ. 175 2 जून 1938 के बाद 22 सीडब्ल्यू 93 पृ. 204 12 सितंबर 1938 23 सीडब्ल्यू 67 पृ. 194–8 23 जुलाई 1938 24 सीडब्ल्यू 93 पृ. 237 3 फरवरी 1939 25 Mehta Mahatma Gandhi p. 203 26 सीडब्ल्यू 70 पृ. 175 15 सितंबर 1939 27 सीडब्ल्यू 70 पृ. 411 14 सितंबर 1939 28 वोल्पर्ट जिन्ना पृ. 175 29 वोल्पर्ट जिन्ना पृ. 176 30 रीड और फिशर का सबसे गौरवशाली दिन पृष्ठ 295 31 वोल्पर्ट जिन्ना पृ. 181 32 सीडब्ल्यू 71 पृ. 412 9 अप्रैल 1940 33 सीडब्ल्यू 72 पृ. 229–30 6 जुलाई 1940 34 सीडब्ल्यू 72 पृ. 232 10 जुलाई 1940 35 सीडब्ल्यू 69 पृ. 390 4 जुलाई 1939 36 पीटर क्लार्क द क्रिप्स वर्जन: द लाइफ ऑफ सर स्टैफोर्ड क्रिप्स (लंदन: एलन लेन) 2002 पृ. 305; निकोलस मैन्सरघ द ट्रांसफर ऑफ पावर खंड 1 (लंदन: एचएमएसओ) 1970 पृ. 498 27 मार्च 1942 37 केनेथ हैरिस एटली (लंदन: वेडेनफेल्ड एंड निकोलसन) 1982 पृ. 203 38 सीडब्ल्यू 76 पृ. 67 26 अप्रैल 1942 39 सीडब्ल्यू 76 पृ. 106 14 मई 1942 40 सीडब्ल्यू 76 पृ. 186 6 जून 1942 41 सीडब्ल्यू 76 पृ. 334 26 जुलाई 1942 42 क्लार्क क्रिप्स संस्करण पृष्ठ 306 43 सीडब्ल्यू 76 पृ. 197 14 जून 1942 44 सीडब्ल्यू 76 पृ. 105 14 मई 1942 45 सीडब्ल्यू 75 पृ. 205 8 जनवरी 1942 46 सीडब्ल्यू 75 पृष्ठ 64, 24 अप्रैल 1942 से पहले 47 सीडब्ल्यू 76 पृ. 392 8 अगस्त 1942 48 चड्ढा रीडिस्कवरिंग पृ. 383 49

सुशीला नायर कस्तूरबा: गांधी की पत्नी (वॉलिंगफोर्ड, पेंसिल्वेनिया: पेंडले हिल) 1948 पी। 36 50 Nayar Kasturba p. 43 51 चड्ढा रीडिस्कवरिंग पृ. 39 1 52 Nayar Kasturba p. 44 53 Nayar Kasturba p. 70 54 रीड और फिशर का सबसे गौरवशाली दिन पृष्ठ 346
55 सीडब्ल्यू 79 पृ. 84 1 फरवरी 1945
55 रीड और फिशर का सबसे गौरवशाली दिन पृष्ठ 346
56 अरुण गांधी, डॉटर ऑफ मिडनाइट, पृष्ठ 265 57 वही। 58 Nayar Kasturba p. 40
59 Sushila Nayar Mahatma Gandhi vol. 8 Final Fight for Freedom (Ahmedabad: Navajivan) 1997 p. 527
11 विभाजन और मृत्यु
1 विक्टोरिया स्कोफील्ड वेवेल: सैनिक और राजनेता (लंदन: जॉन मरे) 2006 पृ. 316 2 वोल्पर्ट जिन्ना पृ. 230 3 सीडब्ल्यू 76 पृ. 120 18 मई 1942 4. निकोलस मैन्सरघ, सत्ता का हस्तांतरण 1942-7, खंड 4 (लंदन: एचएमएसओ), 1973, पृष्ठ 1123 5 सीडब्ल्यू 78 पृ. 87–8 9 सितंबर 1944 6. स्कोफील्ड वेवेल पृ. 91 7 स्कोफील्ड वेवेल पृ. 321 8. हेक्टर बोलिथो जिन्ना: पाकिस्तान के निर्माता (लाहोर: ओयूपी) 1969, पृष्ठ 152 9 सीडब्ल्यू 80 पृ. 367 25 जून 1945 10 आर्चीबाल्ड वेवेल, द वाइसरॉयज़ जर्नल, संपादक पेंडेरेल मून (लंदन: ओयूपी) 1973, पृष्ठ 147 11 सीडब्ल्यू 81 पृ. 310 3 अक्टूबर 1945 12 Pyarelal Mahatma Gandhi vol. 9 The Last Phase part 1 (Ahmedabad: Navajivan) 1997 p. 138 13 सीडब्ल्यू 81 पृ. 420 26 अक्टूबर 1945 14 सीडब्ल्यू 87 पृ. 70 11 मार्च 1947 15 सीडब्ल्यू 79 पृ. 193 1 मार्च 1945 16 सीडब्ल्यू 79 पृ. 192 1 मार्च 1945 17 सीडब्ल्यू 67 पृ. 81 14 मई 1938; सीडब्ल्यू 70 पृ. 220 30 सितंबर 1939 18 सीडब्ल्यू 79 पृ. 212 6 मार्च 1945 19 सीडब्ल्यू 79 पृ. 222 7 मार्च 1945 20 अरुण गांधी, डॉटर ऑफ मिडनाइट, पृष्ठ 305 21 फिशर लाइफ पृ. 230–1 22 सीडब्ल्यू 83 पृ. 276 17 मार्च 1946 23 वेवेल वाइसरॉय जर्नल पृ. 236 24 वायसराय जर्नल पृ. 314 25 वायसराय जर्नल पृ. 260 26 रीड और फिशर का सबसे गौरवशाली दिन पृष्ठ 388 27 Pyarelal Last Phase part 1 p. 228 28 वोल्पर्ट जिन्ना पृ. 282 29 नेहरू ने कहा था कि वे विधानसभा में ‘समझौतों से पूरी तरह मुक्त होकर और उत्पन्न होने वाली सभी स्थितियों का सामना करने के लिए स्वतंत्र’ होकर जाएंगे।

सीडब्ल्यू 85 पृ. 5 17 जुलाई 1946 30 वेवेल वायसराय जर्नल पृ. 341. एक अन्य संस्करण इस प्रकार था: ‘गांधी ने कहा था कि यदि रक्तपात आवश्यक हुआ तो वह अहिंसा के बावजूद होगा।’ निकोलस मैन्सरघ, सत्ता का हस्तांतरण 1942-7, खंड 8, 1979, पृ. 313 31 Pyarelal Last Phase part 1 p. 201 32 एलेक्स वॉन टुनज़ेलमैन इंडियन समर: द सीक्रेट हिस्ट्री ऑफ़ द एंड ऑफ़ एन एम्पायर (लंदन: साइमन एंड शूस्टर) 2007 पृ. 142 33 सीडब्ल्यू 74 पृ. 14– 15 25 अप्रैल 1941 34 सीडब्ल्यू 75 पृष्ठ 349, 9 दिसंबर 1941 से पहले 35 सीडब्ल्यू 74 पृ. 132 30 जून 1941 और पृ. 113 15 जून 1941 36 Pyarelal Last Phase part 1 p. 6 37 चड्ढा रीडिस्कवरिंग पृ. 419 38 सीडब्ल्यू 86 पृ. 451–2 6 नवंबर 1946 39 सीडब्ल्यू 92 पृ. 345–6 18 अक्टूबर 1946 40 Mehta Mahatma Gandhi p. 187 41 वही। 42 Pyarelal Last Phase part 1 p. 575 43 सीडब्ल्यू 92 पृ. 310 11 अक्टूबर 1946 44 एन.के. बोस माई डेज़ विद गांधी (कलकत्ता: निशाना) 1953 पृष्ठ। 117 45 Mehta Mahatma Gandhi p. 203 46 सीडब्ल्यू 94 पृ. 333 30 दिसंबर 1946 47 CW 87 p. 108. To Rajkumari Amrit Kaur 18 March 1947 48 Pyarelal Last Phase part 1 p. 600 49 Pyarelal Mahatma Gandhi vol. 10 The Last Phase part 2 pp. 215–16 50 Pyarelal Last Phase part 2 p. 219 51 एरिकसन गांधी का सत्य पृ. 404 52 सीडब्ल्यू 86 पृ. 415 1 फरवरी 1947 53 सीडब्ल्यू 86 पृ. 453 10 फरवरी 1947 54 सीडब्ल्यू 86 पृ. 302 2 जनवरी 1947. 55 बोस माई डेज़ पृ. 160 56 Girja Kumar Brahmacharya: Gandhi and his Women Associates (New Delhi: Vitasta Publishing) 2006 pp. 223– 4 57 सीडब्ल्यू 94 पृ. 334, 335, 337 30 दिसंबर 1946 और 6 जनवरी 1947 58 वेवेल वाइसरॉय जर्नल पृ. 428 59 सीडब्ल्यू 87 पृ. 126 20 मार्च 1947 60 सीडब्ल्यू 87 पृ. 118 19 मार्च 1947 61 एलन कैम्पबेल-जॉनसन मिशन विद माउंटबेटन (लंदन: हैमिश हैमिल्टन) 1985 पृ. 52 62 सीडब्ल्यू 88 पृ. 13 26 मई 1947 63 कैम्पबेल-जॉनसन माउंटबेटन पृ. 110 64 Pyarelal Last Phase part 2 p. 210 65 सीडब्ल्यू 89 पृ. 116 माउंटबेटन से गांधी को 26 अगस्त 1947 66 सीडब्ल्यू 87 पृ. 384 29 अप्रैल 1947 67 Mehta Mahatma Gandhi p. 201 68 मनु गांधी: एक युग का अंत (अहमदाबाद: नवजीवन) 1962, पृष्ठ 15 69 एडम्स और व्हाइटहेड राजवंश पृ. 129 70 सीडब्ल्यू 89 पृ. 232 24 सितंबर 1947 71 Manu Gandhi, Epoch p. 16 72 सीडब्ल्यू 89 पृ. 126 1 सितंबर 1947 73 सीडब्ल्यू 89 पृ. 134 2

सितंबर 1947 74 सीडब्ल्यू 90 पृ. 61 18 नवंबर 1947 75 एडम्स और व्हाइटहेड राजवंश पृ. 132 76 नायर स्वराज की तैयारी पृष्ठ 201 77 Manu Gandhi Epoch p. 29 78 प्यारेलाल अंतिम चरण भाग 2 पृ. 861. प्यारेलाल का मानना है कि अंतिम शब्द 'हे राम' नहीं बल्कि 'राम राम' थे। 79 Manu Gandhi Epoch p. 43 80 सीडब्ल्यू 87 पृ. 408 4 मई 1947 81 सीडब्ल्यू 87 पृ. 462 13 मई 1947 82 Pyarelal Last Phase part 2 p. 775 जवाहरलाल नेहरू के 83 भाषण, खंड 1, सितंबर 1946-मई 1949 (दिल्ली: प्रकाशन विभाग, भारत सरकार), 1949, पृष्ठ 42 84 सीडब्ल्यू 86 पृ. 335 10 जनवरी 1947 85 मनु गांधी बापू की अंतिम झलक (दिल्ली: शिव लाल अग्रवाल एंड कंपनी) 1962 पी। 334
86 Sarvepalli Gopal Jawaharlal Nehru: A Biography vol. 2 1947–1956 (London: Jonathan Cape) 1979 p. 2 5
12 विरासत
1 नाथूराम गोडसे ने महात्मा गांधी की हत्या क्यों की (नई दिल्ली: सूर्य भारती प्रकाशन) 1993 पृष्ठ। 26 2 गोडसे की हत्या, पृ. 39–40 3 गोडसे की हत्या, पृ. 49–50 4 सीडब्ल्यू 89 पृ. 16 7 अगस्त 1947 5 राजमोहन गांधी: द मैन, पृष्ठ 286 6 सीडब्ल्यू 77 पृ. 351 4-6 जुलाई 1944 7. मार्टिन लूथर किंग जूनियर की पुस्तक ‘अहिंसा की तीर्थयात्रा’, नॉर्मन कजिन्स (संपादक) द्वारा संपादित ‘प्रोफाइल्स ऑफ गांधी: अमेरिका रिमेम्बर्स ए वर्ल्ड लीडर’ (नई दिल्ली: इंडियन बुक कंपनी) 1969, पृष्ठ 206 8. किंग ‘पिलग्रिमेज’ इन कजिन्स (संपादक) प्रोफाइल्स पृ. 209 9 नेल्सन मंडेला ‘पवित्र योद्धा’ टाइम पत्रिका, 3 जनवरी 2000 10 सीडब्ल्यू 90 पृ. 511 27-28 जनवरी 1948 11 सीडब्ल्यू 90 पृ. 522 29 जनवरी 1948 12 सीडब्ल्यू 74 पृ. 13 25 अप्रैल 1941 13 माउंटबेटन, लॉर्ड माउंटबेटन की अंतिम वायसरायटी पर रिपोर्ट (नई दिल्ली: मनोहर) 2003 पृ. 227 गांधी की हरकतों के ज्ञान ने समकालीन अश्लीलता को काफी बढ़ावा दिया, जैसे कि 'उन्होंने गंदी धोती पहनी थी और वे दो नौकरानियों के बीच सोते थे'; गांधी के 'वर्जिन सैंडविच' का संदर्भ इंटरनेट पर पाया जा सकता है। 14 प्यारेलाल, अंतिम चरण, भाग 1, पृष्ठ 23। प्यारेलाल ने ब्रह्मचर्य पर अपने अध्याय के बारे में टिप्पणी करते हुए कहा: 'गांधीजी के जीवन दर्शन को पूरी तरह से समझने के लिए इस अध्याय का महत्व शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता।' अंतिम चरण, भाग 1, पृष्ठ 9 15 सीडब्ल्यू 30 पृ. 16 14 फरवरी 1926 16 सीडब्ल्यू

48 □□. 403 8 □□□□□□□ 1931 17 □□□□□□□□□-□□□□□□ □□□□□□□□□□ □□. 145, □□ □□□□□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□□□ 18 □□□□□□□□□□ 80 □□. 222 31 □□ 1945 19 □□□□□□□□□□ 87 24 □□□□□□ 1947

ग्रन्थसूची
एडम्स, जैड और व्हाइटहेड, फिलिप: द डायनेस्टी: द नेहरू-गांधी स्टोरी (लंदन: पेंगुइन) 1997
अंबेडकर, बी.आर. कांग्रेस और गांधी ने अछूतों के साथ क्या किया (बॉम्बे: थैकर एंड कंपनी) 1945
एंड्रयूज, सी.एफ. महात्मा गांधी के विचार (लंदन: एलन एंड अनविन) 1931 एवन, अर्ल ऑफ द ईडन के संस्मरण: तानाशाहों का सामना (लंदन: कैसल) 1962 बर्केनहेड, अर्ल हैलिफ़ैक्स (लंदन: हैमिश हैमिल्टन) 1965
बोलिथो, हेक्टर जिन्ना: पाकिस्तान के निर्माता (लाहोर: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस) 1969
बोस, एन.के. गांधी के साथ मेरे दिन (कलकत्ता: निशाना) 1953
ब्राउन, जूडिथ गांधी: आशा की कैदी (न्यू हेवन: येल यूनिवर्सिटी प्रेस) 1989
कैम्पबेल-जॉनसन, एलन मिशन विद माउंटबेटन (लंदन: हैमिश हैमिल्टन) 1985 चड्ढा, योगेश: गांधी की पुनः खोज (लंदन: सेंचुरी) 1997
क्लार्क, पीटर, द क्रिप्स वर्जन: द लाइफ ऑफ सर स्टैफोर्ड क्रिप्स (लंदन: एलन लेन) 2002
क्लार्क, रोनाल्ड ओ. ‘द नार्सिसिस्टिक गुरु: ए प्रोफाइल ऑफ भगवान श्री रजनीश’, एवेलिंग, हैरी (संपादक) ओशो रजनीश एंड हिज डिसाइपल्स (नई दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास) 1999
कजिन्स, नॉर्मन (संपादक) गांधी के जीवन परिचय: अमेरिका एक विश्व नेता को याद करता है (नई दिल्ली: इंडियन बुक कंपनी) 1969
कर्टिस, लियोनेल सिविटास देई (लंदन: मैकमिलन) 3 खंड 1934-7
महादेव देसाई की डायरी (अहमदाबाद: नवजीवन) 1953
Desai, V.G. Day to Day with Gandhi 9 vols (Varanasi: Sarva Seva Sangh Prakashan) 1968–74
एरिकसन, एरिक एच. गांधी का सत्य: उग्र अहिंसा की उत्पत्ति पर (लंदन: फेबर एंड फेबर) 1970
फिशर, लुई: महात्मा गांधी का जीवन (लंदन: जोनाथन केप) 1951

गांधी, अरुण, मध्यरात्रि की पुत्री: गांधी की बालवली (लंदन: ब्लेक पब्लिशिंग) 1998
गांधी, एम.के. हिंद स्वराज या भारतीय स्वशासन (अहमदाबाद: नवजीवन) 1938 — बापू के मीरा को लिखे पत्र (अहमदाबाद: नवजीवन) 1949
दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह (अहमदाबाद: नवजीवन) 1950
— गोखले, मेरे राजनीतिक गुरु (अहमदाबाद: नवजीवन) 1955
महात्मा गांधी के संकलित कार्यों का संग्रह (नई दिल्ली: प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार) 1958-97। खंड 1-90 कालानुक्रमिक हैं (हालाँकि खंड 1 को बाद में पुनः स्वरूपित और पुन: प्रकाशित किया गया)। खंड 91-97 प्रारंभिक प्रकाशन के बाद संकलित लेखों का संग्रह हैं; 98-100 अनुक्रमणिकाएँ हैं। 2000 में सीडी-रोम के साथ प्रकाशित संकलित कार्यों के एक नए संस्करण पर गांधी विद्वानों द्वारा इसकी सटीकता पर सवाल उठाए जाने के बाद विवाद खड़ा हो गया। इसका एक डिजिटल संस्करण 2002 में गांधीसर्व फाउंडेशन द्वारा ऑनलाइन उपलब्ध कराया गया।
— आत्मकथा या सत्य के साथ मेरे प्रयोगों की कहानी (लंदन: पेंगुइन) 1982
गांधी, मनु, बापू की अंतिम झलक (दिल्ली: शिव लाल अग्रवाल एंड कंपनी) 1962
— एक युग का अंत (अहमदाबाद: नवजीवन) 1962
गांधी, राजमोहन गांधी: द मैन, हिज पीपल एंड द एंपायर (लंदन: हॉस) 2007 गिलबर्ट, मार्टिन विंस्टन एस. चर्चिल खंड 5 1922-1939 (लंदन: हेनेमैन) 1976
गोडसे, नाथूराम, मैंने महात्मा गांधी की हत्या क्यों की (नई दिल्ली: सूर्य भारती प्रकाशन) 1993
Gopal, Sarvepalli Jawaharlal Nehru: A Biography vol. 2 1947–1956 (London: Jonathan Cape) 197 9
हैरिस, केनेथ एटली (लंदन: वेडेनफेल्ड एंड निकोलसन) 1982
हिल्स, ए.एफ. शाकाहार पर निबंध (लंदन: आइडियल पब्लिशिंग यूनियन) 1894 हंट, जेम्स डी. गांधी इन लंदन (नई दिल्ली: प्रोमिला एंड कंपनी) 1978

क्रेमर, जोएल और अलस्टैड, डायना - द गुरु पेपर्स: मास्क ऑफ अथॉरिटेरियन पावर (बर्कले: फ्रॉग लिमिटेड) 1993
Kumar, Girja Brahmacharya: Gandhi and his Women Associates (New Delhi: Vitasta Publishing) 2006
लेस्टर, मूरियल एंटरटेनिंग गांधी (लंदन: आइवर निकोलसन एंड वाटसन) 1932 मैन्सरघ, निकोलस, सत्ता का हस्तांतरण 1942-7, 12 खंड (लंदन: एचएमएसओ) 1970-83
Mehta, Ved Mahatma Gandhi and His Apostles (London: Penguin) 1977 मिलिन, सारा गर्ट्रूड जनरल स्मट्स वॉल्यूम। 1 (लंदन: फैबर एंड फैबर) 1936
माउंटबेटन, लॉर्ड माउंटबेटन की अंतिम वायसरायटी पर रिपोर्ट (नई दिल्ली: मनोहर) 2003
नंदा, बी.आर. महात्मा गांधी: एक जीवनी (नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस) 1996
नायर, सुशीला कस्तूरबा: गांधी की पत्नी (वॉलिंगफोर्ड, पेंसिल्वेनिया: पेंडले हिल) 1948
- महात्मा गांधी खंड। 4 कार्यस्थल पर सत्याग्रह (अहमदाबाद: नवजीवन) 1989
— महात्मा गांधी खंड 5 भारत जागृत (अहमदाबाद: नवजीवन) 1994
— महात्मा गांधी खंड 6 नमक सत्याग्रह: निर्णायक मोड़ (अहमदाबाद: नवजीवन) 1995
— Mahatma Gandhi vol. 7 Preparing for Swaraj (Ahmedabad: Navajivan) 1996
— महात्मा गांधी खंड 8, स्वतंत्रता के लिए अंतिम संघर्ष (अहमदाबाद: नवजीवन) 1997
नेहरू-जवाहरलाल भाषण खंड 1, सितंबर 1946-मई 1949 (दिल्ली: प्रकाशन विभाग, भारत सरकार) 1949
— आत्मकथा (लंदन: बॉडली हेड) 1953
नूरानी, ए.जी. सावरकर और हिंदुत्व: द गोडसे कनेक्शन (नई दिल्ली: लेफ्टवर्ड बुक्स) 200 2

पंडित, विजया लक्ष्मी, द स्कोप ऑफ हैप्पीनेस (लंदन: वेडेनफेल्ड एंड निकोलसन) 1979
Patel, Raojibhai Hind Ke Sardar (Ahmedabad: Navajivan) 1972 पैक्सटन, जॉर्ज सोन्या श्लेसिन: गांधी की दक्षिण अफ्रीकी सचिव (ग्लासगो: पैक्स बुक्स) 2006
Pyarelal The Epic Fast (Ahmedabad: Mohanlal Maganlal Bhatt) 1932 — महात्मा गांधी खंड 1 प्रारंभिक चरण (अहमदाबाद: नवजीवन) 1965
— महात्मा गांधी खंड 2 सत्याग्रह की खोज – दहलीज पर (अहमदाबाद: नवजीवन) 1980
— महात्मा गांधी खंड 3 सत्याग्रह का जन्म: याचिका से निष्क्रिय प्रतिरोध तक (अहमदाबाद: नवजीवन) 1986
— महात्मा गांधी खंड 9 अंतिम चरण भाग 1 (अहमदाबाद: नवजीवन) 1997 — महात्मा गांधी खंड 10 अंतिम चरण भाग 2 (अहमदाबाद: नवजीवन) 1997 रावल, मुन्नी दादाभाई नौरोजी: भारतीय राष्ट्रवाद के एक पैगम्बर (नई दिल्ली: अनमोल प्रकाशन) 1989
रीड, एंथोनी और फिशर, डेविड: द प्राउडेस्ट डे: इंडियाज लॉन्ग रोड टू इंडिपेंडेंस (लंदन: जोनाथन केप) 1997
रॉबर्ट्स, एंड्रयू द होली फॉक्स: ए लाइफ ऑफ लॉर्ड हैलिफ़ैक्स (लंदन: पेपरमैक) 1991
रोलैंड, रोमन महात्मा गांधी: वह व्यक्ति जो सार्वभौमिक सत्ता के साथ एक हो गया (न्यूयॉर्क: सेंचुरी कंपनी) 1924
सेंजर, मार्गरेट: एक आत्मकथा (लंदन: विक्टर गोलान्ज़) 1939
सरिला, नरेंद्र सिंह, सरिला के एक समय के राजकुमार (लंदन: आई.बी. टॉरिस) 2008
स्कोफील्ड, विक्टोरिया वेवेल: सैनिक और राजनेता (लंदन: जॉन मरे) 2006 शुक्ला, चंद्रशंकर (संपादक) गांधीजी जैसा हम उन्हें जानते हैं (बॉम्बे: वोरा एंड कंपनी) 1945
स्लेड, मैडलीन (मिराबेन) द स्पिरिट्स पिलग्रिमेज (लंदन: लॉन्गमैन्स) 1960
स्मट्स, जे.सी. जान क्रिश्चियन स्मट्स (लंदन: कैसल) 1952

स्वान, मॉरीन गांधी: दक्षिण अफ्रीकी अनुभव (जोहान्सबर्ग: रेवेन प्रेस) 1985
टैगोर, रवींद्रनाथ ‘चक्र की पूजा’ मॉडर्न रिव्यू सितंबर 1925 टिड्रिक, कैथरीन गांधी: एक राजनीतिक और आध्यात्मिक जीवन (लंदन: आई.बी. टॉरिस) 2006
टिंकर, ह्यूग वाइसराय: कर्ज़न से माउंटबेटन तक (कराची: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस) 1997, पृष्ठ 94
ट्रॉयट, हेनरी टॉल्स्टॉय (लंदन: पेंगुइन) 1970
टुनज़ेलमैन, एलेक्स वॉन, इंडियन समर: द सीक्रेट हिस्ट्री ऑफ़ द एंड ऑफ़ एन एम्पायर (लंदन: साइमन एंड शूस्टर) 2007
वेवेल, आर्चीबाल्ड, द वायसराय जर्नल, संपादक पेंडेरेल मून (लंदन: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस), 1973
वेबर, थॉमस, नमक मार्च पर: गांधीजी के दांडी मार्च का इतिहासलेखन (नई दिल्ली: हार्परकॉलिन्स) 1997
वोल्पर्ट, स्टेनली जिन्ना ऑफ पाकिस्तान (नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस) 2005

शब्दकोष
अहिंसा
आश्रम एक धार्मिक समुदाय
आयुर्वेद से संबंधित, प्राचीन भारतीय चिकित्सा पद्धति।
'बा' गुजराती भाषा में 'माँ' का अर्थ है, जिसका प्रयोग अक्सर कस्तूरबा के लिए किया जाता है।
बनिया व्यापारी और सौदागर, जो आम लोगों की वैश्य जाति का एक उपवर्ग है, ब्राह्मणों और क्षत्रियों के बाद तीसरी सबसे उच्च जाति है।
बापू गुजराती शब्द है जिसका अर्थ है 'पिता', और अक्सर इसका प्रयोग गांधी के लिए किया जाता है।
brahmachari a celibate
ब्रह्मचर्य का शाब्दिक अर्थ है ब्रह्म में, परम सत्ता में रहना; सामान्य अर्थ में, ब्रह्मचर्य, जिसे उस अवस्था की प्राप्ति के लिए आवश्यक माना जाता है।
ब्राह्मण सर्वोच्च जाति का सदस्य, एक पुजारी
चरखा, हाथ से सूत कातने वाला पहिया
दर्शन एक पवित्र दृष्टि है (दर्शन की तलाश करने वाले लोग किसी उच्च पदस्थ व्यक्ति के दर्शन करके आध्यात्मिक पुण्य प्राप्त करते हैं) जीवन में धर्म संबंधी कर्तव्य, विशेषकर आध्यात्मिक कर्तव्य
धोती एक कपड़ा है जिसे भारतीय पुरुष कमर के चारों ओर पहनते हैं। गुरु एक व्यक्तिगत आध्यात्मिक नेता
हरिजन, यानी 'ईश्वर की संतान', यह नाम गांधी जी ने अछूतों को दिया था। हड़ताल
कर्म, दिव्य प्रतिफल का नियम है; किसी व्यक्ति के कर्म ही उसके आध्यात्मिक भविष्य का निर्धारण करते हैं।
खादी का हाथ से बुना हुआ कपड़ा
खिलाफत, यानी इस्लाम के पवित्र स्थलों पर संप्रभुता, जिस पर ओटोमन साम्राज्य ने दावा किया था।
ki jai victory to, as in ‘Mahatma Gandhi ki jai’
क्षत्रिय, दूसरी सबसे उच्च या योद्धा जाति का सदस्य होता है।

लाठी एक लंबी छड़ी होती है जिसका इस्तेमाल पुलिस व्यवस्था बनाए रखने के लिए करती है।
महात्मा गांधी महान आत्मा
मालिश एक तेल मालिश
मोक्ष आध्यात्मिक अनुभूति है, जो जीवन और मृत्यु के चक्र से मुक्ति दिलाती है।
'मुसलमान' शब्द का प्रयोग भारत में आम तौर पर 'मुस्लिम' के लिए किया जाता है।
राज शासन
राम, भगवान का नाम राम है।
रामनामा, ईश्वर के नाम का अनुष्ठानिक पुनरावर्तन।
सभा एक विधानसभा
साधु एक घुमंतू पवित्र व्यक्ति
संघ एक संगठन, एक समाज
सत्याग्रह का अर्थ है सत्य में दृढ़ता, जिसे कभी-कभी 'आत्म-बल' के रूप में भी अनुवादित किया जाता है।
satyagrahi someone who practises satyagraha
शूद्र सबसे निचली जाति का सदस्य, एक मजदूर
स्वदेशी घरेलू उत्पाद (कपड़ा आदि)
स्वराज, स्वशासन, स्वशासन
अदालत में वकील ने पैरवी की।
यज्ञ बलिदान

अनुक्रमणिका
अब्दुल्ला, दादा 43 , 44 , 46 , 51 , 52 , 60 अफ्रीकन नेशनल कांग्रेस 122, 276 अफ़्रीकी मूल निवासी 54, 84-5, 108, 122, 275 Aga Khan Palace 235 , 237 , 241 , 255 अहमदाबाद 135, 139, 148, 149, 151, 189 प्रकृति, मीर 105
अल्कोहल 8, 19, 32, 111, 171, 194, 222 हरिलाल गांधी 154-5, 215, 237, 238 अलेक्जेंडर, जेन 61
अलेक्जेंडर, रिचर्ड 61 –2, 79 , 106 अली, चौधरी रहमत 219
अली, मुहम्मद 145 , 163 , 165 , 178
Ali, Shaukat 145 , 163 , 165 , 185
अखिल भारतीय हिंदू महासभा 242
अखिल भारतीय ग्राम उद्योग संघ 218
एलिन्सन, डॉ. थॉमस 33-4, 92, 131
सहयोगी, हाजी ओजेर 96, 97, 102, 103
अंबेडकर, डॉ. बी.आर. 201, 205, 206-7, 216, 227, 280 एम्बुलेंस कोर 70 –1, 90, 130 –1
अमेरिका, उत्तर 191, 198, 231-2, 234, 275
अमेरी, लियो 242
एम्पथिल, लॉर्ड ओलिवर 115, 126
अमृतसर नरसंहार 159-60, 161, 162, 167
Anasuya 13
एंड्रयूज, चार्ल्स फ्रीर 133-4, 136, 137, 148, 153, 164, 172, 173-4, 176, 199, 206, 238, 278
औद्योगीकरण-विरोधी 127 –8, 148 –9, 166 –7, 218 , 244 , 280
यह भी देखें: हिंद स्वराज; खादी; हाथ से कताई
पशु-परीक्षण विरोधी समिति 27

□□□□□□□ 116, 276
□□□□□□, □□□□□□□ 270 –1, 273
□□□□□□□ 178
□□□□□□□□□, □□□□□□ 34 –5, 37 , 67
Ashram Bhajanavali209
□□□□□□ 86, 182-4, 282
□□□□□□□□ □□□□□□□□□ 87, 88, 89, 90, 106, 108, 117, 123
□□□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□ 133, 134, 135
Satyagraha/Sabarmati 135 –9, 154 , 162 , 167 , 170 , 180 , 182 , 207 , 208
Sevagram 208 –13, 223 , 224 –5, 241 , 245
□□□□□□□□□□ □□□□□□ 110, 111, 115-16, 117, 120, 123, 135
□□□□□□□ □□□□□□, □□□□□□□□□□ 79-80
□□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□□ (1907) 115, 116
□□□□□□ □□ 105, 106 □□ □□□□ □□□□□
□□ □□□□□□□ 104, 106, 107
□□□□□□□ 98 –99, 101 –3, 106 –7
□□□□□□□□□ 95 –7
□□□□ 262
□□□ 245, 249
□□□□□ □□ □□□□□□ 268
□□□□□□□□□, □□□□ 175
□□□□□□□ □□□□□□□ 245, 276-7, 278, 280
□□□□□□□, □□□□□□□ 280
□□□□, □□□□□□□□□ 186, 231, 232, 244, 247, 260
□□□□□□□□ 3-4, 15, 16, 50, 177, 181
□□□□□□, □□□□ □□□□ 219, 249
□□□□ 67
Bajaj, Jamnalal 208 , 238
□□□□, □□□□□□□□ 48
□□□□□□□□□, □□□□□□□□ 186, 187, 193

बनिया 7, 180, 203
मोध बानी भी देखें
बैंकर, शंकरलाल 176 –7
बार, ब्रिटिश 27, 31, 38, 49, 94, 161
बीच ग्रोव विला 52, 56, 64, 65
बनारस हिंदू विश्वविद्यालय 142, 165
Bengal 232 , 245 , 259 , 260 , 262
अकाल 227, 240
विभाजन और समूहीकरण 83 –4, 125 , 126 , 249 , 261 , 263
आतंकवाद 203, 230
नोआखली भी देखें
बेसेंट, एनी 26, 36, 77, 128, 140, 142, 143, 145, 151-2, 158, 161, 165, 182, 278
Bhagavad Gita 8 , 10 , 34 , 35 , 75 , 80 –1, 103 , 154 , 176 , 177 , 178 , 192 , 270
भगवान श्री रजनीश (ओशो) 182
Bharatiya Janata Party (BJP) 274
Bhave, Vinoba 208
भवानाग्री, सर मंचरजी 97
बाइबल 34, 103, 176
यह भी देखें: ईसाई धर्म; यीशु बिहार 216 –17
इंडिगो अभियान 146, 147, 148
दंगे 253, 259-60
Birla, Ghanshyam Das 129 , 196
गांधी का जन्म 7
जन्म नियंत्रण 33, 68, 214
ब्लावत्स्की, मैडम हेलेना 35–6, 182
बोअर्स 44, 50
नस्लवाद 45, 47, 94, 104
युद्ध 69, 70, 71, 78-9, 87, 90, 91, 94, 103, 131, 165

ऑरेंज फ्री स्टेट; दक्षिण अफ्रीका; ट्रांसवाल भी देखें बोल्शेविज़्म 129
गांधी जी पर बम हमला 267-8, 270
बॉम्बे क्रॉनिकल 157, 160
बॉम्बे कॉर्पोरेशन 58
बोस, निर्मल कुमार 254 , 255 , 257 , 258
बोस, सुभाष चंद्र 186, 187, 208, 229, 230, 235, 244
बोथा, लुई 115, 116
बहिष्कार 165, 172, 173, 177, 186, 187, 194, 238
यह भी देखें: सविनय अवज्ञा; भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस; अहिंसा; सत्याग्रह; स्वदेशी
ब्रह्मचर्य व्रत 69, 91-2, 184, 246, 258, 281
स्खलन 214 –15, 245
प्रयोग 211, 224-6, 254, 256
यह भी देखें: ब्रह्मचर्य; गांधी, मनु; कामुकता
ब्राह्मण जाति 7, 54, 65
जाति व्यवस्था भी देखें
ब्रह्म समाज 77
ब्रेल्सफोर्ड, एच. एन. 247
ब्रिटेन और ब्रिटिश सरकार 8, 10, 15-16, 20, 23-5, 26-7, 32, 45, 86, 142, 151, 186, 278
यह भी देखें: बोअर युद्ध; कैबिनेट मिशन; चर्चिल, विंस्टन; क्लेमेंट,
एटली; क्रिप्स रिपोर्ट; कर्टिस, लियोनेल; प्रथम विश्व युद्ध; भारतीय स्वतंत्रता; भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस; इरविन, लॉर्ड; लिनलिथगो,
लॉर्ड; लंदन; मोंटेग्यू-चेम्सफोर्ड रिपोर्ट; माउंटबेटन, लॉर्ड;
मुस्लिम लीग; गोलमेज सम्मेलन; रॉलेट अधिनियम; नमक विरोध प्रदर्शन; द्वितीय विश्व युद्ध; साइमन आयोग; दक्षिण अफ्रीका; वेवेल, लॉर्ड
भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की ब्रिटिश समिति 32, 97
ब्रिटिश साम्राज्य युद्ध पदक 71, 165
ब्रिटिश इंडियन एसोसिएशन 79, 96
ब्रिटिश प्लांटर्स एसोसिएशन 147

ब्रॉकवे, फेनर 197
बौद्ध धर्म 34, 35, 67, 81, 209, 274 बुन्यान, जॉन 4
बर्मा 230
बरोज़, सर फ्रेडरिक 259
कैबिनेट मिशन 247 –50, 251 , 250 , 261 , 279 Caliphate see Khilafat
परमाणु निरस्त्रीकरण अभियान 276-7
केप कॉलोनी 44, 69
कार्लाइल, थॉमस 34
कारपेंटर, एडवर्ड 86, 127, 128
कार्टराइट, अल्फ्रेड 103, 106
जाति व्यवस्था 7, 9, 13, 56, 148, 272
गांधी बहिष्कृत 22, 39
विवाह 4, 11, 13, 179-80
ब्राह्मण भी देखें; हिंदू धर्म; मोध बनिया; अछूत कैथोलिक धर्म 90, 166
बाइबल; ईसाई धर्म; यीशु भी देखें
ब्रह्मचर्य 3, 33, 109, 282-3, 284
आश्रम 88, 136-7
पवित्र विवाह 162, 180, 184, 246
हिंदू और जैन परंपरा 90 – 1
Gandhi, Kastuba 68 –9, 91 , 114 , 214 , 245 123, 128 का प्रमोशन
यह भी देखें: ब्रह्मचर्य व्रत; कामुकता चेम्बरलेन, जोसेफ 63, 78, 79, 83
चंपारण कृषि अधिनियम (1917) 148
चैपलिन, चार्ली 198
पवित्रता देखें ब्रह्मचर्य चेम्सफोर्ड, लॉर्ड 133, 145, 147, 151 चेस्टरटन, जी.के. 128

च्यांग काई-शेक 230
बचपन 7, 9, 10-11, 13
चीन 5, 103, 220, 234
चौधुरानी, सरलादेवी 167-9
Choudhuri, Rambhuj Dutt 167
चौधरी, चारू 254
ईसाई धर्म 5, 9, 26-7, 32, 34, 48-9, 53, 57, 85, 116, 129-30, 182, 209 चर्चिल, विंस्टन 192 –3, 218 , 228 , 231 , 234 , 235 , 236 , 240 , 243 , 277 सविनय अवज्ञा 5, 99, 101-3, 157-8, 159, 174-5, 187, 192-3, 194, 195, 202, 203, 207, 208, 229
यह भी देखें: एशियाई पंजीकरण अधिनियम; अहिंसा; रॉलेट अधिनियम; नमक विरोध; सत्याग्रह
गृहयुद्ध 5, 248, 251–2
दंगे; हिंसा; युद्ध भी देखें
सभ्यता: इसके कारण और उपचार 86, 128
स्वच्छता
व्यक्तिगत स्वच्छता 56, 65, 75, 84, 141 अनुष्ठान 9, 39
स्वच्छता भी देखें
कपड़े 2, 40, 44, 283
धोती 133
यूरोपीय 23, 30, 53, 115, 121, 132 श्रमिकों के 111, 121, 132
लंगोटी 172 –3, 197
खादी 133, 167-8, 171
पारसी पोशाक 59, 77, 121
हाथ से कताई करना भी देखें
कोयला खदानें 118, 119, 120 औपनिवेशिक देशभक्ति संघ 60 साम्यवाद 129
समुदायों, आदर्श आश्रमों को देखें

गर्भनिरोध (गर्भ नियंत्रण देखें) कोरेली, मैरी 26 –7
गाय का वध 164 –5, 179, 223
क्रू, लॉर्ड 115
क्रिप्स, सर स्टैफोर्ड
कैबिनेट मिशन 247, 249
क्रिप्स मिशन 231, 232, 233, 244, 260
संकट 275
कर्टिस, लियोनेल 94-5, 97, 115, 152
दादा अब्दुल्ला एंड कंपनी 43 , 48 , 53 , 59 , 60 अब्दुल्ला, दादा भी देखें
दांडी में नमक के विरोध प्रदर्शन देखे गए दर्शन 135, 147, 216, 253
डार्विन, चार्ल्स 26
दास, सी.आर. 177
डेव, मावजी 19
डीलर्स लाइसेंस विधेयक, दक्षिण अफ्रीका 64
भारत रक्षा अधिनियम (1915) 145, 146
सुकरात का बचाव 130
दिल्ली समझौता (1931) 194, 196
निर्वासन 109
दबे-कुचले वर्ग अछूतों को देखते हैं
Desai, Mahadev 3 , 140 , 169 , 170 , 181 , 196 , 203 , 210 , 212 , 214 , 235 – 6, 238
ढिंगरा, मदनलाल 125
आहार 2, 40, 57, 88, 99, 119, 135, 153-4, 177, 188, 212, 274, 283
अर्नोल्ड हिल्स 32-3, 41
ब्रह्मचर्य 91, 92, 113-14, 184-5
प्रयोग 91-2, 109, 131, 171, 183
मांस 15 –16, 17, 23, 31
उपवास; शाकाहार भी देखें

Divali festival 7
डोके, रेवरेंड जोसेफ 99, 105
दुदाभाई परिवार 139
डंकन, पैट्रिक 97
डरबन भारतीय समिति 51
डच सुधारवादी चर्च 44
डायर, ब्रिगेडियर जनरल रेजिनाल्ड 159-60 भूकंप 216 –17
ईस्टर विद्रोह, डबलिन (1916) 145
शिक्षा 10, 13, 15, 19, 31, 165, 222
आश्रम 111, 137-8, 213
गांधी, कस्तूरबा 65, 212, 236-7
गांधी के बच्चे 64, 112-13
यह भी देखें: विधि, अध्ययन; लंदन
एडवर्ड, वेल्स के राजकुमार (बाद में एडवर्ड अष्टम) 173 एल्गिन, लॉर्ड 97
एनीमा 183 –4, 210 , 211 , 254
इंग्लैंड देखें ब्रिटेन और ब्रिटिश सरकार; लंदन एरिकसन, एरिक 15 1
एस्कोम्बे, हैरी 51, 52-3, 61, 62-3, 70
गूढ़ ईसाई संघ 67
यूरोपीय संरक्षण लीग 60
बहिष्कार 22, 39
चरमपंथी समूह 125, 126, 241-2, 263, 267-71
यह भी देखें: दंगे; सावरकर, विनायक; आतंकवाद; हिंसा, गांधी के विचार फ़ेरिंग, एस्तेर 169
उपवास 3, 9, 82, 91, 113-14, 131, 135, 139, 140, 176, 208, 215, 263, 274-5 हिंदू-मुस्लिम एकता 178 –9, 204 –5, 206
बीमारी 78, 154, 238, 243
भारत-पाकिस्तान युद्ध 267, 273
मिल-श्रमिकों का विवाद 150, 151

दंगे 158, 174, 236, 265
अस्पृश्यता 204-5, 206, 207, 274
त्यौहार 7, 135
भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का ध्वज 166, 187, 262 भोजन; आहार; उपवास
फॉरवर्ड ब्लॉक पार्टी 229
फ्राई, एलिजाबेथ 84
अंत्येष्टि 269 –70
चाल, सर एडवर्ड 148
Gandhi, Mohandas Karamchand (‘Mahatma’) उपस्थिति 133, 169, 171, 181, 196–7
हमले 61 –2, 105, 106, 264, 268
बचपन 7, 9, 10-11, 13
बाल विवाह 11 –15, 16 , 114 , 168 , 280 –1
मृत्यु और अंत्येष्टि 268 –70, 271
शिक्षा 10 –11, 13, 15, 19, 20
पारिवारिक पृष्ठभूमि 7-8
पितृत्व 64 –5, 68 , 112 –13, 114 –15, 140 , 154 –5, 247 , 280 कारावास 102 –3, 107 –8, 120 , 175 , 176 –7, 191 , 203 , 205 , 207 , 235 , 236 –7, 239
गरीबी, धारणा 6, 67, 71 –2, 81, 84, 90, 115 –6, 128, 136, 141, 143, 277, 283
विशेष रूप से देखें: आश्रम; ब्रह्मचर्य; सविनय अवज्ञा; वस्त्र; आहार; उपवास; गांधी, कस्तूरबा; स्वास्थ्य; हिंद स्वराज; भारतीय
स्वतंत्रता; भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस; कानून; लंदन; अहिंसा; सत्याग्रह; द्वितीय विश्व युद्ध; कामुकता; दक्षिण अफ्रीका; हाथ से
सूत कातना; अछूत
Gandhi280
Gandhi, Abha 210 , 211 , 212 , 246 , 254 , 263 , 264 , 268 , 282
Gandhi, Arun 238 , 246
गांधी, छगनलाल 87, 91, 112, 150, 184

□□□□□, □□□□□□ (□□□□□) 68 , 82 , 169 , 180 , 196 , 237 , 241 , 257 , 269 , 270
Gandhi, Feroze 231
□□□□□, □□□□□□□ 59, 72
Gandhi, Gulab 141 , 154
□□□□□, □□□□□□ (□□□□□) 19 -20, 39, 40, 43, 59, 64, 72, 82, 112, 113, 114, 140, 141, 154-5, 183, 215, 237, 238
Gandhi, Kanu 263 , 282
□□□□□, □□□□□□ (□□□□) 8 , 10 , 12-13, 17 , 18 , 20 , 22
□□□□□, □□□□□□□ (□□□) 11 , 12 , 133
□□□□□, □□□□□□□□ (□□□□□) 8 , 130 , 280
□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□ 118, 121, 205, 236–7
□□□□□ 90, 139-40, 183, 209
□□□□□□□□□□ 68 –9, 91 , 109 , 114 , 214 , 245
□□□□□□ 65, 212, 236-7
□□□□□□□□ 22, 39
□□□□□□ □□ □□□□□□ 108, 109, 237-8, 255
□□□□□ 13 –15, 16, 18, 22, 40, 43, 59 –60, 61, 64 –6, 71 –2, 80, 82, 89, 108, 113, 117 –8, 141, 154, 167, 184, 211, 224
□□□□□□□ 19-20, 68
□□□□□, □□□□□□□□□ (□□□) 11, 21, 22, 39, 40, 41 –2, 43, 80, 81, 82, 133
Gandhi, Maganlal 87 , 91 , 98 , 134 , 139 , 154 , 163 , 176 , 184
Gandhi, Manilal (son) 40 , 43 , 59 , 64 , 72 , 77 –8, 82 , 89 , 112 , 113 , 114 , 131 , 140 , 141 , 179 , 246 –7, 257
Gandhi, Manu 255 –6, 257 , 258 , 259 , 262 –3, 264 , 267 , 268 , 269 , 270 , 282
Gandhi, Nirmala 180 , 183
□□□□□, □□□□□□□□ (□□□□) 8-9, 14, 19, 21, 27, 31, 39
Gandhi, Rajiv 231
□□□□□, □□□□□□□□□ (□□□) 11
□□□□□, □□□□□□ (□□□□□) 68, 78, 82, 89, 180, 213, 237, 270, 273
□□□□□, □□□□□□□□ 139

□□□□□, □□□□□□ 23 1
Gandhi, Sumitra 213
Gandhi, Tulsidas 20
□□□□□, □□□□□□□□ 8
□□□□□ □□□□ □□□□280
□□□□□-□□□□□ □□□□□□ (1931) 194, 196
□□□□□□□ 164, 222, 277
□□□□□ □□□□ 191, 192, 199
□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□
□□□□□□□□□□, □□□□□□ 75
□□□□□ 4, 8, 181, 196, 202, 209, 216-17, 228, 233, 245, 254, 256, 257, 265, 268, 283
□□ □□ □□□□□: □□□□ □□□□; □□□□□□; □□□□□ □□□□; □□□□; □□□□□□; □□□□
□□□□□□□, □□□□□ □□□□□□□. 82
Godse, Gopal 270
Godse, Nathuram 142 , 241 , 270 –1, 272 –4
Gokhale, Gopal Krishna 59 , 75 –6, 77 , 111 , 115 –16, 117 , 118 , 123 , 131 , 133 , 136 , 142 , 143
□□□, □□□□□□ 179
□□□□ □□□□□ □□□□□□□ (1919) 152, 162, 185, 199, 217, 218, 227, 244
□□□□-□□□□□□□ 141, 154, 213, 238, 246
‘□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□□’ 250 –1
□□□□ □□□□□ 145, 152-3, 156, 163
‘□□□□□ □□□□□□□□’ 58, 60
□□□□□ □□□□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□58
□□□□□□□□, □□ □□□□□□□□ 158-9
Gujarat 8 , 10 , 43 , 89 , 132 , 135 , 153 , 158 , 174
□□□□□□□□□□ □□ □□□□□
□□□□ 36
□□□□, □□□□ 96, 97, 103, 115
□□□□□□□□□□, □□□□□ □□□□□ □□□□□, □□□□□

□□□□□, □□ □□□□□ 240
□□□□□□□ □□□□□□, □□□□□□□□□□ 106
□□□□□□□□, □□□□□ 121, 142
□□□□□ 206, 214, 257, 271
Harijan Ashram 208
*Harijan Sevak*206
*Harijanbandhu*206
□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□
Harishchandra, King 10 , 238
□□□□□, □□□□□ 83
□□□□□ □□ □□□□□□□□ 20, 64, 67, 77-8, 82, 109, 127, 183, 243, 245, 266
□□□□□□□□□ □□□ 70 –1, 90, 130 –1
□□□□□□□□□ 157, 224
□□□□ 92, 183
□□□□ □□□□□□ □□□□□□ 153 –4
□□□ 131, 238–9
□□□□□ 183 –4, 210 , 211 , 254
□□□□□□ 158, 177
□□□□□ □□ □□□□□
*□□□□ □□ □□□□ □□□□*34
□□□□□, □□□□□□□□ 32, 33, 41
Hind Swaraj 126 , 127 –8, 129 , 130 , 134 , 158 , 167 , 241 , 244 , 270
*□□□□□*259
*□□□□□ □□□□□□□*270
□□□□□ □□□□ 35, 77, 110, 142, 145, 172, 209
□□□□□□□□ 90 –1
□□□□□ □□ □□□□ 9, 16, 24
□□□□□ 4, 11-12, 13-14, 116, 179-80
□□□/□□□□□□ 11 , 13 , 110 , 245 , 268 , 269 , 279
□□□□□□□□□ 5, 67-8, 165
□□□□□□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□ 19, 22, 39

जाति व्यवस्था; अछूत भी देखें
हिंदू-मुस्लिम संबंध 53, 74-5, 102, 143, 159, 164-5, 178-9, 222-3, 248-50, 263, 279
ये भी देखें: चरमपंथी समूह; हिंदू-मुस्लिम एकता; भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस; खिलाफत; मुस्लिम लीग; पाकिस्तान; विभाजन; दंगे
हिंदू-मुस्लिम एकता 15, 171, 178-9, 185, 193, 219, 223, 252, 278-9 हिटलर, एडॉल्फ 2, 221, 229
होरे, सर सैमुअल 204, 206, 218
होम्स, जॉन हेन्स 196
होलोकॉस्ट 164, 277
होम रूल लीग 140, 143, 157, 166
यह भी देखें: हिंद स्वराज; भारतीय स्वतंत्रता; भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस
हॉर्निमैन, बी.जी. 157, 160
हाउसमैन, लॉरेंस 197
ह्यूम, एलन 74
स्वच्छता; सफाई
आदर्श समुदायों के लिए आश्रम देखें आप्रवासन, दक्षिण अफ़्रीकी 64, 107, 115, 116 शाही विधान परिषद 144, 157, 158
अनुबंधित श्रमिक 2, 53, 58, 142
कराधान 55, 116-17, 118, 120
स्वतंत्र समाचार पत्र 185
भारत समिति (1942) 231
इंडिया हाउस, हाईगेट 125
भारतीय साक्ष्य अधिनियम 7 7
भारतीय स्वशासन (हिंद स्वराज देखें)
भारतीय स्वतंत्रता 70, 143, 151, 152, 155, 156, 164, 166, 167, 171, 173, 177, 186, 187, 192, 247, 248, 262, 277

यह भी देखें: ब्रिटेन और ब्रिटिश सरकार; चरमपंथी समूह; हिंद स्वराज; भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस; मोहम्मद अली जिन्ना; जवाहरलाल नेहरू; मुस्लिम लीग; अहिंसा; दंगे; रॉलेट एक्ट; नमक विरोध प्रदर्शन
भारतीय राष्ट्रीय सेना 230
भारतीय राष्ट्रीय संघ 74
भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस 35, 72, 74, 126, 141, 204, 208, 222, 225, 243, 281
कलकत्ता अधिवेशन (1901) 73, 75-6, 125
कांग्रेस-मुस्लिम लीग प्रस्ताव 241
प्रभुत्व का दर्जा बनाम पूर्ण स्वतंत्रता 186-7, 192
लंदन में गांधी (1931) 196, 200, 201
गांधी 185 में राष्ट्रपति चुने गए
गांधी का इस्तीफा 217
महान युद्ध 153
हिंदू-मुस्लिम हिंसा 252 –3, 264
स्वतंत्रता वार्ता 248-52
खिलाफत 163, 185
लखनऊ समझौता (1916) 144
मुस्लिम अलगाव 222 –3, 224, 279 राष्ट्रीय हड़ताल (1919) 159
असहयोग आंदोलन 157, 165, 174
भारत का विभाजन 260
भारत छोड़ो प्रस्ताव 234-5, 240
रॉलेट के प्रस्ताव और अधिनियम 157
स्वराज पार्टी 177
यह भी देखें: ब्रिटेन और ब्रिटिश सरकार; कैबिनेट मिशन; गोखले, गोपाल कृष्ण; भारतीय स्वतंत्रता; जिन्ना, मोहम्मद अली; नेहरू, जवाहरलाल; नेहरू, मोतीलाल; अहिंसा; पटेल, वल्लभभाई; राजगोपालाचारी, चक्रवर्ती; नमक मार्च; द्वितीय विश्व युद्ध; अछूत। इंडियन ओपिनियन 83-4, 86, 87-8, 91, 95, 96, 98, 99, 101, 102, 106, 108, 110, 115, 117, 123, 128,
130, 135, 179, 247

भारतीय समाजवादी129
भारतीय टाटा समूह 280
इंडिगो अभियान 6, 146-7
औद्योगीकरण देखें; औद्योगीकरण-विरोधी;
हिंद स्वराज; हाथ से कताई; इनर टेम्पल, लंदन 28, 94
इन्स ऑफ कोर्ट, लंदन 28
आयरलैंड 26, 145
इरविंग, वाशिंगटन 66, 108
इरविन, लॉर्ड (बाद में लॉर्ड हैलिफ़ैक्स) 187, 188, 191, 192, 193-4, 221 इसाक्स, रूफस देखें रीडिंग, लॉर्ड इस्लाम 9, 91, 111, 175, 215
कुरान; मोहम्मद; मुसलमान भी देखें
लीग; मुसलमान; पाकिस्तान
जैन और जैन धर्म 9, 10, 16, 21, 77, 90–1
Jagannath Puri temple 238
जापान 84, 220, 230, 231, 232-3, 234, 239, 241, 245, 277
यीशु 35, 67, 81, 130, 206, 253 –4
पर्वतीय उपदेश 67, 94, 276
बाइबल; कैथोलिक धर्म; ईसाई धर्म भी देखें
यहूदी 91, 220 –1
जिन्ना, मोहम्मद अली 8 , 32 , 74 , 132 , 143-4 , 151 , 155 , 157 , 158 , 165 , 166 , 177 , 192 , 218-19 , 232 , 256 , 257 , 271 , 277
कांग्रेस-मुस्लिम लीग 241, 242
बीमारी 243, 261
आईएनसी द्वारा मुस्लिम अलगाव 223, 224
पाकिस्तान संकल्प और विभाजन 228, 242, 261, 279
द्वितीय विश्व युद्ध 226, 227
स्वतंत्रता वार्ता 248-250, 260
यह भी देखें: भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस; मुस्लिम लीग; नेहरू, जवाहरलाल जोहान्सबर्ग सोशलिस्ट सोसाइटी 110
जॉयन्स, केट 28
कैसर-ए-हिंद पदक 133, 165

□□□□□□□□□, □□□□ 99-100, 109, 110, 116, 120, 121, 130, 131, 141, 167, 221
□□□, □□□□□□□□□□ 214
□□□□□□□□, □□□□□□□□□ 13
□□□□□□□□□, □□□□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□, □□□□□□□□□ □□□□□□□□□, □□□□□□□□□□□□□□□ 13
Kashmir 266 –7
□□□□□□□□□ □□□□□□ 282
□□□□□□□□□□□ 8, 11, 13, 133
□□□□□□, □□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□ 35
□□□□□□□□ □□ □□□□□□35
□□□□ 133, 166, 167-8, 171, 172, 177, 178, 252
□□□□□□ 8 1
□□□, □□□□□□□□ □□□□□□□ 280
□□□□□□□ 145, 163-4, 165, 175, 185, 222
□□□□, □□. □□□□□□□□ □□□□ 275-6
□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□67
□□□□□□□□□ □□□, □□□□ 197
□□□□□□□□, □□□□□□□□□ 176
□□□□□□, □□□□□□□□ 99
□□□□□□ 5, 67, 103, 176, 209
□□ □□ □□□□□□: □□□□□□□; □□□□□□□□; □□□□□□□□ □□□□□□□□, □□.□.□□. □□. 49
□□□□□□□□□ □□□□□□□91
Kripalani, J.R. 244 , 257 –8
□□□□□□□ 67, 178
Krishnavarma, Shyamji 129 –30
□□□□□□□, □□□ 69
Kshatriya caste 7
□□□□□□, □□□ 78
Kumbha Mela festival 135
Lakshmi, Vijaya (earlier Sarup Nehru) 162
□□□□□□□ 20, 57-8, 83, 89, 107, 111, 132, 136, 141-2, 254
□□□□□□□□ □□ □□□□□□

□□□□□□ □□ □□□□□ □□□ 108
□□□□, □□□□□□□□□ 61, 70
□□□□□□ 100
□□□□□□ 40 –3, 48, 54 –55, 63, 65, 77, 78, 79, 80, 123
19, 20, 28, 31, 38, 40 □□ □□□□□□□
□□□□□□ □□□□□ □□□□□□□□ 52, 53
□□□□□, □□□□□□□□□ 20 –1
□□□□□□, □□□□□□□□□□ 129
□□□□□□□, □□□□□□□ 197, 198
□□□□□□ □□ □□□□□□□ 34, 66-7
□□□□□□, □□□□□□□□ 84
□□□□□□□□□, □□□□□□ 227, 235, 236
□□□□□ □□□□□□, □□□□□□ 198
□□□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□, □□□ □□□□□□□ □□□□□ 19 , 20 , 31 , 36 , 125 , 130 -1
□□□□□ 27, 28-30, 31
□□□□□□ □□ □□□□□ 27-8
□□□□□, □□□□□□□ 19, 28-9, 38, 40
□□□□□□□□ 32 –3, 35, 36
□□□□□□ □□ □□□□□□□ (1931) 196-9
□□□□□□□ □□ □□□□□□
□□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□□ 144, 146, 161
□□□□□□□□□□□□, □□□□□□ 192, 199, 202, 204, 206
□□□□□□ □□□ 135
Maharishi Mahesh Yogi 182
□□□□□□□□, □□□□□□□□ 146
□□□□□□□□ □□□□□□: □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□ 180–1
□□□□□□□, □□□□□□□ 122, 276
□□□□□□□, □□□□□□□□□ □□□□□□ 26
□□□□□□□□ □□□□□ 165
□□□□□□□□□□□□□ 129
Mashruwala, Surandra 282

भौतिकवाद गरीबी को देखता है, धारणा
मांस 15 –16, 17 , 23 , 27
आहार; शाकाहार पदक 71, 133, 165 भी देखें मेहता, डॉ. प्राणजीवन 27 , 112 , 113 Mehta, Pherozeshah 42 , 58 , 75 , 143
Mehta, Ved 211
Mehtab, Sheikh 15 , 16 –17, 22 , 56 –7
मिलर, वेब 191
मिल-श्रमिक विवाद, अहमदाबाद 6, 148-51
मिलनर, अल्फ्रेड 95
मिराबेन 181 –2, 194 , 196 , 205 , 210 , 223 , 224 , 235 , 237 Mittal, Lakshmi 280
विधि 7
बनिया विधि 13, 21, 22, 39
मुगल 24, 233
मोहम्मद, पैगंबर 34, 66, 67, 81, 108
मोहम्मद, तैयब खान 44, 48
मोक्ष 5 –6, 67 –8, 269
एकेश्वरवाद 9, 67
मोंटागु, एडविन 151-2, 160-1 मोंटागु-चेम्सफोर्ड रिपोर्ट (1918) 152, 153, 156 मोर्ले, लॉर्ड 97
मोर्ले-मिंटो सुधार (1909) 151
मॉरिस, विलियम 86
माउंटबेटन, एडविना 266
माउंटबेटन, लॉर्ड 173, 260, 261, 262, 269, 280
मुनुसामी, वल्लियाम्मा 118
मुस्लिम लीग 144, 201, 218, 219, 226-8, 229, 243-4, 249, 250, 252, 256, 260, 262
मुस्लिम-हिंदू संबंधों के लिए हिंदू-मुस्लिम संबंध देखें। मुस्लिम-हिंदू एकता देखें हिंदू-मुस्लिम एकता

मुस्लिम 9, 24, 45-6, 49, 58, 108, 116, 142, 143, 145, 172, 204, 231 दक्षिण अफ्रीका 45 –6, 53 , 96 , 102 , 12 3
यह भी देखें: भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस; इस्लाम; मोहम्मद अली जिन्ना; खिलाफत; कुरान; पैगंबर मोहम्मद; मुस्लिम लीग; विभाजन; पाकिस्तान;
दंगे
मुसलमान मुसलमानों को देखते हैं
मुसोलिनी, बेनिटो 202, 229
नायडू, थंबी 118
नायडू, सरोजिनी 1, 31, 131, 132, 157, 178, 190, 191, 196, 205, 235, 283 Naoroji, Dadabhai 31 –2, 74 , 97
नेटाल, दक्षिण अफ्रीका 43, 44, 51, 52, 55, 58, 60, 62, 69, 70, 94
ये भी देखें: आश्रम; एशियाई पंजीकरण अधिनियम; अनुबंधित मजदूर; विधि व्यवसाय; अहिंसा; ऑरेंज फ्री स्टेट; सत्याग्रह; दक्षिण अफ्रीका; ट्रांसवाल; ज़ुलू विद्रोह
नेटल इंडियन कांग्रेस 53, 55, 59, 63-4, 70, 117, 123
राष्ट्रीय भारतीय संघ 125
राष्ट्रीय हड़ताल (1919) 158-9
राष्ट्रीय स्वयंसेवी संघ 178
Navajivan 177 , 184 , 191
Nayar, Pyarelal see Pyarelal Nayar, Sushila 3 , 210 –11, 223 , 224 , 225 –6, 236 , 238 –9, 254 , 255 , 258 , 259 , 266 , 268 , 270 , 282
Nazar, Mansukhlal 87 , 99
नेहरू, इंदिरा 161, 231, 266
नेहरू, जवाहरलाल 84, 145, 161, 162-3, 164, 174-5, 186, 187, 203, 213, 218, 204-5, 244, 261, 280
गांधी की मृत्यु 269, 271
स्वतंत्रता वार्ता 250, 251
स्वतंत्रताोत्तर हिंसा 264, 265–6
प्रधानमंत्री 252, 253
नमक विरोध प्रदर्शन 189, 191, 195
द्वितीय विश्व युद्ध 226, 227, 229-30, 231, 232, 234

यह भी देखें: भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस; जिन्ना; मोहम्मद अली; मुस्लिम लीग
Nehru, Motilal 144 , 148 , 155 , 161 , 162 , 165 , 177 , 179 , 185 , 186 , 187 , 189 , 191 , 192
Nehru, Sarup (later Vijaya Lakshmi) 161
नेहरू परिवार 143, 174
नेहरू रिपोर्ट 186
नाइटिंगेल, फ्लोरेंस 84
नोआखली दंगे और उसके बाद के हालात 252-4, 257, 259, 262
अहिंसा और असहयोग 5, 10, 37, 46, 67, 123, 130, 136, 138, 141, 153, 162-3, 165, 166, 170, 171-2, 173, 174, 178, 185, 220, 222, 251, 271, 272-3,
275, 283
द्वितीय विश्व युद्ध 229, 232, 233, 234
यह भी देखें: एशियाई पंजीकरण अधिनियम (1907); सविनय अवज्ञा; सत्याग्रह ‘किराया-मुक्त’ अभियान 203
परमाणु शक्ति, परमाणु हथियार देखें
ओलकॉट, हेनरी 35 –6
ओल्डफील्ड, जोशिया 29, 35
ओलिवेंट, चार्ल्स 42
ऑरेंज फ्री स्टेट 44, 51, 71, 76, 107
यह भी देखें: नस्लवाद; दक्षिण अफ्रीका; ट्रांसवाल
ओडिशा 238, 245
ओशो 182
ओटोमन साम्राज्य 145, 163
टर्की ओवेन, रॉबर्ट 86 भी देखें
पाहवा, मदनलाल 268, 271
पाकिस्तान 219, 228, 242, 244, 248, 249, 250, 261, 263, 266-7, 273, 278, 279
विभाजन भी देखें; मुस्लिम लीग
संप्रदाय 9 के स्वामी
परशुराम, आर.पी. 257

□□□□□ 36-7, 202
□□□□□ 59, 66, 77, 116, 121, 143, 209
□□□□□□ 260, 261, 262, 277 –8
□□□□□□□□□ □□ □□□□□
□□□□, □□□□□□□□ 144-5, 153, 157, 189, 191, 203, 204, 225, 244, 248, 257, 265, 267, 269, 270, 271
Patel, Vithalbhai 157 , 177
□□□□ 104, 105
□□□□□-□□□□□□, □□□□□□□□ 247-8, 249, 251
□□□□□□□ □□□□□□ 87, 108
□□□□□□ 88, 89, 90, 106, 117, 123
□□□□□□ □□□□□□ 133, 134, 135
□□□□□ □□ □□□□□
□□□□□□□□□ □□ □□□□□4
□□□□□□□ 58, 60
□□□□□ 56, 60, 82, 85, 127, 138, 149
□□□□□□ 103, 108, 128, 130
□□□□□□ □□ □□□ □□□□ 2 8
□□□□, □□□□□ 85, 88-9, 90, 99, 120, 121, 140, 148, 163, 199, 206
□□□□□, □□□□□□ 88-9, 148, 169
□□□□□ 49, 61-2, 79, 80, 95, 105, 120, 121, 159, 173, 174, 194, 203, 257, 259
□□□□□□□ 7, 8, 13, 20, 43, 133
□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ 31
□□□□□, □□□□□ 6, 67, 71 –2, 81, 84, 90, 115 –6, 128, 136, 141, 143, 277, 283
□□ □□ □□□□□: □□□□□□□□□□-□□□□□□; □□□□□; □□□□□□; □□□□ □□□□□□; □□□□; □□□ □□ □□□□
Prasad, Rajendra 147 , 191
□□□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□; □□□□□□□□□
□□□□□□□□ 8, 10, 20, 199, 231, 232, 266
□□□□□□□□□ □□□□□ 83, 85, 86-8
□□□□□□ □□□ □□ □□□□□

□□□□□□□□ □□ □□□□□□ 92, 101, 102-3, 107-8, 111, 115, 118, 120, 121, 131, 175, 176-7, 191, 203, 205, 207, 229-30, 235, 236-7, 239, 241, 255
□□□□□□ □□□□□□□; □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□
□□□□□□ 167, 168, 260, 263 –4
Pyarelal 3 , 92 , 169 –70, 171 , 181 , 196 , 206 , 210 , 211 , 236 , 249 , 254 , 255 , 256 , 258 , 259 , 265 , 281
□□□□□□□□□ 49, 197
□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□□ 234 –5, 239, 240, 241, 273
□□□□□□□□ 85, 95, 283
□□□□□□□ 116, 276
□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□□ 60-3
□□□□□□□ □□□□□□□□ 43 –8, 49, 54
□□□□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□; □□□□□□□□□□ □□□□, □□□□ □□□□□□□ 186
Rajagopalachari, Chakravarti 180 , 203 , 206 , 229 , 232 , 241 , 242 , 243
Rajagopalachari, Lakshmi 180
□□□□□□□□□□ □□□□□□□□□ 10
□□□□□□□ 8, 10, 14, 56, 75, 133
□□□/□□□□□□□ 11 , 13 , 110 , 245 , 268 , 269 , 279
□□□□□□□□□□, □□. 185
□□□□□□□□□□□ □□□□□□, □□ □□.□□. 281
□□□□□□□ 111, 114, 270
□□□□ □□□□ □□□ 103
Rashtriya Swayamsevak Sangh (RSS) 178 , 228
□□□□□□□□□□ 68
□□□□□□□, □□□□□□ 171
□□□□□□□□□ 172, 252-3, 264, 265, 266
□□□□□□ □□ □□ □□□□□□
□□□□□□□□□□ 5, 27, 67-8, 165
□□□□□□□□ 58, 60
□□□□ 173, 174, 223, 253
□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□ 186

ग्रेट कलकत्ता नरसंहार 250 –1 राष्ट्रीय हड़ताल और अमृतसर 159 –61 स्वतंत्रता के बाद 263 –4, 265, 278
भारत छोड़ो प्रस्ताव 235
रिपन, लॉर्ड 52, 54
रॉबर्ट्स, लेडी सेसिलिया 131
रॉबर्ट्स, लॉर्ड 131
रोलैंड, रोमेन 180 –1, 202
गोलमेज सम्मेलन 187, 191-2, 194, 195, 197-8, 199-200, 202-3, 218 रॉलेट, न्यायमूर्ति सिडनी 156
रॉलेट अधिनियम (1919) 155, 156-61, 162, 226
रस्किन, जॉन 85 –6, 103 , 110 , 127 , 128 , 130 , 158 , 182 , 218
रूस 83, 84
रुस्तमजी, जीवनजी 61 , 62 , 87
Sabarmati Ashram see Satyagraha Ashram Sabarmati Centrail Jail 138 बलिदान, पशु 76 –7
साधु 173
सैलिसबरी, लॉर्ड 26
साल्ट, हेनरी 28, 37
नमक विरोध प्रदर्शन 1 –2, 6, 188, 189 –91, 194, 195, 208, 235, 248, 252, 276
Samaldas College, Bhavnagar 19
सिंगर, मार्गरेट 212–13, 214
स्वच्छता 56, 65, 75, 77, 108, 119, 141, 209
संस्कृत 13, 15, 28, 35, 111, 176
Sarabhai, Ambalal 139 , 148 , 149 , 150 –1, 154 Sarabhai, Anasuya 149 , 157
शास्त्री, श्रीनिवासा 157
सत्य, साई बाबा 182, 282
सत्याग्रह 100, 107, 110, 117, 122
परिभाषा एवं सिद्धांत 98-9, 104, 106

□□□□□, □□□□□□□□ 108, 109
□□□□□ □□□□□□□ 157-8, 159, 161
□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□□□ 187 –8, 189 –91, 192 –3, 194
□□□□□□□ □□□□□ □□□□□ 229-30
□□□□□□ 120, 144 – 5
□□ □□ □□□□□: □□□□□ □□□□□□; □□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□; □□□□□□
Satyagraha Ashram 135 –9, 154 , 162 , 167 , 170 , 180 , 182 , 207 , 208
□□□□□ □□ □□□□□
□□□□□□ □□□□□□□ □□□ □□□□□□□□□ 99, 176, 177
Satyagraha Society (Sabha) 158
Savarkar, Vinayak 125 , 126 , 178 , 241 , 270 –1, 272 , 274
□□□□□□□□□□ □□ □□□ 66
□□□□□□□, □□□□□ 100, 101, 120, 140, 173, 303
□□□□□□□□, □□□□□□, □□□□□□□ □□□□□ □□□□□, 5, 226, 228-31, 232-4, 239
□□□□□□□□ □□□□□ (1917) 156
□□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□ 75, 134-5, 136
Sevagram Ashram 208 –13, 223 , 224 , 225 , 241 , 245
□□□□□□□ 3, 8, 14, 15, 17, 18, 34, 57, 92, 112, 113-14, 115, 128, 169, 214, 276, 280-2
□□□□ □□□□□□□□ 179-80
□□□□□ 214 –15, 223, 245
□□□□□□ 114, 136 –7, 225 –6, 245, 246, 254 –8, 262 –3, 281 –2
see also brahmacharya vow; celibacy Shah, Kanchan 246
□□□, □□□□□□□□□ 246
□□, □□□□□ □□□□□□□□ 200
□□□□□□□, □□.□□. 128
Shravana 10
Shukla, Dalpatram 29
Shukla, Rajkumar 146
□□□ 200, 201, 248, 250, 261, 263-4, 265, 278
□□□, □□□□□□□□□ 172, 252, 261, 264

शिमला सम्मेलन 243, 248, 250
साइमन, सर जॉन 186
साइमन आयोग और रिपोर्ट 186, 187, 192, 231, 244
Singh, Bhagat 195
सीता 13
स्लेड, सर एडमंड 181
स्लेड, मैडलीन, देखें मिराबेन स्मट्स, जनवरी 95, 98, 103-4, 105, 106, 107, 116, 119, 121, 122
एशियाई प्रदर्शन अधिनियम सामाजिक लोकतांत्रिक संघ 27 भी देखें समाजवाद 85, 86, 183
मनोवैज्ञानिक अनुसंधान सोसायटी 27
सुकरात 103, 108, 199, 206
दक्षिण अफ्रीका 49-52, 78-80, 115
अफ़्रीकी मूल निवासी 54, 84-5, 108, 122
रंगभेद 116, 276
भारत के समर्थन के लिए अभियान 58-9, 76
गांधी ने 105, 106 पर हमला किया
गांधी को प्रवेश से वंचित कर दिया गया 60-3
नेटल इंडियन कांग्रेस 53, 55, 59, 63-4, 70, 117, 123
नस्लवाद 43 –8, 49 , 69 , 85
यह भी देखें: एशियाई पंजीकरण अधिनियम; बोअर्स; कर्टिस, लियोनेल; आप्रवासन; अनुबंधित मजदूर; भारतीय जनमत; विधि करियर; नेटाल; ऑरेंज फ्री स्टेट; फीनिक्स बस्ती; स्मट्स, जान; सत्याग्रह; टॉलस्टोरी
फार्म; ट्रांसवाल; ज़ुलू विद्रोह
दक्षिण अफ़्रीकी जनरल मिशन 48
साउथ प्लेस एथिकल सोसायटी 89
राष्ट्र का भाला 276
स्पीगल, मार्गरेट 221
हाथ से कताई 163, 166-7, 168, 171, 172, 176, 177, 190, 212, 230, 233, 262, 263, 271
स्पियन कॉप की लड़ाई (1900) 70 –1

□□□□□□□, □□□□ 70 –1
□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□108
□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ (□□□□□□□ □□□□□)
□□□□□□□□□□ 26, 27, 118, 119, 120-1, 150, 157, 158, 159
□□□□□ □□□□ 7
□□□□□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□□□ 100 –1, 115 , 247
□□□□□□□□□ 11, 138, 182
□□□□□□□, □□□ 101, 102
□□□□□□□ □□□□□□□□ 127, 136, 148, 163, 165, 199
□□□□□, □□□□□ 84
□□□□□□ □□□□□□ 177
□□□□□□□□□□□□ 202
□□□□□, □□□□□□□□□□ 133, 137, 148, 165, 167, 217
□□□□ 58, 59, 111, 118, 119, 124
□□□□□ □□□□□□□ □□ □□ □□□□□
□□□□, □□□□□ □□□□□□□ 110
□□□□□□ 55, 116-17, 118, 119, 120, 122, 145, 203
□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□
□□□□□□□ 126, 202, 203, 230, 274
□□ □□ □□□□□: □□□□□□□ □□□□; □□□□; □□□□□
□□□□□□ □□□□□□ 163, 166, 172, 194, 199
□□ □□ □□□□□: □□□□□□□□□□-□□□□□□ □□□□□□; □□□ □□ □□□□; □□□□□□□ □□□□□□□□;
□□□□□, □□□□□□□ □□. 258
□□□□□□, □□.□□. 241 –2
□□□□□□□□□□ □□□□□□□ 27, 35-6, 66, 77
□□ □□ □□□□□ □□□□□□, □□□
□□□□□□□, □□□□□□ 199
□□□□, □□□□□ □□□□□ 101, 127, 128
Tilak, Bal Gangadhar 59 , 75 , 96 , 127 , 143 , 152 , 165
□□□□ (□□□□□□□) 198
□□□□□□ (□□□□□) 200

□□□□□□□ 8, 32, 84, 215, 274
□□□□□□□□□□, □□□□ 5, 67, 84, 91, 103, 110, 127, 128, 182, 218
□□□□□□□□□□ □□□□□□ 110, 111, 115-16, 117, 120, 123, 135
□□□□□□□□□□ □□□□□□
□□□□□□□□□□
□□□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□□ 104, 105, 123
□□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□□ □□□ 44, 48
□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□ 47, 48, 49
□□□□□□□ □□□□□ □□□□□□□□□□□□□□ 49-50
□□□□□□□ □□□□□□□□□ 79, 80
□□□□□□□□□ □□□□□□□□□ □□□□□□□□ 107
□□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□ 51
□□ □□ □□□□□□: □□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□□ (1907); □□□□□ □□□□□□; □□□□□□ □□□□□□□;
□□□□□□□; □□□□□□□□; □□□□□□□□□□; □□□□□□□ □□□□□□□□
*□□□□□□□□□ □□□□*103
□□□□□ 4 –5, 8 , 10 , 18 , 36 , 108 , 117 , 128 , 184 , 200 , 216 , 254 , 256 ,
263 , 282 –3
□□□□□□□□□□□ □□□□□; □□□□□□□; □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□
□□□□□□□ 145, 164, 172, 175, 277
Tyabji, Raihana 133
□□ □□□□□□ 85, 86, 88, 130, 158 □□
□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□□ 4, 9, 65, 136, 138-40, 144, 166, 171, 178, 185, 190,
193, 202, 215-17, 238, 248, 252, 279-80
□□□□□□□□□, □□. □□. □□. 201 206 –7, 227
□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ 204-5, 206, 274
□□□□□□□ 66
□□□□□□□ 259
□□□□□□□ 16
□□□□□□ □□□□□ 7
□□□□□□□□□29
□□□□□□□□□ □□□□□ 29, 31, 32-3, 37, 44, 67, 68, 131, 198

शाकाहार 27, 28-30, 33, 34, 35, 57, 77, 85, 111, 183
आहार भी देखें
विक्टोरिया, रानी 26, 55
हिंसा पर गांधी के विचार
सांप्रदायिक 159, 223, 250 –3, 260 –1, 278
चरमपंथी समूह 126, 142
यह भी देखें: सविनय अवज्ञा; अहिंसा; दंगे; सत्याग्रह; युद्ध वोहरा, गुलाब 82
प्रतिज्ञाएँ 21, 22, 37, 283
यह भी देखें: ब्रह्मचर्य; उपवास; मौन; हाथ से सूत कातना Vyavaharik, Madanjit 83
युद्ध 5, 220
बोअर 70 –1, 78 –9
महान युद्ध 145, 152-3, 156
भारत और पाकिस्तान 267, 278
द्वितीय विश्व युद्ध भी देखें
वेवेल, लॉर्ड 239, 240-1, 242, 243, 248, 249, 250, 259, 260 हाथ से बुनाई 135, 136, 137, 149, 163
वेस्ट, अल्बर्ट 86, 87, 88
क्या किया जाना चाहिए?129
इंग्लैंड के श्वेत दास 128
वाइल्ड, ऑस्कर 31
विलिंगडन, लॉर्ड 133, 203, 207
विश्व प्रदर्शनी, पेरिस (1889) 36-7
वायट, वुडरो 251
विली, सर कर्ज़न 125
Yeravda jail 176 , 191 , 203
येरावदा संधि 206
यंग इंडिया 3-4, 160, 175, 176, 177, 189, 191, 206 पारसी धर्म 67, 116, 209
पारसी भी देखें

□□□□□□ 69, 89-90, 165, 226

1888-91 में लंदन में प्रशिक्षु बैरिस्टर गांधी, अपने सलीके से संवारे हुए बालों और स्पष्ट मांग के साथ, विंग कॉलर और बो टाई वाले थ्री-पीस सूट में। (फोटो: हेनरी गुटमैन/गेटी इमेजेस)

गांधी जी दक्षिण अफ्रीका में एक क्रांतिकारी वकील के रूप में अपनी सचिव सोन्या श्लेसिन और अपने मित्र हरमन कैलेनबैक के साथ। (डिनोडिया/टॉपफोटो)

सन् 1913 में गांधी और कस्तूरबा। गांधी जी घुटनों तक लंबी सफेद सूती कुर्ता और उन बंधुआ मजदूरों की तरह स्कर्ट जैसी लुंगी पहने हुए हैं, जिनका वे विजय की ओर नेतृत्व कर रहे हैं। (उलस्टीनबिल्ड/टॉपफोटो)

रहस्यवादी और राष्ट्रवादी नेता के रूप में गांधी की पूर्ववर्ती, एनी बेसेंट। (द ग्रेंजर कलेक्शन/टॉपफोटो)

गांधी जी के आश्रमों में मीराबेन के नाम से मशहूर मैडलीन स्लेड, एक अंग्रेज महिला थीं जो उनकी शिष्याओं में से एक बनीं। (फोटो: वालेस किर्कलैंड/टाइम लाइफ पिक्चर्स/गेटी इमेजेस)

गांधी जी ने खादी नामक मोटे, हाथ से बुने हुए कपड़े पहने हैं, जो राष्ट्रवादी प्रतिरोध का प्रतीक और स्थानीय उद्योग को प्रोत्साहन देने वाला बन गया था। (Picturepoint/TopFoto)

एक अंग्रेज सज्जन से तपस्वी में परिवर्तन पूर्ण हो चुका है: गांधी जी कपड़ा कातते हुए, केवल एक धोती पहने हुए तस्वीर खिंचवा रहे हैं। (उलस्टीनबिल्ड/टॉपफोटो)

गांधी और सरोजिनी नायडू, 1930 में दांडी में नमक अधिनियम का उल्लंघन करने की तैयारी कर रहे थे। (प्रेस एसोसिएशन छवियाँ)

यह तस्वीर व्यापक रूप से गांधीजी द्वारा 6 अप्रैल 1930 को दांडी में नमक उठाते हुए दिखाई गई है। वास्तव में यह तस्वीर तीन दिन बाद भीमराड में ली गई थी। (Picturepoint/TopFoto)

1931 में भारतीय संवैधानिक सुधार पर गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने के लिए पहुंचते समय गांधीजी को अपना पहनावा ब्रिटिश जलवायु के लिए पूरी तरह से उपयुक्त नहीं लगा। (एपी/एपी/प्रेस एसोसिएशन इमेजेज)

लंकाशायर के कपड़ा श्रमिक गांधीजी की जय-जयकार करते हैं, सितंबर 1931। (उल्स्टीनबिल्ड/टॉपफ़ोटो)

गांधी जी अपने विशिष्ट अंदाज में दो महिलाओं के सहारे खड़े हैं, जो उनकी 'छड़ी' हैं - यहाँ उनके बाईं ओर उनकी डॉक्टर और जीवनीकार सुशीला नायर और दाईं ओर उनकी पोती (विवाह द्वारा) आभा गांधी हैं। (एपी/एपी प्रेस एसोसिएशन इमेजेज)

गांधी जी के हत्यारे, हिंदू उग्रवादी नाथूराम गोडसे, दिल्ली की एक अदालत में अपनी पेशी सुनने के लिए उपस्थित हैं। (एपी/एपी/प्रेस एसोसिएशन इमेजेज)

लंगोटी बनाम शानदार सूट: गांधी जी, मुस्लिम लीग के नेता मोहम्मद अली जिन्ना के साथ। (उलस्टीनबिल्ड/टॉपफोटो)

गांधी जी अपने वफादार अनुयायी वल्लभभाई पटेल के साथ, जो बाद में स्वतंत्र भारत के गृह मंत्री और उप प्रधानमंत्री बने। (मैक्स डेसफोर/एपी/प्रेस एसोसिएशन इमेजेज)

गांधी जी, जवाहरलाल नेहरू की बेटी और भविष्य की भारतीय प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के साथ। (Picturepoint/TopFoto)

गांधी जी, लॉर्ड और लेडी माउंटबेटन के साथ, जो ब्रिटिश भारत के अंतिम वायसराय और वायसराय थे। (एपी/एपी/प्रेस एसोसिएशन इमेजेज)

गांधी जी स्वतंत्र भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के साथ मजाक साझा करते हुए। (मैक्स डेसफोर/एपी/प्रेस एसोसिएशन इमेजेज)

गांधी जी के बाईं ओर आभा और दाईं ओर उनकी पोती (जिन्हें कभी-कभी उनकी पोती भी कहा जाता है) मनु हैं। जब उन्हें गोली मारी गई, तब वे उनके बगल में ही थीं। (उलस्टीनबिल्ड/टॉपफोटो)

30 जनवरी 1948 को उनकी हत्या के बाद, गांधी जी को उनकी अर्थी पर फूलों से सजाया गया था। (एन रोनन पिक्चर लाइब्रेरी/एचआईपी/टॉपफोटो)